Printed by Khemraj Shrikrishnadas at their Shri Venkteshwar Press 7th Khetwadi
Bombay No. 4 Published by Brijaballabh Hariprasad for Hariprasad [illegible]
Ramwadi Bombay.
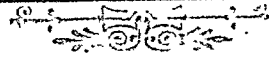
है. मुख्य विषयोंमें कितनेक विषयोंको दिखाता हूं कि, इस
इसमे संग्रहारंभ, दवा खानेका विचार, काल, नियम, देश-
...र, आहार, ऋतुचर्या, दिनचर्या, रात्रिचर्या. अष्टविधपरीक्षा,
...विचार, शुक्रशोणितशुद्धि, वैद्यके गुण, गतिविधि, छःरस, पंचतत्त्व,
... दिनचर्यायुत, सर्व दवाइयोंका वीर्य, विपाक, गुण, छः ऋतुदोष,
...तियोंके भेद, दोष, दीपन, पाचन, स्नेहन, मर्दन, जुलाब, रक्तमोक्ष,
...तान मुख्य विषय होकर निदान, चिकित्सा, धातु, उपधातु, रस,
...रस, रत्नोपरत्न, विष, उपविष इनका शोधन और मारण इनके देश
...तरमें ... तथा अर्कविधि, सब दवाइयोंके गुण, पाक, गुटके आर-
...स्वरस, ..., क्वाथ, हिम, कल्क, चूर्ण, गुटिका, मोदक, तेल, घी
...दिकोंकी ... बहुत उत्तम रीतिसे लिखी गयी हैं.

... यह ग्रंथ आज कितने दिनोंसे परिश्रम करते करते संपूर्ण
है. अब इस ग्रंथको लोकोपयोगमें लाकर इसमें कहे हुए ज्ञानका
... करना यह संपूर्ण महाशयोंके अधीन है.

विशेष ... इस मेरे परिश्रमको सफल करके स्वदेशीय लोगोंको
... करना लोकाश्रित है. इसवास्ते मैं नम्रतापूर्वक अपनी परि-
...राजश्री ... विज्ञापन करता हूं कि, श्रीमन्महाराजाधिराज छत्रपति
...राजेश्वर ... १०८ सुमेरसिंहजी महाराजाजी श्रीजोधपुराधीश और
... महार... धिराज महाराज श्रीसरप्रतापसिंहजी साहब बहादुर के.सी.
... आय... साहब और सब हिंदुस्थाननिवासी राजा, महाराजा, सर-
दार, साहूकार ... लोग अपना अपना उदार आश्रय देकर इस मेरे ग्रंथको
अपने देशमें ... लित करके आश्रय देकर इस मेरे परिश्रमको सफल करेंगे
विशेष ... जोधपुरराजभाषामें ऐसा ग्रंथ आजतक हुआ नहीं है.
इस वास्ते प्रताप... राजासाहब अपना उदार आश्रय देकर अपने देशमें इस
ग्रंथका ... इनका प्रबंध करावेंगे यह मैं पूर्ण आशा रखता हूं.

अब ... मैं अपना वृत्तांत लिखता हूँ, सो आश्रयदाताओंके
ध्यानमें रहे ... मेरा जन्म संवत् १९०८ के साल हुआ, जबसे मैं स्याना
...आ-जब ... अवस्था अनुमान १० बरसकी हुई तबसे मैंने इस वैद्यकशास्त्रका
और विद्या... अभ्यास किया, हमारे घरमें वैद्यकका ही काम पहिलेसे
... ला आता ... लेकिन अन्न जलकी अधीनतासे मेरा रहना दक्षिणमें हुआ.

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
अमृत	जामफल, सफरी,	जांब, पेरु
अमृता	आम, अमरूद,	
	गिलोय	गुळवेल
अम्ल	तुतरखट्टा, तुततुरशश्यामी	चुका
अम्लक	इमली, आमली	चिंच
अम्लवल्ली	कौंडल	कंवडळ
अयस्कांत	लोहचुंबक, संग आहनको	लोहचुंबक
अर्क	आकडा, श्वेतरक्तआकतेल	रुई
अर्क	तेल	तेल
अश्वगंधा	असगंध, असपंद	आस्कंद
अश्वत्थ	पीपल	पिंपळ
अश्ववल्ली	अंबरवेल	अंबरवेल
अश्विनी	कुचला, काजरा	कुचला, काजरा
अष्टवर्ग	जीवक, ऋषभक, मेदा,	जीवक, ऋषभक मेदा,
	महामेदा, काकोली,	महामेदा, काकोली,
	क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि	क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि
P.. हिंपे	अफीम, ओपीम	अफू
Bom. फें ११७	पौस्त, तिजारा, पोस्त कशाख	अफूचें बोंड
अहिफेनबीज	तिजारादाना खसखस	खसखस
अहिफेनरस	चरस, शवनमबंग	चंडोल, चडस
आकाशवल्ली	आकाशवेल, दरख्त, पेचान	अंबरवेल
आज्य	घी	तूप
अपूप	मालपुआ	घारगे
आम्ल	चनेका खार	आंब
आमलकी	अमला	आंवळा
आम्रफल	आम	आंबा
आम्रफलचूर्ण	फंकियनका चूर्ण	आंब्यांच्या कैरीचें चूर्ण
आम्रहरिद्रा	आंबा हलदी, चार चोप,	आंबेहळद
आम्रास्थितैल	आमका तेल	आंब्याच्या आठोळीचें वेल
आर्द्रक	अदरख, जंगबील	आलें
	तर, अहुचा सुलतानी	
आर्द्रा	कृष्णागर	कृष्णागरु
आरण्यतुलसी	जंगल तुलसीरेहादास्त	रानतुलस

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
आलु	वराआलु वरालु	अळू
आलुकंद	आरवी	अळूचा कांदा
आश्लेषा	नागचंपा	नागचांफा
आश्वगंधामूल	चोवचीनी	चोवचिनी

इ.

इक्षु	ईख,गन्ना,साठा रक्त, श्वेत,	ऊंस
इक्षुर	तालमखाना	तालिमखाना
इन्द्रगोप	वीरबहूटी, कूर्म अरू, सफ	पावसांतील लाल किडे
इन्द्रयव	इंद्रजो, जवानकुंजशक	इंद्रजव
इन्द्रायणी	तस्तुंबा, घोड इंद्रायणी, खर्पुजातलख	इंद्रायण
इष्टका	ईट, खस्त.	वीट

उ.

उग्रगंधा	लहसन, वच, घोडवच, छड, वालछड	लसून, वेखंड
उत्कोप	कलोंजी, जीरा	काळें जिरें
उत्तरा	पायरी,पारस पीपल	पारसापिंपळ
उत्तराभाद्रपदा	नीम	निंब
उत्तराषाढा	कटहर	फणस
उपलसरी	कावली	उपलसरी
उशीर	खस	वाळा
उष्णजल	गरमपानी	ऊनपाणी
उष्ट्रीदुग्ध	ऊटनीदूध शिरशुतर	उंटिणीचें दूध
ऊद	लोबान, दरखशक्स	ऊद

ए.

एरंड	रंडा	एरंडी
एरंडमूल	रंडाकी जड, बेद अंजीर भारु	एरंडमूल
एला	बडी इलायची, हिलक्काम	वेलदोडे
एलात्रुटी	छोटी इलायची, हलबुवा	वेलची

ओ औ

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
औदुंबर	गुलर	उंबर

क.

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
कंकरी	दक्षिणीबावल	देवबाजरी
कंकोल	कपूरचीनी, शीतलचीनी	कंकोळ
कचोर	कपूरकांचरी	कापूरकचरी
कज्जल	काजल, दूध	काजळ
कंटाकिनी	वज्रदन्ती	कोरांटा
कटुक	गाजर, गाजरा	गाजर
कटुकंद	कडुआ सूरन	कडुसुरण
कटुफल	कायफल	कायफळ
कटुतुंबी	तुंमडी, तुपां, कटुतलख	कडुभोंपळा
कठिल्लक	करेला कडुवा है	कारलें
कदंब	कलम	कळंब
कंदल	पीपली, हरी पीपली, जमीकंद	पिंपली, सुरण
कदलीफल	केला	केळें
कनक	धतूर	धोतरा
कमलाक्ष	कमलगट्टा	कमळकांकडी
कपर्दक	कौडी, खुमरा	कवडी
कपिकच्छु	कौंचबीज	कायफळ
करीर	केर टीट	कारवी
कर्कटी	खीरा, ककडी कांकडा-शींगी	कांकडी, कांकडशिंग
कर्कोटकी	ककडी	कांकडी
कर्कोटक	ककोडा कर्कडा	करटोली
कर्कटीबीजतैल	रोगनखीराककडी,रोगन तुखमखीयारीन	कांकडीच्या बियांचें तेल
कर्कोटक	ककेला, ककील	कर्कोटक
कर्णस्फोटा	कागलेका खेत, वगरा	तिळवण
कर्पास	कपास	कापूस

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
कर्पूर	कपूर	कापूर
कलभी	सोरा	सोरा
कसीस	कसीस, जागदर्द	हिराकशी
कस्तूरी	बेदमुष्क, बेराज	कस्तुरी
कलिंग	तरबूज, मतीरा	कलिंगड
काकजंघा	कागजंघा, कुजारूब	काकजंघा
काकमाची	सर्पकी मारडा	कावळी
कागद	कागज	कागद
काच	काच बिलोर	कांच
कांचनी	सोनफली, हलदी	सोनचांफा, हळद, गोरोचन
कांडवल्ली	चौधारी थूहर	कांडवेल, चौधारी निवडुंग
कारवेल्ल	करेला कडुवी हे	कारलें
कार्पासत्वक्	कपासकी छाल	कापशीच्या झाडाची साल
कार्पासबीज	रुईका बीज	सरकी
कालास्कंद	तमाल दरखत	तमाल वृक्ष
काश	कासनीसब्ज	लव्हा
कासमर्द	कसौंदा	कसौंद
किरात	चिरायता	काडी चिरायत
कुंकुम	केसर	केशर
कुक्कुट	मुर्गा	कोंबडा
कुक्कुटाण्ड	मुर्गाका अंड, खानमुर्ग	मुर्ग्याचें अंडें
कुटजत्वक्	कूडेकी छाल	कुडयाची साल
कुमारी	घीकुवार, कुवारपाठा	कोरफड
कुश	डाभ	दर्भ
कुश्यतृण	शूलवाला लांपली	कुसळीगवत
कुंज	गुलाब	गुलाब
कुंजिका	गुलाब सेवती	गुलाब शेवती
कुंडलिका	जिलेबी	जिलबी
कुसुंब	गुलमआष्फा	कुसुंभ
कुसुंभा	खसकदाना, कुसुंबाका बीज	करडई
कुंदरु	बलाई	कुंदरु
कूष्मांड	कुम्हडा	कोहळा
कृत्तिका	गूलर, काटाधतूरा, दारूडी	उंबर, कांटे धोतरा

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
कृमि	केचुवा जगारा	गांडवळ
कृशरा	मिश्रान्न, खिचडी	खिचडी
कृष्णजीरक	कर्दवाद् स्याहजीरा	काळेंजिरें
कृष्णमुसली	मुसली शाहा	काळी मुसळी
कृष्णलवण	नीमकशीशा	काळेंमीठ
कृष्णहरीतकी	हरडशाहा, हलशाहा	काळाहिरडा
कृष्णा	पीपली, हरी पिपली	पिंपळी
कृष्णावज्र	अभ्रक, जलपोस	अभ्रक
केतकी	पीला केवडा २ भेद्का	केवडा
केशर	केसर कर्किस्सम	केशर
कोद्रव	कोद्रम्	कोद्रु
कोकंब	अमचुल	अमसूल
कोशातकी	तोरई	दोडका
कोष्ठ	कोष्ठकुलिंजन नागरवेलकी जड्	कोळिंजन
क्रमुक	सुपारी	सुपारी
क्षीर	खीर	खीर
क्षीरिणी	दुधी सोरपंद	दुधी

ख.

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
खंडशर्करा	खांड मिश्री	खडीसाखर
खदिर	खैर	खैर
खर्जूर	खजूर	शिंदी
खर्जूर	खखर,छुवार	खारीख खजूर
खर्जूरिका	कनखजूरा हजार पा	गोम
खलिनी	मुसली, सफेद मुसली	मुसली, सफेद मुसली
खादिर	कत्था	काथ

ग.

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
गजपिप्पली	गजपीपल	गजपिंपळ
गज्जल	अंजीर	अंजीर
गंध	गन्धक	गंधक
गंधन	गंधना	रोहशेलतेल
गंधा	अजमोद	अजमोदा

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
गांधिल तृण	रोहिसघास	रोहिस गवत, पुण्य गवत
गांगेरुक	तोरनी	तोरणी
गुग्गुल	भैसा गूगुल	गुगुळ
गुंडिका	चिरमिठी श्वेत रक्त २	गुंज पांढरी लाल २
गुड	कुंथइयासा गुड	गुळ
गुडूची	गिलोय	गुळवेल
गुल्मा	श्वेतरिंगणी कटैया	रिंगणी
गुडकंद	गुलकंध	गुळकंद
गृंजन	गाजर गजर	गाजर
गैरिक	गेरू	गेरू काव
गोकर्णी	इकपेन्याआकुलशनर	गोकर्ण
गोजिह्वा	गोमी कलमरोमी	पाथरी
गोधूम	गेहूं	गहूं
गोधूमसत्व	नीसस्ता गहुका चीक	रवा, मैदा
गोमूत्र	गायका पिशाव	गाईचें मूत
गौरी	गोलोचन	गोरोचन

घ.

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
घृत	घी	तूप
घृतपूर	घेवर	घिवर
घोषा	सौंफ सुवा	वडीशेप

च.

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
चणक	चना	चणे
चतुरम्ल	अम्लवेत, अमली, जंभीरी लिंबू	चुका, चिंच, निंबु, जंबीर
चतुरास्य	तुस्तंबा, घोडइन्द्रायण	इंद्रायण
चतुरुष्ण	सूंठ, मिरच, पीपली, पीपलामूल	सुंठ, मिरें, पिंपळी तेजपत्र,
चतुर्जातक	इलायची, दालचिनी, तेजपात नागकेशर	वेलची, दालचिनी पिंपळी पिंपळामूळ नागकेसर
चतुर्थांश	औटायके चौथा हिस्सा	आटवून चौथा भाग
चतुर्धार	सलजम, सलगम	चौधारी
चतुर्बीज	कलौंजी, जीरा, मेथी, अजवाइन अहाल	काळेंजिरें, मेथी, ओवा अहळीव

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी
चंदन	चंदन सफेद	पांढरें चंदन
चंदनपुष्प	लौंग	लवंग
चव्य, चवक	चोक	चवक
चारुफल	पिस्ता	पिस्ते
चित्रा	बेल	बेल
चित्रक	चित्ता, चित्रक	चित्रक
चिपिट	पोहा, चिवडा	पोहे
चिल्ली	सफेद चिल्ली	पांढरी चिल्ली
चुक्र	चूका, तुर्श खूरासानी	चाकवत
चुक्रिका	इमली, अमली	चिंच
चूतवृक्ष	आंबका पेड	आंब्याचें झाड
चूर्ण	चुना चूर्ण	चुना चूर्ण
चेतकी	हर्र हरड	हिरडा

छ.

छिन्ना	गुडूची, नीम, गिलोय	गुळवेल
छिन्नका	ढांक, खैंकरा	पळस

ज.

जंतुवृक्ष	गूलर	उंबर
जम्बीर	जंबेरी जंगरी	जंबीर
जंतुहरणा	वायविडंग, विडंग	वावडिंग
जपा	जासुंदी	जासवंद
जलनिंब	जलनीम	जळनिंब
जलपिप्पली	जलपीपल	जळपिंपळी
जंबूफल	जामुन	जांबुल
जयपाल	जमालगोटा तुखम, बेर अंजीरखवार	जेपाळ
जया	भंग, भाँगरा, हरड	भांगहिरडा
जलज	शंख	शंख
जवासा	जवासा, खारशूअर	धमासा
जवानी	अजवान, अजमान	ओंवा

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
ज्वरांकुशरस	ज्वरांकुशरस	ज्वरांकुश
जाति	चमेली	जाई
जाति	जाही जूही	जाईजूई
जातीपत्र	जावित्री	जायपत्री
जातीफल	जायफल जोजीवा	जायफळ
जीरकत्रय	जीरा, स्याहजीरा, कडूजीरा	जिरें, शहाजिरें कडुजिरें
जीवन्ती	हरणवेल	हरणवेल
ज्येष्ठा	सांवर, थूहर	थोर, सांवर
ज्येष्ठीमधु	मीठी लकडी, अमृती, मुलहटी	ज्येष्ठीमध
ज्योतिष्मती	मालकांगनी, लालचिरमुटी	कांगोणी

झ.

झष	मच्छीजींगा, माही गेमीमान	मासा
झावुक	झावू, गज	झावू
झिंझुटी	जींझोटा	जिंझोटी

ट.

टंकणक्षार	सुहागा, सुहागा तेलिया स्वागी नंनकार	टांकणखार

ड.

डिंडिश	डिंडीश	धेंडसें

त.

तक्र	मठा, छाछ	ताक
तमाखु	तमाखू	तमाखु
तमालपत्र	तेजपात	तेजपत्र
तर्पण	दाख, अनार, खजूर इनका पत्ता	तर्पण

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी
तवक्षीर	तवकीर	तवकीर
तंदुल	तंदुल, शालिचावल	तांदूळ
तंदुलीय	चौलाई, चंदलाई	चौळाई तांदुळजा
ताड	खजूर	शिंदी
तांबूलपत्र	नागरवेलका पत्ता	विडयाचें पान
तांबूलवल्ली	नागरवेल	नागवेल
तांबूल्य	शीतलचिनी, कपूर, कस्तूरी, सुपारी, लौंग, पान, चूना, जायफल, कत्था, जाविन्नी, केशर, इलायची, तज इतने तांबूलके गुण	शीतळचिनी; कापूर, कस्तुरी, सुपारी, लवंग, पान, चुना, जायफळ, काथ, जायपत्री, केशर, वेलची, दालचीनी इतके तांबूलगुण
ताम्र	तांबा, मस	तांबें
ताम्रवल्ली	चित्रकुटी	चित्रकुटा
तालीसपत्र	तालीसपत्र, तिल गुंज०	तालपत्र
तिलपर्ण	चंदन, रक्तचंदन,	पांढरेंचंदन, रक्तचंदन
तुत्थ	तुथिया नीलाथोथा	मोरचूत
तुरुष्कपाषाण	हकीक अकीम	तुरकीपत्थर
तुलसी	तुलसी, इयदसग्रम	तुळस
तेजःफल	तेजःफल	तेजफल, तेजपत्र
तैल	तेल	तेल
तैलफल	तिल	तिळ
तौलिनी	तूर	तूर
त्रिकटु	सोंठ, मिरच, पीपली	सुंठ, मिरें पिंपळी
त्रिकण्टक	कांटी गोखरू, खार खिसक	गोखरू
त्रिक्षार	सज्जीखार, जवाखार, सुहागा.	साजीखार, जवाखार, स्वाहागी.
त्रिजातक	इलायची, तज, तेजपात	वेलची, दालचिनी, तेजपत्र
त्रिफला	हरड, आंमला, बहेडा	हिरडे, आंवळे, बहेडे
त्रिवृत्	निशोत	निशोत्तर
त्रिसुगंधि	इलायची, तज, तेजपात	वेलची, दालचिनी, तेजपत्र
त्रुटि	छोटी इलायची, काकडी, जाकसुपेद	वेलची
त्वक्	तज	दालचिनी

द.

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
दधि	दही	दही
दमनक	दवना, सुगंध ३ जातका	दवणा
दर्भ	डाभ	दर्भ
दशमूल	पांच लघु मूल और पांच बृहत् मूल	पंच लघुमूल आणि पंच बृहन्मूल
दशांगधूप	५० भाग शिलारस, ५० भाग गूगल, ४ भाग चंदन, ४ भाग जटा-मांसी, ३ भाग लोबान, ३-भाग राल, ३ भाग उशीर, ३ भाग नखला, २ भाग भीमसेनी कापूर, १ भाग कस्तूरी.	५० भाग शिलारस, ५० भाग गुगुल, ४ भाग चंदन, ४ भाग जटामांसी, ३ भाग ऊद, ३ भाग राळ, ३ भाग वाळा, ३ भाग नखोला, २ भाग भीमसेनी कां-पूर, १ भाग कस्तूरी.
दाडिम	अनार	डाळिंब
दीप्यक	अजवाईन, अजमा, नानखा	ओवा
दीर्घदण्ड	रक्त, सफेद अरंड, वेद अंजीर	एरंड
दुग्ध	दूध	दूध
दुरालभा	जवासा	धमासा
दुर्गंधि	प्याज, कांदा,	कांदा
दूर्वा	दूब, दोवरी, दोवडी	दूर्वा, हरळी
देवकरंडु	रानमाठ	करडू
देवदारु	देवदारु	देवदार
देवनल	नरहर, देवनल	देवनळ, बरू
दंतकाष्ठ	दातून	दांतवण
दंतीबीज	जमालगोटा, अज-पाल	जेपाळ
द्राक्षा	मुनक्का, दाख	द्राक्ष, मनुका

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
द्रोण लवण	खाशनोन	द्रोण मीठ
द्विकर्णिकार	श्वेत, रक्त कनेर	पांढरी व लाल कण्हेर
द्विदल	दालि	दाळ डाळ
द्विक्षार	साजीखार, जवाखार	सज्जीखार आणि जवखार
द्व्यर्क	श्वेत, लाल आक	पांढरी व लाल रुई

ध.

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
धनिष्ठा	शाम खेजडी	खेजडा
धव	धावडा	धायटी
धात्रीपत्र	तालीस	तालीसपत्र
धात्रीफल	आंवला, आमला	आंवळा
धान्यक	गीला धनियां, कोथमीर, सांबार	कोथिंबीर
धान्याक	धनियां, धाणा	धणे

न.

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
नलिन	कमल	कमळ
नवनीत	माखण, मस्का, आबखन	लोणी
नवरत्न	हीरा, पन्ना, माणिक, नीलमणि, पुखराज, गोमेद, वैडूर्य, मोती, मूंगा.	हिरा, पाचू, माणिक नीळमणि, पुखराज, गोमेद, वडुर्य, मोती, पावळें.
नवसादर	नोसादर	नवसागर
नवविष	बछनाग, हरिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगिक, कालकूट, हलाहल, ब्रह्मपुत्र,	बचनाग, हरिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगिक, काळकूट, हलाहल, ब्रह्मपुत्र.
नागदमनी	नागदमनी, नागदोन, मारचोबा	नागदवणा
नाग	नागकेशर, शीसा	नागकेसर, शिसें
नागरिंग	नारंगी, नारिंग	नारिंग
नारिकेल	नारियल, गरी	नारळ

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
नारिकेलतैल	नारियलका तेल	खोबरेल तेल
नागर	सोंठ, सुंठा	सुंठ
नागार्जुनी	गोरखदूधी	दुधली
नागिनी	नागरवेल	नागवेल
नाडीहिंगु	दिकामाली	डिकेमाली
निशा	हलदी, जरद, चोबा	हळद
निर्मला	निर्मलके फूल	गुलनिवारी
निंबूफल	मीठा निंबू	साखर निंब
नीली	लील	नीळ
नीलारंग	आस्मानीरंग लाजवर्द	आस्मानी रंग
नेत्रवाला	काला खस	काळा वाळा

प.

पंचकोल	पिपली, पिपलीमूल, सोंठि, चित्रक, चव्य.	पिंपळी, पिंपळीमुळ सूंठ, चव्य, चित्रक.
पंचक्षीरवट	वड, गूलर, पीपल, पारसपीपल, पाखर.	वड, उंबर, अश्वत्थ पायरी, प्लक्ष
पंचगव्य	गोमूत्र, गोबर, गोदु-ग्ध, गोदधि, गोघी	गोमूत्र, गोमय, गोदधि, गोदुग्ध. गोघृत,
पंचलवण	सांभरनोन, सेंधानोन, संचरनोन, सामुद्र-नोन, विडनोन.	सांभर, सैंधव, मीठ, संचळमीठ, सामुद्रमीठ, बिडलोण
पंचापलवण	निमक लाहोरी, निमक संग	पंजाबी मीठ
पंचामृत	गोदुग्ध, दधि, घी, शहद, शकर.	गोदुग्ध, दही, तूप, मध, साखर
पंचाम्ल	अम्लवेत, अमली, जंभीरी, निंबु, बिजोरा.	चुका, चिंच, जंबीर, निंबु, महाळुंग.
पत्र	तेजपात	तमालपत्र
पथ्या	हर्र, हरड़	हिरडा
पद्म	कमल	कमळ
पद्मबीज	कमलगट्टा	कमलाक्ष

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
पद्माक्ष	पद्मकाष्ठ	पद्माख
पर्पट	पित्तपापडा	पित्तपापडा
पलाशी	कचूर	काचरी
पाचि	नीलम याकूतलकबुद	पाचू
पातालगारुडी	भूपाडल	लाहानवेल
पारद	पारा	पारा
पारिभद्रक	कडुनिंब	कडुलिंब
पिचुमन्द	नीम, नीमड़ा	कडूनिंब
पुटिनी	फेनी	फेणी
पुनर्नवा	साठा रक्त श्वेत वसु	पुनर्नवा घेंटुळी
पुनर्वसु	बांस वेणु	वेळु
पुष्करमूल	पोहकर-मूल	पोखरमूळ
पुष्य	पीपल	पिंपल
पूतना	हर्र, हरड़	हिरडा
पूर्वा	टेसूका वृक्ष	पळस
पूर्वाभाद्रपदा	आंब	अंबा
पूर्वाषाढा	बेत	वेत
प्रपुन्नाट	कंकेरा	टाकला
प्रवाल	मूंगा, वनुमास	पोवळें

फ.

फणिका	फेनी	फणी

ब.

बदर	बेर कनेर	बोर
बदरीफल	हतबेर, तुकमदल	बोर
बहुफली	सांफली, कुलफली	मोंपली
बालहरीतकी	हरजोड, हरजोडा	बालहिरडा
बिंबिका	मामाकाकडी, तुंडोली	तोंडली
बब्बुलक्षीर	बबुलका दूध, अकाकिया	बाभलीचें दूध
बब्बुलनिर्यास	गोंद बबूलका जमगा, यंतम	बाभलीचा डिंक

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
बृहत्पंचमूळ	बेलमूल १ रिंगणीमूल २, पाठामूल ३ काश्मीरीमूल ४ स्योनाकमूल ५	बेलमुळ १ रिंगणीमूळ २ पाठामूळ ३ काश्मीरीमळ ४ स्योनाकमूळ ५
बृहती	लक्ष्मणा, शंगशकुन	रिंगणी
बृहती कटुका	जंगली बेंगन	डोरली

भ.

भद्रयव	इंद्रजों	इंद्रजव
भल्लातक	भिलावाँ	बिब्बा
भार्गी	भारंगी	भारंगमूळ
भूमिजचंपक	भूमिचंपा	भुईचांफा
भूमितनय	भुईतरवड, सोनामुखी	भुईआंवळी,
भृंगराज	भांगरा, जलभांगरा	माका

म.

मकुष्ठक	मोठ, मासहोदि	मठ
मत्कुण	खटकिरवा, सर्षाक	ढेकूण
मत्स्य	मच्छी माही	मासळी
मदनफल	मैनफल	गेळफल
मदिरा	मद्य	मद्य
मद्य	शराब, दारु,	दारू
मधु	शहेत शहद मधु	मध
मधुरत्रिफला	अनार १ खजूर २ शिवेंका फल ३	मधुरत्रिफला
मधूर	मुहरी	मधुक
मरिच	काली, मिरी, गोलमिर्चीं	मिरी
मलापकर्षक	सावन	साबण
मसूर	मसूर	मसुर
महाविष	शंखिया	सोमल
माक्षिका	मखी, मगस	माशी
माजूफल	मायफल	मायफल
माणिक्य	मानिक	माणिक

संस्कृत	हिन्दी.	मराठी.
मारीचिक	मीरच, काला मिरचा	मिरी
माष	उड़द	उडीद
मीन	मछली वाम मार-माही	मासळी
मुक्ता	मोती	मोतीं
मुद्ग	मूंग	मूग
मुस्ता	मोथा	नागरमोथा
मृगमद	कस्तूरी	कस्तुरी
मेथिका	मेथी, दानें-मेथी	मेथी
मेषशृंगी	मेढाशृंगी	मेढशींगी
मोदक	लड्डू	लाडू
मोदा	अजमोदा	अजमोदा
मौक्तिक	मोती	मोती
मंजिष्ठा	मंजिष्ठ, रोनास	मंजिष्ठ

य.

यव	जव, जौ	सातु, जव

र

रक्त	लाल	लाल तांबडा
रक्तत्रिवृत्	निशोत	निशोत्तर
रक्तापामार्ग	आंधा झाला लटजीरा	आघाडा
रक्ताफुला	बदरी, सोनामुखीं, सनाह	रक्त तरवड, सोनामुखी
रक्तालु	शक्करकंद	साखरलिंबु
रजनी	हलदी	हळद
रत्न	ईलमास, हीरा,	हिरा
रवि	आकडा श्वेत रक्त आक	रुई
रसांजन	रसांजन, रसोत	रसांजन
रालवृक्ष	रालका झाड	राळ
रचना	रेवतचीनी	रेवाचिनीं
रेवती	महुला	मोहाचें झाड

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
रोहिणी	जामुन	जांभूळ
रोहितक	रोहिडा	रोहिडा
रौप्य, रूप्यक	चांदी	चांदी
रौहिषक	रोहीसघास	रोहिष गवत

ल.

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
लक्ष्मणा	सुफेत कटय्यारिंगणी	पांढरी डोरली
लक्ष्मीफल	बेल, बील्ह, बील	बेलफळ
लघु पंचमूल	शालपर्णी, पृष्ठिपर्णी बडी-कटियाली, छोटी कटियाली गोखरू,	शालपर्णी, पृष्ठिपर्णी, मोठीरिंगणी, लघुरिंगणी गाखरू.
लघ्वी वृहतिका	रिंगणी, भुईरिंगणी,	लघुडोरली
लज्जावल्ली	लजालू,	लाजाळू
लप्सिका	लाप्सी	लाप्शी
लवण	निमकसांभर	सांभर लोण
लवंग	लौंग, मेखल	लवंग
लशुन	लहसन, सेर	लसूण
लाक्षा	लाख, लाक	लाख
लाक्षाधान्य	लोवेय्या, लाखधान	लाखधान्य
लाजा	धाण्या, फुल्या	लाह्या
लोहकिट्ट	चरक, आहन, मंडोर, हिंफार, लोहाको मल	लोखंडाचें कीट
लोहचूर्ण	लोहोचुन, तफाल, आहन्	लोखंडाचा कीस
लोध्र	लोध, पठानी लोध	लोध
लोह	लोहा, आहन्	पोलाद, लोखंड

व.

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
वटवृक्ष	वड	वड
वत्सनाभ	जहरमोहरा	वचनाग
वत्सादनी	झूपाडल	तहानवेल
वरांग	तज	दालचिनी
वराहकंद	वराहकंद	डुकरकंद
वायविडंगा	कृमीदाना	वावडिंग

संस्कृत.	हिंदी.	मराठी.
विजया (हरिप्रिया)	भांग, भंग	भांग
विडंग	वायविडंग, विडंग	वावडिंग
विशाखा	देवनल वैहकल	वेहकळ
वेतःखया	कस्तूरी	कस्तूरी
वैजयंती	जंगली तुलस	रान तुळस
वैणवा	वासलोचन	वंशलोचन
वैणवी	अदरख	आलें
वंशवेणू	बांस	वेलू
व्याघ्रनख	बाघके नख	वाघनख

श.

शठी	कचूरा	कचोर
शंखजीरक	संगजीरा, संगजरात	शंखजिरें
शंखपुष्पी	शंखाहुली, शांखु	शंखपुष्पी
शण	सण, सीन, लावना	सण
शतावरी	शतावर (छोटी, बडी) नारकांटेकी जड.	शतावरी
शरपुंखा	सरफोंक	शरपुंखा
शर्करा	शकर खांड	साखर
शालपर्णी	सालवन, शांभाक	शालपर्णी
शाल्मली	सेंबलका मूसला	सांवरीचें झाड
शिग्रु	सहिंजन	शेवगा
शिरीष	शिरस, शीरसम	शिरस
शिलाजतु	शिलाजीत	शिलाजीत
शिलारस	शिलारस, सलारस	शिळारस
शिंशपा	शीसम	सिसव
शुक्ति	सींप, गोसमाही	शिंप
शुकराग	हरारंग	पोपटीरंग
शापालिका	पालख	शिवापालक
शृंगाटक	सिंघाड़ा	शिंगाडे
शृंगवेर	आर्द्रक	आलें
शृंगी	काकड़ाशृंगी काकड़शींग	काकडशिंगी

संस्कृत.	हिन्दी	मराठी.
श्वेतचिल्ली	सुफेदचील	पांढरीचील
श्वेतबृहती	सुफेद, कटय्या, रिंगणी	पांढरी डोरली
श्वेतधान्य	साबूदाना	साबुदाणे
श्वेतमृत्तिका	खड़ी	खडू
श्लेष्मातक	भोंकर	भोंकर

ष.

षडुष्ण	पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, मिरच, सोंठि	पिंपळी, पिंपळमूळ, चवक, चित्रक, सुंठ, मिरें.
षड्ग्रंथिका	पीपलामूल	पिंपळमूळ

स.

सक्तु	सत्तू	सातु
सहतूत	तूतीय्या, दोदीचा,	सहतूत
सरपुष्पा	सोंफ	बडीशेप
सदासुवासिनी	गुलाब	गुलबास
समुद्रफल	समुद्रफूल	सागरगोटा
समुद्रशोष	समुद्रशोष	समुद्रशोष
सप्तोपविष	अर्क, थोरका दुध, कल-लावी, दोनों कन्हेर, धतूरा, कुचला, बचनाग	रुई, शेर, कळलावी, दोनी कण्हेरी, धोतरा, कुचला, बचनाग.
सरस्वती	ब्राह्मी	ब्राह्मी
सर्वक्षार	जो मिलें सो सबखार	सर्वखार
सर्षप	सिरसों, सरस,	मोहरी
सर्षपशाक	सरसूंकी भाजी, तगासर्शफ	मोहरीची भाजी
सामुद्रलवण	नीमक, खारीनिमक	मीठ
सालिम	सालमिश्री, खय्याळूं	सालिप
सिंधुज	सेंधानोन	सैंधव
सिंहवदना	अडूसा, आरुसा	अडुळसा
सिंहा	बड़ीकटय्या (कट्याळी)	धांत्रा
सीताफल	सीताफल, शरीफा	शिताफळ

संस्कृत.	हिन्दी.	मराठी.
सुखदर्शन	कोलीकांदा, प्याज, दस्ती	कांदा
सुगंध त्रिफला	सुगंधत्रिफला (लवंग सुपारी, जायफल)	सुगंध त्रिफळा
स्निग्धदारु	चिकना देवदारु	तेल देवदार
सुगंधिपुष्प	मोलसारी	मोगरी
सुरद्रुम	देवदारु देवकाष्ठ	देवदार
सुरसा	तुलसी	तुळस
सुवर्ण	सोना, सोनाजरद	सोनें
सेवंती	सेवंती, गुलमसकीर	शेवंती
सुरा	मद्य	दारू
सुवर्णजाति	सुवर्णजाति	सोनजाई
सुवर्णमाक्षिक	सुवर्णमाक्षिक	सुवर्णमाक्षिक
सैंधव	सेंधानोन	सैंधव
सौवर्चला	संचरनोन, कालालूण	संचळमीठ
सौवीर	शुरमा	सुरमा

ह.

हराप्रिय	धतूरा	धोत्रा
हराप्रिया	भाँग, भंग	भांग
हरिद्रा	हलद	हळद
हर्य	बेहेडा, व्याहा	बेहेडा
हवि	घी	तूप
हंसपादी	परसावश्या, हंसराज	हंसपादी
हस्त	पीलीचमेली	पिंवळी चमेली

अथ शिवनाथसागर-अनुक्रमणिकाप्रारंभः ।

सं.	विषय.	पृष्ठ.

सं.	विषय.	पृष्ठ.

इति शिवनाथसागरकी अनुक्रमणिका समाप्ता ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

हरिप्रसाद भगीरथजीका

पुस्तकालय,

कालकादेवीरोड-रामवाडी,

मुम्बई।

वैद्य महाराज
वैद्यराज
शिवनाथ सिंह
पाकजातगर्भ.
फुप्फुस.

सीधा भाग.
पृष्ठ भाग
गर्भाशय.

सतत ज्वर मधुरा

तृतीयज्वर
ये रोगी हैं
चतुर्थ ज्वर
रोगी है.

दूत.
दूत
पापी रोगी.
दूत
दूत
धर्मी रोगी

बड़ा शरीर पींजरा.

जलंधररोगी
गर्भाशय चित्र
जुगळ गर्भ
अंडवृद्धीरोगी.
शेषराजका खेला.

शिवनाथ सिंह राजपूत डॉक्टर

काल ज्वर का भयंकर स्वरूप.
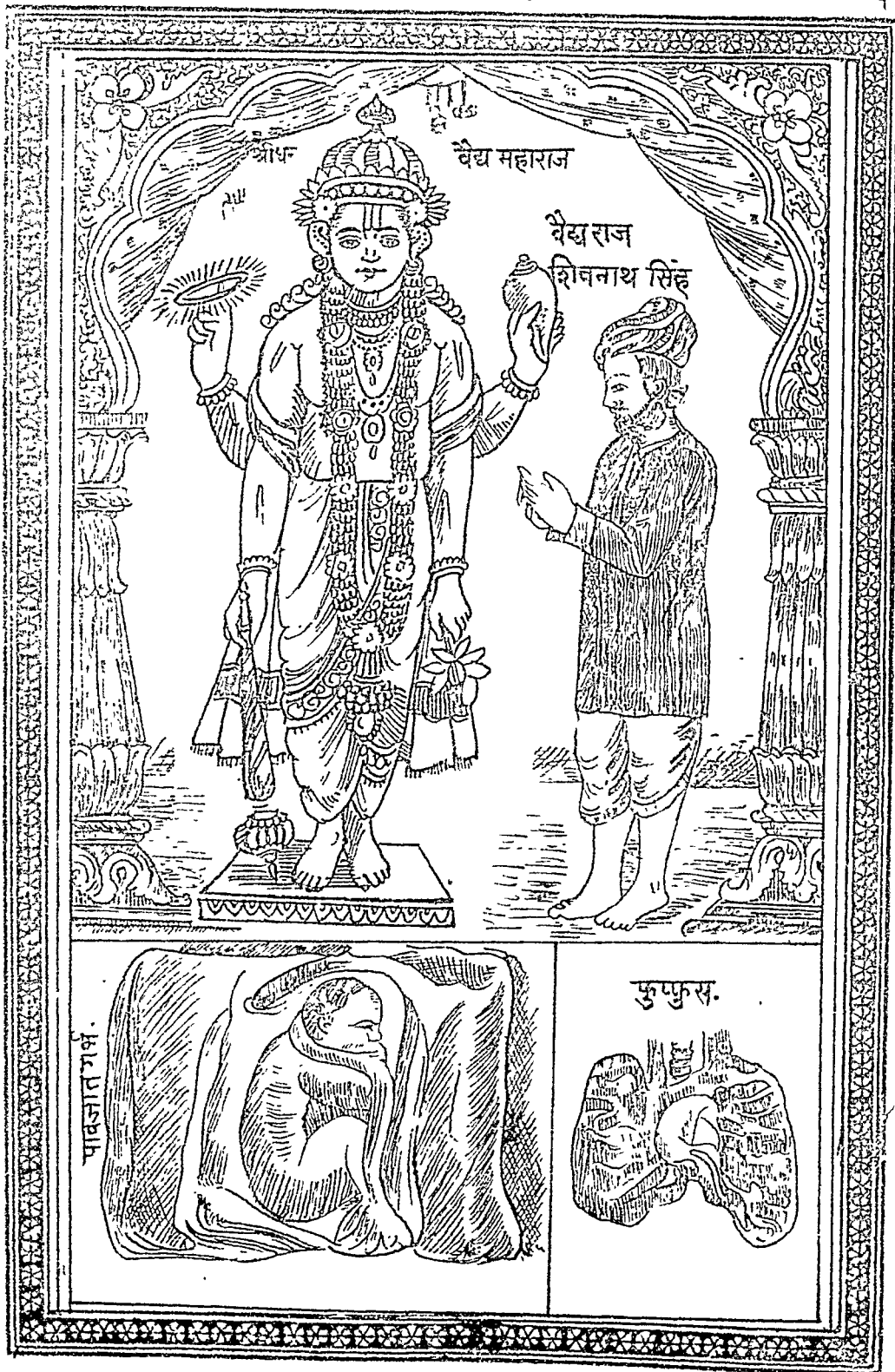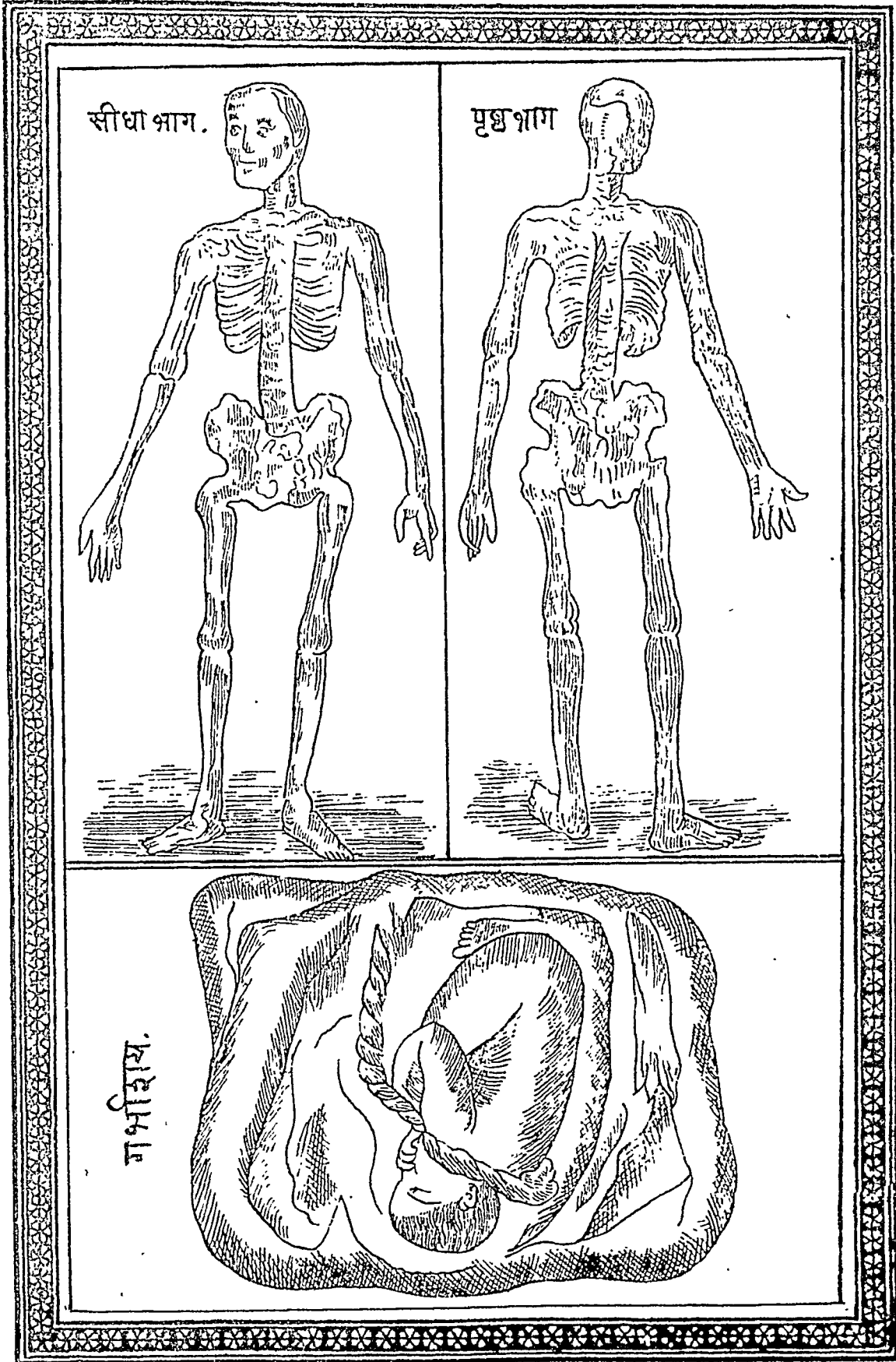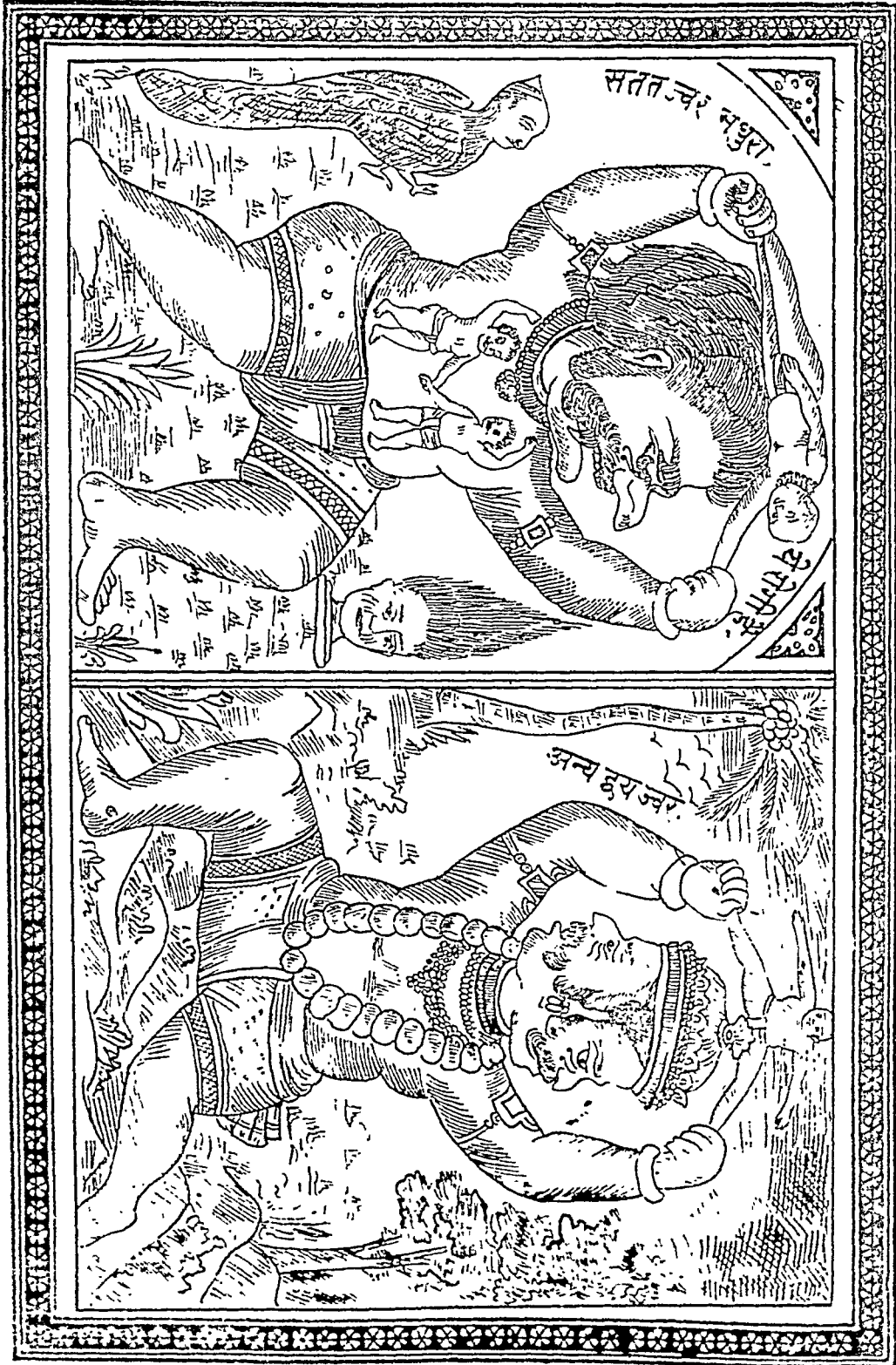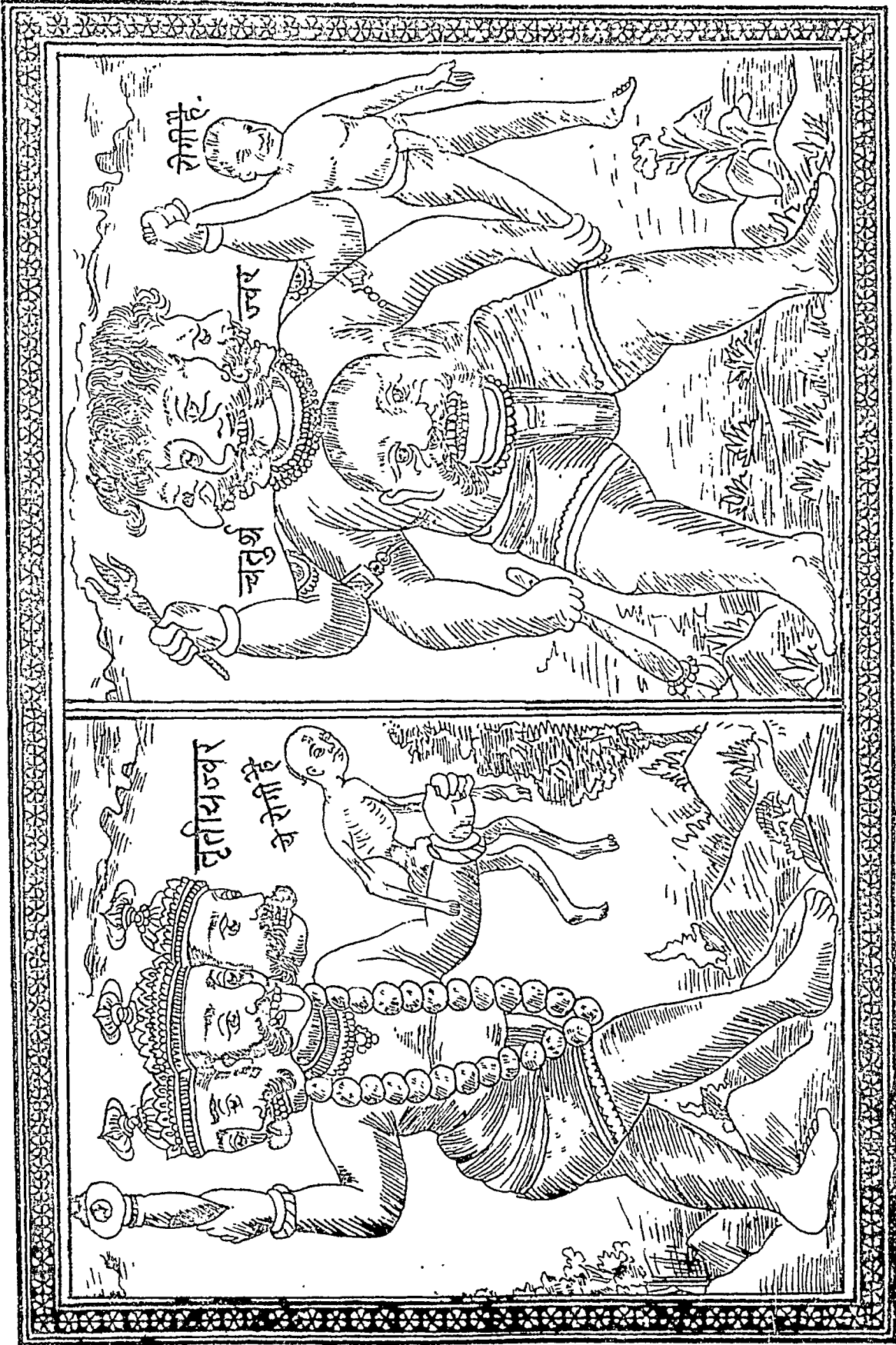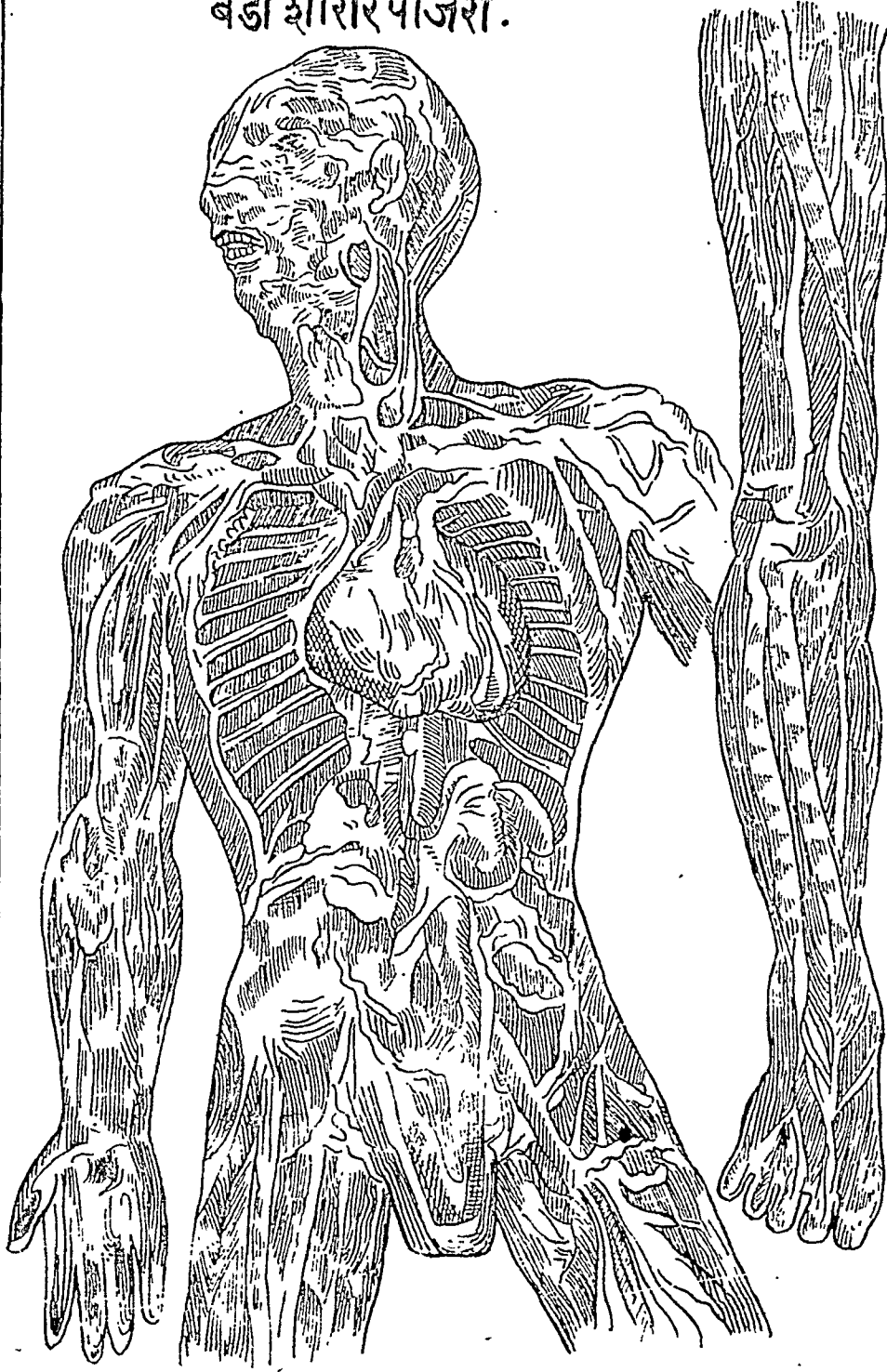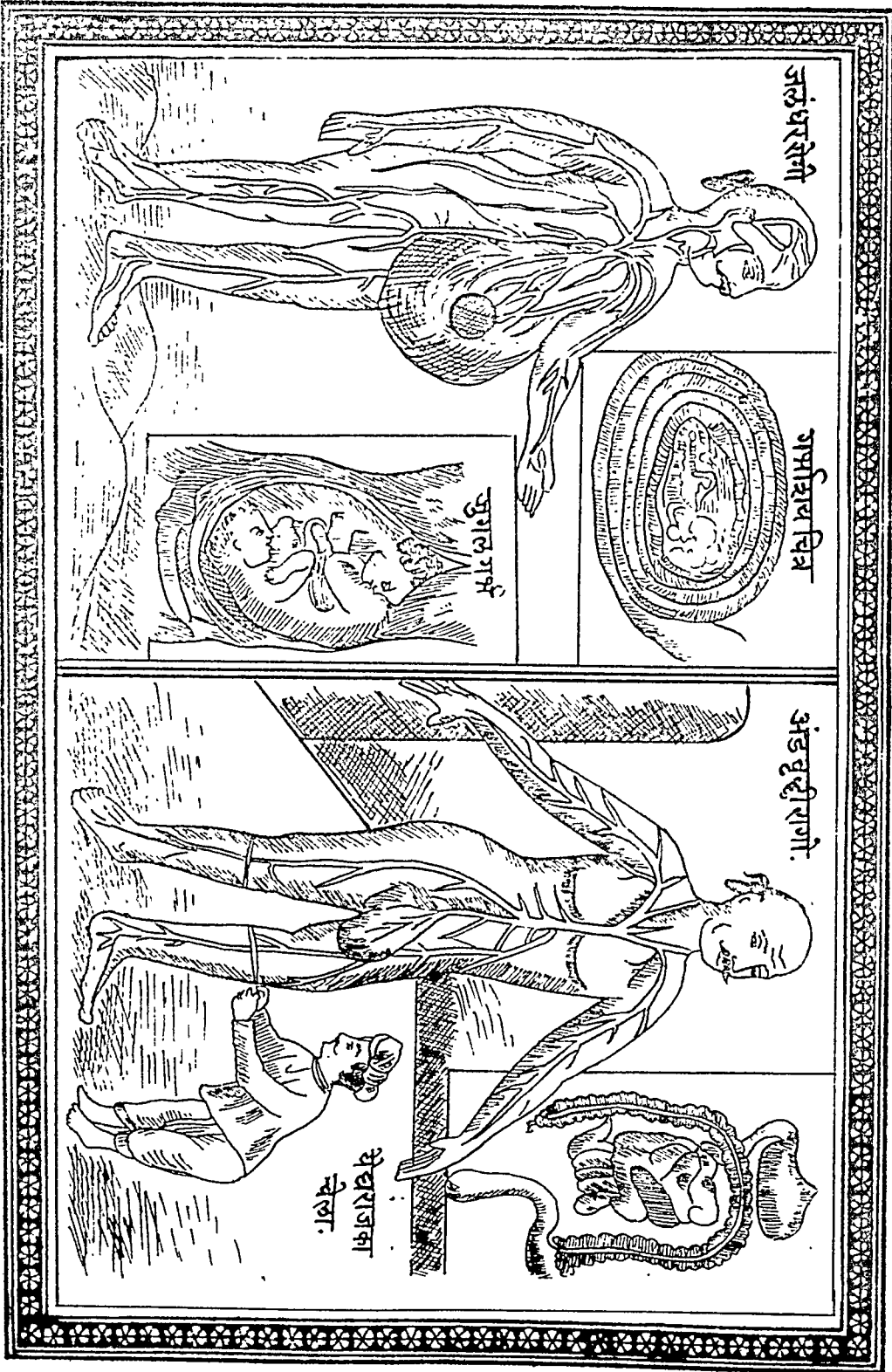
श्रीः ।

शिवनाथ-सागर

अर्थात्

वैद्यराज धन्वन्तरिसंहितासार भाषा-प्रारम्भः ।

अथ मंगलाचरण ।

छप्पय-गौरीसुवन गणेश सकल ऋधि सिधिके दाता ।
नाशो अशुभ हमेश विघ्नटारन सुरत्राता ॥
जय गिरिजानंदन कृपालु बुद्धि द्रुत कारी ।
जय सुमुख चारु गजकर्ण एक दंतहु शुभकारी ॥
सदा होय मंगल सुदिन गजानंद करो आनंद ।
कृपा करो शिवनाथपै मोदक भोग करंद ॥ १ ॥

अथ श्रीसरस्वतीजीकी स्तुति ।

छप्पय-सरस्वती शारदा महामाया विद्याकी दाता ।
ब्रह्माणी चामुंडा वैष्णवी किरपा करो अजीता ॥
जय उमा यशस्विनी आप जय शंकरि महमाई ।
अमृतकला कौमारि सर्व मंगल कर माई ॥
पार्वती दुर्गा संकटनाशिनी लक्ष्मी माय ।
कृपा करो शिवनाथ पै ग्रंथका भेद बताय ॥ २ ॥

स्तुति श्रीनारायणजीकी ।

छप्पय-त्रैलोकीके नाथ जयति जगदात्मा स्वामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर अलख घननामी ॥
ज्योति स्वरूप भगवान निराकार निरंजन ।
आदिपुरुष दीनदयालु जय दुष्टदलन ॥

केशव मूर्ति भक्तवत्सल जगजीवन जगन्नाथ ।
शिवनाथसिंह विनती करे कृपा करो व्रजनाथ ॥ ३ ॥

छप्पय-माधव मुकुंद अविनाशी जय गिरिवरधर ।
जय वैकुंठनाथ लक्ष्मीरमण कल्याणकर ॥
गोपीनाथ रुक्मिणी इच्छापूरण घन ।
पाण्डुपुत्र प्रतिपाल मुरारि शिशुपालहनन ॥
सांदीपन गुरुके पुत्रको यमपुरसे लायो आप ।
शिवनाथसिंह विनती करे मेटो सकल त्रिताप ॥ ४ ॥

दोहा--आदिपुरुष अविनाशिको, प्रथम नवाऊं शीश ।
विघ्नविनाशन गणपती, शारद और महीश ॥५॥
विद्या ज्ञान विवेक दो, अरु ग्रंथनमें बुद्ध ।
वैद्यक ग्रन्थ सब मथन कर, करूं जु कविता शुद्ध ॥ ६ ॥
ह्यां परिभाषा छः प्रकारकी, ताको सुनो विचार ।
दवा लावन युक्तीकरण, वैद्य लक्षण ऋतु दोष निहार ॥ ७ ॥
पांच समय दवा देनका, हवा देशको सार ।
दवा बदल दूजी दवा, ले प्रतिनिधिको सार ॥८॥

दवा गीली या सूखी या नयी या पुरानी लेनेका विचार ।

छप्पय-सब कारजके बीच दवाइयां नवी लेलीजे ।
बायविडंग पिप्पल घणें गुड़ सहत घृत ये छः जूनी लीजे ॥
गिलोय कूड़े छाल अडूसा काला असगंध सतावर ।
कोराठा बड़ी सौंफ प्रसारणी ये नौ ताजी ले धर ॥
नोऊ सदा आली लीजे दूनी मत ले लेइ समान ।
नव विना गीली होय तो दूनी ले शास्त्र प्रमान ॥ ९ ॥

दोहा--कालनियम जहँ है न वहँ, जानो प्रातःकाल ।
दवा अंग बोल्यो नहीं, लेय दवाका मूल ॥ १० ॥
जहां तोल भाख्यो नहीं, तहां सभी सम लेय ।
पात्र नाम न कह्यो जहां, मृण्मय तहँ योजेय ॥ ११ ॥
एक दवा दो वक्त हो, तो दूनी कर लेय ।
शिवनाथ सिंह ऐसा कह्यो, याबिधि सब योजेय ॥१२॥

चूर्ण लेह आसव स्नेहमें, सुपेद चन्दन डाल।
काढ़ा लेपादिकविषे, चन्दन लाल सुडाल ॥ १३ ॥

दवाइयोंमें गुण रहनेकी मुद्दत।

छप्पय–बरस एकसे घटे काष्ठदवाको तेज सदा मिल।
दो महीनासे चूरणको गुण कम हो निष्फल ॥
गोले आंवलेको गुण एक बरस रहे यों जान।
काष्ठादिक पाक बरस एकमें हीन होय प्रमान ॥
घृत तेल मास चारमें सदा सो निष्फल होय।
धातू रस आसव अफीम शराब इन जूनेमें गुण होय ॥ १४ ॥
दोहा–रोग विरुद्ध गणमें दवा, हो तो काढ़ ततकाल।
रोग हनै जो गण बिनै, तो स्वबुद्धिसे डाल ॥ १५ ॥
उष्ण दवा होवैं सदा, विद्याधरी पर्वत जान।
हिमालय पर्वत हेम हो, जैसो जमी प्रमान ॥ १६ ॥

दवा लानेका समयविचार।

छप्पय–प्रातसमै जलदी उठ मन एकाग्र कीजे।
सुचित्त मनको करे वार मुहूर्त देखीजे ॥
सूरज शीश नवाय ध्यान शंकरको हृदय धर।
छाल मूल जो लेय उत्तर दिशासे मुख मौन धर ॥
उदई भ्रष्ट जगापै जलसमीप मशानपै होय।
कालर चोहटे कीड़ो लग्यो अग्निदग्ध मत लेय ॥ १७ ॥

दवा जिस ऋतुमें लेना हो उसका प्रमाण।

छप्पय–क्वार कार्तिक मास दवा रह रसपरिपूरण।
सब कारजके वास्ते दवा राखो तब सो जण ॥
उलटी जुलाब वास्ते दवा ग्रीषम ऋतुमें लीजे।
बड़े झाड़के मूलकी छाल योजीजे ॥
छोटे झाड़की मूल सहित पांचौ अंग योज कुशाल।
पीपल बड़ जामून आंब आदिकी छाल लें ले तत्काल ॥ १८ ॥

दोहा-भिलावां खैर असन मोहो, बंबूलकी लीजे अन्तरछाल ।
तालीस तमाल ग्वारपाठा, तांबूल काले पान कुसाल ॥ १९ ॥
हरड़ बहेड़ा आंवला, बेर आदि फल लेय ।
गुलाब धाये पलस मोगरा, यांके फूल योजेय ॥ २० ॥
थोर निवडुंग मदारके, ले ले दूध यों जान ।
शिवनाथ सिंह ऐसा कहै, या विधि औषधि आन ॥ २१ ॥

अथ ऋतुविचार ।

चौपाई-ज्येष्ठ अषाढ़ ग्रीष्म ऋतु जान। ग्रीष्म वायुसंचय हो मान ।
श्रावण भादों वर्षाऋतु होय । या ऋतु बादी कोपे जोय॥२२॥
वर्षा ऋतु पितसंचय होय । क्वार कार्तिक कोपै सोय ।
अगहन पौष हेमन्त ऋतु जान। यांमें कफसंचय हो मान॥२३॥
माघ फाल्गुन शिशिरऋतु होय। कोपै वायु शास्त्रमें जोय ।
चैत्र वैशाख वसन्तऋतु होई ।वसन्तऋतु कफ कोपै सोई २४॥
या विधिसे ऋतु करो विचारा। दोष हवाको तामें सारा ।
देशदोषका भेद बताऊं। सवैया छंद में कहे सुनाऊं॥२५॥

अथ देशका विचार ।

सवैया-दक्षिण पश्चिम सिंधुकिनारपै पित्तको कोप सो होत सदाई ।
पूर्वसमुद्रके तीरपै गर्म अधिक सो रहत है जान बताई ॥
उत्तर देशमें शीत घनो है सह्याद्री पर्वत पित्त जनाई ।
परबत ऊपर कफ घनो गोदावरी किनारे त्रिदोष समाई ॥ २६ ॥
तापीके तीर वो दक्षिण भागपै वात अधिक सो होत सदाई ।
कावेरी दक्षिण गर्मी विशेष है तुंगभद्राकिनारपै पित्त बताई ॥
कृष्णाके तीरपै वात अधिक है रेवाके दक्षिण पित्त जनाई ।
महीपै पित्त पारबतीसो नर्दापै त्रये दोष समान हैं ग्रन्थोंमें गाई२७॥

वैद्यलक्षण ।

छप्पय-वैद्यशास्त्र सम्पूर्ण पढ़हि सेवा करि गुरुसे ।
औषधविधि सम्पूर्ण क्रिया जाने सब सुखसे ॥

यशस्वी निस्पृह धैर्यज्ञान अरु होत दया वंत ।
गर्वरहित धार्मिक आलस्यरहित और भगवतभक्त ॥
वैद्यशास्त्रपे विसवास होय ऐसा वैद्य निधान ।
शिवनाथसिंह ऐसा कहै ताही वैद्य बखान ॥ २८ ॥

दोहा–सौ दवा जाने एक रोगपै, ताको वैद्य बखान ।
दवा तीनसौ जाने एकरोगपै, सो वैद्यराज समान ॥ २९ ॥
हजार दवा जाने एक रोगपै, सोई धन्वंतरि वैद्य ।
एती बात जाने नहीं, सोई वैद्य निषध्य ॥ ३० ॥

पांच काल दवा देनेके ।

दोहा–वैद्य रोगीको दे दवा, निश्चय प्रातहि काल ।
रस कल्क काढ़ा फांट हिम, दीजे प्रातहि काल ॥ ३१ ॥
पित्तको जुलाब दीजिये, कफको उलटी देय ।
लेखन दोष द्रवीकरण, प्रातःकाल उठ लेय ॥ ३२ ॥
अपान वातसे रोग हो, भोजन आदि दवाई देय ।
मुख अरुची प्राणवातको, भोजनसंग दवाई लेय ॥ ३३ ॥
नाभि संबंध कोई रोग हो, अग्निमंद जो होय ।
समान वातके वासते, भोजनमध्य दवाई देय ॥ ३४ ॥
व्यान वातके कोपसे, सर्व शरीरमें पीड़ा होय ।
ताको दे दवा भोजनके, अंतमें निदान है जोय ॥ ३५ ॥
हुचकी आक्षेपक कफ बादिको, नियम बताऊं तोय ।
कछु भोजनके आदिमें, कछुक अंत भक्षेय ॥ ३६ ॥
उदान कोपे कंठमें, हो स्वरभंगादिक रोग ।
सायं भोजनग्रासमें, दवा देनेको योग ॥ ३७ ॥
प्राणवात हृदय स्थानमें, दवा देनेका जोय ।
उलटी हुचकी श्वासपै, बार बार योजेय ॥ ३८ ॥
आंख कान मुख नाकपै, दवा देनको नेम ।
पाचन सम्मनरूपसे, सोते समयको टेम ॥ ३९ ॥

एक आधी दवा मिले नहीं अथवा नाममें फरक आ जाय तो उस दवाके बदले दूसरी दवा लेते हैं, उसीको प्रतिनिधि कहते हैं, उसका सब सार चौपाईयें लिखता हूँ सो बांचनेसे सहज ध्यानमें आ जायगा ।

अथ प्रतिनिधि ।

चौपाई—दवा जातसे मिले न जोय । गुण लखके दूजी ले देय ।
अन्तर्मार्जनी नाहीं होय । अजवाणके अजमोदा लेय ॥ ४० ॥
अतिविषको जो नाहीं पावै । नागरमोथा लेय मिलावै ।
अभ्रकसत्व नहीं जो होय । कांतिसार उत्तम योजेय ॥ ४१ ॥
अष्टमूत्र जो नाहीं पावै । गोमूत्रहि ले ताहि मिलावै ।
आहिस्रा मानकंद सायमूल । तीनोंमेंसे मिले सो डाल ॥ ४२ ॥
अमचुर खट्टी दाडिम सयजोय । अम्लकांजी गुण एकहि होय ।
केला ना तो जँगली केला । केशर नहीं तो कुसुम्भ मेला ॥ ४३ ॥
खैरछाल नहिं तो निंबछाल । गजपीपलके पीपलमूल ।
गेहूँ नहीं नांचणी लीजे । गुड़ नाहीं गुड़काकी दीजे ॥ ४४ ॥
चंदन खस और हु कापूर । तीनोंमेंसे एक ले डार ।
चबक नहीं गजपीपल लेय । चित्रक दंति जयपाल योजेय ॥ ४५ ॥
जावत्री ना लौंगहि डाल । रिंगणी नाहीं तो निंबछाल ।
धनियां नहीं तो जीरा लीजे । जीवक ऋषभ भूकोला दीजे ॥ ४६ ॥
अम्लबेंत नहिं चूका लेय । आसव नहिं तो मद्य योजेय ।
ऋद्धि वृद्धि वाराही कंद लीजे । महाबला यामें हो सो दीजे ॥४७॥
शीतलचिनी इलायची लेय । जावत्री गुण एक योजेय ।
कंटकारी नहिं ले मोति रिंगणी । कडूजीरा न स्याहजीरा लेनी ४८
धमासा न तो दुरालभा लीजे । धाय फूल ना तो महुआफूल दीजे।
नखला ना तो लौंगही डार । नागकेशरके कमलकेशर ॥ ४९ ॥
कुमुदफूल ना तो नीलोत्पल लेय । पित्त ना तो मांसरसही चले।
लींडी पीपल ना तो मीरी ले काली। पोकरमूल ना तो कुष्ठ ले डाली
बकुल कल्हार कमल ही जान । इन तीनोंको एक प्रमान ।
बहिर्मार्जनी अजमो अजमाण । बावची टांकलभिलावा चित्रकजान

कंदनाम सूरन कंद लीजे। कस्तूरी ना जावत्री दीजे।
काकोली ना असगंध लेय। क्षीरकाकोली ना शतावर देय॥ ५२॥
कांत लोहो तीखे पोलादही जान। ये तीनोंको एक प्रमान।
कपूर चंदन और रक्त चंदन। तीनोंका गुण एके जान॥ ५३॥
काश्मीरी शीवन महुआ जान। इन तीनोंको एक ही मान।
मोती ना तो शुक्तिही लीजे। मोरवेल ना दालचीनी दीजे॥ ५४॥
रक्तचंदन ना खस ले डाले। रसांजन ना दारुहलदी चाले।
आकदूध ना आकपानरस लेय। रौप्य ना सारके माक्षिक योजेय॥५५॥
लक्ष्मणा ना तो मोरशिखा लीजे। वग्चा नहीं तो सांवोई दीजे।
वटाणा ना तो मटरा ले डाले। बाराहीकंद ना तो डुकरकंद चाले॥५६॥
खश ना तो नागरमोथा लीजे। वच्छ मोरवेल कोलिंजन दीजे।
वंशलोचन ना तो इलायची लेय। मुलेठी ना तो धायटीफूल लेय॥५७॥
तगर ना तो ले कुष्ठ कुलिंजन। चावल जवार दे भात समान।
तालीसपत्र स्वर्णतालीस पत्र ले। तूरी ना तो कुलथी मिले सो चले५८
जूनो घृत ना तो ताजा घृत लेय। दही ना तो छाछ योजेय।
काष्टहलद ना तो हलद चाले। अजा मेषी गऊ दूध एक लेले॥५९॥
दाख खजूर शीवण ये जान। इन तीनोंको एक प्रमान।
बृहती ना तो मोतीरींगणी ले। भद्रमोथा ना तो कपूर चले॥ ६०॥
भारंगमूल ना तो रींगणीमूल। सहत नहीं तो ले जूनो गूल।
मयूरशिखा ना तो शिवा लीजे। उड़द ना तो मसूर योजीजे॥ ६१॥
माक्षिक ना तो शुद्ध ले गेरू। मीरी लौंग होवे सो डारू।
मूंग न तो ले मोठ यों जान। मेदा महामेदा ना तो मुलेठी आन॥
असगंध शतावर प्रसारनी। तीनोंमेंसे मिले सो ले लेनी।
शाखा ना तो दूधिया लीजे। पांचलोन ना तो सैंधव दीजे॥ ६२॥
मिश्री ना तो ले जूनो सहत। अद्रक ना तो सुंठ योजेत।
हेम ना तो स्वर्णमाक्षिक लीजे। माक्षिक ना तो सार योजीजे॥ ६३॥
सोरठी मट्टी ना तो फिटकड़ी लेय। हरड़ा ना तो आंवला चलेय।
हीरा ना तो वैक्रांत लीजे। खार ना तो अपामार्गको दीजे॥६४॥

दोहा-तीन दोष गुण पंच तत, छः रस करो विचार ।
दवा बदल दूजी दवा, तरखइ ज्ञान विचार ॥ ६५ ॥

भावार्थ-ये प्रतिनिधि जो लिखे हैं उसका सारांश यह है कि जो देश-भाषासे अथवा नामसे दवामें फरक आवे वा मिले नहीं तो गणोक्त दवाके बदलेमें दूसरी दवा डालके काम चलाना, ऐसा सर्व शास्त्रकर्ताओंने और पुराने वैद्य हकीमोंने लिखा है, उसे हमने चौपाईमें खुलासा करके लिखा है॥

छः रसोंका विचार ।

छप्पय-मधुर रस होत है घृत शक्कर गुड़ जानो ।
खट्टा रस निंबू विजौरा आम्ली आदि हो मानो ॥
खारा रस सेंधव लवणादिक होत सदाई ।
तीक्षण रस होत पीपल काली मिर्च अकलकराई ॥
कडवा रस आपे कडुनींबको और चिरायतादिक जान ।
तुरुस रस है फिटकरी और त्रिफलादिक ले मान ॥ ६६ ॥

दवाका स्वभाव गुण ।

दोहा-पांच अवस्था दवामें, ताको कहूं विचार ।
रस वीर्य विपाक प्रभाव शक्ति, यही पाँच हैं सार ॥ ६७ ॥

पांच तत्त्वोंसे छः रसोंका विचार ।

दोहा-पृथिवी पानीसे मधुर रस, पैदा होत सदाइ ।
अग्नि भूमि दो तत्त्वसे, खट्टा रस हो भाइ ॥
वारि अग्नि दोउनसे, खारे रसको जान ।
आकाश हवा मिल तीक्ष्ण रस, पैदा होया भान ॥
कषाय हवा अग्निसे होत है, कडुओ रस ये शास्त्र प्रमान ।
पृथिवी हवासे कषाय रस ये छः रस हो जान ॥ ६८ ॥

पंचभूतके गुण ।

सवैया-पृथवीमें गुण जड़ही होत है पानीको गुण है स्निग्ध सोहाई ।
अग्निको गुण तीक्ष्ण होत जु हवाको गुण सो रूक्ष सदाई ॥
आकाशको गुण हलकोई होत जु पंचभूतको गुण यों जान बताई।
सद्रव मृदु श्लक्ष्ण इत्यादिक शिवनाथ यों शास्त्रमें ऐसा बताई६९॥

वीर्यगुण।

दोहा—वीर्यप्रायसे द्रव्य है, एक गर्म एक शीत।
स्निग्ध रूक्ष विशद पिच्छिल, मृदु तीक्ष्णादिक मीत॥ ७०॥

सवैया—मधुर वो खारसों रसको पाक मधुर यों होत है जान बताई।
खटाईको पाक सो खाटोई होत है बादीको सम करै जु सदाई॥
तुरस रु तीक्ष्ण कटुको पाक हू तीक्ष्ण होत यों जान बताई॥
मधुरसे कफ रु खट्टासे पित्त व तीक्ष्णसे बादी सो कोपे सदाई७१

प्रभाव गुण—आंवलागुण।

दोहा—रस वीर्य विपाक सम हैं, हलका ऐसा जान।
अपने तेज प्रतापसे, दोपत्रयहर मान॥ ७२॥
एक एक दवा प्रभावकी, प्रमिति बताऊं तोय।
सहदेवीके सूलको, बाँध शिखा ज्वर जाय॥ ७३॥
कहां वीर्य कहां विपाक है, कहां शक्ति है जान।
द्रव्य आसरे रह सदा, करै कार्य निज मान॥ ७४॥

चौ०—नीम गिलोय कटु उष्ण है जान। पित्त सम करैं यों निश्चय मान॥
मूला तीक्षण गुण है जोय। कफ वधै गुण स्निग्ध है सोय॥ ७५॥
बृहत पंच मूल तुरत कटु होय। बादी नाशै उष्ण रस जोय॥
सूंठ तीक्ष्ण रस जान सदाई। बादी नाशै पित्त सम भाई॥ ७६॥
खैर छालको प्रभाव है जैसो। कोढ़नाशक गुणही है ऐसो॥
शिवनाथ शास्त्रमें ऐसे गुण जोय। खैरछालमें गुण है सोय॥७७॥

छेःऋतुमें जो दोषोंका कोप और उपशम होता है, उसका विचार—छंद छप्पय।

छै ऋतुसे त्रय दोष कोप सो होत सदाई॥
ऋतु संक्रांती गत सूरजसे होत जनाई॥
बरस एकमें संक्रांति बारा होत यों जानो॥
दो दो संक्रांती मिल ऋतु एक होय सो मानो॥
छः संक्रान्ती उत्तरायण छै दक्षिणायन होय॥
ऋतूभेदसे कोप शम दोष जान यों होय॥ ७८॥

ऋतुपरत्वसे दोषोंका संचय, कोप और उपशम-विचार ।

सवैया—मेषरु वृष होत ऋतुग्रीष्म वातको संचय सो होत सदाई ।
मिथुन कर्क होत ऋतु प्रावृट वायुको कोप सो होत सदाई ॥
सिंह रु कन्या वर्षाऋतु होत जु पित्तको संचय सो होत सदाई ।
तुला रु वृश्चिक होत ऋतु शरद सो पित्तको कोप हो जान बताई७९
धन रु मकर होत ऋतु हेमन्त कफको संचय सो होत यों जानो ।
कुंभ रु मीन ऋतु होत वसंत सो कफको कोप सो होत बखानो ॥
दोषप्रकोप रु साम्यके कारण वैद्य जो शास्त्रमें ऐसो बखानो ।
वेद रु धर्म रु पितृसराधमें शिवनाथ पुरातन है सो चलानो॥८०॥

तीनो दोषोंके प्रकोप होनेका कारण—छंद सवैया।

वातकोपकारण—सवैया ।

लघु सो रूक्ष व सितसो आहार विहार सम ऋतुवदलमांही ।
धन वो भ्राता वियोगमें शोक हो भय चिंता रात्रिजागरण होई ॥
शस्त्रघात रु दंड तडागादि जलक्रीडाभूखमें धातुक्षय होई ।
इतने कारणसे वायु सो कोपत गर्म स्निग्धसे साम्य सो होई॥८१॥

पित्तकोपके कारण—सवैया ।

विदाही रु तीक्ष्ण उष्ण खटाईको खावन अतिहिसे करि राके ।
अग्नि तपै भूख प्यास रोके रात जागत ही दोहो पार समाके ॥
अन्नको पाक होता ही ततक्षण पित्तहि कोपसों होत है ताके ।
शीतमधूरसे सम्मही होत है शिवनाथहू शास्त्रमें ऐसे ही भाके॥८२॥

कफके कोपके कारण—सवैया ।

मधुर स्निग्ध रु शीत रु जड़पदारथ बहुत खात सदाई ।
दिनको निद्रा रु अग्निमंदमें भोजन ऊपर भोजन खाई ॥
शरीरको मेहनत देत नहीं जो काम विना बहु बैठक होई ।
इतनी बातोंसे कफ कोपत उष्ण रु रूक्षसे शांतसो होई ॥ ८३ ॥

स्निग्ध गर्म पदार्थ बादीसे विरुद्ध हैं, भारी और समधातु ठंढी मधुर ये चीजें पित्तसे विरुद्ध हैं। कडू, गर्म, खुश्क ये चीजें

कफसे विरुद्ध हैं॥१॥जो पदार्थ खानेसे जल्दी पचता हो सो लघु है, जैसे चावलादिक॥२॥रूक्ष-शुश्क-चने छबीना फुटानादिक जानना॥३॥अपने खुराकसे कम खानेको मिथ्या आहार कहते हैं॥४॥ औरतकी चाहनाको काम कहते हैं ॥५॥ राई आदिको विदाही कहते हैं॥ ६ ॥ मिर्च, पीपल आदिको तीक्ष्ण कहते हैं ॥७॥ गुड़, शकर आदिको मधुर कहते हैं ॥८॥ घृत आदिको स्निग्ध कहते हैं॥९॥ केला आदिको शीत कहते हैं ॥१०॥ मांस, उड़द, भैंसके दूध आदिको जड़ कहते हैं॥ ८३ ॥

दीपन पाचन दवाइयोंका विचार।

दोहा—बड़ी सौंफ आँव पचाव ही, अग्नि बधावै नाय।
नागकेशर अग्नि बधावही, आँव पचावे नाय ॥ ८४ ॥
आंव पचे अग्नी बधे, ऐसा चित्रक जान।
शिवनाथ शास्त्रमें देख तू, निश्चय यह परमान ॥ ८५ ॥
सम्म दोष कोपै नहीं, कोपै को सम जान।
गिलोय भी ऐसा करै, यही है शास्त्र प्रमान ॥ ८६ ॥

अनुलोमन दवा।

कुपित त्रिदोषको मलसहित, दस्तमें देत निकाल।
हरड़ा ऐसा जानिये, शुद्ध करै तत्काल ॥ ८७ ॥

स्रंसनदवा।

शुद्ध पाक पाचन करै, अशुद्ध देत निकाल।
किरमालाकी सींगको, जानो मगज खुश्याल ॥ ८८ ॥

भेदक दवा।

वात आदि त्रय दोषसे, मल मूत्र बंध जो होय।
ताको भेदन करनको,कुटकी ऐसा जोय ॥ ८९ ॥

रेचन दवा।

खान पान रस ना बनै, कचो पको रह जाय।
ताको पतला कर जुलाबमें, निशोत देत बहाय ॥ ९० ॥

वामनकारक दवाइयां।

पित्त कफ बिगड़े हृदय स्थानमें, ताको देत निकाल।
गेलफल आदिको नेम है, उलटी करै तत्काल ॥ ९१ ॥

संशोधन दवाइयां ।

चौपाई-अपने स्थान दोष संचय जब होय । उलटि नाकसे निकाले सोय ॥
देवडांगर काटे वृंदावन मान । नाकमें नास सुँघावो जान ॥९२॥

छेदन दवाइयां ।

दोहा-दो दो दोष भेला होयके, करें रोग तत्काल ।
छेद करै निजशक्तिसे, जवाखार त्रिकटु संभाल ॥ ९३ ॥

लेखन दवाइयां ।

रस आदि सप्त धातुको, कम करै पतला तत्काल ।
बच शहत गर्म पानी, आदिय देख सम्हाल ॥ ९४ ॥

ग्राही दवाइयां ।

प्रदीप्त करि आँव पचाव ही, हनै कफ गर्म सो जान ।
ग्राही दवागण पीपली, सूंठ जीरादिक मान ॥ ९५ ॥

स्तंभन दवाइयां ।

गुण रूक्ष शीत वीर्य तुरस रस, पाकमें हलकी होय ।
बादीको पैदा करै, कूटा टेंटू आदि सो जोय ॥ ९६ ॥

रसायन दवा ।

जरा रोग दूरी करै, वही रसायन जान ।
गिलोय गूगुल रुद्रवंती, हरड़ा आदि गण मान ॥ ९७ ॥

वाजीकरण दवा ।

धातु बढ़ावै जो दवा, स्त्रीविषय शक्ति बहु देय ।
नागबला शतावर कवचबीज, शकर दूध जानेय ॥ ९८ ॥

धातुवर्द्धक दवा ।

धातुवृद्धि जो अति करै, शुक्ल दवा वह जानि ।
असगंध शतावर मूसली, गोखरू शक्कर मानि ॥ ९९ ॥

धातु चेतन करनेवाली दवाइयां ।

शुक्र धातु चेतन करै, पैदा करै बहु जोय ।
दूध उड़द मगज भिलावांको, आँवला ऐसा होय ॥ १०० ॥

सवैया–शुक्रहि धातुके चेतनही हित कामिनिको अतिशैकर जानो।
धातु वधावन कारण ही दवाईको सो तेज प्रबल है मानो॥
धातु खलल करे रिंगणीफल जंगली बैंगन मत्तिरा जानो।
स्तंभन जायफल अफीम जु शोषक हरड़ा है शास्त्र प्रमानो १०१॥

सूक्ष्म दवा।

दोहा–रोम रोम प्रविशै जो, सूक्ष्म दवा तू जान।
कडू निम्ब सैंधव सहत, तेल आदि ले मान॥ २॥

व्यवायी दवा।

अपक्व सर्व देह व्यापकै, अमल करै बहु जान।
शराब गांजा भांग ये, अफीम आदि गण मान॥ ३॥

विकासी दवा।

संधिबन्ध शीतल करै, शक्ति करै बहु शीत।
सुपारी कोदौ धान्य आदि, गण है सो सुन मीत॥ ४॥

मद्यादि दवा।

तम प्रधान जामें बसे, बुद्धी करै विरुद्ध।
दारू सुरा शराब ही, मद्य आदि सब मद्ध॥ ५॥

प्राणनाश करनेवाली दवाइयां।

व्यवायी विकासी सूक्ष्म दवा, छेदन अग्नै जान।
ये छे गुण जामें बसें, बच्छनाग आदि विष मान॥ ६॥

प्रमाथी दवाइयां।

नाक कान मुख आदिमें, कफ जु बहुत हो जोय।
स्वशक्तिसे पतला करै, बच मरिचादिक सोय॥ ७॥

विषकफादि दवाइयां।

पिच्छिल गुणसे जड़ इहै, शिरा सुस्त कर जान।
दही आदिको नेम है, कफवर्द्धक बहु मान॥ १०८॥

इति श्रीशिवनाथसागरे वैद्यकशास्त्रे युक्तायुक्तविचार १ दवा देनेका काल-नियम २ वैद्यलक्षण ३ दवा लानेका विचार समय ४ प्रतिनिधि ५ रसस्वरूप ६ दवाकी अवस्था ७ रसकी उत्तमता ८ गुणके

स्वरूप ९ वीर्यका स्वरूप १० छः रसकी उत्पत्ति ११
दोषत्रयकोपकारण १२ ऋतुभेदसे संक्रांतिभेद १३
दीपन और पाचन दवाके तेइस गुणोंका जुदा
जुदा भेद-वर्णन नाम प्रथम प्रकरण समाप्त ।

अथ शारीरकज्ञानप्रकरण २

दोहा-शारीरक विन वैद्य सो, होत महाअज्ञान ।
तासे शारीरक कहौं, सुश्रुत शास्त्र प्रमान ॥ १ ॥

शरीरमें रसादि सप्त धातु तथा सप्त स्थान और उनके लक्षण कहते हैं ।

श्लोकाः-कलाः सप्ताशयाः सप्त धातवः सप्त तन्मलाः ।
सप्तोपधातवः सप्त त्वचः सप्त प्रकीर्तिताः ॥ १ ॥
त्रयो दोषा नवशतं स्नायूनां संधयस्तथा ।
दशाधिकं च द्विशतमस्थ्नां च त्रिशतं तथा ॥ २ ॥
सप्तोत्तरं मर्मशतं शिराः सप्त शतं तथा ।
चतुर्विंशतिराख्याता धमन्यो रसवाहिकाः ॥ ३ ॥
मांसपेश्यः समाख्याता नृणां पञ्चशतं बुधैः ।
स्त्रीणां च विंशत्यधिकाः कण्डराश्चैव षोडश ॥ ४ ॥
नृदेहे दश रन्ध्राणि नारीदेहे त्रयोदश ।
एतत्समासतः प्रोक्तं विस्तरेणाधुनोच्यते ॥ ५ ॥

सात कलाओंके नाम और विचार ।

सवैया-पहली कला तो मांसकोधारत नाम तो मांसकला ही है जानो ।
दूजी कला सो खूनको धारत रक्तधरा है नाम बखानो ॥
तीजी कला सो मेदको धारत मेदोधरा सो नाम प्रमानो ।
यकृत प्लीहामध्य चौथी कला है कफधरा याको नाम बखानो॥२॥
पांचवीं कला सो आंतोंको धारत पुरुषधरा है नाम सु ताको ।
छठी कला सो अग्निको धारत पित्तधरा सो नाम है जाको ॥
सांतवीं कला सो शुक्रको धारत रेतोधरा है नाम सो वाको ।
शास्त्रमें सात कला यों बखानत शिवनाथ बतावतदेख तू जाको॥३॥

सात स्थानोंके नाम और स्थान ।

चौपाई-कफको स्थान वक्षस्थल जान । कफस्थान तल आमस्थान ॥
नाभिपर अग्निके वासे जोय । ताके ऊपर तिल है सोय ॥४॥
क्लोम नाम ताको सब कहैं । पिपासा नाम कहत हैं सोहै ॥
अग्निथानतल मलको जान । पक्काशय जु नाम पहिचाँन ॥५॥
पक्वाशय वासे है जोय । दक्षभाग मूत्राशय होय ॥
जीवसमान खूनको जान । ताकी जगा हृदय है मान ॥६॥
स्त्रीके तीन रन्ध्र बढ़ि होंय । गर्भाशय स्तनके दोय ॥
ऐसे स्थान सात हैं जान । शारंगधरमें देख प्रमान ॥

अथ सप्त धातुकी पैदायश और नाम ।

शरीरमें सप्त धातु हैं । वे ऐसे हैं कि १ पहला धातु रस है, २ दूसरा धातु खून है, ३ धातु मांस है, ४ धातु मेद है, ५ पांचवां धातु हाड़ है, ६ ठा धातु मज्जा है और सातवां धातु शुक्र है, ये सातों धातु एकसे एक पांच पांच दिनमें पैदा होते हैं, ऐसा जानना । ये सब पित्तके तेजसे पाचन होके पैदा होते हैं ।

दोहा-कविअक्षर तियकेश-कुच, अर्ध ढके छवि देत ।
सब ढाँके शोभें नहीं, उघड़े करत कुहेत ॥ ८ ॥

इस न्यायसे कविताका अर्थ साफ समझेगा नहीं तो सब कुछ अच्छा मालूम नहीं होगा. कारण कि इस शारीरकका सब काव्य मैंने किया है, लेकिन बाजे लोगोंको समझमें आना मुश्किल है इसवास्ते शारीरकका सब विषय हिंदी बोलीमें लिखता हूं सो सब ध्यानमें आ जायगा ।

सात धातुओंके सात मैल कहता हूं ।

गाल, जीभ और नेत्रका मल रस धातुका है १ और रसधातुको रंजन करनेवाला जो पित्त है सो रक्तधातुका मैल है २ और कानोंका मैल मांसधातुका मैल है ३, नख जो हैं सो हड्डियोंका मैल हैं ४, दांत कांख लिंगका जो मैल है सो मेद धातुका मैल है ५, मज्जा धातुका मैल केश हैं ६, मुखकी फुनसियां भी मज्जाका मैल हैं ७ और शुक्र धातुको मैल नहीं है. वह कार्यभूत धातु मैलरहित है ।

सात उपधातुओंका विचार ।

१ शुद्धमांससे स्नेह पैदा होता है सो मांसका उपधातु है २ और पसीना मेदका उपधातु है, ३ दंत जो है ये हड्डियोंका उपधातु हैं, ४ मूछोंके केश मज्जाका उपधातु है और ओज शुक्रका उपधातु है. ऐसेही अन्य दो उपधातु जानना। और औरतोंके दो उपधातु अधिक हैं, सो विना काल पैदा नहीं होते हैं. उनमेंसे एक रजस्वला होती है और दूसरा स्तनोंमें दूध, ये दोनों कालमें पैदा होते हैं।

सात कलाओंका विचार ।

सातों कला जो हैं उनमें छठी कला सब खाने पीनेके चार पदार्थोंको आमाशयसे लेके पक्काशयमें पहुँचाती है इसलिये इसको पित्तधरा कहते हैं. आमाशयमें सब कच्चा अनाज रहता है और पक्काशयकी एक बाजूमें उंडुक है, उसको पेट कहते हैं. पेटसे उंडुक जुदा है, वहां चमड़ेकी छोटी बदली है। और हृदयकी बाईं बाजूमें प्लीहा है और सीधी बाजूमें यकृत् है । कफमें रसका मैल है, नाकका मैल है सो मांसका मैल जानना और जवानीमें मुखपर जो फुनसियां आती हैं सो मज्जा धातुका मैल हैं और तिल जिसको कहते हैं सो व्यंगरोग है. चर्मरोग कोढ़का भेद है। औरतोंके तीन रंध्र ज्यादा हैं सो दो तो दूधके हैं और एक गर्भाशय है सो तीन ज्यादा हैं, सो जानना चाहिये । मांसपेशी स्त्रीके २० बीस ज्यादा हैं वे दोनों छातियोंमें १० दश हैं और योनिमें चार हैं और गर्भमार्गमें तीन हैं और गर्भमें तीन ३ हैं ऐसे २० ज्यादा हैं । (बड़ी हड्डियां सोला हैं) । सो पाँवोंमें चार ४ और हाथोंमें चार ४ गर्दनमें चार ४, पीठमें चार ४, ऐसे ही सोला कंडरा जानना।

सात त्वचाओंके नाम स्थान और काम-छन्द मनहर ।

पहली त्वचा सु अवभासिनी है जाको नाव,
सिध्म रोग पद्मकी जागा सो बखानी है ।
दूजी त्वचा कही है सो लोहिता है वाको नाम,
तिलकालकहि रोग जागा सो प्रमानी है ॥
तीजी त्वचाकेरो नाम श्वेताही बखानत हैं,
चर्मदल रोगकी वो जागा ही बतानी है ।
चौथी त्वचाकेरो नाम ताम्रा ही बतावत हैं,
किलास कोढ़ श्वित्रकोढ़ जाकी जागा जानी है ॥ १ ॥

सवैया इंदव ।

पांचवीं त्वचाको नाम सो वेदिनी सर्व ही कोढ़की जागा ही जानो ।
छठी त्वचाको नाम है रोहिणी ग्रन्थि गंडमालकी जागा ही मानो ॥
सातवीं त्वचाको नाम सो स्थूला है विद्रधि भगंदर मसाकी है मानो।
सात त्वचा मिल दो जौ प्रमान हैं शिवनाथ यों शास्त्र सु देख प्रमानो १०

तीनो दोषोंका विचार–छन्द मनोहर ।

बादी पित्त कफ तीनों दोप हैं शरीरमाहिं सप्त धातु नाशत हैं तासे नाम दोप हैं । शरीरको धारत हैं पोषत सदाई वे हैं तासे वाके धातु नाम शास्त्रमें प्रमानी हैं ॥ रसादिक सप्त धातु मलिन करत रहैं तासे नाम मैल वाको कहत निसंसे हैं । एक एक दोप पांच पांचही तरासे होत पांच बादी पांच पित्त पांच कफ जानी हैं ॥ ११ ॥

पांच वायुके नाम और स्थानका भेद सवैया ।

बादी रु पित्त रु कफ त्रिदोषमें वायु अधीक है सोही बखानो ।
मलादिक त्रय दोषको खींचके विभाग करके ही पहोंचानो ॥
वातमें रजोगुण सूक्ष्म शीतल रूक्ष है हलका चंचल मानो ।
पांचो स्थानमें पांचही नामसे प्राण समान उदान ही व्यानअपानो १२

पांच स्थानका प्रमाण ।

सवैया–वायु मलाशय जो सदा रहै ताको नाम अपान सो जानो ।
कोठामें अग्निके स्थानके वातका नाम समान है शास्त्र प्रमानो ॥
हृदय स्थानपै वायु रहत है ताको नाम सो प्राण बखानो ।
कंठ उदान सो रहत सदा ही सर्व शरीरमें व्यान प्रमानो ॥ १३ ॥

पांच पित्तका वर्ण, नाम, स्थान कहते हैं ।

इंदव छंद–उष्ण रु पतला पीला सो रंग है पित्त सतोगुण ऐसा है जानो ।
तीक्ष्ण कटू दोय रस हैं ताहीमें गर्म चीजोंसे विदग्ध हो मानो ॥
ताहीसे खट्टा खराब ही होत हैं पाचों नाम रु स्थान बखानो ।
पाचक भ्राजक रंजक आलोचक साधक पांचहू नामहैं जानो १४
पाचक पित्तको स्थान है अग्निमें खाना पचात हैं तिलसम जानो
भ्राजक पित्तको स्थान है त्वचामें स्नानअभ्यङ्ग पचावत मानो॥

रंजक पित्तको स्थान है यकृत रससे रक्त बनावत जानो ।
आलोचक नेत्रोंमें साधक हृदयमें रूप रु ज्ञान सो तासे हो मानो

पांच कफके पांच नाम और पांच स्थान कहते हैं ।

सवैया इंदव—चीकना जड़ सुफेद सनिग्ध रु शीत तमोगुण होत है जानो।
विदग्ध अपक्कसे नासत ही वो लूणसमान खराब पैचानो ॥
हृष्ट रु पुष्ट करत शरीरको पांचो नाम हैं ताके बखानो ।
क्लेदन स्नेहन रसन अवलंबन श्लेष्मके नाम हैं जानो ॥ १६॥
आमाशे स्थानमें कफ जो रहत है ताको नाम क्लेदन है जानो।
मस्तकमें जो रहत सो है स्नेहन कंठमें रसन रहत यों जानो॥
हृदय स्थानमें रहत अवलंबन संधिमें रहत श्लेषम जानो ।
याबिध कफके स्थान हैं पांचो शिवनाथजु शास्त्रमें देख प्रमानो १७

नौसै स्नायुके भेद कहता हूँ सो इसको ख्याल करके देखो ।

दोहा—स्नायू नौसे होत हैं, हड्डियोंके बंधन जान ।
चारो हाथ व पांवमें, छेसे होत प्रमान ॥ १८ ॥
दोसे तीस स्नायु हैं, मध्यशरीरमें जोय ।
गर्दनपर सत्तर जु हों, ऐसे नौसे होयँ ॥ १९ ॥

हाथ पांवमें कैसे स्नायु हैं उसका प्रमाण ।

चौपाई—एक अंगुलीमें छे जानो । पांचोंमें हैं तीस प्रमानो ।
तलकूर्चगुल्फमें तीस हैं जानो। जंघा तीस जानु दश मानो २०
बाहुमें चालीस स्नायु कही । वंक्षण दश सर्व डेढ़से सही ।
ऐसे एक हाथमें होंय । सब मिलके छेसो हों जोय ॥ २१ ॥

मध्य शरीरकी २३० स्नायुका भेद ।

चौपाई—कमरमें साठ अस्सी पीठमें जोय। कोखमें साठ छातीमें तीस होय
दोसे तीस स्नायु मध्यमें जान। शास्त्रमें देखो प्रमान ॥

गरदनके ऊपर ७० स्नायुकी जागा वर्णन-चौपाई ।

ग्रीव मध्य छत्तिस हैं जान। मस्तकमें चौंतीस जु मान।
सब मिलके सत्तर है जोय। सब स्नायु नौसे हों सोय ॥ २२ ॥

दोसैं दस २१० संधि (जोड़) हैं उनका विचार उनमें कुछ चल कुछ अचल हैं सो कहता हूं-दोहा।

संधी दोसौ दश होत हैं, सर्व देहकी जान।
कुछ चल हैं कुछ अचल हैं, संधी शास्त्रप्रमान ॥ २३ ॥

सब संधि आठ प्रकारके हैं, उसका भेद।

१ कोर २ ऊखल ३ सामुद्र ४ प्रतर ५ तुन्नसेवनी ६ वायसमुख ७ मंडल ८ शंखावर्त इस माफक आठ तरहकी संधिकी हड्डियां हैं उनके स्थान इस माफकसे कहे हैं।

चौपाई-अंगुलियां पौंचा गुल्फ जानु कूर्पर। कोर गति कलिक संधि है तापर।
कांख वंक्षण दांतोंके जान। ताके संधि उखलसम मान ॥ २४ ॥
स्कंध पीठ गुद भग नितंबके जोय। यामें संधि समुद्रसम होय।
ग्रीव पीछे पहुँचामें संधि जोय। प्रतर साँगड़ी जैसे है सोय ॥ २५ ॥
शीश कटी कपालमें कैसे। संधि तुन्नसेवनी जैसे।
ठुड्डीके संधिवायसमुख जोय। कंठ नाड़ी नेत्रके मंडलाकृति होय २६
करण शृंगाट शंखसम जान। या विधि कोरादि सब संधि मान ॥
शिवनाथसिंह यों कही विचार। सुश्रुतशास्त्रमें ताको सार ॥ २७ ॥

३०० हड्डियोंका विचार जुदा जुदा भेद कहता हूं।

दोहा-हाड़ तीनसौ साठ हैं, आयुर्वेदमें जान।
शालितंत्रमें तीनसै, यह निश्चयकर मान ॥ २८ ॥
हड्डियां एकसौ बीस हैं, हाथ पाँवमें जान।
कमर पीठ अरु हृदयमें, एकसौ सत्रह मान ॥ २९ ॥
कंठके ऊपर हड्डियां, तिरसठ हैं सब जोय।
सारी हड्डियां तीनसौ, शिवनाथ कहत यों होय ॥ ३० ॥

एक पांवमें तीस हड्डियां हैं सो कहता हूं-सवैया।

अंगुली एकमें तीन होत हैं पांचमें हड्डियां पंदरह जानो।
पांवतले अरु गुलफके ऊपर हड्डियां सब दश होत हैं मानो ॥
नाड़ीमें एक पिंडीमें दोय गोड़ामें एक जंघा एक जानो।
सर्व मिलाके तीस जो होत है, चारोंमें एकसो बीस हों मानो ३१

मध्यशरीरकी एकसो सत्रह ११७ हड्डियां कहता हूँ-सवैया ।

उपस्थ गुदा नितंब श्रेणि बाजू मिलाके हड्डियां पांच हैं जानो ।
बाजू छत्तीस रु पीठमें तीस रु पेटमें आठ दो कांखमें मानो ॥
दूजेइ बाजू छत्तीस मिलाके साराही एकसौ सत्तर जानो ॥
शिवनाथ कहै सो शास्त्रमें देखले यामें झूठ कबी मत मानो ॥ ३२ ॥

कंठ ऊपर ६३ तिरसठ हड्डियां हैं, सो कहता हूँ–सवैया ।

गरदनमें नौ कंठमें चार ठोढ़ीमें दोय बतीस दंत मुख माई ।
कानमें तीन रु तालुमें एक रु गालमें दोय कर्ण शंखमें दोई ॥
मस्तकमें छः हाड़ सभी गिन त्रेसठ संख्या सबै मिल होई ॥
कपाल तरुण रुचक वलय नलिक पाँच तरहकी हड्डियां सोई ३३॥

ये सब पांचो जातकी हड्डियां हैं. १ गोड़ामें,२ कमरमें, पीछेको स्कंध, डाढ़, तालू, शंखमें मस्तकमें जगा ये कपाल नामकी हड्डियां रहती हैं।

अब मर्मोंका वर्णन करता हूँ–कारण कि हकीमको सब शरीरमें मर्मका ज्ञान अच्छी तरहसे देखना चाहिये कारण सब मर्म एकसौ सात हैं. वे जीवके आधारभूत हैं. उनको समझे विना जो डाक्टर अथवा जर्राह चीर फाड़ करे तो रोगीका नुकसान होगा और इतनी जगहपर फोड़ा अथवा कुछ जर्द, जहरकी चीज स्थावरजंगममें और कांटे लगें तो साध्य असाध्य रोग मर्मके जाननेवालेको तुरत मालूम होगा ।

सो अवश्य हकीमको अंग प्रति अंग मालूम होना चाहिये. अगर वह सर्व शारीरक न समझे तो भी १०७ मर्म तो जरूर देखना चाहिये. ये भेद समझनेके वास्ते हिंदुस्थानी भाषामें सफा कहा है. कारण कि, कवित्तोंमें जलदी समझमें नहीं आवेगा. इसवास्ते साफ हिंदी भाषामें लिखता हूँ (मर्म पाँच तरहके हैं, सर्व एकसौ सात हैं.) (मांसमर्म १ शिरामर्म २ स्नायुमर्म ३ हड्डीमर्म ४ संधिमर्म ५) उसमें ११ मांसमर्म हैं, ४१ इकतालीस शिरामर्म हैं, २७ सत्ताईस स्नायुमर्म हैं, ८ आठ हड्डीमर्म हैं, २० बीस संधि मर्म हैं, सर्व मिलाके एकसौ सात १०७ हैं ।

मांसमर्मका विचार ।

मांसमर्म ११ ग्यारा हैं, उनमें तलहृदयमें चार हैं और चार इंद्रबस्तिमें हैं और १ गुदमें है,२स्तनमें हैं, सब मिलाके ग्यारा हुए. शिरामर्म ४१ इकतालीस हैं. (उनका स्थान कहते हैं)-उसमें चार ग्रीवाकी धमनी हैं, ८ मातृका कहलाती हैं. उसमें २ कृकाटिका, २ दो विधुर, ४ चार शृंगाटकमें हैं, २ दो अपांग हैं, १एक स्थापनी है,२दो फणमें हैं, २ दो स्तनमूलमें हैं, १ अपस्तम्भ एक, २ अपलाप दो, १ हृदयमें एक, १ नाभिमें एक । पीठमें चार हैं । उन्हे पार्श्व कहते हैं । वस्तिमें एक है, क्षिप्रमें चार हैं, ऊर्वी चार हैं, इस माफिक इकतालीस शिरामर्म जानना चाहिये ।

२७ सत्ताईस स्नायुमर्म हैं, उनका स्थान और प्रमाण कहते हैं ।

आणि नामके चार ४ हैं, विटप दो हैं, कांखमें दो हैं, धरकूर्च चार, कूर्चशिरा चार ४ हैं, वस्तीमें एक, क्षिप्रसंज्ञक चार ४ हैं, अंस दो २ हैं, विधुरमें दो २ हैं, उत्क्षेपमें दो २ हैं; सब२७ सत्ताईस हुए; सो स्नायुमर्म जानना ॥

८ आठ हड्डीमर्म हैं, उनके स्थानका विचार ।

कटीकमें दो २ हैं, नितंबमें दो २ हैं, अंसफलमें दो २ हैं, शंखमें दो २ हैं, ऐसे आठ जानना चाहिये ।

संधिमर्म वीस होते हैं, उनके स्थानका विचार ।

जानुमें दो २ हैं, कूर्परमें २ दो हैं, सीमंतमें पाँच ५ हैं, अधिपति एक १है, गुल्फमें दो हैं, पौंचामें दो २ हैं, कुकुंदरमें दो २ हैं, आवर्तमें दो २ हैं, कमरमें दो २ हैं, इस मुवाफिक २० बीस संधिमर्म कहे हैं ।

सर्व मर्मोंके स्थान कहता हूँ. उनमेंसे एक पाँवमें ग्यारा मर्म हैं, उनका ठिकाना इस माफिक है:-क्षिप्र १, हृदय १, कूर्च १, कूर्चशिरा एक, गुल्फ एक, इंद्रबस्तिमें १, जानुमें १, आणिमें १, उर्वीमें एक १, लोहिताक्ष १, विटप १, इस माफिक एक पाँवमें ग्यारा बताये हैं.इस माफिक चारों हाथ पाँवोंमें मिलाके चवालीस होते हैं ।

अब पेट और छातीमें सर्व मर्म बारा हैं, उनके स्थान और नाम कहता हूं-गुदमें १,बस्तिमें १,नाभिमें १,हृदयमें १,स्तनमूलमें १,स्तनरोहित अपलाप

६ अपस्तम्भ, इस मुवाफिक मध्यशरीरमें बारा मर्म हैं सो जानना। जिस ठिकाने दोका अंक है उस जगापर दो दो मर्म समझना चाहिए।

पीठमें १४ चौदा मर्म हैं सो बताता हूं।

कटीक, तरुण दो हैं, कुकुंदर दो हैं, नितंब दो हैं, पार्श्व दो हैं, बृहति दो हैं, अंसफल दो हैं, अंस दो हैं, ऐसे चौदा हुए. सर्व मर्म एकसौ सात हैं॥ कंठके ऊपर सारे मर्म ३७ सैंतीस हैं, सो बताता हूं. धमनी चार हैं, मातृका आठ हैं, कृकाटिका दो हैं, विधुर दो हैं, फण दो हैं, अपांग दो हैं, आवर्त दो हैं, उत्क्षेप दो हैं, शंख दो हैं, स्थपनी एक है, सीमंत पांच हैं, शृंगाट चार हैं, अधिपति एक है। इन मर्मोंमें कोई कुछ कालसे मारते हैं, उसका कालभेद कहता हूँ। उसमें तुरत मारनेवाले मर्म १९ उन्नीस हैं। और कुछ कालसे मारनेवाले मर्म तेंतीस हैं और विशल्यघ्न मर्म सर्व तीन हैं ३ और वैकल्यकारक मर्म चवालीस हैं ४४॥

अब उन मर्मोंका स्थान और भेद कहता हूं—

उसमें तुरत नाश करनेवाले मर्म १९हैं. उनके नाम इस मुवाफिक हैं— शृंगाटिक ४चार, अधिपति१, शंखमें एक, कंठकी शिरा आठ, उन्हें मातृका कहते हैं। गुदमें एक १, हृदयमें एक १, नाभिमें एक, शिरा दो, इस मुवाफिक उन्नीस हुए। ये तुर्त प्राणनाश करनेवाले हैं।

और काल करके प्राण लेनेवाले जो तेंतीस ३३ शिरामर्म हैं उनके स्थान कहते हैं—वक्षस्थलमें आठ ८, स्तनस्थलमें दो २, स्तनरोहितमें २, अपलापक २, अपस्तंभ२, सीमंतक ९, तलहृदय ४, क्षिप्र ४, इंद्र-बस्ति ४, कटीकरुण २, पार्श्वमें २, बृहती२, नितंबमें दो२, ऐसा जानना। विशल्य मर्म तीन हैं सो कहता हूं:—उत्क्षेप दो २ और स्थपनी एक॥

४४ चवालीस मर्म वैकल्यकारक हैं उनके स्थान और नाम कहते हैं।

लोहिताक्ष ४, जानु २, ऊर्वी २, कूर्च ४, विटप २, कूर्पर २, कुकुंदर २, कक्षधर २, विधुर२, कृकाटिका २, अंस २, अंसफलक २, अपांग२, नील धमनि २, मन्या २, फण २, आवर्त २, ऐसे सब मिलाके चवालीस हैं सो जानना॥

अब रुजाकर आठ मर्म हैं सो कहते हैं।

गुल्फमें २, मणिबंधमें २, कूर्च शीर्षमें ४, ऐसे होते हैं ॥

अथ भावार्थ इतिहास ।

मांस शिरा स्नायु और हड्डियोंकी संधिके मिश्रित भावमें अस्थ्यादिक प्राण स्वभाव करके रहता है उसको मर्म कहते हैं. सो किसी प्रकारसे कुछ लग जाय अथवा कोई मूर्ख वैद्य या जर्राह हकीम डाक्टर उसे चीरे फाड़े वा दाग देना चाहे तो मर्म बचाके देना चाहिये। कारण कि मर्ममें केवल प्राण रहता है ऐसा समझना चाहिये और वह मर्म बचाके काम करता है तो यश मिलता है और मर्म छेदन करता है तो उससे ऐसा उपद्रव होता है–भ्रमिष्ठपना १, दिवाना होना २, मूर्छा आना ३, प्रमेह ४ और पक्षाघात अर्थात् आधे अंगसे हवा निकल जाना ५, ऐसा बहुतसा नुकसान होता है।

उसका प्रमाण ।

जिस मर्ममें अग्निरूपसे प्राण रहता है वह तुरत मार डालता है, कारण कि अग्निमें बहुत चपलता और त्वरा है, इसवास्ते वह शीघ्र मारता और शीतरूपसे प्राण जिस मर्ममें रहता है वह काल करके मारता है। और सोमरूप अग्नि कफके मिश्रित मर्ममें प्राण रहता है सो स्थिर है इसवास्ते उसमें वायु रहता है। वह प्राण है। वह मर्म विशल्यघ्न है। उसके वेधनेसे वायु कुंद होता है, वह वहांसे उखाड़के निकालनेसे वहांका वायु जाके मास आदि दिनोंमें मारता है और जहांकी वायु सौम्य है वहांका मर्म वैकल्यकारक है। और जिसमें अग्नि और वायु दोनों रहते हैं अथवा कफ वायु रहता है वह रुजाकर मर्म जानना चाहिये।

अथ मर्मोंका दूसरा भेद कहते हैं.

कोई२ आचार्योंका मत ऐसा है कि जिन मर्मोंमें मांसादिक पांच पदार्थ रहते हैं वे मर्म तत्कालप्राण लेनेवाले हैं और पांचसे एक आधा कम होतो कुछ कालमें मारते हैं और जिसमें मांसादि दो पदार्थ कम हों उसे विशल्यघ्न जानना चाहिये. जिसमें तीन कम हों वह वैकल्यकारक है ऐसा जानना चाहिये और मांसादि एक हो तो रुजाकर जानना ।

सद्यः मारनेवाले मर्मोंका ठिकाना कहते हैं ।

गुद, बस्ति, नाभि, हृदय, जंघा इन ठिकानोंके मर्म सद्यः मारने-वाले हैं. इनमें अस्थि व्यक्त नहीं दीखता है लेकिन अव्यक्त अस्थिकी शक्तिसे तत्काल प्राणनाश करते हैं ।

मर्मोंमें पांच पदार्थ रहते हैं उसका प्रमाण । हड्डीका मर्म चीरनेसे अंदरसे लोहू निकलता है इससे जानना कि मर्ममें पांचो पदार्थ अवश्य रहते हैं॥

अथ मर्मोंके स्थान कहते हैं ।

कारण कि मर्मोंके जाननेसे वैद्यको बड़ा फायदा होता है। इसवास्ते जिस जिस जगहपर जैसे २ मर्म होते हैं वैसा आकार लिखता हूं, जैसे आधे अंगुलमें अथवा चार अंगुलमें हैं; सो जहाँ जैसा है उसे बताता हूं ॥

पावोंमें ग्यारा ११ मर्म हैं सो लिखता हूं।

पांवके अंगुष्ठ और उसके समीपकी अंगुलीके मध्यमें आधे अंगुलमें स्नायुमर्म हैं. कोई इसको क्षिप्रमर्म कहते हैं. इसे अपघात होनेसे कुछ कालमें आक्षपक रोग होके वह मर जाता है ॥

मांसमर्म ।

पांवकी मध्यमा अंगुलीके सामने तलवेमें तलहृदय नामक एक मर्म है, उसे दुःख होनेसे मर जाता है. यह आधे अंगुलमें मांसमर्म है, कुछ कालमें मारता है ॥ ३ ॥

स्नायुमर्म ।

क्षिप्रमर्मके ऊपर दोनों बाजुओंमें नीचे ऊपर कूर्चमर्म हैं. ये स्नायु-मर्म चार अंगुल प्रमाण हैं. ये वैकल्यकारक हैं. इनको दुःख होनेसे पाव कांपता है अथवा फिर जाता है ।

गोड़ोंकी संधिके नीचे दोनों बाजुओंपर कूर्चशीर्ष नामक मर्म है । उसको दुःख होनेसे चमकलगे, सूजन हो । यह स्नायु एक अंगुल प्रमाण है. यह वैकल्य करनेवाला है ।

अब स्नायुमर्मके बाद संधिमर्म कहते हैं ।

पिंडली और पांवकी संधिको गुल्फ कहते हैं. वहांपर संधिमर्म दो अंगुल प्रमाण है. वह वैकल्यकारक है. उसको दुःख होनेसे पांगला अथवा लँगड़ा होता है, किंवा पांव कड़ा होजाता है ।

अथ मांसमर्म।

पिंडीके तेरा अंगुल ऊपरके बाजूपर इन्द्रवस्ति नामका मांसमर्म है. वह आधे अंगुलमें है. उसका रक्त जानेसे वह काल करके मारता है. भोज और गयदासके मतसे वह मर्म दो अंगुल प्रमाण है।

अथ संधिमर्म।

पिंडी और जंघाकी संधिको गोड़ कहते हैं. उस संधिमें वैकल्यकारक मर्म दो अंगुल प्रमाण है. इसमें विकार होनेसे लँगड़ा हो जाता है।

स्नायुमर्म।

स्नायुमर्म गोड़ोंके ऊपर तीन अंगुलपर दोनों बाजुओंमें आणि नामक मर्म आधे अंगुल प्रमाण है. उसे विकार होनेसे सूजन अथवा जंघा टनक होता है. यह स्नायुमर्म है।

शिरामर्म।

जंघाके मध्यदेशपर उर्वी नामक शिरामर्म है. वह आधे अंगुलप्रमाण है. उसको विकार होनेसे जंघा सूखजाती है. वह वैकल्यकारक है॥१०॥

शिरामर्म वक्षस्थल संधिके नीचे कोखके ऊपर बाजूके अंगपर उरोमूलपर लोहिताक्ष नामक शिरामर्म है. वह आधे अंगुल प्रमाण वैकल्यकारक है. उसका रक्त जानेसे आधा अंग रह जाता है. जिसे लकवा भी कहते हैं. अथवा पांव सूख जाता है।

अथ विटपमर्म।

वंक्षण और वृषण इसके बंधनकी जो स्नायु है उसे विटपमर्म कहते हैं। इसमें विकार होनेसे नपुंसक होता है अथवा अल्पशुक्र हो जाता है।

ये जो ऊपर ग्यारा मर्म बताये हैं सो एक पांवमें हैं. इस मुवाफिक दोनों पांव और दोनों हाथके मिलाके चवालीस मर्म होते हैं, जिनके यही स्थान और यही नाम हैं, सो जानना चाहिये।

अथ मांसमर्म।

पेट और छातीके मर्मके समीपके बड़े बड़े आंतड़ोंको बांधनेवाले मर्म हैं. जिससे मैल और वायु सरता है उसे गुदा कहते हैं. उसको अपघात होनेसे तत्काल मर जाता है. वहांपर चार अंगुल मांसमर्म है।

अथ मूत्रबस्तिमें स्नायुमर्म कहते हैं।

कुछ मांस और कुछ रक्त मिलाके जो हुआ है और कमर, नाभि, पीठ, गुद, वंक्षण, इंद्री इनके सबके अंदर अधोमुख एक दरवाजा है. वहां मूत्रका स्थान है. उसे बस्ति कहते हैं. वही बस्तिमर्म है. इसमें पथरी रोग होता है. इसके सिवाय दूसरा दर्द हो तो तत्काल मरता है. उस बस्तिके दोनों बाजुओंमें छेद पड़े तो तुरत मर जाता है और एक बाजूमें छेद पड़े तो मूत्र पड़ने लगता है. यह स्नायुमर्म चार अंगुल प्रमाण है।

नाभिमें शिरामर्म।

पक्काशय और आमाशय दोनोंके बीचमें शिरासमुदायसे होके नाभिमर्म है. इसे इजा होनेसे जल्दी मर जाता है. यह शिरामर्म चार अंगुल प्रमाण है।

आमाशयमर्म।

दोनों स्तनोंका मध्य देश व्यापके हृदयमें आमाशयके द्वार और सत्त्व रज, तमोगुणके अधिष्ठानमें हृदयनामक शिरामर्म है, वह कमलके फूलके समान है और उसका अधोमुख है. वह चार अंगुलमें है. वह सद्यः प्राण लेनेवाला है।

अथ स्तनमूलमें शिरामर्म।

दोनों स्तनोंके नीचे दो अंगुलपर स्तनमूल नामक जो शिरामर्म है वह दो अंगुल प्रमाण है, वह काल करके मारनेवाला है, उसमें विकार होनेसे सर्व कोठेमें कफ बहुत हो जाता है, इससे रोगी मर जाता है॥

अथ रोहितनामक मांसमर्म।

दोनों स्तनचूचुकोंके ऊपर दो अंगुल देश मध्य आधा अंगुल प्रमाण रोहित नामका मर्म है, इसे इजा होनेसे सर्व कोठेमें रक्त भरके कुछ कालमें कासश्वासादि रोगसे मर जाता है।

अथ अपलाप शिरामर्म।

अंस कुंठाके नीचे कोखके ऊपर बाहुके फराके समीप अपलाप नामका शिरामर्म है. वह आधा अंगुल प्रमाण है. वह काल करके मारता है. उसे विकार होनेसे रक्तसंचयसे मर जाता है।

अथ अपस्तंभ शिरामर्म।

पटके दोनों वाजू पर वहत्तर नाड़ी हैं, वहां अपस्तंभ मर्म है, उस शिरा मर्मको विकार होनेसे वायुसे कोठा पूर्ण होके श्वास खांसी लगके कुछ दिनोंसे मरजाता है. वह शिरामर्म आधा अंगुल प्रमाण है. वह काल करके नाश करनेवाला है. इस मुवाफिक आगेके वारा मर्म हैं।

अथ पीठके १४ चौदह मर्मोके स्थान कहते हैं।

पीठके कण्याके अंतिमभागमें दोनों वाजुओंपर जो कमरका हाड़ है उन्हे कटीतरुण नामका हड्डीमर्म कहते हैं। उसे विकार होनेसे आदमी विवर्ण होके कुछ दिनोंसे मर जाता है।

अथ कुकुंदर मर्म।

पीठके मणिपर दोनों वाजुओंपर कमरके हाड़की संधि है, उसको कुकुंदर मर्म कहते हैं, उसके वाहरसे खूनकी मेखली है. उसे विकार होनेसे वह स्थल ठंढा हो जाता है और कमरके नीचेसे निर्जीव हो जाता है॥ २॥

नितंबमर्म।

कटितरुण हाड़मर्म पहले कहा है, उसके ऊपरके भागमें आमाशयका अच्छादक और पार्श्वसंधिसे बँधा हुआ नितंब नामक हाड़मर्म है।

स्पष्टार्थ–जिस जगा परवचा गोदमें लेते हैं, जिस हाड़के आधारसे बच्चा रहता है उस जगाको अपघात होनेसे नीचेका सर्व भाग निर्जीव हो जाता है और मर जाता है।

अथ पार्श्वसंधि शिरामर्म॥ ४॥

जंघाके पीछेके भागसे बांये और सीधे भागपर पार्श्वके अन्दर थोड़ी खड़ी और जरा तिरछी ऐसी शिराओंके बंधन हैं, उसे पार्श्वसंधि कहते हैं, उसे विकार होनेसे कोठा रक्तसे पूर्ण होके कुछ दिनोंसे मर जाता है वह आधे अंगुल प्रमाण है।

अथ बृहतीनामक शिरामर्म।

स्तनमूलके मर्मके सुमारसे पृष्ठवंशकी दोनों बाजुओंसे बृहती नामक शिरामर्म है, वह आधे अंगुलका है उसका रक्त जानेसे आदमी मर जाता है।

अथ अंसफलकमर्म ॥ ५ ॥

पीठके मणिके ऊपर अन्तके दोनों बाजुओंके पास गर्दन है और पीठ व गर्दनका संयोग है। उस जगहकी संधिको त्रिक कहते हैं, उसके पास अंसफलक नामक मर्म है, वह आधे अंगुल प्रमाणका है।

अथ स्नायुमर्म।

बाहुके मस्तक और गर्दनके बीचमें अंसफलक सहित वर्तमान भुज-शिराको बांधे हुए स्नायुका बन्धन है, उसे अंसफल कहते हैं ॥ ६ ॥

स्पष्टार्थ—जिस जगापर आदमी स्याना पालकी उठाते हैं उस जगापर स्नायुमर्म वैकल्यकारक है, वह आधे अंगुल प्रमाण है ॥ ७ ॥

इस मुवाफिक एक बाजूपर सात हैं, दोनों बाजू मिलाके चौदह होते हैं सो पीठके हैं, ऐसा जानना चाहिये।

अब गर्दनके ऊपरके मर्म कहते हैं सो ऐसे हैं।

कंठनाड़ीके दोनों बाजुओंपर चार चार धमनी हैं. उनका नाम मन्या है. दूसरा नाम नली है. उनमें एक बाजू एक एक मन्या और एक एक नली रहती है. ये शिरामर्म चार चार अंगुलके हैं, इन्हे विकार होनेसे मूक होता है अथवा स्वरभेद होता है।

अथ मातृका शिरामर्म।

गर्दनके दोनों बाजुओंपर जो चार चार शिरा हैं, वे आठ मातृका हैं, उनको ८ मातृका कहते हैं, वे शिरामर्म चार अंगुलप्रमाण हैं, वे शीघ्र ही नाश करनेवाले हैं ॥ १ ॥

अथ कृकाटिक संधिमर्म।

मस्तक और गर्दनके संयोगमें कृकाटिक नामक संधिमर्म है, वह आधे अंगुल प्रमाण है, उसे विकार होनेसे मस्तक कांपता है, वह मर्म पीठके मणिके सामने रहता है, गर्दनके पीछेको।

अथ विधुर नामक स्नायुमर्म ॥ ४ ॥

कानके पीछे थोड़ासा नीचे खड्ढा है, उसके ऊपर विधूर नामक स्नायुमर्म है, उसको विकार होनेसे बहरा होता है व कम सुनता है।

अथ फण नामक शिरामर्म ॥ ५ ॥

नाकके अंदरके बाजू दोनों मार्गके बाजूसे बाँधा हुआ फण नामक शिरामर्म है. वह आधे अंगुलमें है. वह वैकल्यकारक है. उसे विकार होनेसे गंध (सुगंध दुर्गंध) समझता नहीं ।

अथ अपांग नामक शिरामर्म ॥ ६ ॥

आँखकी भौंहके नीचे अंतपर आंखके बाहर बाजूपर अपांग नामक शिरामर्म आधे अंगुल प्रमाण है. वह वैकल्यकारक है. उसे विकार होनेसे अंधा हो जाता है, अथवा नेत्र कमजोर होता है ।

अथ आवर्त नामक संधिमर्म ॥ ७ ॥

आंखकी भौंहके ऊपर बाजूपर जरासा खड्डा है. उस प्रदेशमें आर्वत नामक संधिमर्म है. वह आधा अंगुल प्रमाण है.वह वैकल्यकारक है. उसे विकार होनेसे आंख फूट जाती है, अथवा दृष्टि कम होजाती है ।

अथ शंखनामक हड्डीमर्म ॥ ८ ॥

आंखकी भौंहपर कान और ललाटके बीचमें शंख नामक हड्डीमर्म है. वह आधे अंगुलमें है. उसके विकार होनेसे तुरत मर जाता है ।

अथ उत्क्षेप नामक मर्म ॥ ९ ॥

शंखके ऊपर केशतक उत्क्षेप नामक मर्म है. उसमें जहांतक शल्य है वहांतक जीता है और काढ़नेसे मर जाता है ऐसा जानना ॥

अथ स्थापनी नामक शिरामर्म ॥ १० ॥

दोनों भौहोंके बीचमें स्थापनी नामक शिरामर्म है. उसमें भी जहांतक शल्य है वहांतक जीता है और काढ़नेसे मर जाता है ।

अथ सीमंत नामक संधिमर्म ॥ ११ ॥

मस्तकमें जैसा बरतनमें जोड़ रहता है वैसी न्यारी न्यारी पांच प्रकारकी संधि है, उन्हें सीमंत कहते हैं. वे मर्म चार चार अंगुल प्रमाण हैं वे कालांतरसे मारनेवाले हैं ।

अथ श्रृंगाटक नामक शिरःसंयोगी मर्म ॥ १२ ॥

नाक आँख कान जीभ इन चारों इंद्रियोंको तृप्त करनेवाली जो शिरा हैं

उनके मुखके संयोगमें मस्तकमें जो जगा है उसमें शृंगाटक नामक चार शिरामर्म हैं. वे शीघ्र ही प्राण हरनेवाले हैं ।

अथ अधिपति शिरामर्म ॥ १२ ॥

मस्तकमें चोटीकी जगापर सर्व शिरा और संधिका संयोग हुआ है. उस जगापर अधिपति नामक शिरामर्म आधे अंगुल प्रमाण है. वह सद्यः प्राण लेनेवाला है. उस बाहरसे चिह्न एक केशोंका भौंरा है ।

अथ स . मर्मका आकार कहते हैं ।

उर्वी १ कूर्च २ शीर्ष ३ विटप ४ कक्षधर ५ ये मर्म सब एक एक अंगुल प्रमाण हैं । और मणिबंध १ गुल्फ २ स्तनमूल ३ ये दो दो अंगुल प्रमाण हैं । और जानु १ कूर्पर २ ये तीन अंगुल प्रमाण हैं । और हृदय१ बस्ती २ कूर्च ३ गुद ४ नाभि ५ सीमंत ६ शृंगाटक ७ मातृका ८ मन्या ९ नीलाधमनी १० ये मर्म सब चार चार अंगुलमें हैं ऐसा प्रमाण है. और इतने मर्मोंसे बाकी रहे सब मर्म आधे अंगुल प्रमाण समझने चाहिये॥

अब मर्मोंका भावार्थ कहते हैं ।

सर्व शरीरके अट्ठावन अंग और प्रतिअंग लिखे हैं सो सर्व हकीमको जानने चाहिये. अगर अन्य सर्व कम सीखे तो भी मर्म तो जरूर सीखना कारण कि मर्मोंमें प्राणादिक पांच वायु और पांच पित्त और पांच कफ और पंच भूतात्मा और तीनों गुण ये चीजें बहुत करके शरीरमें मर्मस्थानपर रहती हैं, सो हकीम, डाक्टर व जर्राहको चीर फाड़ दागआदिक मर्म बचाके करना चाहिये. नहीं तो अवश्य बीमारका नुकसान होगा। अथवा ये मर्म न बचावेगा तो ऊपर लिखे अनुसार उपद्रव होके रोगी मरेगा. इसवास्ते मर्मोंका भेद जरूर शीखना चाहिये । इसवास्ते दूसरा शारीरक दोहा चौपाई कवित्तोंमें लिखा है और मर्म जो कवितामें लिखे थे सो इस पुस्तकमें खुलासा भाषामें लिखा कि जिससे सहज ही समझमें आ जाय॥

अब शिराओंका भेद कहते हैं ।

सब शिरा७००सातसौ हैं. उनका मूलस्थान नाभि है. वहां शिरा चालीस हैं. उनके चार भाग होके निकले हैं. उनमेंसे दश वातवाहिनी१०और दश पित्तवाहिनी १० तथा कफवाहिनी १० दश हैं और१० रक्तवाहिनी हैं ।

चौपाई–शिरा संधिके बंधनजान । त्रिदोष धातु पहुँचावे मान ॥
दोही भेद शिराके होय । एक स्थूल सूक्ष्म एक जोय ॥ ३४ ॥
वाको स्थान नाभि है जानो । चालिस शिरा वहां रह मानो ॥
वातवाहिनी दश है जान । दश हैं पित्तवाहिनी मान ॥ ३५ ॥
कफवाहिनी हु दश ही जान । रक्त—वाहिनी दश ही मान ॥
चालिस शिरा नाभिमें होय । ताको भेद बताऊं जोय ॥ ३६ ॥

सवैया–इंद्रव ।

दश जो शिरा वात चलावत हैं तिन्हे एकसो पिछत्तर जानों ॥
पित्तवाहिनी जोने दोसे होत हैं दससे शास्त्र प्रमानो ॥
कफवाहिनी दश शिरासे एकसो पिछत्तर होय प्रमानो ॥
रक्तकी दशसे उतनी ही होत हैं सारी मिलाके सातसे जानो ॥ ३७ ॥

अथ चौवीस धमनी २४ सवैया-इंद्रव ।

वातकी वाहिनी धमनी शरीरमें वात चलावत नाडी ही जानो ॥
सारी धमनी चौवीस शरीरमें नाभि है बांकी जागा सो मानो ॥
अधोभागमें दश अरु ऊर्ध्वमें दश रसादिक सर्व जगापै पहुँचानो ॥
मैल रु सूत्र रु वात शुक्रादिक स्त्रीकी ऋतुपै सो रक्त बहानो॥३८॥
चौपाई–शब्द स्पर्श गंधादि सोई । ऊरध धमनी चलावें वोई ॥
सांस जँभाई भूख रु प्यासही । हँसना बोलना ऊर्ध्वसे होही॥३९॥
सर्व शरीरको धमनी पाले । तासे नव धमनी सो कहाले ॥
तिर्यक चार धमनी हैं जोय । सब शरीर पालत हैं सोय ॥ ४० ॥
दोहा–असंख्य धमनि शरीरमें, ताकी कर पहिंचान ॥
सूक्ष्मताहिसे रहत हैं, रोम रोममें जान ॥ ४१ ॥
रोमकूप मुख ताहिको, सर्वव्यापी है जोय ॥
स्वेद स्नान अभ्यंगादि, शिवनाथ पहुँचावे सोय ॥ ४२ ॥

अथ मांस बोटी शरीरमें पांचसौ ५०० हैं और स्त्रीको पांचसौ बीस ५२० हैं सो कहते हैं ॥

दोहा–शरीर शक्ति बल देत है, मांस बोटी यों जोय ।
आधारभूत शरीरको, मांसपेशिसे होय ॥ ४३ ॥

अब जो सोला १६ बड़ी कंडरा अर्थात् हड्डियां हैं उनका स्थान ।

दोहा-बड़े हाड़को कहत हैं, कंडरा नाम यों जान ॥
हाथ पांव और कंठमें, शक्ति देत हैं मान ॥ ४४ ॥

अथ रंध्रोंका विचार ।

रंध्र पुरुषके १० दश और स्त्रीके १३ तेरह होते हैं ॥

दोहा-नाक कान औ आंखके,दो दो रंध्र हैं जोय ।
मुख शिश्न रु गुदद्वारमें, एक एक ही सोय ॥ ४५ ॥
ब्रह्मरंध्र है शीसमें, ऐसे दश हैं जोय ।
स्त्रीके ज्यादा तीन हैं,दो दूधका एक गर्भ सोय ॥ ४६ ॥

अथ फुप्फुसका स्थान ।

दोहा-हृदयके वामे भागमें, फिय फुप्फुस है जान ॥
फिया होत है रक्तसे, फेन रक्तसे फुफुस मान ॥ ४७ ॥
हृदय नाडीसे लगा है, फुप्फुस ऐसा जान ॥
हृदयके सीधे भागमें, यकृत रहत प्रमान ॥ ४८ ॥

भावार्थ-यकृतको कालखंड कहते हैं। उसका काम उदान वायुके आधारभूत फुफुस हैं। और रक्तवाहिनी शिराके मूलमें फिया है और रंजक पित्तका स्थान जो रक्तका स्थान है वहांपर यकृत् है ऐसा जानना।

तिलके लक्षण ।

शोणित कीटके पाससे पैदा होके और यकृतके समीप सीधे भागमें तिल है. उसे क्लोम कहते हैं.वह तिल जलवाहिनी शिराके मूलपर है,इससे आदमीको प्यास लगती है उसका वह छेदन करता है ऐसा जानना।

अथ वृक्कके लक्षण ।

वृक्क अर्थात् जो कुक्षिगोलक है वह रक्त और मेद इसके प्रसाद अर्थात् उनसे पैदा है.वह कुक्षिगोलक जठरस्थ जो मेद उसे पुष्ट करता है।

अथ वृषणके लक्षण ।

वृषण अर्थात् अंड वीर्यवाहिनी शिराके आधारभूत है, इसलिये पुरुषार्थ होता है, स्त्रीकी इच्छा करता है. वह वृषण मांस, रक्त, कफ, चरबी इसके सारसे वीर्य करता है।

अथ हृदयके लक्षण ।

जिसका कमलफूलकी कलीके समान थोड़ा खुला और नीचे मुख है वह हृदयस्थान है. उस जगहमें चेतन आत्मानंदका स्थान है और ओज अर्थात् सर्व धातुका तेज उसके आश्रयमें है ऐसा जानना चाहिये ।

अब शरीर पोषनेवाली जो शिरा और धमनी उनका स्थान कहते हैं– नाभिके ठिकाने रहनेवाली धमनी और शिरा हैं, वे संपूर्ण शरीरमें फैली हैं. वे रात्रिदिन वायुके संयोग करके रस आदि संपूर्ण धातुको सर्व शरीरमें पहुँचाके पोषती हैं ।

अथ प्राणवायुका काम ।

नाभिमें जो प्राणवायु है सो हृदयकमलके अभ्यंतर स्पर्श करके ब्रह्मरंध्र आश्रित जो विष्णुपद उस ठिकाने जो अमृत है, वह अमृत पीनेके वास्ते कंठके बाहर निकलके मस्तकमें प्राप्त होके ब्रह्मरंध्र आश्रित अमृतको पीके फिर जल्दी वेग करके उसी मार्गसे अपने स्थानमें आके संपूर्ण शरीर और जीवको संतुष्ट करता है और जठराग्निको पचनशक्ति देता है. अथवा हृदयस्थानका जो वायु वही विष्णुपदामृत पीके नाभि-स्थानमें आके पीछे संपूर्ण देहको संतुष्ट करता है । वही प्राण वायु है ऐसा जानना चाहिये ।

अथ आयुष्यके और मरणके लक्षण ।

शरीर और प्राण इसके संयोगको आयुष्य कहते हैं,काल करके शरीर और प्राण इसका वियोग होनेको मरण कहते हैं। पृथ्वीमें किसी जगहपर कोई आदमी अथवा प्राणी अमर नहीं इसवास्ते मृत्युसे बचानेको कोई समर्थ नहीं है, लेकिन हकीमोंसे रोगोंके निवारणके वास्ते दवा कराना चाहिये ।

अथ रोगोंके निवारणके वास्ते साध्य लक्षण भेद कहते हैं ।

दवा जिस रोगीकी हुई नहीं ऐसा जो रोगी है उसकी बीमारी साध्य है तो भी असाध्य हो जाती है और कष्टसाध्य हो सो असाध्य होके मर जाता है, इसवास्ते रोगकी दवा अवश्य करना चाहिये ।

दोहा–साध्य रोग हू दवा विन, कष्टसाध्य हो जाय ।
कष्टसाध्य आलस करै, असाध्य हो मर जाय ॥ ९० ॥

अथ सृष्टिक्रम कहते हैं ।

सृष्टिमें पंच भूत तीन गुण सोला विकारसे सृष्टिकी उत्पत्ति कैसे होती है और विधाताने कैसी पृथ्वीकी रचना की है और शुक्र शोणितके संयोगसे कैसे जगतकी पैदायश होती है और चार पदार्थसे जीवकी रक्षा कैसे होती है वह सब क्रम लिखता हूं सो मालूम होगा ।

अथ चार पदार्थसे शरीरकी रक्षा ।

छंद सवैया–धर्मरु अर्थरु काम व मोक्ष शरीरसे होत है जात बताई ।
तासे शरीरकी रक्षाको कारण रोगसे रक्षा करो निज भाई ॥
सप्तही धातु रसादि त्रिदोषसे छिन्न शरीरको नाश हो जाई ।
धातु व दोष समान रु पुष्टी हो बलरु दीर्घ हो आयु बढ़ाई ५१

अथ सृष्टिक्रम।

पहले चौबीस तत्त्वका निरूपण–छंद घनाक्षरी ।

पृथ्वी जल पावक पवन नभ मिलि करि शब्द स्पर्श रूप रस और होत गंधजू
श्रोत्र त्वचा चक्षू घ्राण रसना रसको ज्ञान वाक् पाणि पाद पायु उपस्थहित बंधजू
मन बुद्धि चित्त अहंकार ये चौबीस तत्त्व पच्चीसवों जीवतत्त्व करत है द्वंद्वजू ।
छब्बिसवों ब्रह्म है सोआत्मा सच्चिदानंद ज्ञानहीमें आतमा सो जानत महंतजू

भावार्थ–ईश्वर जो है सो सत्त्व, तम, रज, इनकी सम अवस्थामें रहता है, ऐसी प्रकृति नित्य है,उसका दृष्टान्त सुनो। जैसे सूर्यकी किरण घरमें आनेसे बारीक रज उसमें दीखते हैं और प्रतिबिंब क्रिया होती है, वैसे पुरुषके अधिष्ठान अर्थात् आश्रयसे प्रकृतिकी चेष्टा जानना चाहिये ।

अथ प्रकृति कैसे विश्वको पैदा करती है और पुरुषको कैसे चेष्टा होती है–

छन्द घनाक्षरी ।

ब्रह्मसे पुरुष और प्रकृती प्रगट होत प्रकृतिसे महत्तत्त्व और अहंकार है ।
अहंकारसे तीन गुण सत्त्व रज तम तमहुसे महाभूत विषय पसार है ।
रजहुसे इंद्री दश पृथक पृथक हुई सातहुसे मन आदि देवता विचार है ।
ऐसा अनुक्रम कर रच्यो हैजु विश्व सब प्रकृतिबुद्धि इच्छा और संसार है

अथ तीन प्रकारके अहंकारके काम।

दोहा–इन्द्रियां पांच हैं ज्ञानकी, पांच करम इंद्री जान।
सब मिल दस इन्द्री कही, ग्यारावों मन मान॥ ९२॥

अब इंद्रियोंके देवता कहता हूँ।

छन्द-घनाक्षरी।

दिशा श्रोत्र त्वचा वायु लोचन प्रकाश रवि नासिका अश्विनी जिह्वा वरुण वखानिये।
वाक अग्नि हस्त इन्द्र चरण उपेंद्र वलमेढ्र प्रजापति गुदा यमराज जानिये॥
मन चंद्र बुद्धि ब्रह्म चित्त वासुदेव पुनि अहंकार रुद्रको प्रभावकर मानिये।
जाकी सत्ता पा सब देवता चेतन होत पूरण पुरुष वाको एकरस जानिये॥ ९३॥

भावार्थ–सात्विक अहंकारसे इंद्रियोंके देवता और मनकी पैदायश है ऐसा जानना राजस अहंकारसे और सहायतासे पांच गुण उत्पन्न होते हैं, उनके शब्दतन्मात्रा, स्पर्श तन्मात्रा, रूप तन्मात्रा, रस तन्मात्रा, गंध तन्मात्रा, इस माफिक पांच नाम जानना चाहिये।

अथ तन्मात्राओंका विषय और स्वरूप।

तन्मात्राओंका स्पष्टार्थ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ये ही क्रमसे तन्मात्राओंके पांच विषय जानना चाहिये। इसका अनुभव सुख दुःख मोह इसीसे होता है और विशेष स्थूल भावार्थ प्रकृति मिलायेसे जानना और पांचों तन्मात्राओंका अनुभव सूक्ष्म है, इससे होता नहीं।

अथ पंचमहाभूतोंके गुण।

प्रथम आकाश मुख्य गुण शब्द, शब्दसे स्पर्शगुण वायु, वायुमें गुण, शब्द और स्पर्श दोनों हैं. वायुसे तेज है, तेजका मुख्य गुण रूप है, तेजमें शब्द स्पर्श और रूप ये तीनों हैं. तेजसे पानी, पानीका मुख्य गुण रस है. पानीमें शब्द, स्पर्श, रूप, रस ये हैं और पानीसे पृथ्वी. पृथ्वीका मुख्य गुण गंध है और गुण शब्द स्पर्श रूप रस और गंध हैं ये पांचो पदार्थ पृथिवीमें हैं। ऐसे पांच महाभूतोंमें एक एकसे एक एकका गुण लेते हैं जिससे सब सृष्टिका कार्य चलता है।

अथ सब इन्द्रियोंका विषय।

इंदव सवैया–श्रोत्र सुने दृग देखत है रसना रस घ्राण सुगंध पियारो।
कोमल कठिन त्वचा जानत है बोलत है मुख शब्द उचारो॥
हाथ ग्रहै पद गौन करै मल मूत्र तजे उभये अधद्वारो।
या विधि इन्द्रिनको जु विषय शिवनाथ कह्यो यह शास्त्र विचारो९४॥

अथ उक्तका संक्षिप्त।

प्रधान, प्रकृति, शक्ति, नियति और अविकृति ये प्रकृतिके पर्यायशब्द ह ऐसा जानना. और प्रकृति ईश्वरके आश्रय है. और महत्तत्त्व, अहंकार, पांच तन्मात्रा ये सात इन्द्रिय आदिका कारण हैं जिससे वे प्रकृतिरूप हैं. सांख्य शास्त्रमें प्रकृति आठ प्रकारकी है और प्रकृति विकारीरूप है इसवास्ते पूर्वके महत्तत्त्व आदि सातों ही विकृतरूप है, दश इन्द्रियां ज्ञान और कर्म इन्द्रियोंका मालिक मन है. मन आदि ग्यारा इन्द्रिय हैं. और पृथ्वी आदि पंच महाभूत हैं, ऐसे सोला विकारसे सम्पूर्ण जगत् पैदा होता है और वे विकार सर्व ठिकाने व्याप्त हैं ऐसा जानना चाहिये।

अथ चौबीस तत्त्वोंके नाम कहते हैं।

अव्यक्त १, महान् २, अहंकार ३, शब्दतन्मात्रा ४, स्पर्शतन्मात्रा ५, रूपतन्मात्रा ६, रसतन्मात्रा ७, गंधतन्मात्रा ८, श्रोत्र ९, त्वक् १०, चक्षु ११, घ्राण १२, रसना १३, वाक् १४, हस्त १५, पाद १६, उपस्थ १७, पायु १८, मन १९, पृथ्वी २०, अप् २१, तेज २२, आकाश २३, वायु २४, इस माफिक चौबीस तत्त्व जानना चाहिये. इन चौबीस तत्त्वोंसे पैदा हुआ शरीर है. उसमें पचीसवां पुरुष सर्व काल रहता है. उसको जीव आत्मा कहते हैं. और मन उस पुरुषका दूत है. वे जीव आत्मा महदादिकृत जो सूक्ष्मदेह है उसके अन्दर लिंगशरीर रहता है इसवास्ते उसको देह कहते हैं. इसवास्ते देहको पाप पुण्य सुख दुःख देहका समझता है और जीवबन्धनका कारण मन है और मोक्षका कारण भी मन है और मनकी इच्छासे सब इन्द्रियां चलायमान होती हैं।

अथ अहंकार आदिकी गति।

दोहा–अज्ञान बंधनको आसरो, ज्ञान मुक्ति आधार।
दुख सुख होवे देहको, आतमज्ञान विचार॥ ६९॥

अथ आहारकी गति।

अन्न आदिक (खाना पीना) आहारको प्राणवायुसे लेके आमाशय तक ले जाके उसको षट रससे युक्त होके मधुर मीठापना फेन भाव यहांतक होता है और वह आहार उसकी जगहपर रहनेसे पाचक पित्तसे विदग्ध अर्थात् पचता है और मुख्य ऊपरसे परिपक्व होके अन्दरसे कच्चा ऐसा होता है और थोड़ा खट्टा होता है. पीछे आमाशयके पाससे समान वायुकी सहायतासे ग्रहणी स्थानमें वहांपर जाता है और वही ग्रहणी स्थान पर कोठा अग्नि करके आहारको पकाके उसका तीक्ष्ण पाक बनाता है।

अथ आहारकी दो अवस्था होती हैं सो इस माफिक।

जो आहार अग्निके स्थानपर पकता है उससे रस धातु पैदा होता है और उस जगहपर कच्चा रहता है उसे ही आंव कहते हैं।

रसका कार्य ऐसा है–उस आहारसे रस अग्निका बल करके मधुर भाव और स्निग्ध (चिकनापना) होके रस आदि सम्पूर्ण सप्त धातुको पोषता है इसीवास्ते उसका अच्छा पाकहोके अमृतके तुल्य होता है और शरीरको पोषता है और मन्दाग्नि करके वह रस तीखा अथवा खट्टा होके विकारवान् हो जाता है. वह जहरके तुल्य हो जाता है और आदमीको मारता है और आधा कच्चा और आधा पक्का होके बिगड़ जाता है उससे अतीसार आदि सर्व रोग पैदा होते हैं।

अथ आहारकी अवस्था कहते हैं।

आहारका जो रस है उसको सार कहते हैं और सारसे जो रहित द्रव्य है उसे मल द्रव्य कहते हैं उस द्रव मूत्रवाहिनी शिराके द्वारपर वस्ति है, उसमें जाके मूत्र होता है और बाकी जो कीट रहता है वह पक्वाशयके एक भागमें मल होता है, ऐसा जानना।

अथ मलका अधोगत आनेका नियम।

अपान वायुको अधोभाग लेके ऐसा जो मल वह तीन बलीसे युक्त जो गुद

है उस मार्गसे बाहर आता है, उन नलियोंके प्रवाहिनी, सर्जनी, ग्राहिका ऐसे तीन नाम हैं और उसका आकार शंखकी नाभि ऐसा है सो जानना।

अथ रसके कार्य गमनस्वरूप ।

सारभूत जो रस वह समान वायुसे चलके अग्निस्थानके पाससे हृदयके ऊपर आके रंजक पित्तसे रंगयुक्त होके पाचक पित्तसे पाचन होके रक्त पैदा करता है ।

अथ रक्तकी प्रधानता ।

और वह रक्त सर्व शरीरमें व्यापक रहता है और जीवका उत्तम आधार है और उसमें स्वभावगुण स्निग्ध चीकटा गुरु जड़ चंचल स्वादु ऐसा है और वह जब रक्त कभी विदग्ध होता है तब पित्तके माफिक कटु तीक्ष्ण खट्टा होता है ऐसा जानना चाहिये ।

अथ रस आदि सप्त धातुका उत्पत्तिक्रम कहते हैं।

रस आदि सात धातु पित्तके तेजसे पाचन होके क्रमसे सप्त धातु पैदा करते हैं. रससे रक्त और रक्तसे मांस और मांससे चरबी और चरबीसे हाड़ और हाड़से मज्जा और मज्जासे शुक्र ऐसे एकके पाससे एक धातु पैदा होता है. पांच पांच दिनमें एक एक होता है और रस फक्त एक दिनमें होता है और स्त्रीके एक महीनामें ऋतु रक्त पैदा होता है ।

अथ स्त्रीको गर्भकी पैदायश कैसे होती है सो विचार ।

मनकी इच्छासे काम पैदा होता है, उससे स्त्री पुरुषके संयोगसे शुक्र और रज एक ठिकाने होनेसे गर्भ पैदा होता है उसको बालक कहते हैं ।

उसमें कन्या अथवा पुत्र होनेका नियम ।

उसमें रज स्त्रीका ज्यादा हो तो कन्या होती है और पुरुषका वीर्य ज्यादा हो तो पुत्र होता है और दोनोंका समभाग हो तो नपुंसक होता है, जैसी परमेश्वरकी इच्छा हो वैसा संयोग होता है और शुक्र ज्यादा सम दिनोंमें होता है और विषम दिनोंमें रज ज्यादा होता है । जिस दिन औरत स्नान करके चौथे दिन शुद्ध होती है वह चौथा ४ छठा ६ आठवां ८ दशवां १० बारहवां १२ चौदहवां १४ इन दिनोंमें गर्भ रहे तो पुत्र होता है, कारण इन दिनोंमें शुक्र ज्यादा है और पांचवां ५ सातवां ७ नौवां

९ ग्यारहवां ११ तेरहवां १३और पंदरहवां १५ इन दिनोंमें कन्या होती है. कारण इन दिनोंमें शोणित औरतोंके ज्यादा होता है.जैसी जिसे इच्छा हो वैसा करना चाहिये. और पंद्रह दिनों बाद स्त्रीका फूल बंद होता है इससे गर्भ नहीं ठहरता ऐसा जानना ।

अथ बालकके पहिले महीनासे उपायः।

बालकोंको दवा देना सो मात्राका प्रमाण—पहिले महीनामें दुग्ध अथवा शहद् अथवा शकर अथवा घृत इनमें देना.इनमेंसे जो बालककी तबीयत को माने उसीमें देना. जो दवा सुवर्णादिक देना हो सो पहिले महीनामें एक गुंजा और दूसरे महीनामें दो गुंजा और तीसरे महीनामें तीन गुंजा. इस माफिक हर एक महीनामें एक गुंजा बढ़ाना.एक बरसमें एक मासाका प्रमाण करना और दूसरे वर्षमें दो मासा करना.इसी माफिक सोलाबरसतक बढ़ाके पीछे सोला मासाका प्रमाण सत्तर ७० बरसकी उमर तक रखना चहिये. बाद सत्तर बरसके हर बरस बढ़ानेकी माफिक घटाना चाहिये. कारण कि बालककी और बूढ़ेकी तबीयत एक समान होती है ऐसा समझना और मात्रा जो दवा अर्थात् कल्क अथवा चूर्ण काढ़ा हो तो चौगुना लेना चाहिये ऐसा मान पूर्वके सब ग्रंथकारोंने लिखा है. लेकिन हालकी दुनियामें आदमीकी ताकत बहुत कम है इसवास्ते हकीमको उसकी शक्ति देखके दवा देना चाहिये ।

अब जन्मसे बीस बरसतक आँखमें अंजनका प्रमाण और अभ्यंगलेपकी तजबीज कहते हैं. बालककी आंखोंमें अंजन अथवा काजल डालना १ और अभ्यंग अर्थात् तेल अथवा घृत लगाना २ और हलदी आदि चीजोंका लेप करना ३ और स्नान कराना ४ उलटी कराना ५ और हरमहीने गुदामें निरूहण बस्ति (गर्मजलका चुल्लू भरके मारना) ६ इस माफिक छःप्रयोग बालकोंके अवश्य करना चाहिये और जन्मसे पांच बरस तक करके आगे दवा रूप काढ़ादिकका कुरला करवाना, मुख सफा करना और सात आठ बरसमें नाकमें नास सुँघाना चाहिये. सोला बरस बाद बड़ा जुलाब देना. सोला बरसके अंदर जुलाबकी जरूर हो तो हलका जुलाब

देना चाहिये और बीस बरसके अंदर औरतका संग नहीं करना चाहिये. इस मफिक जो ऊपरकी तद्बीर करनेसे आदमी शक्तिमान्, आयुष्यवान्, यजस्वी, भाग्यवान् होता है सो जानना चाहिये ।

अब आदमीमें आयुष्यके साथ जैसी चीजें घटती और बढ़ती हैं सो क्रम कहता हूं–जन्मसे दश बरसतक बाल्यावस्था रहती है और बीस बरस तक ऊंचा बढ़ता है और तीस बरसतक मोटापना होता है और चालीस बरसतक विद्या होती है और पचास बरससे त्वचा शीतल होती है और साठ बरसके बाद आँखोंका तेज कम होता है और सत्तर बरससे शुद्ध धातु न रहेगा और अस्सी वर्षमें पराक्रम कम होता है और नव्वे बरससे बुद्धि जाती है. सौ बरससे कर्मइंद्रियोंकी चंचलता जाती है और एकसोबीस बरसमें प्राण जाता है. इस माफक दस दस बरससे एक एक चीज कम होती है और योगी और ज्ञानी लोग समाधि लगानेसे बहुत कालतक जीते हैं ऐसा शास्त्रोंमें प्रमाण है और सब ठिकाने ऐसा रिवाज है कि बालकोंके कोई बीमारी होने विना दवा देते नहीं. लेकिन शास्त्रोंका ऐसा मत है कि बचपनेसे दवा शास्त्र मुजब दे तो शरीर बलवान् होके मजबूत होता है. इसवास्ते दवा देना अच्छा होता है इसलिये शास्त्र मुजब करना चाहिये ।

अथ सप्त प्रकृतिके लक्षण कहते हैं ।

दोहा–अल्पकेश कृश रूक्ष है, वाचाल चंचल जान ।
रज गुण संग हो वासना, स्वप्न आकाशसमान ॥ ९६ ॥

पित्तप्रकृतिका स्वभाव ।

दोहा–केश अकाल सुपेद हों, स्वेदबुद्धि क्रोधी होय ।
तारा अग्नि इंद्रादि देवता, स्वप्ने दरशे जोय ॥ ९७ ॥

अथ कफप्रकृति० ।

दोहा–गंभीर बुद्धि स्थूल अंग, स्निग्ध केश बल बहुत हो जान ।
नदी तड़ाग जलक्रीड़ा करे, स्वप्न कफके मान ॥ ९८ ॥

द्वंद्व और त्रिदोष प्रकृतिलक्षण ।

दोहा–दो दो लक्षण जामें मिलें, द्वंद्वप्रकृति है जान ।
सर्व लक्षण जामें बसें, त्रिदोषप्रकृती मान ॥ ५९ ॥

इस माफक सर्व प्राणीमात्रमें ये सप्त प्रकृति हैं, चौदह भुवन और त्रैलोक्य इसी स्वभाव प्रकृतिका है ।

अथ निद्रादिकका विचार ।

सवैया–तमोगुण कफसे निद्रा सो आवत ताको जु नाम सुषुप्ति बताई ।
पित्त तमोगुण रूपअज्ञान है अचेतन वाहिको करके भुलाई ॥
रजोगुण पित्त रु वायुसे चक्र हो भ्रम सो तासे होत सदाई ।
कफ तमोगुण वायुसे अज्ञान हो जड़ ग्लानि जँभाई सो आई ॥

स्पष्टार्थ–तमोगुण और कफ इनसे निद्रा आती है, पित्त और तमोगुणसे रूपका अज्ञान होता है और गिरता है, उसको मूर्छा कहते हैं, रजोगुण और पित्तसे व वातसे चक्र आता है,उसे भ्रम कहते हैं. कफ और तमोगुणसे व वायुसे घट पटादिक रूप दीखता है और शरीर जड़ होगा, जँभाई और ग्लानि ये लक्षण होते हैं और जो रोगसे निद्रा आती है उसे तन्द्रा कहते हैं ।

अथ ग्लानिका लक्षण ।

संपूर्ण धातुका सारभूत जो ओज है उसका क्षय होनेसे दुःख और अजीर्ण और श्रम हो करके हाथ पावमें विकल होके हृदयमें पीड़ा होती है और आयास नहीं करनेसे शरीरको श्रम होता है. अन्नादिकपर इच्छा न होनेसे उसे ग्लानि कहते हैं और कोई रसक्षय भी कहते हैं ।

अथ आलस्य लक्षण ।

शरीरमें सामर्थ्य होके कामकरनेको दिल नहीं होता है उसे आलस्य कहते हैं ।

जृम्भा लक्षण ।

चेतनाका स्थान शीतल होनेसे आदमी एक सांस पीके जो सांस छोड़ता है उसे जँभाई कहते हैं. कोई उबासी कहते हैं ।

छींक लक्षण।

उदान वायु अर्थात् कंठस्थानका वायु और प्राण अर्थात् हृदयस्थानका वायु शिराद्वारसे ऊपर मस्तकमें दोनोंका संयोग (मिलाप) होकर जो आवाज होता है उसे छींक कहते हैं।

डकार लक्षण।

उदान वायुका कोप होके जो उदान वायुका ऊपर गमन होता है और ऊपर गमन होके जो उद्गार अर्थात् आवाज आता है उसे डकार कहते हैं।

पुनः इस प्रकरणमें शारीरक कहा है। सो उसमें कला सात और स्थान सात, सप्त धातु और सप्त उपधातु हैं. मल सात ७, उपधातु सात ७, त्वचा सात ७, तीन दोष ३, नौसो स्नायु, दोसो दश संधि, हाड़ तीनसो ३००, मर्म एकसो सात १०७, शिरा सातसो ७००, धमनी चौबीस २४, मांसपेशी ५००, स्त्रीको पांचसो बीस ५२०, कंडरा सोला १६, रंध्र पुरुषको दश और स्त्रीको १३, फुप्फुस पित्त, वृक्क तिल, उष्ण, लिंग, हृदय शरीर पोसनेवाली शिरा, प्राणवायुके व्यापार, मरणलक्षण, रोगनिवारण विषे साध्य, चार पदार्थसे शरीर रक्षा, सृष्टिक्रम, चौबीस तत्त्व व प्रकृति विश्वकर्ताने कैसी पैदा करी सो, पुरुषको पुरुषार्थ कैसा होता है, जिस क्रमसे सृष्टि होती है वह क्रम, तीन प्रकारके अहंकारके काम, तन्मात्रा पांचोंके विषय, महाभूत पांचोकी पैदा, इन्द्रियोंके विषय, उक्तका संक्षेप. चौबीस तत्त्वराशि, आहारकी गति, आहारकी दो अवस्था, रसके कार्य, आहारकी अवस्था, मलका अधोगमन, रसका कार्य, जो जो स्थानमें गमन, रक्तके प्रधान रस आदि सप्त धातुकी पैदायस, क्रम, गर्भकी पैदायस, कन्या पुत्रका उपाय, बालकके पहले महीनासे बीस वर्षतक उपाय, बालकोंकी आयुषका विचार, वातप्रकृति, पित्तप्रकृति, कफप्रकृति, द्वंद्वज और त्रिदोष प्रकृतिके लक्षण, इन्द्रियादिककी उत्पत्ति, ग्लानि, आलस्य, जंभाई, छींक, डकार इन सर्व चीजोंका जुदा जुदा भेद करके इस प्रकरणमें लिखा है सो जानना चाहिये. ऐसा कवित्त, दोहा और वार्तिकमें साफ कर-दिया है. और मर्मोंके भेद अर्थात् स्थान साफ करके बताया है सो खूब खयाल करके देखना तब मालूम होगा. इसमें कोई भूल हो तो गुणीजनोंको गुण लेके अवगुणको छोड़ देना चाहिये कारण कि सब आयुर्वेद चार लाख

है.लेकिन ग्रंथका ज्यादा विस्तार होनेके वास्ते थोड़ा सार सार लिया है जिससे किसी कामकी अपेक्षा न रहके काम चलता रहे. विस्तारपूर्वक सब-शारीरक लिखनेसे ग्रंथ बहुत बड़ा होगा ऐसा जानना चाहिये।

इति दूसरा प्रकरण समाप्त।

तृतीयप्रकरणारंभ।

अब इस प्रकरणमें अष्टविधपरीक्षा लिखता हूँ।

अथ दूतपरीक्षा।

दोहा—जैसा जनको धूम्रसे, ज्ञान अग्निका होय।
साध्य असाध्य रोग जान पड़े, दूत चेष्टा जोय ॥ १ ॥

अथ शुभदूत लक्षण।

छन्द छप्पै—स्वजातीय हाथ फल द्रव्य श्वेत वस्त्र होय जानो।
क्षत्री ब्राह्मण होय सुशील शुभ वचन बोले यों मानो।
तांबूल भक्षण अभ्यंग कुशल चंदन है सोई।
शुभवचन बोले यान बैल घोड़े चढ़े होई।
श्वेतफूल फल हाथमें ऐसा दूत शुभ जोय।
रोगीके सुख होनेको अच्छा दूत यह सोय ॥ २ ॥

अथ अयोग्यदूत लक्षण।

सवैया—ज़ातमें स्त्रीदोहो जो आवत अंगसे हीन खुद रोगी है सोई।
शोकको करता निरंतर पापी अशुभ जु बोले रु दीन सो होई।
लाल रु भगवा काला सो वस्त्र हाथमें मूशल डंडा है सोई।
मुंडन मुंडे शरीरमें तेल भयंकर बोले नेत्र जल होई ॥ ३ ॥
भस्म लगाई हो हाथमें अग्नि रु मैला आदमी होय संध्याको आवे।
घबराया आकर सूने जो स्वरमें लक्षण भाग ए आ बतलावे।
ऊपर नीचेको जागा खाड़ा होय हाथ जोड़ पांव एक खड़ावे।
इतनी बातोंमें एक जो होय तो निषिद्ध हैं दूत ए शास्त्र बतावे ॥ ४ ॥

दूत घरसे वैदके बुलानेको जाता है उसको शकुनका विचार ।

दोहा-शुभ शकुन सो अशुभ है, अशुभ सो शुभ जान ।
दूत जाय घर वैदके, लेत शकुन यों मान ॥ ५ ॥

दूत जिस दिशापर आके खड़ा होता है उस परसे साध्य असाध्य रोगकी परीक्षा ।

दोहा-सूर्य छांड़ि है जो दिशा, सो विदग्ध है जान ।
स्थित सूर्य प्रदीप्त है, दृष्टि धूम्र है मान ॥ ६ ॥
बाकी दिशा जो पांच हैं, वो शुभ हैं यों जोय ।
शुभ अशुभ देखो जभी, दूत खड़ा जां होय ॥ ७ ॥

दूतके अक्षर बोलनेसे साध्य असाध्य रोगपरीक्षा ।

दोहा-दूत अक्षर बोले सभी, सो आधे करलेय ।
भाग तीनमें शून्य हो, मृत्यु जान समजेय ॥ ८ ॥

अथ वैद्य रोगीको देखनेको जाता है उस वक्त रास्तामें जो शकुन होता है उसपरसे शुभ या अशुभ रोगीके लक्षण कहते हैं. कारण शकुनसे यश अपयश तुरत मालूम होता है, जैसा अग्निज्ञान धुवांसे होता है ।

दोहा-रोगीकी पूछे कोऊ, बैठ दाहिनी ओर ।
पृथिवी बाँये सुर चले, मरे नहीं विधि कौर ॥ ९ ॥
रोगीके प्रसन्न जो, वामें पूछे आय ।
चंद्र बंद सूरज चले, जीवे ना मरजाय ॥ १० ॥
वहते सुरसे आयकर, सुनै और सो जाय ।
जो पूंछे परसंग वह, रोगी ना ठहराय ॥ ११ ॥
सुनै औरसे आयकर, पूछे बहते श्वास ।
ए निश्चय कर जानिये, रोगीको नहीं नाश ॥ १२ ॥

अथ शकुनविचार ।

घनाक्षरी-भेरी औ मृदंग गज और ब्राह्मण अश्व बैल फल छत्रि लेके मांस शुभ जानिये । जलभर स्वागनि सो कामनि मिलत गाई शंख बिन नौबत खंजरी शुभ मानिये।मोर चाष पक्षी राजा फूल और वेश्या आवे चंदन लगा-

या हुआ विप्र सुख जानिये। यामें कोई एक चिह्न होय सोही शुभ जान
शिवनाथसिंह कहि शास्त्रही प्रमानिये॥ १३॥

सवैय्या—श्वान रु सर्प रु मूसा रु मुंगस मीन दही दूध डावासो आई।
व्याघ्र रुबकरा विन शोकका प्रेत चैतन्य अग्निकी ज्वाला दिखाई।
श्वेत सो वस्त्र ध्वजा पताका येते शकुन डावा ले अच्छाई।
सीधे मृगरु काक अच्छा होय मन्न उछाव सो शुभ सदाई॥ १४॥

अथ अशुभ शकुन।

सवैया—वेदके सन्मुख छोकरी आदि छींकत बिडाली गोहो आड़ीसो आई।
गिरगिट मरकट विधवा नारी रु अमंगलादिक सन्मुख आई।
संध्याकाल अरु स्नानसमै रु भोजनकालमें आवत सोई।
येते शकुन अशुभ बतावत शिवनाथ तू देख यूं शास्त्रमें गाई॥१५॥

वैद्यको वर्जनीय कर्म।

दोहा—रोगी घर सोवै नहीं, भोजन कबहुँ न लेय।
विना बुलाया जाय मत, शिवनाथ शास्त्र वरजेय॥ १६॥

अथ वेदलक्षण।

छन्दछप्पै—वेद शास्त्र सम्पूर्ण पढ़ै सेवा कर गुरुसे।
दवाविधि संपूर्ण क्रिया जानै सब सुखसे।
यशस्वी निस्पृह धीरजवान दयावतै।
गर्वरहित धार्मिक आलस्यरहित भगवत भक्तै।
वेद शास्त्रपैं विश्वास होवै ऐसा वेदनिधान।
शिवनाथ सिंह ऐसे कहै ऐसा वैद्य बखान॥ १७॥

सवैया—मैला वस्त्र पहरत है करकश रहै मगरूरी दिखाई।
अविक बोत्तरु ग्राम कुंठा रहै विना बुलाये जात रु दवाई देई।
साध्य असाध्य सो रोग न जानत ऐसा वैद्य निषेध्य बताई।
इतनी बातोंमें हीनसो दीसत पूजाके लायक वैद्य वो नाई॥१८॥

अथ अथर्वणमुनिका मत ।

श्लोक-एकोत्तरं मृत्युशतमथर्वाणः प्रचक्षते ।
तत्रैकः कालसंयुक्तः शेषास्त्वागन्तवः स्मृताः ।
ममापि ग्रसते कालः कुतः पुत्र रसायनम् ॥ १९ ॥

अर्थ--अथर्वण मुनिने एक प्रकारका मृत्यु कालसंज्ञक कहा है उसकी दवा नहीं है और सौ प्रकारके मृत्यु अकाल हैं, उनकी दवाई करना चाहिये. नहीं तो आयुष होनेसे भी आदमी मरता है उसका प्रमाण ।

दोहा-तेल होतही दीपकमें, हवासे दीप बुझाय ।
वैसे उमर होत ही, रोगादिकसे मरजाय ॥ २० ॥

अथ रोगीलक्षण ।

श्लोक--यो रोगी भिषजं सम्यक् रोगशान्तौ न पूजयेत् ।
तस्यार्जितस्य पुण्यस्य प्राप्नोत्यर्थं भिषग्वरः ॥ २१ ॥

अर्थ--जो रोगी अच्छा हुए पीछे वैद्यको पूछता नहीं और आदर सत्कार करता नहीं उसके शुभ कर्म और पुण्यका आधा हिस्सा वैद्यको मिलता है, इसवास्ते अपना शरीर वैद्यसे पीछा मोल लेना चाहिये २१॥

अथ रोगीका लक्षण ।

श्लोक-आढ्यो रोगी भिषग्वश्यो धैर्यवान् सत्ववानपि ।
वैद्ये शास्त्रे च विश्रब्धः कृतज्ञः पथ्यकारकः ॥ २२ ॥

अर्थ--धनवान् १, वैद्यके बस रहनेवाला २, धीरजवान् ३, सत्ववान् ४, दवा और वैद्यशास्त्रमें विश्वास रखनेवाला ५, तथा माननेवाला ६, कृतज्ञ ७, पथ्य करनेवाला ८, इन आठों गुणोंसे युक्त रोगी तुरत अच्छा होगा और दवा देने योग्य है ॥ २२ ॥

दूसरा लक्षण रोगीका ।

श्लोक-निजप्रकृतिवर्णाभ्यां युक्तः सत्त्वेन संयुतः ।
चिकित्स्यो भिषजा रोगी वैद्यभक्तो जितेन्द्रियः ॥ २३ ॥

अर्थ-जिस बीमारकी पहलेसे प्रकृति बदले नहीं सो और शरीरका रंग फिरा नहीं सो और सच्चा बोलनेवाला और वैद्यकी आज्ञामें रहने-वाला और पथ्य करने वाला ऐसा बीमार दवा देनेके योग्य है ॥ २३ ॥

द्रव्य अवश्य चाहिये उसका प्रमाण।

श्लोक-सर्वे द्रव्यमपेक्षन्ते रोगिप्रभृतयो यतः।
विना द्रव्यं न भैषज्यं चिकित्साङ्गं ततो धनम्॥ २४॥

अर्थ-रोगी आदि सर्व प्राणीमात्रको द्रव्यकी इच्छा है और दवा द्रव्य विना होती नहीं इस वास्ते द्रव्य दवाका अंग है ऐसा समझना॥ २४॥

अथ रोगीके पास सेवक कैसा होना।

श्लोक-स्निग्धोऽजुगुप्सुर्बलवान् युक्तो व्याधितरक्षणे।
वैद्यवाक्यकृदश्रान्तो युज्यते परिचारकः।
अनुरक्तः शुचिर्दक्षो बुद्धिमान् परिचारकः॥ २५॥

अर्थ-स्नेह रखनेवाला, निंदा न करनेवाला, बलवान्, रोगीकी रक्षा करनेमें हुशियार, वैद्यका हुक्म सुननेवाला, रोगीको धीरज देनेवाला, कृपालु, शुद्ध, चतुर, बुद्धिमान् १०, इन दश गुणोंका सेवक अथवा नौकर रोगीके समीप होना चाहिये॥ २५॥

अथ दवालक्षण।

श्लोक-वैद्यो व्याधिं हरेद्येन तद्द्रव्यं प्रोक्तमौषधम्।
तद्यादृशमवश्यं स्याद्रोगघ्नं तादृशं ब्रुवे॥
बहुकल्पं बहुगुणं संपन्नं योग्यमौषधम्॥ २६॥

अर्थ-वैद्य जिस द्रव्यसे बीमारीका नाश करता है उस द्रव्यको दवा कहते हैं. वह दवा ऐसी होना कि जिससे बहुत रोगी अच्छे हों और बहुत रोगोंपर चले और बहुत गुणोंसे युक्त हो और बहुत मिहनतसे बनी हो२६॥

दवा क्रिया।

रोगीकी उमर बहुत है लेकिन दवा विना रोग नहीं जाता है, इसवास्ते दवा अवश्य लेना चाहिये उसका प्रमाण कहते हैं॥ २७॥

श्लोक-सति चायुषि नोपायं विनोत्थातुं क्षमो रुजी।
दर्शितश्चात्र दृष्टान्तः पङ्कमग्नो महागजः॥ २८॥

अर्थ-आयुष्य होनेसे भी दवा लेने विना रोग जाता नहीं, उसका दृष्टांत जैसे बलवान् हाथी दलदलमें फँसता है सो निकाले विना निकलना

मुष्किलहै उसी माफक दवा विना रोग जाना मुश्किल है तथा वह रोगी अवश्य मरेगा ॥ २८ ॥ और अवश्य मरेगा उसका दृष्टांत ।

श्लोक-सति चायुषि नष्टः स्यादामयैश्चाचिकित्सितः ।
यथा सत्यपि तैलादौ दीपो निर्वाति वात्यया ॥ २९ ॥

अर्थ-रोगी आयुष्य होनेसे भी मरता है. जैसा चिरागमें तेल और बत्ती रहनेसे हवासे दीप बुझ जाता है वैसे दवा विना रोगी मरता है. दीपका गुल और पतंग तथा हवाका इलाज है वैसे दवासे बचता है ॥ २९ ॥

दोहा-साध्य दवाई ना लेय, सो असाध्य हो जाय ।
असाध्य दवाई ना करे, वह रोगी मरजाय ॥ ३० ॥

दवा अवश्य करनेका प्रमाण ।

श्लोक-तावत्प्रतिक्रिया कार्या यावच्छ्वसिति मानवः ।
कदाचिद्दैवयोगेन दृष्टारिष्टोऽपि जीवति ॥ ३१ ॥

अर्थ-रोगी जहांतक श्वासोच्छ्वास छोड़ता है वहांतक दवा अवश्य करना चाहिये. कारण कि परमेश्वरकृपासे रोगी मरण चिह्नवाला जी सकता है, इसवास्ते दवा अवश्य करना और वैद्यको लाजिम है कि पहले रोगकी परीक्षा उत्तम तरहसे करना पीछे दवा करना ॥ ३१ ॥

अथ जो रोगियोंको दवा वर्ज्य हैं ।

सवैया-ज्वारी औ चौर मलेच्छ ब्रह्मघाती हत्यारा पापी निरंतर होई ।
दुष्ट औ ग्रामकुठार औ रंजक और कसाई है सोई ॥
इतने रोगीको दवा ना दीजिये ताको पाप सो वैद्यको होई ।
पुरातन शास्त्रमें ऐसा कहा शिवनाथ बाबा ले ऐसी लिखोई ॥३२॥

वैद्यको उचित है कि रोगीकी परीक्षा दर्शनसे स्पर्शसे प्रश्नसे द्रव्यसे सेवकसे करे, इन चार बातोंसे खूब ध्यान करके परीक्षा करनी चाहिये ॥

अथ स्वप्नकी परीक्षा ।

दोहा-पूर्वरूप स्वपना हुवे, ताको सुनो विचार ।
बुरी भली जैसी हुवे, रोगीको सुखसार ॥ ३३ ॥

स्वप्नका यह नियम है कि पहले पहर रातका स्वप्न एक बरसमें फल देता है, और दूसरेमें स्वप्न आवे तो छः महीनासे फल मिलेगा, और तीसरे

प्रहरमें सपना आवे तो तीन महीनेमें फल मिलेगा ४ और चौथे प्रहरमें स्वप्न आवे तो एक महीनेमें फल देता है ५ और अरुणोदयमें स्वप्न आवे तो दश दिनोंमें फल देता है।

अथ शुभ स्वप्नोंका विचार।

चौपाई–गज वाजि बैलपै चढ़े हो जोय। पर्वत शिखर बँगलापै होय॥
समुद्र तिरै और कुशल घर आवै। लीलै जांड चढ़े होय पावै॥२४॥
अंगमें विष्ठा लगा है देखै। आप मरण और रोता पेखै॥
अजोड़ कामिनि मिलै जो आय। धर्म बढ़े ये स्वप्ना पाय॥२५॥
राजा हाथी सोना घोड़ा गाय। स्वप्ने देखै कुटुम बढ़ाय॥
महल ऊंचे चढ़ भोजन करै। अथाह पानीमें समुद्र तिरै॥२६॥
दासकुलका तो भी राजा होय। स्वप्नो शास्त्र बखाने जोय॥
और स्वप्नाको कहूँ विचारा। भविष्य भूतको तामें सारा॥२७॥
दीपक जलता वृक्ष देखै कोई। कन्या चक्र ध्वजा रथ मिलै सोई॥
ताको राज मिलै इस जोय। शुभस्वप्नो है शास्त्रमें होय॥२८॥
आदमीका मांस स्वप्नमें खावे। ताको फल यों शास्त्र बतावे॥
पांय खात स्वप्नामें जोय। लाभ पांचसो रुपया होय॥२९॥
सीधा पांव खात है जानौ। एक हजारको लाभ हो मानौ॥
मस्तक भखै लाभ होइ राज। हृदय मंत्रिको मिलै समाज॥४०॥
पांव मोचड़ी स्वप्नामें पावै। ध्वजा चक्र तलवार मिलावै॥
इतना मिलेपै जागा जो होय। मार्ग चलनो अवश्य जोय॥४१॥
नाव बैठ मोटी नदीमें तिरावै। परदेश जाय कुशल घर आवै॥
एते स्वप्ना शुभ हैं जान। अशुभ आगे कहूं सोइ मान॥४२॥

अथ अशुभ स्वप्नोंका विचार।

दोहा–हवा देखनेसे यथा, होय वृष्टिका ज्ञान।
होनहार तिमि समझ ही, स्वप्न पूर्व ही जान॥ ४३॥
चौपाई–दात पड़ें केश उतरे हैं जोय। द्रव्यनाश अस रोगहु होय॥
बैल भिडां हाडके व्याघ्र देखै। पशु बादर वाराह आदि पेखै ४४

एते पीछे लगे हैं जोय । राजभय अवश्य होय जोय ॥
धूली तैल घृतसे नावे । रोग होयके द्रव्य नशावे ॥ ४५ ॥

सपनामें जैसे पोशाकसे स्त्री मिलै उसका फल।

चौपाई-कपड़ा चंदन लाल है जान । कुंकू लाल स्त्री मिलै जी आन ॥
ऐसा स्वप्नामें देखै कोई । ताके हाथसे हत्या होई ॥ ४६ ॥
काले कपड़े काला चंदन । ऐसा रूप हो मिले सो कासन ॥
मरण आवत ये स्वप्नमें देखै । निषिद्ध स्वप्नाशु शास्त्रमें लेखै॥४७॥
पीले कपड़े केशर लागी । मिले नारि यों भाग्यहि जागी ॥
कपड़े श्वेत श्वेत हो फूल । सफेद चंदन लगे सुमूल ॥ ४८ ॥
ऐसी कामिनी मिलै स्वप्ने आय । फते होय दश दिशामें जाय ॥
क्षौर ब्याह नाच जो देखै । मृत्यु होत यो शास्त्रमें लेखै ॥ ४९ ॥

अथ दुष्ट स्वप्नोंके लक्षण।

सवैया इंदव-नंगे संन्यासी गुसाईं इत्यादिक मुंडमुंडे स्वपनामें जु देखे ।
लाल रु काला कपड़ा पहरे हो नाक कान काटे अति पेखे ॥
पँगला कूबड़ा खुजा रु काला हाथोंमें फाशा रु शस्त्र आदि लेके ।
चोरोंको वह मारत बांधत है वो दक्षिण दिशासे आया यों देखे५०
भैंस रु ऊंट गधेपै चढ़ा हो एते चिह्न सपनेमें पाई ।
पर्वत झाड़ ऊंचेसे गिरा हो पानी कुवामें डुबा हो जाई ॥
अग्नि जला कुत्ता बिल्ली डसे मच्छ भखा अंध हो दीप बुझाई ।
एते देखे सपने सो निषिद्ध शिवनाथने शास्त्रमें ऐसा बताई॥५१॥
नेत्रसे होत अंधा सपनामें तेल सुरा सो पीता है जानो ।
लोखंड तिलोंका लाभ हो जाता सो शीजा अन्न भखे बहु मानो॥
पातालकुँवाके मांई गया हो ऐसा सपना निषिद्ध बखानो ।
अच्छी प्रकृतिका रोगी होत रु रोगीके ऐसा हो मृतक हो जानो ५२

अथ दुष्ट स्वप्नोंका परिहार।

छन्द छप्पै-स्वप्न नगन मुंडादि तासु परिहार बखानो ।
किसी पास मत कहे प्रात उठ स्नान करानो ॥

सोना तिल औ लोहा आदिक धर्म करे औ तैसोई।
दुष्ट संहारन देवताके स्तोत्र पढ़ै निश्चेई॥
ऐसी रीति मरणसे तीन दिन, करो नित्य यों जोय।
मंदिरमें जागरण करि, दुःस्वप्ननिवारण होय॥ ९३॥

अथ शुभ स्वप्नोंका दूसरा प्रकार।

सवैया—इन्द्रादिक देव रु राजा ब्राह्मण मित्र इते सजीव दिखाई।
अग्नि रु गाय प्रयागादि तीरथ सपनेमें देखत ही सुख पाई॥
गाडरु घुदड़े पानीमें नावत दुशमनसे संग्राम जिताई।
महल रु गज अश्व रु बैल इतेपै चढ़ सपने सुख पाई॥९४॥
उत्तम स्थानमें नारी मिलै आप मरण रोता हो विष्ठा लगाई।
कच्चा सो मांस भखै सपनेमें रोग घटै द्रव्य संपति पाई॥
जोक रु भौंरो सर्प मक्षिका मच्छादिक भखे सपनामें आई।
एता सपना शुभ है सोई रोग कटै सुख संपत पाई॥ ९५॥

चौपाई—सपेद फूल वस्त्र जो मिलै। मांस आंब आदि कोई फलै।
सपने एते मिले जो आय। रोग कटै संपति सुख पाय॥९६॥
सूर्य चंद्रको दर्शन पावै। रोग घटै संपति सुख आवै।
श्वेत भुजंग भुजापै डसे। बहुत लाभ हो मीलै जसे॥ ९७॥
सपने बेड़ी डाली हो जान। सुपुत्र पुत्र हो निश्चय मान।
रक्त सुरा सपने कोई पीवे। ब्राह्मण विद्या क्षत्री धन पावे॥९८॥
ताजा दूध सपनामें पीवे। दिन दशमें धन बहुत मिलावे।
आसन वस्त्र पालकी वाहन। शारीर चेत तो लाभ हो मान॥९९॥
तिरे सरोवरमें कमल दिखाई। दही दूध तापै कोई खाई।
पृथिवीपति राजा वो होय। ऐसा सपने देखे जोय॥ ६०॥
रक्त बहत अपने शरीरसें जोय। रक्त स्नान करत है सोय।
शरीर कटा देखे कोई मानो। ताको राज मिले यों जानो॥६१॥
एते सपना शुभ हैं जानो। शास्त्रमें ताको है प्रमानो।
शिवनाथसिंह यों कहै विचार। निघंट आदिमें देखो सार॥६२॥

वैद्यको उचित है कि रोगीकी अष्टविध परीक्षा करना चाहिये. वे अष्ट परीक्षा इस माफिक हैं सो देखोः—

श्लोकः—रोगाक्रान्तशरीरस्य स्थानान्यष्टौ निरीक्षयेत् ।
नाडीं मूत्रं मलं जिह्वां शब्दं स्पर्शदृगाकृतीः ।

रोगीके आठौ स्थान देखनेसे सब साध्य असाध्य रोग मालूम हो जाता है. वे स्थान इस माफिक हैः—नाडी, मूत्र, मल, जिह्वा, शब्द, स्पर्श, नेत्र, आकृति इनकी परीक्षा करनी चाहिये ॥

अथ नाडीपरीक्षा ।

दोहा—सितार सारंगी वीणसे, ज्ञान रागका होय ।
वैद्य नाडी देखे जबै, दुख सुख समझे सोय ॥ १ ॥
शरीर रोगी हो जबै, तब कुपीत हों मैल ।
अनविचार भोजन करे, अनपानीसे खेल ॥ २ ॥
वैद्य नाडी और मूत्रकी, आदि परीक्षा लेय ।
रोगज्ञान हो जाय तब, ताको औषध देय ॥ ३ ॥
नाडी मूत्रकी आदि ये, परीक्षा जानै नाय ।
रोगी मरै ना जस मिले, वैद्य ज्ञान जानेय ॥ ४ ॥
देश काल बल रोगीको, सर्व ध्यानमैं आन ।
जो युक्ती कर दे दवा, तो जस मिल बहु जान ॥ ५ ॥

नाडीका स्थान ।

दोहा—दक्षिण अंगुठा मूलपर, नाडी है सो जोय ।
स्पर्शअंगुली तीन धर, ज्ञान नाडीका होय ॥ ६ ॥
चित मन आत्मा स्थिर करे, दक्षिण कर धर जोय ।
वाम हाथ लख नारिका, ज्ञान नाडीका होय ॥ ७ ॥

अब नाडियोंके आठ नाम कहते हैं ।

दोहा—स्नायु नाडी हिंस्रा धमनी, धरणीधरा तंतुकी जान ।
जीवन ज्ञान ऐसे आठ हैं, नाडीनाम प्रमान ॥ ८ ॥

नाडी देखनेमें वर्ज्य ।

दोहा—तुर्त स्नान भोजन किया, तेल लगाया होय ।
भूख प्यास निद्रा करी, इन नाडी मत जोय ॥ ९ ॥
अंगुठमूल धमनी बहै, जीवसाक्षिणी भूत ।
लख चेष्टा दुख सुख कहै, वैद्य ज्ञान अद्भूत ॥ १० ॥
रत्नपरीक्षा अभ्याससे, ज्यों जौहरी करेय ।
नाडीज्ञान नित देख तू, सुख दुखको समझेय ॥ ११ ॥

नाडीके देवता ।

वात—देवता ब्रह्मा हैं, पित्तको शंकर जान ।
कफ—देवता विष्णु हैं, या विध दैवत मान ॥ १२ ॥

अथ नाडियोंके स्थान और गति ।

छंद सवैयाईंदव--वातकी आगे पित्तकी बीचमें कफकी अंत सो बहत सदाई ।
वायुकी टेढ़ी बहै धमनी अरु पित्तकी ठेंका सु देत चलाई ॥
कफकी नाडी मंद जु चालत सन्निपातसें चपल जु भाई ।
याविध नाडी त्रिदोषकी जान शिवनाथहिसिंहयों शास्त्र बताई।

नाडियोंकी गति ।

सवैया—सर्प रु जोंककी चाल हो धमनी बादीकी नाडी है वेद बखानो । ।
काक रु लाव रु मिंडक चाल हो पित्तकी नाडी है होत जु मानो॥
हंस मयूर कवूतर कुक्कुट चालै सो नाडी कफकी जानो ।
तर्जनि मध्यमा अनामिका क्रमसे वात रु पित्त जु श्लेष्मा मानो १४

अथ दो दो दोषकी नाडी ।

दोहा--क्षणै सर्पकी गति चलै, क्षण मेंडककी चाल ।
मध्यमा तर्जनि बिच चलै, वात रु पित्त समाल ॥ १५ ॥
सर्प हंससी मिल चलै, तर्जनि अनामिका नीच ।
वक्र मंद धमनी चलै, वात रु कफ जाणे च ॥ १६ ॥
मध्यमा अनामिका नीचे चलै, मेंडक हंस ज्यों चाल ।
ठनका दे गति मंद हो, तो पित्त कफ समाल ॥ १७ ॥

सुतार पक्षी ठोंका देहै, काष्ठमें जैसा जान।
तीनौं अंगुली नीचे चलै, तो सन्निपात है मान ॥ १८ ॥
एक जगा एक गति चले, नाडी आठौ पैर।
रोगी जींवै और सुख, यामें रती न फेर ॥ १९ ॥

अथ असाध्य नाडीका लक्षण छन्द इन्दव सवैया ॥

सवैया—हौल जु हौल रु शीतल शीतल व्याकुल व्याकुल बहत सदाई।
सूक्षम सूक्षम रैरैके चालत क्षणमें दीखे और क्षणमें नाई ॥
चल अचल गति बंद होत हैं स्थान जो भ्रष्ट वो दीखत आई।
ऐसी नाडी सन्निपातने ग्रसी है मृत्यु तो देत है संसै सो नाई२०
पित्तकी गतिमें चालत नाडी औ वात रु कफ बीचै दरसाई।
आपनि जगा जो छोड़ अन्नगत बारम बार जु चक्र फिराई।
क्योंहुक चंचल क्योंहुक सूक्षम मंद जो है सो असाध्य बताई।
शिवनाथसिंह कहै मुनिशास्त्रमें नाडी परीक्षा सो या विधि गाई २१
जाकी धमनी ठंडी बहत है मांसमें नाडी है ताकी बखानौ।
जलदी उष्ण गति होवे धमनी ज्वरहि कोप है नाडी पिछानौ।
काम रु क्रोधकी वेगसे नाडी हो आमकी नाडी है जड प्रमानौ।
मंदें अग्नि रु धातुक्षीणसे मंदही नाडी हो चिंता भयसे क्षीणही जानौ२२
उष्ण रु जड नाडी पूर्ण चालत रक्तदोषकी ताकी बताई।
वेग रु हलकी दीप्त अग्निकी भूखमें चपल तृप्त थिराई ॥
डमरूकी गति चालत नाडी आठई पहरमें मृत्यु ताकाई।
कांपत हलकी है के नहीं जू ऐसी तो चाल असाध्य बताई२३॥
धमनी स्थिर सदा जो चालत बीजसमान बिचै चमकाई।
दोय दिनामें मृत्यु हि ताकी पाराशरसंहितामें ऐसा बताई ॥
मेलडु शीतरु शीघ्रही चालत शीतल लागे रोगी मर जाई।
नाडी ज्ञानपारग बतावे धनंतर वैद्य सो ऐसा ही गाई ॥ २४ ॥
वातकी नाडी तीव्र गति होत रु तामें जो शीतल लागत आई।
शरीरमें चीकट आवे पसीना तो सात दिनोंमें वो रोगी मरेई ॥

शीत शरीर हो श्वास चढ़ै अति नाड़ी तीव्र गति दाह जनाई।
पंदरे दिनमें रोगी मरे वो वैद्यक शास्त्रमें ऐसा ही गाई॥ २५॥
वातकी नाड़ी उमैदसै चालत अन्तर जामधि शीत दिखाई।
बाहेर ग्लानि हो मंद गति तीन जो रात्र न रोगी ठराई॥
अति सूक्षम अति वेगसे चालत शीतल नाड़ी असाध्य बताई।
वैद्य पुरातन ऐसा बखानत निघंटरत्नाकरमें ऐसाई गाई॥ २६॥
क्योंहुक दीसत क्योंहुक नाहीं बिज्जु समान चमक्कत आई।
ऐसी नाड़ी जो रोगीकी चालत सो यमके घर जात बताई॥
उष्ण रु वक्र हो सर्पसी नाड़ी हो वेगसे चालत चाल दिखाई।
कंठमें रोधके कफ सो बोलत ऐसेका जीना तो है कठिनाई॥२७॥
कांपत चंचल नाड़ी सो दीखत नाकके श्वास आधार चलाई।
शीतल होत असाध्य ही जान ले एक प्रहरमें वो रोगी मरेई॥
त्रिदोषयुक्त चलै अतिनाड़ी मध्य समै ज्वरको दिखलाई।
ऐसा रोगी जिये एक दिन दूसरे दिन ही वहू मर जाई॥ २८॥
पांवमें नाड़ी सूक्ष्म जु दीसत हाथमें नेकहू दीसत नाई।
मुख फाटो भ्रुक आंखें जु दीखैं वैद्य तजो वाको दूरसे जाई।
त्रिदोष हि नाड़ीमें एकदा कोपत कष्टसे साध्य होवे के नाई।
ऐसा पुरातन वैद्य बखाने शिवनाथ कहै सही शास्त्र बताई॥ २९॥

अथ वातादि दोषज्वरकी नाड़ीका लक्षण।

दोहा–टेढ़ी चंचलगति चलै, नाड़ी लागे शीत।
वातज्वरकी नाड़िका, या विध जानो मीत॥ ३०॥
सरल अती अतितेजसे, नाड़ी गर्म दिखाय।
पित्तज्वर तामें कहै, नाड़ीभेद बताय॥ ३१॥
स्थिर स्निग्ध शीतल चलै, नाड़ीकी गति जाण।
कफज्वरकी नाड़ी वहै, ऐसा जान प्रमाण॥ ३२॥

दो दो दोषज्वरकी नाड़ी।

दोहा–बांकी चंचल कूदके, बहत नाड़िका जोय।
वात पित्त ताको कहै, यामैं झूठ न होय॥ ३३॥

जरा दीखके मंद हो, नाड़ीकी गति जान ।
कफ बादी ताको कहो, नाड़ी याविध मान ॥ ३४ ॥
सूक्ष्म स्थिर शीतल चले, नाड़ी या विध जोय ।
कफ रु पित्त ताके कहे, यामें झूठ न होय ॥ ३५ ॥

अथ सुखकी नाड़ी ।

दोहा--हंस और गजके सदृश, नाड़ीकी गति जान ।
सुख प्रसन्न दीखै सदा, तो सुखसाध्य है मान ॥ ३६ ॥

अथ भावार्थ नाड़ीपरीक्षा ।

दोहा और कवित्त आदि इनमें जो लिखा है सो ध्यान करके अर्थ-पूर्वक जो बांचेगा उसको निश्चय नाड़ीज्ञान बहुत उत्तम प्रकारसे होगा और स्याबासी मिलेगी। यह सब नाड़ीका विचार बहुत ग्रन्थोंके आधारसे बनाया है, सो गुणी जनोंने गुण ग्रहण करना और अवगुणोंकी तर्फ नहीं देखना

इति नाडीपरीक्षा समाप्त ।

अथ मूत्रपरीक्षा ।

अब नाड़ीपरीक्षाके आगे मूत्रपरीक्षा कहता हूँ। जिससे सर्व रोगोंका जुदा जुदा भेद समझता हैं ।

छन्द छप्पै-प्रातसमय उठ जल्द रोगीने ऐसा करना ।
आदि अंतको छोड़ मूत्र बीचेको धरना ॥
काचपात्र ले साफ तामें धर राखो मूत्र ।
दिन ऊगे तब देख परीक्षा करो पवित्र ॥
साफ सींकसे तेल ले, बूंद मूत्र पै डाल ।
शिवनाथसिंह कहे देख तू, आगे कहूँ हवाल ॥ ३७ ॥

आठो दिशाओंमें मूत्रपर तेलका बिंदु जाता है उसका विचार ।

छन्द सवैया-पूर्वमें तैलको बिंदु जु जात तो हो सुखसाध्य रोगी अच्छाई ।
दक्षिण तैलको बिंदु चलै तो दवासे रोगी अच्छा हो भाई॥

पश्चिम बिंदु चले सुख होत है रोग मिटे कछु संशय नाई ।
उत्तर जात सो सुख बिंदुसे शिवनाथ कहै यों शास्त्र बताई ॥ ३८ ॥

(चार विदिशाओंका विचार)

सवैया-आग्नेय तेलका बिंदू जो जात तो एक महीना वो रोगी बचेई ।
नैऋत तैल जा छिद्र पड़े तो एक महीना न रहत बताई ॥
वायव्य जात असाध्य बतावत दवा न लागत शास्त्रमें गाई ।
ईशाने बिंदु जात असाध्य है मासमें मरे यों निघंटमें गाई॥३९॥

अब तीनों दोषोंसे कारूराका रंग और तेलका आकार कैसा होता है इसका विचार कहते हैं ।

सवैया-सुश्वेत रु नीला रूक्ष जो मूत्र हो तेल सर्पसम वातसे होई ।
आरक्त रु थोडा लाल रु पीला तेलसा बहुत लाल ऐसे रंग दिखाई॥
गर्म मंजिष्ठके पानीसो दीखत छत्रसे तेल पित्तसे होई ।
चीकट फेन जमासा पानी मोतीसा बिंदु कफसे हो जोई ॥४०॥

अथ वातपित्तके लक्षण ।

दोहा-धूवांके रँग चीकना, वातपित्तसे जान ।
श्वेत चीकना फेन हो, बादी कफसे मान ॥ ४१ ॥
लाल मैला कफपित्तसे, रंग मूत्रका होय ।
कृष्ण धुवां कै सर्व रँग, सन्निपातसे जोय ॥ ४२ ॥

अथ मंदाग्नि और अजीर्णके मूत्रके लक्षण ।

सवैया-निंबू बिजोराके रससमान हो काँजीको रँग तामैं दरसाई ।
चंदन चावलके पानीसो दीखत पीला रक्तसमान दिखाई ॥
अजीर्ण रु मंदाग्नि अपचसे मूत्रको रंग सो ऐसो बताई ।
शिवनाथसिंह कह वैद्यशास्त्रमें मूत्रपरीक्षा सो याविधि गाई॥४३॥

(अब मूत्रपर तेल डालनेसे तेलका आकार कहते हैं)

छंद छप्पै-हल मूसल तलवार बाण कछुवेसे होई ।
भैंसा ऊंट चौरंगा सम जान शीश बिन धड़सा होई ॥
डंडा चतुष्कोणका आकार मूत्रपै तेल हो जानौ ।

रोगी वह मरजाय असाध्य लक्षण ये मानों ॥
हंस गज तोरण छत्र सरोवर कमल चँवर बंगलासम होय ।
ऐसे मूत्रमें तेल हो तो सुखसाध्य होय जोय ॥ ४४ ॥

अब भूतादिकसे मूत्रमें तेलका आकार कैसा होता है सो कहते हैं ।

दोहा-चलनी सम बिल तेलमें, तो कुलप्रेत है जान ।
दो शिर हो धड़ सम दिखै, भूतदोष है मान ॥ ४५ ॥

(दवा देनेके योग्य रोगीके पेशावका रंग)

दोहा-मंजिष्ठ धुवां नीला चीकना, शीतल जलसम होय ।
बुद्धिमान जु बुलायके, ताको औषध देय ॥ ४६ ॥

(नागार्जुनके मतसे साध्य असाध्य)

दोहा-जलदी तेल फिरै मूत्रपै, साध्य रोगी है जान ।
तेलबिंदु जो थिर रहै, कष्टसाध्य तो मान ॥ ४७ ॥
असाध्य रोगीके मूत्रमें, तेल डुबै तत्काल ।
नागार्जुन अनुभाव ले, करी परीक्षा विशाल ॥ ४८ ॥

भावार्थ ।

आदमीके पेशाबको प्रातःकाल जलदी लेकर परीक्षा ऊपर लिखे अनुसार करना जिससे रोगज्ञान होगा ।

अथ मलपरीक्षा कहते हैं ।

वातका मल चिथड़े चिथड़ेसे और फेनयुक्त रूक्ष और धुवांकासा रंग और गाढा होता है और बादी क्षीणतासे पीला और गुठली ऐसा होता है ॥१॥ पित्तका मल पीला गुठली बँधा होता है और दुर्गंध शीतल गर्म लाल ऐसा रंग होता है॥२॥कफका मल सफेद थोड़ा शुष्क पीला चिकटा थोड़ा काला ऐसा होता है सो जानना॥३॥पित्त और बादीसे मल चिथड़े चिथड़े और पीला काला ऐसा होता है॥४॥कफ पित्तसे पीड़ा थोड़ा काला ऐसा चिकना थोड़े फेनयुक्त होता है॥५॥और त्रिदोषसे काला तुरस पीला गांठ बँधा हुआ, सफेद और नाना रंगका मल होता है ऐसा जानना चाहिये। और अजीर्णसे

दुर्गंध शीतल अपक्क और घड़ी घड़ीमें होता है और तीक्ष्ण अग्निसे गुठली जैसा और सूखा होता है और मंदाग्निसे पतला होता है । और रक्त-दोषसे लाल अथवा पानीसा होता है। असाध्य रोगीका मल दुर्गंध काला रक्त सफेद और बहुत रंगयुक्त मांसकासा पानी पीला पीला और मोरके पांखोंके रंग होता है। वाराहकी चरबी माफ़क हो तो रोगीका बचना मुश्किल है वह असाध्य है ऐसा जानना । और जलंधरादि उदररोगीका दुर्गंध मल होता है और क्षयरोगीका मल काला और पीला होता है। और आसवादीवालोंका अति सफेद होके कमर दुखता है। ऐसी सर्व मलकी परीक्षा जाननी चाहिये। इति मलपरीक्षा समाप्ता।

अथ जीभपरीक्षा कहते हैं ।

दोहा-जीभ ठंडी खरदरी फूटी, सागपानसम जान ।
लाल रूक्ष हो बादीसे, ए निश्चयकर जान ॥ ४९ ॥
रक्त वर्ण रंग काला है, गर्म पित्तसे जान ।
शुभ्र व जड़ गीली चीकनी, कफसे जिह्वा जान ॥ ५० ॥

इति त्रिदोषजिह्वालक्षण ।

दोहा-कृष्ण वर्ण काँटे सुखी, विदग्ध रूक्ष हो जोय ।
खरदरी सब चिह्न दिखैं, सन्निपातसे होय ॥ ५१ ॥
दो दो दोष जामें हों, वह दो दोषसे जान ।
शिवनाथसिंह कह जीभकी, परीक्षा शास्त्रप्रमान ॥ ५२ ॥

इति जीभपरीक्षा समाप्ता ।

(जीवपरीक्षा वायशब्दपरीक्षा कहते हैं, जिससे आवाज सुनके रोग समझेगा।

अथ शब्दपरीक्षा ।

श्लोक-गुरुस्वरो भवेत् श्लेष्मी स्फुटवक्ता च पित्तलः ।
उभाभ्यां रहितो वातः स्वरतश्चैव लक्षयेत् ॥ ५३ ॥
अर्थ-दोहा-वात स्वर गरगर हुवै, स्पष्ट पित्तसै जान ।
कफसैं जड़ भारी हुवै, शब्दपरीक्षा मान ॥ ५४ ॥

अथ स्पर्शपरीक्षा ।

दोहा--गर्म स्पर्श हो पित्तसैं, शीत वातसैं होय।
गीला चिकना कफसैं रहो, कह शिवनाथ यों जोय ॥ ५५ ॥
सर्व लक्षण जामें बसें, वह त्रिदोषसे जान।
दो दो दोष हों जाहियें, दो दोषी हैं मान ॥ ५६ ॥

अथ नेत्रपरीक्षा ।

छंद स०--नेत्र हैं रूक्ष रु दाहसे युक्त रु श्याम रु लाल जरा दरसाई।
अंतर गीला खींचोसो दीखत चंचल नेत्र बादीसे होई ॥
पित्तसे पीला अरुण गुलाबी हरा लाल रंग दरसाई।
चिराग आदि सब तेजसे दुखी हो पित्तसे नेत्र ऐसा होय साई५७
कफसैं नेत्र सुपेद रु चीकट तेजसे हीन गीला पानी दिखाई।
दो दो दोषसे दो दो लक्षण होत रु सर्व दिखे सन्निपात बताई ॥
विकराल रु टेढ़ा फटासा रु तारा ऐंचा तना खिंचा नेत्र दिखाई।
एकढको दूजो ऊघड़ो दीखत असाध्य वो रोगी नाहि बचाई५८

इति नेत्रपरीक्षासमाप्ता।

अथ कालज्ञान ।

तथा आयुष्यलक्षण प्रथम मुखपरीक्षा ।

दोहा--मुख मीठा रहे वातसे, कड़वा पित्तसे जान।
मिठा गिला कफसे हुवे, सन्निपात सब मान ॥ ५९ ॥
घृतसमान हो अजीर्णसे, मुखकी मजा यों जोय।
अग्निमंदसे तुरस मुख, ये निदान कर सोय ॥ ६० ॥

सुखसाध्य लक्षण---

दोहा--नेत्र कान मुख हों प्रसन, गंध पिछाने जोय।
जीवे रोगी सुखसाध्य हो, यामें संसो न होय ॥ ६१ ॥
हाथ पांवसे गर्म रहै, अंतरगत दाह होय।
जीभ नर्म कोमल हुवे, सुखहि होत यों जोय ॥ ६२ ॥
स्वेदरहित तो ज्वर हुवे, नाक श्वास सुख आय।
कफ कंठहि रोधे नहीं, सुख होवे दुख जाय ॥ ६३ ॥

अथ कालज्ञान।

दोहा–साफ पात्र जलसे भरो, तामें रवि शशि देख ।
प्रतिबिंब चारो दिशा, शुद्ध रीतिसे पेख ॥ ६३ ॥

उस पानीमें सूर्य चंद्रमाका प्रकाश देखना, जिससे आदमीको कालज्ञान समझता है.॥

चौपाई–पूर्व दिशापै छिद्र दिखावै। मास छेसे मृत्यू हो जावै ॥
दक्षिण छिद्र बिंबमें देखै। मास तीनमैं मृत्यु हो लेखै ॥ ६४ ॥
पश्चिम बिंबपै छिद्र है जोय। मास दोयम मृत्यु हो सोय ॥
उत्तर बिंबमें छिद्र दिखाई। मास एक नहिं जीव रहाई ॥६५॥
प्रतीबिंबमें ज्वाला हो जानौ। तातकाल मृत्यू हो मानौ ॥
सूर्य चंद्रबिंबपै धुवाँ दिखाई। दश दिनमें मृत्यू हो जाई ॥६६॥

और कालज्ञान।

श्लोक–अरुंधतीं ध्रुवं चैव विष्णोस्त्रीणि पदानि च।
आयुर्हीना न पश्यन्ति चतुर्थं मातृमण्डलम् ॥ ६७ ॥

अर्थ–अरुंधती ध्रुव (विष्णुपद) और मातृमंडल ये चारों चीजें जिसका आयुष्य बीत गया उसको नहीं दीखती हैं, वे चारों इस माफक समझना ॥ १ ॥ अरुंधती (जीभका अग्रभाग) और ध्रुव (नाकका अग्रभाग) और दोनों भौहोंके बीचमें तीन पद जो हैं उनको विष्णुपद कहते हैंऔर दोनों भौहोंको मातृमंडल कहते हैं, ये चारों जगा जिसकी उमर घटी हो उसे नहीं दीखती हैं और दोनों कान दबानेसे अनहद जो वाद्य सुने सो जीवेगा नहीं. वह अनहद बाजा ब्रह्मरंध्रमें होता है.इसका प्रमाण कहते हैं.–

श्लोक–नव भ्रूः पञ्च चक्षुश्च सप्त कर्णं त्रिनासिकम् ।
जिह्वा च दिनमेकं तु कालचिह्नं दिने दिने ॥ ६८ ॥

अर्थ–भृकुटी नौ और पांच नेत्र और ७ कर्ण तीन नासिका और एक दिनसे जिह्वा नहीं दीखती है, तब समझना कि काल समीप है।

दोहा–नौ भृकुटी सप्त श्रवण, पंच तारका जान।
तीनों नाक दिन एकसे, जिह्वा न दीसै मान ॥ ६९ ॥

स्वरोदयके मतसे कालज्ञान।

दोहा-चंद्र चलावे दिवसको, रात चलावे सूर।
नित साधन ऐसा करे, होय उमर भरपूर॥ ७०॥
पांच घड़ी बांवो चलै, सोई दहनो होय।
दश श्वासा सुखमन चलै, ताहि बिचारो लोय॥ ७१॥
आठ प्रहर दहनो चलै, बदले नहीं जो पौन।
तीन बरस काया रहे, जीव करे फिर गौन॥ ७२॥
सोला प्रहर जब हीं चलै, श्वासा पिंगल माय।
युगल बरस काया रहै, पीछे रहेगी नाय॥ ७३॥
तीन रात और तीन दिन, चलै दाहिनो श्वास।
संवतसर काया रहै, पीछे होय फिर नाश॥ ७४॥
सोला दिन निशिदिन चलै, श्वास भानुकी ओर।
तब जानो एक मासमें, जीव जाय तन छोर॥ ७५॥
नौ भृगुटी सत श्रवण, पंच तारका जान।
तीनों नाक जनाइये, कालभेद पहँचान॥ ७६॥
भेद गुरूसे पाइये, गुरु विन मिले न ज्ञान।
शिवनाथ सिंह यों कहत है, गुरुगम भेद पिछान॥ ७७॥
जो ऊपर बरनन करे, दीखें लक्षण सोय।
शिवनाथ सिंह ऐसा कहै, नर जीवे दिन दोय॥ ७८॥
नाड़ी जो सुखमन चलै, पांच घड़ी बहराय।
यासे ऐसा जानिये, तबहीं नर मर जाय॥ ७९॥
नाहिं चंदा नहिं सूर्य है, नहीं जो सुखमन चाल।
मुखसेती श्वासा चलै, घड़ी चारमें काल॥ ८०॥
तीन रात और तीन दिन, चलै तत्त्व आकाश।
एक बरस काया रहै, फेर काल विश्वास॥ ८१॥

सुखसाध्य लक्षण।

दोहा-दिनको तो चंदा चलै, चले रातको सूर।
ये निश्चय कर जानिये, प्राणगवन हो दूर॥ ८२॥

रात चले स्वर चंद्रमें, दिनको सूरज चाल।
एक महीना चले तो, छठे महीने काल ॥ ८३ ॥
जब साधू ऐसा लखे, छठे महीने काल।
आगेसे साधन करे, बैठ गुफा तत्काल ॥ ८४ ॥
ऊपर खेंच अपानको, प्राणसमान मिलाय।
उत्तम करे समाधिको, बहुरि काल नहिं खाय ॥ ८५ ॥
पवन पीवे ज्वाला पीवे, नाभि तलकसे आय।
मेरुडंडको फोड़के, बसे अमरपुर जाय ॥ ८६ ॥
जहाँ काल पहुँचे नहीं, यमका होय न त्रास।
गगन मंडलमें जायके, उसमें करे निवास ॥ ८७ ॥
जहां काल नहिं ज्वाल है, छूटे सभी संताप।
कर उसमें लवलीन मन, बिसरे आपो आप ॥ ८८ ॥
तीनों बंध लगायके, पांच वायको साध।
सुखमन मारग हो चले, देखे खेल अगाध ॥ ८९ ॥
चंद्र सुरज दोउ सम करे, ठुड्डी हिये लगाय।
षट् चक्रको बाँधके, शून्य शिखरको जाय ॥ ९० ॥
इडा पिंगला साधके, सुखमनमें कर वास।
परम जोति जहँ झिलमिले, पूजे मन विश्वास ॥ ९१ ॥

इति स्वरभेदः ।

अथ प्रकृतिसे रोगीका असाध्य लक्षण।

जो रोगी दुबला है और एकदम मोटा होवे सो १, और मोटासे एकदम दुबला होवे सो २, अथवा प्रकृति तत्काल बदले सो ३, वा जीभ काली होवे सो ४, स्पर्श नहीं समझे सो ५, मुख लाल होवे सो ६, असाध्य है। जिस रोगीको रातको दाह होवे और दिनको ठंड लगे और कंठमें कफ और मुखको रुचि न होवे, आंखका रंग लाल हो और नाडी फूलीसी चले, क्षीण और मंद होवे ऐसा लक्षण जिस रोगीमें हो उसको राम राम सुनाना यही दवा है. दूसरी दवाई चलती नहीं. ये असाध्य लक्षण

हैं और सीसेमें वा पानीमें अपनी छाया देखै, उसमें विपरीत दीखै, अर्धांग दीखै, वा खंडित शरीर हो सोभी असाध्य जानना चाहिये। और धूपमें अपनी छायामें आदमी अथवा खंडितसी,कुत्ताकी, कागकी, गीदड़की, प्रेतकी, यक्षकी, राक्षसकी, दूसरे आदमीकी छायामें छायाका चिह्न दीखै तो असाध्य जानना चाहिये और अच्छी तबियतवालेको ऐसा दीखै तो उसको बीमारी आवेगी ऐसा कालज्ञानमें कहा है ।

साध्य लक्षण ।

साध्य रोगीका मुख तेज, नाडी समान, आवाज तेज, अग्नि प्रदीप्त, मस्तकमें खाज आना, जीभ नरम, होंठ प्रफुल्लित, हाथ पांव ओंठ हृदय इनमें ताकत, मन प्रसन्न, शिरा नख लाल और सुगंधपर इच्छा ये सर्व चिह्न रोगी साध्य सुखी होनेके हैं ऐसे जानना चाहिये ।

दूसरा असाध्य लक्षण ।

क्षीण होना, ज्वर रहना, थकासा दीखना, नेत्र और नख बेतेज, हाथ पांव ठंडे रहना, आवाज ऊँडासा और बेताकत होना, हिचकी कंठरोध होना,मुख और नाक अप्रसन्न दीखना,शरीर भयंकर होना, मूर्च्छा,भ्रम,कंप इन लक्षणोंसे रोगी असाध्य होता है। और जिसका नाकका सीधा स्वर तीन दिन चले वह आदमी तीन बरस, एक बरस, अथवा छः महीना बचेगा ऐसा जानना चाहिये ।

अथ छायापुरुषलक्षण ।

जिससे सर्वज्ञान समझता है उसीके देखनेसे त्रिकालज्ञान होता है.

श्लोक–अथातः संप्रवक्ष्यामि छायापुरुषलक्षणम् ।
येन विज्ञातमात्रेण त्रिकालज्ञो भवेन्नरः ॥ ९२ ॥

अर्थ–छायापुरुषके लक्षण कहते हैं जिसके देखनेसे आदमीको त्रिकालज्ञान होता है ॥ ९२ ॥

श्लोक–कालो दूरस्थितश्चापि येनोपायेन लक्ष्यते ।
तं वक्ष्यामि समासेन यथोदिष्टं शिवागमे ॥ ९३ ॥

अर्थ-दूरस्थित जो काल उसकी पहँचान करनेका उपाय शिवपुराणमें जो कहा है वह कहता हूं संक्षेप रीतिसे ॥ ९३ ॥

श्लोक-एकान्ते विजने गत्वा कृत्वादित्यं च पृष्ठतः ।
निरीक्षेत निजां छायां कण्ठदेशे समाहितः ॥ ९४ ॥

अर्थ-जिस स्थानपर कोई मनुष्य न हो उस जगहपर जाके सूर्यकी तरफ पीठ करके बैठना और अपनी छाया निरखना, कंठदेशमें एकाग्रसे नजर लगाके देखते रहना ॥ ९४ ॥

श्लोक-ततश्चाकाशमीक्षेत ततः पश्यति गह्वरम् ।
ओं ह्रीं परब्रह्मणे नमः॥अष्टोत्तरशतं जप्त्वा ततो दृश्येत शंकरः॥९५॥

अर्थ-पीछेको कुछ कालतक देखते रहना पीछे मंत्र जपना पीछे आकाशकी तरफ देखना तो गुफा दीखती है, उसके देखने पीछे ऊपरका मंत्र एकसै आठ बार जपना, पीछे शंकरका दर्शन करना ॥ ९५ ॥

श्लोक-शुद्धस्फटिकसंकाशं नानारूपधरं हरम् ।
षण्मासाभ्यासयोगेन भूचराणां पतिर्भवेत् ॥ ९६ ॥

अर्थ-जो महादेव रूपसे शुद्धस्फटिकके माफिक नाना रूप धरनेवाले हैं ऐसे महादेवका ध्यान छः महीना करनेसे संपूर्ण पृथिवीके प्राणियोंका मालिक होगा ॥ ९६ ॥

श्लोक-वर्षद्वयेन हे नाथ कर्ता हर्ता स्वयं प्रभुः ।
त्रिकालज्ञत्वमाप्नोति परमानन्दमेव च ॥ ९७ ॥

अर्थ-पूर्व कहनेके अनुसार दो बरसतक करे,ऐसे अभ्याससे वह स्वतः आप संहार और रक्षा करनेवाला होता है और तीनों कालोंका हवाल जान सकता है और इस माफक निरंतर अभ्यास करे तो उसको तीनों लोकोंमें कोई चीज दुर्लभ नहीं होगी और साफ आकाशमें छायापुरुष दीखेगा। वह पुरुष काला दीखे तो छः महीनोंमें मरण होगा, इसमें संशय नहीं है ॥ ९७ ॥

श्लोक-पीते व्याधिभयं रक्ते नीले हत्यां विनिर्दिशेत् ।
नानावर्णस्वरूपश्चेदुद्वेगो जायते महान् ॥ ९८ ॥

अर्थ-वह छायापुरुष पीला दीखे तो रोग होनेका डर है और रक्त,

नीला दीखे तो हत्याभय होगा और नानारंग दीखे तो चिंता होती है ॥९८॥

भावार्थ–छायापुरुष पांव, गुल्फ अथवा पींडियोंपै बैठा है ऐसा दीखे तो अनुक्रमसे छः महीना, एक बरस या दो बरससे मृतक होगा और छायापुरुषका सीधा बाहु न दीखे तो भाई मरेगा और बायाँ बाहु नहीं दीखे तो औरत मरेगी और छायापुरुषका शिर और सीधा बाहु नहीं दीखे तो मृतक है ऐसा जानना और शिर नहीं दीखे तो एक महीनासें मरेगा और जंघा न दीखे तो एक दिनमें मरेगा और गर्दन न दीखे तो आठ दिनसें मरेगा और छाया कुछ नहीं दीखे तो तत्काल मरेगा, ऐसे छायापुरुषके लक्षण शिवपुराणमें कहे हैं ॥

इति छायापुरुषके लक्षण समाप्त ।

सुख और दुःखका विचार ।

जिसको सदाकाल भूख, प्यास, नींद, छींक, डकार, वायु सरना ये वेग बराबर होवें उसे आरोग्य कहना चाहिये ॥ १ ॥ और दोष विषम अर्थात् कम ज्यादा होना इसे रोग कहते हैं । जो पुरुष हमेशा दिनचर्या और रात्रिचर्या तथा ऋतुचर्यासे चलता है उसे रोग नहीं होता है । इसे आरोग्य कहना चाहिये ॥२॥ और जो अविचारसे खाता पीता है और सर्व व्यवहार अविचारसे करता है उसको अवश्य रोग होता है । उन रोगोंके अनेक भेद हैं । उनका भाव कहते हैं–अंधा, पंगला, बहिरा, मूका, लूला, लंगड़ा, ज्वर आदिक बहुत रोग हैं और कितनेएक रोग अभिघातसे होते हैं जैसे ऊपर नीचेसे गिरने व शस्त्र आदिकके लगनेसे होते हैं॥३॥और कितने एक काम, क्रोध, शोक, लोभ और भयसे ऐसे अनेक रीतिसे रोग होते हैं । ऐसे रोग बहुतसे हैं । उनका आगे सब भेद जुदा जुदा कहा जायगा सो जानना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ रोगोंका प्रकार ।

श्लोक–कर्मजाः कथिताः केचिद्दोषजाः सन्ति चापरे ।
कर्मदोषोद्भवाश्चान्ये व्याधयस्त्रिविधाः स्मृताः ॥ ९९ ॥

अर्थ--रोग कितने तो कर्मसे होते हैं और कितने वातादिदोषसे होते हैं और कितने एक रोग कर्म और दोष दोनोंसे होते हैं ऐसे तीन प्रकारसे होते हैं ॥ ९९ ॥

श्लोक--यथाशास्त्रं तु निर्णीता यथाव्याधि चिकित्सिताः।
न शमं यान्ति ये रोगास्ते ज्ञेयाः कर्मजा बुधैः ॥ १०० ॥

अर्थ--जिस रोगपर शास्त्रके आधारसे दवा करे और वह रोग दवासे नहीं जाय तो वह कर्मज व्याधि जानना चाहिये; कारण कि कर्मका नाश हुए विना व्याधि हटे नहीं। उसका प्रमाण-कर्मज व्याधि जो पापादिक कर्मसे होते हैं वे कर्मका नाश होनेसे जाते हैं और दोषज व्याधि दवासे जाते हैं और कर्म और दोष दोनोंसे जो व्याधि होता है सो व्याधि दोनों उपाय करनेसे आराम होता है ऐसा जानना॥ १०० ॥ उसमें जो वातादिक दोषके कोपसे व्याधि होता है सो साध्य है। उसको दोषव्याधि कहते हैं ॥ १ ॥ और दूसरा कर्मव्याधि असाध्य है, वह आराम नहीं होता ॥ २ ॥ और तीसरा व्याधि कष्टसाध्य है सो कर्म और दोष दोनोंसे होता है सो कष्ट करके आराम होता है ॥ ३ ॥ और चौथा व्याधि याप्य है उसको दवा लेता है तबतक अच्छा लगता है और दवा बंद करनेसे फिर वैसा ही हो जाता है उसे याप्य कहते हैं ॥ ४ ॥

उसका उदाहरण।

श्लोक--प्राप्ता क्रिया धारयति सुखिनं याप्यमातुरम्।
यापयिष्यति वागारं स्तम्भो यत्नेन योजितः ॥ १०१ ॥

अर्थ--याप्य रोगीको जहां तक दवा देते हैं वहां तक बचता है और दवा न देनेसे मर जायगा. जैसे गिरते जूने घरको टेका लगानेसे चंदरोज रहता है वैसे याप्य रोगी बचता है। दूसरी मिसाल अफीम खानेवालेको रोज समयपर नियमसे खाने विना नहीं चलता है वैसा जानना चाहिये ॥ १०१ ॥

अरिष्टलक्षण।

श्लोक--रोगिणो मरणं यस्मादवश्यमपि लक्ष्यते।
तल्लक्षणमरिष्टं स्यादिष्टं चापि तदुच्यते ॥ १०२ ॥

अर्थ-जिस लक्षणसे रोगी मरता है उसको अरिष्ट अथवा कष्ट कहते हैं और जिस क्रियासे रोगका नाश होता है और दोष सम होता है उसको उपाय अथवा चिकित्सा कहते हैं अथवा दवा कहते हैं और उस दवाको बतावे उसे वैद्य कहते हैं ॥

दवा जल्द करना उसका प्रमाणः—

श्लोक-जातमात्रश्चिकित्स्यः स्यान्नोपेक्ष्योऽल्पतया गदः ।
वह्निशस्त्रविषैस्तुल्यः स्वल्पोऽपि विकरोत्यसौ ॥ १०३ ॥

अर्थ-रोग पैदा होने बराबर उसकी दवा करना चाहिये । वह अल्प है ऐसा जानके उसका भरोसा कभी नहीं करना, कारण कि जैसे अग्नि और शस्त्र और विष उपाय विना शांत नहीं होता है वैसे रोग भी दवा विना नहीं जाता ऐसा जानना चाहिये ॥ १०३ ॥

वैद्यविचार ।

श्लोक-यस्तु रोगमविज्ञाय कर्माण्यारभते भिषक् ।
याप्यौषधविधानज्ञस्तस्य सिद्धिर्यदृच्छया ॥ १०४ ॥

अर्थ-जो वैद्य रोग जानता नहीं और दवा देता है, वह तथा जो दवा जानता है और रोग नहीं पहिचानता उसकी दवासे गुण होना प्रारब्धसे जानना चाहिये ॥ १०४ ॥

उस वैद्यका निषिद्ध पना ।

श्लोक-औषधं केवलं कर्तुं यो जानाति न चामयम् ।
वैद्यकर्म स चेत्कुर्याद्वधमर्हति राजतः ॥ १०५ ॥

अर्थ-जो वैद्य रोग जाने विना दवा देता है उस वैद्यको राजासे दंड देना चाहिये कारण कि वह निषिद्ध है ॥ १०५ ॥

दूसरा निषिद्ध वैद्य ।

श्लोक-यस्तु केवलरोगज्ञो भेषजेष्वविचक्षणः ।
तं वैद्यं प्राप्य रोगी स्याद्यथा नौर्नाविकं विना ॥ १०६ ॥

अर्थ-जो वैद्य रोगका मात्र निदान जानता है और दवा नहीं जानता

है वह वैद्य निषिद्ध है । उसके पास रोगी जायगा तो मरेगा, जैसे विना तिरानेवाला नाव पानीमें डुबा देता है, वैसा जानना चाहिये ॥ १०६॥

उसका मिशाल ।

दोहा–रोगज्ञान तो सर्व है, दवाज्ञान सो नाहिं ।
रोगी देख वो डरत है, ज्यों कायर रणमाहिं ॥ १०७ ॥

सर्व काममें कुशल वैद्यके लक्षण ।

दोहा–रोग ज्ञान संपूर्ण है, कुशल दवामें जान ।
देशकाल बल रोगिको, कुशल वैद्य है मान ॥ १०८ ॥
सर्वपरीक्षा रोगकी, करै सो वैद्य सुजान ।
नाम रोगको कहनमें, जरा शंक मत आन ॥ १०९ ॥
साध्य असाध्य निश्चय कर, फेर दवा जो देय ।
शीत रोगिको गर्म दे, गर्मपे शीत योजेय ॥ ११० ॥

बेवक्तपर दवा देनेका निषेध ।

दोहा–वक्त छोड़ मत दे दवा, कम ज्यादा मत देय ।
विना वक्त नहिं गुण करै, यह निश्चय समजेय ॥ १११ ॥

छोटे रोगोंपें मोटी दवा और बड़े रोगोंपर छोटी दवाका निषेध ।

दोहा–रोग छोटा मोटी दवा, मान कभी मत देय ।
मोटा रोग छोटी दवा, कभी न कार्य सरेय ॥ ११२ ॥

एक वक्तमें दो दवा देना मना है । कारण कि एक तो गुण अवगुण समझता नहीं, इसवास्ते दवाके स्वामी शंकरकी मनाई हैं ॥

दोहा–एक वक्तमें दो दवा, कभी मती दे जान ।
गुण अवगुण समजे नहीं, शंकरको मत मान ॥ ११३ ॥

त्रिदोषपर हितकारी ।

दोहा–त्रिदोष कोपकी व्याधिको, आदिहि लंघन देय ।
सेक वालुको नास दे, लाल पाड़ हित होय ॥ ११४ ॥
सर्व क्रिया वैद्य शास्त्रकी, ताको अंत न पार ।
हंस नीर तज क्षीर ले, ऐसा तत्त्व विचार ॥ ११५ ॥

अर्थ-वैद्य शास्त्रमें सब क्रिया बहुत हैं, सर्व लिखनेको कोई समर्थ नहीं है. लेकिन, जैसे हंस नीरको छोड़के क्षीर पीता है उस न्यायसे मैंने यह वैद्यशास्त्रका सार निकालके बताया है सो जानना चाहिये ॥

वैद्यको फायदा विषय प्रमाण ।

श्लोक-क्वचिदर्थः क्वचिन्मैत्री क्वचिद्धर्मः क्वचिद्यशः ।
कर्माभ्यासः क्वचिच्चेति चिकित्सा नास्ति निष्फला ॥११६॥
दोहा-कहीं द्रव्य कहीं मित्रता, कहीं धर्म हो जान ।
जस कीरति अरु कर्मफल, मिलैं वैद्यको मान ॥ ११७ ॥
श्लोक-आयुर्वेदोदिता युक्तिः कुर्वाणावहिताश्च ये ।
पुण्यायुर्वृद्धिसंयुक्ता निरोगाश्च भवन्ति ते ॥ ११८ ॥

अथ शास्त्रोक्त दवाका गुण ।

दोहा-शास्त्रयुक्त दवा करै, रोगिको सुख होय ।
रोग घटै आयुष बढ़ै, शिवनाथ शास्त्रमें जोय ॥ ११९ ॥

वैद्यको द्रव्य किससे लेना चाहिये ।

श्लोक-नैव कुर्वीत लोभेन चिकित्सापुण्यविक्रयम् ।
ईश्वराणां वसुमतां लिप्सेतार्थं तु वृत्तये ॥ १२० ॥
अर्थ-दोहा--धर्मवास्ते दे दवा, गरीबको नित जोय ।
भाग्यवानसे द्रव्य ले, दवा ताहिको देय ॥ १२० ॥

वैद्यको द्रव्य नहीं देनेका दोष ।

श्लो०--चिकित्सितं शरीरं यो न निष्क्रीणाति दुर्मतिः ।
स यत्करोति सुकृतं सर्वं तद्भिषगश्नुते ॥ १२१ ॥
दोहा-रोगी वैद्यसे ले दवा, देह वैद्यको जान ।
द्रव्य दे ले न शरीर जो, शुभपुण्य वैद्य ले मान ॥ १२१ ॥
भावार्थ-वैद्यको मार्गमें जाते समय कोई गरीब साधु ब्राह्मण रोगसे मांदा हो तो लाजिम है कि उसको दवा अवश्य देना, नहीं तो वैद्यको पाप लगता है और भाग्यवान् रोगीके

वैद्यका आदर सत्कार करना चाहिये। दवाका अंग कहते हैं सो ऐसा चाहिये १ रोग साध्य, २ दूत अच्छा, ३ आयुष्यवान्, ४ द्रव्यवान्, ५ चाकर उमदा, ६ वैद्य चतुर, ७ दवा उत्तम ये सर्व चिकित्साके अंग हैं सो इनके होनेसे आदमी अच्छा होता है ऐसा जानना॥

अथ निषिद्ध रोगीका लक्षण अर्थात् दवा देना मना है सो रोगी।

श्लोक–चंडः साहसिको भीरुः कृतघ्नो व्यग्र एव च।
शोकाकुलो मुमूर्षुश्च विहीनः करणैश्च यः॥ १२२॥
वैरी वैद्यविदग्धश्च श्रद्धाहीनश्च शंकितः।
भिषजामविधेयश्च नोपक्रम्या भिषग्विदा॥ १२३॥
एतानुपाचरन्वैद्यो बहून्दोषानवाप्नुयात्।
स न सिद्ध्यति वैद्यस्तु गृहे यस्य न पूज्यते॥ १२४॥

अर्थ–दवा देनेको जो रोगी शास्त्रमें निषिद्ध लिखा है वह ऐसा जानना क्रोधी, १ बेबिचारी २, डरनेवाला ३, कृतघ्न ४, जिसका चित्त ठिकाने न हो ५, शोक करनेवाला ६, मरनेकी इच्छा रखनेवाला ७, गतआयुष ८, इन्द्रियोंसे थका ९, वैर करनेवाला १०, वैद्यपनेका मिजाज करनेवाला ११, बेविश्वास १२, शंका करनेवाला १३, आप दवा जाननेवाला १४, वैद्यके कहेमें न रहनेवाला १५ और वैद्यका आदर सत्कार न करनेवाला १६ ऐसे सोलह तरहके रोगीको दवा देना वैद्यके लिये वर्ज्य है ऐसा जानना।

श्लोक–व्याधेस्तत्त्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः।
एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्यः प्रभुरायुषः॥ १२५॥

अर्थ–दोहा–व्याधिज्ञान निश्चय करै, शांत करै यों जान।
अकाल मौतसे रक्षा करै, स्वामी उमरका मान॥ १२५॥

अथ देशकी प्रकृति स्वभाव।

दोहा–वृक्ष पानी पर्वत कमी, जांगल देश है जान।
पर्वत वृक्ष पानी बहुत, अनूपदेश वह मान॥ १२६॥
समान पानी और वृक्ष है, वह सम देश है जोय।
जांगल पित्त कफ अनूपमें, सममें समता होय॥ १२७॥

अथ वातादिक दोष और सप्त धातुवृद्धि- लक्षण कहते हैं—वातवृद्धिलक्षण ।

कृशपना, खरदरापना, मल गाढ़ा होना और गरम चीजोंपर इच्छा होना, बे ताकतपना, बदन ढीला और नींद कम आना ये लक्षण वादी बढ़नेके हैं॥१॥और मल मूत्र नेत्र त्वचा ये पीले होना,इंद्रियां क्षीण,संताप होना, मूर्च्छा, नींद अल्प और शीत चीजोंपे इच्छा पित्तवृद्धिसे होती है ऐसा जानना ॥ २ ॥ कफवृद्धिसे मल मूत्र नेत्र नख और त्वचा सुपेद होना, ग्लानि रहना, ठंडापना, जड़पना, संधि शीतल, ज्यादा नींद, मुखमें पानी आना ये सर्व लक्षण कफवृद्धिके हैं ॥ ३ ॥

रसवृद्धिलक्षण ।

खानेमें अरुचि, जड़पना, मुखमें पानी, उलटी होना, मूर्च्छा आना, ग्लानि, श्रम, कफ ये रसवृद्धिसे होता है ॥

रक्तवृद्धिके लक्षण ।

नेत्र गात्र त्वचा मल मूत्र आरक्त होना, विसर्प रोग, शिरा फूलना, विद्रधि प्लीहा, गुल्म, कोढ, रक्तवात, शिरभारी, दाह, कामला, पीलिया, नींद कम, मुखरोग, व्यंगरोग, अग्निमंद, मोह, गुदलिंगपाक, बवाशीर, पिटिका, मसा, चाम, खील, चाँय, प्रदररोग, हाथ पैरोंमें दाह होना ये सर्व ऊपरके दर्द खून की वृद्धिसे होते हैं ऐसा जानना चाहिये ।

अथ मांसवृद्धिके लक्षण कहते हैं सो जानना ।

गाल होठ कमर उपस्थ जंघा बाहु पींडियां ये भारी होना और गात्र जड़ होना ये चीजें मांसवृद्धिसे होती हैं ।

अथ मेदोवृद्धिके लक्षण ।

उदर रु पीठकी वृद्धि करे अति खाशी श्वास गंध पसीनामें होई ।
चीकट गंध बे मेनतसे श्रम तृषा रु श्वास ग्लानि जनाई ॥
होठरोग रु प्रमेह श्वास हो पेट रु गर्दन स्तन्न बढ़ाई ।
चर्बी बढ़े गुण होते इते शिवनाथ कहें यो शास्त्र बताई ॥ ३२ ॥

हाड़ और मज्जादिवृद्धिके लक्षण।

हाड़वृद्धिसे हाड़में दूसरा हाड़ होता है और दांत मोटा होता है और मज्जा (चर्बी) वृद्धिसे अंग व नेत्र ये भारी होते हैं. वीर्यवृद्धिसे शुक्रअश्मरी होती है और धातु निकलजाना, पेट फूलना, बस्ती खींचना ये लक्षण मूत्रवृद्धिसे होते हैं और पसीना आता है और स्त्रीको महीना २ में जो ऋतुका रुधिर आता है उसमें पसीनासे खाज पैदा होती है. स्त्रीके रुधिरवृद्धिसे दुर्गंध पड़ना, सुस्ती आना, ये लक्षण जानना चाहिये।

स्तन व गर्भवृद्धिके लक्षण।

स्तनवृद्धिसे स्तन बढ़ते हैं, दूध पड़ता है और पीडा होती है तथा गर्भवृद्धिसे गर्भिणीका पेट बढ़ता है और पसीना आता है तथा दुःख होता है, ये लक्षण जानने।

भावार्थ—दोष धातु व मल इनका नाश करनेवाला आहार और विहार है. यानी खाना पीना सोना जागना आदि सब व्यवहार नियमसे हों तो धातुकी वृद्धि वा क्षय न होनेसे आदमीकी प्रकृति साफ रहती है. खाना, पीना, क्रोध, शोक, भय आदि ये धातुक्षयके कारण हैं. इसलिये दोष धातु व मल इनको क्षीण करनेवाली चीजें विचारसे खाना, पीना, क्रोध, शोक, चिंता, डर, श्रम, मैथुन, उपवास, मल मूत्रादिकोंका वेग रोकना, साहस कर्म करना, अपघात और धातुक्षय, इन्होंसे रसादिक सर्व क्षीण होते हैं सो आगे लिखता हूं—

वातादिकदोषक्षयलक्षण।

चौपाई—अल्प चेष्टा होले बोले जोय। धातु कम क्षय वातसे होय॥
कफ बढ़े अग्नि मंद होय जान। कांतिक्षीण कम पित्त है मान२३॥
संधि शीतल मूर्छा जो आवें। रूक्ष दाह क्षय कफहि बतावे।
कंठ सूखे त्वचा बधिर हो जान। तृष्णा क्षीण रसधातुसे मान२४॥
त्वचा फिकी खरदरी शिरा शीत। रुधिर क्षीण है जानौ मीत॥२५॥

मांसक्षयलक्षण।

सवैया—गालऽरु होठऽरु गर्दन स्कंदऽरु छातिहि पेट संधी सोइ ताई।
उपस्थरु नाकऽरु और पिंड्यांके गोला शुष्क सो होत बताई॥

गात्र हो रूक्षऽरु हडपा चलै बहु नासा सो शीतल होत जनाई ॥
क्षीण है मांस इते गुण जान लें शिवनाथ यूं शास्त्रमें कहत बताई॥२६

मेद, हड्डियां, मज्जा और शुक्रकी क्षीणताके लक्षण ।

चौपाई-फीय्या बढ़े संधि शूर होय । शिरारूक्षमें द्क्षय जोय ॥
हड्डिय्यां दुखें शिरा रूक्ष हैजान।फूटै दांत नख हाड क्षय मान२७॥
संधि फूटै धातु कम होय । ठनके हाड मज्जा क्षय जोय ॥
वृषण लिंग दुखे स्त्रीकी इच्छा नाहिं।अल्प धातु क्षय शुक्र बताहिं२८

ओजधातुके क्षीण लक्षण ।

दोहा-दुर्बल भय चिंता होवे, इंद्रियव्यथा बहु होय ।
कांतिनाश रूक्ष क्षय हो, क्षीण ओजसे जोय ॥ ३९ ॥

मलक्षयलक्षण ।

दोहा-पीठ हृदयमें हो व्यथा,ठसक शब्द हो श्वास ॥
कूख फूले इतनी व्यथा, हो मलक्षयसे खास ॥ ४० ॥

मूत्रक्षयके लक्षण ।

दोहा-मूत्र अल्प बस्ती दुखे, स्वेदनाश हो जान ।
त्वचा नेत्र रूक्ष रोमांच हो, मूत्रक्षयसे मान ॥ ४१ ॥

आर्तवक्षयके लक्षण ।

दोहा-ऋतुसमये तहीं ऋतु होवे, हो तो अल्प हो जान ।
योनी दूखे अतिघनी, क्षीण आर्तवसे मान ॥ ४२ ॥

औरतोंके दूधक्षय आदिके लक्षण ।

क्षीणतासे दूध कम होना, अगर बिलकुल दूध नहीं आना, स्तनग्लानि होना ये लक्षण जानना.क्षीण गर्भसे कोखी ऊंची नहीं होना और गर्भ नहीं फिरना, ये लक्षण होते हैं. जो दोष धातु आदि क्षीण होनेसे आदमीको रोग होता है सो पीछा वृद्धि हुए विना वह बीमारी नहीं जाती है.सो वृद्धि कहते हैं, जो धातुआदिक दोष क्षीण होते हैं उनकी वृद्धि करनेवाली चीजें खाने पीनेसे वृद्धि होती है.ऐसा जानके उन्हीं चीजोंका सेवन अति करना चाहिये. सो चीजें इस माफिक हैं कि, जिन चीजोंपे आदमीकी इच्छा होती

है; जैसा ओजक्षय हो तो स्निग्ध मीठा, दूध,मांस व रस ये चीजें खानेसे ओजवृद्धि होती है, ऐसा ही जिन चीजोंमें मन चले सो चीजें ज्यादा देनेसे वे बढ़ेंगे. वातवृद्धि करना हो तो तुरस, कटु, तीखा, रूक्ष, शीतल, हलका, मूंग, सोंवा आदि वातवृद्धि करनेवाली चीजें हैं सो देना।

पित्त बढ़ानेवाली चीजें ।

सवैया–तिलऽरु तैल कुलीथ पिष्टान्न दहीका पानी और कांजी इतेई ।
छांछऽरु कटु क्षारऽरु गर्मऽरु तीखा खटाई पै इच्छा होत सदाई ॥
क्रोध विदाहि दुपारसमै अरु अग्निको तप गर्म हो देशाई ।
येतीहि चीजों पै होत जो इच्छा पित्त बढ़े कर सेवन भाई॥४३॥

कफक्षयके इलाज ।

दोहा–मिष्ट स्निग्ध शीतल गहन, लोन दही पयपान ।
दिवसशयन कटु भक्षते, कफ बढ़ ले जान ॥ ४४ ॥

रस बढ़ानेके लक्षण और इलाज ।

दोहा–हिम शशि चांदनी शीत जल, आदि पै इच्छा होय ।
रात नींद दधि दूध पै, मधुर सेव रस जोय ॥ ४५ ॥

रक्तक्षयपर उपाय ।

सवैया–मधुऽरु शक्कर द्राक्ष इक्षु रस सहतऽरु घृत गुलाबका पानी ।
अनारऽरु कांजी सुरादिसराब और फलादिक मूल स्नेहकंध बखानी॥
सुक्तऽरु लुणरस मांसादिक लोहाको सार खिलानौ सो जानी ।
रक्त बढ़े कर सेवन याको शिवनाथ कही ये शास्त्र प्रमानो ॥४६॥

मांसक्षीणपर उपाय ।

दहीकी चीजें,श्रीखंड और शिखरण आदि पर इच्छा हो तो देना, क्योंकि श्रीखंड शिखरण मधुर खटाई मांस मछली इन चीजोंसे मेद बढ़ता है, सो देना और हाड़की क्षीणतापर मांस मज्जा हाड़ रस दूध व अन्न ये देनेसे हाड़ोंको ताकत आती है और मज्जा क्षीण होनेपर मीठा मधुर रस देना चाहिये. शुक्र (धातु) को बढ़ानेको सुपेद मुसली दूध शक्कर घृत आदि, धातु आदिक, कवचबीज, शतावरी आदि देनेसे धातु बढ़ेगी, सो देना और मैल बढ़ानेवाली चीजें मैल बढ़ानेको देना, सो पिष्ट,अन्न, साग,भाजी,मसर, उड़द आदि देना और पेय अन्नका रस, दूध, गुड़,बेर

पानी, छांछ, काकडी, ये सर्व चीजे मूत्र बढ़ानेवाली हैं, सो देना और स्वेदक्षीणपर अभ्यंग उबटना, दारू, गर्म स्थान, कम्बल आदि गर्म कपड़ा, ये उपाय करनेसे पसीना आता है, स्त्रियोंका आर्तव क्षीण हो तो कड़वा, खट्टा, खारा, गर्म, दाह करनेवाली चीजें, जड़अन्न और फलादिक शाक आदि जिन सर्व चीजोंकी इच्छा हो सो देना जिससे फायदा होता है,रुधिर साफ बहता है और स्तन क्षीणपर दारू,चावल,मच्छी,गायका दूध,शक्कर, आसव, दही आदिक इच्छा होवे सो देना. जिससे स्तनका दूध बढ़ कर स्तन भी बढ़ेंगे.गर्भ बढ़नेके वास्ते हिरन,बकरी,भेड़ी,वराहादिका मांस और बसा(चरबी),छोटी मछली और मन इच्छा पदार्थ देना जिसे गर्भ बढ़ता है. ये ऊपर जो धातुके दोषोंकी क्षीणता और वृद्धि कही है सो सब मनकी इच्छापरसे मालूम होता है.द्वेषसे वृद्धि मालूम होती है और इच्छासे क्षीणता मालूम होती है, सो देखकर वृद्धिका क्षय और क्षयकी वृद्धि करना और समान अवस्थापर ऐसी रखना जिससे आदमीकी प्रकृति निरोगी रहती है.

इति शिवनाथसागरे वैद्यशास्त्रे अष्टविधपरीक्षा उसमें १ दूत, २ नाडी, ३समय, ४ शकुन, ५ प्रश्न, ६ वैद्य, ७ रोगीलक्षण, ८ दूतके लक्षण, ९ दवालक्षण,१० स्वप्नपरीक्षा,११ रोगीका अष्टस्थान, १२नाडी-परीक्षा, १३ मूत्रपरीक्षा, १४ मलपरीक्षा, १५ जिह्वापरीक्षा, १६ शब्दपरीक्षा, १७ स्पर्शपरीक्षा, १८ नेत्रपरीक्षा, १९ मुखपरीक्षा २० रूपपरीक्षा, २१ आयुविचार, २२ कालज्ञान, २३ मरनेका विचार, २४ स्वल्पआयुविचार, २५ छायापु-रुषलक्षण, २६ दोषव्याधि, २७ कर्मव्याधिलक्षण, २८ वैद्यकर्तव्य कर्म, २९ बड़े रोगपर छोटी दवा और छोटे रोगपर बड़ी दवा देनेका निषेध,३० देशविचार, ३१ तीन दोष और सप्त धातु ओज मल मूत्र क्षीण और वृद्धिका इलाज और परीक्षा ये सब विषय-दोहा, चौपाई, कवित्त, श्लोक और उरदू भाषामें स्पष्ट करके लिखे हैं, सो वैद्यकूं अवश्य सीखना चाहिये, जिससे वैद्यकी बुद्धि अवश्य बढ़ेगी ऐसा यह तृतीय प्रकरण समाप्त.

चतुर्थ प्रकरण।
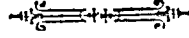
इस प्रकरणमें दिनचर्या, रात्रिचर्या और ऋतुचर्या आदि लिखता हूं। दिनचर्या किसको कहते हैं कि, आदमी निरोगी रहनेके वास्ते कैसे सोना, कैसे जागना, मुख धोना, स्नान करना, अभ्यंग करना, खाना, पीना यह सब जुदा जुदा कहता हूं.

प्रातःसमय उठनेका विचार।

छंदछप्पै--चार घड़ी तड़के उठ पुरुष तू ऐसा करना ॥
स्वस्थचित्त मनको करो ध्यान ईश्वरका धरना ॥
दहि घृत राई बैल दर्पण गोरोचन पुष्पमाला ॥
सदा रहत सुख चैन दर्शकर प्रातहि काला ॥
प्रातसमय उठ काचमें अपना मुख नित जोय ॥
उमर बढै अरु दुख घटैं सुख संपत बहु होय ॥ १ ॥

दोहा--मल मूत्रको त्याग कर, हात पांव फिर धोय ॥
मुख धोवनकी विधि कहूं, ताहि विचारो जोय ॥२ ॥

मुख धोनेके काष्ठके गुण।

श्लोक--अर्के वीर्यं वटे दीप्तिः करंजे विजयो भवेत्।
प्लक्षे चैवार्थसंपत्तिर्बदर्यां मधुरो ध्वनिः ॥ ३ ॥
खदिरे मुखसौगंध्यं बिल्वे तु विपुलं धनम्।
उदुंबरे तु वाक्सिद्धिराम्रे त्वारोग्यमेव च ॥४ ॥
कदंबे च धृतिर्मेधा चंपके बलवच्छ्रुतिः।
शिरीषे कीर्तिसौभाग्यमायुरारोग्यमेव च ॥ ५ ॥
अपामार्गे धृतिर्मेधा प्रज्ञाशक्तिस्तथा ध्वनिः।
दाडिम्यां सुंदराकारः ककुभे कुटजे तथा।
जातीतगरमंदारैर्दुःस्वप्नं च विनश्यति ॥ ६ ॥

अर्थ--दातून अच्छा, साफ व सीधा बारा अंगुल लंबा देखके लेना और उसको आगेसे चाबके नरम कूंची बनाके उससे दांत घिसना. अब जिस झाड़का दातून लेना उसका फल कहता हूं.

१ मधुर दांतून महुड़ाका और २ कटु निंबका. करंजके दांतूनसे जय मिलता है १, आकके दातूनसे वीर्य बढ़े २, बटसे अग्नि प्रदीप्त होगा ३, पाखरीसे अर्थ संपत् मिले ४, बेरीकेसे मीठा स्वर होगा ५, खैरसे मुख सुगंधी हो ६, बेलसे बहुत द्रव्य मिले ७, गूलरसे वाचासिद्धि हो ८, आमसे आरोग्य हो ९, कदंबसे धैर्य व बुद्धि बढ़े १०, चंपाकेसे कानसे साफ सुने अर्थात् बहिरापन मिट जाय ११, शिरससे कीर्ति सौभाग्य उमर व आरोग्य, ये मिलते हैं १२, अपामार्गसे धैर्य बुद्धि विद्या पाठशक्ति व स्वर ये मिलते हैं १३, अनार अर्जुन कूडा इन तीनोंके दांतुनसे शरीरकी कांति और सुंदरपणा आता है १४, और चमेली, तगर व मंदार इन तीनोंके दांतूनसे दुःस्वप्नका नाश होता है ऐसा जानना १५, इन सब झाड़ोंका दांतून साफ लेना, उससे दांत घिसना. बारह अंगुल लंबा दांतून लेके मुख धोना उसका गुण मुख साफ रहके दुर्गंध जाती है और जिह्वा नरम रहके मन प्रसन्न रहता है ऐसा जानना ॥ ६ ॥

दांत घिसनेका चूर्ण।

दोहा-सूंठ मिरी ले पीपरी, सैंधव सहत मिलाय।
कर चूरण घिस दांतको; दृढ होते सुख पाय ॥ ७ ॥
तेजबलचूर्ण लेयके, घिसै दांत, सुख होय।
शिवनाथसिंह कहे दांत, घिस दृढ होत यूं जोय ॥ ८ ॥

रोगीको दंत घिसना वर्जन।

छन्द घनाक्षरी--कंठ तालु होंठ जीभ मुखरोग श्वास शोषखांसी उलटी दुर्बल हृदयरोग मानिये ॥
भोजन करा और अजीर्णहुचकी मूर्छा नशा किया हो शिरशूल ये तो हो प्रमानिये ॥
आधाशीशी तृप्त ग्लानी रु थकेला होत व्याकुल ज्वर नेत्र रोग कर्णशूल मानिये ॥
इतने रोगोंको दांतुनसों निषेध जान शिवनाथशास्त्रमें ऐसाही प्रमानिये ॥ ९ ॥

जीभ घिसनेका विचार।

दोहा–सोना रूपाकी पातिसे, के तांबा घिस जान।
नरम दातुनकी फाड़िसे, घिसै जीभ सुख मान ॥ १० ॥

कुल्ला करनेका गुण।

दोहा–कुल्ला कर मुख धो सफा, साफ नीर ले जान।
तृषा ग्लानि सुख रुचि होत है, देह हलकि हो मान ॥ ११ ॥

भावार्थ–मुख धोनेसे और दांत घिसनेसे आदमीकी प्रकृति साफ रहती है और रक्तपित्त मुखपरकी फुन्सियां सोजा और व्यंगरोग ये नाश होते हैं. गर्म पानीसे कुल्ला करके मुख धोनेसे कफ अरुचि जीभ मचलाना दांतोंका भारीपना जाता है और मुख साफ होकर हलका लगता है।

नास सूंघनेके गुण।

श्लोक–कटुतैलादि नस्यार्थे नित्याभ्यासेन योजयेत्।
प्रातः श्लेष्मणि मध्याह्ने पित्ते सायं समीरणे ॥ १२ ॥
सुगंधिवदना स्निग्धनिःस्वना विमलेंद्रियाः।
निर्वलीपलितव्यंगा भवेयुर्नस्यशीलिनः ॥ १३ ॥

अर्थ–नास सूंघनेका हमेशा अभ्यास रखना, उसमें नस्य सिरसके तेल आदिका होना. वह नस्य कफवालेको सबेरे सुंघाना और पित्त-वालेको दुपहरमें सुंघाना और वातवालेको शामके वक्त सुंघाना उसका फायदा ऐसा है कि, मुख सुगंधित, साफ आवाज और इंद्रियां साफ होती हैं, वलीपलितरोग व व्यंगरोग ये कभी न होंगे ऐसा जानना।

नेत्रमें अंजनविधि और फायदा।

दोहा–अंजन डाले आंखमें, लोचन सुख अति होय ॥
नेत्ररोग होवे नहीं, दृष्टि साफ रह जोय ॥ १४ ॥

इसवास्ते सुरमा हमेशा आंखोंमें डालना चाहिये, इससे नेत्रोंकी खाज, मैल, दाह व चिकनापना ये सर्व रोग नाश होकर दृष्टि साफ व सुन्दर होती है. जो सुरमा सिंधु पर्वतमें पैदा होता है सो बहुत अच्छा और

शोधक है उससे नेत्र सुंदर हों, हवा गर्मी सहन होके नेत्ररोग कभी न होंगे, अंजन डाले सो यथा विचारसे डालना।

अंजन डालनेका निषेध।

दोहा-रात जागे मिहनतश्रम, भोजन वमन जो होय।
शिरसे स्नान उलटी हुई, इनको अँजन वर्जेय॥ १६॥

अभ्यंगकी विधि।

रोज बदनमें तेल लगाना, जो सर्व शरीरको मलना है सो सरसोंका उत्तम है, शरीर सुगंधित होनेको मसालेका बेलिया आदि तेल लेना, अगर दवाइयोंका सिद्ध किया लेना उत्तम है, उस तेलसे बादी कफका नाश होता है और श्रम, शांति, सुख, निद्रा, वर्ण, कोमलपना, आयुष्य देनेवाला है, मस्तकरोग नाश करता है, दृष्टि साफ करता है, तथा बालसुन्दर करता है, कानमें तेल रोज डालना जिससे कानको कभी रोग नहीं होता और गर्दन व ठोड़ीके रोग न होके सुननेको अच्छा आता है कानमें तेल रातको सोते समय डालना और रसादिक डालना सो भोजनके पहिले ही डालना।

स्नानकी विधि।

प्रथम आंवलोंके चूर्णका कल्क करके अङ्गमें लगाना पीछे गरम पानीसे स्नान करना। उसका फायदा यह है कि, शरीर हलका होना, मन प्रसन्न रहना, तेज बल बढ़ना, खाज, श्रम, तृषा व दाहको नाश करना और ठंढे पानीसे स्नान करनेसे रक्तपित्त गरमीकी शांति होती है।

जिन रोगोंको स्नान वर्ज्य है सोः-

अतिसारवाला, नेत्ररोगवाला, कर्णरोगी, वातरोगी, पेट फूला, जुखामवाला, अजीर्णवाला और भोजन किया हुआ इनको स्नान मना है ऐसा जानना।

बदन पोंछनेके गुण।

शरीर पोंछना जिससे कांति त्वचा संबंधी दोषोंका नाश होता है, अंग पोंछे पीछे साफ कपड़े पहरना जिससे खुबसूरती और शोभा देताहै, ठंढी गरमी नहीं लगती है, सुपेद कपड़ा शुभदायक है ऐसा जानना।

मैला कपड़ा पहिननेका निषेध।

मैला कपड़ा पहिननेसे दरिद्रता, खुजली, ग्लानि ये होके जुएं पड़ते हैं. दूसरे आदमी नजदीक बैठनेको त्रास करते हैं और राजा मान नहीं देता. ऐसा मैला कपड़ा पहनना नहीं।

चंदन लगानेकी विधि और फायदा।

गरमीके दिनोंमें चंदन, कपूर और खसखस घिसके लगाना, जिससे गर्मी शांत होके पित्तनाश होता है. वर्षाऋतुमें चंदन, केशर व कस्तूरी घिसके लगाना, जिससे मूर्च्छा बादीका नाश होता है और सम धातु रखके शोभा देता है. हेमंतऋतुमें चंदन, केशर व कृष्णागरु घिसके बदनमें लगाना जिससे शीत जाता है, उष्णता आके बादी और कफका नाश करता है ऐसा जानना. चंदनका गुण--तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंधता, दाह इनका नाश करता है और सौभाग्य, तेज, त्वचाका अच्छा रंग रूप देता है. बल, शक्ति देता है; परंतु जिस रोगीको स्नान वर्ज्य है उसको चंदन मना है ऐसा जानना.

अलंकार पहिननेके गुण।

अलंकार पहिननेसे सुख, सौभाग्य और संतोष रहता है और लोगोंमें बड़ा आदर सत्कार व मान मिला करता है.

रत्नोंके स्वामी।

माणिकका सूर्य, मोतीका चंद्रमा, मूंगोंका मंगल, गरुडपाचका बुध, पुखराजका बृहस्पति, हीराका शुक्र, नीलमका शनि, गोमेदका राहु और वैडूर्यका केतु, ऐसे ये नव रत्नोंके नव ग्रह स्वामी हैं. इन रत्नोंका अलंकार पहरनेसे ग्रह शांत रहते हैं, प्रीति रखते हैं; पुष्टि देते हैं, आयु बढ़ाके लक्ष्मी सौभाग्य देते हैं और दुःस्वप्न, पाप, भूतबाधा व दरिद्रताका नाश कराते हैं इसलिये उस २ ग्रहके प्रीत्यर्थ वे रत्न पूजाके योग्य हैं ऐसा जानना.

मंगल-पदार्थ-दर्शन।

भोजन समय ब्राह्मण, गाय, अग्नि, सोना, घृत, सूर्य, जल और राजा ये आठों चीजें मंगलकारक हैं. उनका दर्शन कर प्रदक्षिणा करना, जिससे आयु

और धर्म बढ़ता है भोजनके पहिले अथवा पीछे फिरना होवे तब पांवमें पादुका डालना, जिससे पांवके रोग और नेत्ररोग नाश होके आयु बढ़ती है भोजन, पानी और नींदकी इच्छा आदमीको हमेशः होती है, उनको रोकना अच्छा नहीं, क्योंकि भूँख रोकनेसे शरीर मंदता, अरुचि, श्रम, भारीपना, नेत्रोंका फीकापना, धातुगत दाह व बलका नाश ये उपद्रव होते हैं. प्यास रोकनेसे कंठ और मुखसूकना, कानरोध, रक्तदोष व हृदयव्यथा ये होते हैं. नींद रोकनेसे जंभाई, मस्तकरोग, नेत्रोंको सुस्ती, आलस्य व तंद्रा ये होते हैं. आदमीको भोजन नहीं मिले और भूँखको मारे तो जैसे अग्निको ईंधन न मिलनेसे अपनी जगहपर वह आप ही बुझ जाती है और निर्बल हो जाती है, वैसे ही खाने विना मनुष्य बेताकत होता है, इतना ही नहीं, किन्तु अग्निको भोजन न मिलनेसे वह कफ और रसादिक सर्व धातुको जलाके आदमीको मार डालती है ऐसा जानना.

आहारके गुण ।

सर्व प्राणीमात्रको आहार संतोष देनेवाला है. वह आहार देहको धारने वाला तथा बल, स्मृति, आयुष्य, शक्ति, वर्ण, तेज, सत्वगुण व सौभाग्य इन सबको देनेवाला है; ऐसा जानना.

भोजनकाल ।

आदमीको प्रातःकाल और सायंकालमें हवामान व देशमान देखके भोजन करना चाहिये. शास्त्रके आधारसे दुपहरके समयमें और सांझसमयमें दो वक्त भोजन करना; उससे कोई रोग नहीं होके अग्निहोत्रका फल प्राप्त होता है; पर बहुत जलदी खाना निषिद्ध है और बहुत देरसे खाना भी निषिद्ध है. बड़ी फजर दश बजे यानी १० घंटा दिन चढ़े तब खाना और रातको ८ आठ बजेको खाना उत्तम है.

उत्तम भोजन और उसके पच जानेके लक्षण ।

आदमीके भोजन करने पीछे साफ डकार आना, मन खुश होना, मल मूत्रका वेग बराबर नियमसे आना, शरीर हलका रहना, भूँख अच्छी लगना, प्यास अच्छी नियमसे लगना, ऐसा हो तो जानना कि, आहार अच्छा पचा है.

भोजन करनेके स्थान।

सो अलग होना, जिससे बेफायदे कोई देखे नहीं; कारण कि, भोजन समयमें इतने जनोंका देखना निषिद्ध है–१ हलका आदमी, २ भिखारी, ३ भूखा हो सो, ४पापी, ५ पाखंडी, ६ रोगी, ७मुर्गा, ८सर्प और ९ कुत्ता इन नवोंको भोजन दिखाना निषिद्ध है. इनमेंसे किसीकी अन्नपर नजर पड़े तो उसका उपायः–

मंत्र–अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः।
इति संचिंत्य भुंजानो दृष्टिदोषं न विन्दति ॥ १ ॥
अंजनीगर्भसंभूतं कुमारं ब्रह्मचारिणम्।
दृष्टिदोषविनाशाय हनुमंतं स्मराम्यहम् ॥ २ ॥

अर्थ--अन्न ब्रह्मा है, रस विष्णु है और इसका भोक्ता महेश्वर है ऐसा मनमें स्मरण करके भोजन करना, जिससे नजरका दोष न होगा. अंजनी माताके गर्भमें पैदा हुए जो हनुमान् बालब्रह्मचारी उनका ध्यान करके भोजन करना, जिससे नजरका दोष नहीं रहेगा ऐसा जानना.

भोजनपात्रके गुण।

सुवर्णकी थालीमें भोजन करनेसे त्रिदोष शांत होते हैं, चक्षुको फायदा होता है और पथ्यकर है, चांदीकी थालीमें भोजन करनेसे नेत्रको फायदा है, पित्तका नाश होता है पर वह कफ व वात करनेवाला है. कांसीकी थालीमें किया हुआ भोजन बुद्धि व रुचि देनेवाला तथा रक्तपित्तनाशक है. पीतलकी थाली बादी और रूक्ष है पर शूल, कृमि, कफ इनकी नाशक है. लोहेका बरतन और लोहचुंबकका बरतन सिद्धिदायक और सोजा, पांडु (पीलिया) का नाश करनेवाला व बल देनेवाला है. पत्थर और मिट्टीके पात्रमें भोजन करनेसे दरिद्र आता है, लक्ष्मी नाश होती है, काष्ठके पात्रसे रुचि आती है, पर वह कफ करनेवाला है और पत्तलमें किया हुआ भोजन रुचि देनेवाला, दीपन, विषनाशक व पापहारक ऐसा है.

पानी पीनेके बरतन।

तांबा और मिट्टीका पात्र अच्छा होता है, स्फटिकका पवित्र और ठंढा है, काचका और मूंगाका पवित्र अच्छा होता है.

प्रथम भक्षणीय पदार्थ।

भोजनमें पहले अदरक और सेंधालोन खाना. यह पथ्यकर, अग्निदीपन, रुचिकर, जीभ और कंठ साफ करनेवाला है. प्रथम एकाग्र होके मधुर रस खाना, मध्यमें खट्टा व खारा रस खाना, भोजनके अंतमें कडु तीखा व तुरस रस खाना. उसमें अनार आदि फल खाना. केला, काकडी, गन्ना ये चीजें भोजनके आदिमें खाना, अंतमें नहीं खाना. भोजनके आदिमें कठिन और भारी चीजें खाना. अंतमें हलकी चीजें खाना. भोजन करनेके वक्त मौनसे जीमना. कारण भोजनके वक्त अग्नि देवताका वास मुखमें रहता है, बोलनेसे कोई शुद्ध वचनको तजकर विपरीत वचन बोले तो अग्निदेवता शाप देती है और अधर्म होता है. मौनसे भोजनमें धर्म होता है.

भोजनके नियम।

भोजन हमेशः कम करनेसे अच्छा होता है. पेटके दो भाग अन्नसे और तीसरा भाग पानी पीकर भरना और चौथाभाग हवा फिरनेके वास्ते खाली रखना, जिससे अन्न अच्छा पचता है, मन प्रसन्न रखके हृष्ट पुष्ट रहता है, पानी भी थोड़ा थोड़ा पीना, जिससे अन्नका पचन अच्छा होता है. भोजनके पहले पानी पीनेसे कृशपना आकर मंदाग्नि होती है; भोजनके मध्य पानी पीनेसे अग्नि प्रदीप्त होती है और भोजनके अंतमें पानी पीनेसे कफ और स्थूलता होती है. पहिले भूक लगे तो पानी पीना और प्यास लगे तो पहिले भोजन करना, और दूध भोजनके अंतमें पीना ऐसा करने बाद अच्छी तरहसे हाथ व मुख धोना. दांतोंमें अन्नादिक फँसा हो तो वह निकालके साफ करना, जिससे मुखमें दुर्गंधता न होनेसे दांतोंको कीड़ा नहीं लगता, इसवास्ते साफ मुँह धोना चाहिये. पीछे आचमन करके दोनों हाथ आंखोंपर, मुखपर और पेटपर फिराना चाहिये. क्योंकि उससे नेत्रोंमें तिमिररोग होता नहीं. पेटपर हाथ फिरानेके वक्त ये मंत्र जपना कि-

मंत्रश्लोकाः-भुक्त्वा च संस्मरेन्नित्यमगस्त्यादीन्सुखावहान्।
विष्णुः कर्ता तथैवान्नं परिणामश्च वै यथा॥ १॥

सत्येन तेन मे भुक्तं जीर्यत्वन्नमिदं तथा ॥ २ ॥
अगस्तिरग्निर्वडवानलश्च भुक्तं ममान्नं जरयंत्वशेषम् ।
सुखं च मे तत्परिणामसंभवं यच्छत्वरोगी मम चास्तु देहः ॥३॥
अंगारकमगस्तिं च पावकं सूर्यमश्विनौ ।
पञ्चैतान्संस्मरेन्नित्यं भुक्तं तस्याशु जीर्यति ॥ ४ ॥

अर्थ--भोजन करने बाद नित्य प्रथम अगस्ति आदिकोंका स्मरण करना. विष्णु भोजनका कर्ता है.अन्न विष्णुही है और उस अन्नका परिणाम विष्णुही है.वह सत्य रूप है,वही मेरा आहार पचावेगा ऐसा कहके फिर अगस्ति, अग्नि और वडवानल ये मेरा खाया हुआ अन्न पचन करें.अन्नके खानेसे जो फायदा मिलनेवाला है सो मुझे दें. मेरा शरीर निरोगी रक्खें. ऐसेही मंगल,अगस्ति, अग्नि, सूर्य और अश्विनीकुमार इनका ध्यान करे तो भोजन अच्छा पचता है ऐसा जानना.ऊपर लिखे मुजब करके पेटपर हाथ फिराना, श्रम न करना, भोजनके पीछे तुरत निद्रा न करना, निद्रा करनेसे कफ होके जठराग्नि मंद होती है. अन्न खानेके वक्त कफ बढ़ता है और पचनेके वक्त पित्त होता है और पचनेके पीछे वात होता है, ऐसा जानना.

तांबूलकी विधि और गुण।

भोजनके बाद तुरत कटु अनाररससे मुख साफ करके सुपारी, अगर कपूर, कस्तूरी, लौंग, जायफल आदि रुचि करनेवाले पदार्थ खाना, पीछे तांबूल खाना, उसका गुण ऐसा है कि–

श्लोकाः–रते सुप्तोत्थिते स्नाते भुक्ते वांते च संगरे ।
सभायां विदुषां राज्ञां कुर्यात्तांबूलचर्वणम् ॥ १ ॥
तांबूलमुक्तं तीक्ष्णोष्णं रोचनं तुवरं सरम् ।
तिक्तं क्षारोष्णकाम्यं च रक्तपित्तकरं लघु ॥ २ ॥
वश्यं श्लेष्मास्यदौर्गंध्यमलवातश्रमापहम् ।
मुखवैशद्यसौगंध्यकांतिसौष्ठवकारकम् ॥ ३ ॥
हनुदंतमलध्वंसि जिह्वेन्द्रियविशोधनम् ।
मुखप्रसेकशमनं गलामयविनाशनम् ॥ ४ ॥

अर्थ-रतिके वक्त, सोकर जागनेके वक्त, स्नानके बाद, भोजनके बा उलटी हुये बाद, युद्धमें, राजसभामें और पंडितसभामें तांबूल खाजाना. तांबूल तीक्ष्ण, उष्ण, रुचिकर, सारक, कड़, खारा और तीखा ऐसा है. काम रक्तपित्त बढ़ानेवाला, लघु, वश करनेवाला है और मुखदुर्गंध, मल, वा श्रम इनका नाश करनेवाला, मुख साफ करनेवाला, सुगंध, कांति करनेवाल ठोड़ी व दांतका मैल साफ करनेवाला और जीभशोधनके वास्ते मुख पानी पैदा करनेवाला, मुख लाल रखनेवाला और गलेका रोग नाश क नेवाला है. तांबूलके मूलमें यश, शिरामें वायु और मध्यमें लक्ष्मी रहती इसवास्ते उसका देंठ, बीचकी शिरा और ऊपरकी अनी निकाल डालन अनंतर साफ पोंछके, उसपर चूना लगाके, ऊपर खैरका काथा डालके इलायची, जायफल, जावित्री, लौंग, केशर, कंकोल, कपूर, कस्तूरी, त ये सब चीजें डालके तेरह गुणसे युक्त कर बीड़ा खा लेना. पहिली औ दूजी पीक डाल देना. ऐसे बीड़ेके वहुत गुण हैं.

तांबूल किसको वर्ज्य है।

जुलाब लिये, भूँखा, दुर्बल दातोंवाला, नेत्ररोगी, विषवाला, मूर्छावाला क्षयरोगी और रक्तपित्तवाला इतनोंको तांबूलवर्ज्य है. इन रोगों वाला तांबूल को खायगा तो उसके देह, दृष्टि, केश, दांत, अग्नि, कान, कांति व बल इनका क्षय होता है और शोष, पित्त, वातरक्त आदि विकार होते हैं ऐसा जानना. पान खाने बाद आस्ते आस्ते सौ १०० कदम फिरना. सोना नहीं. सोनेसे कफ होता है और भागनेसे मृत्यु आता है अथवा रोग होता है. बाद फिरनेके आठ श्वासतक सोना; उस पीछे सोलह श्वासतक सीधे बाजूपर सोना. उस पीछे बत्तीस श्वासतक बाएं बाजूपर सोना. उस पीछे दिल चाहिये वैसा सोना.

हवाके गुण।

सोये पीछे हवा लेना नहीं क्योंकि वह रूक्ष होनेसे बेवर्ण और स्तब्ध करती है. दाह पित्तस्वेद मूर्च्छा व तृषा इनका नाश करती है. ग्रीष्म और शरद ऋतुकी हवा लेना अच्छा है. बाकी सर्व ऋतुओंकी हवा लेना मनाहै॥१॥

आठों दिशाओंकी हवाके गुण।

पूर्वकी हवा भारी, उष्ण, स्निग्ध होके पित्तरक्तको बिगाड़नेवाली, दाह व

वादी करनेवाली है, पर श्रम, कफ व शोपको फायदा करनेवाली है. मीठा, खारा पुष्ट होके त्वचादोप, बवासीर, दंतके कृमि, सन्निपातज्वर, श्वास व आमबादी इन रोगोंको बढ़ाती है ॥ १ ॥ दक्षिणकी हवा मीठी, लघु, रक्तपित्तनाशक, वीर्यकारक, शीत, बलकारक, नेत्रोंको फायदा करनेवाली और पथ्यकारक ऐसी है ॥ २ ॥ पश्चिमकी हवा तीक्ष्ण, शोषक, बलनाशक व लघु है. वह मेद, पित्त, कफ इनका नाश करनेवाली और वायुको बढ़ानेवाली है ॥ ३ ॥ उत्तरकी हवा ठंढी, स्निग्ध, क्षय और श्वासको बढ़ानेवाली है; पर वातप्रकृतिको पथ्य करनेवाली, बल करनेवाली, मीठी व कोमल ऐसी है ॥४॥ आग्नेय दिशाकी हवा दाहकर व रूक्ष ऐसी है ॥ ५ ॥ तथा नैर्ऋत्यकी हवासे दाह नहीं होता है ॥६॥ वायव्यकी हवा कड़वी है ॥ ७ ॥ और ईशान तरफकी हवा तीखी है ॥ ८ ॥

चारोंओरकी हवाके गुण ।

चारों तरफकी हवा त्रिदोषोंको बढ़ाती है; अनेक रोग पैदा करती है और आयुका नाश करनेवाली है सो हवा वर्ज्य है.

पंखाकी हवाके गुण ।

सामान्य पंखाकी हवा दाह, पसीना, मूर्च्छा व श्रम इनका नाश करनेवाली है; ताड़के पंखाकी हवा त्रिदोषशमन करनेवाली है, चँवरकी और मोरपंखके पंखाकी हवा त्रिदोष नाश करनेवाली, सम, स्निग्ध और प्यारी होती है. बांसके पंखेकी हवा उष्ण और रक्तपित्तका कोप करनेवाली है.

दिनको सोने योग्य ।

दिनको सोना फक्त ग्रीष्मऋतुमें, बाकी ऋतुमें मना है, जिसको हमेशा सोनेकी आदत है, श्रम किया होवे, रस्ते चला हो, स्त्रीका संग किया होवे, सवारी किया हो, वह ग्लानि, अतिसार, शूल, श्वास, हिचकी, वातरोग, क्षीण व कफक्षय इन विकारोंसे युक्त, वृद्ध, अजीर्णवाला, दारू पिये, रातको जगा हुआ और उपवास किये इन अठारह जातके आदमियोंको नींद लेना अच्छा है. रास्ते चलनेसे कफ, जाड़ापना व सुकुमारता इनका नाश होता है. बाग बगीचोंकी हवा लेनेसे और फिरनेसे देहको सुख होता है, आयु बल, बुद्धि व अग्नि इनको बल देता है और इन्द्रियां प्रसन्न रहती हैं.

पगड़ी छत्री व बेत धारणके गुण।

पगड़ी कांति देनेवाली, बालोंको हित करनेवाली, नाराजपना और वात व कफ इनका नाश करनेवाली है; पर वह पगड़ी हलकी चाहिये. भारी हो तो पित्त और नेत्रको विकार पैदा करती है.

फिरनेके वक्त छत्री रखनेसे बहुत फायदा है, धूप, बरसाद, मिट्टी शरीरपर न आके शोभा देती है और मंगलकारक भी है ऐसा जानना. बेतके गुण ये हैं--बाहर फिरनेको जाना जब हाथमें लकड़ी रखना, उससे मनको धैर्य, सत्त्व, उमंग, बल, स्थिरता व वीर्य बढ़ता है और आसरा रहकर जानवरका डर और दुश्मनका भय दूर होता है.

जूता धारण करनेके गुण।

पांवमें जूतोंके पहिरनेसे कांटा आदिककी बीमारी नहीं होती. शरीरको फायदा रखती है. पगरखी न पहिरनेसे नेत्रके रोग और इंद्रियोंके रोग होते हैं.

सवारीके गुण।

पालकी अथवा म्यानामें बैठनेसे शरीरको सुख होताहै, त्रिदोष सम रहते हैं. आमवातवाले और कफवालेको पालकीमें बैठनेसे श्रम होता है. हाथी-पर बैठनेसे बादी पित्त होता है और लक्ष्मी, आयु व पुष्टि पैदा होती है. घोड़ेपर बैठनेसे वायु, पित्त, अग्नि प्रदीप्त व श्रम होते हैं. और मेद व्रण व कफ इनका नाश होता है. जोरवान पुरुषको घोड़ेकी सवारी अच्छी है. धूप ज्यादा लेनेसे पसीना, मूर्च्छा, रक्तपित्त, तृषा, ग्लानि, श्रम और दाह ये होते हैं. रंग फिरा देती हैं और छायामें फायदा करती है ऐसा जानना.

वर्षाके गुण।

बादलकी वर्षा शीतल है, बल निद्रा आलस्य करती है. बहुत बरसात डर श्रम, शरीर भारी, कफ व वातको करती है.

अग्नि और धुवाँके गुण।

अग्नि बादी कफ शरीरका कड़ापना, ठंढ़से कांपना, आमवात, अभिष्यंद और नेत्ररोग इनका नाश करती है और रक्तपित्त कोपता है. धुवाँसे तत्काल

कफ होता है. आंखोंको पानी लाकर खराव करता है. मस्तक भारी और उलटी करनेवाला ऐसा है॥

सदाचार-वर्तन।

१ साधु और दुष्टसे भी प्रीति करना, २ साधुकी तो अवश्य प्रीति करना, ३ व्यवहार अच्छा रखना, ४ खराब आदमीकी संगति नहीं करना, ५ देवता, ब्राह्मण, बूढ़ा, वैद्य, राजा और अतिथि इनकी सेवा करना, ६ अपने घर आये हुए अतिथिको कुछ देना, निराश न करना, ७ किसीका अनादर न करना, ८ गुरुका कहना मानना, ९ कोई अपनेसे बुराई करे तो भी उससे आप भलाई करना, १० सब जीवोंपर दया रखना, ११ वैरीसे दूर रहना, १२ वैरी और मित्रकी बात दूसरेसे नहीं कहना, १३ अपनी परछाईं को न देखना, १४ अपनी परछाईं पानीमें न देखना, १५ नंगा होके नहीं न्हाना, १६ घातक प्राणियोंकी संगति न करना और उन्हें न पालना, १७ बुरी बात किसीको न कहना, १८ सबसे मीठा बोलना, १९ मीठी फायदेकी व स्निग्ध ऐसी चीजें खाना, जिससे रोग न हो, २० रातको दही न खाना, दिनको दही लोनसे खाना, २१ मूंगोंकी दाल और घृतशक्करसे भोजन करना, २२ एक मैं ही सुखी हूँ ऐसा अभिमान नहीं करना, २३ शंकायुक्त न रहना, २४ विना उद्योग न रहना, २५ कामकी इच्छा रखना और फल परमेश्वरकी इच्छापर रखना, २६ विना इच्छा मल मूत्र करनेको न जाना, इंद्रियोंको बहुत न सताना, २७ इंद्रियोंकी इच्छा बहुत न पालना, २८ चार हाथ आगे देखकर चलना, २९ नदीमें नहीं तैरना, ३० दिलगीरीमें न रहना, ३१ पुरानी नाव और जूने दरख्तपर न चढ़ना, ३२ खराब ऊंट घोड़ा हाथी हो तो उसपर न चढ़ना, ३३ सभामें हिचकी, खांसी, हांसी, डकार, जँभाई व छींक आवे तो मुखको कपड़ा लगाके लेना, ३४ नाकमें अंगुली नहीं डालना, ३५ डरावनी जगहपर नहीं बैठना, ३६ नखसे जमीन नहीं खोदना, ३७ जूठे हाथोंसे ब्राह्मणको कुछ नहीं देना, ३८ सूर्यका प्रतिबिंब उदयकाल, अस्तकाल और ग्रहणसमयपर पानीमें नहीं देखना, ३९ इंद्रधनुष किसी को न दिखाना, ४० बलवान्से युद्ध न करना, ४१ बहुत बोझा न उठाना,

४२दुश्मन और वेश्याका अन्न न खाना, ४३जामिन किसीकी न देना,४४ झूठी साक्षी नहीं देना, ४५ झूठ कभी न बोलना, ४६जूआबाजोंसे दूर रहना, ४७ स्त्रीका विश्वास कभी न करना,४८ ज्ञानी आदमीको लाजिम है कि, शामके वक्त भोजन, मैथुन, निद्रा,वेदपाठ और रस्ता चलना ये पांचो काम न करना । इनके दोष ये हैं कि भोजनसे रोग, मैथुनसे अधर्म संतान, निद्रासे दरिद्रता, वेद पढ़नेसे आयुष्य क्षीण, रास्ता चलनेसे भय होता है.इस लिये सदाचारसे चलके अपनी आयु वितायेगा उसे सर्व सुख मिलेगा ।

रात्रिचर्या ।

प्रथम सामके वक्त संध्यावंदन करना भगवद्भजन और दर्शन करना, पीछे रात्रिके पहिले पहरमें भोजन करना, सो थोड़ासा कम करना और भारी चीजें न खाना. स्त्री सोलह बरसकी हो वहांतक बाला, ३२ बत्तीस बरसतक तरुणी, ५० पचास बरसतक प्रौढ़ा, उसके बाद वृद्धा कहते हैं. पचास बरसके उपरांत स्त्रीको कामभोगकी इच्छा नहीं रहती है अथवा कम रहती है ऐसा जानना चाहिये.

ऋतु ऋतुपर स्त्रीका विचार ।

ग्रीष्मऋतुमें बाला स्त्री उत्तम,उसे भोग करना, हेमंतऋतुमें तरुणीसे गमन अच्छा है,वर्षा और वसंतऋतुमें प्रौढ़ा अच्छी जानना.बाला स्त्री भोगनेसे सदा पुरुषका बल व शक्ति बढ़ती है; तरुणी स्त्री पुरुषकी शक्ति क्षीण करती है और प्रौढ़ा स्त्री नित्य भोगनेसे पुरुषको बुढ़ापा आता है, उसके विषे कहा है–

श्लोक–सद्योमांसं नवं चान्नं बाला स्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकस्नानं सद्यः प्राणकराणि षट् ॥ १ ॥

अर्थ–ज्ञानी आदमीको लाजिम है कि, ताजा मांस व नवा अन्न खाना, बाला स्त्री भोगना, दूधके साथ भोजन करना, घृत खाना, गर्म जलका न्हाना ये छः सदा ताकतके देनेवाले हैं इसके विपरीत चीजें ये हैं कि–

श्लोक–पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥ १ ॥

अर्थ–बासी, दुर्गन्धमांस, बूढ़ी औरत, बड़ी फजरकी धूप, ताजा दही, फजरका मैथुन और दिनका सोना ये छः चीजें ताकत क्षीण करनेवाली हैं. तरुण स्त्री भोगनेसे बूढ़ा आदमी भी तरुण होजाता है और तरुण आदमी सदा बूढ़ी औरतको भोगे तो बुढ़ापा आता है.तरुण स्त्रीको भोगनेसे आयुष्य, तरुणता, कांति, मांसवृद्धि और स्थिरता प्राप्त होती है, ऐसा जानना.

स्त्रीसेवनकाल।

हेमंतऋतुमें वाजीकरणदवाइयां–बंधेज चढाव लेना, सर्वप्रकारसे भोग विलास करना. शिशिरऋतुमें नित्य भोग विलास करना. वसंतऋतु और शरदऋतुमें तीन तीन दिनोंसे स्त्रीसेवन करना, वर्षाऋतु और ग्रीष्मऋतुमें पंद्रह पंद्रह दिनोंमें एक वक्त स्त्रीसंभोग करना जिससे सदा आदमी तरुण और शक्तिमान् रहेगा.

ऋतु ऋतुमें कामके स्थान।

ठंढीके दिनोंमें रातको भोग करना और गर्मीके दिनोंमें दिनको भोग करना. वसंतमें दिनको, रातको और वर्षाऋतुमें मेघ गर्जनेके वक्तमें भोगका काल जानना, क्योंकि उसी उसी समयपर काम रहता है, ऐसा ही शास्त्रका प्रमाण है।

मैथुनका काल व नियम।

संध्यासमय,प्रातःसमय,अमावास्या,पूर्णिमा, गौ जंगलमें जानेके वक्त, आधीरात,दुपहर,मातापिताकी श्राद्धतिथि इनमें स्त्रियोंसे भोग करना मना है ऐसा जानना. स्त्रीभोगकी जगह उमदा और गुप्त होनी चाहिये. मैथुनके पहले गाना सुने. फूल अतर आदि अरगजा चंदन रोशनाई जहां हो ऐसे रमणीक मकानमें पलंग आदि शय्यापर स्त्रीभोग अच्छा है.अब निषिद्ध जगह कहते हैं–आपसे बड़ा हो उसके सामने, मैदानमें, श्रमकी जगहपर, दुःख और रोना सुन पड़े उस जगहपर और डरकी जगहपर स्त्रीसंग करना मना है.पुरुष पहिले स्नान करके शरीरमें सुगंध अत्तर चंदनादि लगाके फूलोंके हार गजरा आदि पहनकर धातु बढ़ानेवाले मधुर स्निग्ध पदार्थका भोजन करके उत्तम कपड़ा और गहना पहनके तांबूल खाके स्त्रीसेवन करे.ऋतुसे स्नान

करके उमदा कपड़ा गहना पहनके अतर फुलेल लगाके संभोग देवे जिसको पुत्र अथवा कन्या होनेकी इच्छा हो सो ऐसा करे. उसमें स्त्रीके स्नान करके चौथे दिनमें गर्भ रहे सो पुत्र होगा. पांचवें दिनमें कन्या होगी. छठे दिनको पुत्र होगा. सातवें दिनमें कन्या होगी. आठवें दिनका पुत्र होगा. नवें दिनमें गर्भ रहे तो कन्या होगी. दशवां दिन हो तो पुत्र होगा, ग्यारहवां दिन हो तो कन्या होगी. बारहवां दिन हो तो पुत्र होगा और तेरहवें दिनमें कन्या होगी. बाद तेरहवें दिनके भोग करनेसे गर्भ नहीं रहता है. कारण गर्भवासका फूल संकुचित होजाता है.

मैथुनके अयोग्य पुरुष।

जिसने बहुत भोजन किया है, जो अधीर (डरपोक), भूखा रोगी, प्यासा, बालक, बूढ़ा, व्यथितांग, क्षयवाला है, जिसके मैथुनसे दुःख हो ऐसे आदमियोंको स्त्री वर्ज्य है सो जानना.

अच्छी और खराब स्त्रीके लक्षण।

रूपसे सुन्दर, गुणवती, बराबर जोड़ी, प्रसन्नमुखी और कुलवती ऐसी औरत उमदा है. इसीके साथ संभोग करनेसे मन प्रसन्न होता है. रजस्वला, विना कामकी, मैली, बेदिलकी, जिसपर इच्छा न हो, जो उमरमें हलकी है, जो बूढ़ी, बड़े घरकी, रोगिणी, गर्भिनी, द्वेष करनेवाली, गरमीवाली, योनिरोगवाली, अपने गोत्रकी, गुरुकी औरत और विरक्त हुई ये चौदह जातिकी स्त्रियां वर्ज्य हैं सो भले आदमियोंने त्याग करना.

मैथुनके बाद स्नान करके शक्कर, दूध और गन्नेका रस मिलाके पीना, मधुर हवा खाना, मांसका रस अथवा दूध पीना और निद्रा लेना अच्छा है. बहुत स्त्रीसंगका निषेध है; क्योंकि उससे पेटशूल खांसी ज्वर श्वास दुबलापना पांडुरोग क्षयरोग आक्षेपक आदि बहुत रोग पैदा होते हैं.

बिजोरादिचूर्ण।

बिजोराका चूर्ण सोते समय शहदसे चाटेगा उसे नींद अच्छी आवेगी,

बादीका नाश होगा. इसमाफिक रात्रिको सब काम और उषःपान यानीं भोर होते ही पानी पीनेकी विधि करनी चाहिये, वही आगे लिखता हूं—

उषःपानविधि ।

श्लोकः—सवितुरुदयकाले प्रसृतिः सलिलस्य पिबेदष्टौ ।
रोगजरापरिमुक्तो जीवेद्वत्सरशतं साग्रम् ॥ १ ॥

अर्थ—सूर्य-उदयकालके पहले जो आदमी रातका रखा बासी पानी आठ घूंट पीवेगा उसके सब रोग जाकर सवासौ बरसतक जीवेगा. रातके चौथे प्रहरमें उठकर ऊपर लिखे मुजब उषःपान करेगा उसका अर्शरोग, सूजन, संग्रहणी, ज्वर, जलंधर, बुढ़ापा, कोढ़रोग, मेदरोग, मूत्राघात, रक्तविकार, बादी, पित्त, कानका रोग, कंठरोग, शिरारोग, कमरका रोग, नेत्ररोग और त्रिदोषव्याधि इनका नाश होताहै. ऐसा जानना चाहिये.

दूसरा प्रयोग ।

जो आदमी बड़ी फजर उठकर नाकसे पानी पीवेगा वह बुद्धिमान् होकर उसके नेत्रोंका तेज गरुडकासा रहेगा और शरीर शक्तिमान् रहेगा और बुढ़ापा कभी न आवे. नाकसे तीन अंजलि पानी पीवेगा उसका व्यंगरोग, चर्मरोग, जुखाम, शूल, खांसी और सूजन इन रोगोंका नाश होकर उसकी दृष्टि साफ होती है. ऐसा जानना चाहिये.

उषःपाननिषेध ।

स्नेहपान करनेवाला, रक्त शुद्ध करनेवाला, पेट फूलता हो, उदररोगी, हिचकीवाला, कफरोगी और वातरोगवाला इन शख्सोंका उषःपान करना निषिद्ध है. उनको भोजनके पहिले भी पानी न पीना चाहिये.

इति रात्रिचर्या समाप्ता ।

अथ ऋतुचर्या ।

वात पित्त व कफ इन तीनों दोषोंका संचय और प्रकोप होता है वह ऋतुके स्वभावसे शांत होता है. ऋतु छः हैं. वे सूर्यकी गतिसे होते हैं. मेष१ वृषभ२ वसंत; १ मिथुन २ कर्क ग्रीष्म; १ सिंह २ कन्या वर्षा; १ तुला २ वृश्चिक शरद—

ऋतु; १ धन २ मकर हेमंतऋतु और १ कुंभ २ मीन शिशिर ऋतु. इनमें पहले तीन ऋतु उष्ण होकर बलनाशक होते हैं इनको उत्तरायण कहते हैं. उत्तरायणमें दिन बड़ा होकर रात्र छोटी होती है और तीन ऋतु ठंढी होकर बलवान् हैं उनको दक्षिणायन कहते हैं. उसमें रात्रि बड़ी २ होकर दिन छोटा होता है ऐसा जानना. अब ऋतुमें दोषोंके संचय और कोपभेद कहते हैं. उसमें कौनसे ऋतुमें कौनसी चीजें खाना अथवा न खाना उसका विचार जुदा जुदा कहता हूं-ग्रंथके आदिमें तो मैंने सर्व ऋतुका भेद कहा है लेकिन ऋतुचर्याके सबबसे यहां थोडासा भेद और लिखता हूं. ऋतु ऋतुमें अपनी जगहपर दोष कोप होता है, कोठामें स्तब्धपना, पीलापना, अग्नि मंद, शरीर भारी, आलस्य, खानेपर इच्छा न होना इसमाफिक लक्षण होंगे उस वक्त जानना कि, अपने २ स्थानपर दोष कुपित हुए हैं.

वसंतऋतुविचार ।

वसंतऋतु मधुर, स्निग्ध, कफ प्रकोप करनेवाली है. उसमें हितकर प्रयोग ये हैं-उलटी देना १, नास सुंघाना २, शहदके संग हर्र देना ३, रस्ता चलना ४, अभ्यंग तेल लगाके गर्म जलसे स्नान करना ५, कफनाशक दवाइयोंका सेवन ६, भोजन करना ७, निर्मल रसाल खाना ८, भुना मांस, जंगली जनावरोंका मांस, गेहूं, चावल, मूंग, जव, सांठी चावल, शरीरमें चंदन, केशर कुंकुम, अगर, सुगंध पदार्थ लगाना और रूक्ष, कटु उष्ण व लघु ऐसी सब चीजोंका खाना पीना वसंतऋतुको हितकारी है. वसंतऋतुमें वर्ज्य चीजें ये हैं कि-मीठा, खट्टा, दही और दिनका सोना.

ग्रीष्मऋतुका विचार ।

ग्रीष्मऋतु रूक्ष, तीक्ष्ण रस पैदा करनेवाला, पित्तकर और कफनाशक ऐसा है. उसमें हितकर चीजें ये हैं कि-स्नेहयुक्त[1] पदार्थ, हलकी चीजें, पतले रसाल पदार्थ, श्रीखंड, सातों, दूध, क्षीरसालीके चावल, मांसरस, चंद्रकी चांदनी, दिनका सोना, शरीरमें चंदन लगाना और दूध पीना, ये सब ग्रीष्मऋतुमें फायदेवाले हैं सो करना.

---

१ घीसे मिली हुई मधुर चीजोंका स्नेहयुक्त (स्निग्ध) कहते हैं.

ग्रीष्ममें वर्ज्य पदार्थ।

ग्रीष्मऋतुमें कटु, खारा, खट्टा, पसीना निकालना और श्रम करना ये सब वर्ज्य हैं सो नहीं करना.

वर्षा ऋतुका विचार।

वर्षाऋतु शीतल, विदाही, अग्नि मंद करनेवाला और वातकोप करने वाला ऐसा है. वात बलवान् हो तो उसको मीठा खट्टा व लोन ये ज्यादा खाना; जिससे वात सम होता है.

शरीरके गीलेपनपर वर्ज्य अवर्ज्य।

कटु; तीखा व तुरस ज्यादा खाना; पसीना निकालना और मर्दन करना, गरम दही, जंगली मांस, गेहूं, चावल, उड़द, जुलाब और बरसात का पानी ये सब चीजें हितकारक हैं सो करना. वर्ज्यचीज ये हैं कि-पूर्वकी हवा, वर्षामें भीगना, धूप, ठंढी, श्रम, नदीका पानी, दिनको सोना, रूक्ष वस्तु और नित्य औरतोंका भोग ये सब चीजें मना हैं सो नहीं करना.

शरदऋतुविचार।

शरदऋतु उष्ण, पित्तकर, मध्यम बल देनेवाली है. उसमें हितकारी चीजें ये हैं कि, मीठा, तुरस, कटु, शीतल, हलका, दूध, बनारसी शक्कर, गन्नाका रस, थोड़ा खाररस, जंगली मांस, गेहूं, जव, मूंग, चावल, नदीका पानी व अंशुजल[१] इनका सेवन, चंद्रका चांदना, शरीरमें चंदनका लगाना, कपूर, फूलोंकी माला व सफेद कपड़ा इनका सेवन, प्रेम वचन व स्त्रियोंका गायन सुनना, तालाबमें जलक्रीडा करना, पित्तहारक जुलाब लेना और बलवान् पुरुष हो तो उसका रक्त निकालना ये सर्व चीजें शरदऋतुमें फायदा करती हैं. शरदऋतुमें वर्ज्य चीजें ये हैं कि-दही, बहुत चलना, खटाई, कटु उष्ण तीखी चीज, दिनका सोना, ठंढी और धूप लेना ये सब शरदऋतुमें मना हैं, सो नहीं करना.

हेमंत और शिशिरऋतुका विचार।

हेमंतऋतु शीतल, स्निग्ध, वनस्पतिम मीठा रस करनेवाला और जठरा-

---

१ जो सब दिन सूर्यके तेजसे तपै, चंद्रमाके तेजसे शीतल होवै और रातभर बाहर रहे उसे अंशुजल कहते हैं।

ग्निका बढ़ानेवाला ऐसा है. उसमें हितकर चीजें ये हैं कि-फजरमें भोजन, खट्टा मिष्टान्न व लोन इन चीजोंका खाना, अभ्यंग करना, पसीना निकालना, श्रम करना, गेहूं, गुड, चावल, उड़द, मांस, नवान्न, तिल, कस्तूरी, केशर, कृष्णागर, गर्मपानी, बिना धूवांकी अग्निका तपना, घृतका भोजन, स्त्रीका भोग, जड अन्न, भारी चीजें, गर्मगर्म कपड़ा और पौष्टिक पदार्थ, ये सब चीजें हेमंतऋतुमें फायदा करनेवाली हैं सो करना और हेमंतऋतुमें कोई वस्तु वर्ज्य नहीं हैं. ऐसा शास्त्रमें लिखा है सो जानना. शिशिरऋतुका आचार विचार हेमंतऋतुके माफिक करना चाहिये. कारण कि, शिशिरऋतुका खाना पीना सब हेमंतऋतुके तुल्य हैं. जो शख्स ऊपर लिखे मुजब छहों ऋतुओंमें खाना पीना आचार विचार सोना बैठना जागना करके दोष-संचय व कोप होनेके वक्त जलदी इलाज करेगा उसकी तन दुरुस्ती होके वह सुख आनंदसे रहेगा परंतु पहले बीमारी उत्पन्न होते ही बराबर इलाज नहीं किया जाय तो रोग अत्यंत बढ़कर आखिरको असाध्य होनेसे बड़ी हानि हो जायगी सो जानना.

इति सदाचार रात्रिचर्या ऋतुचर्या समाप्ता ।

मागध वजन.

मागधपरिभाषामेंसे वजन और मापका विचार सर्व ग्रंथकारोंने लिखा है, इसवास्ते इस ग्रंथमें भी वजन मापका मान अवश्य लिखना चाहिये. ऐसा विचार कर हमने थोड़ासा बताया है. कारण यह कि, इसका भेद मालूम होनेसे हकीमको बहुत फायदा होता है और प्रमाण समझमें आता है. इस ग्रंथमें मासा और तोलोंका मान ऐसा लिखा है, जिससे आदमीकी समझमें सहज ही आवेगा और जहां जहां लिखा जावेगा वहां वैसा साफ मालूम होगा. अब वजनका कैसा मान बँधा है सो विचार पहलेसे लिखता हूँ-

सूर्यका प्रकाश धारा (मोखा) से घरमें आता है उसमें जो सूक्ष्म रज दीखता है उसके तीसवें भागको परमाणु कहते हैं. उन तीस परमाणुओंका १ एक त्रसरेणु होता है उसको वंशी भी कहते हैं. ६ त्रसरेणुकी १ मरीचिका है;

६मरीचिकाकी १ राई, ३ राईकी १ एक सरसों, ८ सरसोंका १ जव, ४जवकी १ गुंज, ६ गुंजाका १ मासा. उसको हेमधान्य भी कहते हैं।४ मासाकी १शाण उसे धरण व टंकभी कहते हैं।उसका व्यावहारिक मासा तीन । २शाणका १कोल, उसे क्षुद्र, टंक व द्रंक्षण भी कहते हैं।उसके व्यवहारमें मासा छः होते हैं. दो कोलका १कर्ष उसके पाणि, माणिक, अक्ष, पिचु और पाणितल ऐसे नाम हैं।२कर्षका अर्धा पल.उसे शुक्ति वा अष्टमिका भी कहते हैं। उसके व्यवहारमें तोला दो होते हैं।२आधे पलका १ पल, उसके व्यावहारिक तोला चार ४ हुए।उसे टंक भी कहते हैं। २ पलकी १ प्रसृति, व्यवहारमें उसके तोला आठ ८।दोप्रसृतिकी १ अंजली, व्यवहारमें उसके तोला १६। दो अंजलीकी १ मानिका, व्यवहारमें उसके तोला बत्तीस ३२।दो मानिकाका १प्रस्थ, व्यवहारमें उसके तोला चौसठ ६४।चार प्रस्थोंका १आढक, व्यवहारमें उसके तोला दोसो छप्पन२५६। चार आढकका १द्रोण, उसके व्यवहारमें तोला एक हजार चौबीस १०२४।२द्रोणोंका १सूर्प, उसके व्यवहारमें तोला दो हजार अडतालीस २०४८।२सूर्पकी १द्रोणी अथवा गोणी उसके व्यवहारमें तोला चार हजार छाणवे ४०९६।चार गोणीकी १खारी, उसके व्यवहारमें तोला सोला हजार तीनसौ चौराशी १६३८४।सौ पलकी १तुला, उसके व्यवहारमें तोला चारसौ४००।दो हजार पलका १भार उसके व्यवहारमें तोला आठ हजार ८०००.

३०परमाणुका-१वंशीअथवा त्रसरेणु
६ त्रसरेणुओंकी-१मरीचिका.
६ मरीचिकाकी-१ राई.
३ राईका-१ सरसों.
८ सरसोंका-१जव.
४ जवकी-१ गुंजा.
६ गुंजाका-१ मासा.
४ मिष्कालका- १ टंक.
२ टंकका-१कोल.
२ कोलका-१कर्ष.
२ कर्षका-१अर्द्धपल.

२ अर्द्धपलका-१ पल.
२ पलकी-१ प्रसृति.
२ प्रसृतिका--१ अंजलि.
२ अंजलिकी-१ मानिका.
२ मानिकाका-१ प्रस्थ.
४ प्रस्थका-१ आढक.
४ आढकका-१ द्रोण.
२ द्रोणका-१ सूर्प.
२ सूर्पकी-१ द्रोणी.
४ द्रोणीकी-१खारी.

दूसरा प्रमाण।

मासासे खारीतक चौगुना मान लेना. जैसा कि, चार मासाका एक शाण, चार शाणका एक कर्ष, चार कर्षका एक बिल्व, चार बिल्वका एक अंजली, चार अंजलीका एक प्रस्थ, चार प्रस्थका एक आढक, चार आढककी एक राशी, चार राशीकी एक द्रोणी और चार द्रोणीकी एक खारी. ऐसा माप एकसे एक चौगुणा लेना चाहिये और गुंजासे कुडवतक दवा सामान लेना और गीली दवा लेना हो तो प्रस्थसे तुलातक सूखी दवासे दुगुना लेना.

पतली दवाका प्रमाण।

चार अंगुलका चौड़ा और ऊंचा लोहे, बांस, कांच अथवा मट्टीका माप बनाके लेना उसे कुड़व कहते हैं. ऐसा जानना चाहिये. भावार्थ—दवाका वजन मागधपरिभाषामें लिखा है; लेकिन यहां कलिकालके मानसे आदमी कम ताकत और छोटे होते हैं इसवास्ते कालमान व देशमान विचार, रोगीका बल और जठराग्निकी ताकत देखकर दवा देना चाहिये. दवाका नियम और विचार ऐसा है कि, जो दवाका पहिला नाम है उसी दवासे उसका नाम प्रसिद्ध है. जैसा पहला रास्ना नाम है सो रास्नादि काढा कहलाता है. पहला नाम शुंठी है तो शुंठ्यादि काढा कहलाता है. पहला कोहला नाम है सो कूष्मांडपाक कहलाता है. पहला पीपलीसे पीपलादि काढा और सालमसे सालम पाक और काढा जानना. फांट, हिम, कल्क, पाक, तेल, घृत, लेह, स्वरस चूर्ण आदि सर्व दवाइयोंमें पहले नामसे नाम जानना चाहिये. इसवास्ते कैसा ही प्रयोग हो लेकिन पहले नामसे दवाका नाम प्रसिद्ध होता है. ऐसा समझना.

स्नेहपानकी विधि।

स्नेह चार प्रकारका है. उसमें घृत, तेल, मांसका तेल और हाड़का तेल यह चार प्रकारका स्नेह थोड़ासा गर्म करके सूर्य उदय होनेके बाद पिलाना चाहिये स्नेहमें दो भेद हैं उसमें एकस्थावर यानी तिल, नारियल आदि सबका तेल समझना और दूसरा जंगम यानी गौ भैंस बकरी आदिका घृत मांसर सचरबी हड्डी आदिका रस समझना. स्थावरमें तिलका तेल श्रेष्ठ और जंगममें घृत श्रेष्ठ समझना, स्नेहका भेद घृत तेल व एक ठिकाने मिले हुए हों तो उसकूँ यमक

कहते हैं. घृत, तेल, मांसस्नेह ये तीनों एक जगह मिले हुए हों तो उसको त्रिवृत् कहते हैं और घृत, तेल, मांसस्नेह, हाड़का तेल ये चारों चीजें एक जगह हों तो उसे महान् कहते हैं. इसी माफक स्नेहके तीन भेद हैं सो जानना

स्नेह लेनेका नियम।

घृत तीन दिन पीना, तेल चार दिन पीना, मांसस्नेह पांच दिन पीना और हाड़का तेल छः दिन पीना. इस माफक स्नेहका नियम समझना. सात दिनके बाद स्नेह पीवे सो आहारके समान है उसमें गुण कुछ नहीं. मांससे घृतमें आठ गुण अधिक हैं. इसवास्ते पहला घृत लिया है. मांससे जो चिकनाई निकलती है उसे मांसस्नेह कहते हैं. कोई उसे चरबी भी कहते हैं. जो स्नेह फिरते चलते प्राणियोंसे पैदा हो उसको जंगमस्नेह कहते हैं और जो अचल चीजोंसे पैदा हो सो स्थावर स्नेह है. उसे तेलादिक समझना चाहिये. वात आदि दोष, काल, अग्नि, उमर और बल देखके घृतादिक स्नेहकी मात्रा पीनेको देना सो अल्प मध्यम व श्रेष्ठ ऐसी तीन प्रकारकी है. उत्तम एक पल देना, मध्यम तीनकर्ष प्रमाण देना, मंदाग्निवालेको दो कर्ष प्रमाणदेना. बेप्रमाणसे स्नेहलेनेसे सूज, बवासीर, नेत्रमें सुस्ती ये उपद्रवहोते हैं.

स्नेहके गुण।

तेल अग्नि प्रदीप्त करके स्त्रीविषे इच्छा देता है. वात नाश करके शरीरपुष्टि धातुवृद्धि, श्रमदूर करताहै. श्रेष्ठमात्रा पलप्रमाणकी. वह कोढ, विषदोष, उन्माद, भूतादिग्रह व अपस्मार ये रोग दूर करतीहै. उसका अनुपान पित्तकोपपर फक्त घृत पीना है, वातकोपपर सैंधव मिलाके पिलाना. कफकोपमें त्रिकटु और जवाखार मिलाके घृत पिलाना. रूक्ष, उरःक्षतरोग, विषदोष, वातपित्त वालेको तथा स्मरणशक्तिरहित व कमबुद्धिवाला ऐसे आदमीको स्नेह पिलाना अच्छा है. कृमि विकारवाला, पेटमें बादीवाला, शरीर बढ़ा और मेदवृद्धिवाला इन आदमियोंको तेलका स्नेह पिलाना चाहिये. जिसकी तबियतको तेल मानता है और जिसका अग्नि दीप्त है उसे तेल पिलाना. मल्लयुद्धमें धनुष खींचनेसे धातुक्षीण हुआ और रक्तक्षयवाला इन आदमियोंको मांसस्नेह पिलाना. दुष्टकोढ़ वातसे हाड़गत बादीवालेको हाड़का तेल पिलाना. ठंढीके दिनोंमें स्नेह दिनमें पीना और गर्मीके दिनोंमें

वातपित्त कोप हो तो रातमें स्नेह पीना और कफबादी हो तो दिनमें पीना और नाकमें डालना, अंगमें मालिश करना, कुल्ला करना, शिरमें लगाना, कानमें डालना, नेत्रपर लगाना. इस प्रकार स्नेहका उपयोग है सो जानना. घृत पीके उसपर थोड़ा गर्म पानी पीना और तेल पीके उसपर व्योष पीना, मांसस्नेह पीकर हाड़का तेल और मण्ड पिलाना, उससे सुख होता है.

स्नेहवर्ज्य पुरुष।

जिसे न माने सो, बालक, बूढ़ा, नाजुक और प्यासा ऐसे आदमीको चावलोंमें घृत देना मगर पिलाना नहीं.

यवागू, मण्ड और व्योष करनेका प्रमाण।

तिल कूटके उसका भूसा निकालके थोड़ासा कूटना, उसमें चावल मिलाके घृत डालना. पानीमें पकाकर पतला करना उसे यवागू कहते हैं, वह शीतउष्ण लेनेसे तुरत धातुको पैदा करतीहै. चावल और कुलीथ आदि धान्य चार तोला लेके उसमें पानी एक प्रस्थ डालके औटाना. थोड़ा गाढ़ा हो तब निकाल लेना, उसको व्योष कहतेहैं और चावलके पानीको मण्ड कहते हैं ऐसा जानना. तुरत धातु पैदा होनेको सहत खड़ी शकर कांसेके बरतनमें घृत डालके गरम करके गौका दूध गरम गरम डालके पीना, जिससे तुरत धातु पैदा होती है.

स्नेह करनेकी विधि।

सब दवाइयोंका कल्क, काढ़ा अवथा कठिन चीजें डालना होतो उसमें स्नेहसे चौगुना काढ़ा, कल्कसे चौगुना स्नेह और काढ़ेसे चौगुना पानी ऐसा मिलाके सिद्ध करनेको चूल्हेपर चढ़ाके सब पदार्थ जलकर तेल वा घृत रहे तब उतार लेना. यही सिद्ध है. तेलमें बहुत दुर्गंध हो तो उससे रोगीको मूर्छा आती है. सो दुर्गंध उड़ानेका उपाय यह है कि तेलका सोलहवां हिस्सा मंजिष्ठ, त्रिफला, नागरमोथा, हल्दी, खस, लोध, सफेद केतकी, बड़की जटा, दालचिनी, ये सब चीजें चौथा अंश ले बांटकर कल्क करके उस तेलमें अथवा घृतमें डालके पचाना जिससे दुर्गंध जाती है. तेल पात्रमें डाले पीछे रखना. उसमें काढ़ा, दूध, कल्क, सुगंध शोधक दवाइयां, कस्तूरी, चन्दन, कपूर, खस, नागरमोथा,

कचोरा, रक्तचंदन, कूट, कुलिंजन, दालचिनी, मंजिष्ठ, अगर, नखला, तमालपत्र और शीतलचीनी इन सब चीजोंका कल्क करके उसके साथ विधिसे एक दिनतक पचन करना जिससे सुगंधी स्नेह होता है.

लाक्षारसविधि।

लाखके दशवां हिस्सा लोध, लोधका दशवां अंश सज्जीखार और थोड़ासा वेरका पत्ता लेके उसमें सोलहगुना पानी डालके चौथा अंश काढ़ा उतार लेना. उसे लाक्षारस यानी लाखका शीरा कहते हैं.

आसव करनेकी विधि।

जिस पदार्थमें द्रव्य बहुत दिनतक रहता है और उससे विशेष गुण बढ़ता है उसे आसव वा अरिष्ट कहते हैं. वह सर्व जनोंको दवामें काम आता है, उसी आसवको सर्व दवाइयोंका काढ़ा वा स्वरस को बरनीमें वा लाखके वरतनमें भरके उसका मुख बांधके जमीनमें अथवा धानमें गाड़, मासपक्ष तक रखके निकालते हैं उसे आसव कहते हैं और शराब भी कहते हैं, ऐसे तीन भेद हैं. ऐसा जानना चाहिये ॥

स्वेदविधि (पसीना निकालना)।

चार तरहकी पसीना निकालनेकी तरकीब है. उसके नाम ताप, उष्ण, उपनाह और द्रव ऐसे चार तरहके हैं. सो वादीकी पीडा निकालनेवाला है ऐसा जानना. १ जिसका शरीर मोटा बलवान् है उसको वात है तो बहुत पसीना निकालना, २ हलका रोग है तो हलका पसीना निकालना, ३ मध्यम रोगवालेका पसीना मध्यम निकालना और कफका रोगी हो तो रूक्ष चीजोंसे रेतीसे पसीना निकालना. कफबादी हो तो स्निग्ध और रूक्ष चीजोंसे पसीना निकालना. ४ कफमेद युक्त बादी हो तो गर्म जगहमें गर्म कपड़ा पहरकर वा सूर्यकी धूप लेकर पसीना निकालना. कुश्ती करना, जोर निकालना, रस्ता चलना, मिहनत करना, बोझा उठाना जिससे कफमेदसंयोग वायु जाता है. ५ जो नास देनेके योग्य है, बस्ति देनेके योग्य है और जुलाब देनेके योग्य है उन आदमियोंको पसीना निकालने बाद नासादिक देना. ६ भगंदरवाला, मूलव्याधि (अर्श) वाला और अश्मरी रोगवाला इन तीनों रोगवालोंको पहले पसीना निकालनेके बाद

शस्त्रक्रिया करना. ७जिस स्त्रीके पेटमें गर्भका शल्य हो उसका, गर्भपतन-वालीका वा प्रसूतावालीका पसीना निकालना. उन आदमियोंका पसीना अन्न पचने बाद जिस जगहपर हवा न हो वैसी जगहपर निकालना. दवा आदिसे आदमीका पसीना निकालनेके बाद बड़े बरतनमें तेल डालके उसमें उसे बिठाना जिससे रसादिक धातुगत बादी पतली होके कोठामें-से गुदाके रास्ते दस्तसे निकलती है ऐसा जानना ॥ ८ ॥

जिनको पसीना निकालना मना है सो पुरुष।

अजीर्णवाला, दुर्बल, परमावाला, उरःक्षतवाला, तृषावाला, अतीसारी, रक्तपित्तवाला, पांडुरोगी, उदररोगी और गर्भिणी इतने आदमियोंका पसीना कभी न निकालना. अगर जरूर हो तो अल्प क्रियासे थोड़ा निकालना. हृदय, अंड व नेत्र इनका पसीना हलका निकालना. बदनमेंसे ज्यादा पसीना निकलनेसे संधियोंको पीडा, तृषा, ग्लानि, भ्रम, रक्तपित्त आदि उपद्रव होते हैं. बदनपर फोड़े आते हैं उसके वास्ते ठंडा उपाय करना, जिससे समाधान होता है.

चार तरहके पसीनेकी विधि।

तहां ताप नामका पसीना रेती वस्त्र हाथ खपरा चिथडा खीरें आदि चीजोंसे आदमीका बदन सेकना. अथवा गर्म रेतीसे सुरतीअरंडके पानों-पर डालके उस पोटलीसे सेकना, जिससे पसीना निकलता है.

उष्ण नाम पसीना।

लोहेका गोला अथवा ईंटसे सेकना. उसपर खटाई छिड़कके सेकना अथवा दशमूलादिकबादीहारक चीजोंका काढ़ा अथवा उन दवाइयोंका रस घड़ेमें डालके उस घड़ेमें छेद करके उसमें लोहा अथवा बांसकी नलीसे बफारा देना. वह नली दो हाथ लंबी हो. घड़ेका मुख बंद करना. वह नली हाथीकी सूंड़के आकारकी करके बफारा देना. पीछे रोगीको आस्ते बैठाके तेल वा घृत की मालिश करके कंबल, रजाई ओढ़के पसीना निकालना. अथवा आदमीको सोने लायक साढ़े तीन हाथका गढ़ा खोदके उसमें खैरकी लकड़ी जलाके वह

अग्नि जलदी निकालके उसमें दूध अथवा धनियोंका पानी, छाछ, कांजी वा दही इनमेंसे कोई भी दवा छिड़कके उसपर वातहारक पत्ता यानी तुरती अरंड धतूरा आक निरगुंडी रेंड वा कांगुनी इनके पत्तोंमेंसे जो मिले सो ले गढ़ामें बिछाके उसपर रोगीको सुलाना. कपड़ा ओढ़ाना जिससे उष्ण नामका पसीना निकलके वातरोगी अच्छा होगा.

उपनाह नाम पसीना।

दशमूलादिक वातहारक दवाइयोंको कूटके चूर्ण करके उसमें दूध और हरिणके मांसका स्नेह डाल मिलाके थोड़ा गर्म करके वातपीडापर लेप जाड़ा लगाके पसीना निकालना. इस लेपको गर्म पान करके कपड़ेसे बांधना. अथवा उन दवाइयोंमें सेंधालोन डालके कांजीमें, छाछमें वा तिलोंके तेलमें मिलाके गर्म करके लेप देना, ऊपर कपड़ासे लपेटना जिससे पसीना निकलता है.

द्रव नाम पसीना।

द्रव नामका जो पसीना है सो दशमूलादिक वातहारक दवाइयोंका काढ़ा करके आदमीके बदनमें तेल मालिश करके बरतनमें बैठाके उसके ऊपर धार ऐसी छोड़ देना कि, उस आदमीके नाभीसे छः अंगुल ऊपरतक काढ़ेका पानी चढ़ जाय. इसीतरह तेलमें, दूधमें, कांजीमें अथवा सिद्ध घृतमें आदमीको बरतनमें बैठाके कांधेपर धार छोड़ना. सहन होने माफिक गर्म पदार्थ रखना, जिससे साफ पसीना निकलके बादी रोगी साफ अच्छा होगा. जैसा पेड़के मूलमें पानी डालनेसे उसका फायदा होता है वैसा ही आदमीके रोमरंध्रोंमें तेलादिक जाकर साफ करके वातको निकाल देता है. ये प्रयोग दो २ या तीन २ दिनसे जबतक अच्छा हो तबतक करना. इस प्रयोगसे बादी हरण करनेवाला दूसरा श्रेष्ठ प्रयोग नहीं है ऐसा समझना और करना. तेल वा घृत सिद्ध किया हो अथवा सादा हो तो भी चलेगा, तेलादिकमें एक घड़ी दो घड़ी या चार घड़ीतक बैठना.

वातहारक दशमूल और अन्य पदार्थ।

१ साल्वण, २ पिठवण, ३ रीठा, ४ डोरला, ५ गोखरू, ६ बेल, ७ ऐरण, ८ टेंडू, ९ पाडल और १० शिवण इन सबके मूलको दशमूल कहते हैं, यह

वातहारक है ऐसा जानना. घड़ेका मुख बंद करके नली बैठाके भाफ देना. नली लोहा वा तांबाकी करना. आक, अरंड, धतूरा, निरगुंडी, मालकांगनी, मंदार, सुरतीअरंड, शेवगा आदिके पत्ता ये भी वातहारक हैं.

पसीना कब मना है उसका नियम।

बदनका ठंढापना और शूल बंद होने बाद और स्तब्धता और भारीपना दूर होनेतक बदनको नरमपना आके अग्नि प्रदीप्त होने बाद पसीना बंद करना. बाद गर्म पानीसे स्नान करना और कफकर चीजें खानेको मना करना, मिहनत नहीं करना.

रोगीको वर्ज्य और अवर्ज्य वमन (उलटी)

शरदृतुमें, वसंत ऋतुमें और वर्षाऋतुमें खुशीसे उलटी देना. उलटीका निषेध-जिसको उलटी देदी उसे भारी पदार्थ, ठंढा पानी, परिश्रम, मैथुन, शरीरमें तेल लगाना, गुस्सा करना ये वर्ज्य हैं. योग्य उलटी-बलवान्, कफका रोगी, मुखसे लार पड़े (जिससे उलटीकी आदत है सो), धैर्यवान्, विष खाया है सो, स्तनरोगी, अग्निमंदवाला, श्लीपदरोगी, अर्बुदरोगी, हृदयरोगी व कोढ़रोगी इनको और विसर्प, परमा, अजीर्ण, भ्रम, विदारिका यानी गंडमाला, अपची, कास, श्वास, पसीना, अंडवृद्धि, अपस्मार, ज्वर, उन्माद, रक्त अतिसार, नासापाक, तालुपाक, ओष्ठपाक, कानका स्राव, द्विजिह्वक, गलशुंडक, अतीसार, पित्त, श्लेष्म, मेद और अरुचि इन रोगोंमेंसे कोई भी जिसको रोग है उसको पहले उलटी जरूर देना चहिये. उलटी देनेको वर्ज्य रोगी यह कि-गर्भिणी, तिमिरवाला, गुल्मवाला, उदररोगी, कृश, अतिवृद्ध, मोटा शरीरवाला, उरःक्षती, बालक, रूक्ष, भूँखा, निरूहण बस्ति लिये, उदावर्त रोगी, जिसके मुख वा नाकसे रक्त पड़े सो, जिससे उलटी सहन न हो सो, केवल वातरोगी, पांडुरोगी, जंतुरोगी और जिसका बहुत बोलनेसे स्वर फूटा है वह रोगी इन रोगियोंमेंसे कोई भी रोगी हो उसको कभी उलटी देना नहीं. उसमें भी नरम, दुबला, कृश, बालक, वृद्ध व डरपोक आदमी, इनको तो अवश्य करके उलटी नहीं देना. जिस आदमीको उलटी देना हो उसको पहिले यवागू वा दूध छाछ या अथवा दही पेट भरके पिलाना और तबियतको नहीं भावे सो पदार्थ खिलाना वा

पिलाना, दोष बढ़ाके उलटी देना, घी पिलाना, उसके बाद उलटी कराना जिससे साफ उलटी होगी. जितने उलटीके प्रयोग हैं उन सबमें सेंधालोन व शहद मिलाके देना, इससे फायदा होता है.

उलटीपर दवाका प्रमाण।

उलटीपर काढ़ेकी दवा एक कुड़बलाके उसको थोड़ी कूटके उसमें पानी एक आढक डालके आधा औटाके पिलाना, जिससे उलटी होती है. पुराने ग्रन्थोंमें मोटी मात्राका प्रमाण नौ प्रस्थ काढ़ा पिलाना और मध्यमको छः और कनिष्ठको तीन प्रस्थ पिलाना, ऐसा है. तीन प्रस्थसे हलकी मात्रा कही है,लेकिन् सांप्रत प्रजाकी तवीयत देखके दवाका मान हकीमको अवश्य करना चाहिये. ये सर्व प्रमाण काढ़ाके हैं. कल्क व चूर्ण ये चार तोलातक देनेका मान समझना. आदमीको उलटीके सात ७ वेग होनेके बाद पहली सर्व दवा गिर जाती है, आठवें वेगमें पित्त निकले जब तब उत्तम उलटी हुई ऐसा जानना. पांचवें वेगमें सब दवा पड़के पित्त पड़े तो मध्यम समझना, तीनही वेगमें सब दवा पड़के पित्त पड़े तो कनिष्ट समझना. तीक्ष्ण दवाइयोंसे कफको जीतना, मधुर ठंडीसे पित्तको जीतना और मधुर क्षार और खट्टी उष्ण दवाइयोंसे बादी कफको जीतना. १ कफ दोषको पीपला, गेलफल व सेंधालोन इनका चूर्ण गर्म पानीसे देना, जिससे उलटीमें कफ गिरेगा, २ पित्तको पटोल अडुलसा व नींबके पत्तोंका चूर्ण ठंडा पानीसे पिलाना, उससे उलटीमें पित्त पड़ेगा. ३ कफ बादीकी पीडा हो तो गेलफलका चूर्ण दूधमें डालके पिलाना चाहिये जिससे कफवातकी पीड़ा जाती है, ४ अजीर्णको सेंधालोन गर्म पानीमें डालके पिलाना, जिससे अजीर्ण जायगी। आदमीको दवा लेनेके बाद जमीनपर गोड टेककर पतली अरंडकी जड़ गलेमें डालके हिलाकर उलटी तथा शिर और पसलीको मालिश करना अथवा थोड़ा घुमाकर झुलाना जिससे उलटी जलदी होगी उलटीमें कुछ विकार हुआ हो तो मुखसे लाल पानी वगैरह गिरेगा और हृदयपीड़ा और मुख कडवा होगा, बहुत उलटी हो तो तृषा, हिचकी अंग जड, ज्ञाननाश, जीभ भारी,टेढ़ी, नेत्र करडे, खींचना, चंचल, ऊँडा

जाना, भ्रम, हनूका स्तंभ, मुखसे खून गिरना, वारंवार थूक आना और कंठमें पीड़ा होना ये उपद्रव होते हैं.

ज्यादा उलटीपर उपाय ।

ज्यादा उलटीवालेको हलका जुलाब देना और जीभ खींच जावे तो चावल बराबर नमक, खटाई, मनको प्रिय हों सो चीजें, मीठा दूध वा घृत देना, उसके सामने दूजे मनुष्यको बैठा कर निंबू जंभीरी इमली आदि खट्टे पदार्थ चुसाना जिससे इसके मुखको पानी पैदा होके जीभ ठिकाने आवेगी और प्रकृति साफ होगी । २ अथवा जीभ बाहर आयी हो तो तिल और द्राक्षाकी चटनी बनाके जीभको लेप देना और युक्तिसे अंदर डालना ३ नेत्र खिंचा हो तो घृत लगाके मालिश करके ठिकाने लाना । ४ और हनूका स्तंभ हो तो पसीना निकालना, मालिश करना और कफ वातनाशक इलाज करना । ५ उलटीमें खून आता हो तो रक्तपित्तनाशक इलाज करना, उससे बंद होगा । ६ तृषादिक उपद्रव हों तो आंवला, रसांजन, खश, शालीकी लाई, रक्तचंदन और नेत्रबाला इन छः ६ दवाइयोंको मथ कर उसमें घृत सहत सक्कर डालके पिलाना जिससे उलटीसे होनेवाले तृष्णादिक सर्व उपद्रव दूर हो जायेंगे.

उलटी अच्छी होनेके लक्षण व उपाय ।

हृदय, कंठ व मस्तक शुद्ध होता है, अग्नि प्रदीप्त व शरीर हलका होकर कफ पित्त शांत होता है. और आदमीको अच्छी उलटी होनेके बाद तीसरे प्रहरको अग्नि प्रदीप्त होनेसे मूंग सांठीचावलोंका भात इनका मनको सुहाता हिरनादिकके मांसरसका यूष करके उसके बराबर भोजन देना. जिसको उत्तम उलटी हुई है उसको झापड, निद्रा, मुखदुर्गन्धि, कंडू, संग्रहणी, त्रिदोष आदि उपद्रव कभी न होंगे.

रसांजन और यूषकी विधि ।

१ काष्ठहलदी लाके कूट काढ़ा करके उसके समान उसमें बकरीका दूध मिलाके उसका मावा करके चूर्ण सरीखा करे, उसे रसांजन कहते हैं.

२ साठ दिनोंमें पके हुए चावलोंको साठी चावल कहते हैं, वह चावल और मूंग चार तोला लेके उसमें पानी एक प्रस्थ डालके काढा करके उस पानीको उतार लेना उसको यूष (जूस) कहते हैं । ३ और इस माफिक मांसका भीजूस करना उसे मांसजूस कहते हैं । इति उलटी विधि । समाप्ता ।

जुलाबकी विधि ।

प्रथम आदमीको स्नेह देना पीछे पसीना निकालना उसके बाद उलटी देना; उस पीछे जुलाब देना, जुलाब शरदऋतुमें व वसंत ऋतुमें शरीर शोधनेके वास्ते देना, इन दोनों ऋतुओंमें तो सभी प्राणीमात्रको मैल शुद्धिके वास्ते जुलाब लेना और रोग दवाके वहानेसे हर समयमें जुलाब देना चाहिये ऐसापुरातन शास्त्रोंका प्रमाण है। उलटी देनेके पीछे जुलाब कब देना ऐसी कोई शंका करे तो भेड चरक सुश्रुत वाग्भट्ट आदि ग्रंथोंका ऐसा मत है कि उलटी देने बाद छः दिनके उपरांत तीन दिन रोगीको स्निग्ध करना पीछे तीन दिन पसीना निकालना, तीन दिन हलका लघु भोजन देके सोलहवें दिन जुलाब देना ऐसा मत है.

जुलाब देनेके योग्य आदमी ।

पित्तविकारवाला, आमवातवाला, उदररोगी, आध्मानबादी, बद्धकोष्ठवाला, जीर्णज्वरवाला इनको तथा विषरोगी, वातरक्त, भगंदर, अर्श, पांडुरोग, उदर, ग्रंथिरोग, हृदयरोग, अरोचक, परमा, योनिरोग, गुल्म, प्लीहा, व्रणरोग, विद्रधि, उलटी, विस्फोट, विषूची, कुष्ठ, कर्णरोग, नासारोग, मस्तकरोग, मुखरोग, गुदारोग, गर्मी, लिंगरोग, यकृत, सूजा, नेत्ररोग, कृमिरोग, सोमलादि विषका विकार, वातरोग, शूलरोग और मूत्राघात इनरोगोंमेंसे कोई रोग हो तो उसको जुलाब अवश्य देना चाहिये.

जुलाबके अयोग्य रोगी ।

बालक, वृद्ध, अतिस्निग्ध, उरःक्षतवाला, क्षीण आदमी, भ्रमयुक्त, श्रमी, तृषित, स्थूल, गर्भिणी, नवज्वरी, नूतनप्रसूती, मंदाग्निवाला, नसा किये, शल्यरोगी और निस्तेज इन आदमियोंको कभी जुलाब देना नहीं.

तीन तरहके कोठे और उनकी दवाइयां।

१जिसका कोठा पित्तसे युक्त है सो कोठा हलका होता है,उसे हलका ही जुलाब देनेसे जल्दीलगता है२और जिसके कोठेमें कफ विशेष रहता है वह मध्यम कोठा होताहै ऐसा जानना,उसे मध्यम दवासे जुलाब जल्दी होता है और जिसके कोठेमें बादी प्रबलहै सो भारीकोठा है उसे जुलाब जल्दी नहीं होता.उसका विचार कहते हैंः-प्रथम हलके कोठेवालेको दाख, दूध,अरंडीका तेल,सोनामक्खी, गुलाबकी कली और हरड इनका जुलाब देना. मध्यम कोठावालेको निसोत, कुटकी और किरमालाकी फलीका मगज इनका जुलाब देना और भारी कोठावालेको थूहरका दूध, हेमक्षीरी, पिसोलाकी जड, कांटेधतूरा, जमालगोटा, कँवडलकी जड, इंद्रायणीकी जड, बालहर्डा, सोनामक्खी आदिका जुलाब देना चाहिये.

जुलाबके भेद।

१ आदमीको तीस वेग होनेके बाद आम कफ पड़े तो उत्तम जुलाब हुआ समझ लेना। २ दश वेग होने बाद कफ पड़े तो मध्यम जुलाब हुआ जानना,बीस वेग होनेके बाद कफ पडे तो खराब जुलाब हुआ जानना.

जुलाबकी दवा देनेका प्रमाण और अनुपान।

जुलाब होनेको काढा दिया जावे तो दो पल देना उत्तम है. एक पल प्रमाण देना सो मध्यम मात्रा और आधा पल देना सो कनिष्ठ मात्रा जानना। पित्त अधिक हो तो निशोतका चूर्ण द्राक्षाके काढ़ेमें व गुलकंदमें देना व गुलाबका फूल बड़ी सौंफ और सोनामक्खी इनका काढ़ा देना। कफप्रकोप हो तो त्रिफलाके काढ़ेमें गोमूत्र और त्रिकटुका चूर्ण डालके लेना और बादी प्रबल हो तो निसोत, सैंधव, सोंठ व नींबका रस ये मिलाके देना चाहिये. अथवा त्रिफलाके काढ़ामें अरंडका तेल डालके देना तो भी जुलाब होगा।

छः ऋतुके छः जुलाब।

शरदऋतुमें निशोत,धमासा,नागरमोथा, सफेदचंदन और जेठमध इनका चूर्ण द्राक्षाके रसमें मिलाके देना.हेमंत ऋतुमें निसोत, चित्रक,पहाड़मूल,

जीरा, देवदार, बालछड़, कांटेधतूराका चूर्ण करके गरम पानीसे देना, जिससे जुलाब होगा. शिशिर ऋतुमें और वसंत ऋतुमें पीपली, सोंठ, सैंधव, बरधारा व निशोत इनका चूर्ण शहदके साथ देनेसे जुलाब होता है. ग्रीष्मऋतुमें निशोतका चूर्ण शक्करसे देना।

अभयादि मोदक।

हर्र, मिर्च, सोंठ, बायबिडंग, आंवला, पिपली, पीपलमूल, दालचीनी, तमालपत्र और नागरमोथा ये दश दवा समभाग, दंतीमूल तीन भाग, निशोथ आठ भाग, शक्कर छः भाग इसमाफिक भाग लेके सबका चूर्ण करके शहतमें मिलाके एक कर्षकी गोली वांधना और प्रातःसमय एक २ गोली लेना, ऊपरसे ठंढा पानी पीना जिससे जुलाब होगा। जहांतक हो सके गर्म पदार्थ वर्ज्य करना और पान, आहार, विहार, श्रम सदा करना, उससे विषमज्वर, अग्निमन्द, पांडुरोग, खांसी, भंगदर, कोढ़, गुल्म, अर्श, गलगंड, भ्रम, उदर, विदाह, तिल्ली, परमा, राजयक्ष्मा, नेत्ररोग, वातरोग, पेट फूलना, मूत्रकृच्छ्र और अश्मरी रोग तथा पीठ, पार्श्व, कमर, जांघ, पींव्या, पेट इनकी सब पीडा दूर होती है, इस दवाका नाम अभयादिमोदक है. इसका जो निरंतर सेवन करेगा उसका वलीपलित रोग जाके पीछे सफेद केशका काला केश होगा. यह उत्तम दवा है, ऐसा जानना।

आदमीको जुलाब देने बाद नेत्रपर ठंढे पानीका हाथ फिराके सुगंध अतर अरगजादिककी सुवास लेना, तांबूल खाना, जिससे अच्छा जुलाब होगा। जुलाब होने बाद हवामें बैठना नहीं, मलमूत्रका वेग बंद नहीं करना, निद्रा नहीं लेना, ठंढा पानीका स्पर्श करना नहीं, थोड़ा गरम पानी बारंबार पीना अथवा जुलाबमें न्यूनता रही तो आदमीकी नाभिमें शब्द होता है, कोखमें शूल, कोठेमें वादी, शरीरमें कंडू व मंडल ये पैदा होना, बदन भारी दाह, अरुचि, पेट फूलना, भ्रम उलटी ये विकार होते हैं जिसे जुलाब नहीं हो उसे किरमालाकी फलीका मगज बड़ीसौंफ बालहर्र और सोंठ इनका पचन देके कोठा नरम करना बाद स्नेह पिलाके पीछे जुलाब देना जिससे सब

उपद्रव जाकर तबीयत साफ होगी. शायद किसी आदमीके जुलाब ज्यादा लगे तो ऐसे उपद्रव होते हैं कि मूर्छा, गुदामें पीड़ा, शूल, कफ पड़ना, शहदके रंगके समान ऐसा खून पड़ना, ज्यादा जुलाब हो तो ठंढे पानीसे स्नान कराना व चावलके पानीमें शहद डालके पिलाना. उसके बाद हलकी उलटी देना जिससे बंद होगा व आंबकी छाल गायके दहीमें पीसके नाभिपर लेप देना, उससे जुलाब बंद होगा व बकरीका दूध पिलाना उससे भी जुलाब बंद होगा व साठी चावलका भात पकाकर उसमें घी डालके खाना व खिचड़ी खाना व अनार खिलाना व सौवीर देना.

सौवीर बनानेकी विधि ।

कच्चे वा भुने हुए जव पीसके उनमें पानी डालके तीन दिन ढकके रखना उसे सौवीर कहते हैं. इसी माफिक गेहूँका भी करना.

कांजीकी विधि ।

माटीका पात्रलेके उसके अन्दर सरसोंका तेल लगाके उसमें निर्मल पानी भरके राई, जीरा, सैंधव, हींग, सोंठ और हलदी इन छः दवाइयों का चूर्ण, चावल और कुलथी अलग २ पकाकर उनका पानी ये सब इस पात्रमें डालना. थोड़ा बांसका पत्ता और उड़दके पत्ता दश बीस उसमें डालना ये सब घीसे भुने हुए डाले बाद तीन दिन मुख बंद करके रखना, उसे कांजी कहते हैं. जहां २ कांजीका काम पड़े वहाँ २ यही कांजी काममें लाना.

जुलाबके गुण ।

जुलाब अच्छा होनेसे आदमीका दिल प्रसन्न और देह हलका होता है. वात साफ होनेसे जानना कि जुलाब साफ हुआ है. उससे इंद्रियोंको बल, बुद्धि व जठराग्नि प्रदीप्त होकर धातु वयःस्थापन होता है.

जुलाबका पथ्य ।

साठी चावल, मूंगकी खिचड़ी और जांगल मांसरस येलेना, दिनको नहीं सोना, तेल नहीं लगाना, मैथुन नहीं करना ।

नाराच रस ।

पारा, सुहागा व मिर्च समभाग, इनके समान गंधक, सोंठ तीन भाग, और शुद्ध जमालगोटा नौ भाग इनको खरलमें डालके दो पहर खरल करके पानरसमें पकाना. यह नाराचरस एक गुंजा शक्करमें डालके देना. ऊपरसे ठंढा पानी पिलाना जिससे जुलाब होगा. गरम पानी पीनेसे बंद होगा, खानेको दही चावल देना.

दूसरा नाराच रस ।

जमालगोटा, पारा, त्रिकटु, टांकनखार और गंधक ये सब दवाइयां समभाग लेके खरल करना, यह छः गुंजा शक्कर घृतसे देना. ऊपरसे ठंढा जल पीना; जिससे मैलसंग्रह, अनाहवात, आमशूल व विषमज्वर ये जुलाबसे ही दूर होजाते हैं.

इच्छाभेदी रस ।

सोंठ, मिर्च, पारा, सुहागा व गंधक ये समभाग और जमालगोटा तीन भाग डालके खरल करना, जिससे इच्छाभेदी रस होता है. यह एक वाल शक्करसे देना, ऊपर दो घूंट पानी पीना; जिससे सुखसे जुलाब होके जैसे सिंह हाथीका नाश करता है वैसे सब रोगोंका नाश होता है इति जुलाबविधि समाप्त ॥

वस्तिविधिका अध्याय ।

बस्ति यानी पिचकारी. बस्ति दो प्रकारकी होती है एक अनुवासन बस्ति और दूसरी निरूहणबस्ति.जो घृत तेलके फोहे देते हैं उसे अनुवासन बस्ति कहते हैं और काढा दूध तैलादिकसे जो चुला (कुल्ला) मारते हैं उसे निरूहणबस्ति कहते हैं. एक मात्राबस्ति और दूसरी उत्तरबस्ति. ऐसे बस्तिके सब चार भेद हैं. बस्तिकी मात्रा दो पलसे लगाके एक पलतकदेना. कोढ, परमा व स्थूलउदरवाला ये तीनो आदमी अनुवासन बस्ति देनेके योग्य नहीं हैं और उन्माद, अजीर्ण, तृषा, शोक, मूर्च्छा, अरुचि, भय, श्वास और खांसी, क्षय इनसे पीडा जिसको है उसको आस्थाप्य यानी निरूहबस्ति देना. नानुवास्य यानी अनुवासनबस्ति देना नहीं,

नेत्र और गुदामें नलीसे (पिचकारीसे) दवा मारना चुह्ला देना. बस्ति देनेकी नली धातु आदिकी साफ करना. नली छः अंगुलकी, आठ अंगुलकी और बारा अंगुलकी ऐसे तीन प्रकारकी लेना। छः बरस तक ६ आंगुलकी, बारहबरसतक ८ आंगुलकी, बारह बरससे आगे बारा १२ आंगुलकी नली देना. छः आंगुलकी नलीका मुख मूंग बराबर हो, आठ आंगुलकीका मुख लाखके दाना बराबर और बारा अंगुल वालीका मुख बेरकी गुठली बराबर हो । नली चिकनी गाईके स्तनसरीखी हो । यहाँ बस्तिक्रम समाप्त करता हूं क्योंकि ग्रन्थसंग्रहमें बस्तिका क्रम लिखा है, वैद्य लोग तो इसका थोड़ाही उपयोग करते हैं और डाक्टर ज्यादा करते हैं. ग्रन्थविस्तार न हो इसवास्ते यह साधारण लिखा है, बस्तिके लिये घृतादि वा तैलादि दोष बल देखके सिद्ध करके बस्तीमें योजना चाहिये ॥

नस्य (नाकमें सूंघने) का प्रयोग ।

नाकसे सूंघनेकी दवाको नस्य कहते हैं. उस नासके दो भेद हैं, एक नावन और दूसरा नस्यकर्म। उसमें दो भेद हैं एक रेचन और एक स्नेहन. उसमेंसे रेचन नस्य वातादिक दोषोंका छेदन करता है और स्नेहन नस्य धातुवर्द्धक है ऐसा जानना.

नस्यके देनेका काल ।

कफ नाश करनेके वास्ते नास बड़े फजिर सुंघाना, पित्तनाशके वास्ते दुपहरके वक्त सुंघाना और वातनाशकेवास्ते सांझके वक्त सुंघाना, रोगका ज्यादा जोर हो तो रातमें संघाना ॥

नस्यका निषेध ।

भोजन किये बाद और बे बख्त नहीं देना. लंघन किये, नवा पीनस रोगी, गर्भिणी, विषदोषी, अजीर्णरोगी, बस्ति दिये, स्नेह पिये, शहद, पानी पिये, दारू पिये, क्रोध किये, शोकवाला, प्यासवाला, वृद्ध, बालक, वातमूत्र व मल इनका रोध करनेवाला और स्नान किये अथवा करने जाता है सो इनको नास देना मना है ऐसा जानना तथा आठ वर्षके बालकको और अस्सी वर्षके उपरांत बूढ़े आदमीको नाश देना

रेचन नस्यका विधान ।

रेचनके वास्ते नाश देना सो राई आदिका तीक्ष्ण तेल निकालके नाकमें डालना. अथवा तीक्ष्ण दवाइयोंसे सिद्ध किया तेल नाकमें डालना. अथवा तीक्ष्ण दवाइयोंके रससे अथवा काढ़ेसे सिद्ध किया स्नेह नाकमें डालना. रेचनके वास्ते नाकमें दोनों छिद्रोंमें दवाके आठ बूँद डालना यह उत्तम मात्रा है; छः बूँद डाले सो मध्यम मात्रा है और चार बूँद डाले सो कनिष्ठ मात्रा जानना. ऐसा शास्त्रोंका प्रमाण है। तीक्ष्ण दवा पीसके उसके बिंदु नाकमें डालते हैं उसको अवपीड कहते हैं और छः अंगुल प्रमाण सीधी नली लेके उसमें तीखी दवाकी नास भरके फूंकसे नाकमें डालना उसे प्रधमन कहते हैं. यह नास एक कोल तक फूंकना.

रेचन और स्नेहन नस्यके योग्य रोगी ।

उदररोग, जत्रुगत रोग, कफसे स्वरभंग, अरुचि, जुखाम, मस्तकशूल, पीनस, सूजन, अपस्मार और कोढ़ इन रोगोंको रेचक नास फायदा करनेवाली है सो देना. डरनेवाला वा कृश हो तो उसको स्निग्ध स्नेहसे योग्य नास देना; गलरोग, सन्निपात, बहुत निद्रा, विषम ज्वर, मनोविकार और कृमीरोग इनको अवपीडन नास देना और मूर्च्छा, अपस्मारादिक, ज्ञाननष्ट और तंद्रा रोगवालेको अतितीक्ष्ण दवा प्रधमनसे नास देना. रेचन दवा सोंठ गरम जलमें घिसके उसमें गुड़ डालके नाकमें सुंघाना, अथवा पीपली व सैंधव गर्म जलमें घिसके सुंघाना जिससे नेत्र, कर्ण, मस्तक, हनू, गला, गर्दन, भुजा और पीठकी पीडा दूर हो जायगी.

रेचन नास ।

महुआकी लकडीका गर्भ, पीपली, बच, मिर्च, सैंधव इन चीजोंको गरम पानीमें घिसके नाश देना, जिससे मृगी, उन्माद, सन्निपात, अपतंत्र वात, उपद्रवसहित ज्ञाननष्टता ये सब दूर होके आदमी जल्दी होशियार होगा ।

तीसरा प्रकार ।

सैंधव, सहिंजनका बीज, सफेद राई और कुष्ठ ये दवाइयां बकरेके मूत्रमें पीसके नास देना; जिससे ऊपर लिखे हुए सब रोग और तंद्रा ये दूर होते हैं.

प्रधमन नस्य ।

सैंधव, बच, मिर्च, पीपली, सोंठ, कंकोल, लहसुन, गूगल, कट्फल इनका चूर्ण करके रोहित नामकी मच्छीका पित्त घोटके सुखा लेना वह नलीमें भरके नाकमें फूंकना जिससे पहले लिखे हुए सब रोग मिट जाके सुख होगा, इसीको प्रधमन नस्य कहते हैं.

बृंहणनस्यकी कल्पना ।

धातुवृद्धि करनेकी नासकी कल्पना दो तरहकी है उनमेंसे एक मर्श और दूसरा प्रतिमर्श है। स्नेहको योग्य जानना चाहिये, उसमें मर्श नासकी तर्पण मात्रा जानना. वह मात्रा आठ शाण प्रमाणकी मुख्य है और चार शाणकी मध्यम और एकशाणकी हीनमात्रा जानना चाहिये, वह मात्रा दोष और बलको देखके वस्त्रादिककी पट्टी बांधके एक नाकमें दो दफे डालना और तीन दफे व एक दिन आड व दो दिन आड व तीन दिनसे व पांच दिनसे सात दिनोंसे डालना (बृंहणनास विषे योग्य) मस्तकरोग, नासारोग, नेत्ररोग, सूर्यावर्त, आधाशीशी, दंतवालारोगी, दुबल, गर्दन, कंधा, बाहु, मुखशोष, कर्णनाद, बादी, पित्तसम्बन्धीरोग, पलितरोग, मस्तकरोग, केशरोग, इंद्रलुप्तरोग, इन सब रोगोंमें घी आदि स्निग्ध चीजों व शक्कर आदि मधुर चीजोंकी नास देना ॥ १४ ॥ (पक्षवातपर नास) उडद, कवचके बीज, रास्ना, चीकनमूल, एरंड मूली, रोईसा, असगंध इन सब सात दवाइयोंका काढ़ा करके उस काढ़ामें भुनी हींग और सैंधव डालके शीतोष्ण काढ़ाकी नास देना जिससे कंपसहित आधा अंगका वायु, अधीतवायु, मन्यास्तंभवायु, अपबाहुक वायु ये सब रोग इससे दूर हो जावेंगे. (प्रतिमर्श नाशका प्रमान) घृत आदि जो स्नेह देना तो दो बिंदु देना सो एक नाकमें दो बिंदु देना, वह बिंदु तर्जनी अंगुली घृतादिकमें डुबाके लगाना, जो वह बूंद टपकता है उसको बिंदु कहते हैं। आठ बूंदको एक शाण कहते हैं, वह शाणमात्रा मर्श नासका प्रमाण है सो देना और प्रतिमर्श नासका हो तो बिंदुकी मात्रा देना ऐसा दोनोंमें भेद है (प्रतिमर्श नाशके वक्त १४ हैं सो इस माफिक हैं)

प्रातःकाल मुख धोनेके बाद, घरसे बाहर जानेके वक्त, श्रमके बाद, रास्ता चलके आनेके बाद, मैथुनके अंतमें, मल मूत्र त्यागनेके बाद, नेत्रमें अंजन करनेके बाद, भोजन करनेके बाद, दिनको सोके उठनेके बाद, उलटीके अंतमें, सामको इन समयोंमें प्रतिमर्श नास सूँघाना चाहिये, जब प्रतिमर्श नास सूँघनेसे आदमी तृप्त होता है तो अल्प छींक आके वह स्नेह मुखमें उतरता है सो मुंहके भीतर न जाने पावे, उसको थूक देना तब जान लेना कि नाससे तृप्त हुआ(अकालमें सफेद केश होजावें उसको काला होनेका नास कहते हैं) बहेड़ा, कटु नींब, शिवण, हरड, भोंवरी, कावलीके अंदरके बीजोंका तेल जुदा जुदा काढ़ना और एक एकका जुदा जुदा नास देना, जिससे अंदरसे केश भँवरेके समान काले होजावें. नास देनेका स्थान अच्छा हो, जहां गर्दा न उड़े इस प्रकार मुख धोके खराब कफ निकालके गला शिर साफ करके खाटपै सुलाके शिर नीचे करके हाथ पांव लंबा करके नेत्रपै कपड़ा डालके वैद्य अपने हाथसे नाक सीधी करके एक धार बांधके नास डाले. सीपसे अथवा सुवर्णके बर्तनसे डालना तथा कपड़ेकी पोटलीसे डालना, नास डालनेके बाद, शिर कँपाना, गुस्सा करना, किसीसे बोलना, खाना पीना, हँसना वर्जित है जो मनुष्य इस आचारसे नहीं रहेगा तो नाकमें दिया हुआ नास शिरमें नहीं जावेगा और उससे पीडा होगी। नास देनेसे शुद्धि होनेका लक्षण उस नाससे मस्तक और शरीरका हलका होना, मनकी शुद्धि तथा मुख, नाक, कान, गुदा आदिकी शुद्धि होके शिररोगकी शांति होती है, नेत्रकी तृप्ति होती है, देहमें कंडू, चिकनापना, सब इंद्रियोंकी ग्लानि, शिरका सेद, नाकद्वारासे बाहर गिरना, बादीका उपद्रव होना, इंद्रियोंका श्रम, मस्तक शून्य ऐसे उपद्रव हो तो कफवातहारक नास देना। अच्छा शुद्ध होनेके बाद गायके घीका नास देना जिससे तबीयत साफ होगी (नासमें पथ्य) दही आदि कफकारक चीजें मना हैं. (पंचकर्म) वमन, रेचन, नस्य, निरूणबस्ति, अनुवासनबस्ति इनको पञ्चकर्म कहते हैं, इन पांचोंको समाप्त करके अगाडी धूम्रपानकी विधि कहता हूं.

धूम्रपानका वर्णन ।

धूम्र नामक दवाकी विधि छः प्रकारकी है । उनके नाम ये हैं १बृंहण, २ रेचन, ३ कासघ्न, ४ वमन, ५ व्रणधूपन, ६ शमन इसके अनुसार छः प्रकारका जानना चाहिये, शमन धूम्र दो प्रकारका है एक मध्य और दूसरा प्रयोगिक । बृंहणधूमके भेद दो हैं एक स्नेहऔर दूसरा मृदु। रेचन धूमके दो भेद हैं एक शोधन दूसरा तीक्ष्ण। धूम्रवर्ज्यमनुष्य-धनवान् १, डरनेवाला २, बहुत दुःखी ३, बस्ति प्रयोग वाला ४, जिसने जुलाब लिया हो५,रात्रिमें जागनेवाला६, तृषातुर ७, दाहयुक्त८, तालुशोषी९, उदररोगी१०, शिर११, ज्वर१२,तिमिररोग,१३उलटीवाला १४, पेट फूलनेवाला १५, उरःक्षती१६,प्रमेह१७, पांडुरोग १८, गर्भिणी, क्षीण १९, दूध २०, घी २१, दारू आदि नसा पिया २२, मांस खाने वाला २३, बालक २४, वृद्ध२५, दुर्बल२६ इन छब्बीस मनुष्योंको धूम्र-पान मना है। (धूम्रसे उपद्रव हो तो उसका इलाज) घी पिलाना, नास देना,नेत्रोंमें अंजन डालना, तृप्त करना, द्राक्षामंड, गन्नेका रस, दूध,शक्कर, मधुर खट्टा मनको प्रिय ऐसी चीजें देना जिससे समाधान हो । (सेवन काल) धूम्रका सेवन करनेवाला बारा बरसके अंदरवाले और अस्सी बर-सके ऊपरवाले मनुष्योंको देना नहीं, यदि धूम्रकी अच्छी योजना हुई तो श्वास, खांसी, जुखास, गर्दन, ठोड़ी,मस्तकमें वात कफसंबंधी विकार दूर होते हैं और इंद्रियां प्रसन्न होती हैं । धूम्रपानकी नली आदिकी विधि इस प्रकार है कि नलीमें तीन पेच हों और कनिष्ठिका अंगुलके माफिक जाडी हो, उसका छेद एक लोबियाका दाना अंदरसे निकले ऐसा हो, वह नली शमन नामका धुवाँकी चालीस४० अंगुल लंबी चाहिये और मृदुनामक धुवाँको नली बत्तीस अंगुल लंबी होना चाहिये, (कासघ्न) नामक धुवाँको नली सोला १६ अंगुल चाहिये, (वमनीय) नामक धुवाँकी नली १० दस अंगुलकी होनी चाहिये और व्रणके धूपन धुवाँकी दश अंगुलकी नली लेना, उस नलीका मुख जीरेके दानामें जितना छेद होता है उस माफिक प्रमाण शास्त्रोंमें लिखा है. बाकी हाड्याबरण गंभीर नासूरको धुवाँ देना सो संपुटमें अंगार बंद करके उसपै दवा डालके देना और संपुटके छिद्र पाडके उसमें नली बैठाके उस नलीसे धुवाँ देना,नासूरको दांत आदिकोंका

तथा व्रणको हकीम लोगकी तरकीबसे दवा देना और कोई वनस्पति रूई (मदार)की लकड़ीमें दवा भरके उससे भी धुवाँ देतेहैं और कोई चिलमहुक्कामें धुवाँ देतेहैं और कोई वत्तीसे धुवाँ देतेहैं, शमन संक्षेप धुवाँको एलादिक दवाका कल्क डालके धुवाँ देते हैं (मृदु संक्षेप धुवाँको) घी आदिक स्नेहमें शिलारस डालके धुवाँ देना. रेचन संक्षेप धुवाँमें सिरसों, राई आदिक दवाका कल्क देना और (कासघ्न) धुवाँमें रिंगणी, मिरी आदिक दवाका कल्क कर देना चाहिये, उलटीके धुवाँको स्नायुकी चमड़ी इनका कल्ककर देना और व्रण धुवाँमें निंब, वच आदिका कल्क कर देना, इस माफिक धुवाँकी कल्पना करके देना (बालग्रहादिकपीडानिवारण धुवाँ) उसमें मोरशिखा, मोरपंख, नींवका पत्ता, रिंगणीफल, मिर्च, हींग, जटामांसी, कपासका बीज, बकराका केश, सांपकी केचुलि, बिल्लीकी विष्ठा, हाथीका दांत इन ग्यारा चीजोंका चूर्ण करके उसमें थोड़ा घी डालके मिलाना, उस चूर्णका धुवाँ घरमें देनेसे संपूर्ण बालग्रह तथा पिशाच, भूत, सब दूर होके सब ज्वरका विनाश होगा, इसका मयूरधूप नाम है. (जो रोग रेचन और नस्यसे नाश होते हैं) व्रणतथा कोढ, उपदंश, हाडचाव्रण आदिक सब रोग इस धूपके सेवनसे अच्छे होते हैं और सब इन्द्रियां प्रसन्न होती हैं. इति धूम्रक्रिया समाप्ता.

गंडूष, कवलप्रति सारणकी विधि।

गंडूष ४ प्रकारके हैं-१ स्नेहन, २ शमन, ३ शोधन, ४ रोपण। ४। यह ४ भेद गंडूषके यानी मुखमें कुल्ला करना, मुखमें पदार्थ पकड़के डालना, जिसे कवल कहते हैं। स्निग्ध तथा उष्ण पदार्थसे कुल्ला करना, सो स्नेहन तथा गंडूष जानना, वह बादी होनेपर देना २ मधुर शीतल पदार्थका कुल्ला पित्त वालेको देना। ३ तीखा, खट्टा, खारा, उष्ण इन पदार्थोंसे शोधन गंडूष कफको देना। ४ तुरट, कडु, मधुर ये पदार्थ रोपण गंडूष व्रणरोगको देना, इसमाफिक ४ प्रकार हैं। काढ़ा आदिके कुल्लोंमें दवाका चूर्ण १ कोलके प्रमाण डालना, कवलमें कल्क कर्ष प्रमाण डालना और ये कुल्ला पांच बरसके बाद करना और आदमीका स्वस्थ चित्त करके बैठाके मुखादिक रोग दूर होनेको मुखमें कुल्ला दवाका भरना सो कपालमें

पसीना आयेतक रखना.तीन और पांच और सात कुल्ले करना और दोष जबतक दूर न हो तब तक कुल्ला करना और मुखमें कफ आनेतक रोग छेदेतक नेत्र व नाकको पानी आनेतक कुल्ला करना और तिलोंका कल्क पानी, दूध, तेल आदि स्नेह चीजें स्नेह गंडूषमें डालना, वह वादीके काममें आवेगा और तिल, नीला कमल,घी,शक्कर,दूध इन सब चीजोंको एकत्र करके उसमें सहत डालके कुल्ला करे तो पित्तको फायदा करेगा ॥२॥ और सहतका गंडूष करनेसे मुखका व्रण अच्छा होता है और दाह, तृषा, मुखकी सफाई और भोजनकी रुचि आती है. (गुण) गंडूष यानी कुल्ला करनेसे व्याधिनाश होके तुष्टि, स्वच्छता,मुखको हलकापना, सर्व इंद्रियाँ प्रसन्न होकर रुचि, शोष, मुखरोग, व्रण, तृषा,दातोंका रोग ये सब नाश करके शरीरको निर्मल करता है और बादी आदि रोगोंको नाश करनेवाली दवाको मुखमें पकड़के थोड़ी देर चाबके थूकते जाना,लार गिराना जिससे सब बीमारियां जाती हैं; सो दवा मुखादिक रोगस्थानपै लिखी जावेगी. (प्रतिसारण)यानी दांत, जीभ, मसोडा,मुखमें जो दवाका चूर्ण व चाटन लगाता है उसे प्रतिसारण कहते हैं, वह प्रतिसारण करनेसे कडुआपना, दुर्गंधता, शोष, तृषा,अरुचि दातोंका रोग ये सब रोग दूर होजाते हैं और सोमलादिक विषोंकी बीमारीको, अग्निदग्ध आदिको घी तथा दूधका गंडूष यानी (कुल्ला) देना, जिससे फायदा होगा. और दांत हलें तो तिलोंका तेल, सैंधवलोनका गंडूष देना, फायदा होगा और मुखरोग, अरुचि, शोषरोगको कांजीका गंडूष देना और कफको कुल्ला त्रिकटु, राई इन सबके चूर्ण आदिके रसमें यानी(कुल्ला)रसमें मिलाकेगंडूष सैंधवलोन करना और कफ रक्तपै त्रिफलाका चूर्ण सहतमें मिलाके गंडूष देना और मुख पकनेपर दारुहलदी,गलोय, त्रिफला, दाख, चमेलीका पत्ता, धमासा इनके समभाग काढ़ेमें सहत डालके ठंढा करके गंडूष देना और जिस दवाका गंडूष देना कराना (कुल्ला) प्रतिसारण देना ऐसा ग्रंथोंका आधार है,अरुचि होनेपर प्रतिसारण बिजोराकी केशरमें सैंधवलोन, मिर्च, सोंठ, पीपला, इनको पीसके कल्क मुखमें रखनेसे कफ वात नाश होके अरुचि जावेगी(कल्क आंवलेका चूर्ण ये तीनों भेदका प्रतिसारण)

कुष्ठ, दारुहलदी, धायके फूल, कुटकी, हलदी, तेजपात, नागरमोथा, लोध पाडमूल, इनके चूर्ण को जीभ और दंतमें घिसना जिससे रक्त पड़ना, बंद हो कर सब मुखरोग जावेंगे।

रक्त निकालनेकी विधि।

आदमीके शरीरमें कुष्ठादिक रोग रक्त बिगड़नेसे पैदा होते हैं उसका रक्त काढ़ना, वह शक्ति देखकर एक प्रस्थ, आधा प्रस्थ व पाव प्रस्थ-तक निकलाना, शिखामेंसे रक्त निकालनेसे त्वचा संबंधी रोग, व्रण, सूजन, ग्रन्थी, आदिरोग अच्छे होते हैं, इसवास्ते शरदृतुमें अवश्य करके खून कढ़वाना (रूप) रक्त रससे गौर होना वरन लाल गुणसे जड़, मंद, उष्ण चिकना, असगंधी इसमाफिक होकर स्वभाव गुण पित्तके सरीखा होता है, उस रक्तमें पांचभूतोंके पांच गुण होते हैं जैसे कि गंध पृथ्वीका, पतलापना पानीका गुण, लाल अग्निका गुण, चपलता वायुका गुण, लीनता आकाशका गुण, इस माफिक पांचोंका गुण जानना. (दुष्ट रक्तका लक्षण) शरीरमें वेदना, बदनमें जकड़ापन, दाह, मंडल, खाज, सूजन फोड़ आना, दाद, गजकर्णादिक रोग होते हैं और रक्तवृद्धि हो तो शरीरमें नेत्र लाल होना, धमनी, शिरा फूलना, गात्र जड़ होना, निद्रा कम, दाहविकार होता है और रक्त क्षीण इस माफिक हुआ तो खट्टी, मीठी, चीजोंपर इच्छा होती है, मूर्छा, रूक्षता, शिर शीतल, वात, ऊर्ध्वगत होता है। वातसे रक्त दुष्ट हो तो रक्त अरुणवर्ण, फेनयुक्त, रूक्ष, कर्कश, हलका, शीघ्र गमन, ऐसा होके शरीरमें टोचनेकी तरह पीड़ा होती है और पित्तसे रक्त दुष्ट हुआ तो खून पीला, हरा, काला, आमगंध, ऊष्ण, चचंलता रहित होके मक्खी आदि जनावर डसेगा नहीं और कफसे रक्त दुष्ट हुआ तो स्पर्श मालूम ज्यादा होगा, स्निग्ध होगा तो गेरूकासा रंग होके बोटी दुखताहै। और दो २ दोषोंका लक्षण होगा और सब लक्षणसे त्रिदोष, रक्तदुष्ट समझना चाहिये. उसको पीपका ऐसा दुर्गंध आके कांजीका ऐसा रंग हो जाता है और ज्यादा बिगड़नेसे नाकमेंसे रक्त गिरके अनेक प्रकारका रंग हो जाता है (अच्छा रक्त हो उसका रंग) श्रावणमें आषाढ़म कीड़ा पड़ता है उसे बीरबहूटी कहते हैं, उसको श्रावणकी डोक-

री भी कहतेहैं, उसकेरंगसे युक्त रक्त रंगका होसो उमदा समझना चाहिये, मलरहित लाल शुद्ध रक्त कहलाता है (रक्त काढ़नेके योग्य) दाह, सूजन, अङ्गपाक, शरीर रक्तवर्ण, नाकसे रक्त पड़े तो वातरक्तवाला कोढ़ जानना.पानीरोग, श्लीपद, विषदुष्ट, रक्तग्रन्थि, अर्बुद, गुंडमाला, अपचीरोग,क्षुद्र,रक्ताधिमंथरोग, बिदारीरोग, स्तनरोग,गात्रको शीतलता,जड़ता, रक्ताभिष्यंद,नेत्ररोग, नेत्रपर झांपड़, दुर्गंधयुक्त नाकरोग,मुख, देह, कालखंडरोग, (कलेजाके सीधे बाजूमें रहता है)कवल, विसर्प, विद्रधि,बदनमें फुनसियां आती हों तो कान, ओठ, नाक, मुख, पके हों तोदाह, मस्तकपीड़ा, उपदंश, रक्तपित्त इन सब रोगोंमें रक्त काढ़ना चाहिये सो आदमी ऊपर लिखे अनुसार रक्त काढ़ने योग्य हो तो उसका रक्त तुमड़ी (शींगड़ी), जोकोंसे तथा शिरावेध यानी फस्द खुलाके रक्त निकाल लेना (रक्त काढ़नेको अयोग्य)कृश,गर्भिणी स्त्री, अतभोगी, नपुंसक, डरनेवाला, प्रसूता, पांडुरोग, पंचकर्मसे शुद्ध किया, अर्शरोगी, सूजनवाला,उदररोगी, श्वास, खांसी, उबकाई, अतिसार, १६ बरसके अन्दरवाला, ७० बरसके उपरांतवाला ऐसे रोगियोंका खून नहीं निकालना अथवा जरूर होतोजोकोंसे निकलवाना ऐसा समझके खून काढ़ना चाहिये, खून काढ़ना सो ऐसे कि जोंक एक हाथ दूरतकका खून निकालती है १ शींगसे खून १२ अंगुलतक निकलेगा। २ और तुमडी १२ अंगुल तकका खून काढ़ती हैं ३ और फासणी मारेसे एक अंगुल प्रमाणका खून काढ़ती है।४और शिरा सब शरीरका खून काढ़ती है ऐसा प्रमाण जानना, (जिसके शरीरका खून साफ नहीं निकला हो उसका इलाज)शीतकाल, उपास किया, मूर्छा, तंद्रा, डर, श्रम व मलमूत्र साफ नहीं हुआ हो ऐसे आदमीका खून साफ नहीं काढ़ना, शरीरमें रक्त नहीं निकले तो कुष्ठ, चित्रक, सेंधवलोन ये तीनोंका चूर्ण करके व्रणपर मलना जिससे साफ खून बहेगा, (रक्त बंद होनेका इलाज) लोध, राल, रसांजन, इनका चूर्ण करे और जव गेहूँका चूर्ण व धावडा,धमासा,गेरू, इनका चूर्ण व सांपकी केचुलिका चूर्ण व रेशमके चिथड़ोंकी राख, इनमेंसे जोहाजिर हो सोव्रणपर चिमटीसे दबाके ऊपरसे चंदनादिक शीतल चीजोंका लेप करना,खून बंद होगा अगरइससे बंद नहुआ

तो शिरके ऊपरमें छेद करना और शीतल लेप देना और दाग देना। जो आदमीके वांयें वृषणको सूजन आवे तो सीधे हाँथके अंगूठाकी शिरा दागना और सीधे वाजूका वृषण सूजा हो तो डावा हाँथका अंगूठा की शिरा दागना, जिससे अंडकी सूजन उतरेगी और मोड़सी हो तो लोहका खुरपा तथा दांतला तपाके, पांवके तलवेमें लोनका पानी लगाके उसपर गरम २ खुरपा फिराना तीन दफे फिरानेके वाद कपड़ा ओढ़ाके लोनके पानीमें वह लोहा डुवाके वफारा देके सुला देना, जिससे पसीना आकर मोडसी जावेगा और ज्वर आदि सर्व उपद्रव नाश होकर हाथ पांवकी ग्लानि मिटेगी और पेटमें प्लीहा व यकृत् हो तो उसके ऊपर दाग देना, जिससे वह साफ होता है और रक्त काढ़ना तो थोड़ा रखके काढ़ना, सव काढ़नेसे नुकसान होता है वह ऐसा कि अंधता, आक्षेपकवायु, श्वास, खांसी, हिचकी, दाह, पांडु ये रोग होकर प्राण लेता है सो थोड़ा खून निकालना और रक्तसे देहकी पैदा यश होती है, देहका आधार रक्तको समझना, रक्त विना जीव रहता नहीं इसवास्ते उचित है कि रक्तको बहुत संभालना चाहिये और रक्त काढ़के व्रणपर चंदनका लेप देना जिससे पित्तका समाधान होगा और वात अधिक हो तो घी लगाना और रक्त काढ़-नेसे आदमीको क्षीणता आयी हो तो हरिण, शशादिकका मांसरस व साठीके चावलकी खीर, मेंढा बकरा आदिका मांसरस, गायके घी दूध आदिका भोजन देना, जिससे रक्तवृद्धि होगी और अच्छा रक्त निकल-नेसे सब ऊपर लिखी हुई बीमारियां दूर होके देहका हलकापना होकर मन प्रसन्न रहता है.

रक्त निकाले बाद आदमीको पथ्य।

परिश्रम, मैथुन, क्रोध, ठंडे पानीका स्नान, हवा बहुत, एक धान्यका खाना, दिनका सोना, लोन, खारा, खट्टा, तीखा, ऐसा भोजन करना, शोक, बोलना बहुत, भोजन करना ये चीजोंके शक्ति आने विना मना है। रक्ताभिष्यन्दपर सेक-त्रिफला, जेष्ठीमद, लोध, शक्कर, भद्रमोथा ये सब दवा-इयाँ सम भाग लेकर ठंडेपानीमें पीसके उस पानीमें कपड़ा भिगोके नेत्रपर रखना और उस पानीकी धार नेत्रपर धरना, जिससे रक्ताभि-ष्यंद जावेगा और लोध व कपूरके पानीमें कपड़ा भिगोके नेत्रोंपर रखना

दोनोंकी पोटली नेत्रोंपर धरना, इस माफिक सेवन करनेसे नेत्ररोग नाश होगा. लाख, जेष्ठीमद, लोध, मंजिष्ठ, सफेद कमल, नागरमोथा, इनको थंडे पानीमें पीसके उस पानीकी धार नेत्रोंपर टपकानेसे रक्ताभिष्यंद जाके नेत्रोंकी गरमी साफ होगी व सफेद लोध घीमें भूनके गरम पानीमें पीसकर उस पानीकी धार नेत्रपर धरना जिससे नेत्रका शूल जायगा. बकरी व स्त्रीके दूधकी धार व बूंद छोड़ना भी फायदेमंद है.

अथ आश्च्योतन विधि।

काढ़े सहित स्नेह आदिका बिंदु दो अंगुलिसे नेत्रमें डाले उसका नाम आश्च्योतन है और ८ बिंदु डाले उसे लेखन कहते हैं और १० बिंदु डाले उसे स्नेहन कहते हैं और १२ बिंदु डाले उसे रोपण कहते हैं, वह बिंदु शीतोष्ण नेत्रोंको सहन होने माफिक डालना और गर्म दिनोंमें शीतल डालना, आदमीका नेत्र उघाड़के उसमें दवा डालना बाद १०० नाम गुरुका लेनेतक रखना। वाताभिष्यंदको पंचलघुमूल[1], रिंगणीमूल, एरंडमूल, सहँजनेके मूलकी छाल इनके काढ़ाका सहन होने माफिक आश्च्योतन देना, जिससे वाताभिष्यंद दूर होगा. रक्तपित्तसे अभिष्यंद हो तो कडूनींबके पत्ताको पीसके पानीमें उसका लेप लोधके साथ करना, उस लोधको अग्निपर भूनके उसको पीसके उसका रस निकालके उसका आश्च्योतन देनेसे वात, रक्त, पित्तका अभिष्यंद अच्छा होता है। त्रिफलाके काढ़का आश्च्योतन देना, जिससे वह सर्व जाति अभिष्यंद अच्छा होगा और स्त्रीके दूधका व बकरीके दूधका तथा गाईके दूधका व गाईके घीका व दूधकी मलाईका, इन पांचों चीजोंमेंसे कोई एक चीज हो उसका आश्च्योतन जुदा २ देना, यह एक २ के सेवन करनेसे सब जातिका अभिष्यंद दूर होगा और नेत्रोंको फायदा करेगा, (पिंडी बांधनेका नियम) ऐसा है कि, दवा पीसकर ऊपर लिखी हुई दवा गरम करके नेत्रोंपर बांधते हैं उसको पिंडी कहते हैं और पोटली भी कहते हैं, यह नेत्ररोगको बहुत फायदा करता है और मस्तकको तेल लगाके मालिश

---

१ बेलमूल, एरंडमूल, टेंटूमूल, पाटमूल, बेलमूल इनको पञ्चलघुमूल कहते हैं और बेल आदि पञ्चमूल कहते हैं।

करनेसे पसीना आवेगा और तीक्ष्ण दवाकी नस्य सुंघाके पिंडी बांधके दोष सम करने से फायदा होता है और हलदीका दाग गरम करके कनपटीपर लगाना और शिरा टोंचके खून निकालना, और दवा दूसरी कहेंगे सो ऊपर बांधना, वह दवा इस माफिक करना-१तमाखू, एरंडका पत्ता, छाल, मूल, एक जगा पीसके बांधना, वातअ-भिष्यंद जावेगा २ और पित्त अ-भिष्यंदपर आमलोंकी पिंडी बांधना, ३ बकायनके बीजोंकी पिंडी बांधना४ कफ अभिष्यंदपरशेवगाके पत्तोंकी पिंडी बांधना, ५ और नीबके पत्तोंकी पिंडी बांधना, ६ त्रिफलाकी पिंडी बांधना, ७ पोस्ताकी पिंडी बांधना, ८ लोधकी पिंडी कांजीमें पीसके घीमें गरम करके बांधना, रक्ताभिष्यंद दूर होता है ९ सोंठ, नींबका पत्ता, सेंधालोन पीसके गरम कर पिंडी बांधना, जिससे नेत्रोंकी सूजन और खाज दूर होगी १० (सब नेत्रोंके रोगपर लेप) १ ज्येष्ठीमध, गेरू, सेंधवलोन, काष्ठहलदी, कलखपरी, इन पांचो चीजोंको पानीमें पीसकर नेत्रोंके बाहरसे सब ठिकाने लेप देना जिससे सब अभिष्यंद जावेगा, २ रसांजनको पीसके लेप करना, ३ हरडा, सोंठ, तमालपत्र पानीमें पीसके लेपकरना, ४ गवारपाठेका मगज, चित्रकका पत्ता, एकत्र पीसकेलेपकरना ५ अनारके पत्ता पीसके लेप देना, ६ बच, हलदी, सोंठ पानीमें पीसके लेप देना, ७ सोंठ, गेरू पानीमें पीसके लेप देना ८ ये सब लेप नेत्रोंके बाहर बाजूपर करना, जिससे सब नेत्रोंका रोग जावेगा १ सैंधव लोन, लोध दोनोंको भूनके लेना उसमें मेण घी मिलाके खूब घोटना, उसका अंजन और लेप करना जिससे सब नेत्रोंकी पीडा तत्कालजाती है २ लोहाके पात्रमें निंबूका रस घोटके जाडा हो तब लेपदेना जिससे नेत्ररोग जावेगा ३ मिरी भांगराके रसमें पीसके लेप देना जिससे अर्मरोग व नेत्रोंका सब रोग जावेगा। अथ तर्पणविधि-इन रोगोंका तर्पण करना, रूक्षपना, सूखापना, टेढ़ापना, गँदलापना, पापन्योंके केश झडना सो तिमिर अर्जुन शुक्र फूल अभिष्यंद अधिमंथ शुक्राक्षिपाक सूजन, वातविपर्यय इन सब रोगोंको तर्पण करना जिससे फायदा होता है सो तर्पण कहता हूं सो करना। नेत्र पूर्ण होनेसे शोधन होके स्नेह बाहर निकलके आनेतक तर्पण करना वह नेत्रोंके चारों तरफसे उड़दोंके आटाकी पाल बांधके उसमें दूध आदिक तर्पण

भरना, बाद नेत्र मीचना, खोलना । जगह ऐसी हो कि जिस ठिकाने हवा नहीं रहे । तर्पणको १०० वक्त धोया घी व बकरीका दूध ऊपर लिखी दवाके काढा आदि भरना, वह नेत्रोंके पापण्याके रोगोंको १०० वार राम नाम लेने तक रखना, कफरोगसे नेत्रोंपर तर्पण ५०० वार नाम लेने तक रखना, नेत्रोंके सफेद भागपर रोग हो तो ६०० वार नाम लेने तक रखना, काला बुबलोंपर रोग हो तो ७०० वार नाम लेने तक रखना, दृष्टिमें रोग हो तो ८००वार नाम लेने तक रखना । अधिमंथरोग हो तो १०००वार नाम लेनेतकरखना । ७वातरोग हो तो १०००तक रखना ऐसा जानना, राम राम १०००नाम लेनेतक दवा नेत्रोंपर धारण करना, वह तर्पण एक दो या तीन दिनतक करनेका प्रमाण है, अथवा जरूर देखें तो पांच दिनतक करना । तृप्ति हुए नेत्रोंके लक्षणसे सुखसे निद्रा, सुखसे जागना, नेत्र निर्मल, नेत्रकी अच्छी कांति, नजर साफ, रोगोंका नाश, नेत्रका हलकापना ये लक्षण अच्छी तर्पणमें होते हैं सो जानना. (ज्यादा तर्पणका लक्षण)-नेत्र जड़, गँदले, अतिस्निग्ध, आंसू आना, खाज आना, चिकटपना, घर्षण, ठनक लगना ये लक्षण अति तर्पणके हैं । (हीन तर्पणका लक्षण) नेत्र झरना, सूजन, लाल रहना, चिकटपना, रूक्षपना, ठनका ऐसा लक्षण हीन तर्पणसे होता है. (पुटपाकविधि) हरिण आदिके मांस लेकर उनको घी आदि स्नेहमें मिलाके बारीक पीसके उसमें सूखी दवाइयाँ व गीली दवाइयां हों तो ऊपर लिखे प्रमाण उसमें मिलाना, उसका गोला बांधके उसको आंब, जाम्बुन, एरंड आदिका पत्ता लपेटके उसपर कपड़ामट्टी लगाकर उसे भुनवाके भारमें गाड़के बाद खूब गर्म होनेसे निकालके उसे निचोड़के रस निकाले सो तर्पणके काममें आताहै, इसी बिधिसे सब चीजोंका पुटपाक होता है, इस पुटपाकका काम लगे वहां इस रीतिसे करलेना, सब सूखी बनस्पति पानीमें पीसके उसके गोलापर पान लगाके अंगारमें गाड़के निकालके रस निकालना इसे पुटपाक समझना. इसी माफिक पुटपाक, स्नेहन, लेखन, रोपण है सो पुटपाक करके तर्पण करना ।

अंजनका भेद ।

इस माफिक अंजनके तीन भेद हैं-लेखन, रोपण, स्नेहन; सो

खारा, तीखा, खट्टा लेखन है और तुरस, कटुरस है सो स्नेहन है, उसमें चूर्ण रस गोली ये तीन भेद हैं उसमें चूर्णसे रसमें गुण ज्यादा है और रससे गोलीमें गुण ज्यादा होता है, (मनुष्यको अंजन वर्जित) थका, रोया हुआ, डर गया, नसा किया, नवीनज्वरवाला, अजीर्णवाला, मूत्रादिक रोध, ऐसेको अंजन वर्जित है।

अंजनका प्रमाण।

तीक्ष्ण अंजन रेणुका जितना बत्ती करके डालना१। मध्यम अंजन इससे डयोढ़ा हिस्सा ज्यादा डालना२। मृदु अंजन दो भाग यानी दुप्पट डालना ३। पतली दवा हो तो तीन बूंद एक आंखमें डालना ४ और दो बूंद व एक बूंद ऐसा उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ समझकर डालना और सुरमा आदि चूर्णमें शीशेकी सलाई दो दफे भरके फिराना और मध्यम तीन दफे फिराना और कनिष्ठ तीन दफे फिराना और स्नेहयुक्त हो तो सलाई लगाके चार दफे फिराना।

अंजन लगानेकी सलाईका प्रमाण।

पत्थरकी सलाई व कांचकी सलाई, सोनेकी सलाई, शीशाकी व जस्तकी सलाई आठ अंगुल लंबी चाहिये और सफा गोल होना, लेखन अंजनकी सलाई, तांबाकी व लोहेकी होना व अंगुलीसे डालना उत्तम है व अंजन सामको और सबेरेको डालना दूसरे वक्तमें नहीं डालना।

चंद्रोदयावर्तवटी।

शंखकी नाभि, बहेड़ेका बीज, हर्ड, मनशील, पिपली, मिर्च, कुष्ठ, वच इन आठो चीजोंको सम भाग लेके बकरीके दूधमें खरल करना। उसकी गोली लंबी बांधना उसे पानीमें घिसके नेत्रमें डालना १। जिससे तिमिर मांसवृद्धि, काचबिंदु, पटलगत रोग, अर्बुद, रतौंधी, एक वर्षका फूल ये सब रोग दूर होते हैं २। करंजके बीजोंके चूर्णको पलासके फूलोंके रसकी बहुत पुट देना और घोटना उसकी गोली बांधना उसको पानीमें घिसके अंजन करना, जिससे फूल, मांसवृद्धि, सफेदी, जाल आदि पडदा ये

शस्त्रसे काटने माफिक काटके सफा होके निकलेगा ३।समुद्रफेन, सैंधव, शंख, मुरगीके अंडोंका टर्फल यानीछाल, सेवगाका बीज इन पांचों दवाओंको पानीमें पीसके गोली बांधना और पानीमें घिसके अंजन करना, जिससेफूल, जाला, धुंधा शस्त्रके माफिक काटता है यह लेखन दवा है ४।

लेखनी दंतवर्ती।

हाथी, डुक्कर, बैल, घोडा, बकरा, गदहा इनका दांतशंख, मोती, समुद्रफेन इन सबको पानीमें पीसके गोली बांधना पीछे पानीमें पीसके नेत्रमें अंजन करना जिससे फूल आदि नेत्ररोग सब जावेगा५।नीलाकमल, सेवगाके बीज, नागकेशर इन तीनोंको पानीमें पीसके गोली बांधना, पानीमें घिसके अंजन करना झांपड दूर होगा ६। (रोपणीकुसुमीतावर्ती) तिलके फूल ८०, पीपलीका दाना ६०, चमेलीका फूल ५०, मिर्च १६ ये सब पानीमें पीसके गोली करना उसको पानीमें घिसके अंजन करना जिससे तिमिर अर्जुन, फूल, मांसवृद्धि ये रोग दूर होते हैं७। रसांजन, हलदी, दारुहलदी, चमेलीके पत्ता, नींबके पत्ता ये पांचो दवा समभाग लेके गोबरकेरसमें घोटके गोली बांधना और अंजन करना जिससे रतौंधी जाती है८। (नेत्रस्रावपर स्नेहबस्ती) आंवला, बहेड़ा, हर्ड, इनके बीजोंके अंदरका बीज दूना २ लेना और पानीमें पीसके गोली बांधना और पानीमें घिसके नेत्रमें डालना जिससे नेत्रस्राव तत्काल बंद होता है ९। (रसक्रिया) नीलाथोथा, सुवर्णमाक्षिक, सेंधवलोन, मिश्री, शंख, मनशिल, गेरू, समुद्रफेन, मिर्च ये नव दवा सम भाग लेके बारीक पीसके शहदमें मिलाके अंजन करना जिससे पापण्योंका रोग, अर्मरोग, तिमिर, काचबिंदु, फूल ये रोग नष्ट होते हैं १०। बडके दूधमें कपूर घोटके अंजन करना जिससे दो महीनाका फूल दूर होता है ११। बहुत नींद आती हो जिसपर शहद घोड़ेकी लारमें मिर्च घिसके अंजन करना जिससे निद्रा कम होती है १२। चमेलीके फूलोंकी कली, मिर्च, कुटकी, बच सेंधवलोन ये दवाइयाँ समभाग लेके बकरेके मूत्रमें पीसके अंजन करना जिससे नेत्रकी तंद्रा नाश होके सुस्ती उड़ेगी १३। सन्निपातपर अंजन) सिरस, पिपली, मिर्च, सेंधवलोन, लहसुन, मनसिल, बच ये सातों

दवाइयाँ समभाग लेके गोमूत्रमें पीसके अंजन करना जिससे सन्निपातमें बेशुद्ध हो सो शुद्धिपर आके सन्निपात नाश होगा १४ गिलोयका अंगरस एक कर्षमें सहत सेंधव एक २ मासा डालके मर्दन करना पीछे अंजन करना जिससे पिल्यां (कामला), तिमिर, कांचबिंदु, खुजली, लिंगनाश, सफेद भाग, काला भाग यह सब रोग नाश होते हैं१५ (पुनर्नवाका अनुपान) पुनर्नवा दूधमें घिसके अंजन करे तो नेत्रकी खाज मिटेगा १६ सहतमें अंजन करे तो नेत्रस्राव जायगा १७ घृतसे फूल कटेगा १८ तेलमें घसके अंजन करे तो तिमिर जायगा १९ कांजीसे अंजन करे तो रतौंधी जावेगी इस माफिक यह पुनर्नवा अनुपानविचारसे सब नेत्ररोगोंका नाश करती है, पुनर्नवाको साठी कहते हैं, उर्दूमें विषखोपरा कहते हैं२० बबूलके पत्तोंका काढ़ा ठंढा होने बाद सहत डालके अंजन करना जिससे नेत्रका स्राव मिटेगा २१ हिंगोराका फल पानीमें घिसके अंजन करना जिससे नेत्रस्राव जावेगा २२ निर्मलका फल सहतमें घिसना उसमें कपूर मिलाना अंजन करना नेत्र प्रसन्न रहेगा २३ घी और सहत मिलाके अंजन करना जिससे शिरोत्पात रोग जायगा २४ कालासर्पके मांस स्नेहमें शंख निर्मलीके बीज इनको खरल करके अंजन करना जिससे अंधापना जाके अच्छा सूजेगा २५ मुरगीके अंडाकी छाल, मनसिल, सफेद काच, शंख, सफेद चंदन, सोना, गेरू इन छः दवाइयोंको बारीक पीसके अंजन करना जिससे फूल, मांस, अर्मरोग दूर होता है२६ बकरेके कलेजको पिपली डालके अंगारपर भूनना उसके रसमें पिपली घिसके अंजन करे जिससे रतौंधी जायगी २७ मिर्च आधेशाण, पीपली, समुद्रफेन दो२शाण, सैंधव आधाशाण, सुर्मा नौ शाण इन सब दवाको चित्रानक्षत्रके दिन घोटके अंजन करना जिससे खाज, काचबिंदु ये दूर होके कफ संबंधी नेत्ररोग दूर होते हैं२८ काली खपरी लेके बहुत महीन पीसना पानीमें खूब हलाके थोड़ी देर रखना बाद उस पानीको अच्छे पात्रमें सुखाना उसमें जो सुखी पापडी जमें सो लेना उससे त्रिफलाके काढ़ाका तीन पुट देना उसमें १० औंस कपूर मिलाके घोटना व सुरमा नेत्रमें डाले तो सब नेत्ररोग जाके नेत्र ठंढे रहेंगे, ज्योति साफ रहेगी २९ सुरमाको तपाके ७ बखत त्रिफलाके काढ़ाका छपका मारके ठंढा करना और

इसमाफिक स्त्रीके दूधसे ७ बार तपाके छिड़कना बाद खरल करके नेत्रमें अंजन करना जिससे सब नेत्ररोग जाके नेत्र साफ रहेगा ३० त्रिफलाके काढ़ामें भांगराके रसमें सोंठका काढ़ामें घी, गोमूत्र, सहत, बकरीका दूध इन चीजोंमें एक २ में सात २ बार तपा तपाके शीशाको बुझाना बाद उस शीशेकी सलाई करके नेत्रोंमें फिराना जिससे सबरोग नेत्रोंके जाके सदा आरोग्य रहेगा ३१ शीशाकी सलाईसे अंजन करना बाद नेत्रों-मेंसे पानी गिर जावे तब थोड़ी देरतक पानीकी तरफ देखना बाद प्रति अंजन करना ३२ शीशा शुद्ध करके अग्निपर तपाके पतला करना उसमें समभाग पारा डालना शुद्ध व दोनोंके समभाग सुरमा मिलाना और खरल करके सुरमा करना उसको दशवां भाग भीमसेनीकपूर मिलाना इसको प्रतिअंजनकहतेहैं इससे सब नेत्रोंके रोग जातेहैं ये नेत्रोंको अमृतहै ३३

सर्पका विष उतरनेको अंजन ।

जमालगोटाके मोख निकालके उसको निंबूके रसको पुट २१बार देना बाद गोली बांधके रखना उसको आदमीके लारमें घिसके अंजन करना जिससे सांपका विष उतरके आदमी होशपर आवेगा ३४ इसमाफिक आदमीको उचित है कि भोजन करनेके बाद दोनों हाँथ आखोंपर फिराना जिससे सब रोग जाके नेत्रोंको कभी रोग नहीं होगा और तिमिर रोग भी जाताहै ३५ रोज दिनमें ३ बार ठंढे पानीसे नेत्रपर पानीका छींटा मारना यानी धोना जिससे कभी नेत्रोंको रोग नहीं होगा ३६ इस माफिक नेत्रोंका क्रम है सो आदमियोंको करना चाहिये, शास्त्रोंका वचन है ।

पंचकषायादिक दवा बनानेकी विधि ।

अंगरस, कल्क, क्वाथ, हिम, फांट इन पांचोंको पंचकषाय कहते हैं, उसीको काढ़ा कहतेहैं-कोईक्वाथ कहतेहैं ऐसा जानना इनमें एकसे एक गुण में कम है और अंगरससे कल्कहलका है ऐसा सर्वत्र जानना, प्रथम कीडा लगी, अग्नि आदिकी जली दवा वर्जके अच्छी दवाइयाँ लाके उसे कूटके रस निकाललेना कपड़ेसे उसे स्वरस कहते हैं और उसीको अंगरस कहते हैं१

कुडव भर दवा सुखाके उसका चूर्णकरके उसमें दुप्पट पानी डालके मट्टीके पात्रमें भरके आठ प्रहर तक रखना फिर उसे छानके लेना । इसको भी अंगरस कहते हैं । सूखी दवाका रस नहीं निकले तो उसे कूटके उसमें आठ गुणा पानी डालके काढ़ा करके मंद अग्निसे चौथा अंश निकाल लेना, उसे स्वरस कहते हैं (उसका भेद) स्वरस २ तोला लेना और भिजाके निकाले और अग्निसे पकाके निकालना सो १ पल याने ४ तोला देना ।

यवागूकी विधि ।

४ प्रस्थ प्रमाण दवा लेके उसमें२४ पल पानी डालके आधा औटाके आधा निकालना । उसमें चावल आदि डालनेका हो सो डालके पेजके माफिक पका लेना उसको यवागू कहते हैं और यवागूकी तरकीब वमन के अध्यायमें लिखी है सो देख लेना ॥ १ ॥

विलेपी लक्षण ।

उसमें चतुर्गुण पानी डालके लापसी सरीखी कर लेना वह विलेपीधातु बढ़ानेवाली शरीरपुष्टि करनेवाली, हृदय पित्तको हित करनेवाली है ॥ २॥

पानादिक क्रिया ।

एक पल प्रमाण दवा लाके थोड़ी कूटके उसमें ६४ पल पानी डालके आधा रहनेतक काढ़ा करके उतार लेना, उसे छानके पिलाना; जिससे प्यास मिटेगी और उसमें शहद, गुड़, क्षार, जीरा, नोन, घी, तेल इन-मेंसे कोई चीज डालना हो तो छःमासा डालना ॥ ३ ॥

प्रमथ्याकी विधि ।

एक पल दवा लाके उसको पीसके कल्क करके सूखी दवा हो तो पा-नीमें पीसके कल्क करना, उसमें ८ गुणा पानी डालके दुगुणा रहनेपर उतार लेना उसे प्रमथ्या कहते हैं ॥ ४ ॥

यूषकी विधि ।

सोंठ आदि दवा पीसके १ प्रस्थ पानी डालके पेजके माफिक निकाल लेना, इसे यूष कहते हैं । इसकी क्रिया वमन-अध्यायमें लिखे अनुसार मूंग आदिका यूष करना । गिलोयके स्वरसमें शहत डालके देना, जिससे सब

प्रमेह जाता है ॥ ५ ॥ आमलेके रसमें शहद डालके लेना, जिससे सब प्रमेह नष्ट हो जायगा ॥ ६ ॥

पुटपाककी विधि ।

जो दवाका पुटपाक करना हो तो दवा पीसके पानी आदि जिसमें माफिक हो सो पीसके उसका गोला बांधके उसपर जामुन आदिका पात लपेटके ऊपरसे कपड़ा लपेटके उसपर गीली मट्टी लगाके उसे अंगारमें गाड़ देना, बाद उसको निकालके गरम गरम निचोड़के रस निकाल लेना, जिसको पुटपाक कहते हैं। इसमाफिक सब पुटपाक करना ॥७॥ पुटपाकमें कोई ठिकाने कपड़ापर मट्टी लगाते हैं और कोई ठिकाने गेहूंका आटा लगाते हैं ऐसा जानना॥८॥(कुड़ेका पुटपाक) काला कुडाकी गीली छाल लाके पीसके उसे जामुनके पात लपेटके उसपर कपड़ा लपेटके उसपर गेहूंका आटा लगाके अंगारमें जलाके बाद निकालके रस निचोड़कर निकालना, उसमें शहद डालके देना; जिससे अतिसार, प्रवाहिका,संग्रहणी ये नष्ट हो जाते हैं॥९॥(कल्ककी विधि)कल्क यानी चटनी सरीखी दवा पीसके रखना, जो गीली हो सो गीली पीस लेना और सूखी हो सो पानीमें डालके पीस लेना. उस चटनीको४मासे लेना चाहिये॥१०॥उस कल्कमें घी शहद तेल ये डालना हो तो दुगुना डालना तथा शक्कर, गुड़ डालना हो तो बराबर डालना और दूध आदि पतली चीजें हों तो चौगुनी डालना। उस कल्कके नाम दो हैं–एक प्रक्षेप और दूसरा आवाप उसे एकही कर्षतक देना।

चावल धोनेकी विधि ।

४ तोला चावल लेके उसमें आठ गुना पानी डालना, अच्छी तरह रगड़ना, उसमें जो पानी निकलता है उसको चावलका धोवन कहते हैं। इसे लेकर सब काममें लाना चाहिये ॥ ११ ॥

काढ़ेकी विधि ।

४तोला दवा लेके थोड़ासा कूटके उसमें १६ गुना पानी डालकेकाढ़ा करना, वह काढ़ा हलकी अग्निसे तपाना, जब आठवाँ हिस्सा रह जाय तब उतारके रोगीको पिलाना चाहिये । उस काढ़ेमें ४ भेद हैं। १ शृत, २ क्वाथ, ३ कषाय, ४ निर्यूह ऐसे चार

प्रकारका समझना ॥१२॥ उस काढ़ामें शक्कर डालना हो तो वातदोषपर चौगुनी डालना, पित्तरोग हो तो आठ गुना डालना और कफरोग हो तो सोलह गुना डालना। शहद डालना हो तो उलटा अर्थात् कम डालना और काढ़ा आठवाँ अंश करना और चतुर्थांश करना ऐसा ग्रन्थकारोंका तो मत जुदा जुदा है ॥

मन्थकी विधि ।

१ पल प्रमाण दवा लेके बारीक कूटके उसे ठंढा पानी ४ पलमें डालके उसको अच्छा मथना वा पानी निकालके २ पल देना उसे मंथ कहते हैं १३

फांटकी विधि ।

१ पल प्रमाण दवा लेके चूर्ण करके छः पल पानीमें डालके हला लेना कपड़े से छान लेना इसको चूर्णद्रव्य भी कहते हैं इसमें शहद पूर्वप्रमाण डालना.

हिमकी विधि ।

१ पल दवा लेके अच्छी कूटके ६ पल पानीमें डालके हलाके रातभर ठंढीमें रखना, बड़े फजिर छानके लेना, उसमें शकर आदिक काढ़ा सरीखे डालना पिलाना २ पल प्रमाण ॥

अवलेहकी विधि ।

स्वरसमें अथवा काढ़ा, फांट, हिम इनको औट के चासनी सरीखा जाड़ा पाक करते हैं उसे अवलेह कहते हैं, शरबत भी ऐसा ही होता है सो जानना। उसका प्रमाण १ पलतक है, उसमें शकर चौगुनी डालना और गुड़ दूना डालना और रस दूध आदिक पतली चीजें चौपट डालना ऐसा अवलेहका भेद समझना ॥ १ ॥

अथ आसव अरिष्टादिभेद ।

१ जल आदिक पतले पदार्थमें दवाइयाँ डालके व बर्तनमें भरके उस बर्तनके मुखको मुद्रा देके बंद करके मास व पक्ष भरि रखके निकाले उसे आसव कहते हैं २ इसी माफिक अरिष्ट करना चाहिये ३ अरिष्ट सब दवाइयोंके काढ़ामें चूर्ण आदि डालके उसे ही पूर्व रीतिसे सिद्ध करना सोई अरिष्ट समझना वे दोनों ४ तोला तक लेना ४ सीधु मद्यका भेद ऐसा है कि आपक्व गन्नेको रस आदि जो मधुर रस इससे सिद्ध किये को शिरका कहते हैं और शीतरसको शीधु कहते हैं ५ और अपक्व ऐसा जो मधुर रस पदार्थ उससे जो सिद्ध हुआ मद्य उसे अपक्वरसशीधु कहते हैं ६

सुरामद्यका भेद ।

चावल आदि धान्य पकाके अग्निसंयोगसे यंत्रसे जो अर्क निकालते हैं उसे सुरा, मद्य व शराब कहते हैं, उस सुराके फेनको प्रसन्ना कहते हैं॥७॥

ताड़ीभेद ।

ताड़ीका रस, खजूरका रस तथा नारियलका रस इनके सत्त्वको सुरजकी आंचसे व अग्निकी आंचसे यंत्रसे निकालते हैं उस मद्यको वारुणी कहते हैं ८ (शुक्त भेद) कंदमूल फलादिक स्नेह सैंधवलोन ये चीजें जलादिक द्रव पदार्थोंमें डालके अग्निसंयोगके यंत्रसे मद्य निकालते हैं उसे शुक्त कहते हैं ॥९॥

गुड़शुक्त भेद ।

गुड़,पानी,तेल,कंदमूल ये फलसब बर्तनमें डालके उसे मुद्रा देके मास यानी महीना पंद्रादिन रखते हैं खट्टी होनेपर उसे गुड़शुक्त कहते हैं १० इस माफिक गन्नेके रस व द्राक्षाके रसका शुक्त करना ११ कच्चा जव लेके पीसना, उसे पानीमें डालके बर्तनका मुख बंद करना,कुछ दिनतक रखना उसे तुषांबु कहते हैं १२ (सौवीरकी विधि)जवोंका भूसा निकालके पकाना पानीमें डालके मुद्रा देके कुछ दिनराखे उसे सौवीर कहते हैं १३ कुलीथके काढ़ामें व चावलोंके मांडके पानी डालके उसमें सोंठ,राई,जीरा,हींग,सेंधवलोन हलदी ये डालके मुद्रा देके तीन चार दिन रखना इसको कांजी कहते हैं १४ मूलीका टुकड़ा करके पानीमें डालना उसमें हलदी, हींग, राई,सेंधवलोन, जीरा, सोंठ इनका चूर्ण डालके मुद्रा देना, तीन चार दिन रखना इसको संडाकी कहते हैं । इसी माफिक आसव और अरिष्टका भेद है सो जानना.

चूर्णकी विधि ।

सूखी दवा ले उसे पीसके सफूफ बनाते हैं उसको चूर्ण कहते हैं। उस चूर्णके दो नाम हैं एक रज और दूसरा क्षोदा, उस चूर्णका वजन एक कर्ष देनेका है। १ उस चूर्णमें गुड़ डालना तो समभाग डालना। २ शकर डालना तो दूनी डालना। ३ हींग भूनके डालना। ४ अनुपान घी सहत आदिक चिकनी चीजमें डालके लेना हो तो चूर्णसे दूनी लेना ५ और दूध,गो त्र

पानी आदि पतले पदार्थमें लेना हो तो चूर्णसे चौगुनेमें डालके पीना६ और चूर्णको निंबू आदि रसका पुट देना हो तो चूर्ण उस रसमें डूबने-तक पुट देना इसे एकपुट कहते हैं.

गोलीकी विधि ।

१ गुटिका २ बटी ३ मोदक ४ वटिका ५ पिंडी ६ गुड़ ७ बर्ति ऐसे गोलियोंके ७ भेद हैं। इसकी बनानेकी तरकीब गुड़का व शक्करका पाक करके उसमें दवाका चूर्ण मिलाके गोलियाँ बांधना व बरफी करना २ व शुद्ध गुग्गुलमें दवाइयाँ मिलाके गोलियां बांधना ३ दूधमें ४ पानीमें ५ शहदमें ६ इनमें गोलियाँ बांधना उसमें चूर्णसे चौगुनी शक्कर डालना, गुड़ दूना डालना, गुग्गुल सहत समभाग लेना, पानी काढ़ासे दूना लेना-दवाका मान–रोगीकी शक्ति देखके देना.

घी तेल स्नेहकी विधि ।

स्नेह व घी व तेल लेना हो तो वनस्पतिका रस व काढ़ा व कल्क आदिमें चौगुना घी डालना, घीसे चौगुना दूध अथवा काढ़ा व गोमूत्र आदि पतला पदार्थ डालके सबको अग्निपर रखके पकाना सब पदार्थ जलके घी शेष रहे तब उतार लेना उसे एक पल प्रमाण लेना और आदमीकी शक्ति देखके देना। जैसी घी बनानेकी तरकीब है वैसी ही तेल बनानेकी तरकीब समझना और मांसस्नेह आदिकी रीति स्नेहपान-अध्यायमें लिखी है सो जानना और सब तेल घी ऐसा ही बनाना चाहिये। इस प्रकरणमें१ दिनचर्या२ सदाचार३ रात्रिचर्या४ ऋतुचर्या५ मगधपरिभाषा ६ स्नेहपानविधि७स्वेद-पसीना-विधि८ वमन (उलटी) की विधि ९ रेचन (जुलाब) की विधि१०बस्तिविधि-निरूहण उत्तरबस्तिका भेद११(नस्य-नास) सुंघानेकी विधि१२ धूम्रपानविधि १३ गंडूष (कुरला)-कवल-विधि१४ प्रतिसारण-नेत्र-आश्च्योतनविधि१५ रक्तस्राव-रक्त निकालनेकी विधि १६ आश्च्योतन तथा अंजनविधि १७ पंचकषाय १८ यवागू १९ पान२० प्रमथ्या२१ यूष२२ पुटपाक२३ कल्क व चावलोंका धोवन२४ स्वरस२५ काढ़ा२६ मंथ२७ हिम२८ फांट२९ आसव३० अरिष्ट३१ दारु ३२ सुरा३३ वारुणी३४ ताडी३५ मद्य३६ सुक्त३७ चूर्ण ३८ गोलियाँ३९

स्नेह घृत४० तेल४१ पाक४२इस माफिक पांचवें प्रकरणमें मेदहैं सो जानना.

इति शिवनाथसागरे वैद्यकशास्त्रे पञ्चम प्रकरण समाप्त ।

अथ निदान सहित चिकित्सा ।

श्लोक-प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारणम् ।
स्वर्गापवर्गयोर्द्वारं त्रैलोक्यशरणं शिवम् ॥ १ ॥

अर्थ-जगत्‌की उत्पत्ति और पालन और संहार इनके कारण स्वर्ग यानी सुख और अपवर्ग यानी मोक्ष इनका द्वार यानी दरवाजा है और त्रैलोक्यके रक्षा करनेवाले ऐसे जो शिव हैं उनको नमस्कार करके इस कामका प्रारंभ करता हूं सो पूरा होगा ॥

दोहा-वैद्य सिद्धि यश कीरति, इन इच्छा होय ।
ज्वर आदिक सब रोगको, निदान सीखो लेय ॥ १ ॥

ज्वर आदि रोगोंकी पैदायश जैसी है उसे पांच रूपोंसे हकीम सिखावेगा, वह ऐसा है १ निदान२ पूर्वरूप ३ रूप ४ उपशय, ५संप्राप्ति।१निदान-चीजोंके आहार और विहारका विचार करना व देखना २ ऋतुआदिसे दोषकोप सम होके स्वाभाविक आदमीकी तबीयतमें फरक आना ३ पूर्वरूप-जैसे इन चीजोंसे फलानी बीमारी आवेगी. जैसे बरसातमें पहले हवा बादल व गर्मसे बरसात आनेका चिह्न मालूम होता हैं वैसे ही पूर्वरूपसे ज्वरादिक रोग समझे जाते हैं ।

इसका यंत्र आगे लिखे अनुसार देख लेना-

कोष्टक।

नामरोग	दवाइयाँ.	अन्न हितकारक	विहार हितकारक
हेतुसे विपरीत जैसा	शीतज्वरपर सोंठ आदिक गर्म हितकारक हैं ॥	अन्न वादीसे बीमारी वालेको मांसरस हितकारी है	दिनको सोनेसे कफादिक बढ़ेगा तो रातको जागना सो हित करता है
व्याधीसे विपरीत जैसा कि दवासे रोग कम हो जावे	अतिसारको स्तंभन दवाइयाँ पाढमूल विषपर शिरस कोढ़पर खर परमा पर हलदी देना ऐसा जानना	अतिसारको स्तंभन मसूरादिक अफीम आदिक हितकारी समझना	उदावर्तपर प्रमाण मलादिक काम करना हवाको ऊंची नीची लेना उपासना हितकी है
हेतुव्याधिविपरीत जैसा	वातसूजनपर दशमूलादिक वातहारक लेप देना	वातकफसंग्रहणीपर छाछ शीतज्वरपर प्याज खाना	स्निग्ध जो दिनकी नींदसे हुई तंद्रापर रूक्ष रातको जागरण करना हितकारक है
हेतुविपर्यस्तार्थकारी जैसा	पित्तप्रधान व्रणसूजनपर पित्तपर गरम पिंडी बांधना	पंचमान व्रण सूजनपर विदाई अन्न खाना हितकारक हैं	वातउन्मादपर त्रास देना अंजन नास देना अंजन करना ऐसा हित करता है
व्याधिविपर्यस्तार्थकारी	उलटीको उलटी कराना मेलफलादिक देना	अतिसारपर रेचक दूध आदिक देना हित करता है	उलटीपर उलटी करना हितकारी विहार करना
हेतुव्याधिविपरीतार्थकारी जैसा	अग्निसे जले हुएपर उष्ण अगरुका लेप विषपर विष लगाना है	मद्यके उन्मादपर वासी मद्य पिलाना ऐसा हितकारक है सो जानना	आमजनित संमूढ वातपर पानीमें तैरना फिरना चलना हित करता है ऐसा जानना

संप्राप्ति १ पूर्वरूप आदिक जो सर्ववैद्य माधवनिदान खूब ध्यान करके सीखेगा उसे यश, कीर्ति होके सर्व कामयें फत्ते होगी ऐसा जानना ॥

हासलकलाम—वात कोपनेका कारण पीछे लिखा है सो होनेसे वातकोप होता है रूक्ष आदि	पित्तकोपनेवाली चीजोंसे पित्त कोपता है राई आदिक तीक्ष्ण चीजों जानना	कफकोपनेवाली दही आदिक सब चीजें सोना, बैठना स्निग्ध मीठी चीजें जानना चाहिये	ऋतु बदलनेसे दोष बदलता है सो जानना ऐसी सब बात ध्यानमें रखना जिससे रोगोंका बीज समझता है सो जानना

ज्वरकी पैदा।

श्लोक-दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिःश्वाससंभवः।
ज्वरोऽष्टधा पृथक् द्वन्द्वसंघातागन्तुजः स्मृतः॥ २॥

अर्थ-दक्षप्रजापतिके अपमानसे शिवजीको क्रोध हुआ सतीके तन त्यागनेके समय शिवजीके श्वाससे ज्वर ८ प्रकारका उत्पन्न हुआ है उसमें १ वातज्वर २ पित्तज्वर ३ कफज्वर ४ वातपित्तज्वर ५ कफवातज्वर ६ कफपित्तज्वर ७ सन्निपातज्वर ८ आगंतुक ज्वर। इस माफिक सामान्य ज्वर ८ प्रकारका हुआ है॥ २॥

ज्वरकी संप्राप्ति।

मिथ्याआहार और विहारसे दोषकोप होता है वो दोष रस आदिक सत धातुको तपाता है, उसको ज्वर कहते हैं॥

ज्वरके सामान्य लक्षण।

देह भारी रहे, मन इंद्रिय विकल रहे, सब शरीरमें पीड़ा हो, पेशाब बंद रहे, अतिदाह हो ये सामान्य ज्वरके लक्षण समझना॥

ज्वरका पूर्वरूप।

श्रम, ग्लानि, चैन नहीं पड़ना, मुख अरुचि, नेत्रमें पानी दिखायी देवे धूप ठंढी पर इच्छा, और द्वेषहो, जँभाई आवै, आलस्य अंग भारी हो, ठंढी, रोमांच अंधेरा, ऐसा भासता हो भूँख न लगना, गर्म नेत्र, ज्वरके पूर्वमें ये लक्षण समझना॥ २॥

वातज्वरके लक्षण।

श्लोक-वेपथुर्विषमो वेगः कण्ठोष्ठमुखशोषणम्।
निद्रानाशः क्षवस्तम्भो गात्राणां रौक्ष्यमेव च॥ ३॥
शिरोहृद्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यं गाढविट्कता।
शूलाध्माने जृम्भणं च भवन्त्यनिलजे ज्वरे॥ ४॥

अर्थ-कफ होना बेसमय ज्वर कम ज्यादा होना और कंठ, ओंठ, मुख सूखना, खुश्की होना, नींद न आना, छींक न आना, सब गात्र खुश्क शिर

हृदय वेधना, मुख बेमजा रहे, दस्त गाढ़ा हो, काला होना, पेटमें पीडा होना, फूलना, जँभाई आना ये लक्षण वातज्वरमें होते हैं और सब वातका लक्षण वात दोषके रोगमें होता है; जिस रोगमें वात अधिक में यही हो तो वातदोषसे वह रोग है ॥ ३ ॥ ४ ॥

पित्तज्वरके लक्षण।

श्लोक-वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्च निद्राल्पत्वं तथा वमिः।
कण्ठोष्ठमुखनासानां पाकः स्वेदश्च जायते ॥ ५ ॥
प्रलापो वक्त्रकटुता मूर्च्छा दाहो मदस्तृपा।
पित्तविण्मूत्रनेत्रत्वक् पैत्तिके भ्रम एव च ॥ ६ ॥

अर्थ-ज्वरका वेग जलदीसे चढ़ना, अतिसार होना, थोड़ी निद्रा आना, उलटी होना, गला, ओंठ, मुख, नाक इनपर फुनसिया आना, पसीना आना, बड़बड़ करना, मुख तीखा होना, रूपका अज्ञानपना, दाह, उन्मादपना, प्यास, मल, मूत्र, नेत्र, त्वचा इतने पीले होना, चक्कर (भवल) आना, घुंमटेरी आना ऐसे सब लक्षण पित्तज्वरमें होते हैं और सब पित्तादिक रोगोंमें ये लक्षण अवश्य होते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

कफज्वरके लक्षण।

श्लोक-स्तैमित्यं स्तिमितो वेग आलस्यं मधुरास्यता।
शुक्लमूत्रपुरीषत्वक्साम्भस्तृप्तिरथापि च ॥ ७ ॥
गौरवंशीसमुत्क्लेदो रोमहर्षोऽतिनिद्रता।
प्रतिश्यायोऽरुचिः कासः कफजेऽक्ष्णोश्च शुक्लता ॥ ८ ॥

अर्थ-शरीर गीला कपड़ासे बाँधा है ऐसा लगे, ज्वरका वेग मंद होना, शक्ति होके काम करनेको दिल न होना, मुख मीठा होना, मूत्र मल त्वचा इनको सफेदी आना, बदन करडा होना, तृप्ति अन्नपर इच्छा न होना, शरीरमें भारीपना, ठंढी बजना, उलटी होनेके माफिक होके उबकाई आना, शरीरमें रोमांच, ठंढी मालूम होना, नींद ज्यादा आना, जुखाम, अरुचि,

खासी नेत्र सफेद ये सब लक्षण कफज्वरके हैं और कफयुक्त सर्व रोगोंमें ये लक्षण होते हैं सो जानना ॥ ७ ॥ ८ ॥

वातपित्तज्वरके लक्षण।

श्लोक-तृष्णा मूर्च्छा भ्रमो दाहः स्वप्ननाशः शिरोरुजः।
कंठस्य शोषवमथू रोमहर्षोऽरुचिस्तमः।
पर्वभेदश्च जृम्भाश्च वातपित्तज्वराकृतिः ॥ ९ ॥

अर्थ-तृषा, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, निद्रा न आना, शिर दुखना, शूल होना, कंठ मुख सूखना, जी मचलाना, रोमांच, अरुचि, अंधेरा दिखाई पड़ना, सब संधिमें पीड़ा, जंभाई, नेत्रोंमें गरमी ये सब लक्षण वादी पित्तज्वरमें होते हैं और ये लक्षण बादीपित्तके और दोषसंयोग रोगोंमें होता है॥ ९ ॥

कफवातज्वरके लक्षण।

श्लोक- स्तैमित्यः पर्वणां भेदो निद्रा गौरवमेव च।
शिरोग्रहे प्रतिश्यायः कासः स्वेदाऽप्रवर्तनम्।
संतापो मध्यवेगश्च वातश्लेष्मज्वराकृतिः ॥ १० ॥

अर्थ-शरीर गीला कपड़ासे लपेटा है ऐसा मालूम पड़ना संधिमें फूटना, नींद ज्यादा आना, बदन भारी, शिरमें बोझा सा होना जुखाम, खासी, थोड़ा पसीना आना, शरीरमें दाह ज्वरका वेग मंद इस माफिक श्लेष्मवातज्वर लक्षण होते हैं. ये दोनों दोषोंका लक्षण हरएक बीमारीमें ऐसाही होता है ॥ १० ॥

श्लेष्मपित्तज्वरके लक्षण।

श्लोक-लिप्ततिक्तस्तथा तन्द्रा मोहो कासोऽरुचिस्तृषः।
मूर्दाहो मूरुपित्तं च श्लेष्मपित्तज्वराकृतिः ॥ ११ ॥

अर्थ-मुखको कड़वापना, चिकनापना, झांप आना, मूर्च्छा आना, खांसी, अरुचि, प्यास, वारंवार दाह, वारंवार ठंढी, ये होना ये सब कफपित्तज्वरमें होते हैं और ये दोनों दोषोंके लक्षण सर्व द्वंद्वदोषकी बीमारीमें अवश्य होता है ॥ ११ ॥

दोहा-मुख कटु और चीकना, तंद्रा भंवल खांसि कफ होय ।
क्षण दाह क्षण शीत हो, कफपित्त ज्वर लक्षण जोय ॥

सन्निपातज्वरके लक्षण ।

श्लोक-क्षणे दाहः क्षणे शीतमस्थिसंधिशिरोरुजा ।
सास्रवे कलुषे रक्ते निर्भुग्ने चापि लोचने ॥ १ ॥
सस्वनौ सरुजौ कर्णौ कण्ठः शूकैरिवावृतः ।
तन्द्रा मोहः प्रलापश्च कासः श्वासोऽरुचिर्भ्रमः ॥ २ ॥
परिदग्धा खरस्पर्शा जिव्हा स्रस्तांगता परम् ।
ष्ठीवनं रक्तपित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्य च ॥ ३ ॥
शिरसो लोटनं तृष्णा निद्रानाशो हृदि व्यथा ।
स्वेदमूत्रपुरीषाणां चिराद्दर्शनमल्पशः ॥ ४ ॥
कृशत्वं नातिगात्राणां प्रततं कण्ठकूजनम् ।
कोष्ठानां श्यावरक्तानां मण्डलानां च दर्शनम् ॥ ५ ॥
मूकत्वं स्रोतसां पाको गुरुत्वमुदरस्य च ।
चिरात्पाकश्च दोषाणां सन्निपातज्वराकृतिः ॥ ६ ॥

अर्थ-छंद मनोहर-छीन छीन दाहा शीत होत है,शरीर मांही हाडसंधी शिर दुखे शूल होत मानिये । नेत्र जल खचैसे पीखत होत नाना रंग कान नाद शूल होत कंठ दुःख जानिये । तंद्रा मोहो बके खाँसी श्वास अरुचि भ्रम होत जिह्वा दग्ध खरदरी गऊं जीव जानिये । निपट गलानि खंखार माही खून जात सीर डोले प्यास लगे होत नींद नाश मानिये॥१॥छातीमें दरद मल मूत्र अरु पसीना कम गात्र दुर्बल नाहिं कंठ कफ बोले मानिये। दांफड चटेंसे होत पेट भारी वाचाबंद कान नाक मुख पे हो फुनस्या प्रमानिये । वातपित्त कफको पचन होत देरहीसे सन्निपातज्वरके लक्षण येते जानिये। शिवनाथ सिंह कहे माधव निदान देख यामें झूँठ मतिजान शास्त्र है प्रमानिये ॥२॥सन्निपातमें १३ प्रकारके भेद हैं . ॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥

सन्निपात होनेका कारण ।

श्लोक-अम्लस्निग्धोष्णतीक्ष्णैः कटुमधुरसुरातापसेवाकषायैः

कामक्रोधातिरूक्षैर्गुरुतरपिशिताहारसौहित्यशीतैः ।
शोकव्यायामचिंताग्रहगणवनितात्यन्तसंगप्रसंगैः
प्रायः कुप्यन्ति पुंसां मधुसमयशरद्वर्षणे सन्निपाताः ॥ ७ ॥

अर्थ–खट्टा, स्निग्ध, उष्ण, तीक्ष्ण, कडु, मधुर, मद्य, धूप, कषाय का सेवन, काम, क्रोध, खुश्क, भारी बेवख्तका भोजन, मांस, ठंढी चीजोंका खाना, शोक, श्रम, चिंता, पिशाचबाधा, ज्यादा स्त्री प्रसंग करना और दो दो ऋतुके बीचमें सन्निपात होता है ॥ ७ ॥

अथ १३ सन्निपातोंके नाम व मुद्दत ।

संधिक ७ अंतक १० रुग्दाह २० चित्तविभ्रम २४ शीतांग १५ तंद्रिक २५ कंठकुब्ज १३ कर्णक ९० भुग्ननेत्र ८ रक्तष्ठीवी १० प्रलापक १४ जिह्वक १६ अभिन्यास १६ इस प्रकार १३ सन्निपातोंकी मुद्दत जानना इतने दिन गये बाद रोगी जीवेगा इस प्रकार मर्यादा कही गयी है लेकिन कोई वक्त रोगी तत्काल मर जाता है। इन १३ मेंसे संधिक, तंद्रिक, कर्णक, कंठकुब्ज, जिव्हक, चित्तविभ्रम ६ साध्य बाकी ७ असाध्य मारक हैं ॥ १ ॥

संधिकके लक्षण ।

पूर्वमें शूल, तृषा, बादीकी व्यथा, कफ, ज्वर, संताप, ताकत कम, नींदका नाश ये लक्षण हैं सो संधिक है ॥ १ ॥

अंतकके लक्षण ।

दाह, संताप, खांसी, मूर्छा, हिचकी, शिरकंपना ये लक्षण अंतकसन्निपातका है ये आसाध्य है ॥ २ ॥

रुग्दाहके लक्षण ।

बहकना, संताप करना, मोह, मंदत्व, कमताकत, श्रमहोना, भँवल आना, गला, हनुवटी, गर्दन इनमें पीड़ा और निरंतर प्यास लगना, श्वास, खांसी, हुचकी ऐसे लक्षणोंसे युक्त रुग्दाह सन्निपात जानना, यह कष्टसाध्य है॥ ३ ॥

चित्तभ्रम सन्निपातके लक्षण ।

कौनसे प्रकारसे शरीरको पीड़ा होना, धतूरा खानेके माफिक भ्रम

होना, संताप, मोह, विकलपना, नेत्र व्याकुल होना, हँसना, गाना, नाचना, बड़बड़ करना इसी लक्षणसे युक्त चित्तभ्रम सन्निपात जानना, कई एक आचार्योंका मत असाध्य कहा है ४

शीतांग सन्निपातके लक्षण ।

शरीर बर्फके माफिक थंडा होना, कंप, श्वास, हुचकी, सर्व अंग ढीला, स्वर बोलनेके अंतरमें पीड़ा होना, विना मेहनतसे श्रम होना, मनको संताप, खांसी, उलटी अतिसार ये लक्षणसे युक्त शीतांग सन्निपात जानना ये आदमीको जल्दी नाश करता है ५

तंद्रिक सन्निपातके लक्षण ।

झांपड़ पड़ना, शूल, ज्वर, कफ, प्यास इससे रोगीको बहुत पीड़ा होती है जीभ काली, और जाड़ी, करड़ी, और कांटे आना, अतिसार, श्वास, ग्लानि, तलखी, कर्णशूल, गलेमें भारीपना, रात दिन नींद आना ये लक्षणसे युक्त तंद्रिक सन्निपात जानना, ये असाध्य है ६

कंठकुब्ज सन्निपातके लक्षण ।

कपाल दुखना, गला दुखना, दाह, वेहोश रहना, कंप, ज्वर, रक्तवातसंबंधी पीडा, हनुवटी जखडना, संताप, बड़बड़ करना, मूर्च्छा ये लक्षणसे युक्त कंठकुब्ज सन्निपात जानना यह कष्टसाध्य है ७

कर्णक सन्निपातके लक्षण ।

बड़बड़ करना, बहिरापन, गला धरना, वदनमें तिड़क होना, श्वास, खांसी, लालस्राव, ज्वर, संताप, कर्ण, गला इनमें पीड़ा युक्त होनेसे कर्णक सन्निपात कहा जाता है सो कष्टसाध्य है, ये सन्निपातज्वरके अंतमें कर्णके मूलमें मोटी सूजन आती है उससे कोई मनुष्य बचता है. ये सूजन ज्वरके पूर्वमें आवे तो असाध्य और ज्वरके मध्यमें आवे तो कष्टसाध्य और ज्वरके अंतमें आवे तो सुखसाध्य है ८

भुग्ननेत्र सन्निपातके लक्षण ।

ज्वरसे बल क्षय, स्मृतिनाश, श्वास, वक्रदृष्टि, बेहोश होना, बड़बड़

भ्रम, कंप और सूजन इन लक्षणोंसे युक्त भ्रुग्ननेत्र सन्निपात जानना, यह असाध्य है ॥ ९ ॥

रक्तष्ठीवी सन्निपातके लक्षण ।

रक्त मिला थूक आना, ज्वर, उलटी, तृषा, मूर्च्छा, शूल, अतिसार, हिचकी, पेटफूलना, चक्कर आना, प्यास, मलहोना, तलखी, श्वास आना, संज्ञाका नाश, जीभ काली, रक्तवर्ण होना, जीभमें चट्टे होना इन लक्षणों से युक्त रक्तष्ठीवी सन्निपात जानना, यह प्राणनाश करनेवाला है ॥ १० ॥

प्रलापक सन्निपातके लक्षण ।

कंप होना; बड़बड़, संताप, कपाल दुखना, प्रौढ़ बातें करना और साफ रहनेविषे अशक्त, दूसरेकी फिकर करना, बुद्धिनाश, विकल, बहुत बड़बड़ करना ऐसा प्रलापक सन्निपात रोगी यमसदनको जायगा ॥ ११ ॥

जिह्वक सन्निपातके लक्षण ।

खांसी, दमा, संताप, विह्वलपना, जीभ कांटोंसे व्याप्त, बहिरापना, गूंगापना, बल हीन, इन लक्षणोंसे युक्त जिह्वक सन्निपात कष्टसाध्य है १२

अभिन्यासके लक्षण ।

त्रिदोष कोपसे मुखपर तुलतुलितपना, चकचकितपना, नींद, बिकल-पना, निश्चेष्टपना, मोटे प्रयाससे एक आधा शब्द बोलना, बलनाश, श्वासादिकका अवरोध, इन लक्षणोंसे युक्त, अभिन्यास सन्निपात जानना, यह बड़ा भयंकर मृत्युदायक होता है ॥ १३ ॥

हारिद्र सन्निपातके लक्षण ।

देह, नख, नेत्र, हाथ, पाँव ये हलदी लगाने माफिक पीले होना, ज्वर, थूंक और खांसी आना यह हारिद्र सन्निपात ज्वररूपी काल है, यह १३ सन्निपातोंसे जुदा है, यह विरले आदमीको होता है ॥

त्रिदोष सन्निपातोंकी साधारण मर्यादा ।

सन्निपात होनेके वक्त तत्काल ३ दिनमें व ५ दिनमें व ७ दिनमें व १० दिनमें व १२ दिनमें व २१ दिनमें इतने दिनमें आदमी बच गया तो समझना

बच जावेगा। इसमें धातुपाक व मलपाक दो भेद हैं, धातुपाक होनेसे नींद नहीं आती और हृदय खींचना, मल मूत्र कब्ज रहना, शरीर जड़ रहना, अन्नद्वेष, अस्वस्थपना और बलनाश यह लक्षण धातुपाकसे होते हैं, वह आदमी बचता नहीं.

मलपाकके लक्षण।

दोषोंका स्वभाव पलटना, ज्वर हलका होना, शरीरको हलका मालूम होना, इंद्रियोंका निर्मल होना, ऐसे लक्षणोंसे रोगी साध्य होता है.

आगन्तुक ज्वरके लक्षण।

शस्त्रघातसे, मिट्टी, बुकनीसे, लकडी इनकी मारसे व उलट सुलट मंत्रसे, लोहके शस्त्र लगनेसे, कोई होम व कोई धुवां विष लगनेसे, दुर्गंधिसे भूतादिकके उपद्रवसे, ब्राह्मण, गुरु, वृद्ध, सिद्ध पुरुष इनके शापसे, आगन्तुक ज्वर पैदा होता है, इसके लक्षण आगे लिखूंगा.

विषजन्यज्वरके लक्षण।

स्थावर जंगम विष खानेसे जो ज्वर आता है उसमें मुख श्यामवर्ण होता है। दाह, अतिसार, अन्नद्वेष, तृषा, सुई टोंचनेके माफिक होना, देह चमकना, मूर्च्छा आना ये लक्षण होते हैं.

दुर्गंधज्वरके लक्षण।

एक आधी उग्र दवाकी वाससे जो ज्वर आता है उसमें मूर्च्छा होना, कपाल दुखना, उलटीहोना, व दस्त होना, छींक आना ये लक्षण होते हैं.

कामज्वरके लक्षण।

एक आधी मनमें इच्छाकी हुई स्त्रीकी प्राप्ति न होनेसे जो ज्वर होता है उसमें चित्तभ्रम, झापड़, आलस्य, खानेपर इच्छा न होना, हृदयमें पीड़ा होकर वह आदमी सूख जाता है और मुँह सूखता है यह सब लक्षण होते हैं.

भय, शोक व गुस्सा इससे जो ज्वर आवे उसके लक्षण।

भयसे आनेवले ज्वरसे बड़बड़ करेगा और शोक ज्वरवाला भी बड़बड़ करेगा. क्रोधज्वरमें शरीर कांपता है, अभिघात व अविचार ज्वरसे

मोह होता है और प्यास लगती है, भूतबाधाके ज्वरसे चित्त उद्विग्न, हँसना, रोना और कांपना ये लक्षण होते हैं, इसमें भी तीनों दोषोंका कोप होता है, यानी काम, शोक व भय, वातकोप, क्रोधसे पित्तकोप और भूतज्वरमें तीनों कुपित होते हैं, उसका लक्षण उन्मादमें लिखा जावेगा ।

विषमज्वरके लक्षण ।

ज्वरसे तुर्त मुक्त हुआ और अपथ्य करनेसे रसादिक धातु उसमेंसे, कौनसी ही धातु पकजानेसे विषमज्वर पैदा करता है और पहिलेसे ही विषमज्वर पैदा होता है ।

विषमज्वरके छः प्रकारके भेद ।

संतत १ सतत २ अन्येद्युष्क ३ द्व्याहिक ४ तृतीयक ५ चातुर्थिक ६ इस प्रकार छः प्रकारके भेद समझना.

संततज्वरके लक्षण ।

एक रातदिनमें दो वक्त जो ज्वर आता है, उसको संतत ज्वर कहना चाहिये ।

अन्येद्युष्क ज्वरके लक्षण ।

अहोरात्र दिनमें एक दफे आता है और तृतीयकज्वर आये दिनसे तीसरे दिन आता है और चातुर्थिकज्वर चौथे दिन आता है । यह विषमज्वर कई आचार्योंके मतसे भूतोंके दोषादिकसे है, कारण कि विषमज्वरके ऊपर चिकित्सा तंत्रादिक, बलि, होमादिक ज्यादा लिखा है यह ज्ञान सुश्रुताचार्यको ही मान्य है, इसकी उत्पत्ति कफस्थानसे होती है, रसगत ज्वर हमेशा एक सरीखा रहता है उसको प्राकृतमें मधुरा कहते हैं और रक्तगतज्वर दो दफे आता है और मांसमेदोगतज्वर तीसरे दिन आता है और अस्थिमज्जागत ज्वर चौथे दिन आता है और राजयक्ष्मा (क्षय) में ज्वर सब धातुगत रहता है, उसको प्रलेपकज्वर कहते हैं, इस ज्वरमें विशेष भेद ऐसा है । एकदा ज्वर, हांथ पांव थंडे रहके मध्य प्रदेश गरम होता है और हांथ पांवमें श्लेष्म रहके उदरमें पित्त रहता है और पेटमें श्लेष्म रहके हांथ पांव गरम होते हैं, सो पित्तगत ज्वर रहता है।

शीतपूर्वकज्वरके लक्षण।

कफ और वादी त्वचा और रस आश्रय करके पहले शीत उत्पन्न करता है, उसका वेग शांत हो करके आखिर पित्त दाह करके ज्वर चढ़ता है.

दाहपूर्वकज्वरके लक्षण।

पहलेसे पित्त रसगत होके अत्यंत दाह करके उसका वेग शांत हुए बाद आखिरको कफ शीत करता है, यह कष्टसाध्य है.

सप्तधातुगतज्वरके लक्षण।

रसगत ज्वरमें जड़पना, हृदयमें भारीपना होना, उलटी आना यानी जुखाम, ग्लानि, उबकाई आना, अन्नद्वेष, मनको ग्लानि यह रसगत ज्वरसे होते हैं.

रक्तगतज्वरके लक्षण।

खंकारनेसे रक्त पड़ना, दाह, मोह, भ्रम, बड़बड़ करना, अंगपर चकत्ते और फुनसियां होना, प्यास लगना यह लक्षण रक्तगत ज्वरका है.

मांसगतज्वरके लक्षण।

पिंडलियोंमें दर्द, प्यास, मल मूत्रका विसर्ग होना, तलखी, अंतर्दाह हाथ पांवमें जलन और ग्लानि ये लक्षण मांसगत ज्वरके हैं.

मेदगतज्वरके लक्षण।

पसीना ज्यादा लगना, प्यास, मूर्छा, बड़बड़ करना, उलटी, बदनकी दुर्गन्धि, अरुचि, ग्लानि, वेदना यह लक्षण मेदगत ज्वरके हैं.

अस्थिगतज्वरके लक्षण।

हड्डियोंमें फूटन रहना, टसकना, श्वास, रेचन, उवकाई, हाथ पांवमें थकावट रहना, अस्थिगत ज्वरमें ऐसे लक्षण होते हैं.

मज्जागतज्वरके लक्षण।

अंधेरेमें रहने माफिक लगना, हुचकी, खांसी, ठण्ढी लगना, उवकाई, अंतर्दाह, महाश्वास और मर्मछेद याने (हृदयभेद) यह लक्षण मज्जागत ज्वरके हैं.

शुक्रगतज्वरके लक्षण ।

रसादिक धातुगतज्वर शुक्रगत तक गया हो तो रोगी मरण अवस्था पाता है, इस ज्वरमें शिश्न खींचना, शुक्रस्राव विशेष होना और रक्तादिक धातुका स्राव होना, यह शुक्रगत ज्वरके लक्षण समझना, पर असाध्य है.

प्राकृत व वैकृत ज्वरके लक्षण ।

वर्षाऋतु, शरदृतु व वसन्तऋतु इसमें बादीका ज्वर होवे तो प्राकृतज्वर समझना, अर्थात् वर्षाकालमें वातज्वर, शरत्कालमें पित्तज्वर और वसंतकालमें कफज्वर इन कालोंमें ज्वर आवे तो वैकृतज्वर समझना, जैसा वर्षाकालमें पित्तज्वर शरत्कालमें श्लेष्मज्वर और वसंतकालमें वातज्वर यह वैकृत हैं यह असाध्य होते हैं.

अन्तरवेगज्वरके लक्षण ।

अंतर्गत दाह, बहुत प्यास, बड़बड़ करना, श्वास, भ्रम, संधि और हड्डियोंमें शूल, पसीना नहीं आना, वायु और मल कब्जियत रहना, यह अंतर्गत ज्वरके लक्षण हैं.

बाह्यगतज्वरके लक्षण ।

सन्ताप अधिक होना, तृष्णादिकलक्षण कम यह ज्वर साध्य है इससे अंतर्गत कष्ट साध्य है.

आम, पच्यमान और निराम ज्वरके लक्षण ।

लाल स्राव, उबकाई, हृदय जड़, अरुचि, झांपड़, आलस्य, अन्न न पचना, मुखका स्वाद मीठा रहना, अंगमें सुस्ती रहना, भूँख न लगना, बार २ पेशाब होना, बदन कठिन होना, ज्वर ज्यादा होना, अपक्व ज्वरके ये लक्षण हैं, इस ज्वरपर दवा देना नहीं, अगर दवा दे तो ज्वर ज्यादा होगा, शोधन व शमन दवा देनेसे विषमज्वरपर लाभ होता है ।

भावप्रकाशमें ज्वरके दश उपद्रव कहे हैं ।

श्वास, मूर्छा, अरुचि, तृषा, उलटी, अतिसार, मलबद्धता, हिचकी, खांसी, दाह यह दश उपद्रव हैं.

पच्यमानज्वरके लक्षण।

ज्वरका वेग अधिक होना, प्यास बहुत लगना, बड़बड़ करना, श्वास, श्रम, मल होना, उबकाई आनेके माफिक हो तो समझना, कि पक्कज्वरके लक्षण हैं.

ज्वर उतरनेके पूर्वरूप लक्षण।

भूक लगना, शरीर कृश होना और हलका होना, ज्वर कम होना अधोगत वायु साफ होना, मनको उत्साह होना इस माफिक हो तो समझना कि ज्वर उतर जावेगा.

जीर्णज्वरके लक्षण।

२१ दिनतक बाद जो ज्वर रहता है वह सूक्ष्म धातुगतमें रहता है और अग्निमंद हो जाती है उसको जीर्णज्वर कहते हैं.

ज्वरके साध्य लक्षण।

बलवान् पुरुषके अल्प दोष श्वासादिक उपद्रवसे रहित जो ज्वर है सो साध्य है.

ज्वरके असाध्य लक्षण।

जो ज्वर बहुत प्रबल कारणोंसे पैदा होता है, उसमें बहुत लक्षण होते हैं, वह ज्वर असाध्य है और जो ज्वर उत्पन्न होते वक्त एकआधी चक्षु आदिक इन्द्रियोंको नष्ट करता है, यानी अंधा, बहिरा इत्यादि कर देता है वह असाध्य है और क्षीण पुरुषका ज्वर असाध्य है और अंतर्धातुगत व अंतर वेगज्वर तथा बहुत दिन रहनेवाला व बलवान् ज्वर जिसके योगसे केशोंमें भार पड़ता है, वह असाध्य है और अंतर्दाह, प्यास, अंतर्गत खैंचनेवाला श्वास, खांसी, युक्त ऐसा ज्वर हो उसे गंभीरज्वर कहते हैं, और जिसका ज्वर प्रारंभसे विषम है, जिसका ज्वर बहुत दिनोंका है उसे सावधि कहते हैं, मोह पाता है, सब वक्तमें बिछौनेमें पड़ा रहता है, उठनेकी ताकत नहीं रहती, बाहरसे ठंढी लगती है और अंतरमें दाह होता है इस प्रकारसे रोगी मरता है और जिसके अंगपर रोमांच नहीं होता, नेत्र लाल हो, हृदयमें एकआधी गाठ जमनेकीसी पीड़ा हो और केवल मुखसे श्वास छोड़ता हो वह पुरुष

ज्वरसे मरता है और हिचकी, श्वास, तृषा इससे व्याप्त, मोहको प्राप्त, नेत्र इधर उधर फिराता है, हमेशा श्वाससे पीड़ा होती है ऐसे आदमीको ज्वर मारता है और जो स्वप्नमें प्रेतोंके बराबर मद्य पीता हुआ देखता है व कुत्ते खेंचके ले जाते हैं वह मनुष्य भयंकर ज्वरसे मरता है और ज्वरका दाह, तृषा, मूर्च्छा, बलक्षय, संधि ढीले ये असाध्य हैं और सबेरे जिसके मुखपरसे ज्यादा पसीना निकलता है व ज्वरसे० याप्त है वह असाध्य है.

ज्वरमुक्तके लक्षण।

दाह, पसीना, भ्रम, प्यास, कांपना, मल पतला होना, बेसुध, थूंकना और बदनमें अत्यंत दुर्गंध ये लक्षण ज्वर छोड़नेके वक्त होते हैं.

ज्वर मुक्त होनेका उदाहरण।

जैसे दीपक बुझनेके वक्तमें तेल न होनेसे प्रकाश दो तीन वक्त होके बुझता है, वैसा ही एकदा ज्वर जानेके वक्त अपनी रुजा, रूपशक्ति दिखाके जाता है। यह सबके देखनेमें है साफ ज्वर निकले बाद पसीना आना, शरीरका हलकापना, मस्तकको खाज, मुखपाक, छींक आना, अन्नपर वांछा होन यह लक्षण हो तो जानना कि ज्वरने छोड़ दिया.

इति ज्वरनिदान समाप्त।

अथ ज्वरचिकित्सा।

कर्मविपाक—पूर्व जन्मके जो कर्म हैं उन्हींके अनुसार सब रोग और दुःख होते हैं १. देवद्रव्य और ब्रह्मांश ग्रहण करनेवालेको ज्वर होता है २. रुद्र और महारुद्र व विष्णुसहस्रनाम् पाठ करनेसे सब ज्वर शांत होते हैं.

ज्योतिषका मत।

नीच सूर्यकी दशामें, नेत्रनाश, मस्तकरोग, बंधन, महाभय, कोढ़ ये रोग होते हैं और क्षीण चंद्रकी दशामें, ये ही रोग होते हैं. केतुके दशामें बुधकी दशा आयी हो तो सुवृत्त बंधुका समागम, भूमि विषयी झगड़ा, देहको पीडा, ज्वर ये उपद्रव होते हैं और शनिकी दशामें बुधकी दशा आयी हो तो यही उपद्रव होते हैं, इसमें दान देनेसे और जप करनेसे शांति होती है और वेदश्रवण, हिताचरण,

ताचरण, ब्राह्मणभोजन, कृष्णका स्मरण, शुभकार्य, द्रव्यदान,पीपलप्रद-क्षिणा, उत्तम रत्न धारण करना, गरीबोंका पोषण ये उपचार अष्टविध ज्वरके हैं जेसे चंद्रमा अंधकारका नाश करता है वैसे इनसे ज्वरका नाश होता है ३. और गणेश, विष्णु, शिव,गौरी,सूर्य, कुलदेवता इनके पूजन और जप करनेसे ज्वरका नाश होता है ४.

वातज्वरको पाचन ।

सोंठ,कडू चिरायता; नागरमोथा,गिलोय इनका काढ़ा वातज्वरको पचा देता है व गिलोय, पिपली,जटामांसी,सोंठ वातज्वरके सातवें दिन देना और कचूरा, दारुहलदी, हलदी, देवदारु, सोंठ, पोखरमूल, इला-यची, गिलोय, कुटकी,पित्तपापडा,धमासा,काकडाशिंगी,कडूचिरायता, दशमूल इनके काढ़ेमें पिपली और सैंधानोनका चर्ण डालके देना । इससे सब ज्वरोंका जल्दी नाश होगा, इसमें संशय नहीं है और शिवणमूल; ऐरण, वेल, टेंटू, पाठामूल इनका काढ़ा वातज्वरको पाचन है,५. और गिलोय, द्राक्षा, नागवला, सालवण, उपलसरी इनका काढ़ा देना ६. और दर्भमूल, चिकणमूल, गोखरू इनका काढ़ा इसमें शकर और शहद डालकर देना ७. और कडूचिरायता,नागरमोथा,खस, रीगणी, जंगली वेंगन, गिलोय, गोखरूं, सोंठ, पोहकरमूल इनका काढ़ा वातज्वरका नाश करनेवाला है ८. धमासा, सोंठ, कूट, पाठामूल, कचूर, अडूसा, अरंड-मूल इनका काढ़ा पित्तशूल, श्वास, खांसी, वातज्वर इनका नाश करता है और पंचमूल, चिकणा, रासना,कुलथी, पोखरमूल इनका काढ़ा देनेसे शिरःकंप, संधिवात और वातज्वर इनका नाश करता है ९. पिपली,लह-सन, गिलोय, सोंठ, रिंगणी, निर्गुंडी,चिरायता, नागरमोथा इनका काढ़ा लेके पथ्य करे तो वातज्वर, कफज्वर, अग्निमंद, गला, हृदय अवरोध, पसीना, हिचकी, ठंढी, मोह, इसका नाश करेगा १०. गिलोय, सोंठ, नागरमोथा, हलदी, धमासा इनके काढ़ेमें पिपलीका चूर्ण डालके देनेसे वातज्वरका नाश होता है ११. और पीपलमूल, पित्तपापड़ा, अडूसा, भारंगमूल, सोंठ, गिलोय इनका काढ़ा तीव्रवातज्वरका नाश करता है १२. और चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, खस,रिंगणी, ऊंटकटारी, गोखरू,

सालवण, पिठवण, सोंठ इनका काढ़ा देनेसे वातज्वरको नाश करता है१३.और मिर्च, एरंडका मूल, सोंठ,चिरायता, बालहर्डा, पिपली,कुटकी इनका चूर्ण व काढ़ा देनेसे वातज्वरका नाश करता है १४.और त्रिफला, सोंठ,मिर्च, पिपली इनका चूर्ण गुड़से देना १५.और यही चूर्ण ठंड पानीसे शक्कर डालकर देनेसे पार्श्वशूल, अरुचि, वातज्वरका नाश करता है१६. और पिपली, दर्दूर, बच्छनाग ये समभाग खरलमें घोटके दो गुंजा शहदमें देनेसे वातज्वरका नाश करता है१७. और शतावर गिलोय इनके रसमें गुड़ डालके लेनेसे तो निर्मल पुरुषके वातज्वरका नाश करता है१८. और कल्पतरुरस देना १९. और आनन्दभैरवरस देना २०.शीतभंजीरस देना २१. और बिजोरेकी केशर, सैंधवलोन, मिर्च तीनोंको खरल करके गोली करके दे तो मुखसम्बन्धी कफ वात रोग, शोष, जड़पना, अरुचि, दूर होती है २२. और शकर व अनार व दाख इनका कल्क शोष करके देनेसे तो मुखकी अरुचिको दूर करता है. २३. और द्राक्षा, आंवला इनका कल्क घीमें मिलाके मुखमें डाले तो व गोली करके मुखमें धरे तो जिह्वा, तालु, गला इनका शोष शांत होके मुखमें भोजनकी रुचि होती है २४. और नस्य, लंघन,चिन्ता, व्यायास,शोष, भय, क्रोध इनसे कफनाश होकर निद्रानाश होता है. इसमें थोड़ी भांग भूनकर उसका चूर्ण शहदमें देना. जिससे नींद आकर अतिसार, संग्रहणी,अग्निमंद ये नाशहोते हैं२५.और पिपलामूलका चूर्ण गुड़से देना इससे बहुत दिनकी गयी हुई निद्रा आवेगी यह चूर्ण अनुभव किया हुआ है२६.

पित्तज्वरको पाचन।

गिलोय, नीमका काढा, धनियां, सोंठ, हलदी, इसके काढ़ेमें गुड़ डालके देनेसे पित्तज्वरको पाचन कर देगा २७. और धमासा, अडूसा, कुटकी, पित्तपापड़ा, कांग,चिरायता,इसका काढ़ा शकर डालके पिलाना जिससे दाहयुक्त पित्तज्वरको नाश कर दे २८. और दाख,कडूपटोल,नीम, कुटकी, बालहरडा, रिंगणी,खश, धनियां,लोध, नागरमोथा,सोंठ इनका काढ़ापीनेसे पित्तज्वरका नाशकरेगा२९.पित्तज्वरवालेको प्रियश्वेत कमलके फूल सुगंधी पुष्पोंपरसे आयीहुई सुगंधीवायु जलक्रीडा करना यहीपित्तज्वरवालेको प्रिय है३०.और कुटकी,नागरमोथा,जव,पाठामूल,कायफल,खश,

इनका काढ़ा शकर डालकर पीनेसे पित्तज्वरका पाचन करता है २१. पित्तपापड़ा,अडूसा, कुटकी,चिरायता,धमासा,कांग इसके काढ़ेमें शकर डालके पीनेसे प्यास,दाह,रक्तपित्त,तथा शीतसहित पित्तज्वरका नाश करता है२२. और द्राक्ष,बालहर्डा,नागरमोथा,कुटकी,किरमालेके फलीका मगज, पित्तपापड़ा इसका काढ़ा देनेसे मुख, शोष, बड़बड़ होना,अंतर्दाह, मूर्च्छा,भ्रम इन सबोंका नाश करके प्यास तथा रक्तपित्त नाश होता है और दस्त भी साफ होता है २३. और जव, धनियाँ, मुलहटी इसके काढ़ेमें शहद डालके देना तो इससे पित्तज्वर,दाह तथा प्यास शांत होती है २४. और गिलोय, आंवला,पित्तपापड़ा इसका काढ़ा दे और केवल पित्तपापड़ाका काढ़ा देनेसे शोष,भ्रम, पित्तज्वर नाश होता है २५. और चिरायता, अतिविष, लोध,नागरमोथा, इंद्रजव, गिलोय, खश, धनियाँ बेलफल इनके काढ़ेमें शहद डालके देनेसे. अतिसार,श्वास, खांसी, रक्तपित्तज्वर इन सब रोगोंका नाश कर देगा २६. और पित्तपापड़ा, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, चिरायता इन पांचो दवाइयोंका काढ़ा देनेसे वातपित्तज्वरका नाश हो जाता है२७. और रक्तचंदन,खश,जायफल,फालसा, मुलहटी इसका काढ़ा शकरमें डालके देनेसे पित्तज्वरका नाश होता है ३८. और गूलरका पानी शकर डालकर दे तो पित्तज्वरका नाश करता है ३९. और मुनक्का, हर्डा, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, कुटकी,किरमालेका मगज इनका काढ़ा देनेसे मूर्च्छा, बड़बड़, भ्रम, दाह, शोष,तृषा, इन सबका व पित्तज्वरका नाश होता है ४०. आंब, जामुन इनके पात, बड़के कोंब, टोंक और बड़की जटाका कोंब, खश इन सब दवाइयोंको बांटकर पीनेसे ज्वर, प्यास, उबकाई,अतिमूर्च्छा दूर होती है ४१. और जीभ, तालू, गला, क्लोम, तलवा इनसे शोष हुवा हो तो बिजोराकी गिरीमें शहद व सैंधवलोन डालके देनेसे ये सब रोग दूर हो जावेंगे. ४२ और पर्पटीरस देनेसे ज्वरादिक सब रोग दूर हो जाते हैं ४३. और इंद्रजव, कुटकी, हलदी, चित्रक, नागकेशर, त्रिकटु इनका चूर्ण गरम पानीसे देना, ज्वरनाश होता है ४४. और स्वर्णमाक्षिक, आंबलेके मुरब्बेमें देनेसे पित्तज्वरका नाश होता है४५. और अदरखका रस शहदसे देनेसे पित्तज्वरका नाशकरता है४६.और प्रवालभस्म अनुपानसे देना४७.

और गिलोय कूटके रातको भिगोना, उसका सरबत निकालके छानके पी-नेसे रक्तपित्तका नाश होता है इसी माफिक अडूसेका हिम सबेरेमें पीनेसे खांसी, रक्तपित्तज्वर जाता है४८. और सोंठ, शकर व गिलोयका सत्त्व लेना इससे भी पित्तज्वरका नाश होगा ४९. और गौकी छाछमें व कांजीमें कपड़ा भिगोके पित्त ज्वरवालेको ओढानेसे दाह शांत हो जावेगा ५०

कफज्वरको पाचन ।

नागरमोथा, सोंठ, धमासा, अडूसा इनका काढ़ा देनेसे पाचन होकर ज्वर श्वास, खांसी, शूल, ज्वर इनका नाश होता है ५१. पिपली, पिप-लीमूल, मिर्च, गजपिपली, सोंठ, चित्रक, चवक, रेणुके बीज, इलायची अज-मोदा, सरसों, हींग, भारंगमूल, पाठामूल, इंद्रजव, जीरा, बकायन, नीम, मोर बेल, अतिविष, कडूचिरायता, वायविडंग यह सब मिलाके देना इसको पिप्पलादि गण कहते हैं। इसका काढ़ा देनेसे कफनाश, गुल्म, शूल, ज्वर, इनका नाश करेगा और दीपन तथा पाचन भी करेगा ५२. मधु और पिपलीका योग, खासी, ज्वर, प्लीहा, हिक्का, हिचकी इसका नाश करने-वाला है५३. और पिपली, त्रिफला यह समभाग लेके चूर्ण करके शहदके बराबर व घीके बराबर देना तो इससे श्वास खांसी जाती है ५४. और कायफल, पोखरमूल, काकडाशिंगी, पिपली इनका लेह शहदमें करना उससे श्वास, खांसी, कफज्वर जाता है ५५. और कायफल, पोहकरमूल, काकडाशिंगी, अजवाइन, अजमोदा, त्रिकटु इनका चूर्ण और अदरखका रस शहदसे देनेसे खांसी, श्वास, अरुचि, उबकाई, शरदी, वातकफज्वर इनका नाश करता है ५६. और अजवाइन, पिपली, अडूसा, अफीमके पोस्ता इनका काढ़ा पीनेसे खांसी, श्वास, कफज्वर इनका नाश होता है. ५७. और अडूसा, गिलोय, रिंगणी इनके काढ़ेमें शहद डालके देनेसे ज्वर, खांसी, नष्ट होती है५८. और मिर्च, पिपलामूल, सोंठ, पिपली, चित्रक, कायफल, कोष्ठ, निर्गुंडी, बच, हर्डा, रिंगणी, काकडाशिंगी, अजमोदा, कुटकी, नीमकी छाल इनका काढ़ा देनेसे उपद्रवोंके सहित कफ ज्वरका नाश होता है ५९. और रिंगणी, गिलोय, पिपली, सोंठ इनका काढ़ा देनेसे ज्वर, श्वास, कफ, खांसी, शूल, अग्निमांद्य इनका नाश करता है६०. और

भारंगी, गिलोय, नागरमोथा, देवदारु, रिंगणी, सोंठ, पिपली, पोहकरमूल, इनका काढ़ा देनेसे ज्वर, श्वास नष्टहोकर क्षुधा उत्पन्न होती है और मुखको रुचि देती है६१. और बिजोराकी जड़, सोंठ, गिलोय, पिप्पलमूल, जवाखार, पिपली इनका काढ़ा देनेसे कफज्वर दूर होकर क्षुधा उत्पन्न करेगी ६२.

पंचकोल।

पिपली, पीपलमूल, चवक, चित्रक, सोंठ इनको पंचकोल कहते हैं, यह पंचकोल भी शोधन और कफनाशक है६३. और बिजोराका मूल, बालहिरडे, सोंठ, पीपलमूल, जवाखार इनका काढ़ा बनाना और १२दिनके बाद कफज्वर वालेको देना६४. और कुटकी, चित्रक, कडू नीम, हलदी, अतिविष, बच, गिलोय, चिरायता, आकड़ेकी मूल इन सब चीजोंके काढ़ेमें शहद डालकर देना६५. और गोखरू, नागबला, रिंगणी, गुड़, सोंठ, दूध आठवाँ हिस्सा अधिक डालकेशेष दूध रह जावे तब काढ़ा देना६६. और त्रिफला, कडूपटोल, अडूसा, गिलोय, कुटकी, वच, सोंठ इनके काढ़ेमें शहद डालके देना ६७. और दशमूल, अडूसा, इनका काढ़ा पूर्वरीतिसे देना६८. और पिपली, सोंठ, गिलोय, देवदारु, चिरायता, एरंडका मूल, नीम इनका काढ़ा देना६९.

वातपित्तज्वर पर उपाय।

नीला कमल, नागबला, दाख, मुलहटी, खश, पद्मकाष्ठ, शीवण, फालसा, यह दवाइयोंका हिम देना, जिससे वातपित्तज्वर, बड़बड़, भ्रम, उवकाई, मूर्छा, प्यास यह सब दूर होते हैं ७०. और सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, चिरायता, पंचमूल इनका काढ़ा देना७१. और किरमालाका मगज, नागरमोथा, मुलहटी महुडाका फूल, खश, हरड, हलदी, दारुहलदी, पटोल, नीमकी छाल, गिलोय, कुटकी इनका काढ़ा देनेसे वातपित्तज्वरका नाश होता है७२. और मुनक्का चिरायता, गिलोय, अडूसा, कचूर इनका काढ़ा देनेसे वातपित्तज्वर नष्ट होता है ७३. पंचमूल, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ इनका काढ़ा देनेसे भी वातपित्तज्वर नाश होता है ७४. और मूँग, आंवला, इनका जूस वातपित्तज्वरको हितकारक है. और दाह हुआ तो चनेका जूस देना. और आंवला,

अनार, मूँग, इसकाजूस देनेसे वातपित्तज्वरकानाश होताहै७५. और धमासा, गिलोय, मोथा, खश, कुटकी, पित्तपापड़ा इनका काढ़ा देनेसे वातपित्तज्वर नष्ट होता है७६. और चिरायता, कुटकी, खश, रक्तचंदन, धनियाँ, हरडा, दशमूल, काला खश, सोंठ, करंजमूल इनका काढ़ा देनेसे वातपित्तज्वर नष्ट होता है. त्रिफला, पोलादकी भस्म, भांगरा, अर्जुनवृक्षके पत्ते, त्रिजातक, शिलाजीत, त्र्यूषण इन सबके चूर्णके समभाग शक्कर डालके शहदमें गोली बनाके एक तोला अनुपानसे देना, इससे वातपित्तज्वर नष्ट होताहै७७

वातकफज्वरपर उपाय।

वातकफज्वरके ९ दिन बीतनेपर दवा देना, सूखी मूलीका जूस वातकफज्वरको हितकारक है।

दूसरा पञ्चकोल।

वातकफज्वरका नाश करता है और इसीसे ऊष्ण, तीक्ष्ण, पाचन, दीपन, कफ, वात, गुल्म, प्लीहा, उदर, शूल इनका नाश करनेवाला है७८. और नीम, गिलोय, सोंठ, देवदारु, कायफल, कुटकी, बच इनका काढ़ा देनेसे संधि पीड़ा, मस्तकशूल, खांसी, अरुचि, वातकफज्वर, इनका नाश करता है७९. और चिरायता, सोंठ, गिलोय, रिंगणी, पिपली, पीपलमूल, लहसुन, निर्गुंडी इनका काढ़ा देनेसे वातकफज्वरको नाश करताहै८०. और पिपली, पीपलमूल, चवक, चित्रकमूल, सोंठ, बच, अतिविष, जीरा, पाठामूल, कुडेकी छाल, रेणुके बीज, चिरायता, मोरवेल, शिरस, मिर्च, कायफल, एरंडमूल, भारंगमूल, बायबिडंग, काकडाशिंगी, आकडेकी मूल, जंगलीबैंगन, रास्ना, धमासा, अजवाइन, अजमोदा, शिवणकी छाल, हींग यह दवाइयाँ समभाग लेकर देना इनका काढ़ा व चूर्ण देनेसे वातश्लेष्मज्वर, वायु, शीत, पसीना, कंप, बड़बड़, झँपका रोमांच, अरुचि, महावात, अपतंत्रकवात, सब अंगकी शून्यता, संपूर्ण ज्वर इससे नाश होता है, इसको पिप्पलादि गण कहते हैं८१।

चतुर्भद्र।

चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ इस चतुर्भद्रका काढ़ा

देनेसे वातश्लेष्मज्वर नाश करता है८२. और पसीना न आता हो तो उसके वास्ते कुलीथ भूनके उसका आटा अंगमें लगाना व गायका सूखा गोबर, नमक, पुरानी ठिकरी इनका चूर्ण करके बदनको मालिश करना८३. और त्रिकटु, हर्डा, लोध, पोहकरमूल, चिरायता, कुटकी, कुष्ठ, कचूरा, शिवलिंगी, कपूरकाचरी यहदवाइयां समभाग लेकर वस्त्रगाल चूर्णकरके बदनको लगाना जिससे कैसा भी पसीना आता होगा तो बंद होगा८४. और चिरायता, अजवाइन, कुटकी, वच, कायफल इसका चूर्ण अंगको लगानेसे सदोदित आनेवाला पसीना बंद होगा८५. और सूतशेखर रस यानी टंकणखारकी लाही, शुद्ध गंधक यह समभाग, शुद्ध जैपाल दो भाग, सैंधवलोन, मिर्च, अमलीका खार, शकर एक २ भाग लेकर निंबूके रसमें खरल करना और शकर रस दो गुंजा प्रमाण गरम पानीसे देना जिससे वातकफज्वर जाता है६.

कफपित्तज्वरका उपाय ।

कफपित्तज्वरको दवा १० दिन देना. रिंगणी, गिलोय, भारंगमूल, सोंठ, इंद्रजव, अडूसा, चिरायता, चंदन, नागरमोथा, कडू पटोल, कुटकी इनका काढ़ा देनेसे पित्तकफज्वर, दाह, अरुचि, उबकाई, खांसी, शूल इनका नाश करता है ८६. और सोंठ, खश, नागरमोथा, धनियाँ, महुवाका रस, काला खश, इसका काढ़ा देनेसे पित्तकफज्वरका नाश करता है८७. और पटोल, अदरख इनका काढ़ा देनेसे पित्तश्लेष्मज्वर, उबकाई, दाह, कंडू इनका नाश करता है ८८. पटोल, धनियाँ इसका काढ़ा देनेसे पित्त-श्लेष्म ज्वरका नाश करिके दीपन करता है८९. और पटोल, नीम, त्रिफला नागबला इसका काढ़ा देनेसे कफपित्तज्वरका नाश करता है ९०. और कुटकी, खश, चिकणा, धनियाँ, पित्तपापड़ा, नागरमोथा इसका काढ़ा देनेसे कफपित्तज्वरको नाश करता है९१. और सोंठ, इंद्रजव, नागरमोथा, रक्तचंदन, कुटकी, इसके काढ़ेमें पीपलीका चूर्ण डालके देनेसे भ्रम, मूर्च्छा, अरुचि, उलटी, पित्त, कफज्वर जाता है९२. और मनुका, किरमालेका मगज, कुटकी, नागरमोथा, पिपली, पिपलीका मूल, धनियाँ इनका काढ़ा देनेसे उदावर्त, पेट फूलना, शूल, पित्तकफज्वर दूर होता है९३. और अज-

अजवाइन, वच, किरमजी, हींग, खश, धनियाँ, हलदी, नागरमोथा, मुलहटी, भारंगमूल, पित्तपापड़ा इसके काढ़ेमें शहद डालके देनेसे कफपित्तज्वरका नाश करता है ९४. और पान फूल सहित अडूसेका रस निकालके शकर और शहद डालके देनेसे कफपित्तज्वरका नाश करता है ९५. और कुटकीका चूर्ण एक तोला और चार मासा शकर मिलाके गरम पानीमें देनेसे कफपित्तज्वरका नाश करता है ९६. और जव अच्छा कूटके उसमें चौदा गुना पानी डालके काढ़ा करके पानीमें छान लेना इसके देनेसे कफपित्तज्वरका नाश करता है ९७.

चंद्रशेखर रस ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, मिर्च, सुहागा, मनसिल सबको समभाग मच्छीके पित्तमें तीन दिन भावना देनेसे चंद्रशेखर रस सिद्ध होता है और दो दो गुंजा अदरखके रसमें देना और ऊपरसे थंडा पानी पिलाना. पथ्य छाछ व चावल, बैंगनका साग खाना जिससे तीन दिनमें कफपित्तज्वरका नाश करता है ॥ ७ ॥

सन्निपातज्वरका उपाय ।

कट्फलादि पाचन कायफल, त्रिफला, देवदारु, रक्तचंदन, फालसा, कुटकी, पद्मकाष्ठ, खश यह दवा एक २ तोला लेके काढ़ा करके देनेसे त्रिदोष, दाह, तृष्णा इनका शमन करके दीर्घकालतक जियेगा। यह दवा अमृत तुल्य है९८.और दशमूलके काढ़ेसे सिद्ध किया हुआ लाहीका मंड पाचन और दीपन है, सन्निपातको हितकारक है९९. और गोखरू, धमासा, रिंगणी, इनके काढ़ेमें सिद्ध किया हुआ आहार देनेसे दोषकी शांति होती है, बल तथा अग्नि बढ़ती है, त्रिदोषको हितकारक है और त्रिदोष ज्वरवालेको लाहीके आटेमें सेंधवलोन डालके देनेसे तो निर्विघ्न दोष पचेगा और रोगी बचेगा, लाहीका आटा शीत है. रक्त, पित्त, तृषा, दाह, ज्वर इनपर देना । सन्निपातपर नहीं देना. सन्निपातज्वरपर जो दाह होता है उसपर जो शीत उपचार करता है वह वैद्य नहीं, यमका दूत है१००.और शिरस पिपली, मिर्च, सेंधवलोन इनचीजोंके गोमूत्रमें घिसकेअंजन करना इससेरोगी सुधपर आवेगा और मनसिल व बच इनका अंजन लहसनके रसमें घिसके

लगाना इससे रोगी सुधपर आवेगा १. और कस्तूरी,मिर्च,घोड़ेकी लारमें घिसके शहद डालके अंजन करना उससे तंद्रा शीघ्रही नष्ट होगी२. त्रिकटुका चूर्ण नाकमें सुंघाना उससे तंद्रा नष्ट होगी३. सन्निपातज्वरको पूर्वही अच्छा लंघन करवाना और खाली पानीका काढ़ा करके और शीत करके प्यास लगे तो देना ४. सैंधवलोन,सैंजनके बीज,शिरस,कुष्ठ बकरीके सूत्रमें घिसके नास देना तंद्रा नष्ट होगी ५. और बिजोरीका रस,अदरखका रस गरम करके उसमें सैंधालोन डालके नास देना ६. और सन्निपातकी मूर्छाको रसायन समर्थ है,ऐसी दूसरी दवा नहीं है ७. और त्रिकटु,सोंठ,सैंधवलोन अदरखके रसमें घोटके गोली मुखमें धरना और जैसा कफ आवे वैसा ही थूकते जाना,उससे मुख,छाती,क्लोम,गर्दन,पार्श्व,गला इतने ठिकानेका कफ साफ होता है और शरीर हलका होकर ज्वर,मूर्छा,तंद्रा,श्वास,गलरोग,नेत्र इनका जड़पना जाके मुखमें पानी छूटता है। एक दिनमें दो तीन दफे देना। गलेके ऊपरकी बीमारीको दवा सोतेवक्त धरना और अधोगतके वास्ते भोजनके प्रथम दवा देना चाहिये। सन्निपात ज्वरपर लंघन,वालू रेतीका शेक नास,कुल्हा,अवलेह,अंजन ये करना. एक दवाकी क्रिया समाप्त होने बाद दूसरी दवा करना. एक कालमें दो दवा मना है. ८ रिंगणी, जङ्गली बैंगनकी जड़ सोंठ,धनियाँ,देवदारु इनका काढ़ा सन्निपातज्वरपर पाचन है और ज्वरनाशक है ९. अजवाइन,बच,सोंठ,पिपली,अजमोदा इनका चूर्ण सन्नि-पातके पसीना आये बाद बदनको लगाना,जिससे सन्निपात ज्वरनाश होगा. १० और बछनाग,मिर्च,जंगली गोबरीकी राख, सोलहवाँ भाग सबको धतूराके रसमें भावना देकर सुखाके लेना और बदनमें मालिश करना, जिससे शीत और पसीना आता है. ११ और भुनेले चनेका आटा, अज-वाइन,बच,मिर्च इसका चूर्ण बदनमें लगाना. १२ और तुलसीका रस, कतेरी या त्रिकटु, सैंधवलोन शहदमें चटाना ज्वर, मूर्छानाश होगा,१३ सन्निपातज्वरको अच्छा होनेको तीन दिन व पांच दिन व दश दिन लंघन कराना और लंघन करानेके बाद पूर्वोक्त कुल्हे कराना. १४ गोखरू, पंचमुष्टि, जव, कुलीथ, मूंग, सूखीमूली, सोंठ,धनियाँ दर एक चार २ लेकर जूस करना इससे सन्निपातज्वर, कफ, वात, आंव इनका नाश करके हृदय, गला, मुख इनको साफ करता है १५ ।

सुवर्णादिक लेप।

सोना, मोती, चांदी, मूँगा, कस्तूरी, केशर, गोरोचन, कोड़ी, रुद्राक्ष, मुलहटी, बेलफल, कुष्ठ, खजूर, पुनर्नवा, द्राक्षा, पिपली, सोंठ, पुत्रवती, हरिणका शींग, निवलीका बीज, एरंडका मूल, सरजाती तृण, वायविडंग, श्वेतपुनर्नवा, इन सब दवाइयोंका स्त्रीके दूधमें सन्निपातवालेके बदनको लेप देना इसे सन्निपातनाश होगा १६. और नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खश, देवदारु सोंठ, त्रिफला, धमासा, लघुनीली, कपिला, निशोत, चिरायता, पाठामूल, नागबला, कुटकी, मुलहटी, पिपलामूल, ये मुस्तादि अष्टादशांग गण है इनका शीत काढ़ा सन्निपातज्वरका नाश करता है और तृषा, पित्त अधिक सन्निपात, गर्दनकास्तंभ, हृदय-धातु-हनुस्तंभ, मस्तक, शूल इनपर यह दवा कही है १७. चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, पाठामूल, खश, कमलका बीज इनका काढ़ा देना १८. कचूर, पोहकरमूल, रिंगणी, काकड़ाशिंगी, धमासा, इंद्रजव, पटोल, कुटकी यह शठ्यादिवर्ग सन्निपातज्वर, दमा, खांसी, निद्रा, रातका जागरण, मुखशोष, प्यास, दाह, त्रिदोष इनका नाश करता है १९. और रिंगणी, जंगली वैंगन, पोहकरमूल, भारंगमूल, कचूर, काकड़ाशिंगी, धमासा, इंद्रजव, पटोल, कुटकी, यह बृहत्यादिगण, कफाधिकसन्निपात, दाह, उदर इसका शांति करता है २०. और सोंठ, धनियाँ, भारंगका मूल, पद्मकाष्ठ, रक्तचंदन, पटोल, नीम, त्रिफला, मुलहटी, नागबला, शंखाहुली, कुटकी, नागरमोथा, गजपिपली, करमालेका मगज, चिरायता, गिलोय, दशमूल, रिंगणी इनका काढ़ा देनेसे मृत्यु सरीखे सन्निपातज्वरका नाश करता है २१. और त्रिकटु, त्रिफला, नीम, पटोल, कुटकी, इंद्रजव, चिरायता, गिलोय, पाठामूल इनका काढ़ा देनेसे सन्निपातज्वरका नाश करता है २२. और लघुपंचमूलका काढ़ा शहद डालके पिलावे तो वातादिक सन्निपातज्वरका नाश करता है२३. और चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ इनका काढ़ा वात कफादिक सन्निपातका नाश करता है२४. और पित्तपापड़ा, कायफल, कुष्ठ, खस, चन्दन, काला खस, सोंठ, नागरमोथा, काकड़ाशिंगी, पिपली इनका

काढ़ा प्यास, दाह, अग्निमंद, पित्तकफादिकको नाश करता है २५. भारंगमूल, चिरायता, नीम, नागरमोथा, कुटकी, बच, सोंठ, मिर्च, पिपली, अडूसा, कटुवृन्दावन, रास्ता, धमासा, पटोल, देवदारु, हलदी, पाठामूल, कुचला, ब्राह्मी, दारुहलदी, गिलोय, निसोत, अतिविष, पोहकरमूल, त्रायमाण, रिंगणी, जंगली बैंगन, इन्द्रजव, त्रिफला, कचूर ये सब दवा समभाग लेके इनका काढ़ा करना इसका नाम बत्तीशी काढ़ा है यह १३प्रकारके सन्निपात, शूल, खांसी, हिचकी, दमा, पेटका फूलना, ऊरुस्तंभ, अंत्रवृद्धि, गलेका रोग, अरुचि, संधिग्रह इन रोगोंका जैसे, हाँथीका नाश, सिंह करता है वैसेही येदवाइयाँ भी इन रोगोंका नाश करती हैं२६. चिरायता, देवदारु, दशमूल, सोंठ, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजव, धनियाँ, गजपीपल इनका काढ़ा देनेसे झांपड, बड़बड़, खांसी, अरुचि, दाह, मोह, दमा इनसे युक्त सब सन्निपातज्वरका नाश करता है। इसका नाम अष्टादशांग काढ़ा है २७ और दशमूल, पोहकरमल, पीपल इनका काढ़ादेनेसे सन्निपातज्वर, खांसी, दमा इनका नाशकरताहै२८. बेलफल, निसोत, दंतीमूल, किरमालेका मगज, इसके काढेमें नीलीका चूर्ण और घी डालके देना, यहदवा सन्निपातज्वरका नाश करके दस्त साफ करेगा २९. सोंठ, देवदारु, कचूर, पित्तपापड़ा, रिंगणी, कुटकी, चिरायता, नागरमोथा, धमासा इसके काढ़ेमें पिपलीका चूर्ण और सहत डालके देना जिससे शोष सन्निपातज्वर इनका नाश होता है३०. और आकड़ेके पत्ते, धमासा, चिरायता, देवदारु, रास्ना, निर्गुंडी, बच, एरंड, सैंजन, पिपली, पीपलमूल, चवक त्रिजक, सोंठ, अतिविष, भांगरा इनका काढ़ा देनेसे तीव्र सन्निपात, धनुर्वात, दातखील, शीतश्वास, खांसी, प्रसूतिवात इन सबको नाश करता है३१. और देवदारु, सोंठ, चिरायता, धनियाँ, कुटकी, इन्द्रजव, गजपिपली, दशमूल, नागरमोथा इन अठारह दवाइयोंके काढ़ेको देनेसे मृत्यु सरीखे सन्निपात ज्वर, खांसी, हृदयशूल, पार्श्वपीड़ा, दमा, हिचकी, उलटी, इनका नाश करता है ३२.

मृतसंजीवनी बटी।

बच्छनाग, त्रिकटु, गंधक, टांकणखार, तांबेश्वर, धतूराकेबीज, दर्दुर,

इन दवाइयोंको समभाग लेकर चूर्ण करके भांगके रसमें एक दिन खरल करना फिर उसकी गोली चनेके बराबर बांधना उनमेंसे एक गोली देकर ऊपरसे आकड़ेकी जड़के काढ़ेको पिलानेसे सन्निपातज्वरका नाश होवेगा।

त्रिनेत्र रस ।

शुद्ध पारद शुद्ध गंधक,तांबेश्वर ये समभाग इनके समभाग गौके दूधको डालके तीव्र धूपमें मर्दन करना । एक दिन निर्गुंडीके रसमें,एकदिन सहँजनेके रसमें खरल करके घोला करना.आधे सूसमें रखके तीनप्रहर वालुकायंत्रमें पचाना. सिद्ध होने बाद अष्टमांश शुद्ध बच्छनाग डालके पुनः खरल करना.यह त्रिनेत्र रस दो गुंज पंचकोलके काढ़ेमें व बकरीके दूधमें देना,इससे निःसंशय सन्निपातज्वर दूर होगा ३४. जंगली गोवरीकी राख, मिर्च,बच्छनाग एक तोला लेकर चूर्ण करके बारीक पीसना। यह भस्मेश्वर रस एक गुंज अदरखके रसमें देना जिससे सन्निपातज्वर नाश करता है ३५. अग्निकुमार रस देना ३६. और पंचवक्त्ररस देना. ३७ शुद्ध पारा एक भार धतूराके फलके रसमें एक दिन खरल करना इसकी नास सूंघनेसे सन्निपातज्वरका नाश होता है ३८. और कनकसुंदररस देना. सन्निपातज्वरमें तंद्रा पैदा होती है । यह खराब उपद्रव है इसको युक्तिसे दूर करना ३९. कांसेके पात्रमें उसीके मैलका चूर्ण, कस्तूरी, शहद इसका अंजन करना ४०. और लोहभस्म, लोध, मिर्च, गोरोचन इन प्रत्येक दवाइओंका खरल करके अंजन करना,उससे तंद्रा जावेगा ४१. सैंधवलोन, मनसिल, त्रिकटु इनका शहदमें खरल कर अंजन करना. इससे तंद्रा जावेगा ४२. चमेलीके फूल, तांबूल, मिर्च,कुटकी,बच, सैंधवलोन इनको बकरीके मूतमें घिसके नास देना इससे तंद्रा जायगी ४३. और आंवले पीसना उनमें मुनक्का, सोंठ डालके शहदसे देना उससे खांसी, श्वास, मूर्च्छा, अरुचि दूर होगी ४४ ।

संधिकसन्निपातका उपाय ।

संधिकारी रस, शुद्ध पारा, गंधक, अभ्रकभस्म, त्रिक्षार, जीरा,त्रिकटु, त्रिफला,लोन,समभाग दवा लेकर चित्रकके काढ़ेमें एक दिन मर्दन करना, संधिकारी रस पांच गुंजा शहद और पिपलीसे देना, ऊपरसे गरम पानी

पिलाना इससे सन्निपातज्वर नाश होवेगा ४५. और सन्निपातानलरस देना ४६. और निर्गुंडी, गुग्गुल, राई, नीमके पत्ते, राल इसका धूप देनेसे संधिक सन्निपातका नाश करेगा ४७. निर्गुंडी, नीम, कोष्ठ, भांग, बिनौले, राई, बच, तगर, देवदारु, आकडेकी जड़, किरमाणी, अजवाइन, चित्रक, बेल इनका चूर्ण करके शहद और आसवमें भिगोके उसका धुवाँ देना जिससे सन्निपात, ग्रहपीड़ा, उसी क्षणमें नष्ट होगी ४८. और देवदारु, कचूर, गिलोय रासना, सोंठ इनके काढ़ेमें गुग्गुल डालके देनेसे संधिकसंनिपात दूर होगा ४९. और नागरमोथा, एरंडमूल, जल, पिपली, कोरांटा, देवदारु, गिलोय, रासना, शतावरी, कचूर, कुटकी, अडूसा, सोंठ, दशमूल इनका काढ़ा देनेसे मन्यास्तंभ व संधिकसन्निपात ज्वरका नाश करेगा ५०. और बच, धमासा, गिलोय, भारंगमूल, कोरांटा, देवदारु, नागरमोथा, सोंठ, वृद्ध-दारु, रास्ना, गुग्गल, असगन्ध, एरंडमूल, शतावरी इनका काढा देनेसे संधिक सन्निपात, जड़ता, ग्लानि, भ्रम, पक्षाघात इनका नाश करता है ५१. और रास्ना, सौंठ, गिलोय, कोरांटा, मोथा, शतावरी, हरड़ा, देव-दारु, कुटकी, कचूर, अडूसा, एरंडका मूल, दशमूल. इनका काढ़ा देनेसे गर्दन, अन्त्रवृद्धि, ज्वर, पेट, कमर, संधिका शूल सब संधिरोग इससे नष्ट होते हैं ५२. और गिलोय, एरंडमूल, सोंठ, देवदारु, रास्ना, हर्डा इनका काढ़ा प्रातःकालके देनेसे सब प्रकारके वातरोगका नाश करेगा ५३. और पीपलमूल, बहेडा, किरमालेका मगज, आमला, अडूसा इनके काढ़ेमें एरंडका तेल डालके देनेसे वायु, आमवायु रोगको दूर करेगा ५४. और पञ्चमूल, पीपली, सैंधवलोन, सोंठ इनका चूर्ण कुलथीके काढ़े बराबर लेना ५५. और संधिक सन्निपातपर लंघन, स्वेदन, पिंडी बांधना, गात्र खींचके बांधना और पथ्य कराना ५६. अंतक सन्निपातका उपाय वैद्य बहुत अनुभव लेकर अंतकसन्निपातपर यह विधि करे:-नाचनी (माडवा) का आटा, लहसुनके रसमें मलके उसकी रोटी बनाना और घीमें व तेलमें तलके गरम २ मस्तकको बांधना, दो पहर गये बाद फिर बांधना, इससे अंतकसन्निपात व्यथा दूर होती है। हमारे मतसे इसमें तेल एरंडका लगाना।

मृतसंजीवनी रस।

पारा, गंधक, लोहभस्म, बच्छनाग, हरताल, शुद्धशंख, मनसिल, दर्दुर,

चित्रक, इंद्रायण, अतिविष, त्रिकटु, स्वर्णमाक्षिक, भांग, जैपाल, पलास यह दवाइयाँ सब समभाग लेकर अदरखका रस भांगके काढ़ामें तीन२ दिन खरल करना, निंबूके रसमें एक २ दिन खरल करना, बाद आतशी शीशीमें भरके वालुकायंत्रमें दो पहर पचाना, बाद अदरखके रसमें एक दिन घोटना, जिससे शंकरोक्त मृतसंजीवनीरस तैयार होगा-वह तीन गुंजा प्रमाण अनुपानसे देना, जिससे सन्निपातसे मरण होने योग्य रोगी बचेगा. इस पर पथ्य, दूध, चावल देना अगर यह रस न हो तो आनंदभैरव रस देना५७. और हरड़ा, अडूसा, फालसा, देवदारु, कुटकी, रास्ना, गिलोय, कुष्ठ इनका काढ़ा उपद्रव सहित अंतकसन्निपातको दूर करेगा इसमें संशय नहीं, अंतकसन्निपातको गरमपानी, ज्वरनाशक काढ़े, जूस आदि देना, जीव देनेवाला व ज्वरनाश करनेवाला मृत्युंजय शिव उसको चिंतन करना, कारण कि इस सन्निपातमें वैद्योंने ऐसा निश्चय किया है कि, विष्णु वैद्य और गंगाजल दवा है५८॥

रुग्दाहसन्निपातका उपाय ।

नागरमोथा, रक्तचंदन, सोंठ, खश, काला खश, पित्तपापड़ा इनका काढ़ा ठंढा होने बाद देना जिससे रुग्दाह सन्निपात इससे शांत होता है५९. और हर्डा, पित्तपापड़ा, मोथा, कुटकी, किरमालेका मगज, गोस्तनी, द्राक्षा इनका काढ़ा देनेसे रुग्दाह; सन्निपातको नाश कर देता है६० और ब्राह्मी, द्राक्ष, मोथा, बच, खश, किरमालेका मगज, कुटकी, त्रिफला, नागबला, नीम, कडू तुरई, दशमूल, चिरायता इनका काढ़ा सेवन करनेसे सर्ववात व्याधि व रुग्दाहसन्निपातका नाश करेगा ६१. धनियाँ, चावल रात्रिको भिगोके प्रातःकालको इसकी पेज छानके अंतर्दाह पित्तज्वरवालेको देना६२. कृष्णागरु, कपूर, सलाई, नखला, तगर, खश, चंदन, राल इनका धुवाँ देनेसे रुग्दाह सन्निपात नष्ट होता है६३. बेरीका पत्ता दहीमें पीसके बदनमें लेपकरना६४. कपूर, चंदन, नीमका पत्ता इनको छाछमें पीसके लेप करना ६५. लाहीके आटेमें शक्कर और शहद डालके देना ६६. स्वरूपवती स्त्रीके साथ विलास करनेसे और आलिंगन करनेसे अंतर्दाह शमन होता है६७. हरडेका चूर्ण घीमें देना ६८. और भैरवी बटी देना ६९.

चित्तभ्रमसन्निपातका उपाय।

महुयेकी छाल, नखला, सावरी, पिपली, अर्जुनवृक्षकी छाल, हर्डा, एकांगी, मुरा, रक्तचंदन इनका काढ़ा देनेसे चित्तभ्रमका शमन करता है ७०. द्राख, देवदारु, कुटकी मोथा, आमला, गिलोय, हरडा, किरमालेका मगज, चिरायता, पित्तपापड़ा, पटोल इनका काढ़ा देनेसे चित्तभ्रमसन्निपात दूर हो जाता है ७१. ब्राह्मी, बच, शतावरी, त्रिफला, कुटकी, नागबला, किरमालेका मगज, चिरायता, नीम, पटोल, द्राख, दशमूल इनका काढ़ा देनेसे चित्तभ्रमसन्निपात व रुग्दाहका नाश करता है ७२. हरडा, पित्तपापड़ा, कुटकी, दाख, देवदारु, मोथा, चिरायता, किरमालेका मगज, पटोल, आमला इनका काढ़ा देनेसे चित्तभ्रमसन्निपात दूर होता है ७३. पिपली, मिर्च, बच, सेंधवलोन, करंजके बीज, हलदी, आमला, हरडा, बहेड़ा, राई, सोंठ, हींग इनके चूर्णको बकरीके मूत्रमें खरल करके गोली करके रखना, उसका अंजन नेत्रमें लगानेसे अचेतपना, चितभ्रम, मृगी, भूतबाधा, मस्तकरोग, नेत्ररोग, भ्रम, इनका नाश करता है ७४. अगस्तके पत्तोंके रसमें गुड़, सोंठ, पिप्पली डालके नास देना इससे भी चित्तभ्रमसन्निपात दूर होगा ७५. एकांगीमुरा, खश, मधुकाष्ठ, चंदन, देवदारु, सहत, नखला, पित्तपापड़ा, अगर, वाला, एला इनका धूप देनेसे चित्तभ्रमाख्यसन्निपात व भूतबाधा ग्रहबाधा नष्ट होकर लक्ष्मी प्राप्त होगी और कांति पैदा होगी ७६. चित्तभ्रमसन्निपातमें गजांकुश रस देना ७७. प्राणेश्वर रस देना ७८. मोरेश्वर रस देना ७९.

शीतांगसन्निपातका उपाय।

मृतसंजीवनी रस दो गुंजा देना ८०. सर्वांगसुंदर रस व स्वच्छंदभैरव रस व पंचवक्ररस देना। ये रस शीतांगसन्निपातके नाशक हैं ८१. आकड़ेकी जड़, जीरा, त्रिकटु, भारंगमूल, रिंगणी, काकड़ाशिंगी, पोहकरमूल इनका काढ़ा गोमूत्रमें सिद्ध करके देना जिससे तत्काल शीतांगसन्निपात, मोह, श्वास, कफ इनका नाश करता है ८२. बिजोरा, चिरायता, पीपलामूल, देवदारु, दशमूल, अजमोदा, सोंठ इनका काढ़ा देनेसे शीतांगसन्निपातका नाश करता है ८३. करटोलीका कांदा, पित्तपापडा, कुलथी, पिप्पली, बच, कायफल, स्याहजीरा, चिरायता, चित्रक, कड़ू तुंबा हर्डा

इनका चूर्ण बदनमें लगानेसे शीतांगसन्निपातका नाश होता है ८४. भुने चने, भुनी भांग, कुलीथ इनका चूर्ण बदनमें लगानेसे शीतांगसन्निपात नष्ट होता है ८५॥

तंद्रिकसन्निपातका उपाय।

भारंगमूल, गिलोय, मोथा, रिंगणी, हर्डा, पोहकरमूल, सोंठ इनका काढ़ा तीन दिन देनेसे तंद्रिक दूर होगा ८६. भांगरमूल, पोहकरमूल, हर्डा, रिंगणी, सोंठ, गिलोय इनका काढ़ा प्रातःकाल देना इससे निःसंशय तंद्रिक दूर करेगा ८७. और रास्ना मनसिल इससे सिद्ध किया हुआ तेलका अंजन करना और सैंधवलोन, कपूर, मनसिल, पिपली इन चारोंका घोड़ेकी लार, शहदमें घिसके अंजन करना तंद्रा दूर होगी ८८. पिपली, मनसिल, हरताल इनका अंजन करना तंद्रिक दूर होगा ८९. गिलोय, पटोल इसका काढ़ा त्रिकटुका चूर्ण डालके देना ९०. कुष्ठ, कँवडल, सोंठ, हलदी, दारुहलदी, मिर्च, पीपल, बच यह बकरीके मूत्रमें पीसके नास सूंघाना, तंद्रा रोग दूर होगा ९१. मिर्च, दारुहलही, बच, कोष्ठ, वायबिंडग, सोंठ, हलदी, कँवडल बकरीके मूत्रमें खरल करके देना तंद्रारोग दूर होगा ९२. रिंगणी, गिलोय, पोहकरमूल, सोंठ, हर्डा इसका काढ़ा देना और आगस्त्यके रसमें त्रिकटु घिसके नस्य करना, ऊपरके काढ़ेका नास तंद्रानाश करनेको समर्थ है और सन्निपातकी निद्रा उड़ानेको समर्थ है और तीक्ष्ण नास अंजन करना और मात्रादिक देना इसकी मुद्दत २५ दिनके बाद बचता है ९३।

कंठकुब्जसन्निपातका उपाय।

काकड़ासिंगी, कुड़ा, हरड़ा, मोथा, कचूर, चिरायता, भारंगमूल, हलदी, कुटकी, पोहकरमूल, चित्रक, मिर्च, रिंगणी, अडूसा, आंबला, देवदारु, बहेड़ा, चवक, सोंठ, पिप्पली, कायफल इसका थोडा पिलानेसे कंठकुब्ज सन्निपात दूर होता है ९४. त्रिकटु, इंद्रजव, कुटकी, त्रिफला, दारुहलदी इनका काढ़ा देनेसे कंठकुब्ज दूर होता है ९५. अगर, त्रिफला, त्रिकटु, मोथा, कुटकी, कुड़ेकी छाल, अडूसा, हलदी इनका काढ़ा देनेसे सिंह जैसे हाथीको विदारण करता है वैसा ही इसके सेवन करनेसे कंठकुब्जका नाश करता है ९६. और चिरायता, कुटकी पिपली, इंद्रजव, रिंगणी, कचूर, बहेड़ा, देवदारु, हरड़ा, मिर्च, कायफल, नाग-

रमोथा, अतिविष, आंवला,पोहकरमूल, चित्रक, काकडाशिंगी, अडूसा सोंठ इनका काढ़ा देनेसे कंठकुब्जको नष्ट करता है ९७. और पिपली, अघाडा (अपामार्ग)का रस व त्रिकटु,कडुतुंबेका बीज,पानीमें घिसके नास देनेसे कंठकुब्ज रोग दूर होगा ९८. और सिद्धबटी और आनंद-भैरव रस देना जिससे सन्निपातका नाश होगा ९९।

कर्णकसन्निपातका उपाय।

रास्ना, असगंध, नागरमोथा, रिंगणी, भारंगमूल, बच, पोहकरमूल, कुटकी, काकड़ाशिंगी,हरड़ा इसका काढ़ा देनेसे कर्णसन्निपातकका नाश करता है१००. और रास्ना,रिंगणी,हरड़ा,त्रिकटु,नागरमोथा,कुटकी,पोह-करमूल, काकड़ाशिंगी, आंवला, भारंगी इनका काढ़ा देनेसे कर्णक सन्निपात दूर होगा १. दशमूल, कुटकी,पिप्पली, त्रिफला, सोंठ,चिरा-यता,मिर्च इनका काढ़ा देनेसे कर्णकसन्निपातका नाश होता है २. और हींग,हलदी,कँवडल,सैंधवलोन,देवदारु,आकडेका दूध इसका लेप करनेसे कर्णमूलपर एक दफे व दो चार दफे करनेसे कर्णमूल दूर होगा ३. और नीमकी छाल निंबूके रसमें घिसके लेप देना इससे भी कर्णमूल दूर होगा प्रलेपका उपाय ४. कर्णमूलपर बड़ी सूजन आवे तो लेप देना खून निकालना५. पका हो तो पीब निकालना,व्रणचिकित्सा करना। कुलथी, कायफल, सोंठ, अजवाइन इनको समभाग गरम पानीमें पीसके लेप कर देना ६. पोहकरमूल,दालचीनी, चित्रक,गुड़, कायफल, कुष्ठ, हीराकसीस इन दवाइयोंका चूर्ण आकड़ेके दूधमें घोटके लेप कर देना, सात लेप करनेसे कर्णकसन्निपातको दूर करेगा७.दंतीमूल,थूहर चित्रकमूल,और आक-ड़ेका दूध,गुड़,गोडंबी,हीराकसीस इनका लेप करना८.सोंठ,देवदारु,रास्ना चित्रकके रसमें घिसके लेप देनेसे गलेकी सूजन दूर होगी ९. कुचलेके बीज, बच्छनाग, सांभरका सींग, गूगल इसका लेप गोमूत्रमें घिसके देना व हलदी, गेहूंका आटा, लोन, घी इनकी पुलटिस करके बांधना, पहिले दिन जोंकेसे खून निकलवाना, दूसरे दिन राई, सैंधव,बच,घेरोसा, सोंठ, हलदी पानीमें पीसके लेप देना १०. रक्तरोड़ा, अक्रोड़की छाल,मोती की शींप, कडुतुंबाकी गिर, करेली, लीला थोथा, हरताल, शिरस,मनसिल,

नवसागर, गंधक, हीराकसीस, कुष्ठ, लोन, रक्तलजालू, करंज, गूगल, जवाखार इसके लेपसे कर्णसूल रोग तत्काल नाश करता है ११. मिर्च, पिप्पली सैंधवलोन गरम पानीसे घिसके नाकमें नास देनेसे कर्णरोगका नाश करेगा १२. रक्तस्राव, घृतपान, लेप, दाग देना कफ पित्त नाशक उलटीछुखमेंसे कुल्ला इत्यादि उपाय करना १३. धतूराके बीज, राई, गुड़, एकत्र कांजीमें पीसके लेप देना इससे कर्णकसन्निपात दूर होगा ।

भ्रमनेत्रादिक सन्निपातका उपाय ।

दारुहलदी, पटोल, नागरमोथा, रिंगणी, कुटकी, हलदी, कडूनीम, त्रिफला इनका काढ़ा, भ्रमनेत्र सन्निपातज्वरका नाश करता है१५. मुलहटी, पटोल, कुटकी, थोथा, नीम, देवदारु, रिंगणी इनका काढ़ा देनेसे मोह, पित्तज्वर व उग्र सन्निपातका नाश करेगा १६. मिर्च, असगंध, पिप्पली, सैंधवलोन, लहसुन, महुवाका गोंद, बच, अदरख, बकरेके मूत्रमें घिसके नास देनेसे नेत्ररोगको दूर करेगा १७. चिरायता, शहद, बच, पिप्पली, मिर्च, राई लहसुन, इसका अवलेह करके चटाना और निमक, पिप्पली घिसके अंजन करना और बच, मिर्च, हींग, जेठीमद, अनार इसका नास देना इससे भी नेत्ररोग दूर होगा १८. मार्तंडभैरव रस देना, त्रिभुवनकीर्तिरस अदरखके रसमें देना, सन्निपात नाश होके सब ज्वर जाता रहेगा १९ ।

रक्तष्ठीवी सन्निपातका उपाय ।

पित्तपापड़ा, धमासा, अडूसा, रोहिस, घास इनके काढ़ामें शक्कर डालके देना २०. शीतलचीनीका चूर्ण करके उसकी नास देना मुखका रक्त बंद होगा २१. मोथा, पद्मकाष्ठ, पित्तपापड़ा, चंदन, चमेली, शतावरी, मुलहटी, शहद, नीम, खस, चित्रक, रक्तचंदन, इसका काढ़ा देना २२. रोहिस, घास, धमासा, अडूसा, पित्तपापडा, सावा, कुटकी इनकेकाढ़ेमें शक्कर डालके देना२३. दूधके रसकी व दाडिमके फूलके रसकी व त्रिफला तथा दूबके रसका नास सुंघाना रक्त बंद करता है२४. आमकी गुठलीकी व कांदेके रसकी नास देना व पंचवक्ररस दोगुंजा देना, भस्मेश्वर रस एक खस देना, रसमोरेश्वर

घीसे व सोंठके चूर्णसे दो गुंजा देना ऊपरसे ८ तोला गरम जल पिलाना व सोमपानरस देना रक्तष्ठीवी सन्निपात दूर होगा २२ ।

प्रलापकसन्निपातका उपाय ।

नागरमोथा, वाला, दशमूल, सोंठ, पित्तपापड़ा, रक्तचंदन, धायड़ेकी छाल, अडूसा ये सब समभाग लेके इनका काढ़ा देना प्रलापकसन्निपा-तका नाश करता है २६. तगर, असगंध, कुंभा, शंखाहूली. देवदारु, कुटकी ब्राह्मी, जटामांसी, मोथा, किरमाला, हरड़ा, दाख इसका काढ़ा देनेसे प्रलापक सन्निपातको त्वरित नाश करता है २७. मोथा, दशमूल, खश, सोंठ, चंदन, किरमाला, अडूसा, पित्तपापड़ा, एक २ को पाव तोला लेके काढ़ा देना. प्रलेपकसन्निपात शीघ्र नाश करेगा २८. व पाठामूल, किरमाला, मोथा, कुटकी, जटामांसी, असगंध, ब्राह्मी, दाख, चंदन, दशमूल, शंखाहूली इनका काढ़ा देनेसे प्रलापक सन्निपातको त्वरित नाश करता है २९ ।

मृत्युदूरीकरण रस ।

शुद्धपारा, गंधक २ भाग, मनसिल, बच्छनाग, हिंगुल, कांतभस्म, ताम्र, हरताल, माक्षिक यह एक२ भाग लेके खरल करना उसको अम्ल-वेतसे निंबूका चूक, अदरख, निर्गुंडी इनके रसमें एक २ भावना देना. मुण्डीके रसमें दो दिन खरल करके शरावसंपुटमें डालके कपड़मिट्टी करके भूधर यन्त्रमें चार प्रहर पचन करना, सायंकाल निकालके चित्रकके काढ़ामें दो प्रहर मर्दन करना. इससे मृत्युदूरीकरण रस सिद्ध होगा, इसमेंसे एक मासा अदरखके रसमें हींग, त्र्यूषण, कपूर डालके देनेसे सन्निपातसे मृत्युके समानको तत्क्षण सावधान करेगा. इसपर पथ्य दूध चावल देना ३० ।

पहिला जिह्वकसन्निपातका उपाय ।

बच, रिंगणी, धमासा, रास्ना, गिलोय, सोंठ, कुटकी, काकड़ाशिंगी, पोहकरमूल, ब्राह्मी, भारंगमूल, चिरायता, अडूसा, कचूर इनका काढ़ा देनेसे जिह्वकसन्निपातका नाश करता है३१. सोंठ, पित्तपापड़ा, हलदी, दारुहलदी, त्रिफला, गिलोय, मोथा, रिंगणी, नीम, पटोल, पोहकरमूल, कोष्ठ, देवदारु इसका काढ़ा देनेसे जिह्वकसन्निपातका नाश करता है३२. रिंगणी, सोंठ, पोहकरमूल, कुटकी, रास्ना, गिलोय, भारंगमूल, काकड़ा-

शिंगी, कचूर, धमासा, अडूसा, मोथा, ब्राह्मी, वच, चिरायता इसका काढ़ा देनेसे जिह्वकसन्निपातको नाश करता है ३३. देवदारु, कडूनीम, बहेड़ा, हरड़ा, पटोल, हलदी, दारुहलदी, सोंठ, रिंगणी, पोहकरमूल, मोथा, गिलोय, अडूसा इसका काढ़ा देनेसे कष्टसाध्य जिह्वकसन्निपातका नाश करता है ३४. चिरायता, अकलकरा, कुलींजन, कचूर, पिप्पली इनका चूर्ण सरसोंका तेल और बिजोराके रसमें एकत्र करके मुखमें धरना उससे जिह्वादोष शमन होगा जैसे रामस्मरणसे पापनाश होता है वैसे ३५. कमलका कंद, पिठवण, कोष्ट, शंखपुष्पी, इसका चूर्ण सहत डालके चाटनेसे वाचा शुद्ध करती है ३६. त्रिपुरभैरव रस, सोंठ, सुवर्ण, दारुहलदी, हलदी, त्रिफला, गिलोय, मोथा, रिंगणी, नीम, पटोल, पोहकरमूल, कोष्ट, तेलिया, देवदारु, इनका काढ़ा देनेसे जिह्वकसन्निपातका नाश करता है. बच्छनाग, सोंठ, पिप्पली, गजपिप्पल, आक, रक्त एरंड ये दवाइयां भाग वृद्धिसे लेके अदरखके रसमें खरल करकेरखना उसको त्रिपुरभैरव रस कहते हैं. इसके चाटनेसे जिह्वकसन्निपात नाश होता है ३७. आनंदभैरव रस शहदसे देना और दही चावल पथ्यको देना ३८. व त्रिनेत्राख्य रस देना जिह्वक सन्निपात दूर होगा ३९।

दूसरा जिह्वकसन्निपातका उपाय।

दवा देनेको जबतक आदमी श्वास छोड़ता है तबतक उपाय करना कारण दैवगति अजब है ऐसे रोगोंसे भी बचता है जिसका कोई भरोसा नहीं रहता इसवास्ते दवा जरूर करना ४०. अभिन्यासको एकमास सन्निपातका रस देना व आनंदभैरव रस देना ४१. रिंगणी, जंगली बैंगन, गिलोय, दाख, जीरा, सोंठ, मिर्च, पिप्पली, काकड़ाशिंगी, बायबिडंग, इनके काढ़ेमें चावल भूनके उसकी पेज करके गरमसा देना इससे हिचकी, श्वास, खांसी, अभिन्यास सन्निपात, बादी, बद्धकोष्ठ दूर होता है ४२. रिंगणी, पोहकरमूल, भारंगमूल, कचूर, काकड़ाशिंगी, धमासा इनका काढ़ा देनेसे श्लेष्म शांत होगा ४३. तेंड़, वृन्दावन, त्रिफला, कुटकी, किरमालेका मगज इनके काढ़ेमें जवाखार डालके देनेसे दस्त साफ होके सर्वज्वर जाता है ४४. त्रायमाण, दशमूल,

पोहकरमूल,एरंड,अजवायन, भारंगमूल, गिलोय, अडूसा, कचूर, काकड़ाशिंगी,त्रिकटु,पुनर्नवा इनका काढ़ा गोमूत्रमें करके देना.जिससे अभिन्यास सन्निपात दूर होवेगा४५.रिंगणी,बेलफल,सैंधवलोन,सोंठ,पाषाणभेद,एरंडमूल इनका काढ़ा गोमूत्रसे देना जिससेअभिन्यास शूल जाताहै४६.रिंगणी, धमासा,भारंगी,कचूर,काकड़ाशिंगी, पोहकरमूल इनका काढ़ा देनेसे कफ, पेटकी पीड़ा,अभिन्याससन्निपात जावेगा४७. भारंगी,पोहकरमूल,रास्ना, बेलफल,मोथा,सोंठ,दशमूल,पिप्पली,अतिविष इनके काढ़ामें हींग,अदरख, रसपिपलीका चूर्ण डालके देना.जिससे सन्निपातज्वर,अभिन्यास,हृदय,पीठकी शूल इनका नाश करता है४८.व जयमंगल रस देना ४९. व स्वच्छंद नामक रस देना५०.व बिजोराके रसमें हींग,सोंठि डाल करके मुखमें धारण करना और कटु तीक्ष्ण दवा कानोंमें फूंकना५१. त्रिकटु,सैंधवलोन इनका चूर्ण अदरखके रसमें डालके मुखमें धरना और अदरखके रसमें मिर्च घसके नाकमें नास देना ५२. हींग,सोंठ,भांगरा,निंबू इसके रसमें डालके चटाना ५३व मिर्च,सैंधवलोन,पिप्पली,निर्गुंडी,मोहका फूल,कायफल इन दवाइयों का चूर्ण गरम पानीमें डालके उसके आठ बिंदू नाकमें नास देना५४.व लहसुन,मिर्च,पिपली,सैंधवलोन,बच,शिरसका फूल, सोंठ इन दवाइयोंकाचूर्ण गोमूत्रमें खरल करके अंजन करना.इससे कफवायु, रक्तपित्त,सन्निपात दूर होता है५५. व चमेलीके फूलका अदरखके रसमें मिर्च,कुटकी, बच,सैंधवलोन उसका चूर्ण बकरीके मूत्रमें अंजन करना. तंद्रा नाश होवेगा ५६. व सन्निपातज्वर जिसका ज्ञान नष्ट हुआ होवे उसके दोनों पांव और कपालपर लोखंडके दाग देना.इस माफिक दाग देनेसे सुधिमें नहीं आवे तो भ्रकुटी ललाटपर दाग देना ५७.

हरिद्रसन्निपातका उपाय।

सन्निपात हुये बाद तत्काल व तीन,पांच,सात,दश,बारह,दिन लौटके एक्कीस इतने दिनोंमें चढ़ाव होता है बाद एक्कीस दिनके सन्निपातवाला बचता है यह शास्त्रोक्त मर्यादा है और एक्कीस दिनोंमें धातुपाकवाला रोगी नहीं बचता और मलपाकवाला बच जाता है ५८.

आगंतुकज्वरका उपाय ।

आगंतुकज्वरमें आदमीको लंघन नहीं कराना. अभिघातजन्यज्वर, अविचारज्वर, शापज्वर, इसको होम, देवपूजा, मंगलकारक, रत्नादिकका धारण, तीर्थस्नान, जप, ग्रहपूजा ये करनेसे नाश होता है ५९. अभिघात ज्वरपर उष्ण पदार्थ वर्जित है. तुरस, मधुर, स्निग्ध ऐसी चीजें देना, घीपान, बदनमें घी लगाना, रक्त निकलवाना, शेक देना, पथ्यको मांसरस और भात देना, वेध, बंध, श्रम, बहुत मार्ग चलना, पड़के लगना, ज्वरवालेको दूध, मांसरस, चावल यह देना, बहुत चलनेसे ज्वर आवे तो अभ्यंगस्नान करके दिनको निद्रा करना ६०. काम व शोक व भयसे ज्वर उत्पन्न हुआ तो व शीत हुआ होवे तो शीतभंजीरनामकी रसायन दो गुंज अनुपानसे देना ६१. गंधक, त्रिकटु, इसका चूर्ण घीसे देना, भूतज्वर नाश होगा ६२. गंधक और आंवला समभाग चूर्ण करके दश मासा पर्यंत देना. सब भूतज्वरका नाश करेगा ६३.

भूतज्वरादिकोंका उपाय ।

सोना, चांदी, तांबा, शीसा, इनकी भस्म. गंधक, माक्षिक, मनसिल यह सब समभाग लेकर सबके बराबर शुद्ध पारा लेकर एकत्र करके निंबूके रसमें एक पहर घोटना उसको कुंभपुट देना निकाले बाद खरलकर रखना इसका नाम अष्टमूर्ति रस है, एक गुंज देना जिससे भूतज्वर चातुर्थिकज्वर त्र्याहिकज्वर, द्व्याहिकज्वर नाश होता है ६४. व सोहोंका गोंद, मिर्च, सैंधवलोन, पिपली, बच इनका नास देनेसे भूतज्वर जाता है ६५. त्रिकटुकी नस्य आठ पत्ते तुलसीके रसमें देना भूतज्वर जायगा ६६. सहदेवीकी मूली विधिपूर्वक गलेमें बांधना दो तीन दिनमें भूतज्वरको नाश करता है. सूर्यफूल, वल्लीका मूल, कानमें रक्खे बराबर भूतज्वर जाता है ६७. विजयाको शामको निमंत्रण देके प्रातःकाल उसकी मूल निकालके मस्तकपर बांधना भूतज्वर नाश होगा ६८. श्वेतकावलीकी मूल लाल सूतसे भुजाको बांधना अथवा गला, मस्तकमें बांधना भूतज्वर जाता रहेगा ६९. ककैटेका बिलकी मट्टीका तिलक करनेसे भूतज्वर जाता है ७०. गौका गोवरसे मंडल लीपके उसकी पूजा करना, उसके ऊपर हाथ रखके नीचेका मंत्र एकसो आठवार जपना, वह हाँथ रोगीके मस्तकपर रखना

और पीछे वो मंत्र एकसौ आठ वार जपना. इस तरह तीन दिन करना जिससे सब ज्वर दूर हो जाता है। मंत्र-कालकाल महाकाल कालदण्ड नमोऽस्तु ते। कालदण्डनिपातेन भूम्यंतर्निहितं ज्वरम् ॥ त्रिदिनं कारयेद्देवं हन्याद्भूतादिकान् ज्वरान् ७१.

दुर्गंध ज्वरका उपाय।

दवाके दुर्गंधसे व विषप्रयोगसे जो ज्वर होता है उसपर पित्तनाशक उपाय करना ७२. इलायची, दालचीनी, तमालपत्र, नागकेशर, कपूर, शीतलचीनी, कृष्णागर, केशर, लौंग यह सब मिलाके देना. इसको गंधगण कहते हैं ७३.

कामज्वरका उपाय।

बदनमें सुगंध अतर चंदनादिक लेप लगाके मुक्ताहार जिसके स्तनोंतक पड़ा हुआ है और शृंगार, सुंदरभाषण करनेवाली, चतुर, चित्रिणी रूप, स्त्रीका आलिंगन करनेसे मुलाकात होते ही कामज्वर नाश होता है ७४. सुन्दर झाडों सुन्दर स्थानमें सुगंधित पुष्पशय्यापर शयन करनेसे कामज्वरका नाश होता है और मित्रोंके साथ बाग वगीचोंमें फिरना, तलाब और सरोवरकी वायु लेना, उत्तम स्त्रियोंका गायन सुनना, मंजुल शब्द सुनना,हास्यविनोद करना,खसका, पंखा,चंदन,कपूर,खस इसका उबटन लगाना बदनमें,शुभ्र मेंडी महल इन स्थानमें चंद्रकी चांदनी आवेगी. उस स्थानपर शयन करना ७५.सामके वक्त धनियाँ भिजाके दूसरे दिन हाँथसे मसलके उसके पानीमें शकर डालकर पिलाना ७६. हे सखे कामज्वरपर रस फांट लेप व कषाय व अमृत देनेसे कुछ होता नहीं. लेकिन उसको प्रिय सुंदरीके मुखचुंबनसे शीघ्र ही कामज्वर शांत होता है. कामज्वर वालेको शिवाय कामशांत हुये विना दूसरी दवाका उपयोग नहीं ७७.

भय शोक क्रोध इससे ज्वर उत्पन्न हुआ होवे उसका उपाय।

व्याधादिकभयसे जो ज्वर उत्पन्न हुआ होवे तो रोगीको पानीमें बैठाना शीतक्रियासे भयज्वर शांत होता है. और आनंदकी बातोंसे मनेच्छा पदार्थ मिलनेसे व पित्तशामक पदार्थ खानेसे शोक व भय शांत होता है ७८.

विषमज्वरका उपाय ।

संपूर्ण विषमज्वर सन्निपातसे होता है इसपर उलटी, रेचक, स्निग्ध, उष्ण ऐसा उपाय करना. तक्रपान, मांस, दूध, दही, जंगली मांस इसका भक्षण देना ७९.सोंठ,पीपलमूल,बड़ीसौंप,सुजे आंवले,किरमालाका मगज, हरड़ा इनका काढ़ामें सैंधवलोन डालके देना विषमज्वरका पाचन है८०. काली द्राक्ष,त्रिफला,सोंठ,धनियाँ इसका काढ़ा पाचन है८१.हरड़ा,सोना-मुखी,गुलाबकली इसका काढ़ा देना रेचन है८२.घिकुवारका मूल दश मासे गरम पानीमें देना. जिससे उलटी होगी, विषमज्वर नाश होगा ८३.कडू, पटोल, मुलहटी, चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, हर्डा इसका काढ़ा देना व त्रिफला,गिलोय, अडूसा इनका काढ़ा विषमज्वरका नाशक है८४.मुलहटी, धमासा,अडूसा,त्रिफला,खस,गिलोय, मोथा इनके काढ़ेमें शकर डालके देना तो विषमज्वर जावेगा८५.मोथा,रिंगणी,गिलोय,सोंठ,आंवला इनके काढामें पिपलीका चूर्ण डालके देना विषमज्वर जाता है८६. हलदी, पिपली,मिर्च,सैंधवलोन,तिलोंका तेलसे अंजन करना विषमज्वर जावेगा८७, पिपली, आंवला, हींग, दारुहलदी, बच्छ, शिरस, लहसन इनका नास बकरेके मूत्रमें पीसकर देना जिससे पांचोंतरोंका विषमज्वर जाता है८८.

विषमज्वरपर अंजन लगानेकी तरकीब ।

सैंधवलोन, पिपलीके दाने, मनसिल तेलमें पीसके अंजन करना इससे विषमज्वर जाता है ८९.

विषमज्वरपर चूर्ण व स्वरस देनेकी विधि ।

स्याहजीराका चूर्ण गुड़से व बालहरडाका चूर्ण सहतसे लेना विषमज्वर जाता है ९०. तुलसीदलके रसमें मिर्चका चूर्ण व द्रोणपुष्पीके रसमें मिर्चका चूर्ण डालके देना. जिससे विषमज्वर जाता है ९१।९२.

विषमज्वरादिकोंपर दूसरा उपाय ।

घीकुवारकी जड़ एक तोला शीतोष्ण पानीसे देना. उलटी होके विषमज्वर वातकफज्वर जाता है९३. पिपली दूधमें पीसके पांच तीन नसे

बढ़ाके १०० तक लेना. पथ्य दूध चावल खाना, जिससे वातरक्त, दाह, पांडु, अर्श, गुल्म, सूजन, उदर, विषमज्वर जाता है९४. व जीरा गुड़से मिलायके देना. जिससे विषमज्वर, अग्निमंद, शीत, वात, कफका नाश करता है९५. भृंगराजका पांचो अंग सीधा झाड लाके छायामें सुखा लेना उसके समभाग त्रिफलाका चूर्ण मिलाके सबके बराबर शक्कर मिलाना उसमेंसे अनुपान देखकर ४ तोलातक देना. जिससे अग्निमंद, बद्धकोष्ठ, पांडु, विषमज्वर नाश होगा ९६. दीप्यादिचूर्ण देना, अजमोदा, हरड़ा, हींग, चित्रक, सोंठ, जवाखार, जीरा, स्याहजीरा, पिपली, त्रिफला, कालानमक, सैंधवलोन इनका चूर्ण देनेसे विषमज्वर जाके अग्निको बढ़ाता है९७. घी, सहत, दूध, पिपली, बनारसी शक्कर इन पांचोंको एकंदर करके हलाकर देना. जिसमें विषमज्वर, हृदयरोग, खांसी, दमा, क्षय इनका नाश करता है९८. व लहसनका कल्कमें तिलोंका तेल और सैंधवलोन मिलाके प्रातःकालमें देना इससे भी विषमज्वर, वातरोग जाता है ९९. गुडूचीकल्क—गिलोयका चूर्ण १६ तोला वस्त्रछान लेके उसमें गुड़, सहत, घी ये दर एकचीज १६ तोला डालके एकंदर करना और अग्निबल देखकर देना. जिससे सब व्याधी, बुढापा, पलितज्वर, विषमज्वर, प्रमेह, वातरक्त, नेत्ररोग ये कभी न होगा और यह रसायन बुद्धि देनेवाली है; त्रिदोष नाश करनेवाली है; इसका सेवन करनेवाला पुरुष १०० बरस जीवित रहेगा और ताकत कभी कुछ घटनेकी नहीं १००. व विषमज्वरपर महाज्वरांकुश रस देना १. व मेघनाद रस देना २. गोपिंझ्यादि घी उपलसरी, भुंजे आंबला, आंबला, सालवण, पिपली, कुटकी, खस, मनुका, बालबेल, रिंगणी, रक्तचंदन अतिविष, मोथा, इंद्रजव इनके काढ़ामें घी सिद्ध करकें देना. जिससे विषमज्वर, क्षय, मस्तक, शूल, अरुचि, उलटी, प्यास, संधिगतकी उष्णता, वातको नाश करता है. ये घी रोज २ तोला देना ३. व अडूसा, नीम, गिलोय, रिंगणी, पटोल इन पांचों चीजोंके काढ़ेमें घी सिद्ध करके देना जिससे विषम, पांडु, कोढ़, विसर्प, जंत, मूलव्याधी नाश होता है. इसको पंचतिक्त घी कहते हैं ४.

कल्याणकारी घी।

वायविडंग, मोथा, त्रिफला, मंजिष्ठ, अनार, नीलाकमल, पिपली, खश,

इलायची, चंदन, कृष्णागर, देवदारु, काला खश, कोष्ठ, हलदी, सालवण, उपलसरी, पित्तपापड़ा, काला, पित्तपापड़ा, तेंड, दांतीमूल, बच, तालीसपत्र, नागबला, कडू, वृंदावन, रिंगणी, मालती, पिठवण ये सब दवा तोला १ लेके कल्क करना और उससें एक शेर घी, चारशेर दूध और दो शेर पानी डालके घी सिद्धकर लेना. इसको कल्याणकारी घी कहते हैं ये देनेसे त्रि-दोष, विषमज्वर, श्वास, खांसी, गुल्म, उन्माद, ज्वर ये रोग नाश होते हैं ५ सोंठ, चवक, जवाखार, पिपली मूल, चित्रक, पिपली, प्रत्येक चार ४ तोला लेके उसका काढ़ामें व कल्कमें १ शेर घी अदरखका रस १ शेर शहत १शेर डालके सिद्ध करना ये देनेसे ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातु-र्थिक इन सर्व ज्वरका नाश करके स्थूलपना देता है. आर्ष, श्वास, खांसी इसका नाश करता है और बल, वर्ण अग्नि इनको बढ़ाता है ६.

लाक्षादिकतेल बनानेकी विधि ।

लाखका काढ़ा २५६ तोला लाखके काढ़ामें ६४ तोला तेल और द-हीकी निवली २५६ तोला एकंदर करके उससें बड़ीसौंफ, हलदी, मोरवेल, कोष्ठ, पित्तपापड़ा, कुटकी, महूका फूल, रास्ना, असगंध, देवदारु, मोथा, चंदन ये दरएक तोला १ लेकर उसका कल्क करके उससें डालना डालके तेल सिद्ध करना उससे वात, विषमज्वर, खांसी, श्वास, जुखाम, कंडू, बद-नकी दुर्गंधि, सुखपीठा, कमरका दर्द, शूल, गात्रस्फुरणता, पाप, औदसा, ग्रहदोष उनका नाश करता है, ये तेल अश्विनीकुमारने पैदा करके देवता-ओंका कहा है ७.

षट्चरण तेल बनानेकी विधि ।

लाख, मुलहठी, मंजिष्ठ, मोरवेल, चंदन, उपलसरी इसके काढ़ामें तेल सिद्ध करके अभ्यंग करना सब ज्वर नाश होगा ८.

ज्वरनाशक धूप बनानेकी विधि ।

बकरीका चमड़ा, केस, बच, कोष्ठ, गूगल, नीमके पत्ते, सहत इसका धूप देनेसे ज्वरनाश होता है । बच, हरड़ा, घी इसका धूप देनेसे विषमज्वर जाता है. व मसूरका भूसाके धुएँसे सब ज्वरका नाश होता है व सहदेवीकी

मूली, बच, हलदी, रास्ना इनका धूप देनेसे व उसका अंगको लेप देनेसे ज्वर शांत होता है ९. गूगल, रोहीसा, घास, बच, राल, नींव, आखाचंदन, दारुहलदी इनका धूप देनेसे सब ज्वरका नाश होता है १०. सांपकी केचुलि, शिरस, हींग नींबके पत्ते समभाग चूर्ण करके इनका धूप देना. जिससे राक्षसपीडा विपम ज्वर नाश होगा ११. लाख, बच, नींबके पत्ते, कोष्ठ हर्डा, शिरस, जव इसके धूपमें घी डालके देना ज्वर शांत करता है १२.

माहेश्वर धूप बनानेकी विधि।

कपाशिया, मोरकी पंख, रिंगणी, लजालु, गेल, दालचीनी, बिल्लीकी विष्टा, नखला, बच, केस, सांपकी केंचुलि, हाथीदंत, शिंग, हिंग, मिर्च ये सब समभाग चूर्ण करके इसका धूप देना. जिससे स्कंध, ग्रह, उन्माद, पिशाच, यक्ष, राक्षस, देवअंगमें आनेवाला ये सब नाशको पाते हैं और विषमज्वर जाता है १३. बिल्लीकी विष्ठाका धुवाँ देनेसे थंडी बजनेवाला ज्वर जाता है १४. मसान भूमीपरसे सहदेवीकी मूली, व दूबकी मूली सूत्रमें लपेटके हाथको बांधनेसे सब ज्वर जाता है १५. व अनुराधा व उत्तराभाद्रपदा इन नक्षत्रोंमें आंबा व कन्हेर व ढाक (पलस) इसकी जड़ हाथको बांधना इससे भी ज्वर जाता है १६. घुघ्घूका सीधे बाजूका पांख लेके सफेत सूतमें डावा कानको बांधना ऐकाहिक ज्वर जाता है १७. भूतकेशकी मूली लेके उसके सात टुकडे करना लालसूतमें माला करके हाथमें बांधना ज्वरनाश होता है १८. निर्गुंडी सहदेवी इनकी मूली रविवारको प्रातःकाल कमरको बांधे तो संपूर्ण ज्वर नाश होता है १९ रविवारको सफेत कन्हेरकी व सफेत मदारकी मूली कानमें बांधनेसे सब ज्वर जाता है २०.

संततज्वरादिकोंपर उपाय।

पटोल, इंद्रजव, देवदारु, गिलोय, नींबका पत्ता इनका काढ़ा पिलानेसे संततज्वर जावेगा २१. पटोल, इंद्रजव, देवदारु, त्रिफला, मोथा, दाख, मुलहटी, गिलोय, अडूसा इन ११ दवाइयोंके काढ़ेमें सहत डालके देनेसे संततज्वर, द्व्याहिक, त्र्याहिक, ऐकाहिक, विषमज्वर, दाहपूर्वकज्वर, नवज्वर उसका नाश होता है २२. कडुपटोल, इंद्रजव, धमासा, हर्डा, कुटकी और

गिलोय इनका काढ़ा देनेसे संततज्वर नाश होता है २३. आंबला, मोथा, सोंठ, रिंगणी, गिलोय इसके काढेमें सहत और पिपली डालके देना २४. कुटकी, अजवाइन, अजमोदा, चिरायता, गिलोय, सोंठ, पिपली, संचर और सैंधव, इसका चूर्ण छः मासे गरम पानीसे देना सब ज्वर नाश होगा २५. पटोल, हर्डा, नींब इंद्रजव, गिलोय, धमासा, इनका काढ़ा देना २६. द्राक्ष, पटोल, नींब, मोथा, इंद्रजव, त्रिफला इनका काढ़ा देना २७. चंद्रग्रहणके दिन नकुलवेलको न्योतके आना उसकी मूलीको लाके सूतसे डावा कानमें बांधना इससे एकाहिकज्वर जाता है. सीधे कानमें बांधनेसे द्व्याहिक ज्वर जाता है २८. कुमारीके हाथसे सूतकताका लटजीराकी मूली चोटीमें बांधना. ऐकाहिकज्वर अतिवेगसे जाता है २९. काकमाचीकी मूली कानमें बांधनेसे रात्रिका ज्वर जाता है ३०. मशानपरसे सुंगपेसवेल नकुलकी मूल रविवारको लेके घीसे घिसके ललाटको तिलक करनेसे एकाहिक ज्वर जाता है ३१. अंग, वंग, कलिंग, सौराष्ट्र, मगध इन देशके अंदर व श्रीकाशीक्षेत्रमें एकाहिकज्वरका स्मरण करके दान देना. और सरस्वती तीरपर अपुत्र तपसी मरा हो उसको तिलांजलि देनेसे ऐकाहिक ज्वर जाता है ३२. घुघुवाका डावा पर लालसूतमें लपेटके सीधे हाथमें बांधना जिससे द्व्याहिकज्वर, त्र्याहिकज्वर जाता है ३३. कोल्याके जालीके सूतकी बत्ती करके तिलके तेलमें भिजाकर कज्जल पाडना वह कज्जल दोनों नेत्रमें डालनेसे द्व्याहिकज्वर जाता है ३४. दर्दूर, वच्छनाग, समभाग खरलके एक गुञ्ज देना. एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक ज्वर जाता है ३५.

त्र्याहिक ज्वरका उपाय ।

सोंठ, गिलोय, मोथा, चंदन, खश, धनियां, इसका काढ़ा शक्कर और सहतमें डालके देनेसे ज्वर जाता है ३६. रक्तचंदन, धनियां, सोंठ, खश, पिपली, मोथा, इनके काढ़ेमें शहद मिश्री डालके देना. इससे तीसरे दिनका ज्वर जाता है ३७. खश, चंदन, मोथा, गिलोय, धनियां, सोंठ इसके काढ़ेमें शक्कर और सहत डालके देना. तीसरे दिनका ज्वर, तृषा, दाहपूर्वक ज्वर जाता है ३८. शीत भंजीर रस दो गुञ्ज अनुपानसे देना और मूसली कांजीमें पीसके देना. अघाडेकी मूली

रविवारको लाल सूतमें लपेटके कमरमें बांधना.व वराहकंधकी मूल, व घुघ्घूका पर, पंचरंगी रेशममें बाहुको व गलेको बांधना. इससे तीसरे दिनका ज्वर जाता है ४४.

चातुर्थिकादिकज्वरका उपाय ।

पटोल,अडूसा,आंवला,सालवण,देवदारु,धनियां,सोंठ,इसके काढ़े में शकर डालकर देना४५. देवदारु, बालहरड़ा, अडूसा, रानगांजा, सोंठ, आंवला इस काढ़ेमें शहद और शकर डालके देना४६.रिंगण,खश,जंगली बैंगन,मोथा,महूका फूल,हरड़ा,असगंध,सोंठ, गिलोय,अडूसा,पित्तपापड़ा इसके काढ़ेमें पिपली और शहत डालके देना.जिससे दाह, पसीना, प्यास जंकृति रक्त,शैत्य,भ्रांती,श्वास,फूल दिनके ज्वर,रात्रिके ज्वर, चौथेदिनका ज्वर नाश होगा४७.दारुलहदी,देवदारु, इंद्रजव,मंजिष्ठ,किरमालाका गज, पाठामूल,कचूर, पिपली,सोंठ,चिरायता,गजपिपली,त्रायमाण, पद्मकाष्ठ, बच,धनियांअदरख,मोथा,सुरुवा,सेवगाँ,दालचीनी,हरड़ा,रिंगणी,पित्तपापड़ा,दर्भमूल,कुटकी,धमासा,गिलोय,पोहकरमूल इनका काढ़ा देनेसे धातुगतज्वर,विषमज्वर,त्रिदोषज्वर,ऐकाहिक,द्व्याहिक,त्र्याहिक,चातुर्थिकज्वर नाश करता है और इसका चूर्ण देनेसे सबरोग दूर होता है४८.सफेद सांठाकी जड़को दूधसे व तांबूलसे देना. जिससे बहुत दिनोंका व चौथेदिनका ज्वर जाता है४९.और पुराने घीमें हींग घसके नास देना.जिससे चौथे दिनका ज्वर जाता है,जैसे सुंदरस्त्रीदेखनेसे साधुपना जाता है५०.हदगाके पानका रसकी नास देनेसे चौथे दिनका ज्वर जाता है५१.कालेकपड़ेमें गुग्गुल और घुघ्घूकी पर बांधना चौथे दिनका ज्वर जायगा५२.शिवपूजा और जप विष्णुसहस्रनाम, आदित्यहृदयका पाठ, सूर्यकी उपासनासे शीतज्वर जाता है५३.और माहेश्वर धूप देना.दोदिनका तीसरे दिनका ज्वरपर जो धूप और मूलीका बंधन तंत्र लिखा है सो शीतज्वरपर हितकारक है५४. जीरा, लहसुन, त्रिकटु, पाडल ये दवा गरम पानीसे पीसके कल्कमें गुड़ डालकेशीतज्वरपर देना ५५.काकडी खाके ऊपरसे खट्टीछाछ पीना और

शेकना व कपड़ा ओढ़के धूपमें बैठना. जिससे पसीना आके शीतज्वर नाश होगा ५६. तुलसी, रास्ना, कुटकी, दारुहलदी, गुग्गुल, गटोना, चिकना, बच, कोष्ठ, इनका धूप देना. व लेप देना. व इन सब दवाइयोंके कल्कमें सैंधव-लोन, जवाखार, निंबूका रस डालके तेल सिद्ध करना. उसका अभ्यंग करनेसे शीतज्वर जाता है ५७. गुर्देके ऊपरके कपड़ाका धुंआ देनेसे शीतज्वर जाता है ५८. जयेका मूल मस्तकमें बांधनेसे शीतज्वर जाता है ५९. देवडांकरीका मूल कानमें बांधे तो रात्रिका ज्वर जाता है ६०. आमकी जड़ चोटीमें व हाँथमें बांधनेसे उष्ण ज्वर जाता है ६१. पूनर्वसुनक्षत्रमें मदारकी जड़ सीधे हाथको बांधना. शीतज्वर नाश होवेगा ६२. चित्तको हर्ष देनेवाली पुष्ट-स्तनकी तरुणी स्त्री बदनमें कस्तूरी अतर लगाके ऐसी स्त्री का आलिंगन करना ठंढी नाश हुये तक शीतज्वर नाश होता है. शीतबंद हुये हर्षित पुरुष को स्त्रीसे दूर रखना चाहिये ६३.

शीतज्वर जानेका उपाय।

हरताल, शीपका चूना समभाग इनका नववाँ भाग लीलाथोथा डालके घीकुवारके रसमें खरल करना. सुखाके गजपुट देना शीत हुये बाद निकालके खरलके एक गुंजभर शक्करके साथ प्रातःकाल देना, जिससे शीतज्वर एकदिनमें जाता है. दोपहरको चावल और सिखरन खानेको देना. इस दवासे कोईको उलटी होती, कोईको नहीं होती. इसका नाम भूतभैरव रस है ६४. हरडा, इंद्रजव इनका चूर्ण एकतोला गुड़में मिलाके देना. तत्काल शीतज्वर जाता है ६५. हरिद्रादि चूर्ण देना ६६. पारा, गंधक, पिपलमूल, वंशलोचन, जैपाल, त्रिकटु, पंचलवण सब समभाग तांबूलकेरसमें एकदिन खरल करना, उसमेंसे दो गुंज तांबूलसे देना, जिससे संपूर्ण ज्वर सन्निपात दूर करता है ६७. शीतांकु, थूथिया, टंकणखार, शुद्धपारा, कपरिया, बचनाग, गंधक, हरताल सब समभाग लेके खरलमें करके रसमें खरल करना, उसकी गोली एक गुंजकी बांधना एक गोली शकर और जीरासे देना जिससे एकदिनका २रेदिनका, ३रेदिनका, चौथेदिनका ज्वर नाश होता है ६८. तालकादि शीताद्रि रस भूतभैरवरस देनेसे शीतज्वर जाता है ६९.७०॥

दाहपूर्वकज्वरका उपाय।

एरंडका पत्ता निपीहुई जमीन पर बिछाके उसपर ज्वरवालेको सुलाके उसके वदनको लपेटना जिससे दाह शांत हुये बाद शीत होगा सो युक्तिके साथ निवारण करना ७१. दाह जुरवा लेके नाभिपर तांबेके व कांसेके वर्तनसें थंडेपानीकी धार डालना.दाह शांत होगा७२.सज्जीखार, सोंठ. कोष्ठ, मोखेल,लाख, हलदी,पतंग,काष्ठ, मुलहटी,इसके काढ़ामें तेल और तेलके छेपट,छाछ डालके तेल सिद्ध करना वह तेल दाह शांत करता है७३. और इस ज्वरपर पित्तज्वरपर और रक्तज्वरपर इलाज है सो करना ७४.

रसादिकधातुगतज्वरका उपाय।

रसगतज्वरको वमन और लंघन कराना७५.और पसीना निकलवाना. रक्त धातुगत ज्वर हुआ हो तो रक्तमोक्ष करना.मांसधातुगतज्वर हुआ होवे तोजुलाव देना.मेदधातुगत ज्वरमें जुलाब और उलटी देके पसीना निकलवाना. हड्डीगत ज्वर हुआ तो पसीना निकालना मर्दन कराना.मज्जा और शुक्रगत हुआ हो तो असाध्यहै७६.खैर,त्रिफला,नीम,पटोल,अडूसा,गिलोय इसका काढ़ामें शहद और घी डालके रक्तगत ज्वरको देना ७७. त्रिफला, अजवाइन,रिंगणी,हलदी,वेणूका वीज, अडूसा इसके काढ़ेमें शहद डालके देना,रक्तज्वरका नाश करेगा ७८.रक्तगतज्वरवालेको अंगपर पानी छिड़कना और ज्वरशमक और पित्तशमक दवा है सो देना.रक्त निकालना और पित्तज्वरकी दवा देना ७९.

मांसगतज्वरका उपाय।

मांसगतज्वर वालेको तीक्ष्ण जुलाब देना और ज्वरगणोक्त उपाय करना ८०. मेदगत और अस्थिगत ज्वरवालेको उलटी नाशक औषधी देना.बस्तीकर्म अभ्यंग ये उपाय करना और दूधके साथ वृद्धमान पिपली देना ८१. व शहदके साथ वृद्धमान पिपली देना८२. स्वर्णमालिनी वसंत देना ८३. और लघुमालिनी वसंत देना ८४. व वसंत कुसुमाकर वसंत देना ८५. व गिलोयका सत्त्व अनुपानसे देना ८६. व सर्वेश्वर रस देना ८७. कुटकी, नागरमोथा, पिपलामूल, बालहरड़ा इनका काढ़ा देनेसे आमांशगतकाज्वर जाता है ८८.

नवज्वर व सर्वज्वरपर उपाय ।

त्रिपुरभैरव रस ८९. रत्नागिरि रस ९०. नवज्वरेभसिंह रस ९१.ज्वर-जीवटिका ९२. विश्वतापहरण रस ९३. श्वासकुठार रस९४.उदक मंजिरी रस ९५.ज्वरधूमकेतु रस ९६.ज्वरांकुश रस ९७.अमृतकलानिधि रस९८. पंचामृत रस९९. जीर्ण ज्वरांकुश१००. धातुज्वरांकुश१. पिपलीपाक २. सेवंतीपाक ३. सुदर्शन चूर्ण ४. महाज्वरांकुश५. अपूर्वमालिनीवसंत ६. लघु सूचिका भरण रस७.जल चूड़ामणि रस८.कनक सुंदर रस९.सन्निपात भैरव रस १०.रस पर्पटी११.रवि सुंदर रस१२.बालार्क रस१३.गदमुरारी रस १४. त्रिभुवनकीर्ति रस१५. मृतप्राणदायी रस यह जो रस है सो देना. सबज्वरको, धातुगतज्वरको, विषमज्वरको, सन्निपातज्वरको, आगंतुक ज्वरको योग अनुपानसे सर्व रोगोंका बिनाश करते हैं ये रसके अध्यायमें लिखा जायगा सो जीर्ण आदि सर्व ज्वरोंपर देना.जिससे सर्वज्वरोंकी फायदा होके आरोग्य होगा१६. दाख,गिलोय,सोंठ इनके काढ़ामें पिपलीका चूर्ण डालके देना.जिससे श्वास,शूल,खांसी,अग्निमंद,जीर्णज्वर,तृषा इनका नाश होता है १७. पिपली,त्रिफला इसका चूर्ण शहदसे चाटना अग्नि प्रदीप्त होके भेदक है १८. कायफल, मोथा, कुटकी,कचूर काकड़ाशिंगी, पोहकरमूल इसका चूर्ण शहदसे व अदरखके रससे देना.जीर्णज्वर,खांसी,श्वास,अरुचि, बादी,शूल,डबकाई क्षय ये जाते हैं १९.पिपली,उपलसरी,त्रिफला इनका चूर्ण समभाग शक्कर मिलाके देना.पेटमेंकी शूल,दाह,जड़पनाज्वर इसका नाश करता है २०. लौंग,जायफल,पिपली,मिर्च,सोंठ इनके चूर्णमें शक्कर डालकर देना २१ ।

वर्धमान पिपलीयोग ।

पावसेर गायके दूधमें पावसेर पानी डालके उसमें पहिलेदिन एक पिपली, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन इस माफिक ४१ व इक्कीस२१ पिपली तक चढ़ाते जाना और एक२कम करते २घटाना.काढ़ा करके पानी जलकेदूध शेष पीना जिससे खांसी,जीर्णज्वर,अरुचि,श्वास,हृदयरोग,पांडु रोग,कृमि,मंदाग्नि,विषमाग्नि इसका नाश करके आरोग्य करता है, इस

माफिक पिपली गुड़से व शहदसे व घीसे वृद्धि करके लेना व दूधमें पीसके लेना. ऊपर लिखे सब रोग कामला,स्त्रियोंका प्रदर,प्रमेह इसका नाश करेगा २२.

पिपली मोदक।

शहद १ भाग, घी २ भाग,पिपली ४ भाग, शकर ८ भाग, दूध ३२ भाग, चतुरजातक १ भाग इस माफिक डालके पचन करना पचन करके मोदक वांधना. रोज खाना. जिससे धातुगतसंपूर्ण ज्वर, दमा, खांसी, पांडुरोग, धातुक्षय, अग्निमांद्य इसका नाश करेगा २३.

पिपलादि घी।

पिपली, चंदन, मोथा, खश,कुटकी,इंद्रजव,आंवला,उपलसरी,अति-विष, सालवण, द्राक्ष,आंवलोंका बीज, त्रायमण, रिंगणी, इसके काढ़ेमें और कल्कमें घी सिद्ध करना जिससे जीर्णज्वर,क्षय, खांसी, मस्तकशूल, पीठकी शूल, अरुचि,बदनकी तप्तता,अग्नि इसका नाशकरता है. इसका पचन दूधमें करना २४।

पिपली पाक।

पिपली ६४ तोला लेके दूधमें चटनीके माफिक पीसना १२८ तोले घीमें डालके मंदाग्निसे पचाना और १०२४ तोला शकरकी चासनी लेना उसमें वह पिपली, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर इनका चूर्ण १२ तोला डालना. उसको बर्फीके माफिक टुकड़े करना और रोगीका बल देखके देना. जिससे धातुवर्धक, बलकारक हृदयको हितकर तेज बढ़ानेवाला जीर्णज्वर, क्षतक्षय,क्षीणता नाशक, पुष्टि करने-वाला है और डबकाई, प्यास, अरुचि, श्वास, शोष, जिह्वारोग, पीलिया, हृदयरोग, पांडुरोग, प्रदर, त्रिदोष, वात, रक्त, जुखाम, आमवात इसका नाश करता है यह पाक एक वर्ष लेगा तो बूढा भी तरुण होगा २५।

सेवंती पाक।

सफेद सेवंतीके फूल१००सौ तोला लेके घीमें सिजाना उसमें मिश्री चौपट दालचिनी,तमालपत्र,इलायची,नागकेशर यह दरएक चार२तोले दाख२४

तोला शहद ३२ तोला गिलोयका सत्व २ तोला यह सब एकंदर करके उसका पाक करना उसमेंसे प्रातःकालको एक तोला देना. जिससे जीर्णज्वर, क्षय, खांसी, अग्निमंद, प्रमेह, ऊर्फ सुजाक, प्रदर, रक्तविकार, कोढ़, आर्शरोग, नेत्ररोग, मुखरोग इसका नाश होता है २६ .

सुदर्शन चूर्ण ।

हरड़ा, बहेड़ा, आंवला, हलदी, दारुहलदी, रिंगणी, कचूर, मोथा, रिंगणी, सोंठ, मिर्च, पिपलामूल, मोरवेल, गिलोय, धमासा, कुटकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, त्रायमाण, नेत्रवाला, कडूनींब, पोहकर मूल, ज्येष्टीमध, कुड़ेकी मूल, अजमोदा, इंद्रजव, भारंगमूल, शेवगाके बीज, सोरठी मट्टी (तुरटी) बच, दालचिनी, पद्मकाष्ठ, खश, सुफेदचंदन, अतिविष, नागबला, रानगांजा, रानभाल, वायविडंग, तगर, चित्रक, देवदारु, चवक, पटोलपत्र, जीवक, ऋषभ इनके प्रतिनिधि बिदारीकंद, लवंग; वंशलोचन, सफेदकलम, कंकोली मिलती नहीं इसके अभावमें मुलहटी, तमालपत्र, जायपत्री, तालीसपत्र यह बावन दवाइयाँ समभाग लेके इससे आधा कडूचिरायता, मिलाके सबका चूर्ण करना इसका नाम सुदर्शन चूर्ण है ये ठंडे पानीसे देना. जिससे वातपित्तकफज्वर, जीर्णज्वर दूर होता है इसमें संशय नहीं. वातज्वर, पित्तज्वर, कफज्वर और द्वंद्वज्वर, आंगतुकज्वर, धातुगतज्वर, विषमज्वर, सन्निपातज्वर, मानसज्वर, शीतज्वर, एकाहिकादिकज्वर, दूर होते हैं. मोह, नेत्रकी झांपड़, भ्रम, तृषा, श्वास, खांसी, पांडुरोग, हृद्रोग, पीलियेरोग, दूर होते हैं. और पीठ कमर गोड़े कूख पेट और पसली बस्ती इसका शूल दूर होता है. इस पर दृष्टांत—जैसा दानवोंका नाश सुदर्शन चक्र करता है. वैसा यह सुदर्शन चूर्ण सर्व ज्वरका नाश करता है. इसमें संशय नहीं २७ ।

मंत्र—वज्रहस्तो महाकायो वक्रतुण्डो महेश्वरः ।
हतोऽसि वक्रतुण्डेन भूम्यां गच्छ महाज्वर ।
ताडपत्रे लिखित्वा तु कंठे बाहौ च बंधयेत् ।

ऊपरका मंत्र ताडपत्रपर लिखके कंठमें व भुजापर बांधे तो ज्वर जाता है २८. शुद्धपारा, गंधक, नागभस्म, लोहभस्म, अभ्रक, ताम्र यह सम-

भाग और पारासे आधा वचनाग सबका खरल करके रखना. यह गदमुरारि रस एक गुंज अदरखके रसमें देना जिससे तारुण्य और आमाशयका ज्वर एक दिनमें नाश करेगा. बालार्क रस शुद्ध पारा, गंधक, हिंगूल, जमालगोटा चारों दवाइयाँ समभाग दंतीमूलके काढ़ेमें खरल करके दो गुंजकी गोली करना. एक गोली देनेसे जैसा सूर्य अंधकारका नाश करता है वैसा ज्वरको एकदिनमें नाश करेगा ३०.

त्रिभुवनकीर्ति रस

दर्दूर, बचनाग, सोंठ, मिर्च, पिपली, टांकणखार, पीपलमूल यह सब दवाइयाँ समभाग लेके खरल करना. उसको तुलसीका रस अदरखका रस धतूरेके रसकी तीन २ भावना देना. इसकी गोली गुंज प्रमाणका बाँधना एक गोली अदरखके रसमें देना. जिससे सब ज्वर और तेरह प्रकारका सन्निपातका नाश होता है ३१.

पंचामृत रस ।

सोनाभस्म १ भाग, चांदीभस्म २ भाग, ताम्रभस्म ३ भाग, नागभस्म ४ भाग, लोहभस्म ५ भाग सब एकंदर करके सुसरीके पित्तकी भावना देके खरल करना. जिससे संपूर्णज्वर शांति होनेको दो गुंज अदरखके रसमें देना. (सुसरी मकरको कहते हैं) ३२.

सुवर्णमालिनी वसंत ।

सोना १ भाग, मोती २ भाग, दर्दुर ३ भाग, सुफेद मिर्च ४ भाग, कलखपरी ५ भाग सबका एक जगह खरल करके उसमें अढाई तोला गाईका मस्का डालके एक दिन खरल करना. बाद बयालीस ४२ दिन तक निंबूके रसमें खरल करना यह वसंत उत्तम होता है यह एक गुंज व दो गुंज शहद और पिपलीसे देना. उससे पुष्टि आके जीर्णज्वर, क्षय, खांसी, श्वास, शैत्य, बवाशीर, वायु, गुल्म, धातुगतज्वर, कृशपना, बालकोंका रोग, वृद्धका रोग, गर्भिणीका रोग, प्रसूतिकारोग, सुवारोग दूर होता है. इसमें पथ्य दूध और चावल खाना ३३.

लघुमालिनी वसंत।

कलखापरी १ भाग, सफेद मिर्च आधा भाग एकंदर करके उसमें माखन डालके पूर्वोक्त विधि करना ३४.

सरा लघुमालिनी वसंत।

कलखापरी १ भाग, मिर्च एक भाग उसमें पाव भाग गाईके दूधकी मलाई डालके खरल करके निंबूके रसमें पूर्वोक्त खरल करना. पथ्य ऊपर लिखा है सो करना ३५.

अपूर्व मालिनी वसंत।

तोरमल्लीकभस्म, अभ्रकभस्म, तांबेश्वर, सुवर्णकी भस्म, माक्षिक, चांदीभस्म, वंगभस्म, प्रवालभस्म, पारा, पोलादभस्म, टांकणखार, शंखभस्म ये समभाग लेके शतावरी, हलदी इनकी भावना सात २ वार देना और चांदनीमें रखना और एक वाल शहद और पिपलीसे देना. जिससे जीर्णज्वर, धातुगतज्वर जायगा और गिलोयके सत्वसे देनेसे सब परमा जायगा बिजोराके पत्तोंकेरसमें दे तो अश्मरी याने मूतखडा फत्री इसका नाश होता है ३६.

ज्वररोग वालेको पथ्यापथ्य।

उलटी, लंघन कराना, बड़ी फजिरमें यवागू देना, पसीना निकलवाना, तीखा और तुरस रस ये पाचन उपाय तरुणज्वरपर करना १ सन्निपातज्वरपर सब पथ्य करना २ आमज्वरपर कफनाशक क्रिया करनी याने अवलेह, अंजन, नास, कुल्ला, पसीना निकलवाना ज्वररोग वालेको पथ्य है (अपथ्य) स्नान, रेचन, मैथुन, काढ़े व्यायाम, दिनकी निद्रा, दूध, चिकना, द्विदल, मांस, छाछ, शराब, मीठा पदार्थ, जड़ पदार्थ, द्रव्य, पदार्थ, अन्न, हवामें फिरना, क्रोध, बहुत बोलना ये सब तरुण ज्वरवालेको वर्जित है ४.

मध्यम ज्वररोगवालेको पथ्य।

जूना साठीचावल, बैंगन, सेंगा, करेला, बाँसके कोम, उड़द, अरहर, मूला, मूंग, मशूर, चना, कुलथी, जंगली मूंग इसका जूस, पाठामूल, गिलोय, चंदनबटवा, चवलाई, द्राख, कवथ, अनार ये मध्यम ज्वरवालेको पथ्य है।

मध्यम ज्वरवालेको अपथ्य ।

कोहला, रेचन, उलटी काष्ठसे दंतघिसना, न सोसनेवाली चीजोंका खाना, विरुद्ध अन्नका खाना, विदाही जड़, दुष्टपानी, क्षार, खट्टा,पालेकी साग, अंगूर आयेला धान्य और कंदलापानी, पान, तरबूज, पनस, मच्छी, खल, नवाधान्य, वादीखोर चीजें, मेहनत, स्त्रीका संग, स्नान, जलक्रीडा, जागरण, तबीयतको नहीं सोसनेवाली चीजोंका मना है ।

अतिसाररोगपर ज्योतिषका मत ।

जन्मकालमें शनिग्रहमें बुध होकर रविकी दृष्टि बुधपर हो तो ऐसा जोग जन्म समय होगा.उसे सब जन्ममें प्रियभक्ष अतिसार रोगयुक्त रोगी होगा. व शनिके अंतर्गत राहु हो तो शस्त्रपीड़ा याने शस्त्रघातज्वर, अतिसार, शत्रुसमागम, अर्थनाश होगा. व छठें स्थानपर चंद्र व शुक्र उसमेंका कौन-साही व मंगल अष्टमसें स्थानपर हो तो अतिसार रोगी होगा.बुधके मंत्रका जप करना. और तिल, अपामार्ग समिधासे हवन करना, स्वर्णदान,स्वर्ण-धारण इत्यादिक करना, राहु मंत्रसे जप, काले तिल, दूर्वा,समिधाओंसे होम करना, राजबर्त मणीका अलंकार धारण करना ।

अतिसाररोगीवालेको पूर्वजन्मका कर्म ।

पूर्व जन्ममें गृह अग्निका व अग्निक्रियाका त्याग किया है व बावड़ी, कुवां, तालाव इसका नाश किया हो तो इस जन्ममें अतिसार रोगी होता है।

अतिसाररोगीवालेको पूर्वजन्मका परिहार ।

अग्निरश्मी इस मंत्रका दशहजार जप व पूर्वोक्त मंत्रसे तिल और घृतकी दशहजार आहुती देना. सुवर्ण दानदेना.व अग्निकी प्रतिमा करके उसकी पूजा करना और ब्राह्मणको दान देना ।

अतिसारका निदान व कारण ।

जड़पदार्थ, अतिस्निग्धपदार्थ, अतिरुक्ष, अतिगरम, पतला, लाडू, ववर,शीतपदार्थ,विरुद्धपदार्थ,भोजनपर भोजन करनेसे,अपक्वअन्नखानेसे, विषम उपचार करनेसे, बे वक्त खानेसे, बहुत खानेसे, स्नेहपानसे, वमन,

विरेचन इसके रोकनेसे, मलमूत्रके कब्ज पनासे, अनुवासन, बस्तिके अयोगसें बचनागादिक जहरसे, भयसे, शोकसे, दुष्टपानीसे, मद्यपानसे, प्रकृतिको नहीं मानने वाली चीजोंके खानेसे और ऋतुबदलनेसे, जंतुऔर कृमीसे इन कारणोंसे जठराग्नि बिगड़के अतिसार होता है ।

संपूर्ण अतिसारोंको साधारण संप्राप्ति ।

रस, जल, मूत्र, पसीना, मेद, कफ, पित्त, रक्त ये आठ धातुक्षोभ होके अग्निको मंद करके मैलसे मिलके और हवासे अधोभाग गिराता है और दस्त होता है उसको अतिसार कहते हैं ।

अतिसारका पूर्वरूप ।

हृदय, नाभि, गुदा, छाती, कोखी इसमें पीड़ा पेट फूलना, अनाज न पचना, ग्लानि, वातका अवरोध, मैलबद्धपना पीडा, खिचाणा ये लक्षण होनेसे अतिसारका पूर्वरूप समझना । अतिसार ७ जातिका होता है । वातसे, पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, शोकसे, आमसे, भयसे, इस माफिक ७ तरहका अतिसार जानना ।

वातातिसारका लक्षण ।

लाल फेस युक्त, खुषक, थोड़ा २ और बार २ मलहोना. अपच दस्त होना. मरोडा होना. दस्तमें अवाज अवरोधपना ये लक्षण होते हैं ।

पित्तातिसारका लक्षण ।

पीला, नीला, थोड़ा लाल ऐसा दस्त होना, प्यास केवल सब बदनमें गरमी, गुदा पकना, ऐसा लक्षण होता है ।

कफातिसारका लक्षण ।

सफेद गाढ़ा कफमिश्रित, खट्टी, बहुदुर्गंध ठंढा, ऐसा दस्त होता है रोमांच खड़ा होता है और आलस्य होता है ।

सन्निपातातिसारका लक्षण ।

वराहाके चरबीकेमाफिक मांसके पानीसे और तीनों दोषोंसे युक्त सब लक्षण होवें तो सन्निपातातिसार जानना. यह कष्टसाध्य है ।

शोकातिसारका लक्षण।

धन बांधवआदिके सोचसे, रोनेसे, खुराक न पानेसे क्षीणता होती है। और अग्नि मंद होके व्याकुल होता है. खूनको तपाके दस्तमें निकालता है उसका रंग गुंज माफिक है. सो मलसे मिला हुआ और खाली पड़ता है. दुर्गन्धयुक्त पड़ता है. इसमें वातपित्तका लक्षण है।

आमातिसारका लक्षण।

अन्न नहीं पचनेसे, वातादिक स्वमार्ग छोड़के कोठामें जाता है वहां रक्तादिक धातु और पुरीषादिक मलको बार २ दस्तमें गिराता है. उसका रंग तरह तरहका होता है इसमें रोड़ा बहुत होते हैं इसको छठा अतिसार कहते हैं।

आमातिसारका असाध्य लक्षण।

जामूनकासा रंग, काजलकासा काला, लाल पतला, घृत, तैल, चरबी, मज्जा, बेसवाद दूध, दही, मांस, धोयेला पानीसा, नीला, सिंदूररस, नाना-रंग युक्त, चिकना, मोरपंखकासा रंग, सुरदार दुर्गन्ध ऐसा दस्त होके तृषा, दाह, अन्नद्वेष, श्वास, हुचकी, फसली, शूल, मोह, ग्लानि, गुदाकी बली पकना बड़ बड़ करना ऐसा अतिसार रोगीवाला बचता नहीं। जिसका गुदा मिटता नहीं क्षीण हुआ सूजन आया हुआ जिसके शरीरमें गर्मी नहीं रही हो और सूजन, शूल, ज्वर, तृषा, श्वास, खांसी, अन्नद्वेष, उलटी, मूर्छा, हिचकी वृद्ध ऐसा रोगी बचना कठिन है, रक्तातिसारके और शोकातिसारके लक्षण समान हैं।

अतिसारका उपाय।

गिलोय, धनियां, खस, सोंठ, कालाखस, पित्तपापड़ा, बालबेल, अतिविष, पाठामूल, रक्तचंदन, कुडाका मूल, चिरायता, नागरमोथा, इन्द्रजव इन १४ दवाइयोंका काढ़ामें शहद डालके देना जिससे रक्तपित्तज्वर अतिसार जायगा और लंघन कराना १. ईसबगोलका काढ़ा देना २. व शक्कर भिजाके डालके देना ३. सोंठ, गिलोय, खस, रक्तचंदन, कूडेकी छाल, मोथा, चिरायता इनका काढ़ा देना. जिससे उबकाई, दाह,

तृषा, सूजन, ज्वरयुक्त अतिसार दूर होता है ४. गुड़, अतिविष, देवदारु, इन्द्रजव, मोथा, चिरायता, सोंठ इनका काढ़ा देना ५. रक्तचंदन, खस, कूडेकी छाल, पाठामूल, कमलकंद, धनियां, गिलोय,चिरायता, मोथा, बालवेल, अतिविष, सोंठ इनके काढ़ामें शहद डालकर देना. जिससे अतिसार, उलटी, तृषा, दाह, अरुचि इनका नाश होता है । बालवेल, किरमाणी, अजवायन, कडेडा, टेंढू, पाठामूल, मोथा, अतिविष,इन्द्रजव, कुडेकी छाल,कुटकी,गिलोय, सोंठ इनका काढ़ा देना,जिससे ज्वर, अतिसार, खांसी, उबकाई, श्वास ये सब रोग दूर होते हैं.

अतिसाररोगपर कपित्थाष्टक चूर्ण ।

कवंठ ८ भाग, शकर ६ भाग, अनार ३ भाग, अमली ३ भाग, बेल फल ३ भाग, धायटीके फूल ३ भाग,अजमोदा ३ भाग,पिपली ३ भाग ये सब तीन २ भाग लेकर मिर्च,जीरा, स्याहजीरा,धनियां, पिपलीमूल, खश, अजवायन, सैंधवलोन,दालिचीनी,तमालपत्र,इलायची,नागकेशर, चित्रक, सोंठ ये सब एक२ भाग लेना, सबको चूर्ण करना, ये देनेसे सब जलसम्बन्धी रोग, संग्रहणी, अतिसार रोग नाश करता है ८.

अतिसाररोगपर चित्रकादि चूर्ण ।

चित्रक, त्रिफला, त्रिकुटकी, वायविडंग, जीरा, स्याहजीरा, भिलावां, अजवायन, हींग, निमक, सुहागा, सैंधवनिमक, बड़निमक,कालानिमक, वेरोसा, वच्छ, कोष्ट, मोथा, अभ्रक, गंधक, जवाखार, सज्जीखार, टंकणखार, अजमोदा, शुद्ध पारा, बांजकाटोली, गज, पिपली इनके चूर्णमें समभाग इन्द्रजव डालना चूर्ण करना बड़े फजिर दो तोला देना, जिससे मंदाग्नि, खांसी, अर्श, पीया, पांडुरोग, अरुचि, ज्वर, परमा, सूजन, कबजीपना, संग्रहणी सब अतिसार, शूल, आमवात,सूतिकारोग, त्रिदोष व्याधि ये नाश होता है और जो खाता है सो पचता है, इसमें पथ्य नहीं जो खुशीमें आवे सो सब खाना ९.

अतिसाररोगपर इंद्रजवादि चूर्ण ।

इन्द्रजव, मोथा, धायटीके फूल,बाल वेल,लोध, सोंठ, मोचरस इनका चूर्ण गुड़ व छाछसे देना. तो सब अतिसारका नाश होता है १०.

अतिसाररोगादिपर लवंगादि चूर्ण।

लवंग,इलायची,तमालपत्र,कमलकंद,खस, जटामांसी,तगर,काला खस शीतलचीनी, कृष्णागर, नागकेशर, जायफल, चंदन, जायपत्री, जीरा, स्याहजीरा, सोंठ, मिर्च, पिपली, पोहकरमूल, कचूर, त्रिफला, कोष्ठ, वायविडंग,चित्रकमूल, तालीसपत्र,देवदारु, धनियाँ, अजवाइन मुलेहटी, खैर, खट्टी अनार, वंशलोचन, किरमाणी, अजवाइन, कपूर, अभ्रककी भस्म, काकडासिंगी, अतिविष, पीपलमूल इनका चूर्ण करिके समभाग शक्कर डालकर देना. एक कर्ष प्रमाण जिससे बल,वीर्य,पुष्टि देकर परमा, खांसी,अरुचि, क्षय, पीनस, राजरोग, रक्तदाह,संग्रहणी सन्निपात, हुचकी, अतिसार रोहिणी,गलग्रह,पांडुरोग स्वरभंग,अश्मरी ये रोग जाते हैं ११.

मृतसंजीवनी रस।

शुद्ध पारा,गंधक समभाग, चौथा भाग बचनाग और सबके बराबर अभ्रककी भस्म ये सब एकंदर करिके धतूराके रसमें खरल करना. बाद मुंगस (नकुल)वेलके रसमें व काढ़ेमें एक पहर भावना देना और धाय-टीके फूल,अतिविष, मोथा,सोंठ,ससजीरा,अजवायन,जव, गेल,पाठामूल, हरड़ा,कुड़ेकी छाल,इंद्रजव,कवंठ,अनार,नागबला ये दर एक एक कर्ष लेकर काढ़ा देना,उस काढ़ाकी भावना ३० देना,बाद संपुटमें डालकर कपड़छान करना वालुका यंत्रमें एक पल पचाना और अनुपानसे देना। ये मृतसंजीवनी रस सब रोगोंका नाश कर जिलाता है १२.

सर्व अतिसारपर कुंकुमवटी।

मेण, अफीम,केशर एकंदर खरल करके तबीयतके माफिक देना। इससे सर्वअतिसारका नाश होता है १३. कच्ची अनारमें अमल (अफीम) डालके अहरामें गोला करिके भौंकमें पचाना, वह निकाल-कर गोली बेरके बराबर बांधकर देना, इससे अतिसार जावेगा १४ लोकनाथ रस देना १५. महारस देना १६.

पित्तातिसारपर उपाय।

धनियाँ, खश इसका काढ़ा दाह,तृषा,अतिसारको नाश करता है।

यदि पानी मांगे तो यही काढ़ा देना । और धनियाँ, सश, पाठामूल इनके काढ़ेमें सिजेला अन्न देना १७. मुलहटी, कायफल, लोध, अनार और अनारकी छाल इनका चूर्ण व कल्क चावलके धोवनसे देना, जिससे पित्त अतिसार नाश होता है १८. सोंठ, ब्राह्मी, हींग, हरड़ा, इंद्रजव इनके काढ़ेमें सहद जलका देना १९. बालवेल इंद्रजव, मोथा, खस, अतिविष इनका काढ़ा आमयुक्त अतिसारका नाश करता है २०. चिकणा, धायटीके फूल, वालवेल, काला निमक, वड़निमक अनारकी छाल, इनका चूर्ण चावलके धोवनमें सहत डालकर देना। इससे पित्तातिसार शूल जाता रहता है २१

पित्तातिसारपर जम्ब्वादि चूर्ण ।

जामुन, आमकी गुठली, पाख, हरड़ा, पीपल, खजूर, सावरीकी छाल, लोध इनका चूर्ण सहदमें देना। इससे रक्तपित्तसहित अतिसार नाश होता है २२. व बालहरड़ा घीमें भूंजकर गोली बनायकर देना । इससे भी अतिसार सब नाश होगा २३. रालमें शक्कर मिलाकर फक्की देना २४. लोकेश्वर रस देना २५.

कफातिसारपर उपाय ।

कफ अतिसारपर पहिले लंघन कराना, बाद पाचन देना, बाद दीपन देना २६. हरड़ा, चित्रक, कुटकी, पाठामूल, बच्छ, मोथा, इंद्रजव, सोंठ इनका काढ़ा व कल्क चूर्ण देनेसे आमातिसार नाश होता है और कफातिसार जाता है २७. वायविडंग, बच्छ, बेलफलका मगज, धनियाँ, कायफल इसका काढ़ा देनेसे कफ आमातिसार नाश होता है २८. करंज, त्रिकुटी, बेलफल, चित्रक, पाठामूल, अनार, हींग इनका कल्क व चूर्ण देना २९. गोखरू, कांग, रिंगणी इनका काढ़ा देना ३०. पाठामूल, बच्छ, त्रिकुटी, कोष्ठ, कुटकी इनका चूर्ण गरमपानीके साथ देना ३१. हींग, कालानिमक, त्रिकुटी, हरड़ा, अतिविष, बच्छ इनका चूर्ण गरम पानीसे देना ३२.

त्रिदोषातिसारपर उपाय।

कुड़ेकी छालका काढ़ा पिलाना और इसी काढ़ामें अतिविषका चूर्ण डालकर देना, इससे त्रिदोषातिसार नाश होता है ३३. कुड़े छालका पुटपाक देना ३४. सूतादि वटी देना ३५. तृती सागर रस देनेसे सन्निपात अतिसार जाता है ३६. कुटकी बेलफलका मगज, गिलोय इनका चूर्ण दहीके साथ देना। इसको आनंदभैरवी कहते हैं, यह त्रिदोपातिसारको नाश करता है ३७.

शोकभयातिसारपर उपाय।

इस अतिसारमें हर्ष, हिम्मत, उम्मेद देना, दिलको आनंदकारक चीजें देना ३८.सावलरस, चिकनावेल, धनियाँ, सोंठ, कोष्ठ, वायविडंग, अतिविष,मोथा,दारुहलदी,पाठामूल, कुड़ेकी छाल इसके काढ़ामें मिर्चका चूर्ण डालकर देना, इससे शोकातिसार नाशहोता है ३९. भांगभूंजिके अफूके बीजके साथ देना ४०. व संग्रहणीकपार रस देना ४१. व संग्रहणी गजकेसरी रस देना ४२. धनियाँ, सोंठ इनका काढ़ा दीपन व पाचन है ४३. क्षुधयुक्त अतिसारको हरड़ा पिपली देना ४४. वायविडंग, त्रिफला, पिपलीका रेचन देना ४५. सोंठ पाक देना ४६. सोंठ, जीरा, सेंधवलोन, हींग, जायफल, आमकी गुठली, बेलगिरि, वणकी जटा, भुईआंवली इनका चूर्णकर कापड़छान कर और दहीसे देना. इससे तत्काल अतिसार बंद होता है और अग्नि प्रदीप्त कर रुचि देता है ४७. सोंठ, मिर्च, भांग समभाग मिलाके प्रकृति देखकर देना. इससे आमातिसारका नाश होता है,इसमें पथ्य चावल दही देना ४८. भांग, सोंठ, जीरा, शकर, बड़ीसौंफ, मिर्च, तिजाराका दाना देना ४९. सोंठ, बड़ी सौंफ, आंवला, बड़ा हरड़ा ये चीजें आधी कच्ची और आधी पक्की इसके चूर्णमें शकर और सैंधवलोन डालकर गरम पानीके साथ देना। इससे आमातिसार जाता है ५०.

रक्तातिसारपर उपाय।

मुलहटी, लोध, नीलाकमल इनका काढ़ा बकरीके दूधसे करके उसमें शकर डालकर देना। इससे रक्तातिसार जावेगा ५१. अनार कुड़ा

इनकी छालके काढ़ामें सहत जलका देना। इससे भी रक्तातिसार जावेगा ९२. चावलोंका धोया पानीमें चंदन घसकर उसमें शकर डालकर देना तृषा रक्तातिसार जावेगा ॥ ९३ ॥ गायके मक्खनमें मिश्री डालकर देना. रक्तातिसार जाता है ॥ ९४ ॥ गुदा पके तो बफारा देना, पिंडी बांधना, प्रक्षालन करना, ऐसा उपाय करनेसे गुदापाक साफ होता है ९५.

अमातिसाररोगादिकपर पञ्चामृतपर्पटीरस ।

शुद्धपारासार, तामेश्वर, अभ्रककी भस्मके समभाग गंधक दो भाग लोहेके बरतनमें बेरकी लकड़ीसे मंदी आंचसे पचाना गंधकका पानी होनेके बाद केलेके पत्तोंपर जमाना इससे अग्निदीपन ज्वर अतिसार, खांसी, पीलेया, पांडु, प्रमेह इसका फायदा होकर सब सम करती है। इसमें खट्टा तेल मना है ९६.

आमातिसारादिकपर दर्दुरवटी ।

दर्दुर १ भाग, अमल डेढ़ भाग, टंकनखार आधा भाग और जायफल ये इकट्ठा करके अदरखके रसमें पुट देके गोली मूंग समान बांधना ये देनेसे ज्वर, अतिअग्निमंद, निद्रानाश अरुचि इन सबको फायदा होकर बलपुष्टि देता है ९७. व आनंद भैरव रस देना. दर्दुर, बच्छनाग, मिर्च सुहागा, पिपली ये पांचों सम भाग लेकर कांजीमें खरल करके रखना १ गुंजा व २ गुंजा अनुपानसे देना. सब अतिसारका नाश करके सुखी होगा (पथ्य) दही, चावल और घीके साथ व छाछके साथ चावल खाना ९८. आनंद रस देना ९९. जायफल, सैंधव, लोन, दर्दुर, कौजिका भस्म, सोंठ, बच्छनाग, धतूराके बीज, पिपली समभाग अदरखके रसमें गोली गुंज प्रमाण बांधना शकरसे देना, जिससे पेट पीड़ा, वात, कफ, शूल, आमातिसार संग्रहणी, योनिरोग इनका नाश करता है १००.

अतिसारपर दाडिमाष्टकचूर्ण ।

वंशलोचन १ तोला, चतुर जातक ३ तोला, अजवायन, धनियां, जीरा, पिपलामूल, त्रिकुटी, सबचार २ तोला, अनारका दाना ३२ तोला, शकर ३२ तोला सब इकट्ठा करके चूर्ण करना ये सब अतिसारका नाश करके अग्नि प्रदीप्त करता है १०१.

प्रवाहिकापर उपाय।

मोथा, इंद्रजव, वालवेल, लोध, मोचरस, धायटीके फूल इनका चूर्ण छाछमें गुड़ डालकर देना. जिससे अतिसार प्रवाहिका नाश करके मल बांधता है, इसका लघुगंगाधर चूर्ण नाम है १। नागरमोथा, टेंटू, सोंठ, धायटीके फूल, लावा, खस, वालवेल, मोचरस, पाठामूल, इंद्रजव, कुडेकी छाल, आँबकी गुठिली, अतिविष, लज्जालु इनका चूर्ण चावलके धोवनसे शहद डालके देनेसे प्रवाहिका, दस्त, अतिसार, संग्रहणी इनके नदी समान वेगको बंद करता है इसका वृद्ध गंगाधर चूर्ण नाम है २। अजमोदा, मोचरस, अदरख, धायटीके फूल इनका चूर्ण गायके मट्टामें पिलाना जिससे गंगाप्रवाह समान अतिसार, प्रवाहिका बंद होगा ३। वालवेल, धायटीके फूल, मोचरस, मोथा, लोध, कुड़ेकी छाल, सोंठ इनका चूर्ण गुड़ डालकर छाछसे पिलाना प्रवाहिका, अतिसार दूर होता है ४। पाराभस्म, गंधक, लोहसार, बच्छनाग, त्रिकुटी समभाग निंबूके रसमें घोटके चौपट शंखमें भरना और कपड़मट्टी करके वर्तनमें भरके गजपुट देना. ठंडा होने बाद उसमें एक भाग बच्छनाग मिलाके घोटके शीशीमें भरके रखना, एक वाल देना. इसका शंखोदररस नाम है ५। जायफल, भांग, शहदसे देना. अतिसार संग्रहणी जावेगा६। चित्रक, अदरख, खश, भांग, सोंठ, मिर्च चूर्ण इनको घी शहद इनसे देना. अग्निमंदपर और क्षय, उदर, वात इनका नाश करता है(पथ्य) दूध, दही, छाछ, शकर देना७। लाल सूतसे कमरको गिलोय, खस, निवडुंग व सहदेवी इसकी मूली बांधनेसे अतिसार नाश होता है ८। सोंठ, जायफल, उसका दुगना अफीम व दाडिमके बीज सब मिलाके कच्चे अनारमें भरना उसको कपड़मट्टी करके पुटपाक करके बांटके बेर बराबर गोली छाछसे देना. इससे अतिसार, प्रवाहिकाका नाश होता है९। बबूलके पत्तोंका रस पिलानेसे सब अतिसार प्रवाहिका दूर होता है १०। टेंटूके छाछका व कुड़ेकी छालका अंगरस पीनेसे अतिसार व प्रवाहिका जाती है ११। मोतीकी भस्म एक गुंजा वा दो गुंजा कापूरसे वास लगाकर जायफलके साथ देना. सब अतिसार नष्ट होते हैं१२। मिर्च, कलखापरी, अफीम तीनोंका खरल करके चावलके धोवनसे

घोटके गोली बांध कर देना १३। जीरा, भाँग, बालबेल, अफीम समभाग पीसके दहीके निवलीमें गोली करके देना, सब अतिसार नाश होता है १४। जायफल, अफीम, टांकण खार, गंधक, जीरा, समभाग सबको बराबर कच्चा दाडिमके बीज सबको खरल करके सब कच्चा अनारमें भरकर बाहर गेहूँका आटा लगाके गोवरमें पचाकर गोली बनाकर रखना. शक्ति देखकर देना १५। काटे सावरीका गोंद, अफीम, जायफल, बेलफलकी गरी इन सबको इकट्ठा करिके बिजोरामें लाके भरके पुटपाकसे पचाना वो देनेसे अतिसार प्रवाहिकाका नाश करता है १६। १७।

अतिसार प्रवाहिकापर पथ्य ।

उलटी कराना, लंघन कराना, निंद्रा कराना, साठीका चावल जूना, आटा, लाहीका मांट, मसूरकी दाल, अरहरकी दाल इसका रस औ शसा (खरगोस) लावा, कपोतपक्षी इसका मांसरस छोटीजातिकी मच्छरी, टेंडसी फल, शहद, राल, बकरी और गायका घी, दूध, छाल, गायके दहीकी निवली मक्खन, जामुन, अदरख, सोंठ, कमलकंद, कवंट, बोर, बेरफल, टेंभुर सुणी, अनार, बड़के फल, चूका, भांग, पिंपली, जायफल, अफीम, जीरा, कूडा, धनियाँ, नींब सब तुरस पदार्थ-दीपन, लघु, हलका ऐसा अन्न और नाभिके नीचे दो अंगुलपर चन्द्राकृतिका दाग मक्कड हाडोंके नीचे आधा चंद्र जितना दाग अतिसारवालेको है और दशांशसे व षोडशांशसे और शतांश तपाके पानी ठंडा पिलाकर पिलाना, बहुत हित करनेवाला है।

अतिसार प्रवाहिकापर अपथ्य ।

स्नान, अभ्यंग, जड़, स्निग्ध ऐसे भोजन, व्यायाम, अग्निसंताप, नवा अन्न, उष्ण, गुरु, मैथुन, चिंता, पसीना, अंजन, रक्तमोक्ष, उषःपान, जागरण, धूमपान, नास, मांस, मल मूत्र आदिका वेगरोध, रूक्ष विरुद्ध, गेहूं, उड़द, मटर, पावटे, सेंगा, खापरपोली, पूरी, कोहला, दूधिया और जड़ अन्न व जड़ पदार्थ, तांबूल, अंबरस, गुड़दारू; खट्टा, लहसन, खराब पानी, भैंसका मक्खन, ठंडा पानी, नारियल, तरकारी, क्षार, कांकणी ये चीजें वर्जित हैं।

इति अतिसारचिकित्सानिदान समाप्त।

अथ संग्रहणीनिदान।

अतिसार जानेसे मंदाग्नि पर अपथ्य खानेसे और पीनेसे पुरुषकी अग्नि दुष्ट होकर ग्रहणी धारा बिगड़ती है और पहिलेहीसे संग्रहणी होती है उससे अन्न पचना अच्छा नहीं होता. जिससे वारंवार आमयुक्त दस्त होता है वह संग्रहणी, वातसंग्रहणी, पित्तसंग्रहणी, कफसंग्रहणी, त्रिदोपसंग्रहणी ऐसी होती हैं।

संग्रहणीपर ज्योतिषका मत।

जन्म कालमें सूर्य सप्तमस्थान और चंद्र अष्टमस्थान और क्षीणता ऐसा होनेसे शत्रुप्रचार, अग्नि मंद, संग्रहणी रोग होता है, क्षीण चंद्रदशामें उदर, ज्वर, मस्तकरोग और संग्रहणी होता है।

ज्योतिषमतका परिहार।

चंद्रमंत्रका जप करना. तिल, आज्य, पलाससमिधा इससे होम करना. शंखदान करना।

पूर्वजन्मका कर्मविपाक।

सुशील निरपराधी ऐसी व्याहता स्त्रीको अल्प अपराधपर त्याग करता है. उसको और बालहत्या करनेवाला संग्रहणीरोगी होता है।

कर्मविपाकका परिहार।

शिवसंकल्प सूक्तका अष्टोत्तर सहस्र आवृत्ति जप करना. मधु, हिरण्य, इसका दान सवत्स गौ दान देना (संग्रहणी रोग पांच प्रकारका होता है

संग्रहणीका साधारण स्वरूप व लक्षण।

संग्रहणीका याने अग्निका स्थान उसका आश्रय करके वातादि दोष कुपित होकर जो रोग उत्पन्न होता है इसको संग्रहणी कहते हैं, उसका लक्षण आंव पड़ना, पित्तसे दुर्गंधि होना, मरोड़ा पड़ना, पचन न होना, कच्ची आंव पड़ना, उसके पूर्व रूपमें प्यास लगना, शक्तिक्षीण, जठराग्नि मंद, जलन लगना, शरीरको जड़पना ये संग्रहणीका लक्षण है।

वातसंग्रहणीका लक्षण।

अन्न न पचना, पाक खट्टा, अग्नि मंद, बदन खरदरा, गला, मुख, ओंठ सूखना, भूँख लगना, प्यास लगना, दृष्टि मंद, कानमें शब्द, पसली, जांघ,

अंड संधि, गर्दन दुखना वार वार विषूचिका याने ऊर्ध्व और अधोद्वारसे आंव पड़ना, अन्न पड़ना, हृदयपीड़ा, शरीर कृश, शक्ति कम, अरुचि, गुदा पाक, सब चीजें खानेपर इच्छा. मनको ग्लानि, अन्न पचनेके वक्त पेट फूलना, कुछ खानेसे अच्छा मालूम परना, पेटमें, हृदयमें, प्लीहा, इस ठिकाने गांठ हुईसी मालूम परना, कारण रोग पके माफिक चिह्न होता है. खांसी श्वास होकर मरोड़ासे युक्त कभी पतला, कभी गाढ़ा थोडा थोड़ा वार २ मल आता है उसपर फेन और शब्द होता है।

पित्तसंग्रहणीका लक्षण ।

तीखा, अजीर्ण, विदाह करनेवाला, खट्टा पदार्थ, पित्तको बढ़ानेवाला, खाने पीनेसे पित्त बढ़के जैसा गरम पानीसे अग्नि बुझता है वैसा पित्त जठराग्निकी गरमीको शांत करके मनुष्यका शरीर पीला कर देता है उसका अपक्क, नीला, पीला, पतला मल होता है. उसको गरम और खट्टी डकार आती है. छाती और गलेमें जलता है. अन्नद्वेष, तृषा इससे व्याकुल होता है।

कफसंग्रहणीका लक्षण ।

जड़, स्निग्ध, ठंडी चीजें भोजन करनेपर भोजन करना, उसपर दिनमें निद्रा करनेसे कफ कुपित होकर अग्निका नाश होता है. अन्नकष्टसे पचना, हृदय भारी, उलटी, अरुचि, मुख चिकना, मीठा, खांसी, कफ पड़ना, जुखाम; हृदयमें पानी पड़ासा मालूम पड़ना, पेट खींचना, जड़ होना, विकृत और खराब डकार, अग्नि मंद, स्त्री विषयकी इच्छा कमती, पतला और आंव कफसंयुक्त जड़ ऐसा मालूम होता है, आलस्य और शक्ति कमी, वातादिकसे जुदा जुदा कारण और लक्षण इकट्ठा होनेसे त्रिदोष संग्रहणी कहना चाहिये. ये दोष लक्षणसे हृदयमें समझना चाहिये और आँवसे जो संग्रहणी होती है उसमें कभी आठ दिनसे व चार दिनसे, कभी कभी आँव पड़ता है, कभी नहीं पड़ता है ।

कफसंग्रहणीका उपद्रव ।

सूजन, अग्निमंद, शरीरका निस्तेजपना, ज्वर, अन्न न पचना, अन्नद्वेष ग्लानि, तृषा, निर्बलता, सर्व शरीरमें वेदना, श्वास, पेट फूलना, डकार ये विकार होते हैं ।

संग्रहणीका असाध्य लक्षण।

आंतडी वजन,तीनों दोषमें सब लक्षण होते हैं.मलबद्ध होकर जिसका पेट चढ़ता है,दश महीनेके बाद जिसके अंडकोशमें सूजन आती है और क्षीण और वद्ध संग्रहणीका असाध्य लक्षण समझना चाहिये।

इति संग्रहणीनिदान समाप्त।

संग्रहणीपर उपाय।

सोंठके कल्कमें घी सिद्ध करना वह घी अनुलोमन संग्रहणी, पांडु, प्लीहा,खासी,ज्वर इनका नाश करता है. १। पंचमूल, बालहरडा, त्रिकटु, सेंधवलोन,रास्ना, सज्जीखार, जवाखार,वायबिडंग, कचूर इन दवाइयोंके कल्कमें घी सिद्ध करना और घीको बिजोरा,अदरख इनका रस, सुरवेला मूला इनका काढ़ा और चूका,अनार, छाछ, दही नीवली,सुरा, जवकी पेज,कांजी ये सब जलाके सिद्ध करना.अग्निकारक,शूल,गुल्म,उदर,मलबद्धता, कृशपना वात इसका नाश करता है. २।संग्रहणी रोग सहस्र दवासे अच्छा नहीं होनेवाला है। उसको दोष धातु बलके अनुसार पीनेसे संग्रहणी शांत होती है ३। रानगांजा, चित्रकमूल, बालवेल, धनियाँ, सोंठ इनका काढ़ा देनेसे पेट फूलना,शूल, संग्रहणी ये रोग दूर होते हैं४।गाईकी छाछमें सोंठको डालकर देना५।अन्न कमकरके छाछ ज्यादा पीना.आहार होनेतक तो संग्रहणी रोग जाता है ६। मधुहरीतकी देना. १०० सौ हरडा उबालकर नरम करना उसमें ४ तोला शहदमें डालना उसमें सोंठ, मिर्च, पिपली,लवंग, वंशलोचन समभाग लेकर डालना. उसमेंसे एक दो हरडा दो वक्त खाना जिससे दुष्टवात,संग्रहणी, आंव,दुष्टरक्त,जीर्णज्वर,जुखाम, वर्णविस्फोट,वातशूल, संग्रहणी दूर होती है.७।मूंगोंका जूस,छाछ,धनियाँ, जीरा इसके जूसमें सेंधवलोन डालकर देना. ८। कवथ, बेल,चूका,अनार इसके छाछमें यवागू करके देना आंव पचाती है ९।

पित्तसंग्रहणीपर उपाय।

चंदनादि घी देना१०।कुटकी,सोंठ, रसांजन,धायटीके फूल, हरीतकी, इंद्रजव,मोथा,कुडेकी छाल,अतिविष इनका काढ़ा अनेक प्रकारकी संग्र-

हणी, गुदाशूल, पित्तसंग्रहणी इनका नाश करता है. वालवेलके कल्कमें सोंठका चूर्ण गुड़ डालके देना.छाछ चावल पथ्य देना ११।

पित्तसंग्रहणी आदिपर अजवाइनादि चूर्ण।

अजवाइन,पीपलमूल,चातुजातक,सोंठ,धायटीके फूल,अमली,पिपली, खस, हर एक चीजें एक १ तोला, शकर छः भाग सबका चूर्ण करके १ तोला देना. ऊपरसे बकरीका दूध पीना. जिससे संग्रहणी, पित्तसंग्रहणी, प्रवाहिका जावेगी १२। रसांजन देना, अतिविष, इंद्रजव, कुडेकी छाल, सोंठ, धायटीके फूल इनका चूर्ण चावलोंके धोवनसे देना शहद डालके जिससे पित्तसंग्रहणी, अर्श, रक्तपित्त, पित्तअतिसार जाता है १३।

कफसंग्रहणीपर उपाय।

कचूर, त्रिकटु,जवाखार, सज्जीखार, पिपलामूल, बिजोराका चूर्ण, सेंधवलोन निंबूके रससे देना. कफसंग्रहणीका नाश होता है १४।

हरडा, पिपली, सोंठ, चित्रक इनका चूर्ण छाछसे देना व सोंठ व पिपलोंका चूर्ण छाछसे देनेसे शूल कफसंग्रहणी नष्ट होती है १५। गिलोय, अतिविष, सोंठ, मोथा इनका काढ़ा देना, आमसंग्रहणी जावेगी १६।

घीसे लोन देना, गाढा मल न होगा १७। बायबिडंग,अजवाइनका चूर्ण गरम पानीसे देना. मलबद्ध ढीला होगा१८।वातसंग्रहणीपर कुटजावलेह देना १९। और पर्पटीरस आठ गुंजा घीसे देना. ऊपरसे दो मासा हींग,जीरा, त्रिकटु इनका चूर्ण देना और छाछ मत खाना. वातश्लेष्मसंग्रहणीनाश होता है २०।

वातपित्तसंग्रहणीपर उपाय।

मुडी,शतावर,मोथा,कवचके बीच,दूधि,गिलोय,मुलहरी,सेंधवलोन इनके चूर्णसे दुप्पट भुनेली भांग मिलाके घीके बरतनमें दशगुना दूध डालकर पचाना, मंदाग्निसे पचाना उसमें शहद डालकर १ तोला चटाना। दशगुनी तीन तोला शकरसे देना. द्वंद्वज संग्रहणी जाती है २१।

सन्निपातसंग्रहणीका उपाय।

शुद्ध पारा,सुवर्णकी भस्म,मिर्च,लीलाथोथा समभाग भाडजांबूल,

चित्रक इसके रसमें मंदाग्निसे १ दिन पचन करना. बाद एक दिन खरल करना. १ गुंज १ तोला गाईके छाछमें चित्रकमूल डालके देना. सर्वसंग्रहणी दूर हो जावे (पथ्य) छाछ भात देना २२ ।

संग्रहणीकपाट रस ।

रौप्यभस्म, मोतीभस्म, सुवर्णभस्म, कांतसार हर एक १ तोला, गंधक दो तोला, शुद्ध पारद तीन भाग इकट्ठा करके कैथके रसमें खरल करना. हरणके शींगमें भरना,बाद मध्यम पुट देना. शीत हुए बाद काढ़के नागबलाके (चिकनी) सात भावना देना. आघाडाके रसकी तीन भावना देना. सिद्ध हुआ ये एक मासा शहद और मिर्चके चूरनसे देना, जिससे सब अतिसार सन्निपात संग्रहणीका नाश करता है, दूसरा अग्नि दीपन करता है २३ ।

शुद्ध पारा, गंधक, अतिविष, हरडा, अभ्रककी भस्म, हरएक दशदश भाग मोचरस,बच,भांग ये हर एक तीन तीनभाग इकट्ठा करके नींबूके रसमें गोली बांधके देना २४ ।

संग्रहणीवज्रकपाटरस ।

पारदकी भस्म, अभ्रककी भस्म, गंधक, जवाखार, टांकणखार,टाकल, बच,समभागचूरन करके उसको भांग,निंबू,भांगरा इनके रसमें तीनतीन दिन मर्दन करना. उसका गोला करके सुखाके लोहपात्रमें व शरावमें रखके मुद्रा देना. अग्निपर चार घड़ी पचाके उतार लेना. बाद पाराके बराबर अतिविष, मोचरस डालके कैथ, भांग इसके रसकी सात सात भावना देना और धायटी, इन्द्रजव, मोथा, लोध, बेल, गिलोय इनके काढ़ाकी अगर रसकी एक एक भावना देना. गोली १ वालके बराबर बांधना. इसमेंसे १ मासा शहदसे देना, ऊपरसे चित्रक, सोंठ, बायबिडंग, बेल, सेंधवलोन इनका समभाग चूर्ण गरम पानीसे देना. सर्व संग्रहणी नाश करता है२५।संग्रहणीपर मदवारणसिंह देना २६ । पारदादिवटी देना २७। सुवर्णरसपर्पटी देना २८ ।

संग्रहणीगजकेसरी रस ।

गंधक, शुद्ध पारद, अभ्रककी भस्म, दर्दुर,लोहकी भस्म,जायफल, बेल,

मोचरस, बच्छनाग, अतिविष, सोंठ, मिर्च, पिपली, धायटीके फूल, भुनेली हर्डा, कैथ, नागरमोथा, अजवाइन, चित्रक, अनार, कुडेछालकी राख, धतूराके बीज, सागरगोटा, कणगचके बीज ये सब समभाग अफीम ४ भाग ये सब एकंदर करके धतूराके रसमें घोटना मिर्च इतनी गोली करके देना. जिससे संग्रहणी, रक्त, आम, शूल बहुत दिनका अतिसार, ज्वर असाध्यसंग्रहणी इसका नाश होता है २९ । अग्निसूत रस देना ३० । ग्रहणीकपाटरस देना ३१ । सूतादिगुटी देना ३२ । पिपली, सोंठ, पाठामूल, त्रिफला, त्रिकटु, वेल, चंदन, खश इनका लेह देनेसे उपद्रवयुक्त सर्व संग्रहणी प्रवाहिका नाश होती है ३३ ।

संग्रहणीपर अभ्रकादि वटी ।

शुद्ध पारा, गंधक, बच्छनाग, त्रिकटु, टांकणखार, लोहकी भस्म, अजमोदा, अफीम ये समभाग, सबके बराबर अभ्रककी भस्म ये एकंदर करके चित्रक, दालचीनी इनके काढेमें एक प्रहर खरल करना, उसकी गोली वाल प्रमाण बांधना. इसके देनेसे ४ प्रकारकी संग्रहणी नष्ट होती है ३४ ।

संग्रहणीपर सूतराज रस ।

शुद्धपारा १ भाग, गंधक २ भाग, अभ्रक ८ भाग सब मिलाके चार वाल सब रोगोंपर एक मंडलतक देना. सब रोगनाश होता है ३५ । पूर्णचंद्ररसेंद्र रस देना ३६ । चित्रांबररस देना ३७ ।

संग्रहणीपर अगस्तिसूतराज रस ।

शुद्ध पारा, गंधक, दर्दुर, एक १ तोला धतूराके बीज, अफीम दो २ तोला सब मिलाके भांगरेके रसमें भावना देना. सिद्ध हुआ यह देनेसे सर्वसंग्रहणी, सर्व अतिसार नाश करता है ।

संग्रहणीआदिपर कनकसुंदर रस ।

दर्दुर, मिर्च, गंधक, पिपली, टांकणखार, बचनाग, धतूराके बीज समभाग भांगके काढेमें एक प्रहर खरल करना. चने बराबर गोली देना. जिससे

संग्रहणी, अग्नि मंद, ज्वर, अतिसार नाश होता है. पथ्यको दही भात व छाछभात देना ३९। क्षार ताम्र रस देना ४०॥

संग्रहणी आदिपर शंबूक योग।

शंखकी भस्म, सैंधवलोन समभाग पीसके तीन मासा शहदमें देना. जिससे सर्व संग्रहणी नष्ट होती है ४१। महाकल्याण गुड़ देना. ४२। कूष्मांडगुड़ देना ४३। द्राक्षासव देना ४४। दाडिमाष्टक देना ४५।

संग्रहणी आदिपर लवंगादि चूर्ण।

लवंग, शीतलचीनी, खस, चंदन, तगर, नीलाकमल, स्याह जीरा, इलायची, पिपली, भांगरा, नागकेशर, पिपली, सोंठ, जटामांसी, काला खस, कपूर, जायफल, वंशलोचन, राई समभाग लेके चूर्ण करना उसे देनेसे तृप्ति अग्नि प्रदीप्त, बल देके त्रिदोष, अर्श, मलबद्धता, तमक श्वास, गलग्रह, खांसी, हिचकी, अरुचि, क्षय, जुखाम, संग्रहणी, अतिसार, रक्तक्षय, प्रमेह गुल्म इनका नाश करता है ४५। बिजोराकी केशर, अदरख, सैंधव ये पीसके लेनेसे आदमीके मुखको रुचि होगी ४६। चित्रक, अजमोदा, सैंधवलोन, सोंठ, मिर्च इनका चूर्ण खट्टी छाछसे पिलाना सात दिनमें अतिसार, संग्रहणी जाके अग्निको प्रदीप्त करता है ४७।

संग्रहणी आदिपर शंखवटी।

अम्लीका खार ४ तोला, सैंधवलोन, बिड़नोन, संचल खार २४ तोला इसका निंबूके रसमें कल्क करके उसमें ४ तोला शंख तपाके बुझाना बाद तपाना फिर बुझाना इसप्रमाण शंख अंदर जलजाय तहांतक बुझाना, बाद हींग, सोंठ, मिर्च, पिपली, शुद्ध पारा, वच्छनाग, गंधक यह चार २४ मासे डालके गोली बांधना. इसको देनेसे क्षय, संग्रहणी, पक्तिशूल, विषूचिका, पटकी, महामारी दूर होती है ४८। कुमारी आसव देना ४९। कपित्थाष्टक चूर्ण देना ५०।

संग्रहणी आदिपर जायफलादि चूर्ण।

जायफल, लवंग, इलायची, तमालपत्र, दालचीनी, नागकेशर, कपूर, चंदन, वंशलोचन, आंवला, पिपली, चित्रक, सोंठ, बायबिडंग, मिर्च ये

दवाइयाँ सम भाग, सब दवाके समभाग शुद्धभांग इनका चूर्ण करके समभाग शकर मिलाके एक कर्ष प्रमाण शहदमें लेना जिससे संग्रहणी, खांसी, श्वास, क्षय, वात, कफ, जुखाम ये सब रोग जाते हैं ।

संग्रहणीपर पथ्य ।

निद्रा, उलटी, लंघन, जूना साठीका चावल, मंड, मसूर, मूंग, अरहरकी छाल, मूंगका रस, मसका निकालके छाछ, गाई, बकरी, भेड़ीका दूध, दही, तिलका तेल, मद्य, शहद, कमलकंद, पनस, खट्टा और मीठा अनार, केलेका फूल, बेलफल, शिंघाड़ा, चूका, भांग, कैथ, कडू जीरा, बड़का फल, जायफल, छाछ, जांबूल, धनियाँ, टेंमुर्णी, टेंडसी, कुचला, नींब, अफीम, लौकी, जंगली मांस, तुरस पदार्थ ये गण संग्रहणीको पथ्यकारक हैं ।

संग्रहणीपर अपथ्य ।

रक्तस्राव, जागरण, उदकपान, स्नान, स्त्री और तेरा वेगोंका धारण, नास, अंजन, पसीना, धूमपान, श्रम, विरुद्ध, कठिनअन्न और भारी पदार्थ, गेहूं, पावटे, मटर, उड़द, जव, आलू, लोबिया, बटवा, कावला, कोहला, सैंजन, जातक, तांबूल, गण बेल, आंबा, काकड़ी, सुपारी, धान्य-आम्ल, सौवीर, तुषोदक, दूध, गुड़, दही, नारियल, सब पालेकी भाजी ये चीजें वर्जित करना ।

अर्शरोगपर कर्मविपाक ।

पैसा लेके अध्ययन करता है और कहता है और हवन व जप करता है वह अर्शरोगी होता है, उसको जप दान करनेसे समाधान होता है ।

अर्शरोग छः प्रकारका होता है ।

वातअर्श, पित्तअर्श, कफअर्श, त्रिदोषअर्श, रक्तअर्श, सहजअर्श ऐसे छः प्रकारके हैं । वह अर्श गुदवल्लीपर मसे गुदाके ठिकानेपर प्रवाहिनी, सर्जनी, ग्राहिणी ऐसी तीन वल्ली हैं, उसपर होता है । कोठास्थित बादी रहना, मलमूत्र कष्टसे होना, कमर और पीठ ये खिंचाना ।

वात अर्शके लक्षण।

तुरस, तीखा, कडू, शुष्क, ठंडा, लघुपदार्थ खानेसे देरसे तीव्र मधुपान, अतिमैथुन, उपास, ठंडादेश, आयास करनेसे बादी प्रकोप होता है. उसे गुदापर मसा सूखा, स्रावरहित, वेदनायुक्त, शाम, अरुणवर्ण खजूर, छोहारा, बेर, कपासके फल, पुष्पकी कली, जाड़ा बारीक राई ऐसे आकारके मसे होते हैं, उसके योगसे शिर पसली, गर्दन, कमर, जंघा, अंडसंधि दुखना, छींक, डकार, मल अवरोध, हृदयपीड़ा, अरुचि, खांसी, श्वास, विषमअग्नि, कभी अन्न पचना कभी न पचना, कानमें शब्द, भ्रम यह होके कठिन और थोड़ा शब्दयुक्त कूथके शूल, फेन चिकटा अटकता अटकता मल आता है और मनुष्यकी त्वचा, नख, मल, मूत्र, नेत्र इनको काला रंग रहता है। गुल्म, प्लीहा, अष्ठीला, बायगोला यह उपद्रव अर्शसे होते हैं।

पित्तअर्शके लक्षण।

पित्त कोपनेवाला आहार और विहारसे अर्श नीला, पीला, लाल, काला होके उसमेंसे रक्तस्राव, खट्टा दुर्गन्ध ऐसा निकलता है. उसका आकार तोतेकी जीभ कलेजा जोखुके मुखके माफिक होता है. उससे आग, गुदापाक, ज्वर स्वेद, तृषा, मूर्छा, अरुचि, मोह होता है, हाथ लगानेसे गरम मालूम होता है, उससे पतला नीला गरम पीला लाल आमयुक्त ऐसा मल होता है, उससे त्वचा नख नेत्रादिक हरे पीले होते हैं।

कफार्शके लक्षण।

कफ कोप करनेका आहार विहार करनेसे कफअर्श होता है. वह ऊंडा पीड़ा कम, सफेद, लंबा, गोल, जड़, गीला, कंडुयुक्त खाजानेसे अच्छा लगना, अनेक आकृतिका ऐसा मसा होता है। उससे अंडसंधि, गुदा, बस्ति, नाभि यह खिंचाना, पीड़ा होना, श्वास, खांसी, जीभ चलना, लार, अरुचि, जुखाम, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, शिर भारी, शीतज्वर, नपुंसकता, अग्निमंद, उबकाई, आम-अतिसार करके चरबी कफसे मिला दस्त होना, प्रवाहिका पैदा करके त्वचा,

नख, नेत्र सफेद दिखाना। सन्निपात अर्शमें ऊपर लिखे सर्व लक्षण होते हैं और सहज अर्शका लक्षण है त्रिदोषका ही होता है और दो दो लक्षण और कारणोंसे दो दो द्वंद्वज अर्श जानना, सर्व लक्षण और कारणसे त्रिदोषी अर्श जानना चाहिये ।

रक्त अर्शके लक्षण ।

जिसमें ज्यादा रक्त पड़ता है और पित्त अर्शके लक्षणसे युक्त है उसका मसा अंदरकी बाजूमें गुंजा मूंगा तोतेकी जीभ बड़का अंकुर सरीखे मसे होते हैं व गाढ़े मलसे दबते हैं, उस वक्त उसमेंसे एकदम दुष्ट गरम दुर्गंध ऐसा खून पड़ता है, ज्यादा गिरनेसे आदमी पीला पड़ता है, उसका स्थूलपना नष्ट होता है, ताकत कम, नेत्र मैले, इंद्रियाँ व्याकुल होना, मल काला रूखा गाढ़ा होता है, हवा कब्ज रहती है। इसमें तीनों दोषके लक्षणोंसे दोषभेद जान लेना । और पूर्वरूपमें आदमीका कमर जंघा अंडसंधी डकार पेटमें गुड़गुड़ ताकत कम इन लक्षणोंसे पूर्वरूप समझना।

अर्शरोगका असाध्यलक्षण ।

जन्मके साथ हुआ, त्रिदोषयुक्त, बहुत दिनोंका, शूल सूजन आदि उपद्रवसे युक्त ऐसा अर्श रोग असाध्य है ।

अर्शरोगका उपाय ।

अर्श, अतिसार, संग्रहणी ये रोग मंदाग्निसे होते हैं, इसवास्ते अग्निका रक्षण जरूर करना चाहिये । उसका शस्त्रसे, जोकसे, खारसे, दागसे, थुरासे जलाना, रक्त काढ़ना. अर्श रोगपर सोनामुखी, गुलाबकली, बाल-हरड़ा इनके चूर्णका रेचन देना १। वातअर्शको पसीना काढ़ना २। आकके पीले पान, पंचनोन, खटाईके साथ नोन सिद्ध करके वह खार गरम पानीसे देना. इससे वात अर्श जायगा ३। बायबिडंग, त्रिफला, त्र्यूषण, शक्कर शहद देना ४। सैंधवलोन, चित्रक, इन्द्रजव, बिडनोन, बेलफल, निंबका बीज इनका चूर्ण ७ दिन मट्ठेसे देनेसे वात अर्श नष्ट होता है ५ ।

अर्शरोगपर मिर्चादिक चूर्ण ।

मिर्च, पिपली, कोष्ठ, सेंधवलोन, जीरा, सोंठ, बच, हींग, बायबिडंग, हरड़ा, चित्रक, अजवाइन इनके चूर्णमें दुप्पट गुड़ डालके उसमेंसे १ तोला देके ऊपरसे गरम पानी पिलाना, जिससे सम्पूर्ण अर्श नाश होता है ६। सूरणमोदक देना ७। बाहुशालगुड़ देना ८।

पित्तार्शपर उपाय ।

तिलोंके चूर्णमें लालशकरकन्दका बीज, नागकेशर इनका चूर्ण शकरसे देना। उससे पित्तअर्श कभी न होगा ९। तिल, भिलावाँ इनका काढ़ा व इन्द्रजवका काढ़ा देनेसे पित्तअर्श जाता है १०। गिलोय, लांगली, काकड़ाशिंगी, गोरखमुण्डी, गुंज, केतकी इन छः वनस्पतियोंके रसमें कच्चा भिलावेंका फल घोटके १ दिनमें तैयार होगा, उसमेंसे ४ मासा रोज खिलाना पित्त--अर्श जायगा ११। भिलावाँ, तिल, हर्डा इनके चूर्णमें गुड़ डालके १ तोलाकी गोली रोज खाना एक महीना जिससे पित्तअर्श जायगा १२।

रक्तार्शादिपर बोलबद्धरस ।

गिलोयका सत्त्व, शुद्ध पारा, गन्धक, समभाग २ भाग, रक्तबोल इकट्ठे करके सांवरीकी छालके रसमें खरल करके २ मासा शहदके साथ देना, जिससे रक्तअर्श, पित्तअर्श, पित्तविद्रधि, रक्त, परमा, रक्तपित्त, रक्तप्रदर, भगन्दर इनका नाश करता है १३।

लोहादिमोदक ।

लोहभस्म, इन्द्रजव, सोंठ, भिलावाँ, चित्रक, बेलफल, बायबिडंग, बालहरडा इनका चूर्ण समभाग गुड़ डालके दश मासा रोज खिलाना, जिससे सर्व अर्श जायगा १४। तीक्ष्णमुखरस देना १५। पाराभस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, ताम्रभस्म, कांतभस्म, गुड़लोहकी भस्म, गन्धक, मण्डूरभस्म, माक्षिकभस्म सब समभाग लेके एक दिन घीकुवारके रसमें खरलकरके मूसमें डालके ३ दिन तुषाग्नि देना, शीत होने बाद एक मासा शकरसे देना। यह तीक्ष्णमुखरस लेने पीछेसे मधुत्रय प्राशन करना, जिससे पित्तअर्श शान्त होगा, सर्व रोग नाशकरके बलवीर्य बढ़ाता है।

कफअर्शपर उपाय।

गुदाके पार्श्वभागपर जोक लगाके रक्त निकालना। आकड़ेके रसमें दवा लगाना और दाग देना १७। सूरन, कासुन्दा, सेवगा, बैंगन इनका साग खाना, पथ्यको गेहूँ चावल, कसुम्बाके पत्ते नरम कांजीमें बांटके उनका साग खाना १८। स्वयमग्निरस चार मासे और एक गुञ्ज आनंद-भैरव देना और देवडंगरी (पेठे) के बीज गुड़ मिलाके उसे गुदाको लेप देना. ठनका शांत होगा १९। देवडंगरीके बीज, सैंधवलोन कांजीसे पीसके लेप देना २०। हलदी, लवंग इसके चूर्णमें लोह, मनसिल, गजपीपल एकन्दर पानीमें पीसके लेप देना. अर्शके कोम गिर जाते हैं २१। और गुदामें शीशेकी नलीसे सैंधवलोन, घी, कटु पदार्थ इसकी पिचकारी देना २२। सूरन, हलदी, चित्रक, टाकणखार, गुड़, कांजीमें पीसके गुदाको लेप देना, अर्श गिरेगा २३। कडूतुम्बा, कांजीमें पीसके उसमें गुड़ डालके गुदाको लेप देना. अर्शमूलसे गिर जायगा २४। अक्कोडके तेलमें काकड़ा बत्ती भिजाके गुदामें डालके रखना. इससे अर्श जड़से गिर पड़ेगा २५। पथ्यादि गुड़ १२८ तोला, हरडा ६४ तोले, आंवला ४० तोले, कवथ २० तोले, इंद्रायन, बायबिडंग, पिपली, लोध, मिर्च, सेंधवलोन, आलूका फल हरएक आठ आठ तोला लेके २०४८ तोले पानीमें चतुर्थांश काढ़ा करके छान लेना उसमें ८०० तोले गुड़ धायटीके फूल २० तोले डालके रखना। यथाशक्ति उसमेंसे पीनेको देना जिससे सूलव्याध, संग्रहणी, पांडुरोग, हृदयरोग, प्लीहा, गुल्म, मन्दाग्नि, उदर, सूजन, कोढ़ इनका नाश करेगा २६। भिलावाँ, बालहरडा, कुटकी, अजवाइन, जीरा, कुष्ठ, चित्रक, अतिविष, बच, कचूर, पोहकरमूल, हींग, इंद्रजव, सोंठ, सञ्चल सर्व सम-भाग गोमूत्रमें पीसके १ मासेकी गोली बांधना, छायामें सुखाना, एक गोली निमक देना, ऊपरसे गरम पानी पिलाना कफ-अर्श जाता है २७। हरड़ा, सोंठ, पीपल, चित्रक, चार चार तोला, दालचीनी, इलायची, तमा-लपत्र एक १ तोला, सबमें गुड़ चालीस तोला उसमेंसे दसमासा हररोज देना अर्शनाश होता है २८।

रक्तअर्शपर उपाय

अदरखके काढ़ेमें मिश्री डालके देना २९। स्वयमग्निरस देना पीछेसे शक्कर और घी एक तोला देना ३०। आस्कंद, निर्गुंडी, रिंगणी पिपली इनका धुवाँ देना जिससे तुर्त अर्श बाहर आयेगा ३१। आककी जड़, खेजड़ीका पत्ता आदमीके केश, सांपकी कैंचुलि, बिल्लीका चमड़ा, घी इन सबका धुंवा गुदाको देना. मूलव्याध शांत होगी ३२। पिप्पलादि तेलसे अनुवासन वस्ति देना ३३। कुचलेके बीजका चूर्ण शक्ति देखके थोड़ासा शक्करके साथ देना. जिससे रक्तअर्श, महामेह, त्वचादोष, कृमि इनका नाश करता है ३४। गायका मक्खन खड़ी शक्कर यह चटाना ३५। तिल, माखन, शक्कर और नागकेशर माखन शक्कर खाना ३६। दहीकी निवलीका मट्ठा यह सेवन करनेवालेका रक्तअर्श शमन होता है ३७।

अर्शरोग पर शिवरस।

शुद्ध पारा, वैक्रांतमणि, तांबा, अभ्रक, कांत इनकी भस्म, गंधक सम भाग लेके अनारके रसमें खरल करना. उसमेंसे एक मासा और तबीयतकी शक्ति देखके देना, अर्शनाश होता है ३८।

अर्शरोगादिपर अपामार्गबीजादि चूर्ण।

अपामार्गका बीज, चित्रक, सोंठ, हरडा, नागरमोथा, चिरायता, समभाग चूर्णमें समभाग गुड़ डालके उसमेंसे १ तोला देना. ऊपरसे छाछ भात खाना ३९।

लोहामृत रस।

लोहभस्म ७२ तोला, त्रिकटु, त्रिफला, दारुहलदी, चित्रक, मोथा, धमासा, चिरायता नींब, पटोल, कुटकी, गिलोय, देवदारु, बायबिडंग पित्तपापड़ा, प्रत्येक १ तोला लेके एकंदर करना. उसमेंसे एक तोला घी और शहदसे देना. जिससे अर्श, संग्रहणी, वात, पित्त, कफ, रक्त अनेक रोग जाके देहको दृढ़ करता है ४०। कड़ू नींबके बीजमेंके मगजका चूर्ण दो मासे और तीन मासे ठंड जलसे लेगा उसके सब अर्शके रोग नाश होते हैं, कोठेकी गरमी समाधान होके खून कभी न पड़ेगा ४१। माल-

कांगणीके बीज पीसके लेप देना. जिससे खूनी बवाशीर दूर होगी ४२। गुंजा कोहलेका बीज, सूरन, एकंदर बांटके कल्कमें कपड़ा लिप्त करना, उस कपड़ेको छायामें सुखाना, उसकी बत्ती करके गुदामें रखना, अर्श-नाश होगा ४३ । कनकार्णव रस देना ४४ ।

योगराज गूगल ।

पिपली, गजपिपली, चित्रक, बायबिडंग, इंद्रजव, धमासा, कुटकी, पिपलमूल, भारंगमूल, पहाड़मूल,अजवाइन,मोरवेल, सोंठ, हींग,चवक, सबका चूर्ण करके समभाग गूगलमें मिलाके हररोज १ तोला शहदमें देना जिससे रक्तअर्श, वातअर्श, गुल्म, संग्रहणी,पांडुरोग इनका नाश करता है ४५ । राल सरसोंके तेलमें मिलाके धुंवा देना अगर कपूरका धुवाँ देना और तिल गुड़,अरहर, मसूर उसके काढ़ामें अथवा जूसमें किंचित् खटाई डाल करके उसके साथ भात खिलाना ४६ । कालांतकवटी देना ४७। अपामार्गका बीज चावलके धोवनमें पिलाना रक्तअर्शका नाश होगा४८। कमलका केशर, शहद, माखन, शकर, नागकेशर इसकी गोली करके देना ४९ । लज्जालू, कमल, मोचरस,लोध,तिल,चंदन इसमें सिद्ध किया हुआ बकरीका दूध देना, शीशेकी नलीको सैंधवलोन घी लगाके, रोज गुदामें फिराना,मलावरोध नहीं होगा ५०। गूगल,लहसुन, निमक,बीज, हींग, सोंठ इनकी गोली ठंडे पानीसे देना ५१ । त्रिफलादि गुटीदेना५२। चंद्रप्रभावटी देना ५३। कडू तुरईका चूर्ण लगानेसे मसा गिर जाता है५४। लीलाथोथा भूनके ददूर उसमें मिलाके घीमें व मस्कामें खरल करके लगाना ५५ । क्षुद्रशंख घीसे घिसके लगाना ५६। गाईके छाछमें पिलाना ५७। द्राक्षासव देना ५८। कुमारी आसव देना ५९। अजीर्णहर महोदधिवटी देना ६०।अथवा क्षुधासागरवटी देना ६१ । अग्नितुंडवटी देना ६२ । शंखवटी देना ६३ । त्रिकटु एक भाग, सैंधव लोन २ भाग, गंधक ३ भाग सबको निंबूके रसमें खरल करना, इसको क्षुद्बोधक रस कहते हैं, यह देना ६४ । टांकनखार, पिपली, बच्छनाग, ददूर समभाग, मिर्च दो भाग, निंबूके रसमें खूब खरलके वाल बराबर गोली कर देनेसे अग्नि प्रदीप्त होके अजीर्ण नाश होता है ६५।

अर्शरोगपर अग्निकुमार रस।

शुद्ध पारा, गंधक, बच्छनाग, टांकणखार, समभाग मिर्च ८ भाग, शंखकी भस्म, कवड़ीकी भस्म २ भाग, निंबूके रसमें ७ भावना देना. दो गुंजाकी गोली बनाके देना.इससे जीर्ण,तरल, क्षयरोग,अर्श, त्वरित नाश होना ६६। बृहत्क्रव्याद रस देना ६७।वडवानल चूर्ण देना.शुद्ध पारा गंधक, नाग,वंग इनकी भस्मएक१भाग मिर्च१६भाग मिलाके खरलकर देना६८।

अर्शरोगपर अग्निदीपन वटी।

गंधक, मिर्च, सोंठ, सेंधवलोन, इंद्रजव, बायबिडंग एकत्र कर नींबूके रसमें खरल करके चने बराबर गोली बांधकर देना ६९।

अर्शरोगपर लघुपानीय भक्तवटी।

शुद्ध पारा आधा भाग, बायबिडंग, मिर्च, अभ्रक हर एक १ भाग चावलके पेजमें घोटके गुंजाकी बराबर गोली बनाना. चावलके पेजसे देना. इसको पथ्य नहीं, लेकिन थोड़ा खाना ७०।

अर्शरोगपर राजवल्लभ रस।

शुद्ध पारा४ मासे,गंधक १ तोला, चित्रक ४मासे, नवसादर ६ तोला, सब खरल करके उसमेंसे१मासा देना.मांसादिकको अच्छा पचाता है७१।

अर्शरोगादिपर लब्धानंदरस।

शुद्ध पारा,गंधक, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, बच्छनाग समभाग,मिर्च८ भाग, टंकनखार ४ भाग मिलाके भांगरेकी खट्टी अनारके रसकी सात २ भावना दे करके उसमेंसे दो गुंजा पानके बीड़के साथ देना.जिससे वातादि, कफ, अग्निमांद्य, संग्रहणी, ज्वर, अरुचि, पांडुरोग, अर्श इनका नाश करता है ७२।

अर्शरोगपर महोदधि वटी।

बच्छनाग, शुद्ध पारा, जायफल, टंकनखार, पिपली, सोंठ, कवड़ीकी भस्म, लवंग,भागवृद्धिसे लेके गोली बांधकर देना७३।वैक्रांत रस देना७४। कुटजावलेह, कूष्मांडावलेह, भल्लातकावलेह देना७५।विजयादि चूर्ण देना ७६। कांकायनगुटी, सुवर्णमोदक, अर्शकुठाररस,अभ्रक,हरीतकी देना७७।

अर्शरोगपर पथ्य ।

रेचन, लेप करना, रक्त काढ़ना, क्षारकर्म, शस्त्रकर्म, अग्निकर्म, पुराना लाल चावल,जव,कुलथी,साठीका भात,गोधा,लोमक, धतूरा लहसुन,चित्रक,पुनर्नवा,बथवा,सूरन,हरणवेल,कवथ,सुरा, इलायची, माखन, छाँछ, असली, बिजोरा, घी, दूध,भिलावें, सरसोंका तेल, गोमूत्र, सौवीर ये अर्श रोगको पथ्यकारक हैं ।

अर्शरोगपर अपथ्य ।

अनूपमांस,दही,मिष्टान्न,उड़द,वाल(सेमके दाने), बटाने(काबुली मटर), आँब, कन्दपदार्थ,वातल, धूप, खराब पानी, पूर्वकी हवा, दक्षिण, पश्चिम दिशाकी तर्फसे आया हुआ नदियोंका पानी,जड़ पदार्थ,वमन,वस्तिकर्म, विरुद्ध पदार्थ, अवरोधकी चीजें, मैथुन, घोड़ादिकपर बैठना, तालावमें डुबकी मारना, शराब पीना, दिनका सोना और प्रकृतिको नहीं माननेवाली चीजें खाना अर्शरोगीको वर्जित है ।

इति अर्शरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ अजीर्णरोगनिदानम् ।

ज्योतिषका मत ।

जन्म लग्नसे छठे स्थानपर गुरु हो तो लोकनिंदित, कृपणता, बंधुस्त्रीवियोग, अजीर्ण, अग्नि मंद होता है ।

ज्योतिषमतका परिहार ।

गुरुजप, दान, होम, पूजा, वस्त्रदान, सोनादान करना ।

पूर्वजन्मका कर्मविपाक ।

अन्न चुरानेवाला, गोमांसके खानेवाला, ब्याज बट्टा खानेवाला, दूसरेको बिना कारण विष देनेवाला,अग्नि त्यागी,अजीर्ण रोगी होता है ।

पूर्वजन्म कर्मविपाकका परिहार ।

उपास करना, अग्नि, रश्मी इस मंत्रका दश हजार जप करना,अग्निसूक्तका जप करना, श्रीसूक्तका जप, ब्राह्मणभोजन, अग्निपूजा, सोनादान, गोदान करना युक्त होगा.

अजीर्ण होनेका कारण।

बहुत पानी पीना, विषम खाना, पीना, उपास करना, मलमूत्रका वेगरोध करना, जागना, दिनको सोना, भोजनपर भोजन, उपास, भय, विषभक्षण, क्रोध, शोक, द्वेष, कृमि ऐसे कारणोंसे अजीर्ण होता है।

अजीर्ण रोग चार प्रकारका होता है।

विष्टब्ध, विदग्ध, आम, विष ये चार प्रकारके समझना. उसमें विष्टब्धलक्षण ऐसा है कि शूल, पेट फूलना, बादीकी अनेक पीड़ा, मल, वायु इनकी कब्जता, मोह, अंग दूखना ये लक्षण विष्टब्धमें होते हैं१।

विदग्ध अजीर्णके लक्षण।

भ्रम, तृषा, मूर्च्छा, संताप, पित्तके उपद्रव, खट्टी गर्म डकार, पसीना, दाह, पेट भारी ये लक्षण होते हैं २।

आम-अजीर्णके लक्षण।

शरीरका जड़पना, कोरी उबकाई, गलेमें और नेत्रोंपर सूजन, तुरस खारा डकार, मुख मीठा, पेट फूलना, अन्न न पचना ये लक्षण होते हैं ३।

विष-अजीर्णके लक्षण।

जो अजीर्ण विषके माफिक मारता है अनेक लक्षण जिसमें हैं वह विष अजीर्ण है ४।

अजीर्णपर उपाय।

सैंधव लोन १ भाग, पिपलमूल २ भाग, पिपली ३ भाग, चवक ४ भाग, चित्रक ५ भाग, सोंठ ६ भाग, बालहरड़ा ७ भाग, इस माफिक लेकर चूर्ण करके देना. इससे सब अजीर्ण जाता है १। सेरणी, त्रिफला, त्रायमाण, पिपली, चवक, निशोथ, पीला थूहर, कुटकी, वच, सैंधवलोन, संचर इनका चूर्ण गरम जलसे देना. इसका वड़वानल चूर्ण नाम है २। अग्नितुंडवटी रस देना ३। हिंग्वाष्टक चूर्ण देना. सोंठ, मिर्च, पिपली, अजवाइन, सैंधवलोन, स्याह जीरा, हींग, समभाग लेकर चूर्ण करके देना. भोजनके पहले ग्रासमें जिससे अग्निदीपन होके गुल्म-नाश होगा ४। सोंठ, मिर्च, पिपली, त्रिफला, बायबिडंग, बड़ी सौंफ, जीरा, दालचीनी, लौंग, अजवाइन, अजमोदा, टंकणखार, सैंधवलोन,

काला नोन, गंधक इन चीजोंके चूर्णको नींबूका रस, बिजोरेका रस और अदरखकेरसकी दो दोभावना देना जिससे चूर्णतयार होगा. इसमेंसे मासा तीन गरम जलसे देना. सर्व अजीर्ण, पेटपीड़ा जाके भूंख लगेगी ५। जीरादि चूर्ण देना ६। वह्निनामक चूर्ण देना और रस देना ७।

भस्मक रोगका निदान।

ऊपर लिखा जो अजीर्ण उसमें चार तरहके अग्नि हैं। सो ऐसे मंद-अग्नि, तीक्ष्णअग्नि, विषमअग्नि, समअग्नि ऐसे हैं। मंद अग्निसे न पचना, तीक्ष्ण अग्निसे बहुत खाके भूख मालूम होती है. उससे कृश-पना, न खानेको मिले तो घबराहट होना, चक्र आना, उसीको भस्मक रोग कहते हैं और विषमअग्निसे कभी पचना और कभी न पचना और समअग्नि श्रेष्ठ है, उससे हमेशा निरोगी रहता है १।

भस्मक रोगपर उपाय।

केला पक्का घृतसे खाना २। भस्मक रोगको जड़, स्निग्ध अन्न, भारी चीजें मांस आदि चीजें जो देरसे पचे, सो देना ३। कफ, पित्त, वात, जीतके अग्नि समान करना पित्तनाशक रेचन देना. कफपर घी, मांस आदि भोजन देना, अघाड़ा पानी (आंधाजाड़ा) इनके बीजोंकी खीर भैंसके दूधमें पचाके देना ४। स्त्रीके दूधमें गूल-रकी छाल पीसके देना ५। और दूध सिद्ध करके देना ६। सफेद चावल, सफेद कमल, बकरीके दूधमें खीर करके उसमें घी डालके देना. बारा दिनमें भस्मक नाश होगा ७। भुई कोहला भाग, महिषका दूध ११ भाग उसमें भैंसका घी १ भाग उसमें जीवनीय गण, हरनबेल, मुलहटी, रानमूल, जंगली उड़द, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक इन दवा-इयोंका कल्क एक भाग डालके घी सिद्ध करके देना ८। अपामार्गके बीज महिषके दूधमें खीर करके देना सात दिनमें भस्मक रोग नाश होगा ९। त्रिफला, मोथा, वायबिडंग, पीपल, शकर, सफेद अपामार्गका बीज इससे दूध सिद्ध करके देना अथवा लेह देना १०।

भस्मकरोगपर कदलीफलयोग।

एक मंडलतक यानी ४२ दिन प्रातःकाल २४ तोला पक्का केला घी

मिलाके देना. जिससे संपूर्ण अग्निकी तीव्रता, भस्मकरोग कोनाश करता है और अग्निको मंद करता है ११। वैश्वानर क्षार देना. सर्व अजीर्ण जायगा १२। हरडा, सोंठ; गुड़से अथवा सेंधवसे नित्य देना. अग्निको प्रदीप्त करता है १३।

समुद्रादि चूर्ण।

नोन, काला नोन, सेंधवलोन, जवाखार, अजवाइन, हरडा, पिपली, सोंठ, हींग, बायविडंग, समभाग लेके चूर्ण करना, उसको घी लगाके भोजनके प्रथम पांच ग्रासमें चूर्ण डालके देना, जिससे अजीर्ण, वात, गुदावात, गुल्मवात, वातप्रमेह, विषमवात, विषूचिका, पीलिया, पांडुरोग, श्वास, खांसी ये नाश होते हैं १४। त्रिकटु, दंतीमूल, चित्रक, पिपलमूल इसके चूर्णमें गुड़ मिलाके सामके वक्त खाना १५। हरडा, पिपली, संचर इनका चूर्ण दहीके मट्ठा साथ देना.

विषूचिका यानी (कालरा, महामारी, पटकी) का निदान

श्लोक–अनात्मवन्तः पशुवद्भुञ्जते येऽप्रमाणतः।
रोगानीकस्य ते मूलमजीर्णं प्राप्नुवन्ति हि॥

अर्थ–प्रथम इंद्रियां और मन जिनके स्वाधीन नहीं हैं और जो आदमी खानेके लालची हैं, पशुके माफिक मिले उतना ही खा जायँ उन्हींको यह बीमारी होती है और हवाके कारणसें पूर्वकी हवा होके पेटमें कृमिका कोप होता है वा आदमीके दिलपर शंका होकर आदमीको यह बीमारी होती है, उदाहरण-जैसे आंख दुखनेवालेकी तरफ दूसरे आदमीने आंख भरके देखा तो उसकी आंख आती है और खुजलीवालेकी तरफ दूसरेके दिल लगानेसे खुजली आती है. जैसे ऋतुमें बरसात पड़नेसे अनेक कृमि एक दिनमें हो जाते हैं वैसे उस हवासे हवा बिगड़नेसे यह विषूचिका अवश्य होती है और जिसका आहार और विहार नियमसे है, जिसको वैद्यशास्त्रकी क्रिया मालूम है उसको यह रोग नहीं होता है।

श्लो०-मूर्च्छातिसारौ वमथुः पिपासा शूलभ्रमोद्वेष्टनजृम्भदाहाः
वैवर्ण्यकम्पौ हृदये रुजश्च भवन्ति तस्यां शिरसश्च भेदः॥

अर्थ-मूर्च्छा आना, दस्त होना, उलटी होना, पानीका शोष, शूल होना, भवँल आना, पिंडियोंमें गोला चढ़ना, जँभाई, दाह होना, शरीरका वर्ण बदल जाना, आंखें गड़ जाना, कांपना, छातीमें दुखना, मस्तकमें शूल होना इतने लक्षण जिसमें होते हैं उसीको महामारी कहते हैं ।

विषूचिका दो प्रकारकी होती है ।

एक अलसक दूसरी विलंबिका. जिसकी कोख ज्यादा फूले, रोगी बेशुद्ध होके पड़े और बड़े जोरसे चिल्लावे, हवाके अधोगत होनेका अवरोध हो तो कोखके ऊपर यानी हृदय,कंठादिक तक आता है. मलका और हवाका अत्यंत रोध होता है और शोष लगता है और डकार खराब आती है उसको अलसक कहते हैं । और कफ बादीसे अन्न दुष्ट होके ऊर्ध्वगत और अधोगत दस्त उलटी होती नहीं. आमाशयमें वह अन्न वैसे ही बहुत देर रहता है, हलन चलन नहीं होता इसको विलंबिका कहते हैं । इसकी दवा करना कठिन है. अलसक और विलंबिका इन दोनोंमें कफ और बादी प्रबल रहती है कारण उसमें भेद, आलस्य, आमशूलादिक बहुत तीव्र होते हैं और विलंबिकामें नहीं होते । उसका दूसरा भेद जिस ठिकाने आम रहता है उस ठिकाने जो दोषसे शरीर व्याप्त हुआ है वे लक्षण, तोद, दाह, गौरवादिक यानी आमवातादिकसे विशेष पीड़ा होती है ऐसा जानना.

विषूचिकाका असाध्य लक्षण ।

जिसके दांत और ओंठ नख काले पड़ जाते हैं, स्मृति थोड़ी रहती है, उलटीसे पीड़ा ज्यादा, जिसके नेत्र गोल खड़ेसे हो जाते हैं, आवाज बैठ जाती है, हाथ पांवकी सब संधियां ढीली पड़ जाती हैं, वह बचता नहीं ।

विषूचिकाका साध्य लक्षण ।

शुद्ध डकार आना, शरीर और मनको आनंद मालूम होना, मल मूत्रकी प्रवृत्ति (वेग) जुदी २ होना, शरीर हलका, कोठा हलका, दस्तके साथ पेशाब होना, भूख और प्यास लगना, अन्न पचना ये साध्य लक्षण हैं ।

इति विषूचिकानिदान समाप्त ।

अथ विषूचिकाका उपाय।

निवडुंग, आक, आमली, अघाडा, केला, तिल, पलास इनका क्षार चार २ तोला और नोन, टंकणखार, सैंधवलोन, बिडनोन, संचर ये प्रत्येक चार ४ तोला, सज्जीखार, जवाखार, टांकणखार ये तीन मिलाके ४ तोला, सब ९२ तोला लेकर बारीक चूर्ण करना। ६४ तोले निंबूके रसमें डालकर उसमें चार तोले शंखके टुकड़े तपाके उसमें डालना. ऐसे वारंवार तपाके सात वक्त डाले बाद उसमें वे मिल जाते हैं, बाद सोंठ १२ तोले, मिर्च ८ तोले, पिपली ४ तोले, भुनी हींग २ तोला, पिपलमूल, चित्रक, अजवाइन, जीरा, जायफल, लवंग दर एक दो २ तोला शुद्ध पारा, गंधक, बच्छनाग, टांकणखार, मनशिल ये हर एक १ तोला इस प्रमाण एकत्र करके १६ तोले चूके के रसमें खरल करके गोली एक मासा प्रमाण बांधना. एक वक्त १ गोली देना. इससे अजीर्ण, शूल, विषूचिका, अलसक, विलंबिका तत्काल इन रोगोंका नाश करती है, अजमाई दवा है. इसका नाम बृहच्छंखवटी है२।

विषूचिकापर लघुक्रव्याद रस।

शुद्ध पारा एक भाग, गंधक दो भाग, लोहभस्म आधा भाग, पिपली, पिपलीमूल, चित्रक, सोंठ, लौंग, हर एक दो २ भाग, कालानोन, टांकणखार, मिर्च, एक १ भाग इनको खरलमें निंबूके रसकी ७ भावना देना. हर वक्त मासा भर छाछमें देना. इससे हजम होके अग्नि प्रदीप्त होता है, अजीर्ण, विषूचिका जाती है। मनुष्यको उचित है कि भोजनके आगे निद्रा करना. जिससे पाषाण भी हजम होगा, भोजनके बाद निद्रा लेनेसे त्रिदोष कोपता है। हींग, सोंठ, मिर्च, पिपली, सैंधवलोन इसका लेप करना. पेटपर करके सोना, सब हजम होगा. अफीम, जायफल, घीमें खरलकर गरम करके सब बदनमें खूब मालिश करना. हाथ पांवमें ज्यादा करना और पानी पीनेको देना, शंख घिसके व पानीमें मिलाके देना, प्यास बंद होगी. उलटीके वास्ते शंखभस्म, मिर्च मिलाके शहदमें वारंवार चाटनेको देना. उलटी त्वरित बंद होगी. इसे हमने हजारों ठिकाने अंदाज लिया है ४। बायविडंग, सोंठ इनका काढ़ा ठंडा करके रखना और वारंवार पिलाना ५।

विषूचिका पर संजीवनी वटी ।

बच्छनाग, त्रिकटु, चवक, चित्रक, बायबिडंग सोंठ, कूट, अक्कलकरा, दर्दूर, कवडीका भस्म, कस्तूरी, जायफल इन चीजोंमें समभाग टंकणखार मिलाके अदरखके रसमें सात भावना देना. तीन गुंजाकी गोली देना. इससे महामारी, विषूचिका, अजीर्ण, सोडशी इनका नाश होके बहुत फायदा करती है । यह अनुभव की हुई है ६ ।

विष्टब्धपर उपाय ।

पसीना निकलवाना, ईटका पानी देना, लंघन कराना इन रोगोंको अन्न जहरके माफक है, कभी न देना, हवामें नहीं बैठना. ऊपर लिखे माफिक पेटको लेप देना. दिनको निद्रा करना ७ ।

भास्करलवण चूर्ण ।

पिपली, पिपलमूल, धनियाँ, स्याहजीरा, सेंधवलोन, बिड नोन, तालीसपत्र, नागकेशर ये हर एक ८ तोला, संचल २० तोला, मिर्च, अजवाइन, सोंठ, हरएक चार ४ तोला, दालचीनी, इलायची, दो २ तोला, सेंधानोन ३२ तोला, अनारकी छाल १६ तोला, अम्लवेतस ८ तोला इन सबका चूर्ण एकत्र करके तैयार करना. यह भास्करलवण चूर्ण सुगंधकारक है। अमृतके माफिक जगत्के हितके वास्ते श्रीसूर्यने कहा है, देनेसे वात, कफ, वातगुल्म, वातशूल इनका नाश करता है. छाछसे देना. कांजीसे देना. मंदाग्नि, हृदयरोग, आमदोष सब उदररोग, सब व्याधि नाश करता है ८ । वृद्धाग्निचूर्ण देना ९ ।

जवाखार, सोंठ, हरडा इनका काढ़ा अजीर्णको नाश करता है १० । पिपली, सेंधवलोन, हरडा, चित्रक इनका चूर्ण गरम जलसे देना, यह अग्निको दीप्त करके अजीर्णका नाश करता है ११ ।

ज्वालामुख चूर्ण ।

हींग, अम्लवेतस, त्रिकटु, चित्रकमूल, जवाखार समभाग चूर्ण करके और गुञ्जा समभाग मिलाके देना १२ ।

वैश्वानर चूर्ण ।

त्रिकटु, इलायची, हींग, भारंगमूल, बिडनोन, जवाखार, पाठामूल, अजवाइन, इमलीके छालकी राख, चवक, चित्रक, गजपिपली, दालचिनी, सैंधव, पिपलमूल, जीरा इनका चूर्ण घीसे देना, इससे सर्व रोगोंके अजीर्णका नाश करता है १३ । त्रिकटु, तांबूल, दालचीनी, इलायची, ये चीजें भागवृद्धिसे लेके समभाग मिश्री मिलाके देना. इससे अरुचि, दमा, अर्श, विपूचिका नष्ट होगी १४।

दूसरी सञ्जीवनी वटी ।

वायविडंग, सोंठ, पिपली, हरडा, चित्रक, बहेड़ा, बच, गिलोय, भिलावां, अतिविष, बच्छनाग समभाग लेके गोमूत्रमें घोटके गोली गुञ्जा बराबर बांधना और अदरखके रससे देना. अजीर्णपर एक देना, विषूचिकापर दो देना, विषमें तीन देना, सन्निपातमें चार देना. यह गोली आदमीको सञ्जीवन करती है १५। धनञ्जयवटी देनेसे सर्व अजीर्ण जायगा १६ । शंखवटी देनेसे सर्व अजीर्ण विषूचिका जायगी १७। चित्रक गुड़ देना. सब मोडसी अजीर्णजायगा १८। अमृतहरीतकी १०० सौ हर्डा लेकर छाछमें पचाके नरम करना उसका बीज निकालना उसमें पिपली, पिपलमूल, चवक, चित्रकमूल, त्रिकुटी, टांकणखार, संधवलोन, बिडनोन, सञ्चल, हींग, जवाखार, जीरा, अजमोदा ये हर एक तोला २ निशोथ आधा तोला सबका चूर्ण कपड़छान करके उसको चुकाके रसकी भावना देना और हरड़ेमें भरना बाद धूपमें सुखाना उसमेंसे एक हर्डा खाते जाना जिससे अजीर्ण मन्दाग्नि, उदरशूल, संग्रहणी, अर्श, कब्जी, आनाहवात, आमवात इनका नाश करता है इसे तक्रहरीतकी भी कहते हैं १९। भोजनके बाद पेटमें जलन हो और कोठे तथा हृदयमें

आग हो तो दाख,शक्कर,शहद, हर्डा ये मिलाके खाना जिससे सुख होगा२०। अग्निकुमार रस देना २१ । अजीर्णारि रस देना. पशुपति रस देना २२।

आदित्य रस ।

दर्दूर, बच्छनाग, गन्धक, त्रिकुटी, त्रिफला, जायफल, लवङ्ग, काच-नोन, सेंधवलोन, बिडनोन, सञ्चर सर्व एकत्र करके बिजोरेके रसमें सात पुट देना और खट्टा अनारदानेके रसके साथ पुट देना और उसकी गोलीबलप्रमाणकी बनाके देना, इससे सर्व अजीर्ण विषूचिका नाश होके अग्नि प्रदीप्त होता है २३।

हुताशन रस ।

बच्छनाग १ टांकणखार ८ मिर्च १२ भाग ये एकत्र करके घोटना और गोली करके देना. सर्व मन्दाग्नि जाकर अग्नि प्रदीप्त होगा २४ ।

अजीर्णकंटक रस ।

शुद्ध पारा, बच्छनाग, गन्धक समभाग तीनोंके समभाग मिर्च मिलाके रिंगणीके रसकी इक्कीस भावना देना. उनमेंसे तीन गुंजा देना. जिससे अग्निवृद्धि होके तरल अजीर्ण वात इसका नाश करता है २५ ।

रामबाण रस ।

शुद्ध पारा, बच्छनाग, लवंग, गन्धक, समभाग मिर्च, दो भाग जाय-फल, आधा भाग एकत्र करके आंबलीके रसमें खरल करना. गोली चने बराबर बांधकर देना. जिससे संग्रहणी आमबादी, अग्निमन्द, कफ, दमा, खांसी उलटी, कृमि इसका नाश करता है २६ ।

दूसरा रामबाण रस ।

शुद्ध जैपाल ४ मासे, बच्छनाग, गन्धक, शुद्ध पारा एक १ मासा एकत्र भांगरेके रसमें घोटना, उसकी गोली दो गुंजा प्रमाण देना. जिससे कफ-बादी, अजीर्ण, आध्मान, कब्जी, शूल, दमा, खांसी इसका नाश करता है २७ । और ज्वालानल रस देना २८ ।

चिंतामणि रस।

शुद्ध पारा, गंधक, ताम्र, अभ्रक, त्रिफला, त्रिकटु, जैपाल सब समभाग लेके कुम्भा यानी द्रोणपुष्पीके रसमें खरल करके सूखे बाद कपड़छान करना. इसके देनेसे आठ प्रकारके ज्वर, सब जातका शूल, आमवात इनका नाश करता है और अग्नि प्रदीप्त होता है और ये दो गुञ्जा देना २९। दशमूलादि घी देना ३०। और विषूचिकापर कपड़ेकी बत्ती करके रेचक दवाइयोंमें भिगोके गुदामें रखना, लंघन करना, अतृप्त रखना ये प्रयोग अलसक, विष्टब्धतापर अवश्य करना, बाकी इलाज अतिसारकेहैं वे ही करना ३१। पटकी (हैजा) बहुत बढ़े तो पिंडियोंके नीचे एड़ीके ऊपर दाग देना और गंधक केशर नींबूके रसमें डालके पिलाना, फायदा होगा ३२। लहसुन, जीरा, सेंधवलोन, काला निमक, त्रिकटु, हींग, इनका चूर्ण नींबूके रसमें खरल करके चटाना. इससे विषूचिका नष्ट होती है ३३। अपामार्गका मूल पानीमें घिसके पिलाना और करेलेके रसमें तेल डालके पिलाना, इससे हैजेका नाश होके कृमिनाश होगा ३४। जवका चूर्ण छाछमें गरम करके उसमें जवाखार डालके देना और सफेद कांदेके रसमें घी डालके देना और गरम पानीकी भाफ और शेक, हाथ पांवमें मालिश करना. अफीम, जायफल, घी इनकी हाथ, पांव और सब बदनको मालिश करना और छाछ और नोन पांवमें लगाके लोहकी उलथनी खुरपी तपाके गरम २ हाथों पांवोंपर फिराना ३५। बेल, सोंठ इनका काढ़ा देना और कायफल पिलाके देना ३६। जवका आटामें जवाखार डालके छाछमें गरम करके पेटको लेप देना, कैसा ही शूल हो तो बन्द होगा ३७। कुष्ठ, कुलिञ्जन, सेंधवलोन इनका चूर्ण आमसोलके तेलमें मिलाके गरम करके मालिश करना। विषूचिका, खल्ली, शूलका नाश करता है ३८। शूलयुक्त होके पेट फूले उसको खटाईमें दारुहलदी, हरडा, कुष्ठ, शतावर, हींग, सेंधवलोन पीसके लेप देना ३९। लवंग ८ मासे, इलायची, जायफल तीन ३ मासे अफीम १ मासा इनका चूर्ण एकत्र करके गरम पानीसे देना. इससे कठिन तलखी, शूल, अतिसार और उलटी इसका नाश करता है ४०। शंखकी भस्म देना. लोकनाथ रस देना. शंखद्राव देना ४१। शरदी ज्यादा मालूम हो

तो दालचीनीका तेल जायफल डालके बदनको लगाना ४२ । ये रोग ज्यादा बढ़े तो छाछ और दही इसमें समभाग पानी डालके देना और नारियलके रसमें पिलावे उसे देनेसे प्राणकी रक्षा होगी ४३ । गुरुकी कसम खाके कहते हैं कि शंखका पानी पीनेको देना. दाह त्वरित शांत होगा ४४ । निंबूके रसमें पुरानी अम्ली मिलाके पिलाना. विषूचिका, शोष, कफ इनका नाश होता है ४५ । और दूधमें टंकणखार डालके पिलाना. विषूचिका, उलटी बन्द होगी ४६ । और सन्निपात पर जो अञ्जन लिखे हैं व अञ्जन करना, जिससे विषूचिका नष्ट होती है ४७ ।

विषूचिकादिपर पथ्य ।

मंदाग्नि, अजीर्ण, विषूचिका, भस्मक श्लेष्माधिक हो तो पहले वमन देना, पित्ताधिक हो तो मृदुरेचन देना और वाताधिक हो तो पसीना निकालना ये चीजें समयपर हितकारी हैं और व्यायाम, दीपन, लघु, बहुत दिनका पुराना चावल,लाह्योंका मंड, मूंग, चने इनका जूस, हरण, मोर, ससा, लावा, जंगली मांस इनका रस अथवा कोल, मूली, लहसुन, पुराना कोहला, सहँजनकी फली, पटोल, बैंगन, कमलककड़ी, करेला, जामुन,अदरख,लजालू,चूका,करडू(कुकरडी),आंवला,सोंठ,अनार, पित्त-पापड़ा,आम्लवेतस,जंभीरी,बिजोरा,मद्य,माखन,घी,छाछ,कांजी, धान्य, अम्ली, तीखा तेल, हींग, लवण, अजवाइन, मिर्च, मेथी,धनिया, जीरा, दही, तांबूल, तपाया पानी, कटु तीखा ऐसे पदार्थोंका मंदाग्नि, अजीर्ण, महामारी, विषूचिकापर अवश्य पथ्य देना, प्रकृतिको माने सो देना.

विषूचिकादिपर अपथ्य ।

रेच मल आदि तेरा वेगोंका धारण, भोजनपर भोजन, भारी अन्न, जागना, विषभक्षण, रक्तमोक्ष, दालका पदार्थ, मांस, मच्छी, जलपान, विष्टंभक चीजें,जामुन,कमलकन्द, चावल, घी, खीर, दूध,खजूर,चारोली, स्नेहपदार्थ, खराब पानी, वातल और जड़ पदार्थ अजीर्णवालोंको मना रखना तथा जो प्रकृतिको न माने वे चीजें अवश्य मना रखना और महा-मारीके दर्दपर प्रारम्भी अन्नादिक खानेको बिलकुल देना नहीं. कफघ्न दवाइयोंसे युक्त पानी देना.

नित्यादित रस । अर्शकुठार रस। षडानन रस । पीयूषसिंधु रस। चक्रबंध रस । पर्पटी रस । भल्लातक लेह ये चीजें अवश्य करके देना. ग्रंथ-विस्तार होगा इसवास्ते यहां नहीं लिखा इन रसोंको रसायन प्रकरणमें देख लेना ४७ ।

अथ कृमिरोगका निदान ।

ज्योतिषका मत ।

जन्म समय अष्टम स्थानमें क्षीण चंद्र हो तो विकल, कृमिरोगी, अल्पायु और शत्रु भवनका सूर्य हो तो उसकी दशामें नेत्ररोग, पांगला, कृमि-रोग होगा ।

ज्योतिषमतका परिहार ।

चंद्रमंत्रका जप दान करना । सूर्यमंत्रका जप दान करना, शांत होगा।

पूर्वजन्मका कर्मविपाक ।

पूर्व जन्ममें अश्वहत्या और गजहत्या की हो तो दूसरे जन्ममें कृमिरोगी होगा. जो स्त्रीका पति मर जाता है वह यदि अलंकृत कपड़े पहने तो उसको कृमि होता है ।

पूर्वजन्म कर्मविपाकका परिहार।

नीले वृषभका दान, ब्राह्मणभोजन कराना, समाधान होगा । बाहर और अंदर रहने वाले ऐसे दो प्रकारके कृमि होते हैं. बाहरके कृमि स्वेदा-दिकसे, मैले कपड़े रहनेसे तीन जातिके होते हैं,जुवां, लीख और चिम-जूवां ये कपड़ोंमें और केशोंमें रहती हैं ।

कृमि होनेका कारण ।

अजीर्णपर भोजन करनेसे हमेशा मीठा, खट्टा खानेसे, द्रव्य, कर्डा सौवीर दाल, पुआ, घारगे, व्यायाम न करनेवालेको दिनका सोना, क्षीर, मच्छादिक विरुद्ध खानेवाला, पुरुषको कुछ कृमि मैलसें होते हैं और कुछ रक्तजन्य कृमि होते हैं ।

कृमिका पूर्वरूप ।

ज्वर शरीरका वर्ण बदलना, शूल, हृदयमें पीड़ा, ग्लानि, भ्रम, अन्नद्वेष,

अतिसार ये होते हैं। कफ पाशसे जो आमाशयमें कृमि होते हैं व चारों तरफ फिरते हैं. उनकी आकृति रस्सी प्रमाण लंबी, आलस्यके माफिक और अनेक तरहकी सफेद लाल उनके नाम अंतरा, उदरविष्ट, हृदयांध, महारुज, चरु, दर्भकुसुम, सुगंध ऐसे हैं। ये नाम कुछ अन्वर्थक, कुछ निरर्थक हैं। इन कृमियोंसे मुखको पानी छूटना, अन्न न पचना, अरुचि, चक्कर, उबकाई, प्यास, पेट फूलना, शरीर कृश, सूजन, जुखाम ये विकार होते हैं।

रक्तज कृमिका लक्षण।

रक्त बहाने वाली शिराके रक्तपाशसे जो कृमि होते हैं वे बारीक, पांवरहित, गोल लाल रहते हैं। छोटे होते हैं, वे छः जातके हैं। उनका नामकेशाद १।रोमविध्वंस २।रोमद्वीप३। उदुंबर ४। सौरस ५। मातर ६। वे कोढ़ पैदा करते हैं, यह उनका काम है।

पुरीष कृमिका लक्षण।

पक्काशयमें मलमें जो कृमि हैं वे गुदासे बाहर निकलते हैं, वे बहुत बढ़के जब आमाशयमें आते हैं। तब उसके डकारकी दुर्गंध मैलाकीसी आती है। वे कृमि, मोटे, गोल, छोटे, नीले, पीले, काले, सफेद होते हैं। उसके नाम पांच हैं वे १ ककेरुक, २ मकेरुक, ३ सोसूरा, ४ लून, ५ लेलिह। ये किसी तरफ जाके मैल पतला होना, शूल, पेट फूलना, कृश होना, खरदरापना, पांडुरोग, रोमांच, अग्निमंद, गुदाको खाज इनको करते हैं।

इति कृमिरोगका निदान समाप्त।

अथ कृमिरोगका उपाय।

त्रिफला, गिलोय, कुटकी, नींबकी छाल, चिरायता, अडूसा इनका काढ़ा करके उसमें पिपली, बायबिडंगका चूर्ण डालके देना. इससे ज्वर, जंतु, पांडु, कृमिविकार दूर होता है १ निशोथ, पलासके बीज, किरमाणी, अजवाइन, कपिला, रेणुकके बीज, बायबिडंग इनके चूर्णमें समभाग गुड़ डालके छाछमें देना. इससे जंतु दूर होते हैं २। किरमाणी, अजवाइन, प्रातःकाल ठंढे पानीसे देना इससे कृमिनाश होता है ३। खैरकी छाल, कुड़ेकी छाल, निंबकी छाल, बच, निशोथ,

त्रिकुटी, त्रिफला इनके काढ़ेमें गोमूत्र डालके देना ४। पलाशका बीज कूटके पानीमें भिगोके उस पानीमें शहद डालके देना ५। नागरमोथा, उंदरकानी, त्रिफला, देवदारु, सैंजनकी छाल इनके काढ़ेमें पिपली बायबिंडगका चूर्ण डालके देना ६। अनारछालके काढ़ेमें तेल डालके देना, तीन दिनमें कृमिनाश होगा ७। कवचफलीका कुश काढ़के गुड़में और दहीमें देना ८। पोदीनाका रस, सवजाका रस मिलाके देना ९। बिजोराकी छालका काढ़ा देना १०। बाहेर कृमिपर कोढ़नाशक दवा करना लेप करना ११। पलासका बीज छाछमें पीसके देना १२। निंबका स्वरस शहद डालके देना १३। एरंड़के स्वरसमें और धतूराके स्वरसमें शहद डालके देना १४। आंकड़ेके फूलका मगज देना १५। रस दरदुर १ तोला. जैपाल आधा तोला इनको दस भावना आकके दूधकी देना बाद आककी जड़के काढ़ेमें हींग डालके उसमें वह रस डालके देना. आधा मासा १६। शुद्ध पारा, इंद्रजव, अजवाइन, मनशिल, पलसपापड़ी इनके समभाग चूर्णको तंतुके रसमें एक दिन घोटना उसमेंसे ४ मासा उंदरकानीके रसमें शक्कर डालके देना. कृमि पड़ती हैं १७।

कृमिकुठार रस।

कपूर ८ भाग, कुड़ेकी छाल, त्रायमाण, अजवाइन, वायबिडंग हिंगलू, बच्छनाग, केशर, पलस, पापड़ी सब एक १ भाग सब एकत्र करके उसको भांगरा, उंदरकानी, ब्रह्मी इनके रसकी भावना देना, उसमेंसे एक वाल धतूराके रसमें देना. सब जातिकी कृमि नाश होगी १८।

कृमिमुद्गरस।

शुद्ध पारा १ भाग, गंधक २ भाग, अजमोदा ३ भाग, बायबिडंग ४ भाग, बकायन ५ भाग, पलसपापड़ी ६ भाग इनका चूर्णशक्ति देखके शहदसे देना. सर्व कृमिनाश होगा १९। बायबिडंगका चूर्ण बायबिडंगके काढ़ेमें देना २०। कबीला आधा तोला गुड़से खाना सर्व कृमिनाश होगा २१। कटुवृंदावनका फल लोहा तपाके उसपर डालके दांतोंको धुवाँ देना, कृमि पड़ते हैं २२।

अष्ट सुं------

लाख, भिलावाँ, धूप, सफेद विष्णुकांताकी जड़, अर्जुनके फल और

फूल, बायबिंडग, राल, गूगेल इनका धूप करके घरमें देनेसे साँप, चूहे, बटवी, छोटे मच्छर खटमल इनका नाश होगा २३ ।

कुंकुमादि धूप ।

अर्जुनवृक्षका फूल, बायबिंडग, पिठवण, भिलावाँ, खस, तुरूका गुंद, राल, चंदन कोष्ठ इनका धूप एक वार देनेसे कृमिनाश होगा, सहजको धुवाँ देनेसे खटमल जुवाँ जाते हैं।

कृमिरोगपर पथ्य ।

पिचकारी, रेचन, धूम, कफनाशक चीजें, शोधन, लाल चावल, पटोल, लहसुन, बथुवा, चित्रक, आकके पान, राई, रिंगणी, कटु चीजें, बायबिडंग, निंब, तिल, सरसोंका तेल, कांजी, शहद, भिलावा, गोमूत्र, तांबूल, मद्य, कस्तूरी, घी, हींग, क्षार, अजवाइन, खैर, एरंडका तेल, कुडा, निंबू, करेला, अजमोदा, देवदारु ये पथ्य हैं ।

कृमिरोगपर अपथ्य ।

उलटी आदिका वेग धरना, विरुद्ध अन्नपान, दिनका सोना, द्रवपदार्थ, पिष्टान्न, अजीर्णपर भोजन, घी, उडद, दही, पत्रशाक, मांस, दूध, खटाई, मिठाई ये सब वर्जित हैं।

इति कृमिरोगकी चिकित्सा समाप्त ।

अथ पांडुरोगका निदान ।

ज्योतिषका मत ।

कृमिरोगके बाद पांडुरोग कहते हैं-अष्टम स्थानपर शनि हो और सहज स्थानपर चंद्र हो तोजातिभ्रंश, गात्रदुःखी, क्षयरोगी, पांडुरोग होता है ।

ज्योतिषमतका परिहार ।

शनिमंत्रका जप, होम, दान करना. चन्द्रका जप, दान करना ।

पूर्वजन्मका कर्मविपाक ।

जो देवब्राह्मणके द्रव्यको लेता और नष्ट करता है वह पांडुरोगी होता है।

पूर्वजन्म कर्मविपाकका परिहार ।

कृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रत करना, चांद्रायणव्रत करना, कूष्मांडहोम, सोनादान,

देना. सोनेकी मूर्ति करके दान देना. पूजा करना. इससे मुक्त होता है।
पांडुरोग पांच प्रकारका होता है। वातका १ पित्तका २ कफका ३ त्रिदोषका ४ मट्टी खानेसे ५ ऐसा जानना।

पांडुरोग होनेका कारण।

ज्यादा मैथुन करनेसे, मद्य पीनेसे, खटाई, खार, दूध, उड़द, पिष्टान्न, तिल, मच्छी आदि ज्यादा खावे, दिनको सोवै, तीक्ष्ण इससे पांडुरोग होता है. मट्टी खानेसे होता है। उससे खून सुखाके सफेद रंग होता है. उसे पांडुरोग कहते हैं।

पांडुरोगका पूर्वरूप।

त्वचा, कर्कशठनक, मुखको पानी, सुस्ती, अरुचि, आंख गालोंपर सूजन, दस्त पेशाबका रंग पीला, अपच ये लक्षणोंसे पूर्वरूप समझना।

वातपांडुका लक्षण।

शरीर, त्वचा, मूत्र, मुख निस्तेज, कृष्ण, अरुणवर्ण, कंप, शरीरमें पीड़ा, श्रम ये होते हैं।

पित्तपांडुका लक्षण।

मूत्र, मल, नेत्र, शरीरपीला होना, दाह, तृषा, ज्वर होता है।

कफपांडुका लक्षण।

शरीर, त्वचा, मूत्र, चेहरा, नेत्र सफेद होना, सूजन, आलस्य, नेत्रपर झापड़, जड़ता होती है. त्रिदोषमें सब लक्षण ऐसा होता है कि सब शरीरकी रगें सुस्त होना, इंद्रियोंपर सुस्ती, कमताकत, अग्निमंद ऐसा लक्षण होता है।

पांडुरोगका असाध्य लक्षण।

नेत्र, गाल, भृकुटी, पांव, नाभि, बस्ति इन जगोंपर सूजन आना, पेटमें कृमि, रक्त, कफकी दस्त होना, सो रोगी आसाध्य है।

पांडुरोगपर उपाय।

पुनर्नवा, हरडा, नींब, दारुहलदी, कुटकी, पटोल, गिलोय, सोंठ

इनका काढ़ा देना गोमूत्र डालके जिससे पांडु, श्वास,खांसी, शूल,सूजन, इनका नाश करता है १। वर्द्धमानपिप्पली देना, उपद्रवों सहित पांडुरोग जाता है २। त्रिफला, चित्रक, नागरमोथा,विडंग,त्रिकटु इनके चूर्णमें सम-भाग लोहसार मिलाके शहदसे देना और घी मिलाके देना, गोमूत्रसे छाछसे देना. इससे सब पांडुरोग, त्रिदोष, भगंदर, सूजन, कोढ़, उदर, अर्श, मंदाग्नि,जंतुविकार नष्ट होता है ३। हरडाका चूर्ण शहद घीसे देना ४। मंडूर छाछमें देना५। त्रिकुटी, त्रिफला, विडंग, मोथा, चित्रकमूल इनका चूर्ण घी शहदसे देना. पांडुरोग नष्ट होगा ६। घी शहदसे मंडूर देना ७। गोखरूके काढ़ेमें शकर, शहद डालके देना ८। गोखरू, धनियाँ, गिलोय, इनके काढ़ेमें शहद शकर डालकर देना ९।

पांडु आदिपर मंडूर गुटी ।

त्रिफला, त्रिकुटी, चवक, पीपलमूल, चित्रक, देवदारु, माक्षिक, दालचीनी,दारुहलदी, मोथा, विडंग इनके समभाग चूर्णमें दो भाग मंडूर मिलाके आठ भाग गोमूत्रमें घोटके गोली डेढ़ मासेकी बांधना, एक २ देना गायकी छाछसे, जिससे पियापेया, पीलिया,पांडु,परमा,अर्श,सूजन, कोढ़, कफरोग, ऊरुस्तंभ, वात, अजीर्ण, पिया ये नष्ट होते है १०। मंडूराद्या-रिष्ट देना ११। सोंठ, लोह भस्म देना १२। पिपली, हरडा, लोह शिलाजीत देना १३। गूगल, गोमूत्रसे देना. १४। अच्छी लोहभस्म शहद, घीसे देना. पांडु कामला नाश होगा १५। मधुमंडूर देना १६।

पांडु आदिपर आरिरस ।

शुद्ध पारा, गंधक, अभ्रकसार एकत्र करके गुवारपाठेके रसमें तीन भावना देना.बाद चार वाल देना.जिससे सर्व पांडु,कामलाका नाश होता है१७। लोहासव देना. जिससे सर्व पांडुरोग जाता है १८। लोहकी भस्म, त्रिकुटा, शीतल मिरच, तिल, माक्षिकभस्म इनका चूर्ण शहदसे और छाछमें देना. जिससे अजीर्ण पांडुका नाश होता है १९। शिलाजीत, शहद, विडंग, घी, हरडा, शकर इनका समभाग चूर्ण करके देना. जिससे पंद्रह दिनोंमें देह बलवान् होता है.

पूनसके चन्द्रप्रभाके समान २०। अमृत हरीतकी देना २१। पञ्चकोल घी देना २२। चित्रकके चूर्णको आमलेके रसकी तीन भावना देना. गायके घीसे रातको देना. पांडुनाश होता है २३। मत्तेभसिंहसूतरस देना २४। त्रैलोक्यनाथ रस देना २५। उदयभास्कररस देना २६। कामेश्वररस देना २७। कालविध्वंसक रस देना२८। वंगेश्वररस देना २९। नागकेशर,मुलहटी, पिपली, निशोथ इनके काढ़ेकी भावना मट्टीको बहुतसी देके वह मट्टी खानेको देना. इससे मृत्तिकापांडु नष्ट होता है ३०। त्रिकुटी, त्रिफला, बेलहलद, दारुहलदी, सफेद साठी, लाल साठी, मोथा, लोहकी भस्म, पाठामूल, बिडंग, देवदारु, मेढासींगी, दूध इनके काढ़ा और वल्कसे सिद्ध करके घी देनेसे मृत्तिका का पांडु जाता है ३१।

पांडुरोगपर पथ्य।

हलटी, रेचन, जव, गेहूँ, चावल, मूंग, मसूर, अरहर इनका यूष देना. पटोल, कोला, गिलोय, चन्दन, लाई, पुनर्नवा (साठी), बैंगन, लहसुन, आम, हरड़ा, गोमूत्र, आमली, छाछ, घी, माखन, अच्छा पानी, चन्दन, लोहमण्डूर और दाग ये देना।

पांडुरोगपर अपथ्य।

रक्त काढ़ना, धूमपान, मलका वेगरोधन, पसीना, मैथुन, खट्टा पालकका साग, हींग, उड़द, पान, राई, दिनका सोना, चनेका खार, दुष्ट पानी, विरुद्ध और तबीयतको न माने सो चीजें पांडुरोगीपर मना है।

अथ कामलारोग यानी (पीलिया) पर ज्योतिषका मत।

चन्द्र शुक्रकी दशामें मध्यगत हुआ तो अनेक प्रकारकी पीड़ा, मस्तकरोग, कामला, वातादिक संकट होता है।

ज्योतिष मतका परिहार।

चन्द्रका जप, होम, दान करना शान्त होगा।

पूर्वजन्मका कर्मविपाक।

पूर्व जन्ममें अन्नकी चोरी करे तो कामलारोगी होता है।

पूर्वजन्मकर्मविपाकका परिहार।

गरुड़की मूर्ति सोनेकी करना, विधिसे पूजा करना, दान देना, शमन

होगा. कामला रोग तीन तरहका है १ एक जिस आदमीका पित्त बिग-ड़के खूनसे मिलके तपता है उस आदमीकी आंख, नख, शरीर सब बदन पीला हलदी लगानेके माफिक होता है और पेशाब मैला पीला होता है, उसको कामला रोग कहते हैं. उससे इन्द्रियोंकी शक्ति कम, अपचन, दाह, अशक्ति, ग्लानि, अन्नद्वेष ये होते हैं २। जिस आदमीके यकृत, मल काला, पेशाब पीला और सूजन, आंख, मुख, लाल, मल, मूत्र लाल, चक्कर आता है वह रोगी असाध्य होता है. और दाह, अरुचि, प्यास, पेट फूलना, आंखोंपर सुस्ती, मूर्च्छा, अग्निमन्द, अस्मृति होनेसे रोगी असाध्य होता है. इसीके भेदमें दूसरा हलीमक रोग होता है वह ऐसा कि जिस वक्त रोगीका वर्ण पीला हरा होके कमताकत, उत्साह, झांपड़, अग्निमन्द, हड्डीताप, स्त्रीकी इच्छा कम, फुटनी, आलस्य, दाह, प्यास, अन्नद्वेष, भ्रम ये लक्षण होते हैं इसको हलीमक रोग कहते हैं १०।

कुम्भकामला हलीमकपर उपाय ।

त्रिफला, गिलोय, कुटकी, नींबकी छाल, चिरायता, अडूसा इन आठ दवाइयोंके काढ़ेमें शहद डालके देना १। आंबली, हलदी, फिटकड़ी, सोना गेरू इन चारोंको पानीमें घिसके अंजन करना २। कुटकीका चूर्ण शक्कर डालके पानीसे देना ३। सोंठका चूर्ण दूधसे देना ४। देवकपासीके फलके रसकी नास देना ५। नागरमोथाका रस देना ६। देवइन्द्रायणका रस देना ७। सफेद गुंजका चूर्ण देना ८। इनमेंसे हरएककी नास देनेसे कामलाका नास होगा ९। एरंडके पानोंका रस चार तोलामें समभाग गायका दूध मिलाके पिवेगा तो कामलाका नास होगा १०।

कुम्भकामलाका उपाय ।

आमला, लोहसार, त्रिकुटी, हलदी इनका चूर्ण शहद, घी, शक्कर इनसे देना ११। द्रोणपुष्पीके रसमें हींग घिसके अंजन करना १२। देवदालीके फलके चूर्णकी नास देना १३। सफेद गुंज पीसके सुंघाना १४। कडू तुराईका चूर्ण सुंघाना १५ मंडूर गुटिका देना १६। पांडुरोगपर जो दवाइयां लिखी हैं वे दवाइयां कामलारोगको हितकारी हैं १७। बालहर्डा, लवंग, मिश्री पानीमें घिसके अंनज

करना १८। लाल रंगका गन्ना इसे बड़े फजिरको खाना, कामला रोग जावेगा १९।

इति कामलारोग-निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ रक्तपित्तका निदान।

ज्योतिषका मत।

चंद्रस्थानमें मंगल प्राप्त होनेसे रक्तपित्तरोगी होता है और नाना व्याधि युक्त होता है और चंद्र मध्यगत मंगल हुआ तो रक्तपित्तज्वर, दाह, अग्नि, चोर इनके पाससे पीड़ा होगी।

ज्योतिष मतका परिहार।

भौम मंत्रका जप, तिल, घी, समिधासे होम, रक्तवृषभका दान, मूंगा का अलंकार धारण करना।

पूर्वजन्मका कर्मविपाक।

जो वैद्य पूर्वजन्म शास्त्रके मदसें गर्विष्ठ होता है और ऋषियोंने जिन रोगपर जो उपाय कहे हैं ऐसा न करते स्वकपोलकल्पित उपचार करके रोगको बढ़ा देता है. वह रक्तपित्तरोगी होता है।

पूर्वजन्मकर्मविपाकका परिहार।

(अग्निप्रीत्यर्थम् 'अग्निं दूतं वृणीमहे') इस मंत्रसे दश हजार आहुति घीसे होम करे· पापसे शुद्ध होकर समाधान होगा।

रक्तपित्त होनेका कारण।

गरमीमें ज्यादा फिरना, आयास, फिकर, रोना, व्यायाम, अति स्त्रीका संग, तीक्ष्ण तपना, खट्टा, खारा, गुड़, गरम चीजें, मद्यपान इनका सेवन करनेसे खून तपके ऊर्ध्व और अधोगत और दोनों मार्गोंसे गिरता है, ऊपरसे नाकसे आखसे मुखसे रक्त पड़ता है, अधोमार्ग यानी शिश्न, गुदा, योनिसे रक्त पड़ता है और ज्यादा बिगड़े तो रोम रोम से खून गिरता है

रक्तपित्तका पूर्वरूप

ग्लानि, ठंडी चीजोंपर प्यार, गलेमेंसे धुवाँ निकलता है ऐसे मालूम होना. उलटी, शरीरमें लोहकीसी दुर्गंध और उलटीमें दुर्गंध, वातमिश्रित नीला अरुण, फेनयुक्त, पतला, रूक्ष ये लक्षण होते हैं।

केवलपित्तका लक्षण ।

पीला, भगवा, काला, लाल, गोमूत्रके माफिक, मृदंगकी स्याहीके माफिक, घेरोसाके माफिक हो तो पित्त सम्बन्धी जानना ।

कफमिश्रित पित्तका लक्षण ।

गाढ़ा, चिकना, सफेद वर्ण, स्नेहयुक्त, चिकना ऐसा जो रक्तपित्त पड़ता है वह कफमिश्रित जानना. दो दो दोषोंके लक्षणसे द्वंद्वज और सब लक्षणोंसे सन्निपातिक जानना और ऊर्ध्वगत एक दोषी साध्य, अधोगत दो दोषी कष्टसाध्य, त्रिदोषी असाध्य है ।

रक्तपित्तका असाध्य लक्षण ।

श्वास, खांसी, उलटी, घबराहट, बेताकत, क्षीणता, दाह, मूर्च्छा, हृदयपीड़ा, प्यास इन लक्षणोंसे युक्त असाध्य है ।

रक्तपित्तपर उपाय ।

१ अडूसाका रस एक तोलामें तीन मासे मिश्री और शहद डालके देना । २ अडूसा, काला दाख, खुरवारी, हरडा इनका काढ़ा देना । ३ बकरीके दूधमें शकर और शहद डालके देना । ४ गायके दूधमें पांचपट पानी डालके काढ़ा करके शेष दूध रहे सो देना । ५ अनारके फूलका रस नाकमें सुंघानेसे नाकका रक्त बन्द होता है । ६ उड़दका आटा और रेशमकी राखका लेप शिरमें देना, नाकका रक्त बन्द होता है । ७ सफेद कोहलाका पाक और लेह देना । ८ अडूसाके चार तोले रसमें वालभर रसभस्म देना, शहद डालके । ९ लाल फटकड़ी दो वाल बनारसी शकरमें देना । १० आंवलोंका मुरब्बा देना. हरडेका मुरब्बा देना । ११ आमलेका चूर्ण शकर मिलाके देना । १२ मुलहटी, धनियाँ, रक्तचन्दन, अडूसा, खश इनका काढ़ा शहद डालके देना. शोष, दाहज्वर, रक्तपित्त इनका नाश करता है । १३ शंखजीरा, घी, शकरसे देना । १४ द्राक्ष, बेदाना, धनियाँ इनका काढ़ा देना । १५ प्रवालकी भस्म अनुपानसे देना. मोतीभस्म अनुपानसे देना. माक्षिक अनुपानसे देना ।

इति रक्तपित्तनिदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ क्षयरोगका निदान-ज्योतिषका मत।

जन्म स्थानसे दशम स्थान शनि और चन्द्रक्षेत्री और सुतक्षेत्री बुध हो तो, कोढ़, क्षयरोग, गजादिसे भय तथा अनेक प्रकारका दुःख होता है।

ज्योतिषमतका परिहार।

बुधपीड़ानिवारणके लिये जप होम दान करना।

पूर्वजन्मका कर्मविपाक।

ब्रह्महत्या, अभक्ष्यभक्षण, परवस्तुके ठिकाने अभिलाष, दूसरेकी भूमिहरण करना, मनुष्यहत्या, शास्त्रज्ञान विना विद्वानोंकी सभामें धर्मशास्त्र प्रायश्चित्तादि व्यवहार कहना इत्यादि पापसे क्षय रोग होता है।

पूर्वजन्मका परिहार।

शब्दवृत्त प्रायश्चित्त करना. यवमध्य, पिपीलिकाकृच्छ्र चांद्रायणादि करना और एकसौ ८० निष्क द्रव्यका उत्सर्ग करना, सहस्र ब्राह्मण भोजन कराना. होम करना, सोनेका कदली वृक्ष करके पूजापूर्वक दान करना। इत्यादि विधि सिंहावलोकन ग्रन्थमें कही है वैसे करना।

क्षयरोग होनेका कारण।

मल मूत्रादि वेगका रोध करना, अति स्त्रीसंग, उपास, मत्सर, विषसेवन, बलवानसे कुस्ती, बेवक्त खाना. पीना, सोना, ऐसे अनेक कामोंसे धातु क्षीण होनेके कारणोंसे बादी आदि दोष बिगड़के सत धातुओंको बिगाड़ देते हैं. उस रोगको क्षय कहते हैं और इस रोगको हिंदुस्थानमें राजरोग कहते हैं, फारसीमें तपेदिक कहते हैं, वह छः जातिका है, उसमें दो भेद हैं एक ऊर्ध्वगत है और दूसरा अधोगत है। यानी जो आदमीको खाशी आके कफ पड़ पड़के क्षीण होता है उसको प्रतिलोमकक्षय कहते हैं। और जो कार्यभूत धातु स्त्रीके ज्यादा सेवन करनेसे बिगड़के क्षीण होता है उससें अनुलोमक कहते हैं।

क्षयरोगका पूर्वरूप।

श्वास, हाथ, पाँव गलना, कफ पड़ना, गला सूखना, उलटी, अग्नि मंद,

उन्माद, जुखाम, खांसी, नींद ज्यादा, आंख सफेद, मांसादिक पुष्ट चीजोंपर इच्छा, स्त्रीपर इच्छा होना, मन बिगड़ना, स्वप्न ज्यादा पड़ना, बंदर काक पानीरहित सरोवर (तलाव). स्वप्नमें देखना इतने लक्षण क्षयके पूर्वमें होते हैं।

तीन रूप क्षयरोगके अवश्य होते हैं।

गर्दन पसली दुखना, खिंचना, हाँथ पांवमें आग होना, सब अंगमें बारीक ज्वर रहना ये लक्षण होते हैं।

ग्यारहरूपके लक्षण।

आवाज बैठना, स्वर बदलना, गर्दन और पीठ दूखना, नसें खिंचाना ये बादीसे. ज्वर, दाह, अतिसार, मुखसे रक्त पड़ना ये पित्तसे. मस्तक भारी, अन्नद्वेष, खांसी स्वरभेद ये कफसे, इन सब लक्षणोंसे रोगी असाध्य है।

क्षयरोगका असाध्य लक्षण।

आहार करके दिन दिन क्षीग, अतिसारसे असाध्य, कारण क्षयरोगीका आधार मलसे, है वह क्षीण हुआ हो, जिसके अंडकोशपर और पेटपर सूजन, उलटीमें खून पड़ता है, जिसका कफ सड़ा पीपके माफिक होजाय वह असाध्य है।

छः प्रकारके क्षयका भेद।

मैथुनक्षयका लक्षण।

इन्द्रिय व अंडकोशमें पीड़ा, स्त्रीइच्छा कम, धातुमें रक्त मैथुनके वक्त निकलना, शरीर सफेद, बे ताकत, शुक्रसे उलटे धातु क्षीण होते हैं, यह मैथुनक्षयका लक्षण जानना १।

अध्वप्रशोषीका लक्षण।

शोकसे, फिकरसे, क्षीण हुए ग्लानि, रूक्षता, दिलपर दहशत, बे ताकत हो यही अध्वप्रशोषीका लक्षण जानना २।

ज्वरक्षयका लक्षण।

वृद्धापकालसे क्षीण आदमीके कृशता, वीर्य, बुद्धि, बल, इन्द्रियोंकी ताकत कम, कंप, बे मजा, कांसेके फूटे बर्तनकीसी आवाज, कफ विना थूकना,

कफ बड़ा क्लेश करके निकलना, जड़ता, अरुचि; मुख, नाक, नेत्र खींचना मल सूखा, शरीर निस्तेज ऐसा होता है ३।

व्यायामक्षयका लक्षण।

अति मार्ग चलनेसे क्षीण हुआ, हाँथ पाँवमें ग्लानि, उसके बदनका रंग जलेके माफिक खरदरा, हृदय, पिपासा-स्थान और कंठ ओंठ मुख सूखना ४।

व्रणक्षयका लक्षण।

कम रक्तसे, भगंदरादिक व्रणसे, कम खुराकसे, अन्न छूटनेसे क्षय होता है, असाध्य जानना ५।

उरःक्षतका लक्षण।

धनुष खींचना, आयास, बहुत बोझा उठाना, बलवानसे युद्ध करना, ऊपरसे कूदी मारना, बैल, घोड़ा, ऊंट, गाड़ी आदिको भागतेको पकड़ना, उसके बराबर भगना, शस्त्र फेंकना, जोरसे बोलना, गाना, नाचना, बांचना नदीमें तैरना, चलना, काम, क्रोध इतने कारणोंसे आदमीकी छातीमें तोड़ फड़ के क्षत होता है. उससे छातीमें दर्द होके उरःक्षत होता है उससे छातीमें पीड़ा, शूल, भाला, बरछी, कबाड़ी ये मारनेके माफिक दर्द होता है, पसली दुखती है वदन सूखके कांपता है शक्ति, मांस, वर्ण, रुचि, अग्नि ये सब कम होते हैं। ज्वर, दिलमें दुःखी, बेताकत, गरीबीका बोलना, दस्त पतला, बहुत वक्त खाँसते २ कफ थोड़ा पड़े. काला, दुर्गंध युक्त, पीला, गांठी गांठी, बहुत खूनसे मिला ऐसा कफ पड़ता है, क्षीण होता है ६।

क्षयरोगपर उपाय।

ब्रह्मचर्यव्रत, दान, तप, देवपूजा, सत्य, आचार, सूर्यकी सेवा, वैद्य ब्राह्मणकी पूजा इन उपायोंसे क्षयरोग जाता है १। ज्वरको और रक्तादिक दवा लिखी हैं सो देना २। क्षयरोगवालेको माखन, मिश्री, शहद, सोनेका वर्ख देना ३। त्रिफलाके काढ़ेमें शिलाजीत शुद्ध करके उससे गिलोयका काढ़ा सत्त्व डालके देना ४। पिपली, मुनक्का, दाख, शकर, शहद, सरसोंका तेल इनका लेह देना ५। शहदमें असगंध, पिपली, शकर इनका लेह देना ६।

क्षयादिरोगपर रास्नादि चूर्ण ।

रास्ना, कपूर, तालीसपत्र, मंजिष्ठ, शिलाजीत, त्रिकुटी, त्रिफला, मोथा, विडंग, चित्रक सब समभाग. लोहसार चौदह भाग मिलाके शहद घीसे देना. श्वास, खांसी, ज्वर क्षय इनका नाश करके बल वीर्य अग्नि इनको बढ़ाता है ७ अगस्ति हर्डा देना ८। अडूसा, असगंध, शिरसकी जड़, रक्तबोल, पुनर्नवा इनका काढ़ा देना ९। पिपलकी छाल, त्रिकुटा इनके चूर्णमें समभाग मण्डूर मिलाके गुड़से देना १०। तमालपत्र, त्रिकुटा, वंशलोचन, एकोत्तर वृद्धिसे लेना. दालचीनी, इलायची आधा आधा भाग लेना. पिपली आठ भाग लेना. बनारसी शकर सबके समभाग करके देना. जिससे खांसी, दमा, अरुचि, पांडु, हृदयरोग, संग्रहणी, पिया, प्यास, ज्वर इनका नाश करके अग्नि बढ़ाता है ११।

सितोपलादि चूर्ण ।

मिश्री १६ तोला, वंशलोचन ८ तोला, पिपली ४ तोला, इलायची २ तोला, दालचीनी, १ तोला लेके चूर्ण करना घी शहदसे देना. जिससे खांसी, दमा, क्षय, दाह, जलजलता, अग्निमन्द, जिह्वारोग, पिया, शूल, अरुचि, ज्वर, रक्तपित्त इनका नाश करता है १२। द्राक्षा, छुहारा, पिपली इनका चूर्ण घी शहदसे देना. ज्वर, खांसी, सूजन नाश होता है १३। माक्षिक भस्म, बिडंग, शिलाजीत, लोहासार इनका चूर्ण शहद घीसे देना. जिससे उग्रक्षय नाश होता है १४। शिलाजीत, त्रिकुटा, माक्षिक, शारकांत दूधमें शहदके साथ देना १५। शिवगुटी देना १६। सूर्यभास्करगुटी देना १७। द्राक्षासव देना १८। कुमारी-आसव देना १९। सालमिश्री पाक देना २०। धात्री-पाक देना २१। सेवती पाक देना २२। महाकनकसुन्दर रस देना २३। क्षय-केसरी रस देना २४। शंखेश्वर रस देना २५। हररुद्रराज रस देना २६। नील-कंठरस देना २७। शंखगर्भपोटली रस देना २८। हेमगर्भ रस देना २९। नागेश्वर रस देना ३०। कालांतर रस देना ३१। चंद्रायतन रस देना ३२। प्राणनाथ रस देना ३३ । सुवर्णपर्पटीरस देना ३४ । पंचामृताख्य

रस देना ३५। स्वयमग्नि रस देना ३६। राजमृगांक देना ३७। लोकेश्वर रस देना ३८। नवरत्नराजमृगांक रस देना ३९। कनक सुंदररस देना ४०। हेमाभ्रक रस देना ४१। सुवर्णभूपतिरस देना ४२। लक्ष्मीविलास रस देना ४३। पंचामृतरस देना ४४। अमृतेश्वर रस देना ४५। चिन्तामणि रस देना ४६। त्रिलोकी चिन्तामणि रस देना ४७। शिलाजीत लोहभस्म एकवाल रोज देना. पथ्य करना ४८। वसंतकुसुमाकर रस देना ४९। लोहरसायन देना ५०। पिपली २० तोला गुड़के पानीमें घी २० तोला मिलाके पकाना; घी बाकी रहे जो उतार लेना वो घी देना और पिलाना जिससे क्षयरोग जायगा ५१। पिपली, पीपलमूल, चवक, चित्रक, सोंठ, जवाखार, इससे सिद्ध किया घी देना ५२।

रसवर्द्धक काढ़ा।

गिलोय, अदरखका रस, जव इनका काढ़ा दूधसे देना ५३। काली मिरचका काढ़ा दूधसे देना ५४। गेहूं, जवसाल हरणका मांस, घी, दूध, शकर, शहद, मिर्च, पिपली इनके पीनेसे रक्त वढ़ता है।

मांसवर्द्धक काढ़ा।

जंगली मांस, अनूपधान्य, लहसुन, हरणदोडी, घी, दूध, मधुर चीजें खानेसे और पीनेसे मांस बढ़ता है ५६।

मेदवर्द्धक चूर्ण।

तालीसादि चूर्ण मधुर रस, जंगली मांस, रस ये चीजें खानेसे चर्बी बढ़ती है ५७। सितोपलादिचूर्ण, बकरीका दूध, सूकरका मांस ये चीजें क्षयहारक और मेद बढ़ाती हैं ५८।

हड्डीवर्द्धक चूर्ण।

घीसे पकी चीजें, दूध, चंदनादि, द्राक्षादि चूर्ण, जंगली मांस, मधुर अन्न पान देनेसे हड्डीको ताकत आती है ५९। शुक्रवृद्धि अम्ल पदार्थसे सिद्ध की चीजें, सारक समधातु, दूध, मधुररस, काकड़ीकी जड़, दूध, भुई कोहला, सावरीका कंद ये चीजें सारक हैं. इसमें शहद डालके पीना शुक्र बढ़ाती है ६०। कफमें मिला हुआ खून खंखारमें पड़ता हो तो केला भूनके

इसमें शहद मिर्च मिलाके देना, बंद होगा६१। धनियाँ, इलायची, मिर्च इनका चूर्ण घी शकरसे देना. अरुचि जायगी. ६२। अदरखका रस शहदसे देना. ६३। कचनारकी छालके रसमें जीरेका कपूर डालके देना. इससे संताप, दाह जाता है६४। चवलाईके जड़के रसमें मिश्री डालके देना. प्यास जायगी ६५। गोखरू, घी देना. इससे दाह जाके धातुबृद्धि होगी ६६। अभ्रकभस्म मधु पिपलीसे देना ६७। अभ्रकभस्म सोनेके वर्कसे देना ६८। गिलोयका सत्त्व एक मासा सोंठके बराबर शहदमें देना ६९। घोड़ाचोलीकी मात्रा अदरखका रस पिपली और मिर्च शहद मिलाके देना ७०।ताम्बेश्वर घीसे और योग्य अनुपानसे देना ७१। मूंगेकी भस्म पके केलासे देना, क्षयरोगका नाश करेगी७२। घी शकरसे मूंगाकी भस्म देना ७३। रससिंदूर, लवंग, केशर, जायपत्री, अक्कलकरा, पिपली और भांग, कपूर, अफीम एकत्र करके गोली देना ७४। अनुपानसे कांतिसार देना ७५। वंगभस्म योग अनुपानसे देना ७६ ।

क्षयरोगपर पथ्य ।

गेहूं, मूंग, चना, देवभात, बकरीका मांस, माखन, दूध, घी, जंगली मांसरस, आम, आमला, खजूर, दाख, बदाम ये खाना. नाच, चंद्रप्रकाश, बीना आदिका वाद्य श्रवण करना, अच्छी शय्या, उमदा सफा हवा, प्रियदर्शन, सोना, मोती आदि रत्नोंका अलंकार धारण करना, दान, देव, ब्राह्मण पूजा, धर्मशास्त्र पुराण, अच्छी बातका श्रवण करना ये चीज क्षयरोगको पथ्यकारक हैं ।

क्षयरोगपर अपथ्य ।

जुलाब, मलमूत्रादिकका रोध करना, मेहनत, पसीना, अंजन, स्त्रीका संग, साहस कर्म, रूक्ष अन्न, बे वक्त खाना. पीना, तांबूल, तरबूज, लहसुन, हींग, खटाई, मिर्च, तुरस, लीले साग ये सब चीजें और मिजाजको न माननेवाली चीजें क्षयरोगीको वर्जित हैं।

इति क्षयरोग-निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ कासश्वास (खांसी, दमा) का निदान ।

ज्योतिषका मत ।

कर्कराशिस्थित सूर्य होके बुधकी दृष्टि है तो नेत्ररोग, कफ, वातरोग ऐसे रोग होते हैं ।

ज्योतिषमतका परिहार ।

बुधदृष्टि, सूर्यपीड़ा निवारणके वास्ते सूर्यमंत्र दान होम ये करना ।

पूर्वजन्मका कर्मविपाक ।

अपने पर उपकार किया है उसका गुण न मानना और जो गरीबोंका द्रव्य चुराता, गाय चुराता और कथीर चोराता है वह आदमी कफरोगी होता है।

पूर्वजन्म-कर्मविपाकका परिहार ।

कथीर दान करना, कृच्छ्र और सांतपन ऐसा प्रायश्चित्त करना ।

कासश्वास होनेका कारण ।

नाकमें धुवाँ और मुखमें धुवाँ गर्दा उड़नेसे, दिनको सोनेसे, चिकनाई-पर पानी पीनेसे, ज्यादा स्त्रीसंग करनेसे, रूक्षपदार्थ, गरम, जुखाम आदि चीजोंसे गलेमेंका अन्नरस कफ बिगड़ करके खांसी पैदा करता है वह खांसी पाँच तरहकी है। बादीसे १ पित्तसे २ कफसे ३ उरःक्षतसे ४ क्षयसे ५ ऐसी पांच तरहकी है ।

क्षयरोगका पूर्वरूप ।

मुखमें कांटेसे होना, खाज आना, भोजन कम यह होता है ।

बादीखांसीका लक्षण ।

हृदय, मस्तक, शंख, उदर, पीठ इन ठिकानोंपर शूल, मुख मलिन, बल, तेज, ताकत कम, आवाज कम, खांसी बहुत चलके कफ कम पड़ता है ।

पित्तखांसीका लक्षण ।

छातीमें दाह, ज्वर, शोष, मुख कड़ुवा, प्यास, कफ, पित्तमें मिला हुआ पड़ना, खांसी आना, सब अंग सफेद होके जलन होती है ।

कफखांसीका लक्षण।

मुख चिकना, बदन गीला, शिर दुखे, वेसजा, जड़पना, गलेमें खाज, खांसी कफ बहुत पड़ना, संधि ढीले, बेताकत, आलस्य ये होते हैं।

उरःक्षतखांसीका लक्षण।

अति स्त्रीप्रसंग करना, बोझा उठाना, चलना, मल्ल आदिक क्रूर कर्मोंसे ऐसे कारणोंसे रुक्ष शरीर होके कुपित वादी छातीमें तोड़ पड़के खांसी पैदा करती है।

क्षयखांसीका लक्षण।

संधि ढीली और शूल, ज्वर, दाह, मूर्च्छा, दुर्बलता, छातीमेंसे सड़ा कफ पड़ना, अरुचि, कफके साथ रक्त पड़ता है. यह खांसी क्षयरोगियोंको होती है. खांसीरोगी ताकतवाला हो तो चंदरोज जीता है, दुर्बल हो तो मरता है, असाध्य है।

खांसीका उपाय।

द्राक्ष, भारंगमूल, कचूर, पीपल, सोंठ इनका लेह गुड़से करके देना १। सोंठ, भारंगमूल, पिपली, कायफल, दाख, कचूर इनका लेह देना. अडूसा गिलोय, रिंगणी इनके काढ़ेमें शहद डालके देना २। नागबला, रिंगणी, दोनों दाख, अडूसा इनका काढ़ा शकर शहद डालके देना, पित्तखांसी जायगा ३। कचूर, खस, रिंगणी, सोंठ इनके काढ़ेमें शकर घी डालके देना ४। पीपल, मुलहटी, पीपलमूल, दूब, दाख इनका चूर्ण शहदसे देना ५। दाख, घी, आमला खजूर, पिपली, मिर्च इनका चूर्ण शहद, घीसे देना ६। भैंस, बकरी, गाय इनके दूधमें आमलेका रस घी ६४ तोला डालके सिद्ध करके देना ७। शहद पिपलीसे लोकेश्वर रस देना ८। नवांगमूल, मूंग, आमला, जव, अनार, बेर, सूखीमूली, सोंठ, पिप्पल, कुलथी इनका जूस देना, कफनाश होगा ९। मोथा, पिपलीका चूर्ण शहदसे देना १०। बालहरडा, सोंठ, पिप्पल, मोथा, देवदारु इनका चूर्ण शहदसे देना. कफखांसी जायगी ११। चित्रकमूल, पिपलामूल पिप्पल, गज-

पिप्पल इनका चूर्ण शहदसे देना १२। त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रक, देवदारु, रास्ना, विडंग इनका चूर्ण शकरसे देना ।

क्षयखांसीका उपाय ।

इसपर पित्तखांसीकी दवा करना और मधुर पौष्टिक पदार्थ देना १३। तालेश्वर रस देना १४। सूर्यरस देना १५। अर्जुनवृक्षकी छालके चूर्णको अडूसाके रसकी इक्कीस भावना देके शहद शकर घीसे देना १६। पिप्पल गुड़से सिद्ध किया घी बकरीके दूधमें देना १७। स्वयमग्नि रस देना १८। क्षयखांसी त्रिदोषसे होती है इसवास्ते त्रिदोषके ऊपर लिखा क्षयका उपाय इनको देना १९। अदरखका रस शहद समभाग करके देना. इससे क्षयखांशी नाश होगी२०। शहद शकरसे मिर्चका चूर्ण देना २१। हेमगर्भ रस देना २२। ताम्रपर्पटी रस देना २३। बालहरडा, पिप्पल, सोंठ, मिर्च, चूर्ण गुड़में गोली करके देना २४। लवंग, मिर्च, बहेड़ा इनके समभाग कांतिसार डालके बबूलके काढ़ेमें घोटके गोली बांधे वह गोली मुखमें पकड़े तो चार घंटेमें खांसी नाश होती है२५। अर्जुनवृक्ष, दालचीनी, तेजपत्र, इलायची, पीपलमूल, त्रिकटु इनका चूर्ण अदरखके रसमें घोटकर देना. इसको धनंजयगुटी कहते हैं२६। आकड़ेकी जड़, मनशिल इसीमें आधा त्रिकुटाका चूर्ण मिलाके चिलममें पिलाना, ऊपरसे तांबूल खाना. इससे खांसी जायगी २७। बेरके पत्तोंको मनशिल लगाके सुखाके चिलममें पिलाना जिससे खांसी जायगी २८। काला धतूराकी जड़, त्रिकटु, मनशिल एकत्र बांटके कपड़ेको लेप करना, सुखाके बत्ती करना, धुवाँ पिलाना जिससे श्वास, दमा, खांसी जायगा २९। धतूरा कटेलीके रसमें, त्रिकुटा, गोखरू डालके घी सिद्ध करना और देना ३०। हेमगर्भ देना ३१। अगस्तिहरीतकी देना ३२। हिंगलू, मिर्च, मोथा, सुहागा, वच्छनाग इनको जंबीरीके रसमें खरलकरके गोली मूंग बराबर बांधना, अदरखके रसमें शहद डाल करके देना. श्वास, खांसी, ज्वर जाता है ३३। रसेंद्रवटी देना ३४। नीलकंठ रस देना ३५।

खांसीपर पथ्य ।

चावल, गेहूं, उड़द, मूंग, कुलथी, बाजरी, बकरीका, दूध, घी, दाख, लहसुन, अनार, दिलके माफिक पड़े सो खाना ।

खांसीपर अपथ्य ।

मैथुन, स्निग्ध, मधुर, दिनका सोना, दूध, दही, मिष्टान्न, क्षीर, धुवाँ, कफकारक चीजें, गर्दा, हवा, बहुत मेहनत, जो तबीयतको न माने वह आहार व्यवहार वर्जित है ।

इति खांसीनिदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ हिक्कारोगका निदान ।

जिस ग्रहसे श्वास कास होता है उससे हिक्का रोग होता है उसी उपाय से शांति होती है ।

पूर्वजन्मका कर्मविपाक ।

ब्राह्मण स्नान करके जप होम न करे सो हिक्कारोगी होता है. उसको चांद्रायण तीन कृच्छ्रप्रायश्चित्त करना ।

हिक्कारोग होनेका कारण ।

विदाही, मद्य, तीक्ष्ण, भारी, विष्टंभकारी, शीत वस्तुभक्षण, व्यायाम, बोझा उठाना, मलादि वेगोंके धारणसे आदमीको हिचकी, श्वास, खांसी, होती है ।

हिक्काका पूर्वरूप ।

गला, छातीमें भारीपना, मुख तुरस, कूख खींचना ऐसा होता है । हुचकी तीनों दोषोंके स्वभावसे पांच प्रकारकी होती है ।

अन्नजाका लक्षण ।

पानी अन्नादि ज्यादा खानेसे वात कोपनेसे उर्ध्व होके आती है, बहुत देरसे दो बार आती है उससे शिर गर्दन कांपता है उसका नाम यमला है ये अन्नजाके लक्षण जानना १ ।

क्षुद्राका लक्षण ।

जो हिचकी बहुत देरसे आती है, आस्ते आती है, जत्रुमूलसे आती है ये क्षुद्राके लक्षण जानना २ ।

गंभीराका लक्षण।

जो हिक्का नाभिसे निकलती है, बड़ी आवाज करती है, तृषा, ज्वर आदि अनेक पीड़ाओंसे युक्त होती है उसे गंभीरा जानना ३।

महतीका लक्षण।

जो हिचकी मर्मस्थान यानी नाभि, बस्ति आदिकोंको पीड़ा देनेवाली सर्वकाल आनेवाली, गात्रको हिलानेवाली है वह असाध्य है ४।

हिक्काका उपद्रव।

जिसकी देह खिंचे, ऊर्ध्व दृष्टि, मूर्च्छा, क्षीणता, अन्नद्वेष, बूढ़ापन, महती हिक्कावाला, त्रिदोषउपद्रवोंसे असाध्य जानना ५।

हिक्कारोगपर उपाय।

वादी कफनाशकरनेवाली देना १। मालिश करके पसीना काढ़े, उलटी, हलका जुलाव देना, अच्छी बातें सुनाना, दहशत दिखाना २। खसका मंड करके देना ३। दही, त्रिकटु, घी डालके देना ४। हलदी, मिर्च, दाख, गुड़, रास्ना, पिपली, कचूर इनका चूर्ण देना ५। हरडा, सोंठ, गरम जलसे देना ६। मोथा चार तोलामें आठगुना पानी डालके भिगोके वह पानी बार-बार देना ७। हींग, कालानोन, जीरा, बिडनोन, पोहकरमूल, चित्रक, काकडाशिंगी इनके काढ़ेमें कांजी बनाके देना ८। आमला, सोंठ, पीपली इनके काढ़ेमें शकर डालके देना ९। दशमूलके काढ़ेमें कांतिसार शहद डालके देना १०। कुटकी, सोनागेरू, मोतीकी भस्म ये समभाग बिजोराके रसमें शहद डालके देना ११। कुटकी, सोनागेरू, बिजोराके रसमें शहद डालके तामेश्वररस देना. इससे पांच प्रकारका हिक्कारोग जायगा १२।

हेममात्रा।

सुवर्ण, मोती, ताम्र, कांतीसार इनकी भस्म दो गुंजा बिजोराके रसमें शहद, कालानोन डालके पिलाना. इससे सौ हिचकी बंद होगी, पांचकी क्या बाबत है १३। मेघाडंबर रस देना १४। सोंठ, हरडा, पिपलीका चूर्ण शहद शकरसे देना १५। गिलोय, सोंठकी नास देना १६। काकडाशिंगी,

त्रिकटु, त्रिफला, रिंगणी, भारंगमूल, पोहकरमूल, सैंधव इनका चूर्ण गरम पानीसे देना. इससे हिचकी, श्वास, ऊर्ध्व बादी, खांसी, अरुचि, जुखाम इनका नाश होता है १७ ।

हिक्कारोगपर पथ्य ।

पसीना, उलटी, नास, धूम्रपान, जुलाब, नींद, मृदु स्निग्ध, अन्न, कुलथी, गेहूं, साल, जव, जंगलीमांस, गरम पानी, बिजोरा, कफवात-नाशक चीजें और प्रकृतिको माने सो चीजें पथ्य कारक हैं ।

हिक्का रोगपर अपथ्य ।

हवा, मलमूत्रोंका रोध, उपास, विरुद्ध अन्नपान, पावटे, उड़द, पानी, अनूपमांस, बकरीका दूध, राई, खट्टा और जो तबीयतको न माने वे चीजें वर्जित ... नहीं करना। इति हिक्कानिदन और चिकित्सा समाप्त ।

अथ श्वासरोगका निदान-
पूर्वजन्मका कर्मविपाक ।

जो आदमी उपकार नहीं मानता है उस कृतघ्नको श्वास होता है ।

पूर्वजन्मकर्मविपाकका परिहार ।

तीन चांद्रायणव्रत प्रायश्चित करना, पचास ब्राह्मणभोजन देना और दान देना ।

श्वासरोगका पूर्वरूप ।

हृदयपीड़ा, श्वास, शूल, पेट फूलना, खींचना, अरुचि, शिरमें पीड़ा श्वासका होता है ।

महाश्वासरोगका लक्षण ।

जिसका वात ऊर्ध्वगत होके शिरोंका मुख बंद करता है जब वह आदमीका श्वास बड़ा जोरसा आता है जैसे बैलके श्वासके माफिक और आतके माफिक दूरसे सुनता है उसका ज्ञान नष्ट होता है, नेत्र चंचल, मुख

नेत्र फाड़ता है, दस्त, पेशाब बन्द, आवाज मन्द, मनक्षीण, उस रोगीका श्वास दूरसे समझता है यह रोगी मरता है।

ऊर्ध्वश्वासका लक्षण।

ऊर्ध्वश्वास बहुत देरसे आता है, नीचे जलदी न होना, मुख आदि- इंद्रिय कफसे रुकना, ऊपर मुख, चञ्चल दृष्टि, मूर्च्छा, मुख सूखना ऐसा होता है

छिन्नश्वासका लक्षण।

जो आदमी रह रहके जितनी ताकत है उससे श्वास लेता है, हृदयमें वेदना, घबराहट, पेट फूलना, पसीना, मूर्च्छा, बस्तिगत दाह, नेत्र फिराना, जल आना, श्वासलेके बेताकत, एकनेत्र लाल, दिल उद्विग्न, मुख सूखना, रंग बदलना, बहकना, संधि ढीली, इस रोगसे बचना कठिन है।

तमकश्वासका लक्षण।

जिस वक्त वायु गर्दन मस्तक जकड़के कफको उलटा चढ़ाके रगोंको बन्द करता है, उस कफसे जुखाम गलेमें घर घर शब्द करता है, हृदय पीड़ा, श्वास, मूर्च्छा पाके घबरा जाता है. निश्चेष्ट होता है, खांसते वक्त बारम्बार घबराता है, कफ जलदी नहीं छूटता है, कफ पड़नेसे आराम लगता है, गलेमें खाज आना, बोलनेसे दुःख, निद्रा न आना, पसली दूखना, बैठनेसे आराम लगे, गरमसे प्यार, प्यार खुशाली, नेत्रपर सूजन, शिरको पसीना, मुख सूखा, श्वाससे सब शरीर हलना, तमकश्वास, वर्षाऋतुमें ठंडे दिन और हवामें पूर्वकी हवामें कफकर पदार्थ खाने पीनेसे ज्यादा होता है. यह श्वास थोड़े दिनोंका साध्य होता है. इसमें ज्वर और मूर्च्छा ज्यादा हो तो तमकश्वास कहना चाहिये।

क्षुद्रश्वासका लक्षण।

रूक्ष और आयाससे जो श्वास होता है वह क्षुद्रश्वास वायुका ऊर्ध्व लेके श्वासमें दुःख कम रहता है और सब इंद्रियां मनको इजा न करे वह साध्य है।

श्वासरोगपर उपाय।

श्वास, हिक्का रोगको पहिली तैलादिक मर्दन करके पसीना निकलना

उलटी देना, अग्निदीपन दवा देना, हलका जुलाब देना और वादी कफ-नाशक इलाज करना १। काकड़ाशिंगी, त्रिकटु, त्रिफला, रिंगणी, भारंग-मूल, पोहकरमूल, जटामांसी, सैंधवलोन, कालानोन, विड़नोन, काचनोन, सांभरनोन इनका चूर्ण गरम पानीसे देना; इससे हिक्का, श्वास, खांसी, अरुचि नाश होगा २। सोंठ ६ पीपल ५ मिर्च ४ तांबूल ३ दालचीनी२ इलायची १ तोला लेके सबसे समभाग शकर मिलाके चूर्ण देना. इससे अर्श, अग्निमन्द, खांसी, अरुचि, श्वास, कण्ठरोग, हृदयरोग जाता है ३। सोंठ, देवदारु, पिपली इनका चूर्ण देना ४ । सोंठ, पिपली, चूर्ण गरम पानीसे देना. इससे श्वास जायगा ५। अडूसाका रस, गायका मक्खन, त्रिफला इनका चूर्ण देना ६ । हलदी, मिर्च, दाख, पीपल, रास्ना, सोंठ, गुड़का चूर्ण राईके तेलसे देना ७ । अडूसा, हलदी, पीपल, गिलोय, भारंगमूल, मोथा, सोंठ, रिंगणी इनके काढ़ामें मिर्चका चूर्ण डालके देना; श्वास जाता है ८ । सूर्यावर्तरस देना ९। त्रिफला, त्रिकटु, देवदारु, बच्छ-नाग, खश, धतूराके बीज इनका चूर्ण भांगरेके रसमें घोटके गोली बांध उसे देना, श्वास खांसी जायगी १० । शुद्ध पारा, गंधक, बच्छनाग, सुहागा, मनसिल, हरएक १ तोला, मिर्च आठ तोला, त्रिकटु दो तोला, सब खरल करके देना. इसीका नाम श्वासकुठार रस है ११ । सोमलकी निर्धूमकी भस्म योग्य अनुपानसे देना १२। अभ्रकभस्म योग्य अनुपानसे देना. १३ । वंगभस्म, हलदी और शहदसे देना १४। अदरखके रसमें शहद डालके उसमें अभ्रकभस्म देना १५ । मधु और पिपली देना १६। अमृतार्णव रस देना १७। उदयभास्कर रस देना १८। श्वासकालेश्वर रस देना १९। नागभस्म योग्य अनुपानसे देना २०। धतूराकी जड़ चिलममें पिलाना।

श्वासरोगपर पथ्य ।

रेचन, स्वेदन, धूम्रपान, उलटी, दिनका सोना, देवभात, गेहूँ, जव, जंगली मांस, रस, घी, दूध, शहद, जंभीरी, चंबलाई, दाख, अनार, कफ, भी वादी नाशक चीजें, जिनको प्रकृतिको माने वह पदार्थ देना

श्वासरोगपर अपथ्य ।

रक्त निकालना, पूर्वकी हवा, बकरीका दूध, घी, खराब पानी, अनूपमांस,

कंद, राई, रूक्ष चीज, भारी पदार्थ, पत्रशाक, प्रकृतिको न माने वे पदार्थ वर्ज्य करना और कोखकी बाजूपर नीचे मुमार बाहुके आधे प्रदेशपर दाग देना और गलेकी हलकपर सोनेका दाग देना।

इति श्वास-निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ स्वरभेदका निदान।

अतिभाषण, जोरसे गानेसे, विष खानेसे, अपघातसे, बड़े शब्दसे, अनेक कारणोंसे शब्द वाहिनी शिरामें दोषकोप होके स्वरभंग करता है, यह रोग छः प्रकारका है १ वातसे २ पित्तसे ३ कफसे ४ सन्निपातसे ५ क्षयसे ६ मेदसे।

वातस्वरभेदका लक्षण।

आदमीका मुख, नेत्र, मल मूत्र लाल काला होता है, स्वर फूटता है, स्वरमुरा होता है।

पित्तस्वरभेदका लक्षण।

रोगीका मुख नेत्र मल मूत्र पीला होता है, बोलनेके वक्त गलेमें दाह होता है।

कफस्वरभेदका लक्षण।

गलेमें कफ लिप्त होके गला बंद होता है, धीरे धीरे बोलता है, दिनको ज्यादा बोलता है ४ सन्निपातस्वरभेदमें सब लक्षण होते हैं।

क्षयस्वरभेदका लक्षण।

क्षयके स्वरभेदमें बोलतेवक्त इसके गलेमें धुवांसा निकलता है, आवाज फूटती है, बे ताकत होता है।

मेदस्वरभेदका लक्षण।

बैठी आवाज, भारी, नीचा स्वर, बारीक स्वर यह मेदस्वरभेदका लक्षण समझना।

सन्निपातस्वरभेदका लक्षण।

क्षीण पुरुषका, बूढ़ेका, बहुत दिनोंका, जन्मसे है उसका, मेदवृद्धिवालोंका, सन्निपातवालेका स्वरभेद असाध्य है।

स्वरभेदका उपाय ।

वातस्वरभेदको खार और तेल देना १। पित्तस्वरभेदपर घी और शहद देना २। कफस्वरभेदपर खार और तीक्ष्ण चीजें देना ३। बादी स्वरभेदपर बादी श्वासका इलाज करना ४। पित्तस्वरभेदको पित्तश्वासका इलाज करना और कफस्वरभेदपर कफश्वासका इलाज करना ५। और क्षय-स्वरभेदपर क्षयश्वासका इलाज करना ६। और मेदपर मेद घटनेका इलाज करना ७। चावलमें गुड़ घी डालके खाना. ऊपरसे गरम जल पीना ८। पीपलमूल, त्रिकटु इनका चूर्ण गोमूत्रमें डालके देना. कफका स्वरभेद अच्छा होगा ९। अदरखके रसमें सेंधवलोन, त्रिकटु, बिजोरेका रस डालके कुल्ला मुखमें रखना १०। अजमोदा, हलदी, आंवला, जवा-खार, चित्रक इनका चूर्ण शहद,घीसे देना. त्रिदोष स्वरभेद अच्छा होगा ११। काकजंघा, बच, कुष्ठ, कुलिञ्जन, पिपली इनकी गोली शहदसे बांधके मुखमें रखे तो कोयलकासा कण्ठ होता है १२। चमेलीके पत्ते, इला-यची, पिपली, पीला वास, शहद, बिजोरा, तमालपत्र इनका लेह देनेसे कोयलकासा स्वर होता है १३। गिलोय, अपामार्ग, बिडंग, बच, सोंठ, शतावर इनका चूर्ण घीसे चटाना आदमीको सहस्र श्लोक बांचनेकी शक्ति होगा १४। बेरके पत्तेका कल्क, सेंधवलोन शहदसे चटाना १५। बहेड़ा, पिपली, सेंधवलोनका चूर्ण करके कांजीसे पिलाना १६। आमलेका चूर्ण गर्म दूधसे पिलाना १७। सरसोंके तेलमें कत्था भिगोके मुखमें रखनेसे स्वर साफ होता है १८। गोरक्षवटी, मिर्च यह देना १९। कुष्ठ, कुलि-ञ्जन, बावची, राई, पीपल,कालीजीजें, तांबूलके रसमें घोटके गोली मुखमें पकड़े तो स्वर कोकिलाके माफिक होगा २०। मिश्री,और मिर्च देना २१। गुञ्जाका पत्ता, आमका मौर, कुष्ठ, कुलिञ्जन, मिर्च, मिश्री इनकी गोली तांबूलके रसमें बनाके मुखमें रखना २२। सञ्जीवन अमृतवटी मुखमें रखना २३। और त्रिकटु, सेंधवलोन अदरखके रसमें कल्क करके मुखमें रखना २४।

स्वरभेदपर पथ्य ।

पसीना, बस्तिकर्म, धूम्रपान, जुलाब, मुखमें दवा लेना, नास सुंघाना, गलेका शिरावेध, जोंक लगाना, जव, लाल शालीका भात, शहद, मद्य,

गोखरू, मूली, दाख,हरडा,विजोरा,लहसुन,क्षार, अदरख,पान, मिर्च, घी ये चीजें हितकारक हैं।

स्वरभेदपर अपथ्य।

आमकी खटाई, कैथ, बकुल, जामुन, चारौली,तुरस पदार्थ, उलटीकारक पदार्थ, तेल, सुपारी, खोपरा, ये चीजें और प्रकृतिको न मानें वे चीजें वर्ज्य करना।

इति स्वरभेद-निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ अरुचिरोगका निदान-पूर्वजन्मका कर्मविपाक।

जो धनवान् पुरुष तामसपनेसे दान करता है सो अरोचक शूलका रोगी होगा।

पूर्वजन्मकर्मविपाकका परिहार।

पचास ब्राह्मणोंको मिष्टान्न भोजन देना, ईश्वरकी भक्ति करना, इससे अच्छा होगा।

ज्योतिषका मत।

जिस आदमीके सहज भवनपर कुग्रह हो उसे मंदाग्नि, अरोचक होता है। ब्राह्मणभोजन कराना,दान देना,जप कराना इससे शांत होगा।

अरुचि होनेका कारण।

बारंबार आदमी जो अन्न आदि लेता है वे चीजें बे मजा मालूम होती हैं उसको अरुचि कहते हैं और भोजनके नाम लेनेसे त्रास आता है उसको भक्तद्वेष कहते हैं और वात, पित्त, कफ, सन्निपात, शोक, भय, अतिलोभ, क्रोध ऐसे आठ प्रकारका अरोचक रोग है १ वातके अरोचकसे दांत खट्टे होके मुख तुरस होता है। २ पित्तकी अरुचिसे मुख तीखा, गरम, बेचव, दुर्गंध ऐसा होता है।३ कफसे मुख खारा, मधुर, चिकना, मीठा, जड, ठंडा, अन्नद्वेष ये होते हैं ४। सन्निपातमें सब लक्षण होते हैं ५। शोक,भय, क्रोधसे हृदय भारी, दुर्गंध और बे तरह वगैरे रहता है।६ बादीके अरोचकसे छातीमें शूल। पित्त-अरोचकसे दाह होता है ७।

अरुचिपर उपाय ।

वात-अरुचिको बस्ति देना १। पित्त-अरुचिको जुलाब देना २। कफअरुचिको उलटी देना ३। त्रिदोषपर हर्ष खुशीकारक चीजें देना ४। कांजीमें नोन डालके कुल्ले कराना ५। शकर, त्रिकटु, कैथका चूर्ण शहदसे गोली बांधके मुखमें रखना ६। विडंगका चूर्ण एक तोला, शहद चार तोला डालके चाटनेसे रुचि आती है ७। अम्लीके पानीमें गुड़, दालचीनी, इलायची, मिर्च डालके उसीके साथ भोजन करे तो रुचि आती है ८। जीरा मिर्च, कुष्ठकुलींजन, बिडनोन, कालानोन, मुलहटी, शक्कर सरसोंका तेल एकत्र करके मुखमें घिसना रुचि आवेगी ९। करंजके दातूनसे मुख घिसना, रुचि आवेगी १०। शकर, अनार, दाख, खजूर, बिजोराकी केशर इनमेंसे कोई चीजें सेंधवलोन और शहदसे देना. इससे रुचि आवेगी ११।

अरुचिपर खाडव चूर्ण ।

तालीसपत्र, चवक, मिर्च, पिपली, सेंधवलोन, नागकेशर, पीपलमूल, जीरा, अम्ली, चित्रक, दालचीनी, नागरमोथा, सूखेबेर, धनियाँ, इलायची, अजमोदा, काली दाख, सोंठ, शकर, ये उन्नीस १९ चीजें एक १ तोला और अनारकी छाल ९ तोला इनका चूर्ण करके अनुपानसे देना. इससे अतिसार, कृमि, उलटी, अरुचि, अजीर्ण, गुल्म, पेट फूलना, अग्निमंद, मुखरोग, उदररोग, गलेका रोग, अर्श, हृदयरोग, श्वास, खांसी, इतने रोगोंका नाश होता है १२। बड़ी सौंफ, जीरा, त्रिकटु, दाख, दाडिमके बीज, सेंधवलोन, संचल सब समभाग मिलाके बिजोरेके रसकी पुट देना. अदरख रसका पुट देना. गोली बेर बराबर बांधके देना. इससे सब अरोचक जाता है १३। राई, जीरा, कुष्ठ, भुनी हींग, सोंठ, सेंधवलोन इनका चूर्ण गायके दहीमें देना १४। अदरखको सेंधवलोन लगाके देना १५। बिजोराकी केशर सेंधवसे बांटके देना १६। आमला, दाख, अनार, जीरा, कालानोन इनका चूर्ण देना १७। अदरखका रस शहद डालके देना १८। अनारके रसमें विडंगका चूर्ण डालके देना १९।

अरोचकपर पथ्य।

वस्ती, रेचन, उलटी, धूम्रपान, मुखमें दवाइयां रखना, प्रिय पदार्थ, गेहूँ, मूँग, अरहर, शालि, साठीका भात, जंगली मांस, लौकी, दूध, घी, दाख, आम, दही, छाछ, मक्खन, टेंडसी, बेर, हरड़, आमला, त्रिकटु, हींग ये चीजें हितकारी हैं।

अरोचकपर अपथ्य।

भूख, प्यास, डकार आदिका रोकना, न भावता अन्न, रक्त काढ़ना, क्रोध, लोभ, भय, शोक, दुर्गन्ध, खराब दर्शन ये वर्जित हैं।

इति अरोचक रोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ उलटी रोगका निदान-पूर्वजन्मका कर्मविपाक।

ब्राह्मण साधुको क्लेश देने तथा कीड़ा, काग, कुत्ताका जूँठा खिलाने वाला और विश्वासघातका उलटी रोगी होता है।

पूर्वजन्म कर्मविपाकका परिहार।

ब्राह्मणभोजन कराना, घी, अन्नदान करना, शांत होगा।

ज्योतिषका मत।

जन्म स्थानसे छठे स्थानपर चन्द्र और शुक्र ग्रह हो और उनकी दृष्टि होनेसे उलटी रोग होता है और तृष्णारोग होता है जपदान करनेसे समाधान होगा। बादीसे १ पित्तसे २ कफसे ३ सन्निपातसे ४ भयसे ५ ऐसे पांच तरहके उलटी रोग हैं।

उलटीरोग होनेका कारण।

अतिद्रव्य, स्निग्ध, क्षार, बेवक्त खाना, पीना, गर्म, विष, अजीर्ण, श्रम, भय, कृमि, गर्भवाली स्त्रीको भयसे उलटी रोग होता है।

उलटीरोगका पूर्वरूप।

जँभाई, डकार बन्द, मुखको खारा छूटना और अन्न पान पर द्वेष होता है।

वात--उलटीका लक्षण।

छाती, पसली, शिरा, नाभि, इनमें शूल, मुखशोष, कोरी खांसी, स्वरभंग, सुई चुभाने माफिक पीड़ा और बडे शब्दसे उलटी होती है।

पित्तउ-लटीका लक्षण।

मँवल, तृषा, शोष, शिर, तालु, नेत्र तप्त होना, अंधेरी, चक्र, पिंड, पीली, हरी, गर्म, कडू, धुवाँसी उलटी पित्तसे होती है।

कफ-उलटीका लक्षण।

सुस्ती, मुख मीठा, कफ लिप्त, भूख कम, नींद ज्यादा, बेमजा, भारीमना, इनसे शुरू होके गाढ़ी, मीठी सुफेद उलटी कफसे होती है।

त्रिदोष-उलटीका लक्षण।

कृमि, आलस्य, सूजन, उलटीमें जीभ चलाना, शूल, छातीमें लसलस, लक्षणोंसे आगन्तुक उलटी होती है।

उलटीरोगका उपद्रव।

खांसी, दमा, ज्वर, हिचकी, तृषा, जी नहीं लगना, हृदयरोग, अंधेरी ये उपद्रव होते हैं; जिस उलटीमें त्रिदोषलक्षण, बेताकत, बुड्ढा, क्षीण वह असाध्य है।

उलटीपर उपाय।

१ घीमें सेंधवलोन डालके देना। २ सेंधवलोन, बिडनोन, काचनोन, इनके बराबर दूध पिलाना। ३ दोबड़ीका रस चावलके धोवनसे देना। ४ आमलाके रसमें शकर डालके देना। ५ पित्तपापड़ाके काढ़ेमें शहद डालके देना। ६ बिडंग, त्रिफला, त्रिकटु इनका चूर्ण शहदसे चटाना। ७ तुलसीके रसमें इलायची डालके देना। ८ पीपलके छालकी राख पानीमें डालके पानी पिलावे, त्रिदोष उलटी जायगी। ९ मोरके परकी राख शहदसे देना। १० बालहरडका चूर्ण शहदसे और गर्म जलसे देना। ११ मट्टीके ढगलेको गर्म करके पानीमें बुझाना और वह पानी पिलाना। १२ शंखभस्म, मिर्च ये शहदसे देना. इससे सर्व उलटी जायगी। १३ बच कांजीसे देना। १४ छुहारेका बीज मुखमें रखे, उलटी न होगी। १५ करञ्जका बीज भूनके मुखमें रखे, उलटी बन्द होगी। १६ शंख-

पुष्पीका रस दो तोलामें मिर्चका चूर्ण डालके देना १७पीतांबरके कपड़ाकी वीड़ीमें जीरा डालके नाकसे धुंवा पिलाना १८। गिलोयके रसमें शहद डालके देना १९। जीरा, धनियां, हरड़ा, त्रिकटु इनका चूर्ण शहदमें रस-भस्म देना २०। और पहले विषूचिकापर जो दवायें लिखी हैं उन्हें देना,सर्व उलटीका नाश करेगा २१।

उलटीपर पथ्य।

रेचन, उलटी, लंघन, स्नान, जप, लाहीका मंड, चावल, पीले मूंग, गेहूं, जव, शहद, जंगली मांस, अदरख, आम, दाख, बेर, कैथ, अनार, हरडा, बिजोरा, जायफल, अडूसा, बड़ी सौंफ, कस्तूरी, सुवास, अतर, फूल मन प्रसन्न कारक पदार्थ हितकारक हैं।

उलटीपर अपथ्य।

नास, वस्ती, पसीना, स्नेहपान, रक्तमोक्ष, दांत घिसाना, पतला अन्न, ऊपर देखना, भय, द्वेष, धूप, चिन्ता, दिलको न भाती चीजें, तुरई, लौकी, काकड़ी, बादीपर, खटाई तेल वर्जित है। इति उलटी निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ तृषारोगका निदान-पूर्वजन्मका कर्मविपाक।

जो आदमी प्यासे ब्राह्मण, गाय, साधुको पानी नहीं पिलावे वह तृषारोगी होता है।

अथ पूर्वजन्मकर्मविपाकका परिहार।

पानी, दूध, शक्कर, घी दान करनेसे शांत होगा।

तृषारोग होनेका कारण।

गर्मीके दिनों श्रम, क्षीणता, क्रोध, उपास इन कामोंसे पित्त कोपके पिपासा स्थानमें तृषा पैदा करता है। जलवाहिनी शिरा खराब होके तृषा ७ प्रकारकी है १वातसे २पित्तसे ३कफसे ४अन्नसे ५आमसे ६क्षयसे ७विषसे।

वाततृषाका लक्षण।

मुखशोष, दीनता, शंख, मस्तक दुखना, अरुचि, ठंडी चीजोंसे ज्यादा हो, नींद कम।

पित्ततृषाका लक्षण ।

मूर्च्छा, अन्नद्वेष, बकना, दाह, नेत्र लाल, ज्यादा प्यास, ठंडी चीजोंपर इच्छा, मुख कडुवा, संताप ।

कफतृषाका लक्षण ।

नींद ज्यादा, भारीपना, मुख मीठा, तृषा होती है। व्रणसे-शस्त्रके लगनेसे जो तृषा होती है, क्षयसे वारंवार पानी पीवे तो भी समाधान नहीं होता है और रस धातु क्षीण में ऐसा ही होता है। यह तृषा सन्निपातसे है। अजीर्णसे जो तृषा हो उसमें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं. हृदय, शूल, लार, ग्लानि होती है।

अन्नतृषाका लक्षण ।

आवाज बैठना, मूर्च्छा, मनको क्लेश, मुख, गला, तालू इनका शोष, तृषा इन उपद्रवोंसे आदमी सूख जाता है ।

तृषाका असाध्य लक्षण ।

ज्वर, क्षय, खांसी, श्वास, दस्त इन उपद्रवोंसे असाध्य है ।

तृषापर उपाय ।

बादी नाश करनेवाली चीजें, हलका, शीतल ऐसा अन्नपान और जीवनीयगणसे सिद्ध किया घी और दूध पिलाना १। सोना, रूपा, पोलाद, ढगल, रेती इनको तपाके बुझाया हुआ पानी पीनेको देना; इससे तृषा नष्ट होती है २। शहद, शकर पानीमें डालके पिलाना ३। पित्तपर गूलरके पके फलके रसमें शकर डालके देना ४। तपाये हुए पानीमें लाई खीलका आटा देना ५। भोजन जीर्ण होनेके बाद प्यास लगे तो चावलके धोवनमें शहद डालके देना ६। क्षय-प्यासको दूधका काढ़ा और मांसका काढ़ा और मुलहटीका काढ़ा देना ७। खस, मैलागर चंदन, पद्म, केशर, कालाखस इनको पानीमें घिसके लेप देना ८। पिपली, जीरा, शकर, नागरमोथा, नागकेशर, अनारका चूर्ण शहदसे देना ९। बड़की जटा, हरडा, पिपली, मुलहटी इनका लेह शहदसे चटाना १०। ताम्रभस्म, पारद, हरताल, मोरचूत इनको खरलमें घोटके जड़ा कोमके रसमें घोटके टिकिया बांधके पुट देवे, उसमेंसे लवमात्रा देना. योग्य अनुपानसे ११। बड़कीजटा, लोध, दाडिम, मुलहटी, शकर, शहद डालके चावलके पानीमें देना. तृषा नष्ट

होगी १२। शंख पानीमें घिसके घोलके पिलाना, तृषा जायगी १३। जीरा, धनियाँको पानीमें भिगोके पानी छानके पिलाना १४। आम, जामुनकी छालके काढ़ामें शहद डालके देना. तृषा जायगी १५। काली दाख, गन्ना, दूध, मुलहटी, कमल, शहद इनकी नास देना. तत्काल तृषा जायगी १६। जीरा, धनियाँ, दाख, चंदन, कपूर इनको पीसके ठंडे पानीसे पीवे तृषा जायगी १७। रक्तचंदन, खश, काला खश, कमल इनका लेप शिरको और बदनको लगावे, तृषा जायगी १८। चंदन, केशर पानीमें घिसके शिरको लेप देना. तृषा जायगी १९। गिलोयका हिम, शहद डालके देना २०। चावलके धोवनेमें प्रवालभस्म और शकर डालके देना २१। चावलके पानी और घी शकरमें माक्षिकभस्म देना, तृषा जायगी।

तृषापर पथ्य।

रेचन, उलटी, निद्रा, स्नान, कुल्ला, लाही, सत्तू, चावल, शकर, शहद, मधुररस, मूंग, मसूर, छाछ, दाख, खजूर, अनार, काकड़ी, जंबीरी, गायका दूध, बिजोरा, मोतीका भूषण, नास, मनको अच्छा लगे सो पदार्थ पथ्यकारक है।

तृषापर अपथ्य।

तेलका अभ्यंग, अंजन, धुंवाँ पीना, रास्तेमें चलना, खराब नास, जड़ अन्न, खटाई, खार, तुरस, तीक्ष्ण, त्रिकटु, खराब पानी, संताप, शोक, राग, द्वेष ये तृषा रोगीको वर्जित हैं।

इति तृषारोग-निदान और चिकित्सा समाप्त।

मूर्च्छा (भ्रम, निद्रा, संन्यास) का निदान।

क्षीण हुए वातादिक दोष बढ़के देश काल तबीयतको न माननेवाले विरुद्ध खाने पीने, मूत्रादिकका वेगरोध, अपघात, सत्त्वगुण नष्ट होनेसे विष खानेसे मूर्च्छा पैदा होती है।

मूर्च्छाका पूर्वरूप।

हृदयपीड़ा, जंभाई, ग्लानि, भ्रांति ये पूर्व लक्षण हैं।

वातमूर्च्छाका लक्षण।

आकाश नीला, काला, लाल, दीखके अंधेरी आती है वह रोगी

जल्दी सावधान होता है, अंगमें कंप, आंगमोडी, हृदयव्यथा, कृश, लालवर्ण हो तो वातलक्षण मूर्च्छा जानना ।

पित्तमूर्च्छाका लक्षण ।

आकाश पीला, हरा, लाल देखके मूर्च्छा आती है, सावधान होने-के वक्त पसीना, प्यास, संताप, आंखें लाल, पीली, मल पतला, शरीर पीला ऐसा पित्तमूर्च्छाका लक्षण जानना ।

कफमूर्च्छाका लक्षण ।

आकाश सफेद धुंद देखके मूर्च्छा आती है, सावधान देरसे होके बदन भारी, मुखमें चिकना, पानी, उलटीके माफिक दिल मचलाना यह कफमूर्च्छाका लक्षण जानना ४ । सन्निपातमूर्च्छा में सब लक्षण होते हैं ।

रक्तमूर्च्छाका लक्षण ।

किसी आदमीको भयसे रक्त देखके मूर्च्छा आती है उसे स्वभावसे पहचानना ६ जहरसे और नशेसे जो मूर्च्छा आती है उससे आदमी मूर्छित होता है उसमें दो भेद हैं । १ जहरकी जो मूर्छा है वह दवा बिना जानेकी नहीं और कफकी मूर्छा नशा उतरनेसे आपसे शांत होती है ७ । रक्तमूर्छामें शरीर नेत्र खिंचता है, कठिन होता है, स्वर साफ नहीं चलता २। मद्यसे बड़बड़, सोना, स्मृति जाना, भ्रमिष्ठ होना, जबतक नशा पचे नहीं तबतक जमीनपर पांव हाथ पटकना, यह रक्त मूर्च्छाका लक्षण जानना ।

विषमूर्च्छाका लक्षण ।

कांपना, नींद, तृषा, अंधेरा मालूम होना, मूलीके पत्ता, क्षीर इस मा-फिक विषके बहुत भेद हैं उनका लक्षण विषनिदानमें देख लेना और मूर्छामें पित्त और तमोगुण आदिकसे रजोगुण पित बादी से भ्रम होता है और तमोगुण बादी कफसे तंद्रा होती है और कफ तमोगुणसे निद्रा आती है और इंद्रियां अपना विषय ग्रहण न करके आदमीको जो सुस्ती, जँभाई, आंगमोडी आके नींदके माफिक करती हैं उसे तंद्रा कहते हैं और काम ज्ञान त्यागके जो आदमी सुस्त होता है उसे नींद कहते हैं । नींदका वेग पूरा होनेसे आदमी हुशियार होता है, लेकिन तंद्राकी दवा न करनेसे आदमी मर जाता है इस वास्ते दवा जरूर करना चाहिये ।

मूर्च्छाका उपाय ।

बदनपर पानी डालना, स्नान, रत्नोंके अलंकार, ठंडा लेप करना. पंखेकी हवा, सुगंध शीतल ऐसे इलाजसे सर्व मूर्च्छाओंकी शांति होती है १। धमासाके काढ़ेमें घी डालके देना. इससे मूर्च्छा नष्ट होगी जैसे गोविंद नामसे पाप नाश होता है २। पंचमूलका काढ़ा देनेसे मूर्छा जायगी ३। रिंगणीमूल, गिलोय, पीपलमूल, सोंठ, बायबिडंगका काढ़ा देना. मूर्च्छा जायगी ४। पिपलीका चूर्ण शहदसे देना ५। त्रिफलाका चूर्ण रातको शहदसे देना ६। गुड़, अदरख दोनों मिलाके फजिरको देना ७। सोंठ, गिलोय, दाख, पोखरमूल, पिपलमूलके काढ़ेमें पिपलीका चूर्ण डालके देना ८। सुई, नख, चुभाके केश खींचना ९। कोहिलीकी फली आंगको लगाना १०। शिरसके बीज, पिपली, मिर्च, सेंधवलोन गोमूत्रमें घिसके अंजन करना ११। लहसन, मनशिल, चवक इनका अंजन करना १२। सोंठ, पिपली, शतावर, हरडें इनका चूर्ण समभाग गुड़ डालके गोली बनाके देना १३ हरड़ोंके काढ़ेमें और आमलेके रसमें सिद्ध किया घी देना १४। कल्याण घी देना, मद सूर्च्छा जायगी १५। रक्तचंदन, खश, नागकेशर इनका चूर्ण ठंडे पानीसे देना १६। सन्निपातोंमें अंजन तंद्रिक सन्निपात पर इलाज लिखा है सो करना १७।

मूर्च्छापर पथ्य ।

धूम्र, अंजन, नास, रक्त निकालना, दाग, सुई, नख दबाना, नस्य, खिंचाना, नाककी हवा बंद करना, जुलाब, उलटी, लंघन, क्रोध, भय, बदनको चुभनेवाला बिछौना, लाई, खील पुराने चावल, जव, लाल शालिके चावल, मूंग, बटाने (काबुली मटर) गायका दूध, शकर, कोहला, पटोल, केला, अनार, लोबिया तथा प्रकृतिको जो मफिक पड़ें वे चीजें पथ्यको देना।

मूर्च्छापर अपथ्य ।

पान पत्तोंके साग, दांत घिसना, धूप, विरुद्ध खाना, पीना, मैथुन, पसीना, मिर्च, मूत्रादिक वेगोंका रोकना, छाछ, खटाई, नसेकी चीजें, दिलको

न माननेवाली चीजें इत्यादिक मूर्च्छावालेको मना करना ३७। माक्षिक, प्रवाल, खड़ी शकर व अदरखका रस सब मूर्च्छाओंका नाश करता है।

इति मूर्च्छा-निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ मद्यका निदान ।

विषके जो गुण कहे हैं वे गुण मद्यमें हैं, मद्य को जो अविधिसे पीवेगा उसको भयंकर रोग पैदा होगा. उसे मदात्यय कहते हैं. कोई यह शंका करेगा कि नशेमें जहरके गुण हैं तो उसको क्यों खाते पीते हैं इसका कारण ऐसा है कि जो नशा अयुक्तिसे लेते हैं उन्हें जहर है और युक्तिसे पीते हैं उनको अमृतके तुल्य है इसका उदाहरण-

श्लोक-प्राणः प्राणभृतामन्नं तदयुक्त्या निहन्त्यसून् ।
विषं प्राणहरं तच्च युक्तियुक्तं रसायनम् ॥

अर्थ-जैसे अनाज खानेसे आदमी जीता है लेकिन बे युक्तिसे खावें तो अनाज ही जहर होके मारता है वैसे ही जैसे आदमी युक्तिसे जो जहरको खाता है वह रसायनके माफिक गुण करता है वैसेही आदमी यदि युक्तिसे मद्य पीवे और मांस स्निग्ध खानेके साथ पीवे तो आयुष्य, पुष्टि शक्ति देके अमृतके माफिक फायदा करेगा और दुश्मनसे संग्राम समय जीत, सुंदरता, मनोत्साह, संतोष करता है और अविधिसे मद्य पीवे तो मदात्यय रोग पैदा होता है, वह चार प्रकारका होता है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ ये समझना ।

प्रथम मदात्ययका लक्षण ।

प्रथममदात्यय बुद्धि, स्मृति, प्रीति, खुराक, शक्ति, निद्रा, रति, पाठशक्ति, कांति इनको बाढ़ता है।

द्वितीय मदात्ययका लक्षण ।

बुद्धि, स्मृति, बोली विपरीत, दिवानापना, गुस्सा, आलस्य, नींद, ऊंगी होती है ।

तृतीय मदात्ययका लक्षण ।

उन्माद, अगम्य, गुरु बड़ेका आदब न करना, बड़े छोटेका अवि-

चार, मा बहिन गुरुकी औरतको पापसे देखना. जाति बेजात न देखना. भलती चीज खाना. बेशुद्धि बोलना. गुप्तबात प्रकट करना।

चतुर्थ मदात्ययका लक्षण।

बेशुद्ध पड़ना, मूर्च्छा, उलटी, बदन लकड़ाके माफिक कठिन पड़ना, मूढ़ता, अग्नि भी होता है। ऐसे लक्षणोंसे जैसे सोना अग्निमें तपानेसे उत्तम, मध्यम, कनिष्ट मालूम होता है वैसे ही मद्य आदमीका सत्वगुण, तमोगुण, रजोगुण समझा देता है इसमें सन्देह नहीं।

मद्य पीना वर्जित।

क्रोधवाला, भय, प्यास, शोक, भूँखा, रास्ता चला, बोझा उठावे, मलादिकका वेग रोके, अजीर्णवाला, पेट, शूल, दुबला, धूपमें फिरा, ऐसे आदमीको मद्य पीना वर्जित है।

वातमदात्ययका लक्षण।

हिचकी, श्वास, मस्तककम्प, पेटमें शूल, निद्रानाश बड़बड़ यह होता है।

पित्तमदात्ययका लक्षण।

तृषा, दाह, ज्वर, मद, मोह, अतिसार, भ्रम, शरीर हारा यह होता है।

कफमदात्ययका लक्षण।

उलटी, अन्न न पचना, अरुचि, मलमल, तन्द्रा, शरीरमें गीलापना, जड़पना, ठण्डी लगना यह लक्षण होता है।

सन्निपातमदात्ययका लक्षण।

सबके लक्षण जिसमें हो वह सन्निपात मदात्ययका लक्षण समझना चाहिये।

अजीर्णमदात्ययका लक्षण।

पेट फूले, उलटी, जलजल, गड़ाई हो तो अजीर्ण मदात्यय समझना।

मदात्ययका असाध्य लक्षण।

नीचेके ओंठसे ऊपरका ओंठ बढ़ाके बोले, बाहरकी टोंड़ी, अन्तरमें दाह, मुखपर तेल लगायासा दीखे, जीभ, ओंठ, दांत काला, नीला, दीखे, आंख पीली और लाल हो वह रोगी मरता है २१।

मदात्ययका उपाय।

मद्य, काला नोन, त्रिकुटा इनको एकत्र करके थोड़ासा घी डालके देना १। खटाई, स्निग्ध, गरम, जंगली मांसरस, पानी, मद्य ये पदार्थ वातमदात्ययवालेको देना २। बड़की जटा पानीमें पीसके पिलाना ऊपरसे मद्यपानी पिलाना ३। आमला, खजूर, फालसा, कपूर, शकर एकत्र करके देना ४। गन्नाके रसमें मद्य मिलाके देना. मधुर चीजोंका मद्य देना, कफकर मद्यको उलटी देना ५। सुपारीके मद्यको नाकसे धुँवा निकालना ६। शकर और नोन देना ७। कोहलाके रसमें गुड़ डालके देना ८। धतूराके नशेको दूध शकर पिलाना ९। जायफलके नशेको मक्खन शकर जायपत्री देना १०। मक्खन, चन्दन, शकर देना ११। कोहलाका पानी देना १२। कुचलेके बीजको गायका घी देना १३। जायफलपर हरड़ा देना १४। ठण्डे पानीसे स्नान कराना १५। दही शकर मिलाके देना १६। आमलाके रसमें कजली शकर मिलाके देना १७। गायका दही, तेल, कपूर मथके सुंघाना १८। और दही पिलावे तो सर्व नशा उतरेगा १९। दारूके नशेको घी शकर मिलाके चटाना, बिलकुल नशा न चढ़ेगा २०। पिप्पल, धनियां, फालसा, देवदारु, इलायची, जीरा, नागकेशर, मिर्च, शकर, मुलहटी, कैथका रस इनके शरबतमें कपूरकी खुशबू लगाके पिलाना इससे सब नशा उतरके दीपन पाचन करता है २१। त्रिफलाका चूर्ण शहदसे रातको देना. फजिरको अदरख गुड़ मिलाके देना २२। धमासा, नागरमोथा, पित्तपापड़ा इनका काढ़ा देना. तृषा लगे तो यही पिलाना, ज्वर, पिपासा जायगी २३। चवक, काला नोन, हींग, बिजोरा, सोंठ इनका चूर्ण देना २४। शतावरके काढ़ेमें दूध सिद्ध करके देना २५। पुनर्नवाके काढ़ेमें दूध सिद्ध करके देना २६। जायफल, मोथा, गिलोय, उड़द, भागवृद्धिसे लेके उसके काढ़ामें घी सिद्ध करना. इसके देनेसे सब मदोंका नाश करता है २७।

मदात्ययपर पथ्य।

रेचन, निद्रा, लंघन, मिश्र, पुराना चावल, मूंग, उरद, गेहूँ, जंगली मांस, बेसवार, खिचड़ी, प्रियमद्य, दूध, शकर, चंवलाई, बिजोरा, खजूर, अनार, आमला

नारियल, दाख, घृत, ठंडी हवा, जलमंदिर, चांदनी, मित्रमिलाप, अच्छा कपड़ा, अलंकार, स्त्रीसंग, गायन, वादन, चंदन, स्नान ये चीजें पथ्य-कारक हैं सो करना।

मदात्ययपर अपथ्य।

पसीना, अंजन, धूम्र, नस्य, दांत घिसना, तांबूल, मनको और तबीयतको न माननेवाली चीजें वर्ज्य हैं।

इति मदात्ययरोग-निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ दाहका निदान-कर्मविपाक।

जो आदमी अग्निमें थूकता है उससे कपिल नामक ग्रह पीड़ा करके तत्क्षण ज्वर, शूल, दाह, नेत्रको पीड़ा देते हैं।

कर्मविपाकका परिहार।

आटा, लाई, पिंड, रक्त, तिल, असगंध, फूल इन चीजोंका चौहटे पर उतारा (बलिदान) रखना उस वक्त यह मंत्र जपना, मंत्र-(गृह्णीष्व च बलिं चेमं) इतना कहके उतारा रखना, दाह शांत होता है।

ज्योतिषका मत।

जन्मलग्नमें और अष्टम स्थानमें मंगल रवि हो तो ज्वर, दाह होता है जप दानसे शांत होगा १।

दाह रोग होनेका कारण।

मद्यपान आदि गर्म चीजोंके आहार विहारसे पित्त कोप करता है और रक्तसे मिलके भयंकर दाह रोगको पैदा करता है १।

रक्तपित्तदाहका लक्षण।

१ रक्त तपके जो दाह होता है उसमें जैसा अंगारसे तपाते हैं और सब लक्षण पित्तज्वरकेसे होते हैं। २ तृषा रोकनेसे दाह हो उसमें अंतर बाहरसे दाह, बेशुद्धि, गला, ओंठ, तालूका शोष, जीभ, बाहर काढ़के कंपाना। ३ शस्त्र लगनेसे रक्तसे कोठा पूर्ण होके दाह होता है। ४ धातु क्षीणसे दाह होता है। ५ मूर्च्छा, तृषा, शब्द ऊंचा, निश्चेष्ट होके असाध्य होता है. ६ क्षयसे दाह, आहार कम, फिकर, दाह, मूर्च्छा, तृषा बड़बड़ ये होते हैं।

दाहका असाध्य लक्षण ।

जिस आदमीका शरीर बाहरसे ठंडा लगके अंदरसे दाह होती है सो असाध्य है ।

दाह रोगपर उपाय ।

शुद्ध पारा, गंधक, कपूर, चंदन, काला खस, मोथा इनके चूर्णकी घीसे गोली बनाके मुखमें रखे तो त्रिदोषज दाह नष्ट होता है इसका रस गुटी नाम है १ । अभ्रककी भस्म, दर्दुर, शुद्धपारा, गंधक, शहदसे एक प्रहर खरलके दो गुंजा अदरखके रसमें देना २ । इनको पथ्य चावल छांछसे खाना ३ । भूने जवोंके धानोंका आटा करके उसे ठंडे पानीसे देना, दाहनाश होगा ४ ।

दाहरोगपर मृतसंजीवनी गुटी ।

मुलहटी, लौंग, शिलाजीत, इलायचीइनके चूर्णको नये चावलके पानीकी १००भावना देना. गोली बेर बराबर बांधना। गोली मुखमें रखना और बड़केरसमें देना. तत्काल दाह मिटता है ५। धनियां, आमला, अडूसा, दाख, पित्तपापड़ा इनका हिम करके देना. दाह, ज्वर, तृषा, शोष इनका नाश होगा ६। गिलोयका हिम देना ७। अनारके रसमें शकर डालके देना ८। शंख घिसके पानीमें देना ९। जीराके हिममें मिश्री डालकेदेना १०। गुलाबी शरबत देना ११ । शसका शरबत देना १२ । प्रवालभस्म चावलके धोवनसे शकर डालकेदेना १३। माणिकभस्म घी शकरसे देना १४। इलायचीका चूर्ण केलेसे देना १५ । मात्रादिक दवा खानेसे दाह हो तो उसका उतार देना १६। अदरख, दाख, गन्ना, शकर, काकडी, कलिंगड़ इनके देनेसे दाह नाश होता है १७ । खस, रक्तचंदन, काला खस, इनका काढ़ा ठंडा करके देना १८ । पेटमें, दाह हो तो नाभिपर कांसेका बरतन धरके ठंढे पानीकी धार उसपर डालना शांति होगी १९ । चवलाईकी जड़, जीरा, तुलसी इनका रस एक तोला देना. दाह नाश होगा २० । मेंहदी, लोध, कपूर, मोथा, चंदन इनके पानीसे लेप देना २१। रातको धनियाँ भिगोके उसके पानीमें शकर डालके देना २२। हजार बार पानीमें धोया घी बदनमें लगानेसे दाह जाता है २३ । कपूर, कस्तूरी, चंदनसे घिसके लेप देना २४। खसकी टट्टीकी हवामें बैठाना, मोरपंखकी हवा लेना २५ । चंद्रकलारस देना २६ ।

दाहरोगपर पथ्य।

साठीका भात, मूंग, मसूर, जव, जंगली मांसरस, शकर, दूध, माखन, कोहला, काकड़ी, केला, फणस, अनार, दाख, आमला, दूधिया, अदरख, खजूर धनियाँ, बड़ी सौंफ, ताड़फल, शिंघाड़ा, खस, अभ्यंग स्नान, बगीचा, बंगलामें रहना, कथा, गाना, अच्छी बातें, चंद्रकी चांदनी, सुन्दर स्त्रियोंका आलिंगन, अच्छे दर्शन, रत्नोंका अलंकारधारण ये चीजें हितकारक हैं।

दाह रोगपर अपथ्य।

क्षीर, मच्छी, विरुद्ध अन्नपान, क्रोध, मलमूत्रादिकोंका रोध करना, श्रम, मैथुन, वातल चीजें, क्षार, पित्तकारी चीजें, व्यायाम, धूप, छाछ, तांबूल, मद्य, हींग, कटु, तीक्ष्ण, गरम ये चीजें, दाह रोगीको मना हैं।

इति दाहरोगनिदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ उन्मादरोगका निदान-कर्मविपाक।

जो आदमी दूसरेको मोह डालके खराब चीजें खिलाता है वह उन्माद रोगी होता है।

कर्मविपाकका परिहार।

इसमें कृच्छ चांद्रायण करना, सरस्वती मंत्रका जप कराना और ब्राह्मण-भोजन कराना. उन्मादकी शांति होगी।

उन्मादरोग होनेका कारण।

वातादिक दोष बेमार्ग होके चित्तको भ्रम देके दिवाना कर देते हैं उस रोगको उन्माद कहते हैं. विरुद्ध, दुष्ट, विषयुक्त, अमंगल भोजन करना, देवता, गुरु, ब्राह्मण इनका शाप, भय, हर्ष, इनसे मनको धक्का बैठके विषम चेष्टा, नेत्र फिराना, चलना बोलना विरुद्ध, बलवानसे कुश्ती करना ऐसे कारणोंसे आदमीका सत्वगुण नष्ट होके बुद्धिका ठिकाना बिगड़ता है उससे उस आदमीके उन्माद होता है, वह व्याधि छः प्रकारकी होती है। उससे भ्रमिष्ठपना, मन चंचल, दृष्टि चंचल, भयशीलता, असंबद्ध भाषण, बुद्धिशून्य, विचारशक्ति कम, ये सामान्य लक्षण होते हैं १।

वातउन्मादके लक्षण।

विशेष हँसना, नाचना, गाना, जिस बातका कारण न हो उसे करना, हाथोंसे वृथा चेष्टा करना, शरीरका खरदरा दुबला लाल होना, भूखके वक्तमें ज्यादा जोर होना २।

पित्तउन्मादके लक्षण।

पित्तको कुपित करने वाले आहार विहारसे पित्त कोपके जो उन्माद होता है उससे असहनशीलता अमोहपना, नग्न होना, डरना, भगना, उष्ण अंग, गुस्सा, छायामें बैठना, ठंडा अन्न, ठंडी चीजोंका प्यार, बदन पीला पड़ना, गरम चीजोंका द्वेष करना ३।

कफउन्माद तथा सन्निपात उन्मादके लक्षण।

तृषा, अन्नादिका भोजन करके एक जगहपर बैठना, ऐसा होनेसे कफ कुपित होके हृदयमें बुद्धि स्मृति चित्त इनकी शक्ति नहींसी करता है; उससे कम बोलना, अन्नद्वेष, स्त्रीसे प्यार, एकांत बैठना, नींद ज्यादा, उलटी होना, मुखसे लाल, भोजनके बाद, व्याधि ज्यादा बढ़ना, शरीर सफेद रंग होना ४। सन्निपातउन्मादमें सब लक्षण होते हैं सो जानना ५।

शोकउन्मादके लक्षण।

चोरोंने राजा और शत्रुके त्रास देनेसे धन बंधु नाश होनेसे दुःखी आदमीका मन खराब हो औरतसे आसक्त हुआ आदमी नाना बातें बोले, गुप्त वार्ता बोले, ज्ञान नष्ट होना, हँसना, रोना, मूर्खता, नेत्र लाल, इन्द्रियाँ शरीर कृश, कांति नष्ट, दीनपना, मुखपर कालापना ये शोकउन्मादके लक्षण जानना।

भूतोन्मादके लक्षण।

जिस आदमीकी बुद्धि स्मृति वारंवार, तत्त्वज्ञान, शिल्पादिज्ञान कला बांधे ऐसे आदमीका उन्माद भूतोन्माद होता है१।

देवग्रहके लक्षण।

सदा संतोष, शुचिर्भूत रहना, फूल, इतर इनका प्यार, नींद कम, सच

बोलना, संस्कृत भाषा, तेजवान् बोलना, स्थिर दृष्टि, आशीर्वाद देनेवाला, ब्राह्मण, देव, गुरु, इनपर प्रीति रखनेवाला देवग्रह लक्षणवाला जानना २ ।

असुरग्रहके लक्षण ।

धासधूस, ब्राह्मण, गुरु, देवता, इनपर दोष देना, वक्र दृष्टि देखना, निर्भय, वेदविरुद्धपर विश्वास, भोजन ज्यादा, दुष्ट बुद्धि, लक्षणोंसे इन दैत्यग्रह जानना ३ ।

गंधर्वग्रहके लक्षण ।

हर्षवान्, बलवंत, बाग बगीचामें खुशी, अनिंद्य पवित्रगायन करे, चंदन, फूलपर प्रेम, नाचना, सुंदर थोड़ा बोलना, हँसना ये गंधर्वग्रहवालेके लक्षण जानना ४ ।

यक्षग्रहके लक्षण ।

नेत्र लाल, कपड़े लाल, बारीक, पवित्रता, प्रेम, घबराहट, बुद्धिमान्, जल्दी चलना, मिथ्या बोलना, सहनशील, तेजःपुंज, किसको क्या देऊं यह बोलनेवाला यक्षग्रहवाला जानना ५ ।

पितृग्रहके लक्षण ।

दोपहरको पितरकी पीड़ा, भ्रांति, पुराना कपड़ा, तर्पण, मांस खानेकी वांछा, तिल, गुड़, घीपर वांछा, पित्रोंपर भक्ति करता है, जिस ग्रहकी जिस चीजपर वांछा होती है उसको उन्हीं चीजोंकी बलि देना. इससे समाधान होता है ६ ।

सर्पग्रहके लक्षण ।

जो आदमी साँपके माफिक जमीनपर लोटता है, ओठोंपर जीभ फिराता है, गुस्सा होती है, गुड़, शहद, दूध, खीर, खानेकी इच्छा करता है उसके सर्प ग्रहके लक्षण जानना ७ ।

राक्षसग्रहके लक्षण ।

मांस रक्त मद्यकी इच्छा करे, निर्लज्ज, निष्ठुर, शूर, गुस्सेबाज, रातको फिरनेवाला, बलवान्, नापाक रहनेवाला इन लक्षणोंसे युक्त राक्षस ग्रहवाला जानना ८ ।

पिशाचग्रहके लक्षण।

हाथ ऊपर करना, नग्न, निस्तेज, बड़बड़, शरीरमें दुर्गंध, अमंगल, दीनपना ज्यादा रखना, वनमें रहनेकी वांछा, रोना, फिरना यह असाध्य है ९।

उन्मादरोगका असाध्य लक्षण।

जल्दी चले, मुखसे फेना, नींद ज्यादा, कांपना, पहाड़, हाथी झाड़ोंसे पड़के रोगी होनेसे असाध्य है १। देवग्रह पूनमको २, असुरग्रह सबेर या सामको ३, गंधर्व अष्टमीको ४, यक्षग्रह पड़वाको ५ पितृग्रह अमावसको ६, सर्पग्रह पंचमीको ७, राक्षसग्रह रातको ८, पिशाचग्रह चौदसको ९ अदासीको लगता है और उस तिथिको अंगमें आता है इसपरसे उसको पहिचानना। उसको उसी तिथिको बलि देना. दृष्टांत जैसे आयने (दर्पण) में आदमीका प्रतिबिंब जाता है वैसा शीत शरीरमें ग्रहकी छाया आदमी पर पड़ती है. जैसे सूर्यकांति कांचपर पड़नेसे अग्नि पैदा होती है वैसे जानना।

उन्मादरोगपर उपाय।

१ वात उन्माद वालेको स्नेहपान, २ पित्त उन्मादवालेको जुलाब, ३ कफ उन्मादवालेको उलटी देना. जो दवा अपस्मार रोगपर लिखी हैं वे दवा उन्माद रोगकी करना चाहिये. कारण कि इन रोगोंका दोषचिह्न समान है, १ अच्छी वार्ता कहना, डर, दहशत दिखाना, एक जगहमें बांधके दहशत देना, डराना, सांपको दिखाके डराना, राई सिरसोंका तेल लगाके उसको कपड़ासे बांधना, उलटा सुलाना, कांचकपूरीकी शींग अंगको लगाना, लोह तपाके तेल तपाके स्पर्श करना. तपाया लोह मुँहमें डालना ऐसा डर दिखाना, सड़ी मच्छीकी दुर्गंध देना, काम, क्रोध, शोक, भय, हर्ष, ईर्षा दिखाना, भय दिखाते वक्त बांधना नहीं तो कुवाँ झाड़ पर्वत परसे नीचे गिरके मरेगा इसीवास्ते संभालना चाहिये। २ त्रिकुटा, हींग, सैंधव, बच, कुटकी, शिरस, करंजका बीज, सफेद शिरस इनको गोमूत्रमें भिगोके बत्ती भिगोके अंजन करना. उन्माद और चौथे दिनका ताप जाता है। ३ शिरस, लहसुन, हींग, सोंठ, मुलहटी, बच, कुष्ठ इनको बकरेके मूतमें घिसके नाकमें सुंघाना और अंजन करना।

उन्मादपर धूप ।

कूपाशा मोरके पर, रिंगणी, वेलपत्र, गुड़, दालचिनी, जटामांसी, बिल्लीकी विष्ठा, तुष (भूसा), वच, आदमीके केश, सांपकी केचुलि, हाथीदांत, सावरशिंग, हींग, मिर्च ये चीजें समान लेके धूप देना, इससे सब ग्रहबाधा और अपस्मार रोग जाता है ४ । पिपली पांच बीज धतूराके मिलाके घीसे देना ५ । ब्राह्मी, कोहला, बच, शंख इनको जुदे २ रसमें कुष्ठ शहद डालके देना. सब उन्माद जाता है. घीयुक्त और मांसयुक्त दशमूलका काढ़ा देना, सब उन्माद जायगा ७ । कल्याण घी देना ८ । हिंग्वाद घी देना ९ । सारस्वत घी देना १० । उन्मादगजकेसरीरस देना ११ । सूत, गन्धक, मनशिल, सबके बराबर धतूराके बीज, खरल करके वच, रास्नाके काढ़ाकी भावना चौदा देना। पीछे चूर्ण करके उसमेंसे एक मासा घीसे देना इससे जल्दी अपस्मार उन्माद नाश होता है । १२ । पर्पटीका रस बकरीके दूधमें देना, १३ । भूतभैरव रस देना १४ । रीछके केश, गीदड़ (जम्बुक) (स्याल) के केश हींगका बकरेके सूत्रमें धुवाँ देनेसे बलवान् ग्रह शान्त होते हैं १५ । देव, ऋषि, पितर, गन्धर्वके शापसे उन्माद हो उसको क्रूर कर्म न करना, वह घीपान, सूर्यका जप, देवीका पाठ करानेसे शांत होगा ॥ १६ ॥

उन्मादपर पथ्य ।

पूजा, बलि, नैवेद्य, शांति इसके निमित्त होम, मन्त्र, दान, व्रत, नियम, जप, मांगलिक काम, प्रायश्चित्त, नमस्कार और दवाका धारण, विष्णु, शंकरकी पूजा करना, सूर्यका इष्ट, मनको प्रिय चीज खिलाना, ये चीजें पथ्यकारक हैं।

उन्मादपर अपथ्य ।

मद्य, विरुद्धाशन, गरम पदार्थ, निद्रा, क्षुधा, तृषा, छींक इनका वेग नहीं रोकना, कटु, तीक्ष्ण ये चीजें तथा जो प्रकृतिको न मानें वे वर्जित हैं।

इति उन्मादरोगपर निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ अपस्मार या (मिरगी) रोगका निदान-कर्मविपाक ।

जो आदमी गुरु और स्वामीके पास रहके उससे विरुद्ध चलता है वह आदमी अपस्मार रोगी होता है ।

कर्मविपाकका परिहार ।

उसमें प्रायश्चित्त, चान्द्रायण व्रत करना, जो साधु ब्राह्मणका श्वास बन्द करता है वह अपस्मार रोगी होता है. उसमें दान, होम, ब्राह्मणभोजन कराना, शांति होगी ।

ज्योतिषका मत ।

जिनके जन्मलग्नमें और अष्टम भवनमें शनि, सूर्य, मङ्गल पड़ें वह अपस्मार रोगी होता है, जप दानसे शांति होगी।

अपस्माररोगका सामान्य लक्षण ।

अंधेरेमें गयेके माफिक होना, आंखें, फिरना, ज्ञान न रहना । यह अपस्मार रोग चार तरहका होता है । इसको फेफरा, मिरगी, धुरे, अपस्मार ऐसे कहते हैं ।

अपस्माररोगका पूर्वरूप ।

हृदय कांपना, शून्य पड़ना, चिन्ता, मूर्छा, मूढ़पना, इंद्रियां, मोह, निद्रानाश होता है १ ।

वातअपस्माररोगका लक्षण ।

कम्प होना, दांत खाना, दांतखील बैठना, मुखसे फेन, श्वास लगना, कर्कश, अरुण, कृष्णवर्ण ऐसा रूप दिखाना ।

पित्तअपस्माररोगका लक्षण ।

मुखशोष, बदन, मुख, आंख, पीले और लाल होना, पीले रूप देखना, प्यास, दाह, अग्निसे व्याप्त ऐसा होके पीले आदमी देख पड़ते हैं ।

कफअपस्माररोगका लक्षण ।

आंख सफेद, बदन सफेद होना, शरीर ठंडा होना, रोमाञ्च, जड़पना, सफेद पदार्थ देखना, दांतखील बैठना, बहुत वक्तसे शुद्धिपर आना, यह कष्टसाध्य है त्रिदोष-अपस्मारमें सब लक्षण होते हैं यह अपस्मार असाध्य है।

अपस्माररोगका असाध्य लक्षण ।

वारंवार मिरगी आना, क्षीण हुआ, शिर हलानेवाला, आंख इधर उधर फिरानेवाला असाध्य होता है, अपस्मारकी मर्यादा-अपस्मार बारा दिनसे

और पंदरा दिनसे और एक १ महीनामें आता है उसका कारण पंद्रह दिन और बारह दिन और तीस दिन कहा है । इसकी कोई शंका करेगा कि पहिले पक्ष बोलके फिर द्वादश कहा. इसका प्रमाण.-पित्तसे पंद्रह, बादीसे बारह, कफसे तीस रोज जानना चाहिये । जैसे ऋतु विना झाड़ोंको अंकुर और फल नहीं आताहै वैसे ही दोषकोप विना अपस्मार नहीं होता १ ।

अपस्माररोगपर उपाय ।

बच, किरमालाका मगज, करंज, आमला, हींग, कटोना, गोखरू इनके कल्कमें सिद्ध करके घी देना २। बचका चूर्ण, शहदसे देके दूधभात खाना. अपस्मार जाता है ३। नागरमोथाकी उत्तर बाजूकी जड़, गाय और बछड़ाका एक रंग हो उसके दूधमें पीवे तो अपस्मार जायगा ४। कोहलाके रसमें मुलहटी घिसके पीवे तो अपस्मार जायगा ५। भैरवरसायन, बच, गिलोय, त्रिकुटी, मौहेका गोंद, द्राक्षा, सेंधवलोन, रिंगणीफल, समुद्रफल, लहसुन ये सब एकत्र पीसके नाकमें सुंघाना. अपस्मार, शिरकी पीड़ा, वायु कफ ये नष्ट होते हैं और बड़बड़, तंद्रा, भ्रम, मोह, सन्निपात, कर्णरोग, अक्षिभंग, पीनस, हलीमक इन रोगोंका नाश करता है. इसका नाम भैरव रसायन है ६। स्मृतिसागर रस देना ७। ब्राह्मीके रसमें बच, कुष्ठ, शंखपुष्पी, पुराना घी डालके सिद्ध करके देना. मिरगी जायगी ८। एक भाग घीमें अठारा भाग कोहलाका रस डालके सिद्ध करके उसमें मुलहटीका चूर्ण डालके देना. मिरगी जायगी ९। राल, कंवडलीके चूर्णकी नास देना, मिरगी जायगी १०। नेगड़के रसमें अकरोड़ घिसके नास देना. मिरगी जायगी ११। श्वान, गीदड़के पित्तकी नास देना. मिरगी जायगी १२। मनशिल; रसांजन, पारवेकी विष्ठा इनका अंजन करना. मिरगी जायगी १३। रेतीमें से भोरकीड़ा दो आदित्यवारको लाके गलेमें और भुजापर बांधना. जिससे कैसी ही मिरगी हो नष्ट होती है । इसपर यंत्र है सो यंत्रअध्यायोंसे लिखके बांधना १५ ।

अपस्माररोगपर पथ्य ।

लाल शाली, मूंग, गेहूँ, पुराना घी, धमासाका पानी, दूध, ब्राह्मी, खस,

बच, पटोल, पुराना कोहला, चंदन, बथुई, अनार, शेवगा, दाख, आमला, फालसा और प्रकृतिको माने सो हितकारक है ।

अपस्माररोगपर अपथ्य ।

चिंता, रोना, भय, क्रोध, अद्भुत चीजोंका दर्शन, मद्य, मच्छी, विरुद्ध अन्न, मिरची, गरम, जड़, स्त्रीसंग, गीला साग, उड़द, अरहर, तृषा, निद्रा, भूख इनका रोकना मना है और जो तबीयतको न माने सो वर्जित करना ।

इति अपस्मार-रोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ वातरोगका निदान-कर्मविपाक ।

ब्राह्मणका धन लेनेसे और द्वेष करनेसे वातरोग होता है और गुरुद्रोहीको वातरोग होता है । उसकी निष्कृति "अच्युतानन्त गोविंद" इस मंत्रका जप तीस सहस्र (हजार) करना, इसको नाममंत्र कहते हैं । और जो इच्छा न करनेवाली पतिव्रता स्त्रीसे जबरदस्ती भोग करता है उसको संधिवात और धनुर्वात और अस्सी ८० प्रकारके बादी रोग होते हैं ।

कर्मविपाकका परिहार ।

भैंसादान करना, कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, चांद्रायण करना, सूर्यनामका जप करे, ब्राह्मणभोजन करावे, नाममंत्रका जप करे तथा विष्णुसहस्रनामका जप करनेसे शांत होगा ।

ज्योतिषका मत ।

जिसके जन्मकालसे कर्कराशिपर सूर्य और शनिकी दृष्टि हो वह आदमी चोर और चंचलदृष्टि होगा और जन्मलग्नमें शनि केतु हो तो वातपित्त-रोगी होगा और नीच जातिसे बंधनमें पड़ेगा । उसमें जप, दान करना, शांति होगी । वात जीवका आयुष्य, बलके आधार, पोषणेवाला, सर्व विश्वकी आत्मा प्रभु है । उसका कोप होनेका ८० प्रकारका वातरोग होता है ।

वातरोगका सामान्य उपाय ।

पसीना काढ़ना, स्नेह देना, शेकना, तलादिकी मालिश करना, बस्ति, नास, लेप, जुलाब, स्निग्ध, खटाई, मीठा, वातनाशक दवाइयाँ देना ।

वातरोग होनेका कारण।

रूक्ष, कठिन और लघु पदार्थ खानेसे तथा श्रम, जागना, मूत्रादि वेगोंका रोकना, कूदी मारना, जलक्रीडा, व्यायाम, चिंता, शोक, कृशता, लंघन, गिरना पड़ना ऐसे कामोंसे बादी कोप होता है।

वातरोगका पूर्वरूप।

अंगनाश, संधि, खिंचाना, हाडसंधि, स्तब्ध, रोमांच, बकना, पसली, पीठ, शिर दूखना, लंगड़ा, पांगला, कुबड़ा, सूजन, निद्रानाश, गर्भनाश, धातुनाश, कर्तव्यनाश, कंपाना, बांयटा, शिर, नाक, नेत्र, गर्दन, ठोडी टेढ़ी होना, चमक निकलना, शूल होना, आधे अंगसे हवा निकलना, लकवा होना ऐसे सब चिह्न ८० अस्सी जातिका होता है लेकिन् जिस जगहपर वात रहेगा उसका नाम मात्र जुदा कहा है।

कोष्ठगतवातका लक्षण।

मल मूत्र, हवा, कब्ज रहना, अंडवृद्धि, हृद्रोग, गुल्म, अर्श, पार्श्वशूल ये होते हैं।

अमाशयवातका लक्षण।

आमाशय, पक्वाशय, अन्नाशय, मूत्राशय, रुधिराशय, हृदय, फुफ्फुस इन सबके स्थानोंको कोठा कहते हैं।

सर्वांगवातका लक्षण।

बदन कांपना, जंभाई, सर्व संधियोंमें सूजन, दूखना, नाभिस्थानमें आमाशय वात है।

गुदस्थित वातका लक्षण।

मल मूत्र, हवाकी, कब्जियत रहना, शूल, श्वास, मूत्र खडा खर पड़ना, शर्करा पड़के, जंघा, कमर, पीठ, छाती इनमें पीड़ा होना, खिंचाना, सूजन ये लक्षण होते हैं।

आमाशयवातका लक्षण।

पीठमें शूल, पेट, हृदय, नाभि इन ठिकानोंमें पीड़ा, तृषा, डकार, दस्त,

उलटी, विषूचिका ये होना, दोनों द्वारोंसे आम पड़ना, खांसी, स्वरभंग, मोह, शोष, श्वास ये लक्षण होते हैं ५।

पक्काशयवातका लक्षण ।

अंत्रकूजन (आंतड़ी) में आवाज होना, शूल, पेट फूलना, गुड़गुड़ शब्द करना, दस्त, पेशाब, कब्ज रहना, कमर पीठ, पाँवमें दूखना ६। इंद्रियमें वात बिगड़े तो इंद्रियोंका नाश कर देता है ७। और त्वचागत वात, चमड़ी रूखी खरदरी, शून्य, काली कर देता है, ठोंचनीसी लगना, चमड़ी खिंचना, हृदयमें और मर्मपीड़ा होती है ८।

रक्तगतवातका लक्षण ।

खूनगत वातसे संताप, वेदना, विवरण, कृश, अरुचि, शरीरपर चट्टे होना, भोजनके बाद शरीर कड़ा पड़ना १०।

मांसमेदगत वातका लक्षण ।

मांस, चरबी गत वातसे शरीर जड़ होना, खिंचाना, कड़ा पड़ना, स्पर्श सहन न होना, थकना, ठोकने माफिक होना ११।

अस्थिमज्जागत वातका लक्षण ।

हाड फूटनी, संधि दुखना, मांस, बल क्षीण होना, नींदनाश, सर्वकाल ठनकना १२।

शुक्र गत वातका लक्षण ।

धातु जलदी छूटना और सूखना, गर्भ छोड़ना, बांधना, धातुविकार होता है सो जानना १३।

शिरागतवातका लक्षण ।

शूल, शरीरसंकोच, जड़पना, अंदर बाहर खंजपना, कुबड़ापना होता है १४।

स्नायुसंधिगत वातका लक्षण ।

सब शरीरमें और आधे शरीरमें वातका जोर, शिरा खींचना, लकवा होना और संधिसंकोच होना, चल होना, स्तंभ, शूल सूजन ये होते हैं१५।

प्राणवातका लक्षण।

प्राणवात पित्तगत हुआ तो उलटी और दाह करता है और कफसे मिला तो दुर्लबता, ग्लानि, तंद्रा, अरुचि करता है २०।

अपानवातका लक्षण।

पित्तसे मिला तो दाह, उष्णता, लाल पीले मूत्र नेत्र होना और कफसे मिला तो कमरसे नीचेका भाग जड़ होना, ठंडा पड़ना, गृध्रसी वातको करता है २१।

उदानवातका लक्षण।

उदानवात पित्तसे मिला तो दाह, भ्रम, करता है और कफसे मिल पसीना आना, ठंडी लगना, मंद रोमांच होता है २२।

समानवातका लक्षण।

पित्तसे मिला तो स्वेद, दाह, उष्णता, मूर्च्छा करता है और कफसे मिला तो मूत्र मल कब्ज करना, जी मचलाना, रोमांच होना २३।

व्यानवातका लक्षण।

पित्तसे मिला तो दाह, गात्रोंका चलन, करना व श्रम होता है और कफसे मिला तो शरीरको लकड़ीके माफिक कठिन करता है तथा शूल सूजन होती है २४।

आक्षेपवातका लक्षण।

हृदय, मस्तक, शंख इनमें पीड़ा, बदन धनुषके माफिक टेढ़ा करना, मूर्च्छा, कष्टसे उत्साह डालना, आंख कठिन पड़ना, तारे फटना, मुखको घुरनाके माफिक बेशुद्ध पड़ना ऐसा लक्षण होता है २५।

अपतंत्रकवातका लक्षण।

दृष्टि खिंचाके बेशुद्धता, गलेमें कफ बोलता है। यह बादी बड़ी भयंकर है, इसी प्रकार अपतानक भी बड़ा भयानक है २६।

दंडापतानकका लक्षण।

वायु कफयुक्त होके सब धमनियोंमें रहके सब शरीरको लकड़ीके माफिक कर देता है, इसका अच्छा होना कठिन है २७।

धनुर्वातका लक्षण ।

जो वात धनुषके माफिक आदमीका शरीर कर देता है उसको धन-क्या रोग कहते हैं २८। इसके सब लक्षण ऐसे हैं गोडा, अंगुलिया, पेट, हृदय, उर, गला इन ठिकानोंका वायु बेग पाके स्नायुगत होके खिंचाता है व आंख कठिन पड़के हनुवटी, खिंचके पीठकी तरफसे धनुषके माफिक खिंचाता है इसको धनुर्वात कहते हैं और अंतरायाम वायु पेटकी तरफसे शरीरको खिंचाता है, यह असाध्य है ऐसा जानना ।

वातआक्षेपकका लक्षण ।

पित्तआक्षेपक, कफआक्षेपक, चौथा दंड आदिक शस्त्रघातसे होता है, इन चारोंके लक्षण ऊपर लिखे माफिक हैं २८।

अर्धांगवातका लक्षण ।

वायु देहका आधा भाग लेके शिरा स्नायु शोषके बायें और दाहने भागको जो निष्काम करदेता है उससे आधा शरीर निष्काम हो जाता है व संधिबंधनको ठंडा कर देता है उसका आधा शरीर हलना चलना स्पर्श न समझना, ठंडा होके निष्काम हो जाता है । इसको अर्धांग पक्षाघात कहते हैं. मारवाड़ देशके लोग बाण बैगया ऐसा कहते हैं, मुसलमान लोग लकवा कहते हैं २९ ।

सर्वांगवातका लक्षण ।

जिस आदमीके सब अंगमेंसे हवा गयी हो तो उसे सर्व--अंगवात कहना, इसीको लकवा कहते हैं ।

वातका साध्यासाध्य विचार ।

जो वायु कफसे और पित्तसे मिले तो दाह, संताप, मूर्च्छा होती है और कफयुक्त हो तो शीतज्वर, जड़ता होती है और केवल वायु हो तो पक्षाघात अतिकष्टसाध्य होता है, अन्य दोषोंसे युक्त साध्य होता है, क्षयवालेका असाध्य होता है । गर्भिणी, प्रसूता, बालक, बूढ़ा, क्षीण इनका पक्षाघात वायु असाध्य है ३० ।

अर्दितवातका लक्षण।

जोरसे गाना, बोलना, कठिन चीजें खाना, हँसना, जंभाई देना, नीचे ऊपरकी जगहपर सोना ऐसे कारणोंसे वायु मस्तक, नाक, ओंठ, मुख, ललाट, नेत्र इनके संधिगत होके मुखको पीड़ा देता है. उसको अर्दित वात कहते हैं। इस वातसे आधा मुख, गर्दन, शिर, हनुवटी, ओंठ ये टेढ़ा होजाता है, शिर कांपता है, बोल अशुद्ध होता है, वदन, नेत्र, भ्रकुटीको विकृति होना जिस बाजूका अर्दित हो उस बाजूको इजा होके दांतको वेदना करती है। ऐसा वायुका रोग ८० जातिका है, उसके नाम १हनुग्रह २ मन्यास्तम्भ ३ जिह्वास्तंभ४ गृध्रसी ५विश्वाची६क्रोष्टुशीर्ष७ खञ्जी ८ पंगलापना ९ कलायखञ्ज १० वातकंटक ११ पाददाह १२ पादहर्ष १३ अशोप १४ अपबाहु १५ मूकादि १६ तूणी १७ प्रतितूणी १८ अध्मान १९ प्रतिध्मान २० वाताष्ठीला २१ प्रत्यष्ठीला २२ मूत्रावरोध २३ कम्प २४ खल्ली २५ आदिक जो वायु हैं उनका निदानादिक ग्रन्थोंमें स्पष्ट किया है। यहां ग्रन्थका विस्तार ज्यादा नहीं हो इसवास्ते सार सार निकालके निदान किया है. ज्यादा जरूर हो तो निदान देखो।

वातपर उपाय।

१ कोष्ठगत वातको दूध पिलाना। २ त्रिकटु, काला नोन, जीरा, बालहरडा, सांभरनोन, टांकणखार, सेंधवलोन, बिड़ नोन, सञ्चल, उपलसरी, रिंगणी, पाठामूल, इंद्रजव, चित्रक, जवाखार इनका चूर्ण दहीमें शहदसे छाछके पानीसे गरम पानीसे कांजीसे इनमें माफिक पड़े उस अनुपानसे देना। ३ आमाशय बादीको जुलाब, उलटी, दीपन, पाचन, मूंग, चावल, जव देना। ४ चित्रक, इंद्रजव, पाठामूल, कुटकी, अतिविष, हरड़ा इन चीजोंको षट्चूरन कहते हैं, ये सब बादीके नाशक हैं। ५ अजवाइन, हरड़ा, कचूर, पोखरमूल इनका काढ़ा देना। ६ गिलोय, देवदारु, सोंठ इनका चूर्ण देना। ७ बच, अतिविष, पिपली, बिड़नोन, इनका चूर्ण देना। ८ काढ़ेसे आमाशय पक्वाशयका वायु जाता है। ९ सोंठ, इंद्रजव, चित्रक इनका चूर्ण गरम जलसे देना। १० असगन्ध, बहेड़ा इनका चूर्ण गुड़से मिलाके गरम पानीमें देना। ११ गुदस्थित वायुको उदावर्तके उपाय करना। १२ दशमूलके काढ़ेमें और बिजौरेके

रससें एरंडका तेल डालके देना । १३ त्रिकटु, अजवाइन, सेंधवलोन इनका चूर्ण देना । १४ सरसोंका तेल लगाना, मीठा भोजन करना, जंभाईका नाश होगा ।१५ शुक्रधातुको शुक्र बढ़ानेवाली चीजें देना चाहिये । १६ संधिगत वायुको पसीना निकालना, पिंडी बांधना, तेल लगाना । १७ एरंडमूल, बेलमूल, रिंगणीमूल, विदारीमूल, काला नोन, त्रिकटु, हींग, बिजोरेकी जड़, सेंधवलोन इनका काढ़ा धनुर्वातका नाश करता है। १८ पीपलमूल, चित्रक, सोंठ, पिपली, रास्ना, सेंधवलोन, उड़द इनके कल्कसें तेल सिद्ध करना. उस तेलके लगानेसे पक्षवात जाता है ।१९ कवचके बीज, नागबला, एरंडका मूल, उड़द, सोंठ इनके काढ़ेमें सेंधवलोन डालके नाकसे पीवे तो आक्षेपकवायु, मस्तक, हनुग्रह, अर्दित, सन्धि, मन्यास्तंभ वातका नाश होगा । २० पीपल, सोंठ, चवक, चित्रक, पाठामूल, बिडंग, इंद्रजव, हींग, वच, भारंगमूल, निर्गुंडीके बीज, गजपीपल, अतिविष, शिरस, स्याह जीरा, जीरा, अजमोदा इनके चूर्णमें दुगुनी त्रिफला मिलाके समभाग गुड़ डालके अग्नितारुत देखके देना. इससे पक्षवात जायगा । २१ रालका तेल नलिका यन्त्रसे निकालके मालिश करना, पक्षवात जायगा ।२२ करडकांगनीका तेल, रोहीसाका तेल, ऊदका तेल, दालचीनीका तेल, मेणका तेल, लौंगका तेल, सरसोंका तेल, तिलका तेल, अफीमका तेल, खोपरेका तेल इन तेलोंमें धतूराके बीज, बच्छनाग ये मिलाके मालिश करे तो सब जातिकी बादीका नाश होता है. ऊपर लिखे सब तेल समभाग लेना. हमने इनकी अजमायश सैकड़ों ठिकाने किया है । २३ सोंठ पाक २८ तोला, गायका घी २८ तोलासें भून लेना. पीछे उसमें २८ तोला, एक आटा लहसुन डालके अग्निबल देखके देना. इससे पक्ष, हनुस्तंभ, कमर, जंघा, बाहु आदि सब वादी जाती है । २४ त्रिफला, निंबोलीका रस, अडूसा, पटोल इनके काढ़ेमें गुड़ डालके देना. अर्दित वात नष्ट होता है । २५ उड़दके बड़े, या मांससे खाना । २६ दशमूलके काढ़ेमें पीपल डालके देना, हनुस्तम्भ वात जायगा । २७ मुख बन्द हो तो स्निग्ध चीजोंकी मालिश करके बफारा देके खोलना चाहिये और खुला रहे तो मिटाना चाहिये । २८ दशमूल और पञ्चमूलका काढ़ा और कल्क देना. रूक्ष चीजोंसे पसीना निकालना, इससे मन्यास्तंभ वायुका नाश

होगा । २९ आकड़े या एरंडके पत्तेमें तेल या घी लगाके उससे पसीना निकालना, मन्यास्तंभ वात नष्ट होगा । ३० हलदी, वच, कुष्ठ, पीपल, सोंठ, जीरा. अजमोदा, मुलहटी, घी इनका लेह इक्कीस दिन खाय तो बहिरापना, तोतलापना, मूकपना इनका नाश करके मेघके माफिक आवाज और गंभीरपना होके कोयलकीसी आवाज होगी। ३१ लिंग बस्तिके नीचे चार अंगुलपर दाग देना. और पांवकी कनिष्टिकाको दागना । ३२बकायनके पत्तोंका कल्क देना. गृध्रशी वायु नष्ट होता है । ३३ पिपली, पीपलमूल, शुंठि मिलावेंका कल्क शहदमें देना. गृध्रसी वायु नष्ट होता है । ३४ रास्ना, गिलोय, किरमालाका मगज, देवदारु, गोखरू, एरंडका मूल, पुनर्नवा इनके काढ़ेमें सोंठका चूर्ण डालके देना. इससे पीठ कमरकी वायु जाती है. इसको लघु रास्नादि कहते हैं ।

महायोगराज गूगल ।

३५ सोंठ, पिपली, चवक, पीपलमूल, चित्रक, भुनी हींग, अजमोदा, सरसों, जीरा, स्याहजीरा, रेणुकबीज, इन्द्रजव, पाठामूल, विडंग, गजपीपल, अतिविष, भारंगमूल, वच, मोरवेल, कुटकी इन बीस २० दवाओंको शाण शाण प्रमाण लेके सबका चूर्ण करके सबसे दूना या सबके समभाग शुद्ध गूगल लेके उसकी चासनी करके उसमें मिलावे । उसीमें वंगभस्म, चांदीभस्म, नागभस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, मंडूरभस्म, रससिंदूर इन सातों भस्मोंको हरएक चार२ तोला लेके गूगलमें मिलाकेउसकी गोलियां दो मासे वा डेढ़ मासेकी बांधके रखे और अनुपानसे देना. इसको पथ्य नहीं ये सब बादी पर चलती है। यह योगराज गूगल त्रिदोषको दूर करता है। यह अस्सी प्रकारकी बादी, कोढ़, अर्श, संग्रहणी, वातरक्त, नाभिका शूल, परमा, भगंदर, उदावर्त, वायु, क्षयरोग, गुल्म, मिरगी, उदररोग, अग्निमांद्य, खांसी, श्वास, धातुगत रोग, स्त्रियोंकेरजोदर्शका रोग तथा और सब रोगोंको दूर करता है, पुरुषकी धातु बढ़ाके पुत्र देता है, बांझ स्त्रियोंको गर्भ देता है इसके देनेकी क्रिया बादीको रास्नेके काढ़ेमें, पित्तको कंकोलके काढ़ेमें, कफको आरग्वधादि काढ़ेमें, पांडुरोगको गोमूत्रमें, मेदवृद्धिको शहदमें, त्रिदोषको अदरखका रस और शहदमें, कोष्ठको कडू नींबके काढ़ेमें,

रक्त वायुको गिलोयके काढ़ेसें,शूलसूजनको पिपलीके काढ़ेसें,चूहेके विषको पांडोलीके काढ़ेसें, सर्व नेत्ररोगको त्रिफलाके काढ़ेसें,उदर रोगको पुनर्नवाके काढ़ेसें देना. इसी माफिक घी और शहदसें देना. सर्व रोग नाश होता है ।३६ षडशीति गूगल देना। ३७ विश्वांग गूगल देना । ३८ शतावर, एरंडमूल, सोंठ, दारुहलदी, कुलिंजन, सेंधवलोन, रास्ना, गिलोय इनके समभाग चूर्णसें दुगुना गूगल मिलाके गोलियां करना और प्रकृति देखके देना अमवात नाश होगा।३९ सोंठ,पीपलमूल, बिडंग,देवदारु,सेंधवलोन,रास्ना, चित्रक, अजवाइन, मिर्च, कोष्ठ, हरडा ये सब समभाग लेके चूर्ण करके दुगुना गुड़ मिलाके अग्नि ताकत देखके घीसे देना. इससे वायु, मूर्च्छा, गुल्म, शूल, कंप,गृध्रसी, वायु नाश होता है। ४०रास्ना,गिलोयका सत्त्व एरंडमूल, देवदारु, सोंठ इनका चूर्ण समभाग गूगल डालके देना. इससे वायु, शिरका रोग, नाडीव्रण, भंगदर नष्ट होता है ।

योगराज वटी ।

४१ जो योगराज गुग्गुलमें सात भस्म न डाले और बाकी दवा सब डालके गोली बांधे तो योगराज गुटी कहलाती है उसे देना ।

अमरसुंदरी गुटी ।

४२ त्रिकटु, त्रिफला, पीपलमूल,रेणुकके बीज,चित्रक,लोहभस्म, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, शुद्धपारा, गंधक, बछनाग, अक्कलकरा,मेथी समभाग,सबका दूना गुड डालके गोली बांधना.इसे देनेसे अपस्मार,सन्निपात,दमा,खांसी, अर्श अस्सी प्रकारका वायु और उन्माद इनका नाश करती है ।४३ एरंडी पाक देना, सर्व व्याधि जायगी ।

कुबेर पाक ।

४४किणगच (सागरगोटा)के बीज फोड़के रातको भिगोना. मगज निकालके पीस लेना.चौगुना घी डालके दूधमें पचाना खोवाकर लेना । उसमें दालचीनी, तमालपत्र,इलायची,नागकेशर,त्रिकुटा, जायपत्री,जायफल, लवंग, बिडंग, बड़ी सौंफ,जीरा, मोथा,नागबला, हलदी, दारुहलदी,लोहभस्म, ताम्रभस्म, वंगभस्म, ये दवाइयें दो दो तोला लेके शहदमें मिलाके पाक करके रखना इसके भक्षणसे संपूर्ण वात,अग्निमांद्य,क्षय,प्रमेह,मूत्रकृच्छ्र,

अश्मरी, गुल्म, पांडुरोग, पीनस, संग्रहणी, अतिसार, अरुचि इनका नाश करके यह मधुपक्क, कुबेरपाक कामको बढ़ाता है, धातु, कांति, पुष्टि और बलको देता है. ऊपर लिखे सागरगोटे पावसेर लेना ।

लहसन पक्क ।

४५ लहसन ६४ तोला लेके उसको १०२४ तोला दूधमें १६ तोला गायका घी डालके खोवा करना पीछे १२८ तोला मिश्री लेके चासनी करना. उसमें त्रिकटु, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर, पीपलमूल, चवक, चित्रकमूल, बिडंग, दोनों हलदी, पोखरमूल, अजवाइन, लौंग, देवदारु, पुनर्नवा, गोखरू, बड़ी सौंफ, रास्ना, शतावर, असगंध, केवाचके बीज ये सब दवाइयें एक एक तोला लेके कपड़छान चूर्ण करके चासनीमें मिलाके रखे. अग्निबलकी ताकत देखके देना. अस्सी प्रकारकी वातशूल, अपस्मार, उरक्षत, गुल्म, उदर, उलटी, प्लीहा, अंडवृद्धि, कृमि, मलबद्धता, अनंतवात, सूजन, अग्निमांद्य, बलक्षय, हिचकी, दमा, खांसी आपतंत्रक, वात, धनुर्वात, अंतरायाम, पक्षाघात, अपतानक, अपबाहु, अर्दितवात, आक्षेपक, कुब्जपना, हनुग्रह, शिरोग्रह, विश्वाची, गृध्रसी, खल्लीवात, पांगलापना, गठियावात, बहिरा पना, सर्व शूल इनका अति जल्दी नाश करता है। यह लहसनपाक वातव्याधि रूप हाथीको विदारण करनेके लिये सिंहरूपी है और कफ वातकी शांति करके पुष्टि देता है ।

बच्छनागादि लेप ।

४६ बच्छनाग, कुचलाके बीज, सांबरशींग इनका लेप गोमूत्रमें घिसके लगावे तो सूजन, ठनका इनका नाश करता है। ४७ अदरखके रसमें अजवाइनके चूर्णको डालके मालिश करना और सुँघाना। ४८ नवसागर, सेंधवलोन, कालाबोल, बच्छनाग, समुद्रफल, कुष्ठ, जमालगोटा, अफीम, नागबला इनका चूर्ण निंबूके रसमें खरल करके गरम करके लेप देना. अस्सी ८० प्रकारका वात जाता है। ४९ सौंफ, देवदारु, कुष्ठ, सेंधवलोन इनका चूर्ण आकड़ेके दूधमें घोटके लेप देनेसे अस्थिगत वात, कमर, संधिवात इनका तीन दिनमें नाश करेगा। ५० देवदारु, हींग, सोंठ, सौंफ, सेंधवलोन, बच इनका चूर्ण आकके दूधमें घोटके लेप देनेसे हड्डीगत वातका नाश करता है।

वातरोगपर रस देनेकी विधि।

५१स्वच्छंदभैरवरस रास्नाके काढ़ेमें देना।५२अभ्रकभस्म,गंधक,बच्छ-नाग, त्रिकटु, शुद्ध पारा, टांकणखार ये चीजें समभाग लेके भांगरेके रसकी सात भावना देना. इनमेंसे एक वाल अदरखके रससे शहदमें देना. इससे सर्व वात एक क्षणमें नष्ट होगा।५३ वातविध्वंस रस देना।५४वात-राक्षसरस देना। ५५ वातहारी रस देना।५६ समीरगजकेसरी रस देना। ५७ वातगजांकुश रस देना। ५८ मृतसंजीवनी रस देना। ५९ सूर्यप्रभा गुटी रस देना। ६० लघुवातविध्वंस देना।६१वह्निकुमार रस देना।६२ शुद्ध पारा, हरताल, स्वर्णमाक्षिक,लोहभस्म,गंधक,हरडा, त्रिकटु, ऐरणी, रास्ना, काकडाशिंगी, बच्छनाग, टांकणखार, ये चीजें समभाग लेके तुलसी, गोरखमुंडी इनके रसमें घोटके गोली दो वाल प्रमाण बांधना. सेंधवलोन, सोंठ और चित्रक इनके बराबर देना.वात नाश करता है।६३ शुद्ध पारा, भस्म, १ गंधक, २ वच्छनाग, ३पीपल, ४रेणुकबीज ३तोला एकत्र खरल करके एक गुंजा देना. इससे सर्व व्याधि नाश होगी। ६४ रसेंद्रचिंतामणि रस देना।६५ कालकंटक रस देना।६६ हरताल भस्म देना। ६७गंधक रसायन देना।६८ ताम्र भस्म देना।६९ वंग भस्म देना। ७० नाग भस्म देना।७१ अभ्रक देना। ७२ लोहा ये चीजें योग्य अनु-पानसे देना. सब व्याधिका नाश करता है।

तेल तथा घी बनानेकी विधि।

७३ काढ़ा, स्वरस, दूध, गोमूत्र,कल्क इसमें डालकी शास्त्रकी रीतिसे सिद्धकर लेनाव मालिश करना.यह तेलाध्यायपर है सो देख लेना।

दशमूलादिक तेल बनानेकी विधि।

७४दशमूलका काढ़ा और दूध समभाग लेके उसमें खस,मोथा,तालीस-पत्र,इलायची,चंदन,दारुहलदी,मालकांगणी, बला,मँजीठ,लाख,कुष्ठ, वच, तगर इनका कल्क तिलका तेल इकट्ठा करके सिद्ध कर लेना.यह तेल संपूर्ण बादी हटाके बल,धातु,कांति,रुचि अग्नि इनको बढ़ाता है और राजा,वृद्ध, बालक,स्त्री इनको फायदा करता है।७५लघुविषगर्भ तेल।७६महागर्भ तेल।

७७ प्रसारिणी तेल। ७८ नारायण तेल। ७९ महानारायण तेल। ८० शतवारी तेल। ८१ मापतेल। ८२विजयगर्भ तेल। ८३ चंदनादि तेल। ८४ जंबूक तेल। ८५ रास्नापुतीक तेल। ये तेल सिद्ध करके योग्य रीतसे उपयोग करना। ८६ सुगंध तेल--तगर और चंदन, केतकी, गंधिल घास, लवंग, दालचीनी, कस्तूरी, सुरू, देवदारु, इलायची, नखला, नगकेशर, कुष्ठकुलिंजन, कमलगट्टा, खश, शिलारस, मेथी, नागबला इनका काढ़ा करके समभाग दूध डालके तेल सिद्ध करना। राजा, स्त्री, पुत्र, बूढ़ा ये लोग इसीका सेवन करें। वातव्याधि नाश होगा ८७। महालक्ष्मी नारायण तेल देना.। ये तेल निघंटुरत्नाकर आदि ग्रंथोंमें लिखें हैं,देख करके उपयोग करना. यहां ग्रंथके विस्तारके सबबसे सूक्ष्मसार लिखा है। जैसी क्रिया घी सिद्ध करनेकी है वैसी ही करके उपयोगमें लाना ८८। रास्ना, पोहकरमूल, सहजना, मूल, चित्रक, सेंधवलोन, गोखरू, पिपली इनके कल्कमें घी, दूध ये सब मिलाके घी सिद्ध करके देना और असगंधके चूर्णके बराबर देना. यह शुक्रगत वातको निकालता है और शुक्रको बाढ़ता है। इसका नाम रास्नादि घी है।इसी माफिक सर्व घीकी क्रिया समझना। पंचतिक्त घी कल्याणघी सारस्वत घी ऐसे जो जो चीजोंका पहिला नाम है वही नाम होता है।

वातरोगपर पथ्य।

कुलथी, उड़द, गेहूं, लाल भात, साठीका भात, मूंग, अरहर, जव, मेथी, पटोल, सहेजन, बैंगनका साग, फल, फालसा, लहसुन, पटोल, दाडिम, बेर, दाख, ताडफल, आम, जंभेरी, नारंगी, अनाज, घी, दूध, तांबूल, नमक, जंगली मांस, स्नेहपान, स्नान, तेलमें बैठाना, मालिश करना, स्वेद, रेचन, स्निग्ध चीजें, मिश्री सालम, असगंध, घोड़ा, हाथी, पसीना, अंगमर्दन करना, दाग देना, पेंड बांधना, जमीनपर सोना, मस्तकबस्ति देना, उष्ण, संतर्पण, छाछकी निवली, गूगल, मुलहटी, लाजालू, गोखरू, धावडा निंब, एरंड, गोमूत्र, कांजी, आम्ली, उष्ण धतूराके पत्ते, निर्गुंडीके पत्ते, आकड़ेके पत्ते, मेडाशिंगके पत्ते ये चीजें वातको हितकारी हैं सो जानना।

वातरोगपर अपथ्य ।

चिंता, जागरण, मलमूत्रादिकका वेग रोकना, उलटी, श्रम, उपास, चना, मटर, लोबिया, कांग, सावो, आटा, घासके धान्य, गुलण्या करना। पानी, जामुन, सुपारी, ताडगोला, टेंडसी, तरबूज, आम, ठंडा पानी, विरुद्ध अन्न, क्षार जल, मांस, जडमांस, रक्त काढ़ना, तुरस तीक्ष्णादि, कटु रस, स्त्रीसंग, हाथी घोड़ेपर सवारी करना, अतिखारी हवा खाना, बादी करनेवाला अन्न, खराब जलका नहाना, दांत घिसना, जमीकंद, गीला साग और तबीयतको नहीं माननेवाली चीजें ये सर्व वादीरोगपर वर्ज्य हैं और जैसा देश और काल और हवा हो हकीमको लाजिम है कि उसके विचारसे वैसा पथ्यापथ्य देके रोगीका बचाव करे ।

इति वातरोगनिदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ वातरक्तका निदान-कर्मविपाक ।

जिसके जन्म लग्नसे दशम स्थानमें मंगल होके उसपर शनिकी दृष्टि हो तो वह पुरुष वातरक्त रोगी होगा।

कर्मविपाकका परिहार ।

जप और दान करनेसे समाधान हो अनेक जन्मके पापोंसे आदमीको वातरक्त होता है अतः सूर्यकी भक्ति इष्ट जप पूजासे शान्ति होगी ।

वातरक्त होनेका कारण ।

नोन, खटाई, मिरची, क्षार, स्निग्ध, उष्ण, कच्चा, खट्टी हुई रूक्ष ऐसी चीजें खाने और पीनेसे दही, कांजी, मद्यपान, क्रोध, दिनको निद्रा, रातको जगना, भोजन करके त्वरित स्त्रीसंग करना, रसायन तथा कच्चा पारादिक खानेसे आदमीका रक्त तपके बिगड़ जाता है, उसको वातरक्त कहते हैं. लोगोंमें रक्तपित्ती कहते हैं. इसमें त्रिदोष कोपता है ।

वातरक्तका पूर्वरूप ।

बहुत पसीना आना और नहीं आना, बदनमें कालापना, स्पर्श न समझना, सांदेमें ठनक, आलस, ग्लानि, शरीरमें दाफड, चट्टेसे होना, जंघा

पिंडियां, गोड़े, कमर, कंधा, हाथ, पाँव इनकी संधियोंमें सूजन, शूल, कंप, फुर फुर, जड़पना, बहिरापना, चमड़ीका रंग पलटना, दाह होना, वदनमें चट्टे होना यह पूर्वरूप है।

वातरक्तका सामान्य लक्षण।

धमनी, अंगुलियां संकुचित होके सब अंग धरता है, ठंडे पदार्थपर द्वेष रखता है।

रक्ताधिकके लक्षण।

इसमें सूजन ज्यादा पीड़ा, उसमेंसे लाल स्राव होना और सूजनमें चिमचिम वेदना होना, खुजाना पानी छूटना।

पित्ताधिकके लक्षण।

दाह, इंद्रियाँ, मनको दुःख, पसीना, मूर्च्छा तथा तृषा, स्पर्श न समझना, पीड़ा, आरक्तता, सूजन, छोटी २ और पीली फुड़िया होके गरम ज्यादा होता हैं।

कफाधिकके लक्षण।

गीलापना, जड़पना, मेहरी, चमक, भारीपना, ठंडा, खुजली आना, कम पीड़ा और स्तन पांव मूलसे होके अपेक्षा करनेसे हाथ पैरोंके ज्यादा अपेक्षासे चूहेके विषके माफिक सब वदनमें पसरता है। यह वातरक्त दो तरहका चरकने कहा है, एक उत्तान और दूसरा गंभीर जो चमड़ी मांसके आश्रित है वह उत्तान है और जो चरबी हड्डीतक ऊंडा है वह गंभीर है।

वातरक्तका असाध्य लक्षण।

घुटनेसे ऊपर चढ़ा वातरक्त असाध्य झरनेवाला, भीगा पड़ा हुआ, असाध्य, क्षयवाला और बरससे पुराना असाध्य अन्य रोगोंसे क्षीण, वृद्ध ऐसा रोगी असाध्य है।

वातरक्तका उपद्रव।

निद्रा नहीं आना, अरुचि, श्वास, मांस सड़ जाना, शिर भारी, इन्द्रिय-मोह, तृषा, ज्वर, मूर्च्छा, कंप, हिचकी, पगलापना, भ्रम, विना मेहनत श्रम,

अंगग्लानि, ठंडा, संधिपर गोला उठना, नाक और कान सूजना ऐसा रक्तपित्तीवाला रोगी असाध्य है।

वातरक्तपर उपाय।

वातरक्तको स्नेह पान देना, वारंवार रक्त काढ़ना, हाँथपांवमें दाह हो तो जोक लगाके रक्त काढ़ना, कफ ज्यादा हो तो तुमडा (शींगडा) से रक्त काढ़ना, रक्त निकालनेमें सुस्ती न करना, नहीं तो मर्म छेदन करता है १। रक्तबोलसे तैल सिद्ध करके लगाना २। कुटकी आदि योग्य चीजोंका सिद्ध किया घी देना, अभ्यंग कराना ३। जुलाब देना, वमन देना, हित करेगा ४। पुराने जव, गेहूं, सांठी-भात, जंगली पक्षीका मांसरस ये हितकारक हैं ५। अरहर, चना, मूंग, मसूर, कुलथी इनके जूसमें घी डालके देना ६। अडूसा, गिलोय, कर्मालाका मगज इनके काढ़ेमें एरंडका तेल डालके देना ७। मंजिष्ठादि काढ़ा देना, सब वातरक्त जायगा ८। मंजिष्ठ, त्रिफला, कुटकी, बच, दारुहलदी, गिलोय, निंब इनका काढ़ा वातरक्त, पावक, पालीकोढ़, रक्तमंडल इनका नाश करता है ९। अडूसा, गिलोय, कुटकी इनका काढ़ा देना १०। गिलोयके काढ़ेमें एरंड तेल डालके देना ११। वर्धमानपिप्पली देना १२। तुरवारी, हरडाका चूर्ण गुड़से देना, पथ्य करना १३। गिलोयके काढ़ेमें गुड़ डालके देना १४। सोम, मंजिष्ठ, व रालके तेलसे अभ्यंग करना १५। पांच वाल हरड़ भूनके गुड़से रोज देना १६। छुहाड़ोंका काढ़ा दोनों समय देके पथ्य दूधभात देके एकांतमें रहना, कुष्ठादिक सब रोग जायगा १७। मुंडी, कुटकी इनका चूर्ण शहद घीसे देना १८। गुडूच्यादि लेह देना १९। गिलोयके काढ़ेमें गिलोयका कल्क डालके दूध घी डालके सिद्ध करके देना, वातरक्त जावेगा २०।

असगंधपाक।

असगंध ४० तोला, सोंठ २० तोला, पिपली १० तोला, मिर्च, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, लौंग ये हरएक चार २ तोला लेके भैंसका दूध २॥ अढ़ाईसेरमें शहद सवासेर, गायका घी ५० तोला, शकर, १२० तोला इसमें दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर, पिपली, जीरा,

गिलोय, लौंग, तगर, जायफल, खस, कालाखस, चंदन, खीरनीके बीज, कमलगट्टा धनियां, धायटीके फूल, वंशलोचन, आमला, कत्था, कपूर, पुनर्नवा, असगंध, चित्रक, शतावर, सब चीजें आधा२तोला लेके वस्त्रसे छान, चूर्ण करके सबको दूधमें डालके खोवा करके पीछे शहद शक्करकी चासनी कर लेवे, उसमें मिलाके पाक करे, वह सर्व रोगको फायदा करता है २१। कैशोर गूगल देना २२। निरधुवाँकी हरताल भस्म देना. इससे अठारह जातिके कोढ़, रक्तपित्ती, सब रोगोंका नाश करता है २३। तालेश्वर रस देना २४। अमृतभल्लातक अवलेह देना २५। योगसारामृत देना २६। सर्वेश्वर रस देना २७। अर्केश्वर रस देना २८।

वातरक्तरोगपर पथ्य।

अभ्यंग, सेक, पिंड, लेप, कषायादिक पान, बस्ति, जुलाब, जोंक, शिंगडीसे रक्तमोक्ष, सौ पानीसे धोया घी लगाना, बकरीका दूध, सांठी चावल, तृण, अन्न, लालशालिका चावल, गेंहू, चना, अरहर, मूंग, मोठ, बकरी, गाय, भेंडका दूध, बथुई, करेला, चौलाई, पटोल, आमला, अदरख, सूरन, सहिंजना, शक्कर, द्राक्षा, पुराना कोहला, माखन, घी, जंगली मांस, कपूर, देवदारु और कटुरस वातरक्तपर हितकारी है।

वातरक्तरोगपर अपथ्य।

दिनका सोना, रातका जगना, अंगारका सेकना, उद्योग, धूपमें फिरना, स्त्रीसंग, उड़द, कुलथी, वाल, मटर, वातकर चवला, खार, तेल, गुड़, मच्छी, मद्य, विरुद्ध चीजें, दही, गन्ना, मूल, तांबूल, कांजी, खटाई, मिरची, तिल, उष्णभारी चीजें, चिकनाई और मनको नहीं माननेवाली चीजें वर्जित करना चाहिये।

इति वातरक्तनिदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ ऊरुस्तंभरोगका निदान।

शीत, उष्ण, द्रव्य ज्यादा गुरु स्निग्ध पदार्थ खाने पीनेसे, भोजन पर भोजन, चिंता, क्षीण, दिनका सोना, रात्रिका जगना, इन कारणोंसे कफसे वात मिलके मेदसे मिलके पित्तको खराब करता है और जंघामें आता है. वहाँका कफ शीत कर देता है, व ठंडी भारी, जड़, अचेतना रहती है उससे ठनका,

झांपड, उलटी, अरुचि, ज्वर ये होके पांव उठानेको दुःख होता है, उस रोगको ऊरुस्तंभ कहते हैं। कोई आनाहवात कहते हैं।

ऊरुस्तंभ रोगका पूर्वरूप।

नींद ज्यादा, ठनका, चिंता, मंदपना, रोमांच, अरुचि, उलटी, जंघा, गोड़ोंमें ग्लानि ऐसा पूर्वरूप होता है १।

ऊरुस्तंभरोगके लक्षण।

कोई वात जानके स्नेहपान चिकित्सा करे तो ज्यादा होना, उससे पावमें ग्लानि, मेहरी भारी, मल, मूत्र बारंवार बंद होना, पांवमें एकसा ठनका रहना, ठंडी चीजोंका स्पर्श न समझना और दुखना।

ऊरुस्तंभका असाध्य लक्षण।

दाह, शूल, तोद, ठनका कफयुक्त होके बेताकत हो सो असाध्य है।

ऊरुस्तंभ रोगपर उपाय।

१ रूक्ष और कफनाशक चीजोंका उपाय करना, वातहर दवा देना। २ पुराना सांवा, हर्डा, चावल, जंगली मांसरस देना। ३ बहते और भरे पानीमें चलाना। ४ भिलावाँ, पिपली, पीपलमूल इनके काढ़ेमें शहद डालके देना, ऊरुस्तंभ रोगका नाश होता है।५ पीपलमूल, धामन, पिपला इनका काढ़ा देना।६ भिलावाँ, गिलोय, सोंठ, देवदारु, हर्डा, पुनर्नवा, दशमूल इनका काढ़ा देना।७ निर्गुंडीके कांढ़ेमें पीपलका चूर्ण डालके देना। ८ त्रिफला, चवक, कुटकी, पिपलामूल इनका चूर्ण शहदमें देना। ९ त्रिफला, त्रिकटु, पिपलामूल इनका चूर्ण शहदसे देना।१० दशमूलके काढ़ेमें शिलाजीत, गूगल, पिपली और सोंठका चूर्ण डालके देना।११ वर्धमान पिप्पली गुड़से और शहदसे देना।१२ त्रिफलादि गूगल देना। १३ गुंजगर्भ रस देना १४। लहसन योग देना।

ऊरुस्तंभरोगपर पथ्य।

सर्व रूक्ष चीजें देना, पसीना, लाल शालीका चावल, सत्तू, कुलथी, सांवा, सहँजना, करेला, पटोल, बथुई, गर्म जल, घीरहित जंगली मांस, विना नोनके साग ये पथ्य हैं।

ऊरुस्तंभरोगपर अपथ्य ।

जड़, ठंडा, पतला, स्निग्ध, विरुद्ध, प्रकृतीको न मानें वे चीजें, स्नेह, उलटी, रक्तमोक्ष ये चीजें मना हैं ।

आमवातका निदान-कर्मविपाक ।

अग्निके अंदर जो कभी विधिहोम नहीं करता है वह आदमी आमवात रोगी होता है ।

कर्मविपाकका परिहार ।

दश हजार गायत्रीमंत्रका जप करना, तिल,घीका होम, सोनादान करना; समाधान होगा ।

ज्योतिषका मत ।

आठवें स्थानपर गुरु हो तो आमवात होगा वा जन्म स्थानसे आठवेंमें हो तो भी होगा ।

ज्योतिषमतका परिहार ।

बृहस्पतिका जप दान करना समाधान होगा. होम करना, ब्राह्मण-भोजन कराना ।

आमवात होनेका कारण ।

विरुद्ध आहार, विहार, मंदअग्नि, व्यायाम न करना, स्निग्ध, खार, मटर आदि मधुमेहसे वातादि दोष कोपके कफस्थानपर जाके धमनी शिरामें घुसके बिगाड़ करते हैं और शिरा खेंच लेते हैं उस रोगको आमवात कहते हैं ।

आमवातका सामान्य लक्षण ।

शरीर मोड़के आना, अन्नद्वेष, तृषा, आलस्य, जड़पना, अन्न न पचना, सूजन ये सामान्य लक्षण हैं ।

आमवातका अधिक लक्षण ।

हाथ, पाँव, मस्तक, घोड़े, त्रिक, जंघा इनके संधियोंमें पीड़ा, सूजन करता है और जिस ठिकानेपर वह आमवात जाता है उस २ ठिकानेपर

बिच्छूकासा ठनका मारता है इस रोगसे अग्नि मंद, मुखको पानी, अन्नद्वेष, जड़पना, मनउत्साह कम, मुख फीका, दाह, पेशाब ज्यादा, कोखोंमें कठिनपना शूल, दिनको निद्रा, रातको जगना, तृषा, उलटी, श्रम, मूर्च्छा, छातीमें पीड़ा, मंदबुद्धि, कोठा कब्ज, जड़पना, आंतडीमें आवाज होना, पेट फूलना, संधिमें पीड़ा, खंजा, पागलपना इतने लक्षण होते हैं ।

आमवातका दोषयुक्त लक्षण ।

पित्तसे दाहयुक्त आरक्त होता है और वातसे युक्त शूल करता है और कफसे युक्त गीलापना, जड़ता, खाज आना, सो दोषयुक्त लक्षण समझना ।

आमवातका असाध्य लक्षण ।

एक दोषी साध्य, दो दोषी याप्य और त्रिदोषी असाध्य और सारे शरीरमें सूजन हो सो असाध्य है १ ।

आमवातपर उपाय ।

लंघन, पसीना, कडू, दीपन, तीखे पदार्थ, रेचन, स्नेहपान, बस्ति, रेतीका सेक, पिंडी बांधना, ये सामान्य उपाय करना १। रास्ना, देवदारु, किरमालेका मगज, त्रिकटु, एरंड़का मूल, पुनर्नवा, गिलोय इनके काढ़ेमें सोंठका कल्क डालके देना. असवात नाश होगा २ । रास्ना, गिलोय, किरमालेका मगज, देवदारु, दशमूल, इंद्रजव इनके काढ़ेमें एरंडका तेल डालके देना ३ । सोंठ, गिलोयका काढ़ा बहुत दिन लेना. आमवातनाश होता है ४ । रास्ना, शतावर, अडूसा, गिलोय, अतिविष, हरड, सोंठ, धमासा, एरंडका मूल, देवदारु, बच, मोथा इनका काढ़ा देनेसे कमर, जंघा, ठोडी, पिंडया, गोडा इन ठिकानोंका आमवात नष्ट होगा ५ ।

महारास्नादि काढ़ा ।

रास्ना सब दवाइयोंसे दूनी लेनी; धमासा, नागबला (चिकना) मूल, एरंडमूल, देवदारु, कचूर, बच, अडूसा, सोंठ, बालहरड़, चवक, नागरमोथा, पुनर्नवा, गिलोय, बिधारा (लिंग्रकी जड़) बड़ीसौंफ, गोखरू, असगंध, अतिविष, किरमालेका मगज, शतावर, पिपली, कोलिस्ता, धनियाँ, रिंगणी,

मोतारिंगणी इन छब्बीस दवाइयोंका काढ़ा करके उसमें सोंठका चूर्ण और योगराजगुग्गुल डालके देना. यह सर्व वातरोग, आमवात, पक्षघात, अर्दितवात, कम्प, कुब्जता, संधि, जंघा, गृध्रसी, हनुग्रह, ऊरुस्तंभ, वातरक्त, विश्वाची, जम्बूक, शिर, सीपा, हृदयरोग, अर्श, योनिरोग, शुक्ररोग, मेदगत वात, बांझपन इनके वास्ते उत्तम है ऐसा महारास्नादि काढ़ा ब्रह्मानीने कहा है ६। अजमोदा, विडंग, सेंधवलोन, देवदारु, चित्रकमूल, पीपलमूल, बड़ी सौंफ, पिपली, मिर्च समभाग लेके चौथा भाग बालहरड़ा और सोंठ मिलाके चूर्ण गरम पानीसे देना. सर्वरोग आमवात नाश होगा ७।

पञ्चकोल चूर्ण।

त्रिकटु, चवक, चित्रक इनको पञ्चकोल कहते हैं। इनका चूर्ण गरम पानीसे देना ८।

पञ्चसम चूर्ण।

सोंठ, हरड़ा, पिपली, निशोथ, काला नोन इनका चूर्ण देना ९। सिंहनाद गुगल देना, आमवात जायगा १०।

श्लोक–आमवातगजेंद्रस्य, शरीरवनचारिणः।
एक एवाग्रणी हंता, एरंडस्नेहकेसरी॥

अर्थ–आमवात मत्तगज है, उसके रहनेका जंगल शरीर है, उसका नाश करनेवाला एक एरंडका तेल है वही केसरी है ११।

शुद्धपारदभस्म योग।

शुद्धपारद एक भाग और कथील दो भाग, एकत्र खपरेमें डालके चूल्हेपर रखके नीमकी लकड़ीसे १२ पहर घोटना, आंच देना, इससे आमवात जाता है १२।

आमवातविध्वंस रस।

शुद्ध पारद ४ भाग, गन्धक १ भाग, १६ वां भाग बच्छनाग लेके चित्रकके काढ़ेमें खरल करना. इसीको आमवातविध्वंस रस कहते हैं यह देना १३। उदयभास्कर रस देना १४। लहसनका रस १ तोलामें

गायका घी समभाग मिलाके देना. इससे जैसे अग्नि कपासको जलाती है वैसे आमवात नाश होगा १५ । लहसनका आसव देना १६ ।

सोंठ-घी-पाक ।

सोंठका चूर्ण और दूधसे घी सिद्ध करके देना. पुष्टि करता है १७। दहीके साथ सोंठका चूर्ण घी, विण्मूत्रप्रतिबन्धका नाश करता है १८। कांजीके साथ आमवातका नाश करता है १९ ।

मेथीपाक ।

३२ तोला मेथी, ३२ तोला सोंठका चूर्ण कपड़छान करके उसको २५६ तोला दूधमें ३२ तोला घी डालके पचावे खोवा करके उतार ले, उसमें दवा इस मुजब मिलावे त्रिकटु, पीपलमूल, चित्रक, अजवाइन, जीरा, धनियां, कंकोल, कलौंजी, जीरा, बड़ी सौंफ, जायफल, कचूर, दालचीनी, तमालपत्र, नागरमोथा सब चार २ तोला, सोंठ छः तोला, मिर्च छः तोला इनका चूर्ण कपड़छान करके सबको उसमें २५६ तोला शकरकी चासनी करके सब चीजें मिलावे. इसको मेथीपाक कहते हैं। सो हमेशा ५ तोला खावे। इससे आमवात, सर्व वात, विषमज्वर, पांडुरोग, पीलिया रोग, उन्माद, मिरगी, प्रमेह, वातरक्त, अम्लपित्त, शिरोरोग, नासारोग, नेत्ररोग, प्रदर, सुवारोग ये नष्टहो बल, पुष्टि, वीर्य बढ़ता है २०।

सौभाग्यसोंठ।

सोंठ ३२ तोला, घी ८० तोला, गायका दूध १०८ तोला, शकर २०० तोला उसमें त्रिकटु, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, हरएक चार २ तोला डालके विधिसे युक्त पाक करना। इसको सोंठ-रसायन कहते हैं, इसके देनेसे आमवात नाश होके कांति, धातु, बल, आयुष्य बढ़ती है, यह बलीपलित रोगका नाश करके बांझको गर्भ देता है २१ ।

सोंठपुटपाक ।

सोंठको एरंडके जड़के रसमें बांटके पुटपाकसे तैयार करके उसका रस काढ़ लेना. उसमें शहद डालके देना. इससे आमवातनाश होगा।

आमवातपर पथ्य।

रुक्ष, स्वेद, लंघन, स्नेहपान, बस्ती, लेप, रेचन, पुराना चावल, कुलथी, पुराना मद्य, जंगली मांसरस, करेले, बैंगन, सहँजना, गरम पानी, मिरची, वातहारक पदार्थ ये चीजें हितकारी हैं।

आमवातपर अपथ्य।

दही, मच्छी, गुड़, दूध, उड़द, खराब पानी, पूर्व दिशाकी हवा, विरुद्ध पदार्थ खाना पीना और तबीयतको नहीं माननेवाली चीजें, मलमूत्रका वेग रोकना, जागना, विषमाशन, जड़, वातल चीजें, खटाई, ठंडी चीजें इन्हें वर्ज्य करना चाहिये॥ इति आमवातनिदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ शूलरोगका निदान-कर्मविपाक।

जो ब्राह्मण शूद्र दुर्वृत्तका अन्न खाता है उसके अजीर्ण शूल रोग होता है और विश्वासघातसे जहर खिलाता है उसको शूलरोग होता है और ब्राह्मण गाय इनका त्याग करता है वह शूल रोगी होता है।

कर्मविपाकका परिहार।

उसमें चांद्रायण, कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र प्रायश्चित्त करना, दान पूजा करना. शांति होगी।

ज्योतिषका मत।

जन्मस्थान से अष्टम स्थानमें चंद्रमा होके उसपर मंगलकी दृष्टि पूर्ण हो और सूर्यकी दशा वा शुक्रकी अंतरदशामें जन्म हो तो पंगु, निर्बल, अनर्थोत्पादक (दुष्ट), प्रिय, रूक्ष, शिरोरोगी, गलरोगी, कुष्ठरोगी, ज्वर युक्त शूलरोगी, देश त्यागी होता है। परिहार-चंद्र मंगलका जप, दान करना।

शूलरोग होनेका कारण।

अति व्यायाम, मैथुन, जागरण, ठंडा पानी, मटर, लाख, विरुद्ध अन्न, रूक्ष, लड्डू, घेवर, दूध, मच्छी, खान, पान मलादिक वेगोंका रोकना, फिकर, शोक, उपास, बोलना, हँसना ऐसे अनेक कारणोंसे वातादिक दोष कुपित होके शूलको पैदा करते हैं वह शूल छः प्रकारकी है १ वात २ पित्त ३ कफ ४ द्वंद्वज ५ आमसे ६ सन्निपातसे ऐसे छः प्रकारका है, उसके स्थान हृदय,

पीठ, पार्श्व, कमर, बस्ती, पेट, नाभि और मस्तक, कान ऐसे अनेक जगहपर शूल होती है ।

सब शूलका सामान्य लक्षण ।

शूलकी उत्पत्ति ऐसी है कि, पूर्व ही मदनके नाश करनेको शिवजीने त्रिशूल फेंका तो वह त्रिशूल मदन पर आनेसे मदन विष्णुके हुंकारमें घुसा तब वह शूल पृथ्वीपर गिरा, वही प्राणी मात्रको पीड़ा करता है । उसकी पीड़ा त्रिशूल मारनेके माफिक होती है इस वास्ते शूल नाम दिया है । वह शूल भूखके वक्त तथा ऋतु बदलनेके वक्त होता है ।

पित्तशूलके लक्षण ।

पित्त कोपनेके आहार विहारसे पित्तशूल होता है; उसमें तृषा, मोह, दाह, पसीना, मूर्छा, भ्रम, शोष ऐसा लक्षण होके दोपहर और आधी-रातके वक्त, विदाही काल, शरदऋतुमें ज्यादा होके पित्तके शमनसमयमें इसका शमन होता है

कफशूलके लक्षण ।

कफ करनेवाले आहार, विहारसे कफशूल होता है; उसमें मलमल, खांसी, ग्लानि, अरुचि, मुखको पानी, कोठेमें भारीपना, मस्तक जड़ होके खानेके बाद फजिरके वक्त शिशर वसंत ऋतुमें ज्यादा होता है ४ ।

वातशूलके लक्षण ।

पेट स्तब्ध, मलमल, उलटी, जड़पना मंदपना, पेट फूलना, मुखसे लार पड़ना ये कफशूलके लक्षण होते हैं । वातप्रकोपके कारणोंसे होता है, भूख लगनेके वक्त, वर्षा ऋतुमें ठंडे वक्तपर विषम वेग ये वातशूलके लक्षण हैं । दो दोषोंके कारण और लक्षणोंसे जो शूल होता है उसे द्वंद्वज शूल समझना चाहिये और सब लक्षणोंसे युक्तको सन्निपातशूल समझना चाहिये. आहार पचनेके बाद जो शूल होता है उसे परिणामशूल समझना चाहिये ।

परिणामशूल वातमिश्रित ।

उदर पूर्ण, गड़गड़ शब्द, मल मूत्रका कब्जपना, अस्वस्थपना, कफसे युक्त स्निग्ध उष्ण पदार्थसे समाधान ये लक्षण वातपरिणामशूलके हैं ।

पित्तपरिणामशूल।

तृषा, दाह, अस्वस्थपना, पसीना, पित्तल पदार्थसे ज्यादा और ठंढ स्निग्ध, पदार्थसे शमन होता है।

कफपरिणामशूल।

उलटी, मलमल, मोह, सुस्ती, आलस्य, मंद पीड़ा, जड़, भारीपना, शूल बहुत दिन रहना, कटु और तीक्ष्ण चीजोंसे समाधान रहना, दो दो लक्षणोंसे द्वंद्वज और सब लक्षणोंसे सन्निपातज जानना।

शूलरोगका असाध्य लक्षण।

एकदोषी शूल साध्य, दोदोषी कष्टसाध्य, सन्निपातिक असाध्य समझना१९

शूलरोगका उपाय।

वातशूलपर स्नेहपान, पसीना, खीर, खिचडी, स्निग्ध, वातनाश करनेवाली चीजें साठीभात वगैरह वातनाशक देना १। एरंड तेलसे युक्त कुलथीके मंडमें त्रिकटुका चूर्ण सेंधवलोन डालके देना २। लवापक्षीका मांस, हींग, कालानोन, अनार इन चीजोंका जूस देना ३। पक्षीका मांस न मिले तो उसके बदले उड़द डालना ४। दशमूलके काढ़ेमें हींग, कालानोन डालके देना, वातशूलनाश होगा ५। एरंडमूलके काढ़ेमें हींग, कालानोन डालके देना ६। बिजोरेके रसमें सेंधव डालके देना ७। हरडा, अतिविष, हींग, काला नोन, बच, इंद्रजव इनका चूर्ण गरम पानीसे देना ८। काला नोन, खट्टा अनार, बिडनोन, सेंधवलोन, अतिविष, त्रिकटु इनके चूर्णको बिजोरेके रसकी भावना तीन दफे देके देना ९। मदारके जड़का चूर्ण दूधसे देना १०। पांचो नोनको अदरखके रसमें पंद्रह दिन पचाना पीछे उसकी गोली देना. इसीका नाम अग्निमुख रस है ११। साबरके शींगकी भस्म तीन मासा घीसे देना. सब शूलोंका नाश करती है १२। अग्निमुख रस देना १३। उदयभास्कर रस देना १४। गेलफल कांजीमें घिसके नाभिपर लेप करना. शूलनाश होगा १५। राई, सहँजनेकी छालको गाईकी छाछमें पीसके लेप देना १६। मट्टी पानीमें डालके काढा करके कपड़ेमें पोटली बांधके उससे सेकना १७। हींग, सेंधवलोन, तेल इनको गोमूत्रमें पकाके लेप देना १८।

पित्तशूलपर उपाय ।

१ पित्तशूलवालेको पानीमें बैठाना और पानीसे कटोरा भरके शूल-पर रखे वह कटोरा कांसेका हो। २ गुलाबकी कली,बालहरडा, सोनामुखीका चूर्ण गरम पानीसे देना। ३ शतावर, मुलहटी, नागबला, दूवाकी जड़,गुखरू इनका काढ़ा ठंडा करके शहद डालके देना । ४मेथी, कुशल गवत (शूलवाला) का कांटा, बबुलके कांटे, अजवाइन इनके काढ़ेमें पुराना गुड डालके देना । ५ त्रिफला किरमालेकी गिरी इनका काढ़ा देना । ६ कफशूलपर एरंडके आठ तोलाके काढ़ेमें जवाखार डालके देना । ७ बिजोराके रसमें गुड डालके देना । ८ सर्वांगसुन्दर रस देना । ९ राई, त्रिफलाका चूर्ण शहद घीसे देना । १० त्रिफले के काढ़ेमें लोहभस्म डालके देनेसे द्वंद्वज और त्रिदोषज शूल जाता है। ११ शतावरके अंगरसमें शहद डालके देना । १२ त्रिकटु, पीपलमूल, विडंग, चवक, चित्रक, दालचीनी, अजवाइन, अजमोदा, जीरा, सौंफ, जवाखार, टांकनखार, सेंधवलोन, कालानोन इनका चूर्ण करके अदरखके रसकी बिजोराके रसमें तीन तीन भावना देना. गोली बेर बराबर बांधना. एक गोली शाम सबेरे देना. सब शूल जाते हैं। १३ हींग, बहेडा, सोंठ, सागरगोटेके बीज ये सब चीजें भागवृद्धिसे लेके चूर्ण करना, इस चूर्णको हिंग्वादिक कहते हैं यह चूर्ण गरम पानीसे देना।१४ अजीर्णाध्यायमें लिखी शंखवटी देना।

त्रिदोषशूलपर सूर्यप्रभावटी ।

त्रिकुटी, पीपलमूल, बच, हींग, जीरा, स्याह जीरा, बच्छनाग इन सबको समभाग लेके चूर्ण करके उस चूर्णको निंबूके रसमें और अदरखके रसमें घोटना; गोली दो वालकी बांधना, प्रातःकाल गरम पानीसे लेना, आठ प्रकारके शूलोंका नाश करती है १५ ।

शंखभस्म ।

करंजका बीज, हींग, त्रिकटु, सेंधवलोन इनका समभाग चूर्ण करके गरम पानीसे देना, सब शूलोंका नाश करता है१६ ।

हरीतकी गुटी ।

हरडा, त्रिकटु, कुचलेका बीज, गंधक, हींग, सेंधवलोन ये चीजें

समभाग लेके चूर्ण करके गोली बनाके प्रातःसमय देना. इससे जन्मकी शूल, संग्रहणी, अतिसार, अजीर्ण, अग्निमांद्य इन रोगोंका नाश होता है, इसे गरम पानीसे देना. रोगीका शक्तिबल देखके १७। हर्डा, गोमूत्रमें पचाके चूर्ण करके उसमें लोहासार डालके देना सम्पूर्ण शूल शांत होंगे १८। गन्धकरसायन देना १९। शूलकुठार रस देना २०। अग्निकुमार रस देना २१। क्षारताम्र रस देना २२। सोमनाथी ताम्र देना २३। महाशूल रस देना २४। गजकेसरी रस देना २५। त्रिनेत्ररस देना २६। शूलगजकेसरी रस देना २७। त्रिपुरभैरव रस देना २८। दावानल रस देना २९। तारमण्डूर रस देना ३०। इच्छाभेदी रस देना ३१। वज्रक्षार रस देना ३२। शंखभस्म ३३। ये चीजें योग्य अनुपानसे देना. इनसे सर्व शूल नष्ट होके बल, पुष्टि होती है।

शूलरोगपर पथ्य।

उलटी, रेचन, पसीना, लंघन, बस्ति, निद्रा, पुराना चावल, एरंड, गर्म दूध, जंगली मांसरस, परवल, सहँजना, करेला, क्षार, बथुई, हींग, सोंठ, बिडंग, बड़ी सौंफ, लहसन, लौंग, एरंडी, निंबू, अदरख, क्षाररस और जो तबीयतको मानें वे सब रस देना।

शूलरोगपर अपथ्य।

विरुद्ध अन्न, जागना, विषम उपाय, रूक्ष, तुरस, मटर, शीत, भारी चीजें, उद्योग, मैथुन, मद्य, दालि, मिर्चा, मल आदिका वेग रोकना, शोक, क्रोध और जो चीज तबीयतको न माने वे चीजें वर्ज्य हैं। उन्हें नहीं करना।

इति शूलरोग–निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ उदावर्तरोगका निदान–कर्मविपाक।

जो आदमी ब्राह्मण देव इनका द्रव्य हरण करेगा वह उदावर्त रोगी होगा। परिहार–दान पूजा करके लीहुई चीज पीछे देना. शांत होगा।

ज्योतिषका मत।

जन्मलग्नमें पापग्रह पड़के सप्तम स्थानमें शनि हो तो श्वास, क्षय, विद्रधि, गुल्म ये रोग होते हैं। जप, होम, दान करना, समाधान होगा।

उदावर्तरोग होनेका कारण ।

१ वायु २ मल ३ मूत्र ४ जंभाई ५ आंसू ६ छींक ७ डकार ८ उलटी ९ काम १० भूख ११ प्यास १२ उत्साह १३ नींद इन तेरा वेगोंको रोकनेसे उदावर्तरोग पैदा होता है और इन १३ के सिवाय क्रोध, लोभ, मन, मोह, मद, मत्सर आदिको रोकनेसे रोग नहीं होगा. फायदा होगा. कारण ये सब मनके वेगसे होते हैं । १ वायु रोकनेसे मल मूत्र बंद होना, पेट फूलना, शूल, अर्श, गुल्म होता है । २ दस्तसे गुड़गुड़ शब्द, शूल, गुदामें पीड़ा, कब्जता, ऊर्ध्ववात, डकार, मुख दुर्गंध, डकार ऊर्ध्व, मलादिककी दुर्गंध आना । ३ मूत्र रोकनेसे वस्ति, मूत्राशय, शिश्न इन ठिकानोंमें शूल, पेशाब गर्म, मस्तकमें शूल, गात्र चलन, अण्डसन्धि धरना, दूखना । ४ जंभाई रोकनेसे गर्दनकी शिरा, गला कठिन होना, वातशिरा कफ नेत्रविकार, नासारोग, मुखरोग, कर्णरोग ये होते हैं । ५ आंसू रोकनेसे हर्ष और शोकमें रोना आता है । उस समयमें आंसू रोकनेसे शिर भारी, नेत्ररोग, जुखाम होता है । ६ छींक रोकनेसे गर्दन खिंचना, शिर दुखना, आधा मुख टेढ़ा होना, आधाशीशी, सर्व इंद्रियां दुर्बल होना । ७ डकार रोकनेसे कण्ठ मुख भारीसा मालूम होना । टोंचनी लगना, अव्यक्त बोलना, उबकाई आना, उत्साह बंद होना, हिचकी (हिक्का) रोग होना । ८ उलटी रोकनेसे बदनमें खाज होना, दाफड होना, अरुचि, दाह, कोढ़, मुखमें काला दाग, सूजन, पांडुरोग, ज्वर, मलमल, विसर्प रोग होता है । ९ शुक्र रोकनेसे मूत्राशयमें सूजन, शूल, मूत्रबन्ध, मूत्र खड़ा, पथरी, धातु गिरना, पर्मा ऐसे बहुत रोग होते हैं । १० भूख रोकनेसे तन्द्रा, आलस्य, मोह, सुस्ती, अरुचि, श्रम, दृष्टि मन्द होती है । ११ तृषा, गला, मुख सूखना, बहरापना, हृदयपीड़ा होती है । १२ श्रम रोकनेसे थका, अंधेरी, हृदयरोग, मूर्च्छा, गुल्म ये होता है । १३ नींद रोकनेसे जंभाई, अंग भारी, नेत्र भारी, शिर भारी, शोष, तन्द्रा, बदहजमी और दाह होता है । तेरा वेग रोकनेसे ऊपर लिखे माफिक रोग होते हैं. और हरएक रोगके कारणोंमें जो वेगोंका रोध कहा है सो यही है ।

रूक्ष और तीक्ष्ण, तुरट, कडू ऐसे भोजनसे और १३ वेगोंको रोकनेसे छेद, शिरोंके मुख, बंद होके उदावर्त रोग होता है. उससे हृदय, बस्ति,

इनमें शूल, मलमल, अस्वस्थपना, मलमूत्र, वात इनकी कब्जी, श्वास, खांसी, जुखाम, दाह, मोह, तृषा, ज्वर, उलटी, हिचकी, शिरोरोग, भ्रम, मंद, शून्य वात, कोपादिक यह सब उदावर्तसे होता है।

उदावर्त रोगोंका उपाय।

वायुनिरोधपर स्नेहपान देना, पसीना काढ़ना, बस्ति देना, अनुलोमक दवाइयाँ देना १। दस्तनिरोधपर जुलाब, स्निग्ध बस्ति, पसीना काढ़ना २। मूत्रनिरोधपर दूध पानी मिलाके देना ३। भोईरिंगनीका रस देना ४। अर्जुनवृक्षका काढ़ा देना ५। काकड़ीके बीज पानीमें पीसके उसमें सेंधवलोन डालके पिलाना ६। द्राक्षाका रस पीना और मूत्रकृच्छ्रका इलाज करना ७। जंभाईनिरोधपर पसीना, स्नेहपान देना ८। आंसूनिरोधपर अंजनादिकसे नेत्रमेंसे पानी काढ़ना, निद्रा लेना, अच्छी बातें करना, छींक लेना, तीक्ष्ण नास सुवास देना, पसीना, स्नेहपान देना ९। उलटीनिरोधमें उलटी देना, लंघन, जुलाब देना, तेलअभ्यंग, बस्ती शुद्ध करना, सिद्ध किया दूध देना १०। शुक्रनिरोधसे उष्ण, स्निग्ध, लघु, रुचिकर ऐसी चीजें देना. फूल अत्तर आदिकी सुगंध देना ११। तृषारोधपर ठंडा, शीत पदार्थ देना, खसका पानी पिलाना, कपूरका पानी देना १२। थकावटमें विश्रांति, सुख, मांस चावलका भोजन देना १३। नींदनिरोधमें शकर दूध पीना, उत्तम शय्या पर सोना, प्रिय बातें सुनाना १४। लहसुन, मद्य मिलाके फजिरको पीना इससे गुल्म उदावर्त जायगा १५। धमासोंका स्वरस देना १६। केशरका काढ़ा और काकड़ीके बीजका शर्बत वात उदावर्तका नाश करता है १७। मुनक्काका काढ़ा देना १८। आमलाका काढ़ा और स्वरसमें शहद डालके देना १९। देवदारु, मोथा, मोरवेल, हलदी, मुलहटी इनका चूर्ण १ तोला बरसातके ताजे पानीसे देना २०। त्रिकटु, पीपलमूल, निशोथ, दंतीमूल, चित्रक इनका चूर्ण पुराने गुडके साथ देना. इसको गुडाष्टक कहते हैं २१। उदावर्तको लघु पाचक अन्न देना और उदावर्त रोगका लक्षण जो२रोगमें है उस निदानको देखके उपाय करना. इससे फायदा होगा २२।

उदावर्तरोगपर पथ्य ।

स्नेह, स्वेद, रेचन, बस्ति, अभ्यंग, जंगली मांसरस, एरंडका तेल, मद्य, कोहला, मूला, किरमाला, तमालपत्र, बिजोरा, अदरख, जवाखार, हरडा, वातनाशक चीजें, शुक्ल तरुण स्त्री आदि ऊपर लिखे प्रमाणे हितकारक है सो जानना ।

उदावर्तरोगपर अपथ्य ।

उलटी मल मूत्रोंका रोकना, दालकी चीजें, हरडा, कमलकंद, जामुन, काकडी, पेंड, वातल, कब्ज करनेवाली चीजें, विरुद्ध, तुरस, जड़ अन्न ये मना हैं सो वर्जित करना । इति उदावर्तरोग-निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ गुल्मरोगका निदान-कर्मविपाक ।

अपने गुरुसे याचना करे वह गुल्मरोगी होता है । परिहार-एक महीना व्रत करना, प्रायश्चित्त करना, शांत होता है ।

गुल्मरोग होनेका कारण ।

मिथ्या आहार, विहार करनेसे, वातादिक दोष कुपित होके पांच तरहका गुल्म पैदा करते हैं. उसकी जगह-दोनों कोखें, हृदय, नाभि, बस्ति इन जगहों पर गोलारूपसे होता है. उसकी दो तरह हैं एक चल और दूसरा अचल । जो घूमता हुआ कम ज्यादा होता है सो चल और एक जगहपर कायम रहे वह अचल । उसमें वातादि दोषसे तीन और सन्निपातसे एक सब चार तरहके गुल्म पुरुषको होते हैं और रक्तगुल्म पुरुषको नहीं होता, स्त्रीको होता है, उसका रजोदर्शन सूखके उससे होता है ।

गुल्मरोग होनेका पूर्वरूप ।

डकार, दस्त रूक्ष, अन्नद्वेष, अपच, पेटमें गुड़गुड़ शब्द, शूल, पेट फूलना, खींचना, अग्निमंद इन लक्षणोंसे गुल्मका पूर्वरूप समझना ।

गुल्मरोगका सामान्य लक्षण ।

अरुचि, कब्जी, पेटमें आवाज, बफारा, श्वास ये सामान्य लक्षण सर्व गुल्ममें होते हैं ।

वातगुल्मके लक्षण ।

वातगुल्म कभी छोटा, कभी बड़ा, कभी नाभि, कभी बस्ति व कोखमें

और पार्श्वमें गोलासा फिरता है,लंबा गोला दीखे,पीड़ा कम ज्यादा,अनेक जातिकी पीड़ा, मलमूत्र कब्ज, गला,ओंठ,मुख शोष, शरीरका रंग पीला, लाल,हृदय, कोख, पीठ, कांधा,नेत्र दुखना, भूखमें ज्यादा पीड़ा, खानेसे शमन होना, रूक्ष, तुरस, खट्टा, तीक्ष्ण, राई ऐसी चीजोंसे कम होना. ये लक्षण वातगुल्मके हैं।

पित्तगुल्मके लक्षण।

पित्तगुल्ममें ज्वर, तृषा, मुख बदनमें लाली, अन्न पचनेके समय शूल होना, पसीना, छातीमें दाह, जड़, गोलेका स्पर्श सहन न होना ऐसा लक्षण पित्तगुल्ममें होता है।

कफगुल्मके लक्षण।

कफगुल्ममें गीलापना, शीतज्वर, ग्लानि, मलमल, खांसी, अरुचि, जड़ता, ठंडी, रोमांच, कम पीड़ा, गोला कठिन बुरा दीखना, ऐसा होता है. दो दो लक्षण और कारणोंसे द्वंद्वज गुल्म समझना और सब लक्षणों से सन्निपातगुल्म समझ लेना।

रक्तगुल्मके लक्षण।

नवीन प्रसूतमें, गर्भपातमें, शिरके मैलेपनामें,अपथ्य आहर विहारसे वातादि दोष कोपके रक्त सुखाके गुल्म रोग करते हैं. उसके सब लक्षण पित्तगुल्मके माफिक होके दूसरे लक्षण ऐसे हैं कि वह गुल्म बड़ा होके हिलता है अथवा नहीं भी हिलता,शूल होना और गर्भके माफिक इसमें लक्षण होते हैं यानी ऋतु नहींआना, मुखको पानी छूटना, स्तनोंका मुख काला होना,दोहद लगना, यह रक्तगुल्म स्त्रियोंको होता है. गर्भके लक्षण होते हैं इसवास्ते यह गर्भ है ऐसा जानके दवा दश महीनातक नहीं करनी चाहिये. पहिले दवा करनेसे गर्भाशयको नुकसान होगा. इसवास्ते दश महीनाके बाद दवा करना, कारण कि गर्भमें और गुल्ममें इतना फरक है कि गर्भ फिरनेवक्त कुछ पीड़ा नहीं होती. गुल्म फिरनेमें शूल होता है, लेकिन दवाई इसकी दश महीनेके बाद करना ऐसा शास्त्रका वचन है।

गुल्मरोगका असाध्य लक्षण।

क्रम क्रमसे जो गुल्म बढ़ता है वह सब पेटभरमें होता है। धातुतक

पहुँचके कछुवाके माफिक हो बेताकत, अन्नद्वेष, मलसंग्रह, खाँसी, उलटी, असंतोष, ज्वर, तृषा, तंद्रा, जुखाम, क्षय होके असाध्य लक्षण होता है और हाँथ पांव मुख गुह्यस्थानमें सूजन हो तो असाध्य है ।

गुल्मरोगका उपाय ।

स्नेहपान, पसीना, जुलाब ये पूर्व ही देना १ । बिजोराके रसमें हींग, अनार, बिडनोन, सेंधवलोन ये डालके देना २ । सोंठ दो तोला, बिजोरेका चूर्ण ८ तोला, लोन तिल ४ तोला, गुड़ ४ तोला मिलाके गरम पानीसे देना, वातगुल्म, उदावर्त, योनिशूलका नाश होता है ३ ।

वातगुल्मपर पुष्पादि घी ।

शेरणी जीरा, स्याह जीरा, पीपलमूल, चित्रक इनके काढ़ेमें भुईकोहलाका तथा बेरका रस मिलाके उसमें घी सिद्ध करके देना इससे वातगुल्म, अरुचि, श्वास, शूल, अफारा, ज्वर, अर्श, संग्रहणी, योनिदोष ये रोग नष्ट होते हैं ४ । किरमालेके झाड़का तेल छः महीने रोज पीवे तो सर्व गुल्मका नाश होता है ५ । और गूगल गोमूत्रसे देना ६ ।

हींगपंचक चूर्ण ।

१ हींग २ सेंधवलोन ३ आमशूल ४ राई ५ सोंठ इनका समभाग चूर्ण करके देना ७ । शिखी, ओडंबर रस देना. सर्व गुल्म जायँगे ८ ।

पित्तगुल्मका उपाय ।

दाखके रसमें बालहरडेका चूर्ण गुड़ डालके देना ९ । त्रिफलेका चूर्ण शकरसे देना १० । और पित्तनाशक रस दवाई देना ११ ।

कफगुल्मका उपाय ।

अजवाइन, बिडनोनका चूर्ण छाछमें देना १२ । हींग, त्रिकटु, पीपलमूल, धनियाँ, जीरा, चवक, चित्रक, बड़ी सौंफ, बायबिडंग, बालहर्डा, स्याह जीरा, बिडनोन, बांगड़खार, सेंधवलोन, जवाखार, टंकणखार ये सब चीजें समभाग चूर्ण करके उसको अनारका रस, अदरखका रस, बिजोरेका रस इनकी तीन २ भावना देके गोली बेर बराबर बांधके साम सबेरेको दो २ गोली देना, सब

गुल्मोंका नाश करके रुचि, जठराग्निको प्रदीप्त करती है १३ । विद्याधर रस देना १४ । नाराच रस देना १५ । खानेके बाद संधवलोन, हर्डा छाछमें डालके देना १६ ।

रक्तगुल्मपर उपाय ।

दातीमूल, हींग, जवाखार, कडू तुरईके बीज, पीपली, गुड़ सम-भाग खरल करके थोहरके दूधसे गोली बांधके औरतको देना. इससे रक्त-गुल्मका नाश होगा १७ । पलाशके खारसे घी सिद्ध करके उस घीके देनेसे रक्तगुल्म जाता है १८ । शतावर, करंजकी छाल, दारुहलदी, भारं-गमूल, पीपली इनका चूर्ण तिलोंके काढ़ेमें डालके पीवे तो रक्तगुल्मका नाश होगा १९ । गूलर, घी, त्रिकटु, भारंगमूल इनका चूर्ण तिलोंके काढ़ेमें देना. इससे रक्तगुल्म जाके ऋतु पीछा आयेगा २० । तिलोंकी जड़, सहँजनेकी जड़, ब्रह्मदंडीकी जड़, मुलहटी, त्रिकटु इनका चूर्ण करके देना. इससे ऋतु गया हुआ पीछा आवेगा २१। मुंडी, वंशलोचन इनका चूर्ण शकर शहदके साथ रक्तगुल्मको देना. गरम दवासे गुल्मका भेदन करनेके लिये भेदक दवा देना २२ । सज्जीखार ३ मासा गुड़से देना. गुल्मनाश होता है २३ । प्रवालपंचामृत रस देना २४ । पिपली, चित्रक, जीरा, सेंधवलोन इनका चूर्ण शहदसे देना २५ ।

चित्रकादि चूर्ण ।

चित्रक, सोंठ, हींग पीपल, पीपलमूल, चवक, अजमोदा, मिर्च इन आठ दवाइयोंको दो दो तोला, सज्जीखार, जवाखार, सेंधवलोन, काला नोन, बिड़नोन, सेंधवलोन, बांगड़खार ये सातों खार छे २ मासा, सबका चूर्ण करके बिजोरेके रसकी पुट देना, अनारके रसकी पुट देना, पीछे लेनेसे गुल्म, संग्रहणी, आंव, अग्निमंदता दूर होगी २६ । त्रिकटु, पिपली, हरडा, सेंधव इनका चूर्ण घीकुवारकी गिरीसे घी मिलाके देना २७ ।

वज्रक्षार ।

नोन, सेंधवलोन, बांगड़खार, जवाखार, काला नोन, सुहागा, सज्जी-खार इनके समभाग चूर्णको आकड़ेके दूधमें सात और थोहरके दूधमें सात भावना देके पीछे आकड़ेके पत्तेको लेप करे बादसब पत्ते एक मटकेमें

भरके उसका मुख बंद करके कपड़मट्टी करके गजपुटमें आंच देना. पीछे ठंडा हुए बाद निकालके खरल करके शीशीमें भरके रखे, योग्य अनुपानसे दे और इसमें चीजें त्रिकटु, त्रिफला, जीरा, हलदी, चित्रक इनके चूर्णमें वज्रक्षार मिलाके छाछमें और दहीके तोरमें और आदरखके रसमें और बड़ी सौंफके काढ़ेमें प्रकृतिके माफिक देना, यह सर्व गुल्म, उदरशूल, सूजन, अग्निमांद्य, अजीर्ण इत्यादि रोगोंका नाश करेगा २८। गुल्मांबर रस देना २९ । नागगुटी देना ३० । चविकासव ३१ । कुमारीआसव ३२। शंखवटी ३३। इच्छाभेदी रस ३४। शंखद्राव ३५।इनमेंसे हर एक चीज योग्य अनुपानसे देना. सर्व गुल्म नाश होगा ।

गुल्मरोगपर पथ्य ।

स्नेहपान, रेचन, बस्ती, हाथोंकी फस्द खुलवाना, लंघन, अभ्यंग, शस्त्रकर्म, पुराने लाल शालीके चावल, शक्कर, कुलथी इनका जूस, जंगलीमांसका रस, मद्य, गाय बकरीका दूध, द्राक्षा, फालसा, खजूर, अनार, आमला, सोंठ, अम्लबेत, छाछ, एरंडका तेल, लहसुन, कोसल, मूली, सैंजन, बथुई, जवाखार, हर्डा,हींग,बिजोरा,त्रिकटु, गोमूत्र,स्निग्ध, उष्ण, पौष्टिकअन्न और वातहारक चीजें ये गुल्म रोगीको हितकारी हैं।

गुल्मरोगपर अपथ्य ।

संपूर्ण वात बढ़ानेवाली चीजें, विरुद्ध अन्नपान, सूखा मांस, मूली बड़ी, मीठा फल, हरे साग, कंद, दालकी चीजें, मलस्तंभक चीजें, जड़ अन्न, तरह वेगोंका रोकना, उषःपान और प्रकृतिको नहीं माननेवाली संपूर्ण चीजें वर्जित हैं ।

हृद्रोगका निदान-कर्मविपाक ।

रजस्वला स्त्रीके नजर पड़ा हुआ अन्न भक्षण करनेवालेको हृद्रोग व कृमिरोग होता है । परिहार-सात दिन गोमूत्रसे जव भक्षण करना, शांत होगा ।

ज्योतिषका मत ।

जन्म लग्नसे चौथे स्थानमें पापग्रह हो तो उसको कृमिरोग, उरःक्षत, हृद्रोग होता है । परिहार-जप दान करनेसे शांत होगा ।

हृद्रोग होनेका कारण ।

अतिउष्ण, जड़, खट्टा, तुरस, कडू पदार्थ सेवनसे, श्रम, अभिघात, भोजनपर बैठके मलमूत्रादिकका वेग रोकना, इन कारणोंसे हृद्रोग पांच तरहका होता है. रसादिक धातुको कुपित करके हृदयमें पीड़ा करता है १।

वातहृद्रोगके लक्षण ।

हृदय खींचना, सुई चुभानेके माफिक पीड़ा, तरह तरहकी कोई छुरी कटारी मारनेके माफिक शूल ये होते हैं २।

पित्तहृद्रोगके लक्षण ।

तृषा, दाह, मोह, हृदयमें ग्लानि, जलता धुवां निकलने माफिक होना, मूर्च्छा, पसीना, मुख सूखना ये लक्षण होते हैं ३।

कफहृद्रोगके लक्षण ।

हृदयमें कफ भरासा, जड़ता, कफ पड़ना, अरुचि, हृदय कठिन, खींचना, अग्निमन्द, मुख फीका, आलस्य ये लक्षण होते हैं ४। सन्निपातहृद्रोगमें सब लक्षण होते हैं वह असाध्य है। इसमें विकट उपाय करनेसे एक गांठ उत्पन्न होके उसमें कीडे पड़ते हैं यह चरकका मत है। तिल, दूध, गुड़, आदि पित्तकारक चीजें खानेसे यह होता है ५।

कृमिहृद्रोगके लक्षण ।

ज्यादा पीडा टोंचने माफिक, खाज उलटी, मलमल, मुखको थुकथुकी, तोद, शूल, अंधेरी, अन्नद्वेष, नेत्र शाम, सूखना ये मत जेज्जटाचार्यका है और अनेक आचार्योंके मतसे कृमिजन्य हृद्रोगसे अनेक पीड़ा और लक्षण होते हैं १।

हृद्रोगपर उपाय ।

वातहृद्रोगपर स्नेहपान देके उलटी देना १। और दशमूलका काढ़ा करके देना २। पिपली, इलायची, बच, हींग, जवाखार, सेंधवलोन, कालानोन, सोंठ, अजवाइन इनका चूर्ण एक तोला दहीके पानीमें देना, पित्तहृद्रोगपर ठंडा लेप, कपड़ाकी घड़ी भिगोके रखना, पित्तका जुलाब देना ४। द्राक्षा, शकर, शहद, फालसा, इनसे युक्त पित्तनाशक अन्न देना

५ । काली द्राक्षा, बालहरडा इनका चूर्ण शकरसे मिलाके ठण्डे जलसे देना ६ । मुलहटीके काढ़ेमें दूध सिद्ध करके देना ७ । पसीना निकलना आदि कफनाशक उपाय करना ८ । निशोथ, कचूर, नागबला, रास्ना, सोंठ, हरड, पोहकरमूल इनका काढ़ा और चूर्ण गोमूत्रसे देना. हृद्रोगनाश होता है ९ । छोटी इलायची, पीपलमूल इनका चूर्ण घीसे देना. उपद्रवों-सहित कफहृद्रोगनाश होगा १० ।

त्रिदोष-हृद्रोगपर उपाय ।

लंघन देके हितकर चीजें खाने पीनेको देना. कृमिहृद्रोगपर लंघन रेचन देके बायबिडंग, कुष्ठ इनका चूर्ण गोमूत्रसे देना. इससे सर्व कृमि गिर पड़ते हैं ११ । ९६ तोला गायका दूध औटाके आधा कर लेना उसीमें शकर शहद घी दो २ तोला डालके उसमें पिपलीका चूर्ण छः मासा डालके देना. इससे हृद्रोग, ज्वर, खांसी, क्षयनाश होता है १२ । एरंड-मूल ८ तोलाका काढ़ा आठगुने पानीमें करके उसीमें जवाखार डालके देना. हृद्रोगनाश होता है. कोख कमरकी शूलका नाश करता है १३ । हींग, सोंठ, चित्रकमूल, जवाखार, हरडा, कुष्ठ, बिडनोन, पीपला, कालानोन, पोहकरमूल, इनका काढ़ा अथवा चूर्ण देना. यह हृद्रोग, अग्निमन्दता, मलबद्धता इनका नाश करता है १४ । सोंठका काढ़ा गरम पीनेसे अग्नि-वृद्धि करके हृद्रोग, दमा, खांसी, शूलवात इनका नाश करता है १५ । गोखरूकी जड़ गायके दूधमें पचाके देना. हृद्रोग, दमा, खांसी इनका नाश करता है १६ । सावरीकी छाल दूधमें पचाके वह दूध महीना भर पीवे तो अमृत पीने माफिक फायदा करती है १७ । हरणके शींगकी भस्म घीसे देना. सर्व हृद्रोगोंका नाश करती है १८ । गेहूँ, अर्जुनवृक्षका चूर्ण गायके दूधमें पकाके उसमें शहद शकर डालके देना १९ । और बकरीके दूधमें पकाके देना, इससे दारुण हृद्रोग जाता है २० । हृदयार्णवरस देना २१ । अभ्रकभस्म देना २२ ।

हृद्रोगपर पथ्य ।

पसीना, रेचन, उलटी, लंघन, बस्ति, पुराना चावल, जंगली मांसरस,

मूंग, कुलथी, कच्चा कोहला, आम, दाडिम, बर्सातका पानी, बकरीका तथा गायका दूध, पुराना गुड़, त्रिकटु, अजवाइन, लहसुन, हरडा, कुष्ठ कंद, धनियाँ, अदरख, कांजी, शहद, खटाई, चंदन, पान, दिलको हितकारक चीजें फायदेकारक हैं।

हृद्रोगपर अपथ्य।

प्यास, उलटीका वेग रोकना, सिंधुनदी, हिमाचल, विंध्याद्रि इनकी नदियोंका पानी, मेषका दूध, खराब पानी, तुरस, खार, रक्त काढ़ना और जो प्रकृतिको न मानें वे चीजें वर्जित हैं। इति हृद्रोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ मूत्रकृच्छ्रनिदान-कर्मविपाक।

गुरुस्त्रीसे भोग करनेवाला, कन्यासे भोग करनेवाला मूत्रकृच्छ्र रोगी होता है।

कर्मविपाकका परिहार।

उसकी निष्कृति करना और प्रायश्चित्त करना, ब्राह्मण भोजन कराना शांत होगा।

ज्योतिषका मत।

जन्मकालमें सप्तम भवनमें शनि राहु पड़े तो मूत्रकृच्छ्र होता है, उसमें जपदान करना।

मूत्रकृच्छ्र होनेका कारण।

व्यायाम, गरम खाना पीना, रूक्ष, मद्य, घोड़ादिकपर ज्यादा सवारी, मच्छी आदि वातल चीजें खाने पीनेसे, भोजनपर भोजन, कच्ची चीजें सेवनसे, मूत्रकृच्छ्र होता है. उससे मूत्रमें छनका होना, अग्नि होना ये रोग आठ तरहका है. स्वकारणसे कुपित दोष बस्तिमें कुपित होके मूत्रका मार्ग बंद करते हैं. उससे पेशाब बड़े कष्टसे होता है।

वातमूत्रकृच्छ्रके लक्षण।

अंडसंधि, मूत्राशय, लिंग इनमें बहुत पीड़ा, मूत्र थोड़ा २ होना, जलदी होना.

पित्तकृच्छ्रके लक्षण ।

पित्तमूत्रकृच्छ्रमें पीला मूत्र होके दरद होता है, अंगार होके वारंवार होता है. कफमूत्रकृच्छ्रमें लिंग,बस्ति इनमें भारीपना, सूजन,मूत्र चिकना, खांसी और अन्नद्वेष होता है। सन्निपातसे सर्व लक्षण होते हैं ऐसा जानना।

शल्यके लक्षण ।

मूत्र चलानेवाली शिरा, मर्म शल्यसे विद्ध होके भयंकर मूत्रकृच्छ्रको करता है. उसके लक्षण वातमूत्रकृच्छ्रके माफिक होते हैं । पुरुष मूत्रकृच्छ्रसे मल कब्ज होके आध्मान, शूल, मूत्र गुथ गुथके आना, पथरीकी बीमारी होना, थोड़ा २ पेशाब होना, इसको अश्मरी–मूत्रकृच्छ्र कहते हैं । दोष कारणसे शुक्र, दुष्ट होके मूत्रमार्ग बंद होता है. उससे कष्टसे पेशाब होता है और वारंवार धातु गिरता है और बस्तिलिंगमें शूल होता है।

मूत्रकृच्छ्रका सामान्यरूप ।

अश्मरी शर्कराके एकसे लक्षण होते हैं. लेकिन् उसमें थोड़ासा भेद है वह ऐसा है कि,पित्तवातसे बाँधी अश्मरी खिरने लगती है उससे हृदयपीड़ा,कंप, कोखमें शूल, अग्निमंद, मूर्च्छा, भयंकर मूत्रकृच्छ्र होता है यह कष्टसाध्य है।

मूत्रकृच्छ्रपर और वातमूत्रकृच्छ्रपर उपाय ।

गिलोय, सोंठ, आमला, असगंध, गोखरू इनका काढ़ा देना १।गोखरू, किरमालेका मगज, डाभ (कुश), काश, धमासा, आमला, पाषाणभेद, हरडा इनके काढ़ेमें शहद डालके देना. इससे मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी ये रोग नष्ट होते हैं २। इलायची, पाषाणभेद, शिलाजीत, गोखरू, काकड़ीके बीज, सेंधवलोन, केशर इनका चूर्ण चावलोंके धोवनसे देना. इससे कष्ट-साध्य मूत्रकृच्छ्र जाता है ३।शतावर, काश, डाभ, गोखरू, भोईकोहला, शाल, सांठा पीला, खस इनके जड़ोंका काढ़ा ठंडा करके बाद शहद डालके देना. पित्तमूत्रकृच्छ्र जायगा ४। काकड़ीके बीज, मुलहटी, दारु-हलदी इनका चूर्ण चावलोंके धोवनसे देना ५। दारुहलदीका चूर्ण आम-लेके रसमें शहद डालके देना ६।गरम दूधमें गुड़ डालके देना, पेट भरके पीना मूत्रकृच्छ्र जायगा ७।केलेके रसमें इलायचीका चूर्ण डालके देना८। छाछमें कुकड़ीके बीज (करडूके बीज) पीसके देना ९ । चावलके धोव-नसे प्रवालभस्म शकर डालके देना.तत्काल मूत्रकृच्छ्रका नाश होता है १०।

सन्निपातमूत्रकृच्छ्रपर उपाय ।

भूनी रिंगणी, डोरली, पाठामूल, जेठीमद, इंद्रजव इनका काढ़ा देना. त्रिदोष, मूत्रकृच्छ्र जायगा ११ । शतावरके काढ़ेमें शक्कर डालके देना १२। पांच मासा जवाखार शक्करसे देना १३ ।

गुखुरूका लेह ।

गुखुरू पंचांग सहित पचास तोला लेके उसमें पानी चार सेर डालके काढ़ा चतुर्थांश उतार लेना. उसमें शकर २०० तोला डालके थोड़ा पचाके उसमें सोंठ, पीपली, इलायची, जवाखार, नागकेशर, जायपत्री, अर्जुनकी छाल, ककड़ीके बीज, वंशलोचन ये चीजें हरएक पांच२तोले लेके इनका चूर्ण उसमें मिलाके रखना और प्रकृति माफिक देना. इससे मूत्रकृच्छ्र, दाह, मूत्रबंद हो सो अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, परमा नाश होता है १६ । लोहसार शहदसे देना, सर्व मूत्रकृच्छ्रनाश होता है १७ । गुखुरूके काढ़ेमें जवाखार डालके देना १८ । आंवलाके काढ़ेमें गुड़ डालके देना. इससे रक्त, दाह, शूलसे युक्त कृच्छ्रनाश होगा १९ । गायकी छाछमें जवाखार देना २० । कोहलाके रसमें जवाखार शकर डालके देना २१। चंद्रकला रस देना २२ गोक्षुरादि गूगल देना २३। चंद्रप्रभावटी देना २४ ।

मूत्रकृच्छ्रपर पथ्य ।

अभ्यंग, निरूहणबस्ति, स्नेहपान, उत्तरबस्ति, पित्तकृच्छ्रपर स्नान, चंदन लगाना, रेचन देना, कफकृच्छ्रपर पसीना, रेचन, जवाखार, जवका अन्न, कुलिंजन, पुराना चावल, गायकी छाछ, जंगली मांस, दूध, मूंग, शकर, कोहला, पटोल, अदरख, गुखुरू, गवारपाठा, ककड़ी, खजूर, नारियल, ताड़ीफल, अनार, चवलाई, इलायची, शीतलचीनी, ठंडा भोजन, निर्मल पानी, लेप, ककड़ीके बीज, आम, पलाशके फूल, कपूर, शिलाजीत, कलमी सोरा, हजरत, बेर, पानीमें बैठाना ये सब तथा उचित आहार विहार हितकारी हैं ।

मूत्रकृच्छ्रपर अपथ्य ।

मद्य, श्रम, मैथुन, हाथी, घोड़ा आदि सवारी, विषमाशन, विरुद्ध अन्न-

पान, तांबूल, मच्छी, गोन, तेल, गुड़, बैंगन, हींग, तिल, राई, मूत्रादिकोंका वेग रोकना, उड़द, मिर्च, विदाही, रूक्ष, खट्टा, जगना और जो चीजें प्रकृतिको न मानें सो वर्जित हैं ।

इति मूत्रकृच्छ्ररोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ मूत्राघातका निदान ।

जो कर्मविपाक कृच्छ्रका है वही मूत्राघातका है, वही परिहार है सो करना ।

मूत्रकृच्छ्र होनेका कारण ।

मूत्रादि १२ वेगोंके रोकनेसे, लगनेसे, रूक्ष आहार विहारसे कुपित होके १२ प्रकारका मूत्राघात रोग होता है । वातमूत्राघातसे वातबस्तिमें फिरता है १ । थोड़ा २ मूत्र होना, तड़का लगना. इसको वातकुंडली कहते हैं २ । अष्ठीला गुदा, बस्ति फूलना, रोध, चंचलता करके पत्थरके माफिक पथरीको पैदा करती है व पेशाबका रस्ता बंद करती है ३ ।

वातवस्तीके लक्षण ।

मूर्ख आदमी पेशाब रोकता है वस्तिगत वात उसका पेशाब बंद करता है उससे मूत्र साफ बंद होजाता है, वायु कोखमें पीड़ा करती है इसीको वातबस्ति कहते हैं ४ ।

मूत्रातीतके लक्षण ।

जो बहुत वक्त पेशाब रोकके रखता है उसका पेशाब जल्दी उतरता नहीं, उतरे पीछे थोड़ा २ होता है. उसको मूत्रातीत कहते हैं ५ ।

मूत्रजठरके लक्षण ।

पेट फूलना, नाभिके नीचे खींचना, श्वास तथा वेदना ज्यादा होना, अधोबस्तिका रोध होता है यह मूत्र रोकनेसे होता है ६ ।

मूत्रोत्संगके लक्षण ।

बस्तिमें, इंद्रीमें पेशाब अटकना, जबरदस्तीसे पेशाब करनेसे आस्ते २ थोड़ा २ होना, कुड़क लगना, आग होना, खून निकलना ऐसा होता है ७ ।

मूत्रक्षयके लक्षण ।

रूक्षादिक खाने पीनेसे, क्षीण होनेसे, कुड़क लगके जल जल कर पेशाब होता है ८ ।

मूत्रग्रंथिके लक्षण।

बस्तिके मुखमें गोल गोलीसी गांठ होती है वह स्थिर रहनेवाली छोटी होती है. उसकी पीड़ा पथरीके माफिक होती है ९।

मूत्रशुक्रके लक्षण।

जो पेशाब लगनेकी हाजत रोकके औरतसे संग करता है उसका शुक्र वातसे उड़के पेशाबके पहिले और पीछे धातु बूंद पड़ता है, वह पानीमें राख डालनेके माफिक सफेद हो जाता है १०।

उष्णवातके लक्षण।

व्यायाम,धूप लगने आदि कारणोंसे पित्त कुपित होके बस्तीमें जाके वातसे मिलता है और बस्ति, गुदा, दाह इनमें करता है. उससे लाल, पीला मूत्र कष्ट करके होता है ११।

मूत्रसादके लक्षण।

इससे पीला लाल सफेद गाढ़ा मूत्र होना, जलन होके पेशाब सूखे बाद जम जाना, सफेद होना १२।

विड्विघातके लक्षण।

जिसका पेशाब कष्टसे होके मलकी गन्ध बहुत आती है वह विड्-घात मूत्रविघात जानना।

बस्तिकुण्डलीके लक्षण।

बस्ति बड़ी कठिन गर्भके माफिक कड़ी होके शूल, कंप, दाह, मूत्रका एक १ बूंद गिरना और जोरसे बस्ति मर्दन करेतो बड़ीधार गिरना,बस्ति-सूजन ऐसा लक्षण जिसमें हो वह रोग कठिन है. कमबुद्धि वैद्यसे वह रोग दूर होना कठिन है,यह असाध्य है, इसमें तृषा, सूजन, मोह, श्वास ये पैदा हो तो असाध्य है १।

मूत्राघातपर उपाय।

स्नेहपान, पसीना, स्नेहयुक्त रेचन और उत्तरबस्ति देना. ऐसा इलाज करना चाहिये २। मूत्रकृच्छ्र और अश्मरी रोगपर जो दवा लिखी हैं वह दवा मूत्राघातपर करनी चाहिये ३।

गुखुरूवटी ।

त्रिकटु, त्रिफला समभाग इनको बराबर गूगल लेके गुखुरूके काढ़ेमें गोलियां बांधके दोप बल देखके देना. इससे मूत्रकृच्छ्र,मूत्राघात, परमा, वातरक्त, वातरोग,प्रदर ये रोग नष्ट होते हैं ४। दशमूलके काढ़ेमें शिलाजीत डालके देना ५ । गुखरूके काढ़ेमें शिलाजीत और गूगल दोनों डालके देना. इससे सर्व मूत्रके रोग दुरुस्त होते हैं ६ । शतावर, गुखुरू, भुईआंवलेकी जड़ोंके रस चार तोलामें जवाखार मासा एक, कलमी सोरा मासा दो,टंकणखार गुंजा दो ये सब जिनसें मिलाके पिलाना, इससे मूत्राघात नाश होगा ७ । ताड़ीका मूल चावलके धोवनमें डालके पिलाना ८। कपूरकी बत्ती बनाके इंद्रियमें रखना ९ । प्रवाल अनुपानसे देना, लोहसार माक्षिक देना १० । चौलाईकी जड़के रसमें शकर और शहद डालके देना ११ ।

मूत्राघातपर पथ्य ।

स्नेह, पसीना, रेचक, वस्ति, सेंक, लाल शालीका चावल, निर्जल देशका मांस, मद्य, छाछ, दूध, दही शिंघाड़ा, खजूर, नारियल, ताड़ीफल, मैथुन, शराब, जो प्रकृतिको मानें वे पदार्थ हितकारक हैं ।

मूत्राघातपर अपथ्य ।

विरुद्ध अन्नपान, उद्योग, व्यायाम, रुक्ष, विदाही, कब्जकर, मैथुन, बैंगन, वेग, धारण,जो प्रकृतिको नहीं मानें वे पदार्थ वर्जित करना ।

इति मूत्राघात-निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अश्मरीरोगका निदान-कर्मविपाक ।

जो रजस्वला व परस्त्रीगमन करता है वह अश्मरी रोगी होता है।

कर्मविपाकका परिहार ।

उसमें सुवर्णदान करना, ब्राह्मणभोजन कराना, प्रायश्चित्त करना, शान्त होगा ।

ज्योतिषका मत ।

जन्मकालमें गुरु ग्रह बुध होके रविकी दृष्टि हो तो शूल,प्रमेह,अशमरी ये रोग होते हैं, उसमें जप दान करना चाहिये ।

अश्मरी रोग होनेका कारण ।

अश्मरी रोग चार प्रकारके होते हैं। १ वातसे १ पित्तसे १ कफसे १ शुक्रसे एक मिलाके अश्मरी यानी मूतखडा पथरी होती है. जैसे गायके पित्तमें गोरोचन पैदा होके सूखके जमता है वैसे और हरिनके नाभिमें कस्तूरी होती है वैसा ही जानना ।

अश्मरी रोग होनेका पूर्वरूप ।

सब अश्मरी अनेक दोषोंसे मिश्रित होती हैं. बस्ति फूलना, बस्तिमें आजूबाजूको पीड़ा होना, मूत्रमें बकराके मूत्रकी दुर्गंध आना, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अरुचि ऐसे लक्षणसे पूर्वरूप समझना चाहिये १ ।

वात–अश्मरीके लक्षण ।

ज्यादा पीड़ा, दांत खाता है, कांपता है, इंद्रिय मसल-ता है, नाभि मसलता रहना, रात दिन पीड़ा, रोना, पेशाबके वास्ते जोर करता है, जब वात सरता है तब पेशाब आता पर बूंद बूंद आता है और पथरीका रंग हरा हो, उसपर रेखा हो और रूखापना हो २ ।

पित्त-अश्मरीके लक्षण।

बस्तीमें आग होना, ऊपरसे जंघा गर्म लक्षण गोंडबीके बराबर लाल रंगकी और पीले रंगकी काली ऐसी पथरी होना ३ ।

कफ–अश्मरीके लक्षण ।

बस्तीमें टोचनी लगना, ठंडा,जारा,पथरी, मोटी गोल चिकनी शहदके रंगकी सफेद पथरी होती है ४ ।

शुक्र–अश्मरीके लक्षण ।

मैथुन समयके वक्त शुक्र धारण करनेसे जो शुक्र अंदर रहके सूखके पथरी करता है उससे बस्तीमें शूल, अंडको सूजन और स्वप्नमें शुक्र आता है, यह शुक्रकी पथरी होती है ५ ।

अश्मरीरोगका असाध्य लक्षण ।

नाभि, अंडकोशपर सूजन आना, पेशाब बंद होना, बेताकत,क्षीण, अन्य रोगोंसे युक्त हो वह रोगी असाध्य है १ ।

अश्मरी रोगपर उपाय।

वात–अश्मरीको पहिले स्नेहपान देना, पीछे सोंठ, निर्गुंडीका बीज, पाषाणभेद, कुष्ठ, वायबण, गुखुरू, हरड़ा, किरमालेका मगज इनके काढ़ेमें हींग, सेंधवलोन, जवाखार डालके देना. इससे वात-अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, अग्निमंद, कमर, जंघा, गुदा, वृषण वातका नाश होता है १। पाषाणभेदके काढ़ेमें शिलाजीत शकर डालके देना. पित्त-अश्मरी नाश होगी २।सहँजनेकी छाल वायवर्णकी छालका काढ़ा करके उसमें जवाखार डालके देना. इससे कफ-अश्मरी नाश होती है ३। कुडेकी छाल घिसके पिलाना, इससे अश्मरी शर्करा जाती है ४। पापणभेद रस देना ५। त्रिविक्रम रस देना ६।अभ्रकभस्म योग्य अनुपानसे देना ७।शुद्ध पारदभस्म देना ८। लघु लोकेश्वर रस देना९। मंजिष्ठ, काकडीके बीज, जीरा, बड़ी सौंफ, आमला, बेर, गंधक, मनशिल इनका समभाग चूर्ण करके हरएक दिन प्रकृतिके माफिक तोला भरतक देना. इससे अश्मरी नाश होती है १०। शतावर, मूलीका रस उसके समभाग गायका दूध एकत्र करके देना. इससे निश्चय अश्मरी नाश होती है ११। वायुकुंभारी छाल, सोंठ, गुखुरू, जवाखार, गूगल इनका काढ़ा ठंडा करके देना. इससे अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, शर्करा इन रोगोंका नाश होता है १२। सहँजनेकी जड़का रस गरम करके देना और काढ़ा करके देना १३। सोंठके काढ़ेमें गुड़ डालके देना १४। हलदीका चूर्ण डालके देना. इससे बहुत दिनोंकी शर्कराका मूल जाता है १५। कोहलाके रसमें हींग, जवाखार डालके देना. इससे अश्मरी, वस्ति इन्द्रियमें शूल हो सो नाश होगी १६। पाषाणभेदका पाक देना १७।

अश्मरी रोगपर पथ्य।

कुलथी, मूंग, गेहूँ, पुराना चावल, अनार, मास, चंदन, चौलाई, पुराना कोहला, अदरख, जवाखार ये चीजें फायदेकी हैं और बस्ति, रेचन, उलटी, लंघन, पसीना, स्नान, पानीमें बैठना, अंगपर पानी छिड़कना, गुखुरू, वायवर्ण, मूत्रखडा काटके निकालना, शस्त्रकर्म सब हितकारी हैं।

अश्मरी रोगपर अपथ्य।

मलादिक १३वेगोंका रोंकना, विष्टंभकारक(कब्ज करनेवाली)चीजें भारी

विरुद्धअन्न पान, ये चीजें वर्ज्य करना, प्रकृतिको न मानें वे चीजें वर्जित हैं।

इति अश्मरीरोगनिदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ प्रमेहरोगका निदान-कर्मविपाक ।

जो आदमी चांडालिनी, माता और गुरुकी स्त्रीसे गमन करता है वह प्रमेहका रोगी होता है ।

कर्मविपाकका परिहार ।

उसमें तीन चांद्रायण प्रायश्चित्तकरना और जप, दान, ब्राह्मणभोजन कराना ।

प्रमेहरोग होनेका कारण ।

अति बैठक, सुखनिद्रा, दही, मच्छी, दूध, नवान्न, पानी, अतिमीठा, गुड़की चीजें, कफ करनेवाले पदार्थ ये प्रमेह करनेका कारण हैं और जो आदमी गरमी और परमावाली औरतसे भोग करता है उसके बीस प्रकारका प्रमेह होता है । उसमें १० कफजनित होते हैं और ६ पित्तसे होते हैं और ४ वातसे होते हैं।

प्रमेहरोगका पूर्वरूप ।

दांत, जीभ, गला, तालू, इनपर मैल जादा जमना, केश, नख ये ज्यादा बढ़ना, हाथ, पाँव, नेत्रमें जलन होना, तृषा, श्वास लगना, चकटापना रहना ये पूर्वमें होते हैं ।

कफसे जो १० प्रकारके प्रमेह होते हैं उनके लक्षण ।

उदकप्रमेहके लक्षण ।

साफ और बहुत पेशाब होना, शुभ्र रंग, ठंडा, गंधरहित पानीके माफिक गँदला चिकना ऐसा मूत्र होता है १ ।

इक्षुप्रमेहके लक्षण ।

साठेके रसके माफिक मीठा मूत्र होता है २ ।

सांद्रप्रमेहके लक्षण ।

ठंडा होने बाद मूत्र जमता है, ऐसा मूत्र होता है ३ ।

सुराप्रमेहके लक्षण ।

शराबके माफिक ऊपर पतला नीचे गाढ़ा ऐसा मूत्र होता है ४।

पिष्टप्रमेहके लक्षण ।

पानीमें आटा मिलानेके माफिक गाढ़ा सफेद मूत्र होके इंद्रियमें खाज होती है ५।

शुक्रप्रमेहके लक्षण ।

धातुमिश्रित पेशाब होना, धातु बिगड़ना, कपड़ेको दाग लगना, इंद्रियमें पीड़ा होना ६।

सिकताप्रमेहके लक्षण ।

पेशाबमें रेतीके माफिक छोटे २ कण गिरना, मैला पेशाब होना, उसीमें नीचे बालू मालूम होती है ७।

शीतप्रमेहके लक्षण ।

मधुर और बहुत ठंडा, बार बार पेशाब होना ऐसा जानना ८।

शनैर्मेहके लक्षण ।

धीरे धीरे थोड़ा थोड़ा पेशाब होना ऐसा जानना ९।

लालाप्रमेहके लक्षण ।

चिकटी लारसे युक्त पेशाब होना. इन दश जातिके पेशाबोंसे प्रमेह जाति पिछानी जाती है, ये सब प्रमेह कफसे हैं। ये साध्य हैं। कारण कि ये धातुसे युक्त हैं। प्रमेहके उपद्रवोंके लक्षण-बस्ति इंद्रियमें सुई चुभानेके माफिक पीडा, शूल, अंडसंधि, चमडी ऊपरसे पकना और फटना, ज्वर, तृषा, खट्टी डकार, मूर्च्छा, दस्त पतला यह कफप्रमेहमें होता है और उपद्रव-अनाज न पचना, अरुचि, उबकाई, ज्वर, खांसी ये उपद्रव कफप्रमेहके हैं १०।

पित्तसे होनेवाले ६ प्रकारके प्रमेहोंका निदान ।

क्षारप्रमेहके लक्षण ।

पेशाब खारा पानीके माफिक, गंध आना, वैसा ही रंग, अरुचि होती है १।

नीलप्रमेहके लक्षण।

नील रंगके दाग कपड़ेको पड़ना, पेशाब नीला होना २।

काले प्रमेहके लक्षण।

स्याहीके माफिक काला पेशाब होना ३।

हारिद्रप्रमेहके लक्षण।

तीखा, हलदीके माफिक गरम पेशाब होता है, तिडक लगती है और दाग पड़ते हैं ४।

मांजिष्ठ प्रमेहके लक्षण।

आम गंधयुक्त, लाल, मंजिष्ठके पानीके माफिक पेशाब होता है तथा वैसे ही दाग पड़ते हैं ५।

रक्तप्रमेहके लक्षण।

दुर्गंधयुक्त गरम, खारा, रक्तके माफिक पेशाब आता है. ये छः जातिके प्रमेह गरमीसे यानी पित्तसे होते हैं. उपद्रव पित्तके होते हैं ६।

वातसे ४ प्रकारका प्रमेह होता है, उसके लक्षण।

उसके उपद्रवमें उदावर्त, गला, हृदयनिरोध, लोलता, सब चीजोंपर इच्छा, शूल, नींदनाश, शोष, सूखी खांसी, श्वास, ये उपद्रव पित्तके होते हैं।

वसाप्रमेहके लक्षण।

१ चरबीयुक्त या चरबीके माफिक मूत्र गिरता है। २ मज्जामेहमें मज्जा या मज्जासरीखा पेशाब होता है। ३ क्षौद्रप्रमेहसे तुरत, मधुर, चिकना ऐसा पेशाब गिरता है। ४ हस्तिप्रमेहसे हाथीके मूत्र सरीखा पेशाब अटक अटकके होना, शहदके माफिक. उस पेशाबपर कीडियां आती हैं।

प्रमेहका असाध्य लक्षण।

मधुमेहका रोगी क्षीण, अन्नद्वेषी, कुलपरंपराका रोगी, वातके उपद्रवोंसे युक्त रोगी असाध्य है और प्रमेह रोगकी दवा न करनेसे काल करके सब मधुप्रमेह हो जाते हैं।

कफप्रमेहपर दश काढ़ा ।

हरडाका फल, नागरमोथा, लोध इनका देना १। पाठामूल, बायबिडंग, अर्जुनवृक्ष, धमासा इनका देना २। दारुहलदी, हलदी, तुरग, बायबिडंग इनका देना ३। कलंबसार, अर्जुन, अजवाइन इनका देना४। दारुहलदी, बायबिडंग, खैर, धावडा इनका देना ५। देवदारु, कोष्ठ, चंदन, अर्जुन इनका देना ६। दारुहलदी, निर्गुंडीके बीज, त्रिफला, पाठामूल इनका देना ७। पाठामूल, बोरवेल, गुखुरू इनका देना ८। अजवाइन, खस, हरडा, गिलोय इनका देना ९। जामुन, आमला, चित्रक, सात्वण इनका देना १०। ये दश काढे दश कफजन्य प्रमेहोंपर क्रमसे देना. कफप्रमेह नाश होता है ।

पित्तप्रमेहपर उपाय ।

लोध, अर्जुन, खश, पतंग इनका काढ़ा देना ११ । नीम, खश, आमला, हरडा इनका देना १२। आमला, अर्जुनवृक्ष, कुड़ेकी छाल इनका देना १३। काला कमल, जीरा, हलदी, अर्जुन इनका देना १४। गिलोयके स्वरसमें शहद डालके देना१५। आमलाके स्वरसमें हलदी शहद डालके देना १६। ये छः चीजें पित्तके छः प्रमेहोंमें क्रमसे देना ।

सिद्धयोग ।

हलदी, दारुहलदी, त्रिफला इनका कल्क करके उसमें एक मुट्ठी चना डालके रात्रिभर भिगोना व चने दोलायंत्रसे पचाना, वे चने रोज खाना, प्रमेहनाश होगा १७। शिलाजीत शहदसे देना, प्रमेहनाश होता है १८। गिलोयके स्वरसमें वंग और शहद डालके देना, प्रमेहनाश होगा १९ ।

गूगलयोग ।

त्रिफला, त्रिकटु, नागरमोथा, गूगल, समभाग लेके गुखुरूके काढेमें गोलियां बांधके देना. इसको पथ्य नहीं. इससे मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, मूत्राघात, वातरक्त नष्ट होते हैं २० ।

गुखुरू गूगल ।

गुखुरू २८ तोला लेके उनको थोड़ा कूट लेना. उसमें पानी छः गुण

डालके काढ़ा कर लेना. उसमें गूगल शुद्ध करके२८ तोला डालके पकाना, चासनी होने बाद उसमें त्रिफला, त्रिकटु, नागरमोथा ये सातों दवाइयां चार २ तोला कपड़छान करके उस गूगलमें मिलाके गोलियां बांध लेना और रोगीका बल देखके देना. इससे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, मूत्राघात, वातरक्त, वातरोग, धातुविकार, मूत्रखड़ा इनका नाश करता है २१ ।

चंद्रप्रभावटी ।

मिर्च, त्रिफला, त्रिकटु, जवाखार, सज्जीखार, टंकणखार, चवक, चित्रक, उपलशरी, पीपलमूल, नागरमोथा, कचूर, माक्षिक, दालचीनी, बच, देवदारु, गजपिपली, चिरायता, दंतीके बीज, हलदी, तमालपत्र, एला, अतिविष ये सर्व एक १ तोला औरलोहसार ८ तोला, वंशलोचन ४ तोला, गूगल ४० तोला, शिलाजीत ३२ तोला सब एकत्र करके गोली चार मासेकी बांधना उसमेंसे १ गोली प्रातःकालमें शहद और घीसे देना. ऊपरसे गायकी छाछ पीना और माखन खाना और गायका घी पिलाना. इससे अर्श, प्रदर, ज्वर, विषमज्वर, नाडीव्रण, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, विद्रधि, अग्निमंद, उदर, पांडुरोग, पीलिया, क्षय, भगंदर, पिटिका, गुल्म, प्रमेह, अरुचि, शुक्रदोष, उरःक्षत, कफ, वात, पित्त इनका नाश करके वृद्ध पुरुषको तरुण करती है, बल वीर्य देती है, यह चंद्रप्रभावटी विख्यात है, आनंद और कांति देती है, चंद्रसरीखा तेज देती है, इसके ऊपर (पथ्य) स्त्री और रास्ते चलना मना है, बाकी सब खाना पीना २२।

असगंधपाक ।

असगंध ३२ तोला, गायका दूध ६ शेर, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर एक १ तोला और जायफल, केशर, वंशलोचन, मोचरस, जटामांसी, चंदन, रक्तचंदन, जायपत्री, पिपली, पिपलामूल, लवंग, शीतल चीनी, मेढ़ाशिंगी और अकोडका मगज, भिलावाँ, शिंघाड़ा, गुखुरू, रससिंदूर, अभ्रकभस्म, नागभस्म, वंगभस्म, लोहसार ये सब दवाइयाँ दो तीन मासा डालके सबको दूधमें मंद अग्निसे पचाके खोवा कर लेना, उसमें शकरकी चासनी लेके विधिसे पाक कर लेना और देना इससे सर्व

प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, अश्मरी, वात, पित्त, कफआदिक सब रोगोंका नाश करके वीर्य, कांतिको कर देता है २३ ।

अभ्रक योग ।

निश्चन्द्रक, अभ्रकभस्म, त्रिफला, हलदीका चूर्ण मिलाके शहदसे चाटे तो २० प्रकारका प्रमेह तत्काल नाश होता है २४ । शुद्ध नागभस्म दो गुञ्जा, हलदी, आमली, शहदके संग खाय तो २० प्रकारके प्रमेह नष्ट होंगे २५ । शुद्ध गन्धक गुरुचसे देके ऊपरसे दूध पीवे तो २० प्रकारका प्रमेह नष्ट होता है २६ । शिलाजीत दूधमें शकर डालके २१ दिन पीवे तो सर्व प्रमेहका नाश होता है २७ । माक्षिक शहदसे देना, सर्व प्रमेह जायँगे २८ । माक्षिक,गिलोयका सत्त्व शहदसे देना,पित्तप्रमेह जायगा २९ । प्रवालभस्म, शहद, पिपलीसे, तुलसीरस डालके देना, सर्व प्रमेह जायँगे ३० । त्रिफला, बांसके पत्ते, नागरमोथा, पाठामूल इनके काढ़ेमें शहद डालके देना. इससे बहुमूत्र बंद होगा, जैसे अगस्तिमुनिने समुद्र शोषण किया था वैसे यह काढा मूत्रका शोषण करता है ३१ ।

तालेश्वर रस ।

पारदभस्म, वंगभस्म, लोहभस्म,अभ्रकभस्म इनको समभाग मिलाके शहदसे दे तो सर्व प्रमेह नष्ट होते हैं और इससे बहुमूत्र भी नष्ट होता है ३२ ।

वंगेश्वर रस ।

शुद्ध पारद १ भाग, गन्धक १ भाग, वंग २ भाग इस माफिक लेके खरल करके एक वाल शकर शहदसे देना. सर्व प्रमेह जाते हैं ३३ ।

आनन्दभैरव रस ।

बच्छनाग, मिर्च, पिपली, सुहागा, हिंगुल यह समभाग लेके उनका चूर्ण करके रखना, एक वाल अनुपानसे देना. इससे प्रमेहका तथा अतिसारका नाश होता है ३४ । प्रमेहबद्ध रस देना ३५ । हरिशंकर रस देना ३६ । शुद्ध पारदभस्म, अभ्रकभस्म इनको आमलेके रसकी सात भावना देना व उसी अनुपानसे देना, सब प्रमेह नष्ट होंगे ३७ ।

मेघनाद रस।

शुद्ध पारदभस्म, कांतिसार, गंधक, तीखे सार, माक्षिक, त्रिकटु, त्रिफला, शिलाजीत, मनशिल, अंकोलके बीज, हलदी कैथा ये दवाइयें सम भाग लेके पीसके भांगरेके रसकी २१ भावना देके खरल करते जाना; उसको योग्य अनुपानसे देना और शहदमें देना, सर्व प्रमेह नष्ट होते हैं ३८। बकायनके बीज चावलोंके पानीमें पीसके उसमें घी डालके देना. इससे पुराना प्रमेहहो सो भी तत्क्षण नाश होगा३९। वंगभस्म, शुद्ध पारदभस्म, समभाग लेके शहदसे देना, पुराना प्रमेह नष्ट होगा ४०।

चंद्रोदय रस।

अभ्रकभस्म, गंधक, शुद्ध पारद, वंग, इलायची, शिलाजीत, इनको केलेके रसमें घोटके देना. इससे सर्व प्रमेह नष्ट होंगे४१। मेहकुंजरकेसरी रसदेना ४२। पंचलोहरसायन देना ४३।

महावंगेश्वर रस।

वंगभस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, पिपली, जासुंदीके फूल इनकोसम भाग लेके घीकुवारके रसकी सात भावना देना, इसको महावंगेश्वर रस कहते हैं, यह देनेसे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, सोमरोग, पांडुरोग, अश्मरी ये रोग दूर होते हैं। यह श्रेष्ठ दवा नागार्जुनने कही है ४४। वसंतकुसुमाकर रस देना ४५।

अथ प्रमेहपिटिकाका निदान।

प्रमेहपिटिका दस प्रकारकी होती है, प्रमेहकी उपेक्षा करनेसे प्रमेहपिटिका होती है, वह संधिपर होती है। उसमें जैसे वातादिक दोषके लक्षण होते हैं वैसे ही लक्षणोंसे उसके लक्षण समझ लेना. उसके नाम १ शराविका २ कच्छपिका ३ जालिनी ४ विनता ५ मसूरिका ६ सर्षपिका ७ पुत्रिणी ८ विदारिका ९ विद्रधिका १० अलजी ऐसे दश नाम हैं। उन्हींके माफिक आकार हैं और लक्षण दोषोंकेमाफिक जानना. ये बदन पर फुनसियां होती हैं।

प्रमेहपिटिकाका असाध्य लक्षण।

गुदा, हृदय, मस्तक, स्कंध, पीठ, मर्मोंपर पिटिका होती हैंवे असाध्य

हैं. जिसके बलक्षय, अग्निमंद, अन्य रोगोंका साथ हो वह रोगी असाध्य।

प्रमेहपिटिकापर उपाय।

रक्त काढ़ना, कषाय देना, व्रणनाशक दवाइयाँ करके लगाना १। काली मिर्च पीसके पानीसें और गोमूत्रमें लेप देना २। निंबूके रसमें नीमकी छाल घिसके लेप देना ३। घी शकरकी पुल्टिश बांधना ४। अन्य पुल्टिश करके बांधना ५। न्यग्रोधका चूर्ण देना ६। पीपलमूल, गुड़, एरंड, आक इनके पत्ते बांधना, चंदनका लेप देना और व्रणरोगपर जो मलहमादिक लिखा है वह उपाय करना।

प्रमेहपर पथ्य।

लंघन, उलटी, रेचन, उबटन, शमन, दीपन देना, चावल, कंग, जव, बांसके बीज, हरड़ा, सांवा, मोठ, मूंग, गेहूं, पिटवन, कुलथी, अरहर, चना इनका यूष और रस, पुराना मद्य, शहद, चौलाई, छाछ, गोरी-जंगलीमांस, करेले, काकड़ी, कैथ, जान, खजूर, ताड़फल, टेंडसी, तरबूज, कटु, तुरस रस ये चीजें फायदेमंद है।

प्रमेहपर अपथ्य।

मलादिक तेरा वेगोंका रोकना, धूम्रपान, पसीना, रक्त काढ़ना, एक जगहपर बैठना, दिनका सोना, नवा अन्न पानी, दही, जंगली मांस, मच्छी, वातुल, मैथुन, खटाई, मद्यपान, तेल, दूध, घी, गुड़, दूधि आदि विरुद्ध पदार्थ, कोहला, गन्ना, बैंगन, खराब पानी, नोन ये चीजें और तबीयतको न मानें वे चीजें वर्जित हैं।

अथ मेदोरोगका निदान।

व्यायाम न करना, दिनको निद्रा, कफकारक मधुर घी, मीठा, गेहूं, दूध, मांस ऐसे अन्नपानसे मेद बढ़ता है, इससे दूसरा धातु न बढ़के मेद बढ़ता है, उससे वह आदमी बहुत फूलके सब कामोंमें अशक्त होता है।

मेदोरोगके लक्षण।

क्षुद्रश्वास, तृषा, मोह, निद्रा, एकाएक खांसी, श्वास चढ़ना, बंद होना, ग्लानि, क्षुधा, पसीना बहुत, उसमें दुर्गंध आना, बेताकत, स्त्रीसंगका उत्साह

कम, मेद उस आदमीके उदरमें रहता है और मेदसे मर्म बंद होके कोठेमें वातका संचय होता है उसीसे अग्नि भड़कती है वह खाये अनाजका भस्म कर डालती है. इसीसे वह अन्न पचता है और खानेकी इच्छा होती है और खानेको देर हो तो भयंकर वातविकार होता है. उसको अग्नि और वात बहुत विकार करते हैं. जैसा वनअग्नि स्थूल पुरुषको होता है।

अतिमेदके लक्षण।

एकाएक भयंकर रोग, मेह, पिटिका, ज्वर, भगंदर, विद्रधि, वातरोग इन रोगोंको पैदा करके जान लेता है।

अतिमेदका दूसरा लक्षण।

मेद और मांस बढ़नेसे नितंब, चूतड़, पेट, स्तन ये थलथल बहुत ही बढ़ जाते हैं और थलथल हलते हैं, बाकी शरीरमें स्थूलता कम रहती है और बहुत फूलके मस्त हो जाता है, ताकत कम रहती है।

मेदोरोगपर उपाय।

हरडा, लोध, नीमका पत्ता, बेकलकी छाल, अनारकी छाल इनका उबटन जामुनके काढ़ेमें करना, राजाको व औरतको देना १। गिलोय, भद्रमोथा, त्रिफला, छाल, नीम इनमेंसे हर एकका और सब मिलाके उबटनकरना, इससे बदनकी दुर्गंध नाश होगी २। चवक, जीरा, त्रिकटु, हींग, काला नोन, चित्रक इनका चूर्ण शहदसे और गरम जलसे देना. इससे मेदनाश होके अग्निदीपन होता है ३। त्रिकुट, त्रिफला, सेंधवलोन, सिरसोंका तेल एकत्र करके छः महीना गरम पानीसे देना. मेद कम होगा ४।

सदाचार।

कम नींद करना, मैथुन, व्यायाम, चिंता ये चीजें रोगीको हितकारक हैं, मेद जायगा ५। योगराज गूगल शहदसे देना, मेदवृद्धिका नाश करता है ६। गरम पानी ठंडा करके उसमें शहद डालके पिलाना, मेदनाश होगा ७ ताड़के पत्तोंका खार हींग डालके चावलोंकी कांजीसे देना ८। उबटन करके गरम पानीसे स्नान करना, मेदनाश होगा ९।

महासुगंध तेल ।

चंदन, केशर, खश, गहूला, कचूर, गोरचंदन, शिलारस और कस्तूरी, कपूर, जायपत्री, जायफल, शीतलचीनी, सुपारी, लौंग, गुलछबु, काला खश, कुष्ठकुलिंजन, रेणुकाबीज, तगर, क्षुद्रमोथा, नखला, पीला पाच, खश, दवना, पुंडरीकवृक्ष, कांचरी ये सब चीजें २ मासा लेके चौसठ तोला तिलके तेलमें डालके सिद्ध करना. इस महासुगंध तेलकी मालिश करनेसे पसीना बंद होकर, खाज, कोढ़ इनका नाश करेगा, इस तेलका अभ्यंग करे तो सत्तर वर्षका बूढ़ा भी जवान, वीर्यवान्, स्त्रियोंका प्यारा होता है, पुष्टि कांतिवाला और स्त्रीसंग करनेकी ताकत रखेगा. बांझ स्त्रीको पुत्र देता है, नपुंसक अदमीको पुरुषत्व देता है, सौ वर्ष जीता है ११ । वडवाग्नि रस देके ऊपरसे शहद पानी पिलाना, मेद जाता है १२। शुद्ध पारदकी भस्म दो गुंजा खाके ऊपरसे गरम पानीमें शहद डालके पीवे तो मेद जाता है १३ । त्रिपुरभैरव रस देना १४ । निर्धूम तालकभस्म देना १५ । निर्धूम्र मल्ल देना १६ ।

मेदोरोगपर पथ्य ।

श्रम, चिंता, मैथुन, व्यायाम, शहद, सत्त्व, सांवा, जागरण, लंघन, सूर्यताप, हाथी, घोड़ा आदिपर सवारी करना, फिरना, जुलाब, उलटी, अतृप्तिकारक भोजन, बांसके बीज, हरड़ा, चावल, कांग, सेव, चने, मसूर, मूंग, अरहर, मिरच, कद्दू, तुरसरस, छाछ, मद्य, बैंगनका भर्ता, त्रिफला, गूगल, त्रिकटु, सिरसोंका तेल, इलायची, सब जातिके खार, अजवाइन, गरम पानी ये सब चीजें मेद रोगीको हितकारक हैं ।

मेदोरोगपर अपथ्य ।

स्नान, रसायन, शालि, गेहूं, सौख्य, दूध, शकर, गन्नाके पदार्थ, उड़द, मांस, मच्छी, दिनका सोना, सुगंध, मधुर अन्न, अतिप्रिय चीजें, उलटी, घी आदि मेदोरोगीको वर्जित करना चाहिये ।

इति मेदोरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ उदररोगका निदान-कर्मविपाक ।

जो आदमी ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन तीनोंमें भेद मानता है सो आदमी उदररोगी होता है ।

कर्मविपाकका परिहार ।

उसमें कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, प्रायश्चित्त करना और सहस्र घड़े जलके शिरको स्नानकराना. मुक्त होगा और गर्भपात और धर्ममर्यादा तोड़ता है वह जलंधर रोगी होता है. ब्राह्मणभोजन करानेसे मुक्त होता है ।

उदररोग होनेका कारण ।

मंद अग्निसे सब रोगहोता है. उसमें उदर तो अवश्य करिके होता है और अजीर्ण व्यवहारसे खाना पीना, विरुद्ध अन्न पान, मलदोष, पुरीष-संचय से उदररोग आठ प्रकारके होते हैं१वातसे२ पित्तसे३ कफसे४सन्नि-पातसे ५प्लीहासे६ यकृतसे७ बद्धगुदोदरसे८ क्षतोदर मिलाके आठ होतेहैं।

उदररोगका सामान्य रूप ।

चलनेको स्मृति, दुर्बलता, अग्नि मंद, सूजन, ग्लानि, वात, मलकी कब्ज, दाह, तंद्रा ये सामान्य लक्षण हैं १। वातोदरमें हाथ, पांव, नाभि, कोख इनपर सूजन आना, संधि टूटना, सूखी खांसी, अंगमोड़के आना, कमरसे नीचेका बदन भारी, मलसंचय, चमड़ी, नख, नेत्र ये लाल काले पड़ना, पेट बड़ा होना, अंदरमें वातका जोर, बाहर शिर देखना, कालीसी पेटपर चुटकी मारके आवाज देखे तो भाथाकासा होना, शूल, गड़गड़ शब्द होना २ ।

पित्त-उदरके लक्षण ।

ज्वर, मूर्च्छा, दाह, तृषा, मुख कडुवा, श्रम, अतिसार और चमड़ी आदि पीली होना पेटकी शिरा हरी, लाल, पसीना, गरम, जलजल, घबराहट ऐसा पित्तलक्षण होके पेट बड़ा होता है ३ ।

कफ-उदरके लक्षण ।

हाथ पांवमें ग्लानि, स्पर्श न समझना, सूजन, आलस, रोमांच, अंग मोड़ना, निद्रा ज्यादा, मलमल, उबकाई, अरुचि, श्वास, खांसी, सबमें रंग सफेद, पेट बड़ा, चलचलाहट, चमक, ठंडा, कठिन, भारी रहना ४ ।

सन्निपात-उदरके लक्षण।

दुष्ट आदमी विष आदि खराब चीजें खिला देते हैं उससे आदमीका रक्तसहित त्रिदोष कोपता है. उसमें सब लक्षण होते हैं, ऋतु समय कोपता है उसको दूष्योदर कहते हैं ५।

प्लीहोदरके लक्षण।

विरुद्ध आहार विहार तपादिकमें पानी पीनेसे समान वायु बिगड़के पेटमें बायीं बाजू प्लीहा बढ़ जाती है उससे उदर बढ़कर ग्लानि, थोड़ा ज्वर, जीर्णज्वर, अग्नि मंद, कफ-पित्तोदरके लक्षणसे युक्त होके बल क्षीण, शरीर सफेद होता है ६।

यकृदुदरके लक्षण।

इसमें सब लक्षण प्लीहोदरके होते हैं. लेकिन् यकृत् दाहिनी बाजूपर रक्त पैदा होनेका स्थान है उस जगह दिल और लीव्हरमें सूजन होके गोलासा होता है. उससे जो उदर बढ़ता है उसे यकृदुदर कहते हैं। इसमें पित्तोदरके सब लक्षण होते हैं. कारण रक्तका और पित्तका समान स्वभाव है ७।

बद्धगुदोदरके लक्षण।

आदमीको अपथ्य खाने पीनेसे, कोठा कब्ज रहनेसे, दस्त साफ न होके पेट भारी रहता है. जैसे घरको झाड़ते समय आजू बाजूमें कचरा रह जाता है वैसे अंदरसे संचित मल गुदाको खराब होनेसे अपान वायु दुष्ट होके उदरको करता है उससे गुदाकी शिरामें बादी होती है, इस रोगको चरक-मुनिने बद्धगुदोदर नाम दिया है इससे आंतड़ फटके उसमेंसे पानी टपकके गुदाके रास्तेसे आता है जिससे पेटमें पानी होता है. नाभिके पास पेट बड़ा होता है. इससे टोचनीसी लगना, शूल, भेद, पीड़ा होती है. इसका दूसरा नाम परिस्रावि-उदर कहते हैं ८।

जलोदर (जलंधर) के लक्षण।

जो आदमी स्नेहपान करके ठंडा पानी पीता है. उस पानीसे उदकवाहिनी शिरायें तत्काल दुष्ट होके उपस्नेह नावसे झरके बाहर आके जलंधर रोग करती हैं उससे सब पेट जलपूरित दीखना, मोटा होना, नाभिके पास बहुत ऊंचा दीखना, चारों तर्फसे फट जायगा ऐसा दीखे, अंदरमें पानी भरा

आधा पखाल भरा पानी माफिक हलता है, ऐसा पानी बजता है, भरा रहता है, इस उदरको जलंधर कहते हैं ९।

उदरके असाध्य लक्षण।

सर्व उदर कष्टसाध्य है उसमें बद्धगुदोदर पंद्रह दिन बाद असाध्य, त्रिदोषलक्षणका असाध्य और आंख, गुदस्थान,बस्ति इनपर सूजन हो, पेटकी चमड़ी पतली हो, क्लेशयुक्त, बल,मांसरक्त अग्नि जिसकी क्षीणहो, पसलीपर सूजन, फूटन, अन्नद्वेष,अतिसार जुलाब देनेसे पीछे पानी भरे वह रोगी असाध्य है, नहीं बचेगा १०।

उदररोगपर और वात-उदरपर उपाय।

वात-उदरपर खट्टी छाछमें पिपली, सेंधवलोन, चूर्ण डालके देना १। और मोली छाछमें मिर्च, शक्करका चूर्ण डालके पित्त-उदरपर देना २। कफ-उदरपर अजवाइन, सेंधवलोन,जीरा, त्रिकटु इनका चूर्ण डालके देना ३। दशमूलोंके काढ़ेमें और चूर्णमें एरंडका तेल डालके देना. सब उदर शांत होंगे ४। दशमूलके काढ़ेमें दूध और शिलाजीत डालके देना ५। कुष्ट, जमालगोटा, जवाखार,त्रिकटु, सेंधवलोन,बिड़नोन, वांगडखार, वच, जीरा, अजवाइन, हींग, सुहागा, चवक, चित्रक, सोंठ इनका चूर्ण गर्म जलसे देना. सब उदरोंका नाश होगा ६। निशोथ, त्रिफला इनके काढ़ेमें घी सिद्ध करके देना ७। पिपलोंके कल्कमें घी सिद्ध करके देना, कफोदर जायगा ८। थूहरके दूधका जुलाब देके बाद त्रिकटु,गोमूत्र, एरंडका तेल, नागरमोथा इनके काढ़ेसे अनुवासन बस्ति देना ९। पिपली, शहद डालके छाछ देना १०। सेंधवलोन २० तोला, हलदी २० तोला, राई २० तोला इनका चूर्ण ४०० तोलामें डालके उस बरतनका मुख तीन दिन बंद करके रखे उसमेंसे २० तोला रोज पिलावे तो २१ दिनमें पीलियाको नाश करता है, इसमें संशय नहीं ११। शीपकी खार दूधसे देना १२। पिपली दूधसे देना,प्लीहोदरका नाश करता है१३। भिलावाँ, हरडा, जीरा, गुड़से मिलाके लड्डू सात दिन देना. प्लीहोदरका नाश होगा १४। लहसन,हरडा,पीपलमूल इनका चूर्ण गोमूत्रसे देना१५।आकके दूधमें सेंधवलोन पीसके लेप देना १६। कागदी निंबूके रसमें तीन मासा

शंखभस्म देना. इससे पानथरी, प्लीहा आदि सब उदरोंका नाश होगा १७। तिल और एरंडकी राखके पानीमें मिलावाँ,पिप्पली समभाग सबके समभाग गुड़ डालके गोलियाँ करना, अग्निबल देखके देना, इससे उदर, गुल्म सब जायगा १८। गुल्मरोग चिकित्सापर वज्रक्षार लिखा है उसके देनेसे आठों प्रकारके उदररोग नष्ट होते हैं.हमने पचास ठिकाने अनुभव लिया है १९। ढाक (पलाश) की राखके खारके पानीमें पिपली खरल करके देना. इससे सब उदररोगोंका नाश होता है २०।

अग्निमुखनोन।

चित्रकमूल, त्रिवृता (तेंड), दांतीके बीज, त्रिफला, काला नोन ये समभाग सबकेसमभाग सेंधवलोन मिलाके थोहरके दूधमें घोटकेथोहरकी लकड़ीमें भरके कपड़मट्टी करके अग्निपुट देना. बाद युक्तिसे निकालके खरल करके छाछसे देना. इससे यकृत आदि सब उदररोगोंका नाश होता है २१। सेंधवलोन, राई समभाग लेके उसका चूर्ण गोमूत्रसे और छाछसे देना.यकृदुदर नाश होगा २२।हकीमको और जर्राहको उचित है कि,यह रोगी ईश्वरके भरोसे है.तुम लोग कहो तो इसका पेट चीरता हूँ ऐसा कहके इन लोगोंसे हुकुम लेना रोगीके जातिवालोंसे,सज्जनोंसे,औरतसे,राजासे, गुरुसे इन लोगोंसे पूछके जोखिम हमारे तरफ नहीं है ऐसा कहके पीछे नाभिसे सब पेटको बांध डाले और नाभिसे नीचे बायीं बाजू चार अंगुलपर बारीक सुईके माफिक उमदा शस्त्रसे छेद करे, उस छेदमें दो मुखकी नली डालके उससे पानी निकाले और एकदम पानी न निकाले कारण उससे खांसी, श्वास,ज्वर,तृषा,गात्रभंग, कफ, अतिसार ये उत्पन्न होते हैं; इसवास्ते तीसरे और पांचवें दिन बार बार काढ़ना चाहिये.पानी काढ़ने बाद छेद बंद करनेको आमलाका तेल, नोन इनसे और चमड़ेसे मजबूत बांधना चाहिये. यह शस्त्रक्रिया गुरुसे सीख लेना २३।

जलोदरारि रस।

पिपली, मिर्च, तामेश्वर, हलदी ये समभाग लेके सबके समभाग शुद्ध जमालगोटा लेके थोहरके रसमें घोटके गोलियां बांध लेना, रोगीका बल देखके देना.जुलाब होके सब उदरोंका नाशहोगा२४।त्रिकटु,सोंठ,सेंधवलोन

डालके छाछ पिलाना, जलंधरनाश होगा २५ । सब उदररोगोंपर रेचन, वमन, पाचन देना हितकारक है २६ । मालकांगनीका तेल दूधसे देना, उदररोग जायगा२७।तीन पांच सात दस इसी माफिक वर्द्धमानपीपली देना. इससे श्वास, खांसी, ज्वर, उदर, आमवात, रक्तक्षय इनका नाश होता है २८ । नारायण चूर्ण देना, उदररोग जायगा २९ । वंगेश्वर रस देना ३० ।

इच्छाभेदी रस ।

त्रिकटु, टंकणखार, हिंगुल, शुद्ध जमालगोटा समभाग लेके खरल करके तीन गुंजा गायके दूधसे देना. जलंधर नाश होगा ।

उदररोगपर पथ्य ।

रेचन, लंघन, पुराना कुलथी, मूंग, लालशालीका भात, जव, जंगली मांस, पेज, मद्य, शहद, सेंधवलोन, छाछ, लहसुन, एरंडका तेल, अदरख, गोभी, पुनर्नवा, सहँजना, त्रिफला, त्रिकटु, इलायची, जवाखार, लोह, बकरी और गाय इनका दूध, लघु अन्न, तीक्ष्ण तथा दीपन पदार्थ ये चीजें उदर रोगीको हितकारक हैं ।

उदररोगपर अपथ्य ।

उदकपान, दिनका सोना, पुष्टिकर, जड़, चना, दीपन विना चीजें स्नेहपान, धूम्रपान, शिरावेध, उलटी, चनेका पदार्थ, बादी करनेवाली चीजें, मांस, हरी भाजी, तिल, प्याज, विदाही चीजें, क्षार, दालका पदार्थ, विष्टंभक चीजें और तबीयतको न मानें वे चीजें उदररोगीको वर्ज्य करना चाहिये । इति उदररोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ सूजनका निदान-कर्मविपाक ।

पर्वतकी जगह, अच्छी जगह, नदीतीर, दरख्तके नीचे, छायामें, पानीमें इन जगहोंपर जो झाड़ेको जाता है और पेशाब करता है वह आदमी सूजनरोगी होता है ऐसा श्रीमहादेवने कहा है ।

कर्मविपाकका परिहार ।

(इंद्रव०) इस मंत्रका अष्टोत्तर शत जप करना और (आपोहिष्ठा) इस

मंत्रसे चावल, घीका होम करना और अठारह भुजाकी देवी, सोनेकी मूर्ति बनाके दान देना. इससे सूजन शांत होगी ।

सूजन होनेका कारण ।

दुष्ट होके वातरक्तसहित अन्न दोषोंसे मिलके रक्त, हवा वगैरे चलानेवाली शिराकेमुख बंद करके सूजन पैदा करता है, वह सूजन सात प्रकारकी है १ वातसे २ पित्तसे ३ कफसे ४ द्वंद्वजसे ५ सन्निपातसे ६ अभिघातसे ७ विषसे ।

सूजन होनेका पूर्वरूप ।

संताप, शिरा खींचना, बदनमें भारीपना ऐसा होता है. कारण धूप रेचनादिक शोधनमें कुपथ्य होना, ज्वरादिक रोगमें दुर्बलपनासे खारा, खट्टा, तीखा, गरम, जड़, दही, कच्ची मट्टी, साग, विरुद्ध विष, शस्त्रादिकका अभिघात, गर्भपतन, प्रसूति ऐसे कारणोंमें कुपथ्यसे सूजन होती है।

सूजनका सामान्य लक्षण ।

शरीर भारी, चित्त स्वस्थ न रहना, दाह, शिरा पतली होना, रोमांच, शरीरका रंग फिरना ये लक्षण सामान्य होते हैं ।

वातसूजनके लक्षण ।

जिस सूजनमें चंचलता, दाबनेसे तत्क्षण ऊपर आती है, त्वचा पतली, खरदरापना, लाल काला रंग, पीड़ायुक्त, दिनको ज्यादा हो ।

पित्तसूजनके लक्षण ।

नरम, गंधयुक्त, काली, पीली, लालरंगसे युक्त होके दाह, भ्रम, ज्वर, पसीना, तृषा, उन्माद, गरम, स्पर्श करनेसे पीडा, नेत्र लाल होते हैं ।

कफसूजनके लक्षण ।

जड़, स्थिर, सफेद होके उसको अन्नद्वेष, मुख चिकटा, लारयुक्त, निद्रा, उलटी, अग्नि मंद, उसकी पैदा और नाश चिरकालसे होती है, दबानेसे खड्डा पड़ता है, रातको ज्यादा होती है ।

द्वंद्वजदोष और सन्निपातके लक्षण ।

द्वंद्वज दोषके कारण और लक्षणसे दो दो दोषकी सूजन जानना और सब लक्षण हों तो सन्निपातज, सूजन है ऐसा जानना ।

अभिघातसूजनके लक्षण।

शस्त्र लकड़ी पत्थरादिक लगनेसे, गिरने पड़नेसे सूजन होती है. उसमें भिलावां, थोहर, आक ऐसी लगनेसे सूजन चारों तरफ पसरती है उसमें दाह होता है और पित्तसूजनके लक्षण होते हैं।

विषसूजनके लक्षण।

विषैले प्राणीके विपका या शरीरका स्पर्श अथवा सूत्र लगना और काटना, नख लगाना इन कारणोंसे जो सूजन आवे तो वह सूजन नरम चमकनेवाली, लटकनेवाली, जल्दी होनेवाली, दाह पीड़ा करनेवाली होती है।

सूजनका ठिकाना।

आमाशयदोष, ऊपर सूजन करता है. पक्वाशय दोष, मध्य प्रदेशमें सूजन करता है और मलाशय दोष नीचे पांव, जंघा, पिंडियां, घोंटू इनमें सूजन करते हैं और सब देशमें दोष बिगड़ता है तो सब देहमें सूजन करते हैं।

सूजनका असाध्य लक्षण।

जो सूजन मध्य देशमें आवे वह सूजन सब शरीरमें आवेगी और वह कष्ट साध्य है, जो सूजन नीचे आके ऊपर चढ़े वह उलटी सूजन पुरुषका घात करती है, जो सूजन पहिले ऊपर आके बाद नीचेके प्रदेशमें आती है वह स्त्रियोंका घात करती है, और श्वास, तृपा, उलटी, अशक्तता, ज्वर, अन्न, न पचना इनसे सूजन असाध्य और मध्यप्रदेशमें पैदा होती है वह स्त्री पुरुष दोनोंको घातक है। मध्य प्रदेश यानी गुह्यस्थान।

सूजनका उपाय।

वातसूजनपर पहले पंद्रह दिन निशोथका काढ़ा देना १। एरंडका तेल डालके पिलाना, स्वेद, अभ्यंग, सेक करना, दूध चावल खान २। उदरमार्तंड रस देना ४। त्रैलोक्यडंबर रस देना ५। अग्निकुमार रस देना ६। शोथारि रस देना ७। सोंठ, पुनर्नवा, एरंडका मूल, पंचमूल इनका काढ़ा देना ८। बिजोरेकी जड़, जटामांसी, देवदारु, सोंठ, रास्ना, नरवेल इनका काढ़ा पित्तसूजनपर देना ९। त्रिफलाका चूर्ण एक तोला गोमूत्रसे देना १०। पुनर्नवा, निशोथ, गिलोय, अडूसा, हरडा, देवदारु इनका काढ़ा कफसूजनका नाश करता है ११।

पिप्पल्यादि चूर्ण ।

पिपली, जीरा, गजपिपली, रिंगणी, चित्रक, हलदी, लोहसार, पीपलमूल, पाठामूल, मोथा इनका चूर्ण गरम जलसे देना. द्वंद्वज, त्रिदोषज सूजनका नाश होगा १२। अदरखके रसमें और सोंठके काढ़ेमें दूध डालके पिलाना, उसकेपचनेके बाद त्रिफलाके काढ़ेमें शिलाजीत डालकेपिलाना, इससे त्रिदोष और सूजनका नाश होता है १३। कालानोन, राई पीसके लेप देना. इससे त्रिदोष और अग्निवातज सूजन जायगी १४। माखन तिलका लेप देना १५। दूध तिलका लेप देना १६। मुलहटी, दूध, तिल इनका लेप देना १७। अर्जुन वृक्षके पत्तोंका लेप लगानेसे विषकी सूजन नष्ट होती है १८। बहेड़ेके मगजका लेप देनेसे भिलावाँका विष उतरेगा १९।

कृष्णादि चूर्ण ।

निर्गुंडीके बीज, चित्रक, सोंठ, मोथा, जीरा, रिंगणी, पाठामूल, हलदी, पिपली, गजपिपली, जटामांसी इनका चूर्ण गरम जलसे देना. इससे सब जातिकी सूजन नष्ट होगी २० । पिपली, सोंठका चूर्ण गुड़से देना, आमाजीर्ण, शूल, सूजनका नाश होगा २१।बायबिड़ंग, दंतीमूल, कुटकी, निशोथ, चित्रक, देवदारु, त्रिकटु, पिपली, त्रिफला ये चीजें समभागमें, दो भाग लोहभस्म इसमाफिक लेके सबका चूर्ण करके गरम पानीसे देना. इससे सब सूजनोंका नाश होगा२२।पुनर्नवादिआसव देना २३।पुनर्नवादि घी देना२४।लोहभस्म देना.सब सूजनका नाश करता है २५।पिपलीके काढ़ेमें योगराजगूगल देना,सब सूजनका नाश करेगा २६। बड़, गूलर, पीपल, पकरिया, बेल इनकी छालका लेप घी डालके देना इससे सूजन नाश होगा २७। धतूरेके रसमें गूगल पकाके उसका लेपदेना २८।बच्छनाग, सामरका शींग, कुचलेका बीज इनको गोमूत्रमें घिसके लेप देना. सब सूजनका नाश होगा२९।अदरखके रसमें गुड़ डालके देना३०। आक, धतूरा, मेढाशिंग, निर्गुंड इनके पत्तोंके काढ़ेसे सूजनको सेकना और बफारादेके पसीना निकालना, सूजन जायगी३१।दशमूलके काढ़ेका बफारा देना ३२।

सूजनघाती रस।

दर्दूर, जमालगोटा, मिर्च, टंकणखार, पिपली इनका खरल करके एक वाल घीसे देना. इससे सर्व सूजनका नाश होता है. इसको शोथारि रस कहते हैं ३३। मंडूर योग्य अनुपानसे देना ३४।

दूसरा सूजनघाती रस।

शुद्ध पारद, गंधक, लोहसार, पिपली, निशोथ, मिर्च, देवदारु, हलदी, त्रिफला इनका चूर्ण शक्ति देखके देना. इससे सूजन, उदर इनका नाश होगा।

सूजनपर पथ्य।

रेचन, वमन, लंघन, रक्तमोक्ष, पसीना, लेप, सिंचन, पुराने चावलका भात, जव, कुलथी, मूंग, जंगली मांस, घी, छाछ, मद्य, शहद, आसव, सहँजना, लहसुन, करेले, तुरई, संचल, पुनर्नवा, चित्रक, नीम, गन्ना, एरंडका तेल, कुटकी, हलदी, बालहरडा, भिलावाँ, गूगल, लोहभस्म, मिर्ची, कडू, दीपन, कस्तूरी, गोमूत्र, शिलाजीत ये चीजें हितकारी हैं।

सूजनपर अपथ्य।

ग्राम्य मांस, जंगली मांस, नोन, शाखा, नवा अन्न, गुड़की चीजें, मिष्टान्न, दही, तिल, चावल, खिचड़ी, खराब पानी, खटाई, सत्तू, ज्यादा खाना, भारी चीजें, प्रकृतिको नहीं मानें वे, विदाही, रातदिन स्त्रीसंग ये चीजें वर्जित हैं।

अथ अंडवृद्धिका निदान।

कुपित हुआ दोष नीचे गमनकर शिरागत सूजन, शूलको पैदा करनेवाले वातका कोखमें संचय करके अंडसंधिमें अंडमें आके अंडकोशकी नाड़ियोंको दुष्ट करके अंडकी वृद्धि करता है. उस दोनों तर्फका अथवा एक तर्फका अंड बढ़ाता है वह रोग हरएक दोषसे तीन ३ रक्तसे चौथा ४ चरबीसे पांचवाँ ५ और मूत्रसे छठाँ ६ और आंतड़ोंसे सातवां ७ इसमाफिक सात तरहका होता है १।

वात-अंडवृद्धिके लक्षण।

हवाका फुवाराके माफिक होना, रूक्ष, विना कारणोंसे दुखना और वातका उपद्रव होगा।

पित्त—अंडवृद्धिके लक्षण ।

काले रंगकी फुनसियां और दाहादिक पित्तसे सब लक्षण होते हैं

कफ-अंडवृद्धिके लक्षण ।

मेदसे जो वृद्धि होती है वह कफवृद्धिसे होती है सो अंदरसे मेद पका ताडगोलाके माफिक होता है, कफके उपद्रव होते हैं।

मूत्र—अंडवृद्धिके लक्षण ।

मूत्रके वक्त जो वेग रोकनेकी आदत होती है उस आदमीको यह रोग पैदा होता है, इससे चलनेकी वक्त पानी भरी हुई मशकके माफिक हिलना और आवाज होना, थोड़ा दुखना, हाथको नरम लगे, मूत्र कम होना, अंड बड़ा होना, चलनेमें त्रास होना यह मूत्र--अंडवृद्धिके लक्षण जानना ५।

अंडवृद्धिके लक्षण ।

विरुद्ध आहार विहार करनेसे, बोझा उठानेसे, गिरनेसे, मल्लादिके क्रूर कर्म करनेसे, कोखमें दोष कुपित होके छोटी अंतड़ियोंसे एक भाग लेके उसको बिगाड़ कर देते हैं और उसे नीचे ले जाके अंडमें सूजन गांठ पैदा करता है उसकी अपेक्षा करनेसे उसमें फुलाव, पीड़ा, करड़ापना होके उसको दबानेसे उसमेंका वायु कौं कौं शब्द करके ऊपर चढ़ता है. छोड़नेसे फिर नीचे आके अंड फुला देता है।

अंडवृद्धिका असाध्य लक्षण ।

छोटी आतड़ियोंके सबबसे हुए अंडमें बादीकी वृद्धिसे लक्षण हो वह असाध्य है ।

घर्मनिदान ।

अंत्र स्रोतों, स्रावी, जड़, आम पदार्थोंके खाने पीनेसे वृद्ध हुआ अंडवंक्षणमें गांठ करके सूजन, ज्वर, ठनक, बदनमें जड़ता, जलाधिक्य को करता इसको बुद्धिमान् कोई कुरंटक भी कहते हैं ।

अंडवृद्धिपर उपाय ।

अदरखका रस शहद सम मिलाके देना १ । दूधमें एरंडका तेल एक

महीना देना अंडवृद्धिका नाश होगा २ । एरंडके तेलमें गूगल डालके देना, बहुत दिनोंकी अण्डवृद्धि नष्ट होगी ३ । चंदन, मुलहटी, कमलगट्टा, गिलोय, नीला कमल इनको दूधमें पीसके लेप देना ४ । दारुहलदीके काढ़ेमें गोमूत्र डालके देना ५ । बच्छनाग, सांभरसींग, कुचला इनका गोमूत्रमें लेप देना ६ । त्रिकटु, त्रिफला इनके काढ़ेमें जवाखार डालके देना ७ । रक्तवृद्धिपर बार बार जोकें लगाके रक्त काढ़ना ८ । शहद शकर मिलाके निशोथका काढ़ा देना ९। मेदवृद्धि पर पसीना काढ़ना. निर्गुंडी, आक, मेढाशिंगी, धतूरा इनके पत्ते बांधकर पसीना काढ़ना १०। बंगाली बैंगनमें सिंदूर डालके गरम करके बांधना, बहुत पसीना निकलके अंडवृद्धि नाश होगा ११ । त्रिकटु, चवक, चित्रक, पीपलमूल-गूगल, गायका घी एकत्र खरल करके देना. इससे अंडवृद्धि जायगी १२। मूत्रसे वृद्धिपर पसीना काढ़ना, बफारा देना. गरम कपड़ेसे बांधना, शस्त्रसे चिराना, पट्टा चढ़ाना ऐसा उपाय करना १३ । पीपली, जीरा, कुष्ठ, बेर, सूखा गोबर इनको कांजीमें पीसके लेप देना. इससे टेढ़ा अंड सीधा होगा १४ । देवदारु, बड़ी सौंफ, अडूसा, काली पवांड़बीज और जड़, सेंधवलोन, शहद इनका लेप देना. इससे अंडवृद्धि जायगी १५। दारुहलदीका चूर्ण गोमूत्रसे देना १६। रास्ना, गिलोय, नागबला, मुलहटी, गोखरू, एरंडमूल इनके काढ़ेमें एरंडका तेल डालके देना १७ ।

पुनर्नवादि तेल ।

पुनर्नवा, गिलोय, देवदारु, नोन, जवाखार, सांभरनोन, सुहागा, सेंधवलोन, बिड़ नोन, बांगडखार, कुष्ठ, कचूर, बच, मोथा, रास्ना, कायफल, पोहकरमूल, अजवाइन, शेरनी, हींग, शतावर, अजमोदा, विडंग, अतिविष, जेठीमद, त्रिकटु, चवक, चित्रक इन सबको सम भाग लेके सबके समभाग बहेड़ा लेना, सबका काढ़ा करके उसमें ६४ तोला तिलोंका तेल डालके सिद्ध करना, उसमें गोमूत्र, कांजी मिलाके सिद्ध करना. यह पुनर्नवादि तेल मालिश करनेको, बस्ति देनेको और पीनेको देना. इससे कमर, पीठ, जंघा, लिंग, कोख, अंडवृद्धि, शूल, अन्त्रवृद्धि ये नष्ट होते हैं । १८ ।

अंडवृद्धिनाशन रस ।

शुद्ध पारद, गंधक समभाग दोनोंके समभाग सुवर्णमाक्षिक खरल करके हरडाके काढ़ेकी तीन भावना देके एरंडके काढ़ेमें अथवा तेलमें खरलकरके हरडेके काढ़ेसे देना. अंडवृद्धि जायगी १९। सर्वांगसुंदर रस देना २०। सेंधवनोन गायके घीसे देना और लेप करना, इससे कुरंटक रोग जायगा २१। गीली तमाखूके पत्तोंको दारू लगाके बांधना २२।आककी कोंपल गुड़से देना २३। तमाखूके पत्तेको शिलारस लगाके बांधना २४।

अंडवृद्धिपर पथ्य ।

रेचन, बस्ति, रक्तमोक्ष, स्वेद, लेप, लाल चावल, एरंडका तेल, गोमूत्र, जंगली मांस, सहँजना, परवल, पुनर्नवा, गोखरू, ऐरणका पान, हरडा, रास्ना, लहसुन, गरम जल, छाछ ये पथ्य देना. अंडसंधिपर चंद्राकार दाग देना. हाथ पावोंकी शिरापर पाछ देना और फस्द खोलना, शस्त्रसे चिराना ये हितकारी हैं।

अंडवृद्धिपर अपथ्य ।

जलमांस, अनूपमांस, दही, उड़द, मिष्टान्न, शुक्रादिके वेगोंका रोकना, प्रकृतिको न मानें सो आहार, विहार, खट्टा, तेल, गुड़ ये चीजें वर्ज्य हैं और जलदी चलना, बोझा उठाना, कूदना, कुश्ती करना, मैथुन, ज्यादा खाना, व्रत करना ये चीजें अंडवृद्धिवालेको वर्ज्य करना चाहिये।

इति अंडवृद्धिरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ गंडमालाका निदान-कर्मविपाक ।

जो समुदायका द्रव्य दगाबाजीसे हरण करेगा और लेगा उस आदमीको गंडमाला रोग होगा।

कर्मविपाकका परिहार ।

माणिक, पद्मराग, हीरा, मोती, वैडूर्य, पुखराज, पाच इनकी माला सोनेके सूतमें गुहकर तांबाके बरतनमें ३०२४ तोला तिल डालके उसपर रखके नवग्रहोंकी महाशांति करके पूजा करके वेदांत सीखे ब्राह्मणको दान देना, गंडमाला शांत होगी।

गंडमाला होनेका कारण।

कंठके मूलमें गंडमाला रोग होता है. उसमें दोनों बाजूपर अथवा एक बाजूपर गांठें आती हैं उसको गंडमाला और कंठमाला कहते हैं। जो दो चार गांठें आके सूजती हैं उसे कोई गलगंड कहते हैं। गलेमें वातादिक दोष रक्तादिक धातुसे मिलके भयंकर सूजन पैदा करते हैं, गांठें होती हैं। वातजन्य गंडमालामें सूई चुभानेके माफिक पीड़ा, गांठोंका रंग काला, नीला, लाल, खरदरा, देरसे बढ़े, पकनेमें देर लगे, अरुचि, मुख, ओठ, गला सूखना, कफजन्य गंडमाला स्थिर, जड़, खाज, ठंडापना, गांठें मोटी, बहुत दिन बहुत दिन बढ़ती हैं, क्वचित् पके तो पीड़ा कम, मुख मीठा और चिकना ऐसा समझना।

मेदसे युक्त।

चलचलित, जड़, सफेद, दुर्गंधयुक्त, मंद पीड़ा, खाज ज्यादा और तृषा, क्षय, क्षीणता, मुखपर चमक, चिकना, सूजन, बोलनेमें तकलीफ होती है।

गंडमालाका असाध्य लक्षण।

जो कष्टसे श्वास लेता है, एक बरससे पुराना, क्षय, स्वरभेद, अन्नद्वेषी, ज्वरसे व्याप्त ऐसा रोगी असाध्य है. गंडमालाकी जगह गलापर, कांखमें, अंडसंधिपर, कंधेपर इन जगहोंपर छोटी बड़ी लंबी गोल ऐसी गांठें होती हैं. उसकी पैदायश गर्मीसे है. इनका नाम कंठमाला, गंडमाला, अपची ऐसा है।

गंडमालापर उपाय।

जीभके नीचे दोनों बाजूपर बारा शिरा हैं उनमें दो बड़ी हैं उन्हें आकडासे खींचके दाबके पत्तेसे काटना १। उसमेंसे रक्त जानेबाद गुड़, अदरख खानेको देना २। बाद तृप्त न करनेवाला अन्न देना, रूक्ष अन्न, कुलथी, जव, मूंग, तीखा ऐसा भोजन, जोंक लगाके रक्त काढ़ना ३। लेप-सरसों, सहँजनेके बीज, सनके बीज, जवासा, मूलीके बीज इनको खट्टी छाछमें पीसके लेप देना. इससे गंडमाला जायगी ४। ढाककी जड़ चावलोंके पानीमें घिसके लगाना, गंडमाला नष्ट होती है ५। पुराने लोहेका कीट गोमूत्रमें डालके एक महीना रखना, बाद गजपुट देना, मंडूर शहदसे तैयार करके देना, गंडमाला जायगी ६। भांगरा, लहसनकी लुगदी करके बांधे तो गंडमाला

फूटके बहके साफ होगी ७। कडू तुरईमें सात दिन पानी भरके रखना वह पीनेको देना, गंडमाला जायगी ८। पुरानी ककडीके रसमें बिड नोन, सेंधवलोन डालके नाकमें सुंघाना, इससे गंडमाला नष्ट होगी ९। सफेद निर्गुंडीकी जड़ पीसके बड़े फजिर घीसे देना, गंडमाला जाती है १०।

गंडमालापर पथ्य।

घी चावल देना ११। बायबिडंग, जवाखार, सेंधवलोन, बच, रास्ना, चित्रक, त्रिकटु, देवदारु इनके काढ़ेमें समभाग कडु तुरईका रस डालके तिलका तेल सिद्ध करके नाश देना. इससे सर्व गंडमाला नष्ट होगी. यह तेल नास देनेको उत्तम है १२। आमकी जड़ और सहँजनेकी जड़, दशमूल, सबको पीसके गरम करके लेप देना, गंडमाला जायगी १३। कफगंडमालापर सेक देना, बांधना, इसमें पेडीपत्ता बांधना १४। जुलाब मस्तक रेचन देना १५। देवदारु, कडू वृंदावनका लेप देना १६। निर्गुंडीका रस आठ तोला देना. इससे गंडमाला, अपची रोग जायगा १७। जंगली कपासकी जड़, चावलोंके बराबर पचाके देना, अपची गंडमाला जायगी १८। पिपली, आमकी लकड़ीमें गायके दांत जलाके वराहकी चरबीमें मलहम करना. उसके लगानेसे तत्काल गंडमाला अपची जायगी १९। जो गांठें कुछ पक्की, कुछ कच्ची रहके कुछ अच्छी हों, कुछ और उठें उसे अपची रोग कहते हैं. उसके पहुँचेपर दाग देना वा तीन रेखा दूर दूर देना. इससे अपची रोग जायगा २०। कुलथी, मिर्च, हींग इनका काढ़ा देना, गंडमाला अपचीका नाश होगा २१। अलंदंडीकी जड़ चावलके धोवनसे देना और लगाना इससे झरती गंडमाला जायगी २२। किरमालाकी जड़ चावलोंके धोवनमें घिसके नास देना और लेप देना, गंडमाला जायगी २३। निंबूके रसमें बच्छनाग घिसके लेप देना, गंडमाला जायगी २४। भिलावाँ, हीराकसीस, चित्रक, दांतीमूल, गुड़, थूहरका दूध, आकका दूध एकत्र खरल करके लेप देना. इससे गंडमालाका वैसे नाश होगा जैसे हवा मेघका नाश करती है २५। पारा, गंधक, समभाग कचनारकी जड़ ये चीजें आकके दूधमें घोटके लेप देना, गंडमालाका नाश होगा २६। अलसीकी पोलटिस बांधके पकाना और गेहूंकी पोलटिस बांधना २७। निर्गुंडी कललावीको मूलके काढ़ेमें तेल सिद्ध करके नाश देना २८।

गुंजा और गुंजाकी जड़ इनके कोढ़में तेल सिद्ध करना उसके लगाने से गंडमाला जायगी २९। शुद्ध पारा एक भाग, गंधक आधा तोला, ताम्र डेढ़ तोला, मंडूर ३ तोला, त्रिकटु ६ तोला, सैंधव १ तोला, कचनारकी छाल १२ तोला, गूगल १२ तोला ये सब दवाइयें खरलकरके गायके घीमें गोली तीन मासेकी बांधना, इसके देनेसे सर्व रोग-गंडमाला, गलगंड, अपची इनका नाश करता है। ऊपर शुद्ध पारद, सर्व दवाइयां तोला प्रमाण लिखी हैं सो लेना. इसका नाम गंडमालाखंडन रस है ३०। निर्गुंडीका स्वरस, कांचकुइरीमूल घिसके तेल डालके सिद्ध करके उस तेलकी नास देना, गंडमालाका नाश होगा ३१।

अथ ग्रंथिका निदान।

कुपित होके वातादि दोष रक्तादिक धातुसे मिलके उनको सहायता करके शिराको साथ लेके ग्रंथि (गांठ)को पैदा करता है. उसे ग्रंथि कहते हैं. कोई अर्बुद कहते हैं। इनका लक्षण वातादिक जो दोष हो उसके अनुसार समझना. जिसमें वातके, पित्तके, कफके जो दोष हैं सो जान लेना और रक्तके व मेदके लक्षण हों सो जानना, इसमें चिह्न विद्रधिके समानहोते हैं।

ग्रंथिपर उपाय।

ग्रंथि पके नहीं तबतक सूजनका इलाज करना, पकेके बाद रक्त पीप निकालके व्रणरोगपर जो उपाय कहा है वह करना१।जटामांसी, रक्तरूढा, गिलोय, भारंगमूल, बेलफल इनका काढ़ा देना २। सहँजना, उंदीरकानी इनका लेप गोमूत्रमें बांटके देना ३। वातग्रंथिको रक्तरूडा, सहँजनेकी छाल इसकी पिंडी बांधना ४। पित्तग्रंथिको जोंक लगाके रक्त निकालना ५। दूध पानीसे सिंचन करना और द्राक्ष के रससे और गन्नाके रससे हरड़ेका चूर्ण देना. पित्तग्रंथिका नाश होगा ६।

कफग्रंथिपर उपाय।

महोडा, जामुन, अर्जुन, सादडा, बेत इनकी छालका लेप करना ७। दोष कम होने बाद यथोचित क्रिया करना ८। मेदग्रंथिपर बायबिडंग, पाठमूल, हलदी इनसे सिद्ध करके घीका सिंचन देना और दूधमें तिलका पुलटिस करके बांधना९। लोह गरम करके सेकना और लाखसे सेकना १०। शकर घीका पुलटिश बांधना ११। नीमकी छाल निंबूके रसमें

गरम करके लेप देना. पीछे गंडमालाके जो इलाज लिखे हैं वे ग्रंथिपर करना १२। वात-अर्बुदपर पसीना निकालना, तुंबडी लगाके रक्त काढ़ना, वातहारक इलाज करना १३। पित्त-अर्बुदपर पित्तनाशक रेचन दवा पिंडी बांधना १४। कफ-अर्बुदपर रक्त काढ़के मांस-अर्बुदपर भी रक्त ही काढ़ना, उलटी देना, रेचन देना, व्रणका उपाय करना १६। गंधक, मनशिल, सोंठ, बायबिड़ंग, सिंदूर इनका समभाग चूर्ण करके किरघाटके रक्तमें लेप देना, इससे तत्काल अर्बुदका नाश होगा १७। सेहुंड, निंबके और सीसेसे गरम करके सेकना. इससे अर्बुद नष्ट होगा १८। हलदी, लोध, पतंग, गुंजा, गुड़, घेरोसा, मनसिल ये चीजें एकत्र खरल करके शहदसे लेप देना. इससे मेद-अर्बुदका नाश होगा १९। शुद्ध पारद, गंधक इनकी कजली करके पीपल मिलाके नागबला, चौदलाई, पुनर्नवा, गोमूत्र इनकी भावना देके लघुपुट देना. उसमेंसे दो गुंजा शहदसे देना इससे अर्बुदका नाश होगा २०। इसको हासेंद्ररस कहते हैं।

ग्रंथिपर पथ्य ।

उलटी, रेचन, पसीना, नस, धूम्रपान, दाग, फस्द खोलना, रक्तमोक्ष करना, क्षार, योग्य लेप लगाना, जीभके नीचेकी शिरा वेध करना, पुछेपर दाग देना, पुराना घीपान, लाल चावल, मूंग, पटोल, सहँजना, रूक्ष, तीखा, दीपन पदार्थ, गूगल, शिलाजीत ये चीजें गलगंड, गंडमाला, अपची, ग्रंथि, अर्बुद इनको हितकारी हैं।

गंडमाला ग्रंथिका अपथ्य ।

दूध, गन्ना, गुड़, अनूपदेशका मांस, मिष्टान्न, खट्टी, मधुर, जड़, कफकर चीजें, प्रकृतिको न माननेवाली चीजें, गलगंड, गंडमाला, अर्बुद इन रोगोंको वर्जित करना चाहिये। इति गंडमालारोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ श्लीपदरोगका निदान-कर्मविपाक ।

जो आदमी स्वगोत्रकी स्त्रीसे विवाहकर भोग करता है वह श्लीपदरोगी होता है. स्त्रीको रक्तस्राव होवेगा ।

कर्मविपाकका परिहार ।

उसमें चांद्रायण प्रायश्चित्त करना, एक महीना पयोव्रत करना इससे शांत होगा ।

श्लीपदरोग होनेका कारण ।

जो सूजन पहिलेसे अंडसंधिसे उत्पन्न होके धीरे धीरे पाँवमें आती है उसके साथमें ज्वर आता है इस रोगको श्लीपद कहते हैं और वातसे सूजन आती है उसका रंग काला, खरदरा, त्वचा फटी, वेदनायुक्त, कारण विना दुखनेवाली. उसीमें वहुत करके ज्वर रहता है और पित्तका श्लीपद पीला, लाल, नरम, दाह करनेवाला, ज्वरसे युक्त रहता है और कफसे श्लीपद चिकना, रोजदार, सफेद, भारी, जड़, कठिन होता है।

श्लीपदरोगका साध्यासाध्यविचार ।

बांबीके समान गोल, उसपर कांटे कांटे होके दीखें, एक बरससे पुराना, बहुत सूजा, मोटा हो वह असाध्य है और जिसका पांव हाथीके माफिक मोटा होके कफके लक्षण हों, बहुत दिनका हों वह असाध्य है और यह रोग समुद्रके किनारे जहां बहुत पानी और वृक्ष हैं उस अनूप देशमें होता है। इसको हाथी-पांव भी कहते हैं और सड़के नासूर पड़ा तो कीड़ा, नगरा, विचर्चिका कहते हैं।

श्लीपदरोगपर उपाय ।

सारण उपाय, लंघन, लेप, पसीना, रेचन, रक्तमोक्ष और कफनाशक उष्ण उपाय करके श्लीपद रोगको जीतना १। घुटनाके ऊपर चार अंगुलपर शिरावेध करना २। पित्तश्लीपदको घुटनेके नीचेकी शिरा वेध करना और पित्तनाशक लेप उपाय वगैरः करना ३। मंजिष्ठ, मुलहटी, रास्ना, जटामांसी, पुनर्नवा ये चीजें कांजीमें पीसके लेप देना ४। पांवके अंगुष्ठकी शिरा वेध करना ५। धतूरा, एरंड, निर्गुंडी, पुनर्नवा, सहँजना, सरसों इनका लेप देना ६। सरसों, सहँजना, देवदारु, सोंठ इनको गोमूत्रमें घिसके लेप देना ७। पिपली, त्रिफला, दारुहलदी, सोंठ, पुनर्नवा ये चीजें हरएक आठ आठ तोला, विधाराको (लिधू) कहते हैं. सबके बराबर लिधूकी जड़ इसका चूर्ण करके एक कर्ष कांजीसे देना. इससे श्लीपद, वातरोग, प्लीहा, गुल्म, अरुचि इनका नाश होता है. इसपर पथ्य नहीं। जो चाहे सो खाना ८। पिपली १ तोला, चित्रक २ तोला, हरड २० तोला, गुड़ ८ तोला एकत्र कूटके शहदसे देना. इससे दारुण श्लीपद रोग जायगा ९। चित्रक, देवदारु इनका लेप देना १०। सरसों सहँजना

इनका कल्क जरा गरम करके लेप देना ११। करंजका रस पीनेसे श्लीपद रोग जायगा १२। पलाशकी जडोंके रसमें सरसोंका तेल डालके देना १३। सफेद एरंडके तेलमें हर्डा तलके गोमूत्रसे देना. सात दिनमें श्लीपदका नाश होगा १४। पुंडरीक वृक्षका मूल सूतमें बांधके पांवको बांधे तो उग्र श्लीपदका नाश होगा १५। गेलफल, सोम, नोन इनको भैंसके मक्खनमें मिलाके पांवमें मालिश करना; दाह, श्लीपद फूटा हुआ पांव साफ होगा १६।

शोथेश्वर घी।

निर्गुंडी,देवदारु, त्रिफला, त्रिकटु,गजपिपली सब जातिके क्षार,विडंग, चित्रक, चवक, पीपलमूल,गूगल,शिरणी, बच,पाठामूल,जवाखार, कचूर, इलायची, वृद्धदारुक (लिसूकी जड़) ये चीजें एक एक तोला। इनमें ६४ तोला घी, दशमूलका काढ़ा ६४ तोला और धनियाँका काढ़ा ६४तोला, दहीका मंड ६४ तोला,इसमाफिक सब मिलाके उसमें सिद्ध करना, उसमेंसे तीन तोला रोज देना. इससे सर्व श्लीपद रोग, अपची, गंडमाला, अंतर्विद्रधि, अर्बुद, संग्रहणी, सूजन, अर्श,कुष्ट, कृमि इनका नाश करके अग्निको प्रदीप्त करेगा। सब रोगोंको शांत करके पुष्ट करेगा, लवंग १॥ मासा, इलायची मासा १॥, जायफल मासा १॥,कस्तूरी मिर्च मासे २, पिपली मासे ३, सोंठ मासे २, कुष्ठ मासे २, शेरी लोहबान तोला ५, शहद तोला १६, सब मिलके चटाना, इसमेंसे एक तोला खाके ऊपरसे बदामका शरबत पीना. ये अनुभूत दवा है १७।

श्लीपदरोगपर पथ्य।

पुराने शालि, सांठीका चावल, सत्तू, कुलथी, लहसुन, परवल, बैंगन, सहँजना, करेले, पुनर्नवा,एरंडके तेल, गोमूत्र, तीक्ष्ण, कडू, दीपन, प्रकृतिको माने सो पदार्थ श्लीपद रोगको हितकारक हैं।

श्लीपदरोगपर अपथ्य

मिष्टान्न दुर्गन्धी पदार्थ, गुड,जलमांस,मीठा खट्टा पदार्थ,फिरना,सिंधु नदी और विन्ध्याद्रि पर्वतसे निकलनेवाली नदियोंका पानी,चिकना,गुरु पतला प्रकृतिको न माननेवाला पदार्थ ये वर्ज्य हैं।

इति श्लीपदरोगनिदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ विद्राधिका निदान।

वातादिक दोष, मज्जा, मेद और अस्थिगत दुष्ट होके त्वचादिकसे

लके भयंकर सूजन गांठ पैदा करते हैं. उसको विद्रधि रोग कहते हैं.उसकी जड़ हड्डीतक रहती है और उत्पन्न हुए बराबर बड़ी लंबी भयंकर गांठ होती है उसको गलूही कहते हैं, कोई केस्तूड कहते हैं, वह हरएक दोषोंसे तीन सन्निपातसे एक,क्षयसे एक मिलके छः प्रकारकी विद्रधि होती है१।

वातविद्रधिके लक्षण ।

काली, अरुण, छोटी, मोटी, वेदनायुक्त उसमेंसे चमक होना, नाना रंगके रक्त, पीव निकलना और वातके उपद्रव होते हैं २ ।

पित्तविद्रधिके लक्षण ।

पके हुए गूलरके फलके माफिक रंग श्याम होके ज्वर, दाह, चमकके उसको पैदा करती है और पकना जलदी होता है. पित्त-उपद्रवसे युक्त रहती है ३।

कफविद्रधिके लक्षण।

बड़ी, सफेद,ठंडी, स्निग्ध वेदना कम उसका पैदा और पकना देरसे होके कफ उपद्रव रहता है ४।

सन्निपातविद्रधिके लक्षण ।

बहुत पीडा होके सब लक्षणोंसे युक्त रहती है और पके पीछे सब विद्रधियोंमें पीला, लाल, सफेद ऐसा पीप निकलता है, सन्निपातमें सब दोषोसे मिला हुआ निकलता है ५ ।

अभिघातक्षयविद्रधिके लक्षण ।

लकड़ी पत्थर शस्त्र लगनेसे, क्षयसे क्षीणतामें,अपथ्य भोजन करनेसे वातमिश्रित पित्त रक्त कोपसे उस आदमीको ज्वर, तृषा, दाह होके सब पित्तविद्रधिके लक्षण होते हैं ६ ।

रक्तविद्रधिके लक्षण।

काले फोड़े, श्यामवर्ण, दाह, ठनका, ज्वर होके क्रोध, वेदना हो और पित्तविद्रधिके लक्षण हों तो वह रक्त विद्रधि है १।

विद्रधिके स्थान ।

गुदा-इसमें वातरोध होकरके भगंदर होता है १। बस्तीमें-इससे पेशाब कम होता है २ । नाभिमें-इससे हिचकी आदि पैदा होती है ३।

कोखमें--इससे वातकोप होता है ४। अंडसंधिमें-इससे कमर पीठका खिंचासा होना ५। कुक्षिमें-इससे पसलियां संकोच करती है ६। प्लीहामें उत्साहको पीड़ा होती हैं ७। कलेजेपर-इससे श्वास हिचकी लगती है८। हृदयपर इससे सब शरीर जकड़ना, कंप होना ९। क्लोममें--इससे वारंवार प्यास लगती है १० ।

विद्रधिका साध्यासाध्य ।

नाभिके ऊपर विद्रधिका स्राव मुखसे होता है और नाभिसे नीचेका स्राव गुदासे होता है और नाभिका स्राव दोनों द्वारसे होता है ।

विद्रधिका असाध्य लक्षण ।

हृदय, नाभि, बस्ति ये ठिकाने छोड़के बाकी प्लीहा क्लोम इनकी विद्रधि बाहरसे पके तो साध्य है और अंतर्विद्रधि असाध्य होती है और सन्निपातविद्रधि आध्मानयुक्त पेशाब बन्द होनेवाली, उलटीसे क्षीण, हिचकी, तृषा इनसे पीड़ा, ठनका, श्वास, जिसकी उलटीमें पीप गिरता है उसे असाध्य जानना ।

विद्रधिपर उपाय ।

वरुणादि घी देना १ ।

त्रिफलादिगूगल ।

त्रिफला १२ तोला, पिपली ८ तोला, गूगल २० तोला मिलाके योग्य अनुपानसे देना२। पुनर्नवादि काढ़ा विद्रधिका नाश करता है ३। वरुणादि काढ़ेमें कजली देना ४। जव, गेहूं, मूंग, इनके आटेका पोलटिस बांधना ५। विद्रधिरोगपर जोक लगाके रक्त निकालना, हलका जुलाब देना, हलका अनाज देना ६। त्रिफला, निशोथ इनके काढ़ेमें शकर डालके देना. इससे पित्तविद्रधि जायगी ७। बड, आम, पायरी, जामुन इनकी छाल पीसके घी लगाके पिंडी बांधना ८। ईंट, रेती, लोह, घोड़ाकी लीद, तुष इनसे सेकके पसीना काढ़ना, गोमूत्रसे सेकना ९। जो स्त्री प्रसूति होतीवक्त उसके स्तनमें विद्रधि होती है उसको सहँजनाकी अंतर छाल, हींग, सेंधवलोन इनका चूर्ण प्रातःकाल देना १०। सहँजनाकी जड़ पानीमें घिसके शहद डालके पिलाना ११। और विद्रधि रोगको जो दवा गंडमाला, गलगंड ग्रंथिपर कही है वह उपाय करना, इससे आराम होगा ।

विद्रधिरोगपर पथ्य

कच्ची विद्रधिपर रेचन, लेप, पसीना, रक्तमोक्ष, पुराना सावां, पुराने शलि, कुलथी, लहसुन, रक्त सहँजना, करेला, पुनर्नवा, नरवेल, चित्रक, शहद और सूजनपर जो पथ्य कहा है तथा शस्त्रकर्मपर चावल, घी, तेल, मूंग, जंगली मांस, रस, गन्ना, अदरख ये पदार्थ हितकारक हैं ।

विद्रधिरोगपर अपथ्य ।

जो अपथ्य व्रणरोगपर कहा है वह विद्रधिपरभी अपथ्य है और खार, वातल, गुड़, बैंगन और खट्टा, खारा और प्रकृतिको न मानें वे चीजें मना हैं।

अथ व्रणस्रोत्रका निदान ।

पहली विद्रधि आदि गांठ फूटके सुराख होता है उसे व्रण कहते हैं । वह छः जातिका है हरएक दोषसे तीन सन्निपातसे एक रक्तसे १ सन्निपातसे १ आगंतुक १ मिलके छः प्रकारके व्रण होते हैं । पूर्वमें जो ग्रंथि आदिके लक्षण हैं वे इनमें भी होते हैं, उससे पहचान लेना चाहिये । वातसे अनेक वेदना होती है और पित्तसे अनेक दाहादिक होते हैं और कफसे खाज और पीप आती है । त्रिदोषमें सब लक्षण होते हैं । जैसे अग्नि हवाकी सहायतासे प्रबल होता है वैसे व्रणमें पका पीप नहीं निकला तो व्रण सड़ जाता है. इसवास्ते पक्का व्रण चीरके पीप निकालना चाहिये और दवासे फोड़ना चाहिये, कच्चा और पक्का पहचानना । व्रण दो जातिका है, शरीरसे एक और घाव लगनेसे एक ऐसा दो जातिका व्रण होता है. वात व्रणमें कड़क, ठनका अनेक वेदनासे युक्त विषमभाव, स्राव होना २ ।

पित्तव्रणके लक्षण ।

दाह, तृषा, ज्वरसे युक्त, दुर्गंध, पीप पतला ज्यादा बहता है ।

कफव्रणके लक्षण ।

कफसे ज्यादा स्राव, पीप गाढ़ा, सफेद, खाज, वेदना कम देरसे पकना द्वंद्वजमें दो दोषोंके लक्षण, सन्निपातसे सब लक्षण होते हैं यह असाध्य है ।

व्रणका असाध्य लक्षण ।

कोढ़वाला विषप्रयोगसे क्षयरोगवाला, मधुमेहवालेका, पूर्वके नासूर पर पीछे हुआ ये व्रण असाध्य है ।

आगन्तुक व्रणके लक्षण ।

अनेक जातिके शस्त्रादिके लगने, गिरने, पड़नेसे व्रण होता है और बरछी, भाला, बाण, तरवार, दांत, सींग इनके लगनेसे व्रण होता है. इसका लक्षण दोषभेदसे ऊपर लिखे मुजब जानना ।

कोष्ठस्थान ।

आमाशय, अग्न्याशय, पक्वाशय, मूत्राशय, रक्ताशय, कलेजा, प्लीहा, हृदय, मलाशय, फुप्फुस इन सबके स्थान कोठामें हैं. इन जगहोंमें व्रण होके रक्त और पीपसे कोठा पूर्ण हुआ तो ज्वर दाह होकेमूत्र, गुदा, मुख, नाक इनमेंसे रक्तको बहाता है और मूर्च्छा, श्वास, तृषा, पेट फूलना, अन्नद्वेष, मल, पेशाव, हवा इनका कब्जपना, पसीना, आखोंमें लाली, मुखमें लोहकीसी दुर्गंध, शरीरमें दुर्गंध, छाती व पसलीमें शूल ये लक्षण होते हैं और अमाशयमें खून गया हो तो रक्तकी उलटी होना, पेट फूलना, ज्यादा शूल होना ये आगंतुक व्रणके लक्षण हैं, उसका नाम छिन्न (कट) भिन्न (फटा) विद्ध, क्षत, पिच्चित, घृष्ट इनका लक्षण नामसे समझ लेना ।

मर्मकी जगह ।

मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि, संधि इनके मर्मोंको जखम हो तो उससे श्रम, बकना, इंद्रिय, दिल व्याकुल होना, हाथ पांव पछाड़ना, ग्लानि, उष्णता, मूर्च्छा, दम लगना, वातकी तीव्र पीड़ा, मासके पानीके माफिक स्राव होना. ये लक्षण पांच तरहके मर्म विद्ध होनेसे होते हैं ।

शिराकी जखम ।

बिगड़नेसे बहुत लाल खून निकलना, इससे क्षीण होके वातादिक रोग होते हैं ।

संधिकी जखम ।

चल अचल संधिका क्षत होनेसे सूजन, वेदना, कम ताकत, संधिमें दर्द होता है ।

अस्थिका व्रण।

रात दिन पीड़ा, नींद न आना, अस्थिवेधसे ऐसा होता है ।

व्रणका उपाय ।

रक्त निकालना, पोलटिस बांधना, पके पीछे चीरना १। शोधन और भरनेकी दवा करना २। अभ्यंग करके सेकना ३। अंगुष्टसे मालिश करना ४। सूजन, ठनक हो तो जोक लगाके निकालना ५। करंज, चित्रक, दांती, कनेर इनकी मूलका लेप देना ६। सनका वीज, सहँजनेकी छाल, तिल, सरसों, जव, अलसी इनको पीसके पोलटिस करके बांधना. इससे सर्व व्रण रोग जायगा ७। दांतीमूल, चित्रककी छाल, थोहरका तथा आकड़ेका दूध, गुड़, भिलाँवाका मगज, हीराकसीस, सेंधवलोन इनको पीसके लेप देना. पका व्रण तुरत फूटेगा ८। हाथीके दांतको पानीमें घिसके लेप देना. इससे कैसा ही कठिन व्रण हो तो भी पकके फूटेगा ९ । जव, गेहूंके आटामें खार डालके पोलटिस करके बांधना १० । हलदीकी राख, चूना मिलाके लेप देना ११। बकरीकी लेंडीकी राखका ग्वार, सांभर, नोन, मिलाके लेप देना १२। नीम और कडू पटोलके काढ़ासे व्रणको धोके साफ करना १३ । व्रणके शोधनको तिल, सेंधवलोन, जेठीमद, नीमका पानी, हलदी, तेंड इनको शहदमें घोटके लेप देना १४ । कललावीके पत्ते, धतूरा, बबूलके पत्ते इन हरएकका लेप देना, इससे व्रण जायगा १५। बड़, गूलर, पीपल, कलंब, अम्ली, बेतस, आक, कुटकी इनका काढ़ा व्रण भरके लानेको हितकारी है १६ । सतवगकी छाल दूधमें बांटके लेप देना. इससे दुष्ट व्रण शांत होगा १७ ।

नीम कल्क रस ।

नीमके पत्ते, घी, शहद, दारुहलदी, जेठीमद इनका चूर्ण करके उसकी बत्ती देना. इससे व्रणके कृमियोंका नाश होगा १८ । तिलका पोलटिस व्रणका शोधन करके करना, कृमिका नाश होगा १९ । नीम, किरमाला, चमेली, आक, सतवन, कनेर, विडंग इनका काढ़ेसे सिंचन, लेपन करना धोना, व्रण, साफ, करता है २० । करंज, नीम, निर्गुंडी इनका रस लगानेसे व्रणकी कृमि नष्ट होते हैं २१। लहसनका लेप देना, कृमिनाश

होगा २२ । नीमके पत्ते, बच, हींग, घी, सेंधवलोन इनकी धूनी देना. इससे कृमि, क्षय, व्रण इनका नाश होगा २३ ।पारा, गंधकइनकी कजली उनके समभाग मुरदाशंख सबके समभाग कपीला, थोड़ा लीला-थोथा इनको खरल करके इनमें चौपट पुराना घी डालके लगावे. इससे व्रणशोधन होगा.नाडीव्रण,शंखव्रण और केसाही व्रण हो इससे नष्ट होगा२४। पारा, गंधक,मुरदाशंख,सिंदूर लाल, कपिला,लीला थोथा, सफेद कत्था, पाषाणभेद, शिंगरफ, रसकपूर, काली मिरच सबको समभाग लेके खरल करके चौगुना पुराना घी डालके मलहम बनावे । उसकी पट्टी लगानेसे सब जातिका जखम भरके सब व्रणकी हड्डियोंका व्रण,गंभीर,नासूर सबका नाश करेगा.यहहमारा अनुभव किया है.हजार ठिकाने अनुभव लियाहै२५।

गूगलवटी ।

त्रिफलाके चूर्णसे गूगल मिलाके गोली बांधके रोज एक एक खाना इससे बद्धकोष्ठ, साफ होके व्रणका नाश करेगा २६ । गुग्गुरू, गूगल देना २७ । विडंग, त्रिफला, त्रिकटु सबके समभाग गूगल मिलाके गोली बांधे उसके देनेसे दुष्टव्रण,अपची,पांवकुष्ठ,नाड़ीव्रण इनका शोधन करता है२८। सांपकी केचुली घेरोसा इनका लेप देना२९। दूब,देवनलकी जड़,जेठीमद, चंदन,शकर,घी और सब ठंडी चीजोंका लेप पित्तव्रणवालेको देना ३० ।

अंगार इत्यादिकोंसे जल जाता है उसका निदान ।

गरम घी,तेल,पानी,लोहा आदि धातु और बारूद ऐसे अनेक प्रकारसे आदमी जल जाता है उससे व्रण होता है. उसके लक्षण अनेक हैं, परंतु चार प्रकारके शास्त्रमें लिखे हैं १स्निग्धसे २रूक्षसे ३ द्रव्यके आश्रयसे ४अग्निसे । उसके लक्षण—चमड़ामें भेद करके ठनकता है ज्वर, दाह, शोष,मूर्च्छा,श्वास ये होके कच्चा ही मांस चरबी जलनेसे व्रण होके पीड़ा होती है. उसके ऊपर इसी माफिक उपाय करना जो आगे लिखा है।

अंगार इत्यादिकोंसे जो जल जाता है उसका उपाय।

व्रणको अग्निसे सेकके गरम दवा बांधना १। दुर्गंधपर शीत उष्ण क्रिया करना २। पीछे घी अधिक लेप करना ३। सड़ा मांस निकालके ठंडा लेप करना ४। चावलकी भूसीके काढ़ेमें घी डालके सिंचन देना ५। टेंभुर्णीकी छालके काढ़ेमें घी डालके लेप करना ६। सम्यग्दग्धपर पारा, वंशलोचन, बड, चंदन, गेरू, गिलोय इनके कल्कमें घी डालके लेप देना ७। हरडा, चिखड, जीरा, जेठीमद, मोम, राल इनका लेप देना ८। अग्निसे जलेपर गायका घी लगाना ९। पुराने चूनेमें दहीका पानी डालके मंथन करना और तेलसे जले व्रणपर लगाना. इससे व्रणनाश होगा १०। गूंदकी छाल, त्रिफला, दारुहलदी इनके काढ़ेमें गोरोचन डालके नेत्रपर सिंचन देना ११। खाजपर घीका सिंचन देना. इससे नेत्रोंका अग्निविकारसे हुआ रोग शान्त होगा १२। मेंडकका तेल लगानेसे अग्निव्रण जायगा १३। सेमराकी रुई पानीमें पीसके लेप देना १४। पानीके शिवाल (लील) का लेप करना १५। धायके फूलोंका चूर्ण अलसीके तेलमें खरलकर लगानेसे अग्निदग्ध व्रण जायगा १६। त्रिफलाकी राख, रेशमकी राख तेलमें खरल करके लगाना, अग्निव्रण जायगा १७। जवको जलाके उसकी राख तिलके तेलमें लगाना, व्रणनाश होगा १८। चंदन, बडकी जटा, मंजिष्ठ, मुलहटी, शहद पुंडरीक वृक्ष, दूब, पतंग, धायटीके फूल इनका कल्क करके उसमें दूध डालके तेल सिद्ध करके लगावे तो अग्निदग्ध व्रण भर आवेगा १९। कडू पटोलके काढ़ा और कल्कमें सरसोंका तेल सिद्ध करना और लगाना, इससे व्रण, ठनक, स्राव, दाह, फाटना ये नाश होवेगा २०।

आगंतुक व्रणपर उपाय।

विसर्प, आधा अंग, शिरास्तब्ध, अपतानक, मोह, उन्माद, व्रण, ज्वर, तृषा, हनुग्रह, खांसी, उलटी, अतिसार, हिचकी, दम, कँपना ये सोलह उपद्रव व्रणके हैं। इनसे सब लक्षण जानना। सब व्रणको उलटी देना। जुलाब देना. लंघन, रक्त काढ़ना, स्नेहपान, सिंचन करना, लेप, पसीना, बांधना, वातनाशक चीजें, बस्ति ये उपाय करना और शस्त्रघातको पहिले रेशमके कपडेसे मजबूत बांधना, रोगी दिलसे कहे ऐसा उपाय करना १। अजवाइन नोनकी पोटलीसे

सेक देना २ । शिंगडीसे रक्त निकालना ३ । मुलहटी डालके सात दिन ठंडे घीसे सिंचन करना और तुरस, मधुर, शीतल उपाय करना. बाद सामान्य उपाय करना ४ । आमाशय फूटके रक्तसंचय हो तो उलटी देना चाहिये और पक्काशयरक्तसंचय हो तो जुलाब देना५। वांसकी छाल, एरंडमूल, गुखुरू, पाषाणभेद इनके काढ़ेमें हींग, सेंधवलोन डालके देना; इससे कोठका रक्त बंद होगा, स्राव करेगा ६ ।

गोरोचनादि घी ।

गोरोचन, हलदी, मंजिष्ठ, जटामांसी, मुलहटी, पुंडरीक वृक्ष, खश, तगर, मोथा, चंदन, चमेली, नीम, पटोल, करंजके बीज, कुटकी, शहद, मेदा, महामेदा इनके काढ़ेमें १६ तोला घी सिद्ध करके देना, लगाना, यह सर्व व्रणका नाश करके शोधन आगंतुक व्रण, सहज व्रण, नाड़ीव्रण इनका नाश करता है ७ ।

विपरीतमल्ल तेल ।

सिंदूर, कुष्ठ, विष, हींग, कांदा, बणफूका, कललावी, हरताल, नीला-थोथा, अफीम इन चीजोंसे तिलका तेल सिद्ध करना. सर्व व्रण, शस्त्रघाव, गांठ, गर्मी, नाडीव्रण, किडीनगरा, गंभीर, कोढ़, खुजली इनका नाश करेगा ८।

व्रणादिक रोगपर सप्तविंशति गूगल ।

त्रिफला, मोथा, बायबिडंग, बच्छनाग, चित्रकमूल, कडू पटोल, पीपल-मूल, हपुषा, देवदारु, चिरफला, पोहकरमूल, चवक, कडूवृंदावन, हलदी, दारुहलदी, बिडनोन, सेंधवलोन, गजपिपली इनको समभाग लेके इनके चूर्णसे दूना गूगल लेके गोली आधा तोलाकी बांधके शहदसे देना. यह खांसी, दमा, सूजन, अर्श, भगंदर, हृदय, पार्श्व, कोख, बस्ती, गुदा इन ठिकानोंकी, शूल, ठनका, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, अन्त्रवृद्धि, कृमि, आनाहरोग, उन्माद, सब कोढ़, सब उदर, नाडीव्रण, परमा श्लीपद इनका नाश करता है और योग्य अनुपानसे सर्व रोगोंका नाश करता है ऐसा धन्वंतरिने कहा है ८ ।

इति व्रणरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ भग्नका निदान ।

अग्निवेश्य--कांडभंग और संधिभंग मिलाके संक्षेपसे भग्न दो प्रकार-

का है। संधिभग्न ६ प्रकारके हैं। उनके नाम १ उत्पिष्ट २ विश्लिष्ट ३ विवर्तित ४ तिर्यक् ५ विक्षिप्त ६ अधःक्षिप्त।

संधिभंगके सामान्य लक्षण।

पांव पसारनेमें, सिकोर लेनेमें, उठनेमें, बहुत दुःख होना, स्पर्श सहन न होना ये लक्षण संधिभंगके हैं १।

उत्पिष्टके लक्षण।

संधिकी चारों तरफसे सूजन, रातको ज्यादा होना, संधिमें हड्डीसे हड्डी टिककर होना ये उत्पिष्टके लक्षण जानना २।

विश्लिष्टके लक्षण।

चारों तरफ सूजन, रात दिन पीडा होना, संधि शीतल होके हड्डी बाजूको होके बीचमें खड्डा पड़ना ये विश्लिष्टके लक्षण जानना ३।

विवर्तितके लक्षण।

इसमें दोनों तर्फ हड्डियां बाजूको होना, ज्यादा पीडा होके हड्डियां फिरती हैं ये विवर्तितके लक्षण जानना ४।

तिर्यक्के लक्षण।

इसमें ज्यादा पीडा होके एक हड्डी संधिसे टेढ़ी जाती है ये तिर्यक्के लक्षण जानना ५।

विक्षिप्तके लक्षण।

ऊर्ध्व क्षिप्तमें ज्यादा शूल होना, हड्डियोंमें कम ज्यादापना होना, पीड़ा होके एकसे एक हड्डियां दूर होना ६।

अधःक्षिप्तके लक्षण।

पीडा होना, संधिमें बिगाड़ होना, इसमें संधिके हाड परस्पर दूर होते हैं, लेकिन् किंचित् नीचे जाते हैं. अब कांडभग्नमें १२ बारह भेद हैं १।

कर्कटकमें-दोनों बाजूसे हड्डियां दबके बीचमेंसे उठीसी मालूम होती है १

अश्वकर्णमें-घोडाके कानके माफिक हड्डी होना २।

विचूर्णितमें-हड्डियोंका चूरा २ सा मालूम होता है. आवाज होती है ३।

पिच्चितमें-दबीसी हड्डियां होती हैं ४।

अस्थिछल्लिकामें-हड्डियोंका कुछ भाग गुंथा है ऐसा मालूम होता है५।
कांडभग्नमें-हड्डियोंका कांड टूटना ऐसा दीखता है ६ ।
अतिपातमें-सब हड्डियां टूटके टुकड़ा टुकड़ा होती है ७।
मज्जागतमें-हड्डी टूटके गुदामें घुसके गुदाका वाहर काढ़ती है ८।
स्फुटितमें-हड्डियोंके बहुत टुकड़े हो जाते हैं ९।
वक्रमें -हड्डियां टेढ़ी हो जाती है १० ।
छिन्नमें-छोटे २ बहुत टुकड़े हो जाते हैं ११ ।
छिन्नमें-दूसरा एकबाजूकी हड्डियांका घसरहके दूसरेवाजूकी चूराहोतीहैं१२।

कांडभग्नके सामान्य लक्षण ।

शरीरमें ग्लानि, सूजन, बहुत ठनक, उस जगहकी हड्डियोंमें आवाज, स्पर्श सहन नहीं होना, कंपना, शूल, चैन न पड़ना, कांड शब्दसे नलियांकपाल; वलय, तरुण, रुचक इन पांचों तरहकी हड्डियोंका ग्रहण होता है ।

कष्टसाध्य ।

कांडका अनेकजगहसे टूटना. अल्प खाना, बेपथ्य करनेवाला वातप्रकृतिवाला, ज्वरादिक अनेकरोगवाला ऐसे आदमीकी हड्डी जुडना मुश्किल है।

कांडभग्नका असाध्य लक्षण ।

कमर, कपालका हाड़ फटा, संधिसे दूर हुआ, जगहपर चूरा हुआ, छाती, पीठ, मस्तकका और बेपथ्यसे रहनेवाला, ढक्का लगानेवाला असाध्य है और तरुण दबती हैं, नलियां फटती हैं, कपालकी फूटती हैं, रुचक टूटता है. ऊंडी होना फटना ।

भग्नपर उपाय ।

भग्न हुई हड्डियोंपर सिंचन देना, लेप करना, बांधना १।संधि ढीली बांधे तो जोडना मुश्किल है, खींचके बांधे तो सूजन आती है इसवास्ते माफिक बांधना चाहियेर।हड्डीभंगपर पहले खूब ठंडा पानी छिड़कना, बाद मट्टीका लेप देना, बाद केश कुशादिकसे बांधना३।हड्डी टेढ़ी होतोसीधी करना,

उपर चढे तो दबाके नीचे बैठाना और टूटके टुकड़ा हो तो दोनों बाजूसे बराबर बैठाके मजबूत युक्तिसे बांधना चाहिये ४। मंजिष्ठ,मुलहटी इनको निंबूके रसमें खरल करके १०० बार धोया घी चावलका आटा मिलाके लेप देना ५। पंचमूलका काढ़ा दूधमें सिंचन करके देना. इससे ठनका बंद होगा ६। पिठवनकी जड़का चूर्ण मांसरससे सात दिन सेवन देना. इससे टूटी हड्डी दुरुस्त होगी ७। बंबूलके बीजका चूर्ण शहदसे तीन दिन देना. इससे हड्डियां वज्रके माफिक मजबूत होंगी ८। ताजी व्याई गायके दूधमें मधुर दवाई डालके गरम करना. उसमें घी, लाखका चूर्ण डालके ठंडा करके फजिरमें पिलाना. इससे टूटी हड्डियां दुरुस्त होगी ९। लाख, गेहूं, अर्जुनकी छाल इनका चूर्ण दूधमें घी डालके पिलाना. इससे संधिभग्नगत हड्डियां साफ होंगी १०। लहसन, शहद,लाख,शकर इनके कल्कमें घी डालके देना.इससे टूटी और फूटी हड्डियां दुरुस्त जलदी होगी। लाख हरडे, अर्जुनकी छाल, असगन्ध,नागवला, गूगल इनका चूर्ण देना. इससे हड्डीभंग, गई हड्डियां आराम होके वज्रके माफिक शरीर दुरुस्त होगा १२। बबूलके बीज,त्रिकटु,त्रिफला ये समभाग लेके इनके समभाग शुद्ध गूगल मिलाके देना.इससे सर्व जातिकी हड्डियां जुड़ जाती हैं, मजबूत होती हैं १३। अच्छा परहेज करके प्रवालभस्म शहदसे देना. हड्डियां मजबूत होगी१४। थोड़ा भूना गेहूंका चूर्ण शहदमें डालके देना. यह टूटी हुई कमरकी संधिको फायदा करेगा।

सर्व जातिके व्रण और भग्नपर पथ्य।

व्रणशोथ, व्रण, सद्योव्रण, नाड़ीव्रण इनपर जव, साठीका भात, गेहूं पुराना चावल, मसूर, अहर, मूंग इनका जूस, शहद, शकर, पकाया मंड, जंगलीमांसरस, घी, तेल, परवल, बांसके कोपल, नरममूली, करेला, चँवलाई ये पदार्थ दोष देखके देना हितकारक है। दाह करनेवाला अन्न, पान, मांसरस, दूध, घी, मूंगका जूस, पुष्ट चीजें भग्नपर हितकारक हैं।

सर्व जातिके व्रण और भग्नपर अपथ्य।

नोन,मिर्ची,खार,खटाई ये रस,मैथुन,गन्ना,गुड़,व्यायाम, रूक्ष ये नहीं देना और बालक जवानकी हड्डियां टूटें तो जलदी आराम होती है,बूढ़े आदमीकी टूटें तो कठिन है;और श्रम करना,जोरसे बोलना,औरतोंको देखना,

दिनका सोना, रातका जागना, फिरना, रोना, क्रोध करना, विरुद्ध खाना पीना, उष:पान, तांबूलका साग, जलमांस और जो प्रकृतिको नहीं मानें वे चीजें वर्जित हैं । इति भग्नका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ नाड़ीव्रणका निदान-कर्मविपाक ।

जो आदमी दूसरेके व्रणका भेद करे, असत्य बोले, उसको फीया नाडीव्रणरोग होता है ।

कर्मविपाकका परिहार ।

चांद्रायण प्रायश्चित्त करना, अतिकृच्छ्र करना, रुद्रेण ऋग्वेदोक्त सूक्तका अष्टोत्तर होम करना और दान, पुण्य करना ।

नाड़ीव्रण होनेका कारण ।

जो पक्के व्रणका पीप नहीं निकलता अंदर रहके भेद करके दूसरे धातुको बिगाड़के ऊंडा जाके पीप एक रास्तेसे बहता है वह एक सरीखा नाड़ीके माफिक चलता है, उसे नाड़ीव्रण कहते हैं ।

संख्या, रूप, संप्राप्ति ।

हरएक दोषसे ३, सन्निपातसे १, शल्य पाससे १, ऐसे नाडीव्रण पांच तरहके होते हैं ।

वातनाड़ीव्रणके लक्षण ।

व्रणका मुख रूक्ष, छोटा, शूल होना, फेनायुक्त पीब बहके रातको ज्यादा होना ।

पित्तनाडीव्रणके लक्षण ।

तृषा, ज्वर, दाह होके पीला गरम बहुतसा पीप बहके दिनको ज्यादा होता है ।

कफनाडीव्रणके लक्षण ।

सफेद, गाढ़ा, चिकना पीप बहके खांसी खाज आती है, सन्निपातज नाड़ीव्रणमें सब लक्षण होते हैं ।

शल्यनाड़ीव्रणके लक्षण ।

एक आधा दांत उखाड़ते वक्त और हड्डी चीर फाड़ करनेके वक्त

उसका सल रहके पकके व्रण पैदा करता है. उसमेंसे फेनायुक्त गरम पीप बहता है. उसको शल्यनाडीव्रण कहते हैं।

नाड़ीव्रणपर उपाय।

चमेली, आक, किरमाला, करंज, दातीमूल, सेंधवलोन, कालानोन, जवाखार एकत्र करके बत्ती बनाके उस व्रणमें डालना.इससे व्रण अच्छा होगा १। थोहरके दूधमें सेंधवलोन खरल कर उसकी बत्ती करके व्रणमें देना २। निर्गुडीका पंचांग लेके कूटके रस निकालके उसमें तिलोंका तेल मिलाके सिद्ध करके देना ३। आदमीकी हड्डीका तेल सब व्रणका नाश करता है ४। विडंग,त्रिफला, त्रिकटु इनके चूर्णके बराबर शुद्ध गूगल मिलाके पीस गोली बांधके देना, यह व्रण, दुष्टव्रण, परमा, कोढ़ नाड़ीव्रण इनका नाश करती है ५। किरमाला, हलदी, बेर इनका चूर्ण शहदसे खरल करके उसमें बत्ती भिगोकरके नाड़ीव्रणमें डालना. इससे नाड़ीव्रण शुद्ध होता है ६। भुने लीलाथोथेमें शिंगरफ मिलाके बत्तीमें और सलाईसे देना. इससे सब व्रणोंका नाश होगा ७। और पीछे जो व्रणमें दवा लिखी है सो सब दवा करना,वह फायदामंद है ८। नाड़ीव्रणपर पथ्य पहले व्रणपर कहा है, उस मुजब करना और साठीका चावल, गेहूं, पुराना चावल, मसूर, अरहर, मूंग, मिश्री, लाई-मंड, जंगली मांस और हितकारी पदार्थ देना।

नाड़ीव्रणपर अपथ्य।

रूक्ष, खट्टा, नोन,शीत,मैथुन, जोरसे बोलना,गायन, दिनका सोना, रातको जगना, फिरना, शोक और व्रणपर जो पथ्य कहा है सो नाड़ीव्रणवालेको वर्ज्य है।

अथ भगंदरका निदान-कर्मविपाक।

अपने गोत्रकी स्त्रीसे गमन करेगा. सो आदमी भगंदररोगी होगा।

कर्मविपाकका परिहार।

सोनेका शींग, चांदीका खुर, ऐसी मेषी (भेड़) दान करना और अग्निदेवताका ध्यान करना. इससे शांत होगा।

भगंदर होनेका कारण ।

गुदासे दो अंगुलके घेरेमें एक पिटिका होती है वह गांठ पके बाद फूटके नासूर पड़ता है,बहता है,पीप निकलता है उसको भगंदर कहते हैं।

भगंदरका पूर्वरूप ।

कमर, कपालको टोचनी लगना, जलन होना, खाज आना, ठनक लगना इन लक्षणोंसे भगंदरका पूर्वरूप समझना।

निरुक्ति ।

जो गुदाके ऊपर आसपासके भागपर गुदा और बस्तीके मध्यभाग को एक सरीखा विदीर्ण करता है, उसको भगंदर कहते हैं १ ।

शतपोनक भगंदरके लक्षण ।

तुरस रूक्ष ऐसे अनेक कारणोंसे वायुकुपित होके गुदस्थानपर गांठ होती है वह उपेक्षा करनेसे पकके फूटती है, ठनकती है, उसमेंसे लाल फेनयुक्त पीप बहता है और बहुत छिद्र पड़ते हैं उन छिद्रोंमेंसे पेशाब,मल ये निकलते हैं और शुक्र धातु निकलता है.इसको शतपोनक कहते हैं२।

उष्ट्रशिरोधर भगन्दरके लक्षण ।

पित्तविरुद्ध चीजोंका आहार विहार करनेसे पित्त बिगड़के गुदाके पास लाल रंगकी गांठ पैदा होके जलदी पकती है, उसमेंसे गर्म पीप निकलता है. उस पिटिकाका आकार ऊँटकी गर्दनके माफिक होता है इसवास्ते उसका नाम उष्ट्रशिरोधर भगंदर रखा है ३ ।

शंबूकावर्त भगंदरके लक्षण।

जिसमें गौके स्तनके माफिक अनेक गांठें होके उस कारणसे वेदना युक्त अनेक तरहकी वेदना होके व्रण शंखके माफिक पोल होता है,इसवास्ते इसका नाम शंबूकावर्त भगंदर दिया है ४।

परिस्राविभगंदरके लक्षण।

कफसे हुए भगंदरमें खाज आना, पीप, गांठ निकलना, ठनक, पीडा, सफेद रंग रहता है यह परिस्रावि भगंदरका लक्षण समझना ५।

अर्शभगंदरके लक्षण।

पित्तादि दोष कोपके अर्शकी जगहपर मूलमें खाज, दाह युक्त शीत सूजन उत्पन्न करते हैं,उससे अर्शका अंकुर पकके सड़ता है और ज्यादा बहता है, इसको अर्शभगंदर कहते हैं।

उन्मार्गी भगंदरके लक्षण।

कांटा कोर आदिककी चोट लगके जो छिद्र होता है, उसकी उपेक्षा करनेसे बढ़के वही गुदातक जाता है, उसमें कीड़े पड़ जाते हैं. और वे कीड़े अनेक छिद्र कर देते हैं. इसको उन्मार्गी भगंदर कहते हैं।

भगंदरका असाध्य लक्षण।

सर्व भगंदर कष्टसाध्य है.त्रिदोषज भगंदर असाध्य है.क्षयवालेका जिसमेंसे मल, मूत्र व कृमि शुक्र निकलें वह असाध्य है।

भगंदर रोगपर उपाय।

जोक लगाके रक्त काढ़ना,न पके तो इलाज करना १।सोना तपाके दाग देना,बाद अग्निदग्ध व्रणकी दवाइयाँ करना २।जुलाब देना,रक्त निकालना ३।

शोधन तेल।

चित्रक, आक, तेंड, पाठामूल,बावची, कनेर,निवडुङ्ग, बच,कललावी, हरताल, सज्जीखार, मालकांगनी इन दवाइयोंके काढ़ेमें तेल सिद्ध कर देना. यह शोधन, रोपण, व्रणका नाश करनेवाला है ४।त्रिफलादि गूगल देना ५। योगराज गूगल देना ६। हलदी,आकका दूध,सेंधवलोन,चित्रक, शरपुंखी,मंजिष्ठ और कुडा इनसे तेल सिद्ध करना. उसकी योजना करना, भगंदर नष्ट होगा ७। कुत्तेकी हड्डी और घूंबीकी हड्डी रक्तसे घिसके लेप देना, भगंदरका नाश होगा ८। आदमीकी हड्डीका तेल लगानेसे भगंदरका नाश होता है ९। त्रिफलाके काढ़ामें बिल्लीकी हड्डी घिसके लगानेसे दुष्ट व्रण, भगंदरका नाश होगा १०। बटमोगरा, ईंट, सोंठ, गिलोय, पुनर्नवा इनका लेप देना ११। खैर, त्रिफला इनके काढ़ेमें भैंसका घी, विडंगका चूर्ण डालके देना,भगंदरका नाश होगा १२। सप्तविंशतिगूगल देना १३।व्रणरोगपर जो मलहम आदिक लिखे हैं उन्हें लगाना, निश्चय भगंदरका नाश होगा १४।लीलाथोथा भूनके मक्खनमें लगाना,१५।सर्व व्रणकी

दवा भगंदरपर देना १६। लीलेथोथे के पानीकी पिचकारी व्रणमें देना १७। सलाईसे दवा लगाना १८। शुद्ध पारद, गंधक, शिंगरफ, रस-कपूर, खुरासानी, अजवाइन, बच ये सब समभाग लेके पीसना, उसमें किरमानी, अजवाइन, मिलाके उसकी धूनी युक्तिसे गुदाके व्रणको देनेसे सर्व जातिका भगंदर, व्रण, अर्श, गंभीर, हाड्या व्रण इन सब रोगोंका नाश करता है.इसका अनुभव १००जगह हमने लिया है। फक्त मुखको धुवाँ लगा तो मुँह आता है और कुछ हरकत नहीं १९। और उपदंशपर जो दवाइयां लिखी हैं सो देना. इससे भगंदर नाश होगा २०। रसकपूर, नरलौंग, शीतल मिरची, इलायची ये चारों समभाग लेके चूर्ण करके तुलसीके रसमें घोटके गोली बड़े बेर बराबर बांधके एक गोली रोज माखनमें देना और माखन, घी, रोटी, गेहूंकी और थूली अलूनी देना. सात और चौदा दिनमें भगंदर, सर्व जातिकी गरमी, हाडगंभीरव्रण, ये रोग नष्ट होके देह तांबाके माफिक होगी. इसको उतारनेके दिन चनेकी दाल गरम मसाला डालके चावलसे देना. मुख आवे तो बेर, बबूलके छालका कुल्ला करना. गोंद, गुड़, दूध, दारू, बैंगन, तेल ये चीजें छः महीना वर्ज्य रखना।

भगंदररोगपर पथ्य ।

शोधन, लेपन, लंघन, रक्तस्राव, दाग, खारादिक लगाना, धुवाँ, पिचकारी,चीरना ये प्रयोग अच्छे वैद्यके हाथसे कराने चाहिये.चावल, मूँग, जंगलीमांस, परवल, सहँजना, मूला, सरसोंका तेल, कडूरस, घी, शहद आदि दोष देखके पथ्य देना।

भगंदररोगपर अपथ्य ।

रास्ता चलना, मैथुन, दूध, बोझा उठाना, भारी खाना,वातल, बैंगन, तेल, मद्य ऐसी चीजें व्रण अच्छा होने बाद एक बरसत वर्ज्य करनी चाहिये और प्रकृतिको नहीं मानें सो चीजें वर्ज्य हैं।

इति भगंदररोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ उपदंश (गर्मी) रोगका निदान-कर्मविपाक।

मातृगमन करनेवाला, लिंगनाशकरोगी होता है. चंडालिनीसे गमन करे सो कुष्ठी होता है और उपदंशरोगी होता है ।

कर्मविपाकका परिहार ।

अग्निके उत्तर कलशस्थापन करके उसपर कुबेरकी मूर्ति सोनाकी बनाके रखना. उसे काला वस्त्र पहनाके फूल, माला डालके हररोज आवाहनादिक षोडश पूजन करके उसके आगे अथर्वण वेदका पारायण करके समाप्त होने पीछे वह मूर्ति ब्राह्मणको दान देना. देनेका मंत्र यह है कि "निधीनामधिपो देव" इति । इस मंत्रका उच्चारण करके दान देना. तब वह मूर्ख इस पापसे छूटेगा ।

उपदंश रोगहोनेका कारण ।

हाथका नख लगनेसे, दांतकी चोट लगनेसे, धोनेसे, ज्यादा स्त्रीसंगसे, गर्मीवाली औरतके संगसे, उपाससे, न धोनेसे ऐसे अनेक कारणोंसे इंद्रियपर गर्मीके चट्टे छाले होते हैं उससे अनेक वेदना होती है. यह रोग पांच तरहका होता है १ ।

वात-उपदंशके लक्षण ।

इंद्रीपर काली फुड़ियां होना, टोचनी लगाना, फूटना, ठनक होके पीप निकलना, होंठ, मुख, गला सूखना, भेगा फटना ऐसा होता है २ ।

पित्त-उपदंशके लक्षण ।

पीली लाल फुड़ियां आना, पानी बहना, दाह होना, लाल मांसके तथा रक्तके माफिक चट्टे, ज्वर, तृषा, दाह ये लक्षण होते हैं ३ ।

कफ-उपदंशके लक्षण ।

फुडिया बड़ी, सफेद, कंडूयुक्त,सूजन, पीप गाढ़ा, अन्नद्वेष, आलस्य, रोमांच, ज्यादा नींद, खांसी, श्वासादिक होते हैं ४ । सन्निपात-उपदंशमें सब लक्षण होते हैं । यह असाध्य है और असाध्य लक्षण-जिस गर्मीमें मांस सड़के गल जाता है और कीड़े पड जाते हैं, कीड़े सब खाके अंडकोशतक पहुँचें तो वह असाध्य है और जो मूर्ख आदमी गर्मीपर जलदी उपाय नहीं करता उसकी इंद्रीमें सूजन होके कीड़े पड़ जाते हैं वह मरता है५।

लिंगवर्तिके लक्षण ।

जिसकी इंद्रीपर मांसके मस्से पैदा होके एकपर एक मुर्गेकी चोटीके

माफिक इंद्रियके आगे सुपारीपर होते हैं और सब इंद्रीपर होते हैं, सब इंद्रियमें हड्डियोंके माफिक होते हैं. इस रोगको लिंगवर्ति और लिंग-अर्श कहते हैं। ये त्रिदोषज हैं, कष्टसाध्य है १ ।

उपदंशरोगपर उपाय ।

पुंडरीकवृक्ष, जेठीमद, रास्ना, कुष्ठ, पुनर्नवा, देवदारु, चन्दन, भद्र-मोथा इनका लेप वात-उपदंशपर देना१ प्रथम स्नेहपान, पसीना, जोंक लगाके रक्त काढ़ना लेकिन् पकने नहीं देना. पकेगा तो असाध्य होगा२।

पित्त-उपदंशपर उपाय ।

गेरू, रसांजन, मंजिष्ठ, जेठीमद, खस, पद्मकाष्ठ, रक्तचंदन, कमल-कंद इनका काढ़ा करके उसमें गायका घी डालके देना.इससे पित्त-उपदंश नाश होगा ३ ।

सर्वव्याधिहरण रस ।

शुद्ध पारा १ भाग, रसकपूर २ भाग, गंधक १ भाग सबको जला करके मुर्गीके अंडेमें भरके पांच कपड़मिट्टी करना. वालुका यंत्रमें चार प्रहर क्रमाग्निसे पचाना. शीत होने बाद निकालना और गुरु ब्राह्मणकी पूजा करके योग्य अनुपानसे दो वाल देना और उपदंश रोगपर तांबूलसे देना.इससे नपुंसक पुरुष मर्द होगा,सौ१००स्त्रियोंको गर्भधारण करायेगा और सर्व जातिकी गर्मी अच्छी होके सौ १०० वर्ष जीवेगा कोई रोग न होगा और कोढ़, गंडमाला,गलगंड, भगंदर,मुखरोग, फिरंग,उपदंश, रक्त-पित्त इन सब रोगोंको निकालके शरीर मजबूत रखेगा ४ । नीलाथोथा, गोपीचंदन, समभाग घोटके व्रणपर लगाना, चट्टा साफ होगा ५ । शुद्ध पारा, गंधक, हरताल, शिंगरफ, मनशिल ये सब एक १ तोला, मुरदा-शंख, शंखजीरा, दो २ तोला, सब मिलाके घोटना, तुलसी और धतू-राके रसकी दो पुट देना, गोली बांधके रखना, गोली गोमूत्रमें घिसके लेप देना. जखम भर आयेगी ६। त्रिफला, कढ़ाईमें जलाके उसकी राख शहदमें लगाना, चट्टा साफ होके घाव भर आवेगा ७ । पीपल, गूलर, पिपरी, बड़, बेत इनके काढ़ेसे धोना, व्रण भर आवेगा ८ । त्रिफला, शकरसे देना और पथ्य करना. उपदंश जायगा ९ ।

सोनामुखी, बालहरडा, गुलाबकली इनका समभाग चूर्ण गरम पानीसे छः मासा लेना १४ दिन सर्व उपदंश, परमा, भगंदर, पेट फूटना, उष्णता जायगी. इसपर खिचड़ी खाना १०। कपूर, सफेद कत्था, इलायची, सम-भाग पीसके चट्टापर लगाना. यह गर्मीका चट्टा, व्रण, अग्निदग्ध व्रण इनका नाश करता है. यह अनभूत है ११। भगंदर रोगपर जो गोली लिखी उसे माखनसे देके पथ्य करना, सर्व उपदंशनाश होगा १२ ।

मलहम ।

शुद्ध पारा, रसकपूर, बरासकपूर, हिंगुल, सफेद कत्था, मुरदाशंख, पाषाणभेद, लीलाथोथा, शंखजीरा, मिर्च सब समभाग लेके पुराने घीमें मलहम करके लगाना. इससे चट्टा, जखम, हाडचा व्रण, अर्श, भगंदर, हाडगम्भीर सब नष्ट होगा १३।आमकी छालका रस चारतोलामें सोला तोला बकरीका घी डालके प्रातःसमय ७ सात दिन पीवे तो उपदंशका नाश होगा १४। बबूलके पत्तोंका चूर्ण लगाना १५। अनारकी छालका चूर्ण लगाना १६। सुपारी घिसके लेप देना, गर्मीके चट्टे नष्ट होंगे १७।

चोपचीनी-चूर्ण ।

चोपचीनी १६ तोला, मिश्री४ तोला, पिपली, पीपलमूल, मिर्च, लवंग, अकलकरा, वंगभस्म, सोंठ, बायबिडंग, त्रिफला हरएक चीज आधा आधा तोला लेके सबका चूर्ण तैयार करके उसमेंसे छः मासा रोज घी शहदसे खाना. पथ्य-चावल अरहरकी दाल खाना. घी, शहद, गेहूँ, सेंधव, सहँजना, तुरई, अदरख, गरम पानी पीनेको देना. इससे पांच तरहकी गर्मी, २० तरहका मेह, व्रण, वात, कोढ़ इनका नाश होगा १८।

रस घी ।

शुद्ध पारा१तोला, गंधक १ तोला इनको जला करके उसमें दो तोला माखन डालके कपड़ेमें लगाके वहकपड़ा नीमकी लकड़ीमें लपेटके बत्ती बनाके नीचेसे चेताना, उसके जो बूंद टपकें उन्हें नीचेके बरतनमें लेना. उस बरतनका टपका हुआ घी खानेके पात्रमें लगाके [illegible] संपूर्ण उपदंशका नाश करता है. इससें [illegible] ([illegible] गच) के स्वरसमें [illegible] डालके [illegible] सर्व उपदंश [illegible] २०

सूतादिवटी ।

शुद्ध पारा, भिलावाँ, पिपली, पीपलमूल, अकलकरा, जायपत्री, लौंग, बंग ये समभाग लेके गुड़में गोलियां करके शक्ति देखके देना. इससे सर्व उपदंश नाश होगा २१ ।

उपदंशकुठार रस ।

मुरदाशंख १ तोला, कुष्ठ १ तोला, लीलाथोथा आधा तोला, मिलाके अदरखके रसमें घोटके गोली छोटे बेरके बराबर बांधना, वह गोली साम सबेरेको देना. इससे सर्व उपदंशका नाश होगा २२ ।

चोपचीनीपाक ।

चोपचीनी ४८ तोला, पीपलमूल, मिर्च, सोंठ, दालचीनी, अकलकरा, लौंग ये सब हर एक १ तोला लेके सबके बराबर शकर डालके पाक करना; उसमेंसे साम सबेरेको एक १तोला खाना. यह उपदंश, व्रण, कुष्ठ, वातरक्त, भगंदर, क्षय, खांसी, जुखाम इनका नाश करके पुष्टि करेगा २३। बालहरडा ४ तोला, लीलाथोथा आधा तोला इनको पीसके ७ दिन निंबूके रसमें घोटना. चने बराबर गोली बांधके छायामें सुखाना, वह गोली ठंढे पानीसे २१ दिन तक देना. उससे सव उपदंशका नाश होगा. इसपर पथ्य गायका घी, चावल, मूंग, गेहूं ये खाना २४ । चमेलीके पत्तोंका रस २ तोला, गायका घी २ तोला, राल २ तोला ये सब एकत्र मिलाके देना. इससे पांच प्रकारकी गर्मी नष्ट होगी. इसमें गेहूं, घी पथ्य देना और सब वर्ज्य है २५।

उपदंशरोगपर पथ्य ।

बकरीका दूध, घी, पुराना गेहूं यह पथ्य देना ।

उपदंशरोगपर अपथ्य ।

दिनका सोना, तेरा वेगोंका रोकना, जडान्न, मैथुन, गुड़, खट्टा, तेल, बैंगन, हींग ये सर्व चीजें वर्जित हैं ।

इति उपदंशरोगक निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ शूकदोषका निदान।

जो मूर्ख आदमी तिला करनेको विष लगाता है और इन्द्री बडी होनेका प्रयोग करता है. इसको १८ जातिका शूक दोषरोग होता है।

सर्षपिकाके लक्षण–इन्द्रीपर राई बराबर फुनसियां आती हैं १।

अष्ठीलिकाके लक्षण–जलजंतुके लेपसे निंबकी गुठली माफिक फुनसी होती हैं २।

ग्रंथिके लक्षण–निरंतर लेप देनेसे इन्द्रियपर गांठ होती है ३।

कुंभिकाके लक्षण–रक्तपित्तसे जामुनके बीजसी गांठ होती है ४।

अलजीके लक्षण–प्रमेहपिटिकामेंकी अलजीके लक्षण इसमें होते हैं और लाल काली फुड़ियां होती हैं ५।

मृदितके लक्षण–शूकपीड़ामें रगड़ने व दबानेसे इन्द्रियपर सूजन आती है ६।

संमूढपिटिकाके लक्षण–लेपसे इन्द्रीपर सूजके विना मुखकी गांठें आती हैं ७।

अवमंथके लक्षण–कफरक्तसे लंबी, अनेक जातिकी, बड़ी, फूटी हुई ऐसी गांठें होती हैं ८।

पुष्करिकाके लक्षण–रक्तपित्तसदृश होके चौगिरदा छोटी फुड़ियां होती हैं, सब इकट्ठी होके कमलकी कटोरीसी होती हैं ९।

स्पर्शहानिके लक्षण–शुक्रहानिसे स्पर्श न समझेगा १०।

उत्तमाके लक्षण–बारबार लेप करनेसे रक्तपित्त कोपके मूंग उड़दके लाल रंगकी फुड़ियां आती हैं ११।

शतपोनकके लक्षण–इन्द्रीपर बहुत छिद्र पड़ते हैं वह वातरक्तसे है १२।

त्वक्पाकके लक्षण–इन्द्रीपर फोड़ा आके ज्वर दाह होता है १३।

शोणितार्बुदके लक्षण–काली, लाल, फुडिया आके ठनकती हैं १४।

मांसार्बुदके लक्षण–मांस दुष्ट होके फुड़ियां होती हैं १५।

मांसपाकके लक्षण–मांस सड़के गलता है, पीड़ा होती है १६।

विद्रधिके लक्षण–सन्निपातविद्रधिके माफिक होना १७।

तिलकालकके लक्षण-काली, चित्र विचित्र रंगकी फुड़ियां आती हैं, विषके लगानेसे होती है, यह त्रिदोषकोपसे होता है १८।

शूकदोषका असाध्य लक्षण-इस रोगमें मांसार्बुद, मांसपाक, विद्रधि, तिलकालक ये चारों असाध्य हैं।

शूकदोष रोगका उपाय।

घीपान, जुलाब, रक्तमोक्ष यह करना १। अष्ठीलाका रक्त काढ़ना, श्लेष्मग्रंथिकी दवा करना २। सेकना और नलीका सेक देना और व्रणका इलाज करना ३। कुंभिकाका रक्त काढ़ना, पके तो व्रणशोधक दवा करना और कुचिला, त्रिफला, लोध इनका लेप करना ४। और जो दवा उपदंश और व्रण पर लिखी हैं वे सब करना, शूकदोषको फायदा करती है ५। सफेद कत्था, इलायची, कपूर पीसके लगाना, शूक दोषका नाश होगा ६। प्रवालभस्म अनुपानसे देना ७। त्रिफला शकरसे देना८। माक्षिक घी शकरसे देना९। चंद्रप्रभावटी देना१०। महाडूंगके रसमें सम भाग गायका घी डालके देना. यदि अलूना खावे तो शूकदोष, गर्मी, परमा और कुष्ठरोगका नाश करता है, शकर अलूनी रोटी खाना ११।

शूकदोषपर पथ्य।

उलटी, जुलाब, शलाई, इंद्रीकी शिरा बेधना, जोंक लगाना, सेचन, लेप देना, जव, शाली, जंगली मांस, मूंगका जूस, घी, करेले, सहँजना, पटोल, चावल, मूली, कडु, तुरस, मीठे कुएका पानी ये शूकदोषको पथ्य हैं।

शूकदोषपर अपथ्य।

दिनका सोना, तेरा वेगोंका रोकना, भारी अन्न, गुड़, मेहनत, खटाई, नोन, तेल, बैंगन, दारू, गर्म और प्रकृतिको न मानें वे चीजें वर्ज्य हैं।

इति शूकरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ कोढ़रोगका निदान-कर्मविपाक।

जो आदमी विना अपराध किसीको कठोर वचन बोले और गाय व गुरुकी स्त्रीसे खराब काम करे वह कोढ़रोगी होगा।

कर्मविपाकका परिहार।

उसमें तीन चांद्रायण व्रत करना, ब्राह्मणभोजन कराना।

कोढ़रोग होनेका कारण।

क्षीर, मांस, मच्छी, विरुद्ध खाना पीना, मलादिक वेगोंका रोकना, भोजनके बाद व्यायाम या अधिक धूपका सेवन, शीत, गर्म, लंघन और भोजनका क्रमरहित सेवन, धूप और थकावटसें ठंडा पानी पीना, ऐसे अनेक कारणोंसे वातादि दोष कोपके त्वचा, रक्त, मांस उदक इनको खराब करके १८ जातिके कोढ़रोगको पैदा करते हैं. उससें ७ महाकोढ़ हैं और ११ क्षुद्रकोढ़ हैं ऐसा जानना।

कोढ़रोगका पूर्वरूप।

जिस जगहपर कोढ़ होता है वह जगह चिकनी, खरदरी लगना, उस ठिकानेपर पसीना आना और न आना, उस जगहका रंग बदलना, दाह होना, खाज छूटना, स्पर्श नहीं समझना, टोचनी लगना, दाफड़ होना, व्रण, उत्पन्न होके बहुत दिन रहना, भर आना, रूक्षता, जरा कारणोंसे कोप होना, रोमांच, रक्त काला होना. ये लक्षण पूर्व ही होते हैं।

महाकोढ़ ७ प्रकारका होता है, उसका सामान्य लक्षण।

कपालीकोढ़के लक्षण।

काला, लाल खपरेके रंगके माफिक रूक्ष कर्कश त्वचा पतली होके टोंचनी लगना यह कठिन है १।

औदुंबरकोढ़के लक्षण।

इसमें शूल, दाह, आरक्त, खाज होके केशका रंग भूरा गूलरके फलके माफिक होता है २।

मंडलकोढ़के लक्षण।

सफेद, लाल, कठिन, गीला, चोपड़ा, चक्र ऊपर आना, एकसे एक चट्टा मिला हुआ रहता है, यह कष्टसाध्य है ३।

ऋक्षजिह्वक कोढ़के लक्षण।

कर्कश, लाल, चक्र हुआसा, बीचमें काला, वेदनायुक्त, रोजकी जीभके माफिक होता है ४।

पुंडरीककोढ़के लक्षण ।

थोड़ासा सफेद होके बीचमें बाजूपर लाल रंग होना, श्वेत, कमलकी कलीसा होता है, थोड़ा ऊंचा दीखता है, बीचमें लाल होता है ५।

सिध्म कोढ़के लक्षण ।

सफेद, लाल, पतला, खाजयुक्त, भूसा उड़ाना; यह कोढ़ छातीपर ज्यादा होता है. इसका रंग तूंबाके फूलसा होता है. इसे सिध्म कहते हैं ६।

कांकणकोढ़के लक्षण ।

जो कोढ़में लालचिरसठीसा रंग काला मिलाशा होता है दोनों रंगोंसे युक्त रहता है। इन लक्षणोंसे युक्त हो सो महाकुष्ठ है ७।

क्षुद्रकोढ़ ११ प्रकारका होता है, उसका लक्षण ।

चर्म कोढ़में-पसीनारहित मोटी जगहपर होनेवाला मच्छीके चमड़ेके माफिक वा हाथीके चमड़ेके माफिक जाड़ी चमड़ी खरदरी होती है १।

किटिभकोढ़में-नीलारंग, खेन, खपलीसा, खरदरा, रूक्ष होता है २।

वैपादिक कोढ़में-हाथ पांव फटना, दरारें पड़ना, वेदना होना ३।

अलसकोढ़में-बहुत खाज, लाल फुड़ियोंसे व्याप्त रहता है ४।

दद्रुमंडल कोढ़में-खाज लाली फुड़ियां, ऊपर ऊंचासा होना ५।

चर्मदल कोढ़में-लाल, शूलयुक्त, खाज फुड़ियोंसे व्याप्त, स्पर्श न सहना, चमड़ी फटीसी होती है ६।

पामा कोढ़में-इसमें छोटी फुड़ियां आना, लस पीप बहना, पकना, फूटना, खाज बहुत आना, आग होना, इसे पांव कहते हैं, खारज कहते हैं, कमरपर, अंगुलीपर, ढूंगोंपर ज्यादा होती है ७।

कच्छु कोढ़में-वह पामा ज्यादा बढ़के हाथपर बड़ी २ फुड़ियां आती हैं वह बहुत वेदना करती है, उसका नाम कच्छु दिया है सो जानना ८।

विस्फोटक कोढ़में नीले काले, लाल रंगके छाले आते हैं, त्वचा पतली होके बहुत वेदना होती है ९।

शतारुकोढ़में-लाल, श्यामव्रण, दाह, शूल, और अनेक व्रणयुक्त होता है १०

विवर्चिकाकोढ़में-खाज, श्यामरंगकी पिटिका होती हैं. उनमेंसे बहुत पीप गिरता है. उस पीपके लगनेसे दूसरी फुड़ियां उठती हैं, यह पांवके पिंडलियोंपर होती है. फूटे बाद विपादिका होती है ११।

वातयुक्त कोढ़के लक्षण।

खरदरा, श्याम, अरुण, रूक्ष, वेदनायुक्त वातसे कोढ़ होता है।

पित्तयुक्त कोढ़के लक्षण।

अग्निसा दाह, लाल, झरनेवाला, तृषाधिक होता है।

कफयुक्त कोढ़के लक्षण।

क्लेश,जड़, स्निग्ध, खाजसे युक्त,ठंडा ऐसा होता है और दो २ दोषोंसे दो २ दोषका कोढ़ समझना और सर्व लक्षणोंसे युक्त हो तो त्रिदोषकोढ़ समझना।

सप्तधातुगत कोढ़के लक्षण।

रस धातुगत हो तो शरीरका रंग बदलता है. रूक्ष, स्पर्श न समझना, रोमांच, पसीना ज्यादा और रक्तगसे खाज होके पीप होना, गिरना। मांसगतसे मुख सूखना, कर्कश बदन होना, गांठें होना, ठनकना, बहुत दिन रहना। मेदोगतसे हाथ फूटना, जखम होना, शरीरमें फूटन और रक्तमांसगतके लक्षण होते हैं। हड्डीमज्जागत कोढ़में नाक सड़ता है, गिर जाता है, बढ़ता है, आंखें लाल होना, जखममें कीड़े पड़ना, आवाज बैठना. जो स्त्री और पुरुषको धातुगत कोढ़ हो उनसे जो औलाद पैदा होती है वह जन्मकोढ़ी होती है। जैसे विषका कीड़ा विषारी होता है ऐसा वाग्भटका मत है।

कोढ़का असाध्य लक्षण।

सप्त धातुगत कोढ़ असाध्य है, इसमें रक्त, रस गत साध्य है, बाकी असाध्य; द्वंद्वज और त्रिदोषज असाध्य है।

संसर्गज रोगके लक्षण।

मैथुनसे,गर्मी देखनेसे,सूग करनेसे, खुजली करनेसे,भय, एक ठिकाने खानेसे, सोनेसे, चंदन लगानेसे, वस्त्र ओढ़ने पहिरनेसे, फूल सूंघनेसे, श्वास लेनेसे इनसे ये रोग एक एकसे होते हैं. जैसे ज्वर, धातुशोष, नेत्र-

रोग, खुरज, गर्मी, उलटी ये रोग एकसे एक पैदा होते हैं, इनको संसर्ग-रोग, विषूचिका कहना चाहिये. इसवास्ते ऊपर लिखी बातोंसे बचना चहिये।

कोढ़रोगपर उपाय ।

बायबिड़ंग, त्रिकटु, त्रिफला, मोथा, चित्रक, बच्छनाग, बच, गुड़ इनको समभाग खरल करके तीन दिन लेप देना; सब कोढ़ जायगा. १। चित्रकमूलको घिसके लेप देना २। निर्गुंडीके बीजोंका लेप देना. इससे मंडलकुष्ठ, नाश होगा ३। विजयेश्वर रस देना ४। भांगरा, हरडा, पोह-करमूल इनका पुटपाक करके लेप देना. इससे सफेद कोढ़ जायगा ५। कपाशीके पत्ते, काकजंघा, मूलीके बीज ये चीजें छाछमें पीसके उसका मंगलवारमें लेप करना, कुष्ठका नाश होगा ६। मूलीका बीज छाछ गोमू-त्रसे और कांजीसे पीसके लेप देना. इससे सिध्म कोढ़ नष्ट होगा ७। गंधक, जवाखार पानीमें घिसके लेप देना. सिध्म कोढ़ जायगा ८। सांपकी केंचुल पानीमें घिसके लेप देना. चर्मदल कोढ़ जायगा ९। हरताल, गंधक, बच्छनाग इनको गोमूत्रमें घिसके लेप देना. एक महीना करना. इससे सिध्म कोढ़ जायगा १०। पारा, मिर्च, सेंधवलोन, बायबिडंग, गिलो-यका रस इन सबको कांजीमें पीसके लेप देना ११। आमला, विशेष धूप, जवाखार इनको कांजीमें पीसके लेप देना १२। गंधक, जवाखार इनको सरसोंके तेलमें पीसके लेप देना, कोढ़रोगका नाश होगा १३।

गजकर्णका उपाय ।

पारा, गंधककी कजलीका लेप, माखन खरल करके लेप देना, गजकर्ण जायगा १४। कवाबचीनी, गेरू, कुष्ठ, लीलाथोथा, जीरा, मिर्च ये एक२ तोला, मनशिल, गंधक, छाछ, पारद १२ तोला, घी २०तोला डालके तांबेके बरतनमें तीन दिन खरल करना, पीछे तीन दिन लेप करना, इससे कैसा ही गजकर्ण हो तो नाश होगा १५। गंधक, नवसादर, शकर मिलाके निंबूके रसमें खरल करके लगाना, सब जातिका गजकर्णरोग जायगा १६। गुंजा, चित्रक, शंखभस्म, हलदी, दोब, हरडा, कललावी, निवड़ुंग, सेंधवलोन, गुवारका पाठा, नागरमोथा, आकका

दूध, घेंरोसा, पारा, बच्छनाग,बावची,पवांडका बीज, बायबिडंग, मिर्च इन चीजोंको घोटके पानीमें और शहदमें और गोमूत्रमें लेप देना. इससे गजकर्ण, खुजली, फोड़ा, फुनसी सब कोढ़ोंका नाश होगा १७वज्रपाणि रस देना, इससे कोढ़ जायगा १८ ।मनशिल, हीराकसीस, लीलाथोथा इनको गोमूत्रसे पीसके लेप देना. इससे सर्व कोढ़ जायगा १९।धतूराके बीज, सेंधवलोन इनको पानीमें पीसके सरसोंके तेलमें लेप देना, इससे खुजली जायगी २० । किरमालाके पत्ते कांजीमें पीसके लेप देना, सर्व कोढ़ जायँगी २१ । अपामार्गकी राख सफेद करके मिट्टीके घड़में भरके उसके भीतर शुद्ध पत्री, हरताल रखके गुरदी देके कपड़मट्टी करके चूल्हेपर रखके बेरकी लकड़ीकी बारा पहरतक आंच देना, स्वांग शीत होनेके बाद उसमेंसे सफेद निर्धूम्र हरतालकी भस्म निकाल लेना. उसे अनुपानसे देना, सर्व कोढ़ जायगा २२। इसी माफिक पुनर्नवाकी राखमें हरताल पचाना और पीपलकी राखमें और थोहरकी राखमें सोमल, हरताल ये निर्धूम्र होते हैं.योग्य अनुपानसे सर्व रोग और कोढ़का नाश होगा२३।कासुंदाकी जड़का लेप कांजीमें पीसके लगाना, सब कोढ़ जायगा २४ । शिंगरफ, गंधक, पारा, पिपली, वच्छनाग, बायबिडंग, हलदी, चित्रक, मिर्च, हरडा, सोंठ, मोथा, समुद्रफेन, बावची, कुटकी, किरमाला, चकवँड़के बीज ये चीजें समभाग लेके निंबूके रसमें खरल करना, लेप देना, इससे सब जातिके कोढ़, खुजली, विसर्प, भगंदर, मंडलकोढ़ आदि सब कोढ़ोंका नाश होगा२५। सफेद कनेरका रस, बिडंग, चित्रक ये चीजें तेलमें खरल करके अभ्यंग करना, सब कोढ़ जायगा २६ ।

खुजलीपर लेप ।

सेंदुर, जीरा, स्याह जीरा, हलदी, दारुहलदी, मनशिल, मिर्च, गंधक, पारा इनको खरल करके घीसे लेप करना. इससे सर्व खुजली जाती है २७। कपूर, निंबूका रस, चंदनका तेल इनका बदनमें लेप करे तो कोरी खुजली जलदी नाश होगी २८। मिर्चका बारीक चूर्ण करके घीसे पिलावे और बदनमें लगावे तो सब खुजली जायगी २९।गंधकको सरसोंके तेलमें खरल करके मालिश करे तो खुजली जायगी ३०। बावची, गन्धक, हरताल, मनशिल

इनका बारीक चूर्ण करके तिलके तेलमें दो ४ भिलावा कतरके तेलमें डालके बेरीकी आंचमें खूब लाल करना, भिलावां जल जाने बाद उस चूर्णको तेलमें डालके पानीमें डालना, ऊपर तिर आवेगा. उसे लेके बदनमें मालिश करके धूपमें बैठना, खूब बदन तप जाय तब महिषका गोबर लगाके ठंडे पानीसे स्नान करना, दही और चावल खाना, एक दिनमें सब जातिकी खुजली जाती है, इसको मडूक तेल कहते हैं ३१ ।

निंबादि चूर्ण ।

निंबके पांचो अंग लेके उसका समभाग करना. उस चूर्णको खैर, असन इनके काढ़ेकी भावना देना उस चूर्णमें चित्रक, बायबिडंग, किरमाला, शक्कर, भिलावाँ, हरडा, सोंठ, आमला, गुखुरू, पवांड़, बावची, पिपली, मिर्च, हलदी, लोहभस्म इनका चूर्ण मिलाना, निंबके चूर्णसे आधा भाग मिलाके उस सबको भांगरेके रसकी भावना देना, सुखाके पीछे रखना, खैर और असनीके काढ़ेमें शक्कर और घी डालके एक तोला फजिरको देना. इससे १८ जातिका कोढ़ नष्ट होगा. इसकी परहेज नहीं, यह दवा तीन महीने तक देना ३२ । खदिरादि आसव देनेसे सर्व कोढ़ नष्ट होते हैं ३३। मंजिष्ठादि काढ़ा देनेसे सब कोढ़ जायगा ३४ ।त्रिफला, नीम, पटोल, मंजिष्ठ, कुटकी, बच, हलदी इनका काढ़ा रोज देना. इससे कफ-पित्त-कोढ़ जायगा ३५।शिलाजीत, कपीला, मुलहटी, फिटकड़ी, राल, मनशिल सब समभाग लेके माखनसे लेप देना. इससे झरनेवाला कोढ़ नष्ट होगा ३६।खैरके काढ़ेमें स्नान लेप पिलाना, भोजनके उपयोगमें देना, इससे सब कोढ़ जायगा ३७।भिलावाँका अवलेह देना, सब कोढ़ोंका नाश होगा ३८।त्रिफलादिमोदक देना, सब कोढ़ौका नाश होता है ३९। खैरके झाड़की जड़के पास खड्डा खोदके उस जड़को लकड़ीकी कुल्हाड़ीका घाव देके उसके नीचे बरतन रखके मुख बंद करके ऊपर मिट्टी डालके ऊपर अग्नि करके उस खैरका अर्क निकाल लेना. उसमें आमलाका रस शहद डालके देना. उससे सब कोढ़ोंका नाश होगा ४०।१०० सौ पत्ते नीमके, निबोलियां, आंवला, बिडंग, बावची इनका कल्क करके देना. कोढ़ जायगा ४१ । एकविंशति गूगल देना, सब कोढ़ जायगा ४२।नीमके पंचांगके काढ़ामें योगरास गूगल देना, सब कोढ़

जायँगे ४३ । सर्वांगसुंदर रस देना, सब कोढ़ जायँगे ४४ । कल्पतरु रस देना. सब कोढ़ जायँगे ४५ । हरतालभस्म सब कोढ़ोंका नाश करती है ४६ । कुष्ठकुठार रस देना, सब कोढ़ोंका नाश करेगा ४७ । उदयादित्य रस देना, सब कोढ़ोंका नाश होगा ४८। सर्वेश्वर रस देना, कोढ़ जायगा ४९ । स्वर्णक्षीरी रस देना, सब कोढ़ जायगा ५० । अभ्रकभस्म देना, कोढ़ जायगा ५१ । पारदभस्म देना, कोढ़का नाश होगा ५२ ।

कोढ़रोगपर पथ्य ।

१५ दिनोंसे उलटी देना, एक महीनासे जुलाब, तीन महीनामें नास देना, छः महीनामें रक्त काढ़ना और घी, लेप, जव, गेहूं, चावल, मूंग, अरहर, मसूर, शहद, जंगली मांस, आषाढफल, बेतका कोंप, परवल, बैंगन, काकमाची, निंब, लहसन, बथुई, पुनर्नवा, मेषशृंगी, पवांड़, भिलावाँ, ताडफल, खैर, चित्रक, जायफल, नागकेशर, केशर, घी, तुरई, करंज, शाल, राई, सरसोंका तेल, लघु अन्न, देवदारु, सरस, चंदन तेल, अष्टमूत्र, कस्तूरी, गंधसार, कुटकी, क्षार ये चीजें कोढ़ रोगीको पथ्यकारक हैं ।

कोढ़रोगपर अपथ्य ।

खट्टा, नोन, मिर्च, दही, दूध, गुड, तिल, उड़द, पसीना, स्त्रीसंग, तेरा वेगोंका रोकना, गन्ना, मेहनत, खट्टा पदार्थ, अनूपदेशका मांस, दारू, गुड़की चीजें और प्रकृतिको न मानें सी चीजें वर्जित करना, कोढ़ जायगा।

इति कोढ़रोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ शीतपित्तका निदान ।

कारण–ठंढी हवा, लंघन, उलटीका वेग रोकनेसे बाला (नाहरू) निकलनेसे कफ वात दुष्ट होके पित्तसे मिलके रक्तसे मिलाके त्वचामें दाफड़ पैदा करता है ।

शीतपित्तका पूर्वरूप ।

तृषा, अरुचि, मुखको पानी छूटना, शरीरमें ग्लानि, भारीपना, नेत्र लाल ये लक्षण पूर्व ही होते हैं ।

उदर्दके लक्षण ।

मदकी मक्खी काटनेसे जैसा दाफड़ आता है वैसा दाफड़ आना, खाज, दाह होना, चोट या काटने माफिक चुन २, उलटी, संताप, दाह ये होना, खाज, कफसे टोंचनी, वातसे उलटी, संताप, दाह ये पित्तसे होते हैं. इसको उदर्द कहते हैं २। इसे पित्त कहते हैं। कोई शीतपित्त कहते हैं।

उदर्दका दूसरा भेद ।

ठंढीसे पित्तका प्रकोप होके और कफ प्रकोप होके बदनमें लाल चट्टेसे दाफड़ होते हैं. सो बड़े २ होके खाज बहुतसी आती है और दाफड़ बीचमेंसे कम होके वायुसे पसरता ऐसा जानना ।

कोठके लक्षण ।

उलटीकी दवा लेके साफ न होनेसे पित्त कफ कोपके उसड़ जाते हैं, उससे लाल दाफड़ चट्टे बहुत होते हैं. उसमें खाज, दाह होना इस रोगको उत्कोठ कहते हैं. यह घड़ीमें होके घड़ीमें मिट जाता है। यह वर्षाऋतुमें, शरदीमें, खटाई, राई, पूर्व दिशाकी हवा ऐसे आहार विहारसे ज्यादा होता है।

शीतपित्तपर उपाय ।

सरसोंके तेलसे अभ्यंग करके गर्म जलसे स्नान करनेसे खाज मिटेगी १। पटोल, अडूसा इनके काढासे उलटी कराना २। त्रिफला, गूगल, पिपली इनका जुलाब देना ३। महातिक्तादि घी देना ४। रक्तमोक्ष करना ५। तेलमें सेंधवलोन डालके अभ्यंग करना ६। मुलहटी, राईके फूल, रास्ना, चंदन, निर्गुंडी, पिपली इनका काढ़ा शीतपित्तनाशक है ७। गिलोय, हलदी, नीम, धनियाँ, धमासा इन चीजोंमेंसे हरएकका काढ़ा शीतपित्तनाशक है ८। गुड़, अजवाइन इकट्ठी करके सात दिन खाना, शीतपित्तका नाश करेगा ९। त्रिकटुका चूर्ण सेंधवलोन गुड़में डालके देना और दूधमें औटाके देना १०। वर्धमानपिप्पली देना. इससे शीतपित्त जायगा ११। सेंधवलोन डालके घीका अभ्यंग करना १२। तुलसीरसका लेप देना १३। सरसों, हलदी, कुष्ठ, चकवँड़, तिल इनका चूर्ण करके सरसोंके तेलमें अभ्यंग करना १४। मिर्च घीमें अभ्यंग करके सेंकना १५। निंबके पत्तोंका चूर्ण आंवलेके साथ देना और घीसे पीना, शीतपित्त जायगा १६ शीतारि रस देना, इससे शीतपित्त जायगा १७।

स्पर्शवातके लक्षण।

शरीरमें खेंचनी लगना, स्पर्श न समझना, बदनपर चट्टेसे दिखाना ये लक्षण होते हैं १८। शुद्ध पारा एकभार, हरताल ८ भार लेके गुड़में गोली करके फजिर रोज दो महीना खाना. इससे सुन्नबहिरी जायगी १९।

रसगुटिका।

शुद्ध पारद ८ भाग, कुचला १० भाग, गंधक १२ भाग, त्रिकटु, त्रिफला, भिलावाँ, चित्रक, नागरमोथा, बच, असगंध रेणुकाबीज, बच्छनाग, कुलिंजन, पीपलमूल, नागकेशर ये सब एक १ भाग और गुड़ चौबीस भाग मिलाके सबकी गोली बेर बराबर बांधना और गोली फजिरको एक दो तीन जैसी तबीयतको माने ऐसी देना, इससे सुन्नबहिरीका नाश होके अच्छा होगा।

शीतपित्तपर पथ्य।

शाल, मूंग, कुलीथ, करेले, बेतकी कोंप, गरम जल, कफ पित्त नाश करनेवाले पदार्थ--आहार विहार ये हितकारक हैं।

शीतपित्तपर अपथ्य।

स्नान, धूप, खटाई, जड़ अन्न, तेल, प्रकृतिको न माननेवाली चीजें मना करके और ठंडा वक्त, चीजें, बरसातमें न फिरना चाहिये।

इति शीतपित्तका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ अम्लपित्तका निदान।

विरुद्ध क्षीर, मद्यमांसादिक, खट्टा बासी ऐसा अन्न, दाह करनेवाली चीजें, पित्त करनेवाली चीजोंके खानेपीनेसे, वर्षाऋतुमें, खकारनेसे पित्त कोपके अम्लपित्तको पैदा करता है।

अम्लपित्तका सामान्य लक्षण।

अन्न न पचना, आयास विना श्रम होना, मलमल करना, कडुवी, खट्टी डकारें आना, बदनमें सुस्ती, कांटा आना, जल जलकर डकार आना, अन्नद्वेष होना, ये लक्षण अम्लपित्तके हैं।

ऊर्ध्व अम्लपित्तके लक्षण ।

हरा, पीला, नीला, काला, लाल, भगवा, चिकना, खट्टासा गोंदके माफिक कफसे मिश्रित खारा, तुरट, ऐसा पित्त गिरता है और कभी २ खाया हुआ अन्न ही गिरता है, उलटी होती है, भोजनके पीछे और आगे पानी मुखसे गिरता है, डकार आती है, गला, कोख, छातीमें जल २ रहना, दूखना, जीव न लगाना, यह दर्द अम्लपित्त ऋतु बदलनेके वक्त बहुत ज्यादा जोर करता है ।

अधोगत अम्लपित्तके लक्षण ।

अधोगत अम्लपित्तसे तृषा, दाह, मूर्च्छा, इंद्रिय मनको ग्लानि, चक्कर आना, मल मल, बेचव, बदनमें दाफड़, अग्निमंद, कानको पसीना, बदन पीला, पेशाब पीला, काला, लाल, दस्त होना, दुर्गंध ऐसा पित्त पड़ना ये लक्षण अधोगत पित्तके होते हैं ।

कफमिश्रित अम्लपित्तके लक्षण ।

हांथ पांवमें दाह होना, बदन गरम रहना, अन्नद्वेष, ज्वर, खुजली, दाफड़, फुड़ियां, अन्न न पचना ऐसे अनेक उपद्रव होते हैं ।

अम्लपित्तका असाध्य लक्षण ।

नवा अम्लपित्त हो तो यत्नसाध्य होता है और बहुत दिनका हो तो याप्य होता है. पथ्य रहनेवाले आदमीका अम्लपित्त बहुत दिनका कृच्छ्रसाध्य होता है और द्वंद्वज, त्रिदोषज अम्लपित्तको वैद्य तर्कसे देखे कारण कि, ऊर्ध्व अम्लपित्तमें छर्दि रोगादिक मालूम होता है और अधोगतमें अतिसार दीखता है, वैद्यको निश्चय निदान करना चाहिये।

अम्लपित्तका उपाय ।

गिलोय, चित्रक, नीम, पटोल इनके काढ़ेमें शहद डालके देना. इससे अम्लपित्तकी उलटी बंद होगी १। पटोल, त्रिफला, नीम, इनके काढ़ेमें शहद डालके देना. इससे अम्लपित्तज्वर, उलटी, दाह, शूल कफ इनका नाश करेगा २। गुड़में हरडा और पिपलीकी गोली करके देना कफपित्त नाश होगा ३। अम्लपित्तपर पहले हलकी उलटी देके बाद हलका जुलाब देना ४। स्नेहपान देके वस्ती देना ५। शकर, शहद डालके शालिकी लाई (खील) का मंड देना ६। मिश्री

आंवला देना ७। आंवलेके मुरब्बेमें माक्षिकभस्म देना ८। अदरखके रसमें खड़ी शकर डालके प्रवालभस्म देना ९। पटोल, निंब, गेलफल इसमें सेंधवलोन डालके देना, इससे उलटी होगी१। निशोथका चूर्ण त्रिफलाके काढ़ेमें शहद डालके देना इससे जुलाव होवेगा ११। द्राक्षा, हरड़ा इन दोनोंको समभाग शकर मिलाके तीन तोला रोज खाना. सब प्रकारका अम्लपित्त जायगा १२। कोहलाका रस चालीस ४० तोला, गायका दूध ४० तोला मिलाके उसमें आमलेका चूर्ण बत्तीस ३२ तोला डालके मंदाग्निसे पचाना. गाढ़ा हो तब बत्तीस तोला बनारसी शकर डालके दो तोला रोज देना. इससे अम्लपित्तका नाश होगा १३। पीपल, शहदसे देना, सामको जंभीरीका रस पिलाना. इससे अम्लपित्तका नाश होगा १४। अजवाइन, खोपराकी गिरीसे मिलाके देना. इससे अम्लपित्त, तत्क्षण शांत होता है १५। जटामांसी, गिलोय, भुईरिंगणी इनके काढ़ामें शहद डालके देना. इससे अम्लपित्त, कामज्वर, उलटीका नाश होगा १६। कूटा हुआ जव, अडूसा, आमला, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची इनके काढ़ामें शहद डालके देना. इससे अम्लपित्तका नाश होगा १७। रिंगणी, गिलोय, अडूसा, इनके काढ़ेमें शहद डालके देना १८। इलायची, वंशलोचन, दालचीनी, आमला, हरड़ा, तालीशपत्र, पीपलमूल, चंदन, धनियाँ इनका समभाग चूर्ण करके उसमें समान शकर मिलाके देना. अम्लपित्त जायगा १९।

अधोगत।

त्रिकटु, रिंगणी, पित्तपापड़ा, खस, इन्द्रजव, सेमलका गूंद, कड़ू पटोल, त्रायमाण, देवदारु, मोरबेल, कुटकी, कमलगट्टा, चंदन, इन्द्रजव, इलायची, चिरायता, बच, अतिविष, नागकेशर, अजवाइन, मुलहटी, सहँजनेका बीज, इनका कपड़छान करके बड़ी फजिर ठंडे जलसे देना, पथ्य करना, इससे अधोगत बढ़े पित्तका नाश होगा २०। हरडा, पिपली, द्राक्षा, शकर, धमासा इनका लेह शहदसे चटाना, इससे अम्लपित्त जायगा २१। पिपलीका चूर्ण१६तोला, गायका घी३२तोला, मिश्री६४तोला, शतावर ३२ तोला, आंवलेका रस ६४तोला, दूध २२६तोला इन सबका पाक मधुर आंचसे पकाके जरासा पतला रहे तब उतार लेना. उसमें दवा डालना. सो ये हैं:-दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, हरड़ा, धनियाँ, जीरा, नागरमोथा,

आंवला, वंशलोचन, सोंठ, नागकेशर, जायफल, मिर्च ये चीजें सब तोला तोला २ कपड़छान चूर्ण करके उस पाकमें मिलावे । उसमें १२ तोला शहद डालके उसीको चिकने बरतनमें भरके रखना. उसमेंसे बल ताकत देखके बड़ी फजिर देना. यह अम्लपित्त, मलमलता, अरुचि, उलटी, प्यास, दाह इनका नाश करेगा २२। पिपलीके कल्क और काढ़में घी सिद्ध करके देना. अम्लपित्तका नाश होगा २३। शतावरका कल्क ३४ तोला उसमें ६४ तोला घी डालके चौगुना दूध डालके घी सिद्ध करना. उसके देनेसे अम्लपित्त, रक्तपित्तका नाश होता है२४। लीलाविलास रस देना. अम्लपित्त जायगा २५ ।

लीलाविलास रस ।

शुद्ध पारा, गंधक, ताम्र, अभ्रकभस्म, गोरोचन ये समभाग लेके खरल करना. उसको आमला, हरड़ेके अष्टमांश काढ़ेकी पचीस भावना देना. आखिरको भांगरेके रसकी भावना देके तैयार करना, यह लीलाविलास रस पांच गुंजा शहदसे देना. इससे अम्लपित्त जायगा २६। त्रिकटु, त्रिफला, मोथा, बिडंग, चित्रक इनके समभाग चूर्णमें समभाग गंधक तोला २ मिलाके सबका चूर्ण शहदसे देना, इससे परिणामशूल, अम्लपित्तका नाश होगा २७ ।

सूतशेखर रस ।

शुद्ध पारा, सुवर्णभस्म, सुहागा, बच्छनाग, त्रिकटु, धतूराके बीज, ताम्रभस्म, चातुर्जातक, शंखभस्म, बेलगिरी, कचूर सब समभाग लेके अदरखके रसमें एक दिन घोटना. उसकी गोली गुंजा बराबर बांधके घी और शहदसे देना. इससे अम्लपित्त, उलटी, शूल, पांच प्रकारके गुल्म, पांच तरहकी खांसी, संग्रहणी, सर्व अतिसार, अग्निमंद, हिचकी, उदावर्त, सर्व व्याधिका नाश होगा. यह दवा चालीस दिन खायगा तो क्षयका नाश करेगी. इसे योग्य अनुपानसे देना ।

अम्लपित्तपर पथ्य ।

जव, मूंग, पुराने लाल शालीके चावल, गरम पानी, शकर, शहद, करेला, बथुई, पुराना कोहला, परवल, अनार, आमली, कफपित्तनाशक अन्न देना हितकारी है ।

अम्लपित्तपर अपथ्य ।

उलटी आदि वेगोंका रोध करना, तेल, खटाई, कुलथी, तिल, सड़ा धान्य, नोन, मिरची, जड अन्न, दही, दारू, दालि, वातल पदार्थ, दूध, कांदा, मांसादिक और प्रकृतिको न सानें वे चीजें वर्ज्य करना चाहिये ।

इति अम्लपित्तका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ विसर्परोगका निदान ।

नोन, खटाई, कडुवा, गरम, लीला साग, मच्छी आदि खराब चीजें खाने पीनेसे, विसर्प रोग सात प्रकारका होता है, उसको प्राकृत भाषामें धावरा कहते हैं। यह रोग शरीरमें एकदम सर्पके माफिक चढ़ता है इसवास्ते इसको कर्दम विसर्प नाम दिया है, सर्व जातिके विसर्प रोग रक्त मांसके कोपसे होते हैं । यह रोग लट लगके उससे उठता है ।

वातविसर्पके लक्षण ।

इसमें वातज्वरके सब लक्षण होके उसमें सूजन, स्फुरना, टोंचनी, भेदनपीडा, ठनका, रोमांच, खुजली होके लंबा होता है ।

पित्तविसर्पके लक्षण ।

इसमें पित्तज्वरके लक्षण होके जलदी पसरता है–फैलता है.इसका रंग लाल होता है, दाह तृषादिक होता है ।

कफविसर्पके लक्षण ।

इसमें कफज्वरके लक्षणसे युक्त होके खाज ज्यादा होती है, चिकना दीखता है सन्निपातविसर्पमें सब लक्षण होते हैं ।

अग्निविसर्पके लक्षण ।

इसमें ज्वर, उलटी, मूर्छा, अतिसार, तृषा भँवल, हड्डियोंमें फूटन, मंदाग्नि, अँधेरी, श्रम, द्वेष, सब शरीर विरस होना, अंगार बदनमें डालने माफिक होना,जिस जगहपर विसर्प होता है उस ठिकाने कोयलेके माफिक काली,नीली,लाल,सूजन अग्निसे जलनेकासा फोड़ा आना, सब बदनमें जलदी फिरना, हृदयतक जाके भिडता है,जोर करता है, शरीरव्यथा,बुद्धि निद्राका नाश होना, श्वास,हिचकी,अवस्थता, किसी ठिकानेपर जीव न

लगना, चलने फिरनेमें तकलीफ होना, तंद्रा ऐसे लक्षण होते हैं. इसको आग्याघावरा कहते हैं ६ ।

ग्रंथिविसर्पके लक्षण ।

स्वकारणसे कुपित कफवातको रोधके रक्तकी सहायतासे ग्रंथिविसर्पको पैदा करता है, उससें त्वचा, मांस,स्नायु शिराकीसहायता लेके लंबी छोटी गोल, मोटी, खरदरी, लाल ऐसी गांठ पैदा करता है वह मालाके माफिक १०१ लगी रहती है उससे ठनका, ज्वर, श्वास, खांसी, अतिसार, मुख, शोष,हिचकी,उलटी,घेरी,भ्रांति,रंग बदलना, मूर्च्छा, अंगमोडी,अग्निमंद ये लक्षण होते हैं. इसको ग्रंथिविसर्प रोगकहते हैं. इसमें कफ वात रहता है ।

कर्दमविसर्पके लक्षण ।

कफपित्तसे जो विसर्प हो उससे बदन कड़ा, निद्रा ज्यादा, सुस्ती, शिर दुखना, बेताकत, हाथ पाँव पछाड़ना, बकना, अरुचि, घेरी, मूर्छा, अग्निमंद, हाड़ोंमें फूटन, हाथ पाँव इंद्रियां भारी, आंव पड़ना, मुख चिकना होता है. यह रोग पहिले आमाशयसे पैदा होके पसरता है. इसमें पीड़ा कम रहती है ।

चिखली-इसबके लक्षण ।

इसपर पीली, लाल,सफेद फुडियां आती हैं,चमकता है,स्याहीके माफिक काला होके मैलासा,सूजन भारी,अंदरसे पका होके बहुत जलता है.दबायेसे गीला मालूम होता है.छिद्र पडते हैं,वह चिखलके माफिक होके मांस सड़ता है, शिरा, स्नायु दीखने लगती है, मुरदारके माफिक दुर्गंध आती है ।

क्षयसे विसर्परोग होता है, उसके लक्षण ।

पित्त बिगड़के वातकुपित करके रक्तयुक्त वर्ण हो उसमें कुलथीके रंग समान फुड़ियां होके सूजन आके ज्वर आता है, दाह होके ठनकता है, खून काला होता है ।

विसर्परोगका उपद्रव ।

ज्वर, अतिसार, उलटी, तृषा, श्वांस, मांस सड़ना, विना मेहनत श्रम, अरुचि, अन्न न पचना, ये होते हैं ।

विसर्परोगका असाध्य लक्षण।

सान्निपातिक असाध्य, क्षयका साध्य, स्याई सरीखा काला असाध्य, मर्मकी जगहपर हो सो असाध्य है ५८।

विसर्प रोगपर उपाय।

इस रोगको इसव बिची धावरा ऐसा कहते हैं १।पटोल,नीम,पीपल, गेल इसके काढ़ामें कपूर, इंद्रजव, डालके देना, उलटी होगी २। विसर्पपर पहले लंघन देना, पीछे रूक्ष करना, बाद रेचन देना,उलटी देना, लेप देना, सेचन देना, रक्त काढ़ना, यह काम प्रकृति माफिक योजित करना. शास्त्रयोग है ३।त्रिफलाके काढ़ेमें निशोथ घी डालके देना, जुलाव होगा ४। बाल हरड़ा, सोनामुखी, गुलाबकली समभाग चूर्ण गरम जलसे देना. जुलाव होगा ५। हरडा, निशोथका चूर्ण देना,शोधन करेगा ६। रास्ना, गीला कमल, देवदारु, चंदन, मुलहटी, नागबला इनको दूधमें पीसके उसमें घी डालके लेप करना ७। पुंडरीक वृक्षकी छाल, मंजिष्ठ, कमल, केशर, चंदन,मुलहटी, गीला कमल इनको पीसके दूधमें लेप देना, पित्तविसर्प जायगा ८। कचूर, शिंघाड़ा, पद्मकाष्ठ,गुंजा, मिर्च, कासुंदा, गीला कमल, पद्मकाष्ठ इनका लेप घीसे करना, शांत होगा ९। सरसों, मुलहटी, तगर, चंदन, इलायची, जटामांसी, हलदी, दारुहलदी, कुष्ठ, खस इनका लेप घीसे करना. विसर्प, कोढ़, सूजन जायगी १०। जटामासी, डाल, लोध, मुलहटी, रेणुकके बीज, मोरवेल, गीला कमल, शिरस वृक्षका फूल इसका लेप देना.इससे आग्या धावरा जायगा ११। बडगूलर, पीपल, पिपरी, नांदरुकी इन पांचो छालोंको पीसके लेप देना, सौ दफे धोकर इसमें घी डालना. इससे सर्व विसर्प, धावरा जायगा १२। केलेकी कंद, बड़की शाखा, गुंजा इनको शोधके धोकर घीसे लेप देना.धीवरा,ग्रंथि जायगी१३।सौ दफे धोया घी,शिरसकी छाल, पीसके लेप देना १४। गौरादि घी देना और लगाना १५। दोवडी, गूलर,जामुन, अर्जुन, सात्वीण, पीतल इनके काढ़ामें और कल्कमें घी सिद्ध करना. उससे विसर्प,ज्वर, दाह, पाक, बिस्फोट, सूजन इनको नाश करेगा १६। पटोल,अडूसा,चिरायता, कडुवा नीम, कुटकी, बहेड़ा, आंवला,चंदन इसमें गूगल डालके काढ़ा देना.इससे सर्व विसर्प,

उलटी, दाह, भ्रांति, तृषा जायगी १७ । गिलोय, अडूसा, पटोल, नीमकी छाल, त्रिफला, कत्था, किरमालाका मगज इनको समभाग लेकर काढ़ा करना उसमें चौथा भाग गूगल डालकर देना. इससे विसर्प, कोढ़ जायगा १८ । धमासा पित्तपापड़ा, गिलोय, सोंठ इनको रात्रिमें भिगोकर फजिरको पिलाना. इससे तृषा, विसर्प इनका नाश होगा १९ । पारा, रसकपूर, सिंगरफ, लीलाथोथा, सफेद कुरदाशंख, कत्था, कपूर, मिर्च, कपिला, राल ये सब समभाग लेकर खरल कर पुराने घीमें घोटकर मलहम तैयार करके रखे उसे लगावे तो सर्व जातिका विसर्प, फुड़ियां, विस्फोट, व्रण, गर्मीके चट्टे, मसूरिका, हाड़ गंभीर, सबका नाश करेगा २० । कुंजी आंबली, पाने (तरुड़) के फूलके रसमें, गेरू डालकर लगाना. इससे धावरा जायगा २१ । मिर्च, घी, घीमें पीसकर लगाना व सेकना धावराका नाश होगा २२ । एरंड, कडु तुंबा, नीम, पवांडके बीज, बावच्या, अंकोलके बीज इनको समभाग लेकर पाताल यंत्रसे अर्क काढ़के लगाना, विसर्पनाश होगा २३ ।

हरडा योग ।

मंजिष्ठ, कुड़ेकी छाल, मोथा, गिलोय, हलदी, दारुहलदी, रिंगणी, बच, सोंठ, कुष्ठ, नीम, पटोल, चमेली, बायबिडंग, कावली, मोरबेल, असली, देवदारु, इंद्रजव, मांगरा, आग्रमाण, पाठामूल, शिवण, गंधक, कत्था, त्रिफला, कुटकी, उपलशरी, करंज, अडूसा, खस, किरमालेका मगज, बावच, गहूला, चंदन, पित्तपापड़ा, धमासा, कडू, निशोर, कालाखस, त्रिकटु, खुराशानी अजवाइन ये सब चार २ तोला हरडा ८८ तोला १०२४ पानीमें अष्टमांश काढ़ा करना. बालहरडा निकालकर कांति लोहाकी सुईसे टोंचके बाद शहदपर डालकर इक्कीस दिन रखना. बाद पहिला शहद निकालकर दूसरे शहदमें डालना. बाद एक रोज खाना. यह विसर्प, अठारह जातिका कोढ़, खुड़वत, पामा खाज, दाह, विद्रधि, विस्फोट आदि सब रोगको नाश करता है, द्वंद्वज और त्रिदोषजपर कुष्ठरोगकी रसायन मात्रा देना ।

विसर्परोगपर पथ्य ।

जव, पुराना गेहूं, कांग, सांठीके चावल, मूंग, मसूर, अरहर, चना,

जंगली मांसरस, माखन, घी, दाख, अनार, करेला, पखर आंवला, कत्था, नागकेशर, सरसों, वृक्षकपूर, चंदन, तिललेप ये चीजें हितकारी हैं।

विसर्परोगपर अपथ्य ।

व्यायाम, श्रम, दिनका सोना, हवा लेना, क्रोध, शोक, १३ वेगोंका रोध, जड़ अन्न पान, लहसन, कुलथी, उड़द, तिल, मांस, पसीना; विदाही, नोन, खट्टा, तेल, मिर्ची, दारू, मांदा और प्रकृतिको न माने सो चीजें वर्जित हैं।

इति विसर्परोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ विस्फोटकका निदान ।

कारण–तीखा, खट्टा, तीक्ष्ण, राई, गर्म, रूक्ष, क्षार, अजीर्ण, भोजन-पर भोजन, धूप, ऋतुबदलमें ऐसे कारणोंसे वातादिक दोष कोपित होकर चमड़ीगत धातु रक्तादिकसे मिलके विस्फोटक रोगको पैदा करते हैं. उसमें छाले आते हैं, पूर्वमें बड़ा ताप आता है।

विस्फोटकका सामान्य लक्षण ।

अग्निसे जलके छाले जैसे आते हैं वैसा छाला आना १।

वातविस्फोटकके लक्षण ।

मस्तक शूल, ठनका, ज्वर, तृषा संधिमें पीड़ा, छाले काले रंगके होते हैं २।

पित्तविस्फोटकके लक्षण ।

ज्वर, दाह, ठनका, छालोंमेंसे पीप, पानी आना, पकना, तृषा पीला-पना, लालरंग होता है ३।

कफविस्फोटकके लक्षण ।

उबकाई, अरुचि, भारीपना, छाले, खाज, कठिन, सफेद छाले, कम पीड़ा, देरसे पकना, द्वंद्वज लक्षणसे दो दो और सर्व लक्षणसे सन्निपातज विस्फोटक समझना ४।

रक्तविस्फोटकके लक्षण ।

लाल गुंजाके बराबर विस्फोटक होते हैं। यह रोग असाध्य है और एक दोषी साध्य, दो दोषी कष्टसाध्य और सन्निपातसे असाध्य है ५।

विस्फोटकरोगका उपद्रव ।

हिचकी, दमा, अरुचि, तृषा, ग्लानि, हृदयपीड़ा, ज्वर, मलमल ये उपद्रव होतेहैं

विस्फोटकरोगपर उपाय ।

पूर्वमें लंघन बाद उलटी, रेचन, पथ्य करना १। दशमूल, रस्ना, दारुहलदी, खस, धमासा, गिलोय, धनियाँ, मोथा इनका काढ़ा वातविस्फोटक नाशक है २। दाख, शिवण, खजूर, पटल, नीम, लाही, अडूसा, हेबुर्णी, धमासा इनके काढ़ेमें शहद डालके देना, पित्तविस्फोटकका नाशक है३। चिरायता, नीम, अडूसा, त्रिफला, इंद्रजव, धमासा, नीम, अडूसा इनके काढ़ेमें शकर डालके देना. इससे कफविस्फोटकका नाश होगा ४। चिरायता, नीम, मुलहटी, मोथा, पित्तपापड़ा, पटोल, अडूसा, खस, त्रिफला, इंद्रजव इनके काढ़ेसे दोरदोषी विस्फोटकका नाश होता है तथा त्रिदोषजका ही नाश होगा ५। त्रिफलादि चूर्ण शकरसे देना ६। पटोल, गिलोय, चिरायता, अडूसा, नीम, पित्तपापड़ा, खदिरसार इनका काढ़ा विस्फोटज्वरनाशक है ७ लोध, वच, गूलर, जामुन, अर्जुन, सात्वीण, पिपला इनके काढ़ेमें घी सिद्ध करके देना, विस्फोटक जायगा ८। पद्मादि घी देना ९। घावरापर लिखे मलहम लगाना १०। चंदन, नागकेशर, सिरसकी छाल, चमेलीके पत्ते इनको पीसके चवलाइके रसमें लेप देना ११। सफेद कत्था, मुरदाशंख, कपूर, शंखजीरा, पाषाणभेद, मिर्च इनको पीसके घीसे लेप देना, इससे विस्फोटक जायगा १२।

नाहरू (बाला) पर उपाय ।

निर्गुंडीका रस दो तोलामें समभाग गायका घी डालके सात रोज पीवे तो सर्व जातिकी कृमि, नाहरूका नाश होगा १३। सहँजनेकी छालमें सेंधव लोन डालके कांजीसे लेप देना, नाहरूका नाश होता है १४। पापड़खार, तीन मासा दहींमें डालके देना. सब दिन भूखे रहके सामको खाना. इससे एक दिनमें नाहरू जायगा १५। अमरबेल गुड़से तीन दिन देना. नाहरू जायगा १६। पटोल, सात्वीण, नीम, अडूसा, त्रिफला, गरुड़बेल इनके काढ़ेसे सिद्ध करके घी देना. सर्व विस्फोटक नाश होगा १७

विस्फोटकपर पथ्य ।

उलटी, लंघन, अल्पभोजन, चावल, जव, मूंग, अरहर मसूर इनके जूसमें सोंठ डालके देना, चौलाई, परवल, शतावर, पित्तपापड़ा, मटर, करेला, नीम ये चीजें हितकारी हैं।

विस्फोटपर अपथ्य।

तिल, उड़द, कुलथी, नोन, खटाई, मिर्च, गर्म चीजें, दारू, दाह करने-वाला पदार्थ, रूक्ष और तबीयतको नहीं मानें सो चीजें वर्ज्य करना १०।

इति विस्फोटकरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ मसूरिका (देवी) का निदान।

तीक्ष्ण, खटाई, नोन, क्षार, मच्छी, दूध, विरुद्ध खान पान ऐसे अनेक कारणोंसे, दुष्ट ग्रहादिककी छाया पड़नेसे, वातादिक दोष कुपित होके रक्तादिक धातुसे मिलके त्वचापर फुड़ियां उत्पन्न करते हैं, उसको मसूरिका कहते हैं, वह मसूरिकाके आकारसे होती है, इसवास्ते नाम दिया है, इसको प्राकृतमें (माता देवी कहते हैं) सर्व जन्ममें एक वक्त निकलती है।

मसूरिकाका पूर्वरूप।

ज्वर, खाज, शरीरमें फुड़ियां, अरुचि, भ्रम, चमड़ीमें सूजन, अंगमें व्रण, बदलना, नेत्रको लाली इ लक्षणपरसे जानना कि, देवी निकलेगी. कारण कि, पित्त रक्तसे मिलके त्वचाको दुष्ट करके काली, लाल, फुड़ियां मसूर उड़दके माफिक आती हैं १।

वातमसूरिकाके लक्षण।

कृष्ण, अरुण रूक्ष व्रण, उसमें ठनक, जलद न पके, संधि हड्डियां फूटती हैं, खांसी, कंप, श्रम, गला, होंठ, तलुवा, जीभ सूखना, तृषा, अरुचि ये होते हैं २।

पित्तमसूरिकाके लक्षण।

फुडियां लाल, पीली, काली होके दाह, ठनक, जलदी पकना. इससे मल पतला, अंग मोड़ना, दाह, तृषा, अरुचि, नेत्रोंपर फुड़ियां, बड़ा ज्वर ये लक्षण होते हैं ३।

कफमसूरिकाके लक्षण।

मुख चिकना, लाल बदन, गीला, जड़ होके पीड़ा, उबकाई, अरुचि, ज्यादा नींद, आलस्य, झापड़, फुड़ियां सफेद, बड़ी होके सूजन, खाज ज्यादा होके वेदना कम होती है, बहुत दिनोंमें पकना ऐसा जानना ४।

रक्तमसूरिकाके लक्षण ।

रक्तमसूरिकामें पित्तमसूरिकाका लक्षण होता है और त्रिदोषजमसूरिकामें सब लक्षण होते हैं ५। फुड़ियां बहुत होती हैं और द्वंद्वज दोषसे सब लक्षण होते हैं ६ । ७ ।

चर्ममसूरिकाके लक्षण ।

इस देवीमें पसीना ज्यादा और नहीं, गला ज्यादा पकना, अरुचि, झापड़, बकना, चैन नहीं, इसकी चिकित्सा कठिन है ८।

रोमांतिक गौरव अचपड़ा ।

कफ पित्तसे लाल और खसखसके माफिक बहुत फुनसियां आती हैं उससे खांसी, अरुचि होके पूर्वमें ज्वर आता है. इसको रोमगौरव कहते हैं ९ ।

रसगत मसूरिकाके लक्षण ।

रसगत मसूरिकामें पानीकेसे फेना युक्त, बुड़बुड़ाके माफिक फुड़ियां होके उसमेंसे पानी निकलता है. यह मसूरिका साध्य है १० ।

रक्तगत मसूरिकाके लक्षण ।

लाल होके जल्दी पकती है, उसपर चमड़ी पतली होके पित्तलक्षणसे मिली होती है, फूटे पीछे उसमेंसे रक्त निकलता है. यह कष्टसाध्य है ११ ।

मांसमसूरिकाके लक्षण ।

कठिन चलचल बहुत दिनसे पकनेवाली त्वचा पतली होके कला लगती है, चैन न पड़ना, खाज होना, मूर्छा, दाह, तृषा ये होते हैं १२ ।

मेदगत मसूरिकाके लक्षण ।

गोल, नरम, ऊंची, पुष्ट, काली ऐसी फुड़ियां होके उससे ज्वर, ठनका, इंद्रिय मनकी विकलता, चैन न पड़ना, दाह होना, इससे एक आध आदमी बचता है, यह कष्टसाध्य है १३ ।

अस्थिमज्जागत मसूरिकाके लक्षण ।

हड्डी मज्जासे पैदा होके छोटी अंगारसी रहती है और एकसरीखी थोड़ी ऊंचीसी होके उससे वेदना होके चैन न पडना, यह मर्मजगाका भेद करके जल्दी प्राण लेती है. उसकी हड्डी जैसे भँवरा लकड़ीको छेद करता है वैसी हो जाती है, पीड़ा करती है १४ ।

शुक्रगत मसूरिकाके लक्षण।

मसूरिका पक्की होके चकचकित दीखें, गोल, चिकनी, इनको ज्यादा ठनका, मंदत्व, वैकल्य, मोह, दाह, उन्माद, ये लक्षण होके वह आदमी न बचेगा, यह निश्चय असाध्य है १५।

सधक्षालुगत।

वातादि दोषसे जानना कि, अमुक दोषसे मिली है यानी रसगत, रक्तगत, पित्तगत, कफगत, पित्तकफगत यह मसूरिका सुखसाध्य है और दो दो दोषसे असाध्य ऐसा जानना और सन्निपातमसूरिका असाध्य है कारण कि, उस रंगमें कोई फुड़ियां मूंग, कोई जामुन लोह; सफेद, उड़द ऐसे नानारंग वर्णकी मिश्रित होती हैं, इससे यह मसूरिका असाध्य है १६।

मसूरिकाका उपद्रव।

खांसी, हिचकी, मोह, ज्वर, बड़बड़, असंतोष, मूर्च्छा, तृषा, दाह, नेत्र, गरगर फिरना, मुखसे आखोंसे रक्त गिरना, गलामें आवाज, श्वास, जो रोगी ऐसे लक्षणोंसे युक्त, है सो देवीसे मरता है और हाथपर कमरपर कांधेपर तो असाध्य है. इसको अचपड़ा कहते हैं।

मसूरिकाका उपाय।

वातमरिसूकाको जुलाब और उलटी देना. इससे मसूरिका सूख जायगी १। बबुलकी छाल, तुलसी, लाख, कपाशी, मसूरका आटा, अतिविष, घी, बच, ब्राह्मी, सूर्यफूल, वल्ली इनमेंसे जो मिले उसीका धुवाँ देने देवीके आदि अंतको, इससे मसूरिकाका नाश होगा. इसको वेणुत्वक् धूप कहते हैं.२। वातमसूरिकाको बड़, आंबली, मंजिष्ठ, शिरस, गूलर इनकी छाल घीसे पीसके लेप देना. देवी निकलनेके प्रारंभमें ब्राह्मीके रसमें सफेद चंदन घिसके लेप देना ३। देवी पकनेके वक्तमें गिलोय, मुलहटी, दाख, अनार इनको पीसके सात दिनकी बिआई गायके दूधमें देना. उसमें गुड़ डालना, इससे वात न कोपके अच्छी माता निकलेगी४। पित्तमसूरिकाको पहिले जुलाब देना और धानकी खीलका चूर्ण शकर डालके देना ५। नीम, पित्तपापड़ा, पाठामूल, पटोल, रक्तचंदन, अडूसा, धमासा, आंवला, कुटकी इनका काढ़ा ठंडा करके उसमें शकर डालके देना. इससे पित्त, रक्त, मसू-

रिका शांत होगी ५ । निशोथ, नीमके काढ़ेसे पित्तमसूरिका शांत होगी ६। रक्तमसूरिकाका रक्त निकालना, शांत होगी ७। बृहत्पंचमूल, अडूसाके काढ़ेसे कफमसूरिका शांत होगी ८ । अडूसाके रसमें शहद डालके देना, कफमसूरिका जायगी ९ । गिलोय, पित्तपापड़ा, धमासा, कुटकी इनका काढ़ा देनेसे घोर उपद्रव सहित मसूरिकाका नाश होगा १० ।सोंठ, मोथा, गिलोय, धनियाँ, आरंगमूल, अडूसा इनका काढ़ा देना ११ ।

शीतलाष्टक ।

शीतला देवीको ही मसूरिका कहते हैं। इसमें आठ भेद हैं। पहिले ज्वर आके जो निकलती है उसको बृहतीशीतला कहते हैं.यह सात दिनमें उगती है, दूसरी सात दिनमें पूर्ण होती है १२।तीसरी सात दिनमें सूखती है । उस शीतलापर पके बाद जंगली गोबरीकी राख लगाना १३ । नीमकी डालीसे माखी उड़ाना और पीनेको ठंडा पानी देना, गरम न देना १४। जिसको माता निकले उसको पवित्र शीतल जगहपर रखना और अपवित्र आदमीको छूने न देना १५।आबलीकेबीज और हलदीका चूर्ण ठंडे पानीसे देना. इससे देवी कभी दुःख न देगी १६ ।

सन्निपातमसूरिकापर उपाय

पूजा, जप, ध्यान, नैवेद्य, ब्राह्मणभोजन कराना. इससे शांति होगी और देवीको कोई उपाय करता है और कोई नहीं करता ऐसा जगत्का नियम है, कफ वातसे कोद्रव नामकी देवी थोड़ी और हलकी निकलती है, वह बारा दिनमें विना दवासे शांत हो जाती है १८ ।

मोचरसादि पान ।

सावरका रस, रक्तचंदन १,अडूसेका रस और मुलहटी २, चमेलीका रस और मुलहटी ३,इनमेंसे एकको जो देवी आनेके आगेसे पीवे तो देवी न निकलेगी २१।देवी आंखोंमें ज्यादा हो तो कशाईके बीज, मुलहटी इनका काढ़ा देना.इससे नेत्रकी देवी शांतहोगी२२।पानीकी शींपमेंकेकीड़ाके मांसके

इसका अंजन नेत्रमें करना. इससे मातासे आंख कभी न जायगी २३। (धूप) राल, हींग, लहसन इनकी धूनी देना. इससे देवीके जखममें कीड़ा न पड़ें पड़ें, तो निकल जावें २४। गधेके लीदकी धूनी देना हितकारक है २५।

शस्त्रक्रिया।

भुजापरसे तीन२जगहपरसे शस्त्रसे निकालना.इससे कभी देवी न निकलेगी, यह उपयोग गुरुसे सीखना. डाक्टर और जर्राही हकीमसे सीखना. उसको लस लगाना,पहले देवी निकले उसका लस शस्त्रको लगाके उस शस्त्रसे भुजापर तीन जगहसे निकालना छोटेपनेमें तो कभी देवी नहीं निकलेगी२६।

मसूरिकापर पथ्य।

पुराना चावल, चने, मूंग, मसूर, जव, पक्षीका मांस, मुलहटी, करेले, केला, सहँजना, परवल,दाख,अनार,पुष्ट अन्न, पान, बेर, जंगली मांसरस, घृत, गेहूं, जंगली गोबरीकी राख लगाना, व्रणरोगकी मलहमादिक क्रिया, भुजाकी शिरापर तीन जगहपरसे निकालना. दोष देखके ऐसा उपाय करना, यह रोगीको हितकारी है।

मसूरिकापर अपथ्य।

हवा न लेना, पसीना न निकालना, तेल, जड़, अन्न, क्रोध, कटुक और तीक्ष्ण, खट्टी, नोन ये चीजें और मलादिक वेगोंका रोध और जो तबीयतको न मानें वे चीजें वर्ज्य करना।

इति मसूरिका (देवी)का निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ क्षुद्ररोगका निदान।

क्षुद्ररोग बहुत जातिके हैं, उनके नाम ऐसे हैं १ अजगल्लिका २ यवप्रख्या ३ अंत्रालजी ४ विवृता पिटिका ५कच्छपिका ६ वल्मीकपिडिका ७ इंद्रवृद्धा ८ गर्दभिका ९ पाषाणगर्दभ १० पनसिक ११जालगर्दभ १२ इरिवेल्लिका १३ कक्षा १४ गंधनाम्नी १५ अग्निरोहिणी १६ चिप्प (नखुर्डे) १७ अनुशयी १८ विदारिका १९शर्करा२० शर्करार्बुद २१ पादहारी २२ कदर (करूप) २३ आलस (चिखल्या) २४ इंद्रलुप्त (चावी) २५ दारुण (दारूणा) २६ अरुंषिका (खवड़े,गंज) २७ पलित (केश

पकने) २८ तारुण्यपिटिका (मुख--फुनसियां) २९ पद्मिनीकंटक ३० जंतुमणि ३१ मस्से ३२ तिलकालक (तिल) ३३ न्यच्छ ३४ व्यंग(वांग) ३५ नीलिका ३६ परिवर्तिका ३७ अवपिटिका ३८ निरुद्धप्रकाश ३९ सन्निरुद्धगुद ४० अहिपूतन ४१ वृषण कच्छू ४२ गुदभ्रंश ४३ सूकरदंष्ट्र ।

सामान्यरूप ।

ये रोग पांवपर शिरपर नखोंमें काखमें गुदामें शिरमें केशोंमें और बदनमें अनेक जातिके होते हैं व क्षुद्र हैं । कोई हथेलीमें मेस जलवात गालमें मुहपर मुहकी फुनसियां गलेपर और सब बदनमें मसे आते हैं, कांखमें कख-लाई, गालोंपर चट्टे, फुडियाँ आना, गांठ आना पकना, नासूर होना, व्रण होना, शरीरमें तिल होना, खवडे (गंज) चांय, केश सफेद होना, केश न उगना नख सड़ना गिरना, दस्त न होना, सेद होना ऐसे अनेक शरीरकी फुड़ियां क्षुद्र रोग हैं, इनका शास्त्रमें क्षुद्र नाम दिया है । ऊपरके नामोंसे और चिह्नोंसे वैद्यको उचित है कि तर्कसे उस रोगको देखके उसकी चिकित्सा करे । यहाँ ग्रंथविस्तार होनेके सबबसे सूक्ष्म रीतिसे कहा है. विशेष जरूर हो तो निदानादिक देखना ६९ ।

क्षुद्ररोगपर उपाय ।

अजगल्ली क्षुद्ररोगको जोंक लगाके रक्त निकलना और कलीका चूना (शीपका) उसमें फिटकड़ी, खार इनका लेप करना, अजगल्लिका जायगी और व्रणकी दवा करना १ । यवप्रख्या--जवके माफिक फुड़ियां आती हैं उसमें पहिले पसीना निकालना और मनशिल, देवदारु, कुष्ट इनका लेप करना. पके बाद व्रणका उपाय करना २ । विवृता पके गूलरके माफिक गांठ होती है. उसको मनशिल, भिलावाँ, इलायची, चंदन और चमेलीका पत्ता इनका कल्क करके उसमें नीमकी निंबोलियोंका तेल डालके सिद्ध करना इससे बारुल यानी नीमका नासूर जायगा ४ । वाल्मीकिको चीरके साफ करके उसको व्रणकी दवा करना, कौड़ी, नगरा जायगा ५ । पारा, शिंगरफ, रसकपूर, सफेद कत्था, मुरदाशंख, पाषाणभेद, लीलाथूथा, कपूर, सफेदसुपारी जलाके कपीला, पीली कौड़ी, मिर्च, शंखजीरा ये चीजें समभाग लेके चौगुना

पुराना घी डालके मलहम बनाके रखना, उसके लगानेसे सब जातिके क्षुद्ररोग, कीडीनगरा, वल्मीका, नासूर, सब जातिके व्रण, गंडमाला ये नष्ट होंगे६। पनसिका क्षुद्ररोगको सेकना,सेककेपसीना निकालना और सहँजना, देवदारु इनका लेप देना और विदारीकंदका लेप करना ७। देवदारु, मनशिल इनका लेप देना ८। हाथीदांत जलाके उसमें समभाग रसांजन मिलाके बकरीके दूधमें खरल करके लेप देना.इससे गये केश पीछे आवेंगे ९। गुग्गुल, तिलका फूल, शहद, घी मिलाके लेप देना. इससे केश आवेगा १०। चमेली,बायवर्ना, कनेर इनके रसमें तेल डालके सिद्ध करना. उसका लेप देना. इंद्रलुप्त रोग जायगा ११।

भृंगराजतेल ।

भांगराका रस, लोहका मल,त्रिफला,उपलसरी इनके कल्कमें तिलीका तेल सिद्ध करके लगाना, इससे अकालमें सफेद हुए केश काले होंगे १२। भृंगराजका रस, गुंजा इनके कल्कमें तेल सिद्ध करना.उसके लगानेसे खुजली, बड़ा कोढ़, शिरकी चांय, खवड़े अच्छे होंगे १३। गीले कमलकी केशर, आंवला,मुलहटी इनका लेप करना,इससे खवडा, चांय जाकर शिर साफ होगा १४। पीछे जो मलहम लिखे हैं उनके लगानेसे खवड़ा जायगा १५।

केश काले होनेका लेप ।

लोहेका चूरा, भांगरा, त्रिफला, काली मट्टी ये चीजें बर्तनमें भरके गन्नेका रस उसमें डालके एक महीना भरके रखना, पीछे निकालना और लेप देना.इससे केश काले होंगे १६। केवल नीमका तेल केशको लगावे और उसीकी नास सूंघे और दूध चावल छः महीने खाय तो जड़से केश काले होंगे १७। त्रिफला, लीलके पत्ते, भांगरा,लोहेका चूरा इनका लेप बकरीके मूत्रसे करे तो केश काले होंगे १८। लीलका तेल केशोंमें लगाके उसकी नास सूंघे तो केश काले होंगे १९। लीलका पत्ता लाके सुखाके बारीक पीसके वस्त्रछान करके रखना. जब केशको लगाना हो तब पहले दिन मेहँदी लगाके दो घंटा एरंडके पत्ते बांधके रक्खे, बाद धोके पानीमें निंबूका रस डालके उसमें लील भिगोके केशोंमें लगाके ऊपरसे एरंडके पत्ते बांधके एक घंटा रक्खे बाद धोके तेल लगाना. इससे केश

पकने) २८ तारुण्यपिटिका (मुख--फुनसियां) २९ पद्मिनीकंटक ३० जंतुमणि ३१ मस्से ३२ तिलकालक (तिल) ३३ न्यच्छ ३४ व्यंग(वांग) ३५ नीलिका ३६ परिवर्तिका ३७ अवपिटिका ३८ निरुद्धप्रकाश ३९ सन्निरुद्धगुद ४० अहिपूतन ४१ वृषण कच्छू ४२ गुदभ्रंश ४३ शूकरदंष्ट्र ।

सामान्यरूप ।

ये रोग पांवपर शिरपर नखोंमें कांखमें गुदामें शिरमें केशोंमें और बदनमें अनेक जातिके होते हैं व क्षुद्र हैं । कोई हथेलीमें मेस जलवात गालमें मुहपर मुहकी फुनसियां गलेपर और सब बदनमें मसे आते हैं, कांखमें कख-लाई, गालोंपर चट्टे, फुडियाँ आना, गांठ आना पकना, नासूर होना, व्रण होना, शरीरमें तिल होना, खवडे (गंज) चांय, केश सफेद होना, केश न उगना नख सड़ना गिरना, दस्त न होना, मेद होना ऐसे अनेक शरीरकी फुड़ियां क्षुद्र रोग हैं, इनका शास्त्रमें क्षुद्र नाम दिया है । ऊपरके नामोंसे और चिह्नोंसे वैद्यको उचित है कि तर्कसे उस रोगको देखके उसकी चिकित्सा करे । यहाँ ग्रंथविस्तार होनेके सबबसे सूक्ष्म रीतिसे कहा है. विशेष जरूर हो तो निदानादिक देखना ६९ ।

क्षुद्ररोगपर उपाय ।

अजगल्ली क्षुद्ररोगको जोंक लगाके रक्त निकलना और कलीका चूना (शीपका) उसमें फिटकड़ी, खार इनका लेप करना, अजगल्लिका जायगी और व्रणकी दवा करना १ । यवप्रख्या--जवके माफिक फुड़ियां आती हैं उसमें पहिले पसीना निकालना और मनशिल, देवदारु, कुष्ठ इनका लेप करना. पके बाद व्रणका उपाय करना २ । विवृता पके गूलरके माफिक गांठ होती है. उसको मनशिल, भिलावाँ, इलायची, चंदन और चमेलीका पत्ता इनका कल्क करके उसमें नीमकी निंबोलियोंका तेल डालके सिद्ध करना इससे बाल्ल यानी नीमका नासूर जायगा ४ । वाल्मीकिको चीरके साफ करके उसको व्रणकी दवा करना, कौड़ी, नगरा जायगा ५ । पारा, शिंगरफ, रसकपूर, सफेद कत्था, मुरदाशंख, पाषाणभेद, लीलाथूथा, कपूर, सफेदसुपारी जलाके कपीला, पीली कौड़ी, मिर्च, शंखजीरा ये चीजें समभाग लेके चौगुना

पुराना घी डालके मलहम बनाके रखना, उसके लगानेसे सब जातिके क्षुद्ररोग, कीडीनगरा, वल्मीका, नासूर, सब जातिके व्रण, गंडमाला ये नष्ट होंगे६। पनसिका क्षुद्ररोगको सेकना,सेकके पसीना निकालना और सहँजना, देवदारु इनका लेप देना और विदारीकंदका लेप करना ७। देवदारु, मनशिल इनका लेप देना ८। हाथीदांत जलाके उसमें समभाग रसांजन मिलाके बकरीके दूधमें खरल करके लेप देना.इससे गये केश पीछे आवेंगे ९। गुखुरू, तिलका फूल, शहद, घी मिलाके लेप देना. इससे केश आवेगा १०। चमेली,बायवर्ना, कनेर इनके रसमें तेल डालके सिद्ध करना. उसका लेप देना. इंद्रलुप्त रोग जायगा ११।

भृंगराजतेल।

भांगराका रस, लोहका मल,त्रिफला,उपलसरी इनके कल्कमें तिलीका तेल सिद्ध करके लगाना, इससे अकालमें सफेद हुए केश काले होंगे १२। भृंगराजका रस, गुंजा इनके कल्कमें तेल सिद्ध करना.उसके लगानेसे खुजली, बड़ा कोढ़, शिरकी चांय, खवड़े अच्छे होंगे १३। गीले कमलकी केशर, आंवला,मुलहटी इनका लेप करना,इससे खवडा, चांय जाकर शिर साफ होगा १४। पीछे जो मलहम लिखे हैं उनके लगानेसे खवड़ा जायगा १५।

केश काले होनेका लेप।

लोहेका चूरा, भांगरा, त्रिफला, काली मट्टी ये चीजें बर्तनमें भरके गन्नेका रस उसमें डालके एक महीना भरके रखना, पीछे निकालना और लेप देना.इससे केश काले होंगे १६। केवल नीमका तेल केशको लगावे और उसीकी नास सूंघे और दूध चावल छः महीने खाय तो जड़से केश काले होंगे १७। त्रिफला, लीलके पत्ते, भांगरा,लोहेका चूरा इनका लेप बकरीके मूत्रसे करे तो केश काले होंगे १८। लीलका तेल केशोंमें लगाके उसकी नास सूंघे तो केश काले होंगे १९। लीलका पत्ता लाके सुखाके बारीक पीसके वस्त्रछान करके रखना. जब केशको लगाना हो तब पहले दिन मेहँदी लगाके दो घंटा एरंडके पत्ते बांधके रक्खे, बाद धोके पानीमें निंबूका रस डालके उसमें लील भिगोके केशोंमें लगाके ऊपरसे एरंडके पत्ते बांधके एक घंटा रक्खे बाद धोके तेल लगाना. इससे केश

काले होते हैं २० । लील, मेहँदी एक जगह करके बांधे तो केश काले होते हैं २१ । गुलाबके पानीमें काड़ी खार (कॅष्टिक) युक्तिसे लगावे तो तत्काल केश काले होते हैं २२ । शिवणीका मूल, वज्रदंतीका फूल, केतकीमूल, लोहेका चूरा, भांगरा, त्रिफला इनके काढ़ेमें तेल सिद्ध करके एक महीना जमीनमें गाड़के रखना, उसके लगाने से केश काले होंगे २३ । माजूफल तोला १०, शिंगरास तोला २॥, हीराकसीस तोला ५, मुरदाशंख तोला १, लीलाथूथा मासे ६, लवंग तोला आधा, लोहचूर तोला ॥, माजूफलको पहले भून लेना. तेल लगाके बाद सबका खरल करना-बाद लोहेके बरतनमें आंवला डालके भिगोना, उस पानीमें येदवाइयां काजलके माफिक खरल करके उसकी गोली बांधके रखना, जब लगाना हो तब आंवलोंके पानीमें घिसके लगाना, ऊपरसे एरंडका पत्ता बांधना, चार घंटा रखके खोलके धोना और तेल लगाना. इससे बाल स्याह होंगे २४ । गोपीचंदन, चूना, सिंदूर एकत्र करके लगाना. इससे केश काले होंगे २५ । मुहकी फुड़ियां हो तो गोरचंदन मिर्चको ठंडे पानीमें पीसके लगाना, इससे मुहकी फुड़ियां साफ होके मुखका तेज बढ़ता है २६ । जायफल, चंदन, मिर्च इनको पानीमें पीसके लेप देना, मुहकी फुड़ियां नष्ट होंगी २७ । लोध, धनियां, बच इनका लेप मुखपर करना, मुहकी फुड़ियाँ जायँगी २८ । सरसों, बच, लोध, सेंधवलोन इनको गायके दूधमें पीसके लेप देना २९ । अर्जुनवृक्षकी छालका लेप दूधसे देना ३० । शहदसे मंजिष्ठका लेप देना, मुहकी फुनसियां जायँगी ३१ ।

मसा तथा लहसुन, मंडल ऐसे रोगोंका उपाय ।

मंजिष्ठ, लाख, बिजोरा, मुलहटी हरएक तोला २, तिलका तेल १६ तोला, तेलसे दूना बकरीका दूध डालके मंदाग्निसे पचन करके सिद्ध करना. उसका अभ्यंग सात दिन करना. इससे व्यंगरोग, लहसुन, मुहकी फुनसियां ये सब रोग जाके कांति तेज बढ़ता है ३२ । त्रिभुवनविजयाके पत्ते, देवदारुका मूल, सरसों इनका चूर्ण करके उबटन करना, इससे निश्चय व्यंगका नाश करेगा ३३ । खरगोसका रक्त लगानेसे मुखपर छाया पड़ती है सो जायगी ३४। केशर, चंदन घिसके लगावे तो मुखका कालापना जाके तेज बढ़ेगा ३५। मसूर दूधमें बांटके उसमें घी डालके वह उबटन करना. इससे बहुत खूबसूरती आवेगी ३६ ।

कुंकुमादि तेल।

केशर, चंदन, लोध, पतंग, रक्तचंदन, दारुहलदी, खश, मंजिष्ठ, जेठी मध, तमालपत्र, पद्मकाष्ठ, कमल, कुष्ठ, गोरोचन, हलदी, लाख, दारुहलदी, गेरू, नागकेशर, पलाशके फूल (केसू), आंवला, बड़की साक, मोगरा, शिरस, तुलसी, बच ये दवाइयां हरएक तोला तोला लेके थोड़ी कूटके उससें पानी चौगुना डालके उसके काढ़ेमें १२८ तोला तिलीका तेल डालके उसको सिद्ध करना. वह छानके शीसेमें भरके रखना. उस तेलको मुखमें लगाना. इससे व्यंगरोग, काला दाग, मसा, न्यच्छ, तारुण्यपिडिका, पद्मिनी, कंटक, जंतुमणि इनका नाश होके मुख चंद्रमाकासा चमकेगा ३७। परिवर्तिका रोग इंद्रीपर सुपारीके नीचे छोटी गांठ होती है। परिवर्तिकाको घी मालिश करके सेकना, वातनाशक लेप देना, स्निग्ध भोजन करना ३८। शनिगुरुको वातनाशक उपाय करना, हलका जुलाब देना ३९। शंख, सुरमा, मुलहटी इनका लेप पूतनापर करना ४०। वृषणखरीको खुजलीकी दवा करना ४१। गुदासे कांच बाहर आवे तो तेलादिक लगाके पीछे दबाके बांधना, इससे आराम होगा ४२। खट्टा, बेर, दही, आम, सोंठ, क्षार इनमें घी सिद्ध करके लगाना. इससे गुदासे कांच निकलना आराम होगा ४३। चूहाका मांस गुदापर बांधना, इससे गुदस्राव बंद होगा ४४। भांगराकी जड़, हलदी इनका लेप देना. इससे शूकरदंष्ट्ररोग जायगा ४५। सफेद और लाल कमलकी जड़का लेप गायके घीसे देना और पिलाना इससे सूकरदंष्ट्र रोग जायगा ४६। इन रोगोंमें रोगका तारतम्य दोष देखके पथ्य देना. कारण सब साधारण रोग हैं।

जैसे रोगोंसे मिलान हो ऐसा देना. यह वैद्यके तर्काधीन है. कारण कि क्षुद्ररोग जिन रोगोंमें मिला वैसा ही होता है।

इति क्षुद्ररोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ मुखरोगका निदान-कर्मविपाक।

झूंठी साक्षी देनेवालेको मुखरोग होता है और रक्तपित्ती होती है।

कर्मविपाकका परिहार।

उसमें कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, प्रायश्चित्त करना और चांद्रायण करना. कूष्मांड

होम करके तीस हजार गायत्रीका जप करना और सोना, चावल, दान करना इससे मुखरोग शांत होगा।

मुखरोग कितने प्रकारके होते हैं।

दंत रोग ८ प्रकारका, ओष्टरोग ८प्रकारका, दंतमूलरोग १७ प्रकारका, तालुरोग ९ प्रकारका, जिह्वारोग ५ प्रकारका, कंठरोग २० प्रकारका, सर्वसर ३ प्रकार, सब मिलके पैंसठ रोग मुखमें होते हैं।

संप्राप्ति-जलके आसरेसे रहनेवाले प्राणियोंका मांस खानेसे, दूध, दही, उड़द आदि विरुद्ध पदार्थ खाने पीनेसे, दांत मुख साफ न धोनेसे, कफादि दोष कोपके मुखरोग पैदा करते हैं १।

ओष्ठरोग ८ प्रकारके हैं, उनका निदान।

वात-ओष्ठरोगमें ओष्ठ कर्कश, खरदरा कठिन काला होके तीव्र पीड़ा, फटासा रहता है १। पित्त-ओष्ठ रोगमें फुड़ियां होके दुखना, आग होके पीला दीखे २। कफसे ओंठ सफेद, फुडियां, थोड़ा दुखना, चिकना ठंडा जड़, रहता है ३। सन्निपातसे सब लक्षण होते है ४। रक्तसे ओठोंपर छुराकेसे रंगके माफिक फुडियां आती हैं, रक्त निकालता है, लाल रहता है ५। मांस-ओष्ठसे मांस खराब होके ओंठ जड ज्यादा होके मांस पिंडी समान चल चल होके सड़ता है, किसीमें कीड़े भी पड़ते हैं ६। मेद-ओष्ठमें घीका रंग होके सड़ना, सूजन, खाज आना, जड़, सफेद ऐसा होता है ७

अभिघात-ओष्ठरोग।

लगनेसे अभिघात होंठ चारों तरफ चिरता है, ठनका, गांठ होना, खाज छूटके पीप बहता है।

दंतमूलरोग १७ प्रकारके हैं, उनका निदान।

शीतादि-जिसके मसूढ़ेसे एकाएक रक्त निकलता है, दुर्गंध श्याम होके सड़ना, नरम होके झरना, ये रोग, अन्यान्य सड़ना, कफ रक्तसे होते हैं १।

दंतपुप्पुट-जिसमें दो और तीन दांतके मसूढ़े सूजते है, यह रोग कफरक्तसे होता है २।

दंतवेष्ट–रक्तदुष्टिसे दांत हिलना, रक्त पड़ना ३।

सौषिर–कफ रक्तसे जड़में सूजन आके लार पड़ना ४।

महासौषिर–त्रिदोषव्याधिसे जड़ोंमेंसे दांत हिलाता है और छिद्र पड़ता है ५।

परिदर–इसमेंसे मसूढ़े सड़के मांस गल जाता है और थूकमें रक्त गिरता है. यह रोग रक्तपित्तकफसे है ६।

उपकुश–मसूड़ोंमें आग होना, पकना, दांत हिलना, मुंह नीचे करनेमें तकलीफ होना, खून पड़ना, बाद फिर भरना, मुखकी बदबू आना यह पित्तरक्त कृमिसे होता है ७।

वैदर्भ–मसूढ़ा बहुत घिसनेसे बहुत सूजनके कारण दांत खिल खिल होते हैं; इसको अभिघात कहते हैं ८।

खल्लीवर्धन–वातके योगसे दांतपर एक नवा दांत पैदा होता है. उससे ठनक लगना, वह दांत सब निकाले बाद शांति होती है ९।

कराल–वात दंतमूलमें कोपके दांत टेढ़े बांके करता है यह असाध्य है १०।

अधिमांसक–दाढ़के आखर जड़में सूजन आती है बहुत ठनकती है, मुखमें लार बहती है यह कफसे हैं ११।

नाडीव्रण–व्रणनिदानमें जो नाडीव्रण कहा है वह दांतमूलमें होता है। वह पांच तरहका है १ वातसे १ पित्तसे १ कफसे १ सन्निपातसे १ आगतुकसे १ मिलाके सत्रह दंतमूल रोग होते है १२।

दंतरोग ८ प्रकारके हैं उनका निदान।

दालन–जिससे दातोंमें फोडने माफिक पीड़ा होती है वह दालन है १।

कृमिदंतक–वातदोषसे दातोंमें काले खड्डे पड़ते है, हलते हैं, लाल पीप गिरता है, सूजन होके ठनकता है, विना कारण दुखता है इस रोगको कृमिदंत कहते हैं, इसमें छिद्र पड़नेका कारण ऐसा है कि, दुष्ट खूनसे कृमि पैदा होके दांत कोरमें छिद्र करते है २।

भंजनक–इस रोगसे मुख टेढ़ा होके दांत फूटते है। यह रोग कफवातसे होता है ३।

दंतहर्ष-दांतोंको रूक्ष, खट्टी हवा लगनेसे दांत शलशल करते हैं । यह रोग पित्तवातसे होता है, गरम नहीं सहन होता है ४।

दंतशर्करा-दांतोंका मैल सूखके रेतीसरीका खरदरा होके रहता है ५।

कपालिका-शर्कराकी खपली जमके दांत खराब होते हैं ६ ।

श्यावदंत-जो दांत रक्तयुक्त पित्तसे जलके काले स्याह होते हैं और लाल होते हैं यह असाध्य है ७ ।

हनुमोक्ष-वातयोगसे, अभिघातसे हनुसंधि उखलती है इसका लक्षण अर्दितवातसे होता है. इसको हनुमोक्ष कहते हैं ।

जिह्वारोग ५ प्रकारके होते हैं, उनका निदान ।

वातजिह्वा-वातसे जीभ फूटती है, दरारें पड़ती है, सागपान, गौकी जीभ सम खरदरी होती है १ ।

पित्तजिह्वा-पीली दाह,लाल चट्टे,आग होना,तीक्ष्ण द्वेष २ ।

कफजिह्वा-जीभ जड़ भारी मोटी होके मांसके कांटे माफिक अंकुर आते हैं ३ ।

अलास-जीभके नीचे कफरक्तसे युक्त बड़ी सूजन आती है उसके बढ़ने से जीभ कड़ी होके जड़मेंसे पकती है यह असाध्य है ४ ।

उपजिह्वा-कफरक्तसे जीभका मुख सूजन जीभके नीचे दबाके आती है उससे लाल ज्यादा खाज आके जलन होना. इसको वैद्य लोग उपजिह्वा कहते हैं ५ ।

तालुरोग ९ प्रकारके हैं उनका निदान ।

पड़जिह्वा-कफरक्तसे तालवाके अग्र भागपर बस्ती सरीखी सूजन आती है उसपर बाल आते हैं उसके योगसे तृषा, खांसी, श्वास ये होके इस रोगको कंठशुंडी कहते हैं १ ।

तुंडिकेर-रक्तसे तालवामें कपासके फलके माफिक सूजन आती है२ । उसमें ठनका टोचनी लगती है आग होके पकती है ३।

अध्रुव-रक्तसे तलवापर लाल कठिन सूजन आके ठनका लगके तप आता है ४ ।

कच्छप-कफसे तालुपर कछुवेकी पीठके माफिक सूजन आके उसे ठनका कम होके देरसे पकेगी ५ ।

अर्बुद-रक्त से तालुमें कमलकी कटोरीके माफिक सूजन आके इसमें रक्तअर्बुदके माफिक लक्षण होते हैं ५।

मांससंघात-कफसे तलवेमें मांस नष्ट होके सूजन आती है,दुःख कम रहता है ६।

तालुपुप्पुट-मेदयुक्त कफसे तलुवापर रुजारहित स्थिर बेर बराबर सूजन आती है ७।

तालुशोष-वातसे तालु अति कोरा पड़के भेगा पड़ती हैं और भयंकर श्वास लगता है ८।

तालुपाक-पित्तकुपित होके तालुमें अतिभयंकर पकी फुड़ियां होती हैं ९।

कंठरोग २० प्रकारके हैं, उनका निदान।

रोहिणी-गलेमें वात,कफ,पित्त ये दुष्ट होके मांस व रक्तको दुष्ट करके गलेमें अंकुर पैदा करते हैं उससे गला रुँध जाता है। यह रोहिणी रोग प्राणनाश करता है १।

वातरोहिणी-जिह्वाके चारों तरफ अतिवेदना युक्त मांसअंकुर पैदा होते हैं,उनसे कंठ रुक जाता है,उसमें कफ मस्तक सिवाय समस्त वातके उपद्रव होते हैं २।

पित्तरोजहिणी--यह जल्दीसे बढ़के पकती है, ज्वर होके सब पित्तके उपद्रव होते हैं ३।

कफरोहिणी-कंठमार्गको रोक देती है, धीरे धीरे पकती है और अंकुर कठिन पैदा करके खाज और कफके सब उपद्रव होते हैं ४।

त्रिदोषजरोहिणी--सब लक्षण होके असाध्य है ५।

रक्तरोहिणी--पित्तरोहिणीके लक्षण होते हैं, यह साध्य है६।

कंठशालुक--कफसे गलेमें बेरकी गुठलीके बराबर गांठ आती है उसपर छोटे कांटे होते हैं,वह खरदरी कठिन होती है,यह चीरनेसे साध्य होती है७।

अधिजिह्वा--रक्तमिश्र कफसे जीभकी अनी सरीखी जीभपर सूजन आती है, इसे अधिजिह्वा कहते हैं। यह पके बाद साध्य न होगी ८।

वलय--कफसे ऊंची और लंबी गांठ गलेमें उत्पन्न होती है, उससे अन्न पानी गलेमें जाना मुश्किल होता है. इसमें कुछ इलाज नहीं चलता. इसको प्राकृतमें घाटसर्प कहते हैं. यह असाध्य है ९ ।

बलास--कुपित कफ वात गलेमें सूजनको पैदा करता है, उससे दमा, गला दूखना. इस मर्मभेद करनेवाले खराब व्याधिको वैद्य लोगोंने बलास नाम दिया है १० ।

एकवृंद--गलेमें गोल ऊंची कुछ दाहयुक्त सूजनको पैदा करता है, वह जरासी पकती है, कुछ नरम, जड़ ऐसा होती है. यह व्याधि कफ रक्तसे पैदा होती है ११ ।

वृंद--गलेमें ऊंचा, गोल, तीव्र दाह ज्वरयुक्त जो सूजन पैदा होती है उसे वृंद कहते हैं, यह पित्तरक्तसे होता है १२ ।

शतघ्नी--कंठमें लंबी और कठिन सूजन आती है, उससे गलारोध होके उसपर मांसके कांटे बहुत होते हैं, उसमें तोद, भेद, दाह, खाज ये बहुत होते हैं । इसमें बहुत पीड़ा होके प्राणनाश करती है, यह असाध्य है १३ ।

गिलायु--कफसे रक्त मिलके गलेमें आंवलेकी गुठलीके बराबर गांठ पैदा होती है, वह कठिन होके मंदपीड़ा होती है, उससे खाना पीना अटक जाता है । यह रोग शस्त्रसे साध्य होता है १४ ।

गलविद्रधि--जो सूजन सब गलेमें आती है उसमें सब तरहकी वेदना होती है. उसे निदानमें त्रिदोषगलविद्रधि जानना, असाध्य है १५ ।

रक्तयुक्त कफसे--गलेमें बड़ी सूजन होती है, इसके योगसे अन्न पानी बंद होता है, हवाका संचार नहीं होता. इसको गलघोष कहते हैं १६ ।

स्वरघ्न--हवाका मार्ग कफसे लिप्त होके बार बार आंखोंके आगे अंधेरा आके श्वास छोड़ता है और आवाज बैठके गला सूखता है, निगलनेको दुःख होता है ऐसा जानना १७ ।

मांसतान--जो सूजन गलेमें पैदा होके क्रमसे पसरके सब गला रोध करती है वह बहुत कष्ट देती है, उसका नाम मांसतान दिया है १८ ।

विदारी--पित्तसे गलेमें सूजन होके दाह होता है, टोंचनी लगके मांस सड़ जाता है, दुर्गंध आती है, जिधर करवट लेता है उधर ज्यादा दुखती है, सब

मुखरोगमें रोहिणी तीन तरहकी है कई आगरू, मुखपाक, सब मुख आना. वातसे मुखको सब ठिकाने फुड़ियां आती हैं, चुन चुन करती है, पित्तसे मुखमें लाल, पीली फुड़ियां आती हैं; चट्टे पड़के आग होती है १९।

कफसे-सफेद खाजसे युक्त फुड़ियां चट्टेमें ठंडापन होके मुख मधुर, मन्द वेदना होती है २०।

मुखरोगोंका असाध्य लक्षण।

होठ रोगमें, १ मांसज २ रक्तज ३ त्रिदोषज असाध्य हैं। दंतमूलरोगोंमें १ सन्निपातज २ नाडीव्रण ३ सौषिर असाध्य हैं, दंत रोगमें १श्याव २दालन ३ भंजन ये असाध्य हैं. जिह्वा रोगोंमें १ बलासा असाध्य है. तालु-रोगेंमें १ अर्बुद असाध्य है. गलरोगोंमें स्वरघ्न २ वलय ३ वृंद ४ बलास ५ विदारिका ६ गलौघ ७ मांसतान ८ शतघ्नी ९ रोहिणी ये उन्नीस रोग सब मुख रोगोंमें असाध्य हैं. इनपर इलाज करना हो तो वैद्य प्रत्याख्यान करे, खातरी अच्छा होनेकी परमेश्वरके स्वाधीन है ऐसा कहकर इलाज करे।

मुखरोगपर उपाय।

वात-ओष्ठ रोगपर गरम स्नेहन उष्ण परिषेक और लेप, घीपान, रस-युक्त भोजन, अभ्यंजन, स्वेदन, लेपन ये उपाय करने चाहिये १। तेल, घी, राल, मोम, रास्ना, गुड़, सेंधवलोन, गेरू ये चीजें एकत्र गरम करके लेप देना, इससे सब ओष्ठरोग आराम हो २। राल, मोम इनको घीमें गरम करके लेप देना ३।

पित्त-ओष्ठरोगपर-शिरावेध, वमन, रेचन, कडू रसयुक्त भोजन, ठंडा लेप, पित्तनाशक काढ़ा ऐसे उपाय करना ४।

कफ-ओष्ठरोगपर--रक्त काढ़के मस्तकका जुलाब, धूम्रपान, सेक, कुल्ला कराना ५।

सन्निपात-ओष्ठरोगपर-दोष देखके उपाय करना और जखम हो तो व्रणका उपाय करना ६। गहुला, हरडा, त्रिफला, लोध, इनका चूर्ण बारीक पीसके शहदसे लेप देना. सब ओष्ठ रोग जायगा. ७सोंठ शिरस इनके काढ़ेसे और त्रिफलेके काढ़ेसे कुल्ले करना, इससे दंतमूलरोग जायगा ८। हीराकसीस, लोध

पिप्पली, गहूला, ज्योतिष्मती इनका चूर्ण करके शहदसे लेप देना. यह सड़े हुए मांसका नाश करता है.इसपर वातनाशक घी लगाना ९। रक्तदुष्ट रोगका रक्त निकालना शिरावेध करना, नास सुंघाना, स्निग्ध भोजन देना १०। लोध, पतंग, जेठीमध, लाख इनका चूर्ण करके शहदसे कुल्ला कराना. इससे दंतमूल रोग जायगा ११।कसीसे घिसके कुल्ला करना १२। पिपली, सेंधवलोन, जीरा इनके चूर्णसे दांत घिसना, दंत रोग जायगा १३।भद्रमोथा,हरड़ा,त्रिकटु,विडंग,नीमके पत्ते ये सब चीजें गोमूत्रमें पीसके गोली करना, छायामें सुखाके गोली रातको मुखमें पकड़के सोना, इससे दंतमूलरोग जाके दांत मजबूत होते हैं १४ । वज्रदंतीका काढ़ा अष्टमांश करके कुल्ला कराना. दांत मजबूत होते हैं १५ । शिरोरोगको पहिले रक्त निकालना और लोध, नागरमोथा, रसांजन इनका चूर्ण करके शहदसे लेप देना. इससे शांत होगा १६ । नोन, शहद, त्रिकटु इनका चूर्ण करके उससे दांत घिसना. दंतमूल रोग जायगा १७।बच, मालकांगणी, पाठा-मूल, सज्जीखार, जवाखार पिपली इनका चूर्ण और कल्क मुखमें रखना और पटोल, नीम,त्रिफलाके काढ़ासे मुख धोना. इससे मुखरोग जायगा १८ । हीराकसीस, हींग, फिटकरी, देवदारु इनको समभाग पानीमें पीसके गोली करके दांतमें रखना. इससे कीड़ा लगा, दांतकी शूल बंद होगी १९ । शहदमें लाखका चूर्ण मिलाके दांत घिसना २० । दंतनाडी-पर नाडी व्रणकी दवा करना२१।जो नाडीव्रण ऊंडा हो तो शस्त्रसे छेदके दाग देना २२।चमेलीका पत्ता, मेलफल,पांगारा, गोखरू, मंजिष्ठ,लोध,खैरकी छाल, मुलहटी इनका काढ़ा करके उसमें तेल डालके सिद्ध करना, वह तेल लगानेसे नाडीव्रणकी गति बंद होगी २३ । संपूर्ण दंतरोगपर वात-नाशक क्रिया करना और तैलादिक मुखमें पकड़ना २४। लाक्षादिक तेल सर्व दंतरोगोंका नाश करता है २५ ।

खादिरसार तेल।

खैर छाल ४०० तोला, पानी१०२४ तोलामें चतुर्थांश काढ़ा करके छान लेना,उसमें १२८ तोला तिल्लीका तेल डालना और खैरछाल,लवँग, गेरू, कृष्णागर, पद्मकाष्ठ, मंजिष्ठ, जेष्ठीमध, लाख, बड़की साक, मोथा,

दालचीनी, जायफल, कपूर, कंकोल, कत्था, पतंग, धायटीके फूल, छोटी इलायची, नागकेशर, जायफल ये चीजें हरएक तोला तोला लेके कल्क करके उसमें डालके तेल सिद्ध करना. यह खदिरादि तेल दांतकी कड़की, मांस हिलना चलना, शीर्ण, दंतसौषिर, शीतोद, दंतहर्ष, विद्रधि, कृमि, दंतस्फुटन, जिह्वा, तालु, ओष्ठ इन सर्व रोगोंका नाश करता है २६। कुष्ठ, दारुहलदी, लोध, नागरमोथा, मंजिष्ठ, पाठामूल, कुटकी, मोरबेल, पिपली, जुई इनका चूर्ण करके दांतोंको घिसना. इससे दंतरोग जायगा २७। चमेलीके पत्ते, पुनर्नवा, गजपिपली, वज्रदंती, बच, सोंठ, अजवाइन, हरड़ा, तिल ये सब समभाग लेके इनका चूर्ण मुखमें पकड़ना. इससे दांत कठिन होके हिलना बंद होगा. ठनका, व्रण, सूजन, खाज, कृमि इनका नाश होगा २८।

अपथ्यकारक पदार्थ।

खट्टा फल, ठंडा पानी, रूक्ष चीजें, दंत घिसना, कठिन चीजें भक्षण न करना।

जिह्वाको-प्रतिसारण करके शिरका रेचन देना. कुल्ला करना, धुवाँ पीना २९। त्रिकटु, जवाखार, हरड़ा, चित्रक इनके चूर्णसे घिसना और इन दवाइयोंके काढ़ेमें तेल सिद्ध करके मुखमें धरना. इससे जिह्वारोगका नाश होता है ३०। घेरोसा, कांजीसे मिलाके कुल्ला करना, इससे जीभरोग जायगा ३१। निर्गुंडीकी जड़से घिसना, मुसलीके चूर्णसे मालिश करना, इससे पड़जीभ जायगी ३२। कचनारकी छाल, खैरकी छाल इनका काढ़ा मुखमें पकड़ना. इससे जिह्वारोग जायगा ३३। बहुत रोग जीभपर हो तो रक्त काढ़ना ३४। वातजिह्वक रोगको वातहारक दवाइयां करना और पित्तजिह्वक रोगको पित्तनाशक दवा करना ३५। दंत, जिह्वा, मुख इनको चूर्ण और कल्क और अवलेह ये चीजें अंगुलीसे धीरे धीरे घिसना इसको प्रतिसारण कहते हैं ३६। सफेद कत्था, इलायची, मुखमें पकड़ना जिह्वारोग शांत होगा ३७। फिटकड़ी, कत्था, इलायची, शीतलचीनी, गोपीचन्दन, थोड़ा लीलाथोथा, पाषाणभेद, शंखजीरा इनको पीसके जीभमें लगाना, दांत घिसना, लार गिराना, कैसा ही जिह्वारोग, दंतरोग हो तो नष्ट होगा; दांत मजबूत होके सब मुखरोगका नाश होगा ३८।

तालुरोगपर उपाय ।

पड़जीभ, आगरू, कच्छ, तालुपुप्पुट इनपर हस्तक्रिया करना. शस्त्र-क्रिया उसपर ज्यादा कही है३८। पड़जीभ ज्यादा कटी हो तो रक्त बहुत जाके रोगी मर जाता है और कम कटी हो तो सूजन और लाल व्रण, भ्रम होता है इसवास्ते कुशल हकीम उसको माफिक काटके शस्त्रयुक्त उपाय करे ३९। काटे पीछे पीपल, अतिविष, कुष्ठ, बच, मिर्च, सोंठ इनका चूर्ण शहदमें मिलाके धीरे धीरे लगाना, इससे पड़जीभ शांत होती है ४०। पड़जीभको जीरा और नोनसे घिसना ४१। लहसनका रस युक्तिसे लगाना ४२। मिसीसे मालिश करना ४३। फाड़ीखार युक्तिसे लगाना ४४।

गलारोगपर उपाय ।

गलाके सत्रह रोग-रोहिणी आदिकमेंसे रक्त निकालना, वमन देना, कुल्ला कराना, नास देना. ये उपाय करने चाहिये ४५। वातरोहिणीका रक्त निकालके दतूनसे घिसना और स्नेह हो ऐसे गरम पदार्थका कुल्ला करना ४६। पित्तसे युक्त रोहिणीको शकर, शहद, गहूला इनका चूर्ण मालिश करके द्राक्षा, फालसाका काढ़ा करके मुखमें धारण करना, फायदा होगा ४७ रक्तरोहिणीका उपाय करना ४८। कंठशुंडी, कंठशालूक इनका रक्त निकालना, तुंडिकाके उपाय करना, एक वक्त जवका अन्न देना४९। कफरोहिणीमें तीक्ष्ण दवासे मलिश करना, नस्य देना, शोधन करना५०। गलाअधिजिह्वक रोगपर पड़जिह्वाका इलाज करना ५१। एकवृंदरोगका शस्त्रसे शोध करना ५२। एकवृंदकी दवा वृंदपर करनी चाहिये ५३। गिलायुको शस्त्रक्रिया करनी५४। मुखपाक हो तो उसको नोनसे घिसना, वातनाशक दवा करना, नास देना, कुल्ला कराना५५। पित्तमुखपाकको जुलाब, मधुर रस, ठंडी, पित्तनाशक दवा करनी५६। कफरोगको कुल्ला, धूम्रपान, शोधन, कफनाशक इलाज करना चाहिये ५७। दारुहलदी, दालचीनी, नीम, रसांजन, इंद्रजव इनका काढ़ा देना, मुखरोग जायगा ५८। कुटकी, अतिविष, देवदारु, पाठामूल, मोथा, इंद्रजव इनका काढ़ा गोमूत्रसे दे तो गलारोग जायगा ५९। दाख, कुटकी, त्रिकटु, दारुहलदी, दालचीनी, हरडा, बहेड़ा, आंवला, मोथा, पाठामूल, रसांजन, दोब,

तेजबल इनका चूर्ण शहदसे देना. इससे गलारोग जायगा६०। जवाखार, तेजबल,पाठामूल,रसांजन,दारुहलदी,पीपली इनके चूर्णकी गोली शहदसे बांधके मुखमें रखना. इससे सब गलारोग,मुखरोग जायगा ६१। ये तीनों दवाइयां अनुक्रमसे वात,कफ,पित्त इन तीनोंका नाश करती हैं और संपूर्ण मुखरोगपर शिरावेध,मस्तकजुलाब,शहद,घी, दूध,ठंडापदार्थ इनका उपाय करना चाहिये६२।चमेलीके पत्ते रोज चाबके थूकना.इससे मुखरोग जायगा ६३। पिपली,मिर्च, कुष्ट, इंद्रजव इनको तीन दिन चबाना.इससे मुखपाक, दुर्गंध, लस ये नष्ट होते हैं ६४।जिसका मुख चूनासे फटता है उसमें सोडा-वाटर पीना और खटाई पीना और तेल सिद्ध किया मुखमें पकड़ना६५।

खदिरसार गुटी।

खैरकी छाल ४०० तोला, पानी १०२४ तोला डालके उसका अष्टमांश काढ़ा करके छान लेना.उसमें जायपत्री,कपूर,चिकनी सुपारी,दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, नागकेशर, कस्तूरी ये चीजें एक एक तोला लेके खरलमें डालके घोटना और उसमें वह खैरका काढ़ा डालते जाना तथा घोटते जाना, सब काढ़ा पूरा हो तब बराबर गोली बांधके रखना. वह गोली मुखमें पकड़ना, इससे सर्व मुखरोग नाश होताहै. इसको खदिरसारगुटिका कहते हैं६६।लाल फिटकड़ी, सफेद फिटकड़ी, सफेद कत्था, इलायची, शीतलचीनी, लीलाथूथा, मुरदाशंख, पाषाणभेद, शंखजीरा, गोपीचंदन इन चीजोंका खरलकरकेमंजन तैयार करना. इसको लगाकर लार गिराना. इससे सर्व मुखरोग, तालुरोग, गलारोग, जिह्वारोग, मुखपाक, अगरू,इनका नाश होता है ६७। बेरकी छाल,बबुलकी छाल इसके काढ़ेमें फिटकड़ी डालके कुल्ला करना. इससे मुखरोग नाश होगा. दांत मजबूत होंगे ६८। रसकपूर विधिसंयुक्त देना. मुखरोगनाश होगा ६९। जव, कुष्ठ,आमके मौर, केवडेका गाभा इनको चिलममें डालके धुंवा पीवे तो गलरोग साफ होगा ७०। मिश्री,इलायची, मिर्च इनमेंसे कोई भी चीज चाबके थूकना, इससे गलारोग नष्ट होगा मुखमें पकड़नेसे शांत होगा ७१। बिजोरेके रसमें घी डालके देना. मुखरोग शांत होगा।

मुखरोगपर पथ्य ।

पसीना, जुलाब, कुल्ला, प्रतिसारण, मुखमें दवा धारण करना, रक्त-मोक्ष, नास, धूम्रपान, शस्त्रक्रिया, अग्निकर्म, देवभात, जव, मूंग, कुलथी, जंगली मांस रस आमला, शतावर, करेले, परवल, कोमल मूली, मोटका पानी, खैरका काढ़ा, तीक्ष्ण, कडू रस ये चीजें हितकारक हैं ।

मुखरोगपर अपथ्य ।

दंतकाष्ठसे घिसना, स्नान, खटाई, अनूपमांस, दही, दूध, गुड़, उड़द, क्षार, अन्न, कठिन चीजें, नीचे मुख करके सोना, जड़ पौष्टिक चीजें दिनका सोना, बैंगन, गरम चीजें, दारू और तबीयतको न मानें सो चीजें वर्जित हैं।

इति मुखरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ कर्णरोगका निदान-कर्मविपाक ।

माता, पिता, गुरु, देवता ब्राह्मण इनकी निंदा जो दिल लगाके सुनता है वह आदमी कर्णरोगी होता है. उसके कानमेंसे रक्तपीप बहता है ।

कर्मविपाकका परिहार ।

उसमें कृच्छ्र प्रायश्चित्त करना और सुवर्ण लाल वस्त्र दान करना इससे शांत होगा. ब्राह्मणभोजन कराके सोममंत्रसे होम करना, शांत होगा ।

कर्णरोग होनेका कारण ।

उपास, जलक्रीड़ा, पानी कानमें जानेसे, खुजलानेसे, लकडी डालनेसे शस्त्र-घातसे ऐसे अनेक कारणोंसे वातादिक दोष कुपित होके कर्णरोग २८ प्रकारके होते हैं और कानकी शिरामें प्रवेश करके शब्दवाहिनी शिरा बंद करके शूल पैदा करते हैं. कर्णरोगके नाम-१ कर्णशूल २ कर्णनाद ३ बाधिर्य ४ कर्णक्ष्वेड ५ कर्णस्राक ६ कर्णकंडू ७ कर्णगूथ ८ प्रतिनाह ९ कृमिकर्ण २ तरहका १० विद्रधि ११ कर्णपाक १२ पूतिकर्ण ४ तरहके १३ कर्णअर्श सात तरहका १४ कर्णअर्बुद ४ तरहका १५ कर्णशोष ऐसे सब २८ प्रकारके कर्णरोग होते हैं १ ।

कर्णशूल-अतिशूल होना यह कष्टसाध्य है ।

कर्णनाद--वात कानमें रहके नानाप्रकारके स्वर, नौबत, मृदंग, शंख ऐसे अनेक नाद करता है २ ।

बाधिर्य-कफयुक्त वात बहानेवाली शिरामें रहके सुनना बंद करता है, बहिरापन करता है, सुनना नहीं आता ३ ।

कर्णक्ष्वेड--पित्तादि दोषसे युक्त वात कानमें वीणाके माफिक शब्द करता है ४ ।

कर्णस्राव--शिरको किसीप्रकारसे चोट वगैरः लगनेसे और पानी जानेसे कान अंदरसे पकके उसमेंसे नानाप्रकारके पीप निकलते हैं ५ ।

कर्णकंडू--कफसे युक्त वात कानमें खाज पैदा करता है ६ ।

कर्णगूथ--पित्तकी गरमीसे कफ सूखकर जो मैल जमता है, उसको कर्णगूथ कहते हैं ७ ।

कर्णप्रतिनाह-वह कानका मैल पतला होनेसे और स्नेह स्वेदादिकसे पतला होनेसे नाक मुखमें आता है उसको प्रतिनाह कहते हैं, इससे आदमीको आधाशीसी पैदा होती है ८ ।

कृमिकर्ण--जब कानमें कीड़े पड़ते हैं और मक्खी अंडा करती है और बुग (गोमाशी) घुसके उसे चटका मारती है, जैसे कोई अंदरसे काटता है ऐसा मालूम होता है. उससे चैन न पड़ना, जीव व्याकुल होना, ठनक लगना, फड़फड़ाहट शब्द होना, कीड़ा फिरते वक्त तीव्र वेदना होना, कीडेके शान्त होनेसे कम होना ९।

कर्णविद्रधि--कान खुजानेसे लगके जखम पड़नेसे विद्रधि यानी गांठ पैदा होती है और वातादिक दोष कोपके फोडी होती है उसके फूटेसे लाल पीला रक्त बहता है, ठनक लगती है, धुवाँ निकलने माफिक आग होके खींचता है १० ।

कर्णपाक--पित्तसे और विद्रधिसे अथवा पानी जानेसे कान सड़ जाता है, पीला रहता है ११ ।

पूतिकर्ण--कानमेंसे पीप निकलता है उसे पूतिकर्ण कहते हैं १२ । कानको सूजन, अर्बुद और अर्श ये रोग होते हैं, उसका लक्षण निदानसे जानना चाहिये १३। वातसे कानमें ठनक लगना, नाद होना, कानका मैल सूख जाना, पतला स्राव होना, सुनना कम होना १४। पित्तकर्णसे कान सूखना,

लाल होना, चीरे पड़ना, आग होना और थोड़ा पीला स्राव होना १५। कफजकर्णरोग--कफसे कम सुनाई देना. खुजली, कठिन सूजन आना, सफेद पीप निकलना, चिकटा करना १६।

कर्णपालीरोग कर्णशोथ-सुकुमार कानकी लोलको बढ़ानेके वास्ते कानको खींचते हैं उससे कानके बाहर लोलमें सूजन आती है १७।

परिपोटक-वातके योगसे जो काली, लाल, कठिन सूजन आती है उसको परिपोटक कहते हैं १८।

उत्पात--भारी दागीना डालनेसे और मारनेसे और दवा लागानेसे रक्त-पित्त कुपित होके कानकी लोरको हरी, लाल, नीली सूजन आती है, आग होके ठनका लगता है, आमीजती है, इस रोगको उत्पात कहते हैं १९।

उन्मंथक-कान जबरदस्ती बढ़ानेसे पालीमें वात कुपित होके कफको लेके कठिन मंद वेदनावाली सूजन करता है, उसमें खाज बढ़ती है२०।

दुःखवर्धन--खराब रीतिसे कान बेधनेसे खुजली, दाह, ठनके इनसे युक्त सूजन आती है, पकता है, इसको कोई दुःखवर्धन कहते हैं २१।

परिलेही--कफरक्त कृमिसे उत्पन्न हुई इधर उधर फिरनेवाली ऐसी सूजन कानपालीको होती है इसवास्ते ऐसा नाम दिया है २२।

कर्णरोगपर उपाय ।

संगवेर तेल--अदरखका रस, शहद, सेंधवलोन, सरसोंका तेल इनको पचाके तेल निकाल लेना. वह तेल मंद गरम कानमें डालना, शूल बंद होगा १। लहसन अदरख, सहँजना. वायवर्णा, मूला, केला इनका रस शीतोष्ण कानमें डालना श्रेष्ठ है २। आकड़ाकी कोंप लेके निंबूके रसमें पीसके उसमें तेल, नोन, डालके वह कल्क थोहरकी लकड़ीमें भरके कपड़-मट्टी करके पुटपाक करके उसको गरम गरम निकालके कानमें डालना. इससे कानके शूलका नाश होगा ३। आकके पक्के पत्तेको घी लगाके गरम करके उसका रस निकालके कानमें डालना. इससे शूलनाश होगा४। बक-रेके मूत्रमें सेंधवलोन और कुष्ठ डालके थोड़ा गरम करके कानमें डालना इससे कानशूलमें रक्त जाना बंद होगा ५। हींग, सेंधवलोन, सोंठ इनके कल्कमें शिरका तेल डालके सिद्ध करके कानमें डालना. सूजन

जायगी ६। सोंठ, सेंधवलोन, पिपली, मोथा, हींग, बच, लहसन इनके कल्कमें तिलीका तेल डालके उसमें आकड़ेका और ढाकका रस डालके सिद्ध करना. यह नारादि तेल कानमें डालना. इससे सर्व कर्णरोग, बहिरापना इनका नाश होगा ७।

कर्णपूरणादि विधि।

जरासा करवटपर सोके कानको सेकना और मूत्र,स्नेह,नास ये शीतोष्णकरके उससे कान भरना और सौ पांचसौ और हजार नाम नारायणका नेम लेनेतक व दवा रखना, ऐसेही कंठरोग शिरोरोगपर क्रिया करना चाहिये ८।

कर्णपूरणकाल--कानमें रसादिक डालना हो तो भोजनके पूर्व डालना चाहिये और तेलादिक डालना हो तो रातको डालना चाहिये ९।

अपामार्गतेल--अंधाझाड़ाकी राखका पानी और अंधाझाड़ाका कल्क इसमें तिलका तेल डालके सिद्ध करना वह तेल कानमें डालना. उससे कर्णनाद, बहिरापना जायगा १०।

मधुसुक्त–निंबुका रस ६४ तोला, शहद १६ तोला, पिपली ४ तोला, एकत्र करके घीके चिकने पर्तनमें एक महीना डालके भातकी और धानकी रासमें गाड देना. एक महीनासे निकालना,इसीको मधुसुक्त कहते हैं११।

हिंग्वादितेल–हींग, नागरमोथा, देवदारु, सौंफ, मूलीकी राख, भोजपत्र, जवाखार, सेंधवलोन, काला नोन, सोरा, सहँजना, सोंठ,सज्जीखार, बिडनोन, सुरसा, बिजोरा, कलाई इनका रस और ऊपरका मधुसुक्त, ये चीजें डालके इसीमें तिलका तेल डालके सिद्ध करना. उक्त तेल सर्व कर्णरोग कर्णनाद, बहिरापना, भौंहके रोग, मस्तकरोग, नासारोग, कान, पालीरोग, कानशूल इनका नाश करके सुख देता है. यह चरकऔर सुश्रुतका वचन है १२।

बिल्वादितेल–गोमूत्रमें केलफल, पानी और बकरीका दूध तिलिका तेल डालके सिद्ध करना यह तेल कानमें डालनेसे बहिरापना जायगा १३।

दीपकतेल–बृहत्पंचमूलोंकी लकड़ीको रुई लपेटके तेलमें भिगोके एक तरफसे जलाके उसका तेल नीचे गिलासमें टपकाके शीतोष्ण कानमें डालना

जिससे सर्व कर्णरोगका नाश होगा १४। इसी तरकीबसे बच तथ कुष्ठका तेल तैयार करके कानमें डालना. इससे सर्व कानरोग जायगा १५ ।

बहिरापनेपर तेल-कांजी, बिजोराका रस, शहद, गोमूत्र इनमें और शहद अदरखका रस, सहँजनाकी जड़ोंका रस, केलाके कंदको रसमें और सोंठ, धनियां हींग इनके कल्कमें और बेलफलकी गिरी, बकरीका दूध और मूत्रमें इनमेंसे हरएक एकमें तेल सिद्ध करना और कानमें डालना. इससे बहरापना जायगा ये चारों तेल उमदा हैं १६ ।

निर्गुंडयादि तेल-निर्गुंडी, चमेली आकडा, भांगरा, लहसन, केला, कपासी, सहँजन, तुलसी, अदरख, करेले इनके रसमें तिलीका तेल सिद्ध करना, उसमें बच्छनाग भी डालना. यह तेल कानमें डालना. इससे बहिरापना, कर्णनाद, कृमि, ठनका, पीप इनका नष्ट होता है १७। रोई-साका तेल डालनेसे कानके वातरोग सब जायँगे १८। बिजोराके रसमें सेंधवलोन और सज्जीखार डालके कानमें डालना. इससे स्राव, ठनकाका नाश होगा १९। समुद्रका झाग पीसके कानमें डालना. इससे स्राव बंद होगा २० कपासके फलके रसमें रालकी छालका चूर्ण शहद मिलाके कानमें डालना स्राव बंद होगा २१ ।

कानकी धोवन विधि ।

गोमूत्र, हरड़ा, आमला, मंजिष्ठ, लोहोद, कुचिला, पुनर्नवा इन हर-एकको काढा जरासा गर्म करके कान पिचकारीसे धोना २२। मिर्चके पानीसे फिटकड़ीके पानीसे कान धोना २३। किरमालके काढ़ेसे और तुलसीके रससे धोना इससे कान साफ होता है २४। रसांजन स्त्रीके दूधमें डालना और स्त्रीकेदूधमें रसांजन शहद मिलाके डालना इससे कानस्राव बंद होगा २७। कुष्ठ, हींग, बच, देवदारु, शतावर, सोंठ, सेंधवलोन इनके कल्कमें बकरीका मूत्र डालके उसमें तेल सिद्ध करना उसे कानमें डालना, रक्त पीप बंद होता है २९। जामुन, आमके पक्के पत्ते लेके कैथ कपासका कच्चा फल लेना. उनका रस निकालके उसमें शहद मिलाके कानमें डालना. इससे कानस्राव बंद होगा २७। और इन्हीं दवाओंके रसमें नीमका और करंज और शिरसका तेल सिद्ध करके डालना. इससे स्राव बंद होगा २८ ।

कर्णकंडूपर उपाय।

स्नेह, स्वेदन, उलटी, धूम्रपान, मस्तक, रेचन और संपूर्ण कफनाशक इलाज करना २९।

कानमें मैल जमे तो—उसमें तेल डालना, बाद शोधन करना, अच्छी सलाईसे मैल निकालना ३०। रास्ना, गिलोय, एरंडमूल, देवदारु, सोंठ ये समभाग लेके रोज खाना. इससे वातरोग, कर्णरोग, शिरोरोग, नाडीव्रण, भगंदर इनका नाश करेगा ३१। कर्ण प्रतिनाहपर स्नेहन, स्वेदन, मस्तक, रेचन देके फिर युक्त क्रिया करना ३२। कर्णपर कृमिनाशक इलाज करना और रिंगणीके फलकी धूनी देना और सरसोंका तेल डालना ३३। गोमूत्रमें हरताल घिसके डालना और गूगलका धुँवा देना, इससे कृमि नष्ट होंगे ३४। भांगराके ३५। सहँजनाके ३६। कललावीके कंदका रस ३७। त्रिकटुका चूर्ण ये चारों चीजें कानके कृमिका नाश होगा ३८। तगर, पलाश इनकी जडको चाबके उसका रस कानमें डाले तो तत्काल गोमाशीका नाश होगा ३९। नीला, भांगरा, त्रिकटु इनको एकत्र कूटके कपडेमें पोटली बांधके युक्तिसे कानमें डाले तो कर्णजलूका कानशूल या कृमि, कीडियां, चिउंटी मस्तकके कृमि, बुग, सब गिर जाते हैं ४० निंबोलियोंका तेल कानमें डालनेसे सर्व कृमि नष्ट होंगे ४१। रोईसाका तेल डालनेसे कृमिनाश होगा ४२। कर्णविद्रधिपर साधारण विद्रधिका उपाय करना ४३। आम, जामुन, मौही, बड़ इनके पत्तोंका कल्क करके उसमें तेल सिद्ध करना. इससे कर्णपाकका नाश होवेगा ४४। चमेलीके पत्तोंके रसमें तेल सिद्ध करके डालना. इससे पूतिकर्णका नाश होगा४५। गन्धक, मनशिल, हलदी ये चार ४ तोला लेके उसमें ३२ तोला तेल डालके उसमें ३२ तोला धतूराका रस डालके मंदाग्निसे सिद्ध करना. वह तेल डालनेसे बहुत दिनके नाडीव्रणका नाश होगा और कान साफ होके कृमिका नाश करेगा४६। कर्णशोथ, कर्णअर्श, कर्णअर्बुद इन रोगोंपर इनके निदानका इलाज करना ४७। सञ्जेका रस कानमें डालना, शूल जायगा ४८। परिपोटक रोगका रक्त काढ़के बाद जीवनीय गणकी दवाइयोंके रस और का-

द्रासे तेल सिद्ध करना. उसे डालना ४९ । लगे हुए अभिघातपर हलदी, नोन लगाना ५० । और व्रणोक्त मलहम लगाना ५१ ।

कर्णरोगपर पथ्य ।

पसीना, रेचन, वमन, नास, धूम्रपान, शिरावेध, गेहूं, शालिमूंग, जव, घी, जंगली मांस, रस, कम बोलना, बातें कम सुनना, ये हितकारी हैं ।

कर्णरोगपर अपथ्य ।

काष्ठसे दांत धोना, शिरसे स्नान, व्यायाम, कफकारक चीजें, जडान्न खाना, पीना, बोझा उठाना, बहुत बोलना, हवा लेना, ठंडाईमें बैठना, फिरना और जो आहार विहार तबीयतको न माने सो वर्जित करना ।

इति कर्णरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ नासारोगका निदान-कर्मविपाक ।

जो आदमी परमेश्वरको अर्पण की हुई चीजें गुप्त रखता है. वह नासारोगी होता है ।

कर्मविपाकका परिहार ।

उसमें दशहजार नारायण नामका जप करना और दान पुण्य करना, शांत होगा ।

नासारोगहोनेका कारण ।

मिथ्या आहार विहारसे, नाकमें धुवाँ जानेसे, श्रम पसीनामें पानी पीनेसे मिथ्या आहार विहारसे कुपित वातादिक दोष बिगड़के नासा-रोगको पैदा करते हैं. संख्या अर्बुद ७ तरहके, शोथ ४ तरहके, अर्श ४ तरहके, रक्तपित्त ४ तरहका ऐसे नासारोगके भेद हैं ।

जुखामके लक्षण ।

जिसका नाक चिकटा होके सूखे फिर गीला हो, धूवाँसा सांस निक-लता ऐसा मालूम हो सुगन्ध न समझे ऐसे रोगको पड़सा और जुखाम कहते हैं १ ।

पूतिनस्य-गलामें और तालुवामें, दुष्ट पित्त गलेमें रक्तसे मिलके वा-तगत होके नाकसे मुखसे दुर्गंध युक्त निकलता है. इसको पूतिनस्य कहतेहैं२।

नासापाक--पित्त नाकमें रहसेसे व्रण पड़ता है, नाक अंदरसे पकता है, खराब रसी बहती है ३।

पूयरक्त--दोष दुष्ट होनेसे और शिरमें ललाटमें लगनेसे नाकमेंसे पीप-रक्त बहता है ४।

क्षवथु--घ्राणाश्रित मर्मोंके शृंगाट मर्मोंके अंदर वात दुष्ट होके कफ सहित मोटा शब्द करके आवाज होती है उसको छींक कहते हैं ५।

आगंतुज क्षवथु--तीक्ष्ण नस्य सूंघनेसे और नाकमें बत्ती डालनेसे जो छींक आती है ६।

भ्रंशथु--धूपसे शिर तपके पूर्वका संचय हुआ कफ खराब होके गाढ़ा दुर्गंध नाकसे निकलता है ७।

दीप्ति--नाक अतिदाहयुक्त होनेसे उसमेंका वायु सिरगीके माफिक संचार करता है उससे नाक प्रदीप्त होने माफिक होता है ८।

प्रतिनाह--वातसे युक्त कफ मिलाके श्वास साफ नहीं चलता ९।

नासास्राव--नाकमेंसे पीला गाढ़ा सफेद पतला ये दोष हमेशा पड़ते हैं उसको नासास्राव कहते हैं १०।

नासापरिशोष--वातसे नाकका द्वार तपके सूखता है उससे योगसे आदमी बड़े कष्टसे श्वास लेता है ११।

पीनसके लक्षण--शिरको भारीपना, अरुचि, नाकसे पतला पानी गिरता है, स्वर साफ नहीं चलता, बारबार नाकसे रेजस, बहता है ये अपक्व जुखामके लक्षण हैं १२।

कफके लक्षण--गाढा, पीला, हरा, रेजस, निकलना स्वरसाफ न चलना १३।

वह जुखाम पांच तरहका होता है कारण--मल मूत्रादिका वेग रोध करनेसे, अजीर्णसे, खाक धूलि नाकमें जानेसे, ज्यादा बोलनेसे, क्रोध, ऋतु, बदल, शिर तपना, जगना, दिनको सोना, नवा पानी, ठंडी, मैथुन, बहुत रोनेसे, पसीनेमें पानी पीनेसे ऐसे कारणोंसे मूल स्थानसे कफ बिगड़के जुखाम होता है, इसको मराठीमें पड़सा कहते हैं।

नासारोगका पूर्वरूप ।

छींक आना, मस्तक भरासा मालूम होना, बदन कड़ा होके मोड़के आना, बदनमें शहारे आके रोमांच होना ।

वातजुखामके लक्षण ।

नाक जकड़ना, बंद होना उसमेंसे पतला रेजस निकालना, गला, ओंठ, मुख ये सूखना, आवाज बैठना, गला खुजाना, नेत्र खींचना ।

पित्तजुखामके लक्षण ।

पित्तकी जुखाममें पीला और गरम रेजस बहता है आदमी सूखता है फीका दीखता है उसको गरम चीज न सहन होना नाकमेंसे गरम वाफ निकलना

कफजुखामके लक्षण ।

कफके जुखाममें नाकमेंसे सफेद ठंडा बहुत रेजस निकलता है उस आदमीका रंग सफेद हो जाता है, आखोंको टापसी (सूजन) शिर भारी, गला, तलुवा खरदारा होता है, ओंठ शिरको खुजली आती है ।

सन्निपातजुखामके लक्षण ।

सन्निपातके जुखाममें सर्व लक्षण होते हैं ।

दुष्टजुखामके लक्षण ।

नाक बारबार गीला होके सूखता है बंद होके खुला होता है और स्वर बदलना, दुर्गंध, सुगंध न समझना ये दुष्ट जुखामके लक्षण कष्टसाध्य हैं ।

रक्तजुखामके लक्षण ।

रक्त जुखाममें नाकसे खून निकलता है, नेत्र लाल होते हैं जखम के माफिक पीड़ा, श्वासमें मुखमें दुर्गंध बहुत आना, गंध नहीं समझना ।

असाध्यके लक्षण ।

सर्व जुखाम दवा न करनेसे दुष्ट होके काल करके असाध्य होते हैं. बाद नाकमें कीड़े पड़के कृमिका लक्षण होता है ।

पीनसके लक्षण ।

पीनस बढ़नेसे सुनना कम होता है, दृष्टिमन्द होना, गंध न समझना, नेत्र

रोग होना, सूजन आना, अग्निमंद, खांसी आके अंकुर बढ़े नाकमें, छोटे बड़े बड़े अँकुर जमना, सूखना, जखम पड़ना इसको पीनस कहते हैं (नींदाई) भी कहते हैं यह नासाअर्श चार जातिका हैवा इसका भेद है।

नासारोगपर उपाय।

नासारोगवालेको बिन हवाकी जगहमें रखना, शिरको अभ्यंग करना पसीना काढ़ना, नास देना, शीतोष्ण भोजन देना, उलटी कराना, घीपान देना. बाद दोष देखके इलाज करना १। सर्व जातिके जुखामपर मिर्चका चूर्ण और गुड़ ये दहीमें डालके खाना. इससे तत्काल फायदा होगा २। पंचमूलका काढ़ा दूधसे करके देना ३। चित्रक, हर्डा, गुड़, घी मिलाके देना, बाद विडंगका यूप देना ४। दहीमें मिर्च, गुड़ डालके पिलाना ऊपरसे गेहूंका पदार्थ घी डालके खाना. इससे सर्व जुखाम जाता है यह अनुभव लिया है ५। गेहूंके रवेमें मिर्चका चूर्ण डालके पिलाना, रातको सोते वक्त उसपर ठंडा पानी पिलाना इससे जुखाम जायगा ६। रिंगणी, दंतीमूल, बच, सहँजना, रास्ना, त्रिकटु, सेंधवलोन इनके कल्क और काढ़ेमें घी और तेल सिद्ध करके सुँघाना. इससे पूतिनस्य जाता है ७। सहँजना, रिंगणी श्वेतकुंभा इनका फल, त्रिकटु, बेलके पात्रोंके रसमें तेल सिद्ध करके नास देना. इससे पूतिनास्य जाता है ८। नासापाक रोगपर सर्व पित्तनाशक इलाज करना और रक्त काढ़ना और आकके छालके काढ़ामें धोना, नींबके काढ़ासे धोना ९। राल, अर्जुन, गूलर, कुड़ा इनके छालका काढ़ासे धोना, फायदा है १०। इन दवाइयोंके काढ़ा और कल्कमें घी सिद्ध करके नाकमें छोड़ना इससे नासापाक जायगा ११। कायफल, पोहकरमूल, कांकड़ाशिंगी, त्रिकटु, बडीसौंफ इनका काढ़ा देना और चूर्ण करके अदरखके रससे देना. यह जुखाम, स्वरभंग, तमकश्वास, भंगरोग, हलीमक, सन्निपात, कफ, वात, खांसी, दमा इन रोगोंका नाश करता है १२। पाठामूल, हलदी, दारुहलदी, मोरवेल, पिपली इनका काढ़ा और चमेलीके पत्तोंका रस इनमें तेल सिद्ध करके नास देना. इससे पीनस रोग जाता है १३। पीपसे जो नाक सड़ता है उसपर रक्त पित्तका इलाज लिखा है सो देखके करना और नाश देना. पाक और दाह हो तो ठंडा लेप करना १४, भांगरा, लौंग, मुलहटी, कोष्ठ,

सोंठ इनके काढ़ेमें तेल सिद्ध करके नास देना इससे अस्थिगत पीनस शिरागत पित्त रोगोंका नास करके और सौरोगोंका नाश करता है १५। कुड़ छाल, हींग, मिर्च, लाख, शिरस, कायफल, कुष्ठ,बच, बिडंग इनके कल्ककी नास देना. इससे सर्व कृमि गिरती है १६। सर्व पीनस और अंशके अंकुर जो आते हैं, थोड़े जमते हैं सबइन नासारोगपर नींबकी निंबोलियांके तेलकी नास देना. सर्व रोग जाता है १७। घी, गूगल,मोम इनका धुवाँ देनेसे क्षवथु और भ्रंशथु इन रोगोंका नाश होता है १८। सोंठ कुष्ठ,पिपली,बेल,दाख इनके कल्क और काढ़ामें घी सिद्ध करना. उसकी नास देना. इससे छींक जायगी १९। दीप्तनासारोगकों निंबूके रसमें रसांजन घिसके नास देना, फायदा करेगा २०। प्रतिनाह रोगपर गायका घी पीना २१। नासास्रावपर चूर्ण, लेप, पथ्य, तीक्ष्ण धुवाँ ऐसा उपाय करना और गायके घीसे केशर घिसके नास देना २२।

नासाशोषपर-शक्कर डालके दूध पिलाना हित होगा२३। पहिले जुखाम होनेके वक्त हवामें न फिरना, मजबूत गरम कपड़ा शिरपर बांधना, पहरना २४। बाद कोमल मूली, कुलथीका जूस देके पसीना काढ़ना,ऊष्ण भोजन करना, ठंडा पानी २५। कफके पके पीछे मस्तक रेज देके रेजस काढ़ना,बाद,पीपल,तो सहँजनके बीज,बायविडंग,मिर्च इनका लेप देना२६

वातजुखामपर-पंचमूलसे और पंचनोनसे घी सिद्ध करके देना.इससे समाधान होके फायदा होता है २७।

पित्तजुखामपर--अदरखका रस और दूध पिलाना २८। अदरखका रस दूध घी पिलाना, पित्तजुखाम शांत होता है २९।

कफजुखामपर--कफनाशक दवा करना और तिजाराकी डोडीमें गुड़ डालके भूँनके रातको सोते बक्त खाना. फायदा होगा ३०। दारुहलदी, नेपति, दांती,अपामार्ग,राल इनकी बत्ती करके धुँवा देना. इससे जुखाम जाती है ३१। घेरोसा, पिपली, देवदारु, जवाखार, नखला, सेंधवलोन, अपामार्गके बीज इनसे तेल सिद्ध करके नास देना इससे नासाअर्श जाता है ३२। लाल कनेरका फूल,चमेलीका फूल,मोगरीका फूल इनसे तेल सिद्ध करके नास देना, इससे निंदाई नासाअर्श जाता है ३३। आंवला घीसे भूनके पीसके उसका लेप देना. इससे नाकसे खून पड़ना तत्काल

बंद होगा ३४। शिरमें शूलयुक्त जुखामपर नवसादर और चूना समभाग खरलकरके नास देना ३५। बचका चूर्ण और अजवाइनके चूर्णकी पोटली बांधके बार बार सुंघाना. इससे जुखाम जाता है ३६। कचूर, हरडा, चित्रक, त्रिकटु, इनका चूर्णगुड़ और घीसे देना, जुखाम जायगा ३७। चंदन और केशर ठंडे पानीमें घिसके लेप देना, जुखाम जायगा ३८। अर्बुद ७ शोथ ४, अर्श ४, रक्त-पित्त ४ प्रकारके ये रोग नाकमें होते हैं और सब संख्या ३४ प्रकारकी है लेकिन् लक्षणोंमें फरक नहीं, अर्बुद सब एक माफिक हैं।

नासारोगपर पथ्य।

पसीना, स्नेह, शिरसे अभ्यंग, पुराने जव, शालीके चावल, कुलथी, मूंग, इनका जूस ग्राम्य और जंगलीमांस रस, परवल, सहँजना, करटोला, कोमल मूली, लहसन, दही, गरम जल, मद्य, त्रिकटु, तीक्ष्णखार, खट्टी, स्निग्ध; ऊष्ण, लघु ऐसी चीजोंका भोजन हितकर है।

नासारोगपर अपथ्य

स्नान, क्रोध, मलादिक तेरा वेगोंका रोकना, शोक, द्रव पदार्थ पृथ्वीपर सोना, प्रकृतिको न माने सो और हवा, मैथुन, जगना, दिनका सोना तेल, रूक्ष चीजें ये नासा रोगीको वर्जित है। इति नासारोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ नेत्ररोगका निदान-कर्मविपाक।

कपटसे उपाय बताके दूसरेकी दृष्टिका विकार करनेसे, परस्त्रीको कामदृष्टि देखनेसे, स्त्री पुरुषोंका मैथुन देखनेसे, अमंगलमें सूर्य और नक्षत्रोंका दर्शन लेनेसे, देवताओंके और ब्राह्मणोंके मंदिरका दिया बुझानेसे इत्यादि कारणोंसे रातअंधा आदि अनेक प्रकारके नेत्ररोग होते हैं।

कर्मविपाकका परिहार।

चांद्रायण, प्रायश्चित्त, ब्राह्मणभोजन, हवन, महादेवपर अभिषेक, गोपालकृष्णकी सुवर्णकी प्रतिमा करके उसका पूजन करके दान देना।

ज्योतिषका मत।

रवि लग्नस्थ मेषस्थ किंवा स्वगृहका अथवा चंद्र स्वगृहका किंवा बारहवाँ हो अथवा गुरु, बुध, रवि एक राशिस्थ हों तो रातअंधा, काना, दूसरे

अनेक प्रकारके नेत्ररोग होते हैं। परिहार--उस उस ग्रहोंके दान जप इत्यादि करनेसे शांत होगा ।

नेत्ररोग होनेका कारण ।

पसीनायें पानीय स्नान. पसीना नेत्रमें जानेसे, धुवाँसे खकारना, गर्दन धूल जानेसे गरम सर्द अनेक जातिके कुपित खाने पीने आहार विहारसे वातादिक दोष कुपित होके नजरवाहिनी शिराओंको तपाके नेत्र-भागमें रोग पैदा करते हैं. ये रोग मुख्य ७६ प्रकारके हैं १ ।

अभिष्यंद ।

वातपित्त, कफ, रक्त इनसे चार प्रकारके अभिष्यंद होकर नेत्र दुखते हैं, इसमें वेदना बहुत होती है १ ।

वातसे--इस अभिष्यंद से आँखमें सुई चुभानेके माफिक पीडा, आखें जड़ वदनमें रोमांच होना, नेत्र रूक्ष होना, नेत्र दुखना, पानी आना, अश्रु बहना और मैल जमना २ ।

पित्तसे--आग होना, उसके चारों तर्फ पक्षीफुड़ियां आना, ठंडा पदार्थ लगानेकी इच्छा होना, नेत्रमेंसे भाफ निकलना, व्यथा होना, खिचाना, गरम पानी निकलके पीलापना दीखना ३ ।

कफसे--इस अभिष्यंदमें नेत्रको गरम पदार्थ लगानेकी इच्छा होना, जड़पना, सूजन, कडू थुक्क, गीला ठंडा होके उसमेंसे चिकटा पानी निकलके मैल जमता है ४ ।

रक्तसे--नेत्र लाल, पानी निकलना, रंग लाल होना, उस नेत्रमें लाल रेखा होना और पित्तअभिष्यंदके सब लक्षण होते हैं ५ ।

अधिमन्थ चार प्रकारके होते हैं ।

जो नेत्र आता उसको दवा न करनेसे वह बढ़के यह रोग होता है। इसमें तीव्र वेदना होती है १ ।

अधिमन्थ--आधा शिर फोड़नेके माफिक पीड़ा होना, नेत्रको मुस-लनेके माफिक पीड़ा, आधा शिर दुखना २ ।

श्लेष्मिक अधिमन्थ--यह रोग सात दिनमें दृष्टिका नाश करता है ३ ।

रक्तअधिमन्थ--पांच दिनोंमें दृष्टिका नाश करता है और वातअधिमन्थ छः दिनोंमें दृष्टिका नाश करता है और पित्तअधिमन्थ मिथ्या उपचार करनेसे

तत्काल नेत्रका नाश करता है और तीन दिनमें नाश करता है. यह कालनियम कहा है सो व्याधिके स्वभावसे कहा है और लंघन, प्रलेपादिक क्रिया करनेके वास्ते और अंजन, निषेधक कहा है ४।

नेत्र रोगोंका सामान्य लक्षण।

बहुत वेदना हो लाल होके गँदली गरगर फिरना, रेती डालनेके माफिक दुखना, सुई टोंचनेके माफिक चुभकना,ठनका ऐसी वेदना जिस नेत्रमें होती है वह नेत्र आमयुक्त होता है. ।अंजन आदिक निषेधके वास्ते और लघु अन्न देनेके वास्ते कहा है।

निरामके लक्षण।

आंखका ठनका कम होना, खाज छूटना, सूजन उतरना, गला बंद होना, साफ दीखना इन लक्षणोंसे दोष पक्क हुआ है ऐसा जानना।

शोथयुक्त अक्षिपाकके लक्षण।

नेत्रोंको सूजन आके पकती है उसमें खाज, पिचपिचपना, खींचना, शोथ, विना जो नेत्रपाक होताहै उसमें शोथ, छोड़के बाकीके लक्षण होते हैं. इस व्याधिको त्रिदोषजनित जानना।

हताधिमंथके लक्षण।

वात अधिमंथकी उपेक्षा करनेसे वह नेत्रको शोषके दाहादिक महापीडा करता है. यह रोग असाध्य है।

वातपर्यायके लक्षण।

जो नेत्रवात क्रम क्रमसे कभी भृकुटिमें, कभी नेत्रमें आता है और नानाप्रकारकी तीव्र पीड़ा करता है।

शुष्काक्षिपाकके लक्षण।

जो नेत्र उघडता नहीं, जिसकी वाफणी कठिन रूक्ष होती है, जिससे आग बहुत होके गँदले होते हैं, उघड़नेको कठिन पडता ऐसा जानना यह रोग रक्तसहित वातसे होता है।

अन्यतोवातके लक्षण।

गर्दन, कान, मस्तक, हनुवटी, गर्दनकी पीछेकी शिरा इनमें तथा और

ठिकाने में स्थित वात भृकुटीमें और नेत्रमें तोद भेदादिक पीडा करता इसको अनंत वात कहते हैं।

अम्लाध्युषितके लक्षण।

बीचमें किंचित् नीलवर्ण और आसपास लाल होता है ऐसा नेत्र सब पकता है यानी उसको पीली फुडियां आती हैं. उससे दाह होके सूजन आती है, पानी झिरता है, यह रोग खट्टा भोजन करनेसे होता है।

शिरोत्पातके लक्षण।

जिसके नेत्रकी शिरा वेदनारहित और वेदनासे युक्त होके लाल हो और वह बारबार ज्यादे ज्यादे लाल हो. यह रोग रक्तसे होता है।

शिराहर्षके लक्षण।

शिरोत्पातकी उपेक्षा करनेसे शिराहर्ष रोग होता है. उससे नेत्रमेंसे लाल आँसू निकलके आंख उघाडके देखनेसे दुःख होता है।

नेत्रके काले बूबलपर जो रोग होता है उसके लक्षण।

सव्रणशुक्रलक्षण—नेत्रके काले भागपर जो फूल पड़ता है वह अंदर डुबासा उसपर सुईकेसे छिद्र मालूम होते हैं, नेत्रमेंसे अतिउष्ण बहुतसा स्राव होता है इस रोगको सव्रण शुक्र कहते हैं इसमें बहुत पीड़ा होती हैं. ऐसा भोजमत है, कारण कि, सुकुमार जगह है।

अव्रण शुक्रके लक्षण।

अभिष्यंदसे उत्पन्न होके नेत्रके काले भागपर होता है, चोष यानी खिंचाना, सींगडी लगनेसे पीडायुक्त शंख चंद्र कुंदके फूलके माफिक सफेद आकारके बद्दलकासा रंग, पतला ऐसा व्रणरहित फूल असाध्य है।

साध्य अव्रणशुक्रके लक्षण।

जो शुक्र (फूला) उँडा गया हो, मोटा और बहुत दिनका हो तो कृच्छ्रसाध्य है।

असाध्य अव्रणशुक्रके लक्षण।

बीचमेंसे उँडा और बाजूसे मांस बढ़ेला, चंचल, शिरासे व्याप्त, छोटा, दृष्टिनाश करनेवाला, दूसरे पड़देके अंदरका बाजूपर लाल, बीचमें सफेद और बहुत दिनोंका हो सो असाध्य है।

अक्षिपाकात्ययके लक्षण।

नेत्रके काले भागपर दोषके योगसे चारों तरफ जो श्वेत शुक्र पसरता है वह सन्निपातजनित अक्षिपाकात्यय असाध्य है।

अजकाजातके लक्षण।

नेत्रके काले भागपर बकरीकी सूखी लेंडीके माफिक दुखनेवाला, थोड़ा काला, थोड़ा आंसू बहानेवाला, टेढा हो उसको अजकातक कहते हैं।

अथ दृष्टिरोग--पहिले पटल दोषके लक्षण।

जिसके पहिले पड़देमें रोग हो सबके अंदर हो दृष्टिपर हो जिससे अव्यक्त रूप याने उलटे सुलटे दीखता है १।

दूसरे पटलदोषके लक्षण।

दूसरे पड़देमें रोग जानेसे पदार्थ देखनेको मुश्किल होता है. उसकी नजरसे ऐसा दीखता है मक्खी डांसके कई जाले मंडल तारा पताका किरणके कुंडल नाना चीजोंके जाले अँधेरा आदि नहीं होनेसे नजर आते हैं और नजदीक दीखती है और सुईका छिद्र मुश्किलसे नहीं दीखता २।

तीसरे पटलदोषके लक्षण।

तीसरे पड़देमें रोग हो तो ऊपर दीखे और नीचे न दीखे मोटी चीज हो तो कपड़ेके पड़देमेंसे दीखती है ऐसा दीखना और कान, नाक, नेत्र नहीं है ऐसा चेहरा दीखना और तरह तरहके रूप दीखना और दोष आधे भागमें हो तो नजदीक न दीखना और दोष ऊपर हो तो दूरका न दीखना, बाजू दोष होवे तो बाजू न दीखना, सब नेत्रमें दोष हो तो एकमें एक मिलीसी चीजें दीखना और दृष्टिमें दोष हो तो बडी चीज छोटी दीखना और दो दो दोष एक ठिकाने होनेसे दो दो रूप एक ठिकाने दीखना और एकरूपके दो रूप दीखना और दोष व्यवस्थित हो तो एकरूपके अनेक रूप दीखना और दृष्टिगत दोष टेढा हो तो एक चीजका दो टुकड़ेसा दीखेगा ३।

चौथे पटलदोषके लक्षण।

चौथे पड़देमें तिमिररोग होता है, वह रोग चारों तरफसे दृष्टिको

रोध करता है इस रोगको लिंगनाश कहते हैं यह अंधकारमय रोग ज्यादा न बढ़ा हो तो उस वक्त आकाशमें चंद्र,सूर्य,नक्षत्र,बिजली और निर्मल तेज दीखता है । तृतीय पटलगत काचबिंदुको उपेक्षा करनेसे वही दर्द पीछे चौथे पटलमें आनेसे उसको लिंगनाश कहते हैं यह नीलिका रोग असाध्य है १।

दोष विशेषसे रूप दर्शन कैसा हो सो—वात दोषसे—गदले, अरुण, टेढ़े चक्रसे फिरने माफिक ऐसे रूप देखता है २।

पित्तसे—सूर्य खद्योत (जुगनू) धनुष मेघ बिजली और नाना रूप बिजली और जैसा मोरके गर्दनमें रंग हो और नीला रंग दीखता है स्निग्ध सफेद गीला फेनायुक्त दीखता है. रक्तसे लाल किंचित् सफेद काला पीला ऐसा रूप दीखता है ३।

सन्निपातसे—नानारंग और रूप आदमीको दीखते हैं. सर्व लक्षणोंसे सन्निपाती जानना ४ ।

परिम्लायि—रक्तके तेजसे मिश्रित होके पित्तसे होता है. इससे रोगी दीपकको आकाशको सूर्यको, पीला देखके झाड जुगनीसे और दियासे भरा है ऐसा दीखेगा । लिंगनाश रोग छः तरहके होते हैं. वातसे रंग भेद लाल होता है और पित्तसे हरा पीला नीला होता है तथा कफसे सफेद और रक्तसे लाल और सर्व दोषोंसे सर्व रंग दीखता है। परिम्लायि रोगका रत्नपर मोटे कांचके माफिक मंडल होता है,उससे मैलापना होता है.उसमें दोष कम होनेसे कदाचित् अपनी भौंह दीखे है । दृष्टिमंडलका रोग वात, पित्त, कफ, सन्निपातसे पीछे लिखे अनुसार जानना और दृष्टिके रोग ६ और लिंग नाश ६ ऐसे सब मिलके बारह होते हैं ।

दिनान्ध्यके लक्षण ।

तीसरे पड़दामें दोष पित्तगत हो जानेसे दिनको नहीं दीखाता है और रातको पित्तशान्त होता है,तब दीखता है और कफ दृष्टिको आदमी वही रूप सफेद दीखता है, नक्तांध्य(रात्रिअंधा)लक्षण दोष कफसे युक्त तीसरे पटलमें जाके रात्र्यंध करता है और वह कफ दिनको पतला होके सूर्यके तेजसे दीखता है. अन्यभेद शोक,ज्वर,आयास, शिरका ताप, इनसे कुपित होके दृष्टिके विकार होनेसे सर्व चीजें धुँवाके रंगसी दीखती हैं, रात्रिको अच्छी दीखती हैं।

ह्रस्वदृष्टिके लक्षण ।

इस रोगसे दिनको बड़ी चीज छोटी दीखती है. कारण पित्तसे उसकी नजर कम होती है ।

नकुलांध्यके लक्षण ।

जिसकी दृष्टि दोषसे व्याप्त होके नकुलकीसी आंख होकेचमकती हैं उस आदमीको नाना रूप दीखते हैं इस रोगको नकुलअंध कहते हैं ।

गंभीरदृष्टिके लक्षण।

दृष्टि वातसे विकृत होके अंदरसे खिचाके ठनकती है उसको गंभीर दृष्टि कहते हैं । अभिघातजन्य लिंगनाश दो तरहका होता है. १ एक निमित्तजन्य, दूसरा अनिमित्त जन्य, इसमें शिरोभितापसे जहरकी सुगंध दुर्गंधसे हवासे मस्तकमें जाके पैदा करेगा.सो निमित्तजन्य उसमें रक्तभिष्यंदके लक्षणहोते हैं.इसको आगंतुकलिंगनाश कहते हैं. अनिमित्त लिंगनाशमें देवता,ऋषि,गंधर्व,महासर्प सूर्य इनकी तर्फ एक सरीखी दृष्टि लगाके देखनेसे आँखें जाती हैं इसको अनिमित्त लिंगनाश कहते हैं. इससे नेत्र साफ दीखते हैं और दीखता नहीं. आंखका रंग वैडूर्यके माफिक दीखता है।

वर्त्मरोग ९ प्रकारके हैं,उनको (वडस) भी कहते हैं।

आखोंके सफेद भागपर पतला फैला हुआ काला रंग अरुण ऐसा जो मांस बढ़ता हैउससे प्रस्तारि अर्म कहते हैं. १। शुक्ल भागपर सफेद नरम मांस बहुत दिनमें बढ़ता है उसको शुक्लार्म कहते हैं २ । कमलके माफिक लाल मांस बढ़ता है, नरम होता है उसको रक्तार्म कहते हैं ३। जो मांस विस्तारसे नरम और कलेजाके रंगसा दीखे उसको अधिमांसार्म कहते हैं ४। कठिन और पसरनेवाला, स्राव रहित मांस बढ़े तो उसको स्नायुवर्म कहते हैं ५। नेत्रके सफेद भागपर श्यामवर्ण मांसके माफिक शीपके माफिक जो बिंदु होता है उसको शुक्ति कहते हैं ६। शुक्ल भागपर खरगोसेके रक्तके माफिक एक बिंदु होता है उसको अर्जुन कहते है लोकव्यवहारमें अहिरा कहते हैं ७।कफवातके योगसे सफेद भागपर आटाके सदृश जो मांस बढ़ता है उसको पिष्टिक कहते हैं. यमलार्शभी

कहते हैं ८। शुक्ल भागपर शिराओंके बढ़के मोटा जाला आता है उसको जाल कहते हैं ९। शुक्र भागपर शिराओं व्याप्त जो सफेद फुड़िया होती है उसको शीराज पिटिका कहते हैं १०। वह नेत्रोंके काले भागके नजदीक होती है १० शुक्लभागपर कांसे सरीखी कठिन और पानीके बूंदके माफिक जो ऊंची होती है उसको बलास कहते हैं ११।

पूयालसरोगका निदान।

नेत्रको संधिपर सूजन होके पकती है, पीछे फूटती है उसमेंसे दुर्गंध पीप निकलता है उसमें ठस ठस पीड़ा होती है. इस रोगको पूयालस कहते हैं १। नेत्र संधिपर मोटी गांठ आती है, थोड़ी पकती है, उसमें खाज ज्यादा आती है, पीड़ा कम होती है. उसको उपना कहते हैं २।

नेत्रनाड़ीके लक्षण।

वातादिक दोष अश्रुमार्गसे संधिमें जाके स्वकीय लक्षण युक्त बहते हैं उस स्रावको कोई नेत्रनाड़ी कहते हैं, कोई नासूर कहते हैं, वो चार तरहका है उसके लक्षण १ वातनाड़ी नेत्रसंधिपर सूजन आके पकती है. उसमेंसे पीप बहता है यह रोग सन्निपातसे होता है. २ कफनाडी जिसमेंसे सफेद गाढ़ा चिकना पीप बहता है। ३ पित्तनाड़ी जिसका पीला गरम हलदी सरीखा स्राव होता है ४। रक्तज नाड़ीमें गरम और बहुत रक्त बहता है।

पर्वणीके लक्षण।

जिस नेत्रके शुक्ल और कृष्ण भागकी संधिपर लाल छोटी गोल जो पिटिका होती है वह दाह होके पकती है, सो जानना ५।

अलजीके लक्षण।

इस ठिकानेपर पांच लक्षणसे युक्त जो मोटी गांठ होती है, उसको अलजी कहते हैं ६।

कृमिग्रंथिके लक्षण।

जो नेत्रके पोट और आफणिकी संधिपर पैदा होके नाना प्रकारके कृमि खाज ऐसी गांट पैदा करती है, वह नेत्रका पेट और सफेद भागकी जो संधि है उस ठिकाने जाके नेत्रके अंदरके भागको दुःखी करके अंदर फिरती है उस गांठको कृमिग्रंथि कहते हैं।

वर्त्म (बाफणी) रोगके लक्षण।

सुख अंदर होके नेत्रके पेटपर ऊंचीसी लाल मोटी, खाजसे युक्त जो पिटिका होती है उसको उत्संग पिटिका कहते हैं। यह सन्निपातसे है १। कुंभिका नेत्रके पेटपर कुंभाके बीजके माफिक पिटिका होती है. वह पीले रंगकी होती है और फूटके वहती है। यह भी सन्निपातसे होती है।

खूपरी–राईके बराबर रक्तस्राव करनेवाली खाजयुक्त जड़ चूसनेवाली जो फुड़िया आती हैं. उसको पोथ की भी कहते हैं ३।

वर्त्मशर्करा–नेत्रके पेटपर जो पिटिका कठिन मोटी होके उसकी बाजूको छोटी फुड़ियां व्याप्त रहती हैं इस रोगसे बाफणी नष्ट होती है. ४।

अर्शोवर्त्म–कांकड़ीके बीजके माफिक मंद वेदना, चिकनी कठिन पिटिका नेत्रके पेटपर आती है सो ५।

शुष्कार्श–नेत्रके पेटपर अंदर लंबा खरदरा, कठिन दुःख देनेवाला मासका अंकुर आता है. यह सन्निपातसे होता है ६।

अंजना–दाह और टोचणीसे युक्त, लाल, नरम, छोटी, मंद पीड़ा करनेवाली पिटिका नेत्रके पेटपर होती है. उसे गुरांजड़ी भी कहते हैं ७।

बहलवर्त्म–जो नेत्रके पेटपर त्वक्समान वर्ण कठिन पिटिकासे चारों तरफ व्याप्त होके रहती है उसको बहलवर्त्म कहते हैं ८।

वर्त्मबंध–जिसमें नेत्रका पेट सूजनेसे आंख ढक जाती है और ढकनेको इजा होती है उसको वर्त्मबंध कहते हैं. इसकी सूजनको खाज छूटके टोचनी लगती है. यह त्रिदोषसे होता है ९।

क्लिष्टवर्त्म–नेत्रके नीचे और ऊपरके पेटपर मधुर अल्प वेदना अरुण होके एक एक लाल भड़क होती है. यह रोग कफरक्तसे होता है १०।

वर्त्मकर्दम–क्लिष्टवर्त्म ही पित्तयुक्त रक्तसे जब जलता है तब वह दहीं दूध के कीचके माफिक होता है. यह पित्तअधिक सन्निपातसे होता है ११।

श्याववर्त्म–नेत्रका पेट आदिसे सूजके ठनका होता है १२।

प्रक्लिन्नवर्त्म–जिसमें नेत्र बाहरसे सूजके अल्पवेदना हो, बाजूसे चिकचिक करें १३।

अक्लिन्नवर्त्म--जिससे नेत्रकी बाफणी चिकनी रहके सलंग दुखती है और सड़ती है सो जानना १४।

वातहतवर्त्म-नेत्र उघड़ना ढकना न हो और संधि छूटना १५। अर्बुद नेत्रके अंदरकी बाजू पेटपर मंद पीडा ऐसी गांठ होके उसका रंग किंचित् काला, जलदी बढ़नेवाला यह त्रिदोषसे है १६ ।

निमेष--वर्त्माश्रित वायुउघडना ढकना करनेवाली शिरामें घुसके भाफण्यां चलाता है उस योगसे भाफण्या ऊपरकी ऊपर खींचती हैं ये रोगको नेत्र मिचकाण कहते हैं १७।

शोणितार्श-रक्तके योगसे नेत्रके पेटपर अंदरकी बाज़ूपर लाल अंदरसे मृदु अंकुर पैदा होता है,उसे शोणितार्श कहते है. यह वारंवार काटनेसे बढ़ताहै १८

लंघन--नेत्रके पेटपर बेर बराबर बढ़के कठिनकंडूयुक्त चिकनीसी गांठ होती है. उसको लक्षण कहते हैं यह कफजन्य होके इसे ठनकरहित होके पकती नहीं १९ ।

विषवर्त्म--त्रिदोष कोपके नेत्रके पेटपर सूजन आती है और उसको छेद पड़ता है उसमेंसे पानी झरता है २० ।

कुंचन नेत्ररोग-वातादि दोष जब बाफणियोंको संकुचित करते हैं जब आदमीका नेत्र उघाड़के देखा जाता नहीं.इस रोगको कृच्छ्रोन्मीलन कहतहैं २१।

पक्ष्मकोप (पडकेस--वातसे नेत्रकी बाफणी तड फडाके उसके केश नेत्रके कोयल बारबार घिसते हैं उससे कोयेलाका काला सफेद भाग सूजता है यहकेश मूलसे टूटता है। व्याधिको पड़केस कहते हैं. यह बड़ा त्रास देताहै२२।

पक्ष्मशात वर्त्म--पक्ष्मके मूल रहने वाला पित्त कुपित होके केश झडते हैं और खुजाके जलन होती है, यह रोग सुश्रुतमें नहीं है अन्य ग्रंथोमें है इसमें इससे संख्या नहीं लगायी है ।

नेत्ररोगपर उपाय ।

पटलप्रमाण १ पहिला पटल नेत्रका तेज जल इनके आश्रय है। २मासके आश्रम ।३ तीसरा मेदाश्रित ।४ अस्थिगत सर्व पटलोंका विस्तार दृष्टिके पञ्चमांशके समान है २।

लंघनके योग्य रोग--नेत्र शिरोग प्रतिश्याय (जुखाम पड़सा) व्रण,

ज्वर ये पांचो रोग लंघनसेसाध्य होके पांचदिनोंमें साध्य होते हैं और अभिष्यंदरोग कफजन्य है इससे उसमें लंघन फायदा करता है।

सलाईका प्रमाण--सलाई लंबी आठ अंगुल होके शीसे आदिकी होना चाहिये यह आश्चोतन-अध्यायमें लिखा है उसके माफिक करना।

सलाईकी विधि--कहांतक अंजन करना नियम ऋतुभेद, अंजनका नियम, अंजन किस आदमीको वर्ज्य है। अंजनके जातिभेद नियम प्रमाण, तर्पण विषे वर्ज्य, सेकनेकी मर्यादा प्रमाण, पिंडी बाधनेका प्रमाण बिडाल पदका स्वरूप, तर्पणविधि ये सब चीजें आश्चोतन अध्यायमें है सो उस प्रमाण करना और उस अध्यायमें नेत्रोंके लेप दवा और अंजन बहुतसे लिखे हैं उस माफिक करना. निदान सहित चिकित्साके योगसे यहाँ भी लिखते हैं वात अभिष्यंदपर एरंडके पत्ते, छाल, मूल इनको पीसके इनकी पिंडी शीतोष्ण बांधना १। हलदी, मुलहटी, हरडा, देवदारु इनको बकरीके दूधमें घिसके अंजन करना २। एरंडका पंचांग बकरीके दूधमें औटाके उसका सिंचन देना ३ साधारण गरम दूधमें सेंधवलोन डालके सेकना ४। हलदी, देवदारु, दूधमें औटाके सेंधवलोन डालके सिंचन देना ५। पंचमूल, रिंगणी, एरंडमूल, सहँजनेकी छाल इनके काढेका साधारण नरम बिंदु नेत्रमें छोड़ना ६। निंबूके पत्ते लोध पीसके उसका कल्क गरम करके उसका रस नेत्रमें डालना ७।

पित्तजनित अभिष्यंदपर--चंदन, नीमके पत्ते, मुलहटी, दारुहलदी, सेंधवलोन ये चीजें पानीमें पीसके लेप देना और सिंचन करना ८। नींबके पत्ते लोध लगाके सेकनाऔर उसके चूर्णकी पोलटिस सेकना ९। और स्त्रियोंके दूधमें पीसके उसीका बिंदु नेत्रमें डालना इससे रक्तपित्त, वातका अभिष्यंद जायगा १०। दाख, मुलहटी, मंजिष्ठ और जीवनी-गण इनसे दूध सिद्ध करके उसका बिंदु नेत्रमें डालना और वस्त्रकी घड़ी भिगोके रखना- इससे नेत्ररोग जाता है ११। आंवला, नीमकी पिंडी बांधना १२। चंदन, धमासा, मंजिष्ठ इनका लेप देना १३। पद्मकाष्ठ, मुलहटी, जटामांसी, दारुहलदीइनका लेप देना १४।चंदन,जेठीमद,लोध, चमेलीका फूल,गेरू इनका लेप देना,दाह,ठनका,कंप इनका नाश करेगा१५

कफजनित अभिष्यंदपर--लंघन करना, पसीना, कटु रससे भोजन तीक्ष्ण दवाका प्रसारण, तीक्ष्ण दवाइयोंकी पिंडीबंधन, जुलाब ऐसी दवा करना १६। पिंगली, गोकर्णी, कैथ, बेलफल, धतूरा, भांगरा, अर्जुनके पत्ते इनकी पिंडी बांधनेसे कफअभिष्यंद जाता है १७ पारिजात वृक्षकी छाल, तेल, सेंधवलोन कांजीमें पीसके लेप देना १८। नीम, आकके पक्के पत्ते १भाग लोध चार भाग इनको मिलाके धुवाँ देना १९, सोंठ, निंबोलियां एकत्र करके गरम पानीमें पीसके उसमें सेंधवलोन डालके पिंडी नेत्रपर बांधना और नेत्रपर धरना. इससे सूजन, खाज इनका नाश होगा २० । लेप रसांजनका, हरडा अदरखके पत्तोंका बच, हलदी, सोंठ, इनका सोंठ इनका ये चारों लेप जुदा गेरू जुदा देना २१ ।

रक्तजनितअभिष्यंदपर--अडूसा, हरडा, नीम, आवला, मोथा, सूली, इनका काढ़ा देनेसे रक्ताभिष्यंद, खूनका स्राव, कफ इनका नाश करता है २२। त्रिफला, लोध, मुलहटी, शकर ये दवा ठंडे पानीमें पीसके नेत्रको सिंचन करना २३। स्त्रीके दूधकी बूंद नेत्रमें डालना २४। घी दूध एकत्र करके उसका बूंद डालना २५। लोध घीमें घिसके अंजन करना २६। त्रिफलाका चूर्ण शकर डालना २७। श्रीपर्णी, पाठामूल, आंवला धायटीफूल, लोध, अर्जुन, रिंगणीके फूल तोंडली, लोध, जेठीमद ये चीजें खरल करके शहदमें अंजन करना रक्तअभिष्यंद जायगा २८। और गन्नाके रससे घिसके अंजन करना २९। नेत्रको सूजन और पाय हो तो जोक लगाके रक्त निकालना, जुलाब देना. शिरकी नसोंका फस्द खोलना ३०। त्रिफला, पटोल, नीम, अडूसा इनके काढ़ेमें गूगल डालके देना. इससे सूजन और पाकका नाश होगा ३१।

अधिमन्थ रोगपर-सर्व अधिमन्थ व्याधिपर ललाटका शिरावेध करना. उससे शांत होगा और उससे शांत न हो तो भौंहकी बाजूपर दाग देना और चारोंतरफ अभिष्यंदका इलाज करना ३२। वातपर्याय वातअभिष्यंद नाशक इलाज करना, घी दूध भोजन करना, परिषेक करना और सेंधवलोन डालके मंद उष्ण दूध और दारुहलदी, हलदी इनका काढ़ा दूध डालके सिद्ध करके देना. इस प्रमाण वातअभिष्यंदपर दवा करना ३३ ।

शुष्काक्षिपाकपर--सेंधवलोन, दारुहलदी, सोंठ, बिजोराका रस, घी, स्त्रीका दूध इसमें आधा पानी डालके उससे सेचन देना और उसका अंजन

देना ३४ । घी पानी जीवनीय गणकी दवाइयोंसे सिद्ध करके घीका अंजन करना ३५ ।

अनंतवातपर--सर्व नेत्ररोगोंपर मुलहटी, गिलोय, त्रिफला, दारुहलदी इनका काढ़ा पिलाना ३६ । राल, दारुहलदी घिसके उसका बिंदु छोडना, शहदमें इससे सर्व नेत्ररोग जायगा ३७ । गिलोय, त्रिफला इनके काढ़ेमें शहद और पिपली डालके देना. इससे सर्व नेत्ररोग जायगा ३८। सफेदलोध, गायका घी लगाके सेकना, उसका चूर्ण सुवर्णमाक्षिक, लीलाथोथा इन सबको पीपलीके काढामें घोटके उसका सेक देना.इससे संपूर्ण नेत्रशूल जायगा ३९। मुलहटी,गेरू,सेंधवलोन,दारुहलदी,रसांजन समभाग लेके पानीसे पीसके लेप देना. इससे संपूर्ण नेत्ररोग जायगा ४०। शहद, घी इसमें सेंधवलोन और भुना लोध डालके लेप देना, अंजन करना, सब नेत्ररोग जाता है ४१। निंबूका रस लोहेके बरतनमें घोटके गाढ़ा हो तब नेत्रपर लेप देना, नेत्ररोग जायगा ४२ खटाईसे नेत्र रोग हो तो उसपर कटु रस घीसे पिलाना ४३ । वरंवार रेचक और ठंडा लेप देना. ४४ लोध, त्रिफला इनके काढ़ेमें पुराना घी डालके पिलाना और शिरावेधविना सर्व पित्तअभिष्यंदका इलाज करना ४५ । और शिरोत्पात और शिराहर्ष और रक्तजनितरोगपर संदोष्ण घीसे शेकके स्निग्ध करके पीछे शिरावेध करना,इससे फायदा होगा ४६। घी,शहद, रसांजन इनका और सेंधवलोन, हीराकसीस इनका अंजन स्त्रीके दूधमें करना; इससे शिरोत्पात जायगा ४७ ।

शुक्र, व्रण फूलका उपाय ।

आश्चोतनके प्रकरणमें लिखे अनुसार इलाज करना ४८ । करंजका बीज पीसके उसकी बत्ती बनाके उस बत्तीको ढाकके फूलोंके रसकी बहुत भावना देना. वह बत्ती नेत्रमें फिराना, फूल साफ होता है ४९। समुद्रकी झाग, सेंधवलोन, शंख, मुरगेके अंडाकी खपली, सहजनके बीज इनको घोटके बत्ती बनाके फूलपर फिराना, यह शस्त्रके माफिक फूलको काटेगी ५०। रसांजन,शिलाजीत,केशर,मनशिल,शंख,सफेद मिर्च,मिश्री इनको घोटके बत्ती बनाना. इसको चंद्रोदया कहते हैं, इसे विदेह राजाने कहा है. यह पिल्ल, कडू, शुक्र, तिमिर, अर्बुद इनका नाश करती है ५१

चंदन, गेरू, लाख, चंपेकी शींग इनको पीसके अंजन करना ५२। व्रण-पर षडंग गूगल देना और नेत्रको जोंक लगाके खून काढ़ना और निशोथके काढामें तीन बार घी सिद्ध करके देना. इससे व्रण, शुक्रका नाश होगा ५३।

लोहादि गूगल-लोहसार, मुलहटी, त्रिफला, पिपली, इलायची, ये चीजें समभाग लेके चूर्ण करके इन सबके समभाग शुद्ध गूगल डालके एकत्र करके प्रकृतिके सहनके माफिक देना. यह सर्व नेत्ररोग शुक्र, सव्रणशुक्र आदि रोगोंका नाश करता है. इसको अनुपान घी और शहदका देना५४। पिपली, समुद्रफेन, सेंधवलोन इनका चूर्ण बारीक करके उसको कांसेके बरतनमें शहद डालके खूब घोटना, बाद अंजन करना, इससे फूल कटके साफ होगा ५५। सुरमा, पिपली, गुलाबकली, बिड़नोन, मिश्री, लौंग, चीनी-बरतनका टुकड़ा सब समभाग लेके निंबूकेरसमें खूब घोटके काजल बनावे और निंबूके रससे और पानीसे नेत्रमें डालना. इससे सर्व नेत्ररोगोंका नाश होगा ५६। सुवर्णमाक्षिक, बहेड़ा, सेंधवलोन, इनमेंसे एक १ चीज शहदके साथ घिसके नेत्रमें डाले तो फूल नेत्ररोग जाता है ५७। मुर्गेके अंडेकी छाल, शंख, बांगडखार, चंदन, समभाग लेके उसमें आधा भाग सेंधवलोन मिलाके उसका अंजन करनेसे फूल कटके साफ होता है ५८। चमेलीका पत्ता, मुलहटी, घी भूनके साधारण गरम पानीसे और स्त्रीके दूधसे नेत्रमें बिंदु डाले तो शुक्रनाश होता है ५९। आंवला, निंब, कैथ इनके पत्ते जेठीमधु, लोध, खैरकी छाल, तिल इनका काढा करके ठंढ़ा करने बाद नेत्रमें डालना. इससे अनेक जातिके नेत्ररोग जाके फूल कटता है ६०।

शुक्ररोगपर उपाय-काला बूबलेपर पसरनेवाला स्नाय्वर्म, मांसार्म, लोहितार्म, दध्यर्म, नीलार्म, रक्तार्म, धूसरार्म इन सब रोगोंपर शुक्रकी दवाईका इलाज करना और इन रोगोंकी जो दवा अश्चोतनअध्यायमें लिखी हुई है वह करना ६१। पिपली, लोहभस्म, ताम्रभस्म, शंख, मूंग, सेंधव-लोन, समुद्रफेन, हीराकस, सुरमा ये चीजोंका दहीकेपानीमें खरल करके लेखनक्रियाके पीछे नेत्रपर धारण करना, फायदा होगा ६२। पिपली, त्रिफला, लाख, लोहभस्म, सेंधवलोन इनको भांगरेके रसमें घोटके गोली करना इसका अंजन करनेसे यह अर्म, तिमिर, कांचबिंदु आदिक तथा शुक्र, अर्जुन, अजका जात आदि नेत्ररोग इनका निश्चय करके नाश

करती है ६३ । काकड़ी, गन्ना इसीका रस और दूध मिलाके काढ़ा करके दूधसे पकाके उतारना उसका सिंचन करना, नेत्ररोग जायगा ६४ । क्षुद्रशंख भूनके उसका अञ्जन डालना और उसमें कपूर मिलाके अञ्जन करना. इससे अजका जातरोग जाता है ६५। सेंधवलोन, घोड़ाका सूम, गोरोचन इनको गोंदके रसमें और छालके रसमें घोटके डालना,अजका जात नष्ट होता है ६६।

काचबिन्दुपर उपाय।

काचबिन्दुपर पहले जोंक लगाके रक्त काढ़ना,बाद फूलपर लिखी हुई इलाज करनी ६७ । मिर्च पाव तोला, पिपली आधा तोला, समुद्रफेन आधा तोला, सेंधवलोन पाव तोला, मसूर सवा दो तोला सबका बारीक चूर्ण करके उसका अञ्जन करना, काचबिन्दु नष्ट होगा ६८ । आश्चोत-नके प्रकरणपर विविध अञ्जनकी विधि लिखी है वैसा करना६९ । उप-लसरी, त्रिफला, मोती, चन्दन,पद्मकाष्ठ इनको घोटके बत्ती बनाके नेत्रमें फिराना, इससे तिमिर नष्ट होगा ७० । कफके तिमिरपर तीक्ष्ण नास, अञ्जन, शोधन, पुटपाक, त्रिफलादि घी देना ७१ ।

दिवसान्ध्यका उपाय–चमेलीके पत्तोंका रस, हलदी, रसांजन इनको शहदमें घिसके अञ्जन करना.इससे दिनअंधा अच्छा होगा ७२ ।मिर्चको दहीमें घिसके अञ्जन करना, रात्रिका अंधापना जाता है ७३ । गीले कमलकी केशर, गेरू इनका अञ्जन गायके गोबरके रसमें डाले तो रात-दिनका अंधापना जायगा ७४ । सूर्यकिरणके तपसे अंधा हो तो उसपर ठंडा उपाय करना और घीमें सोना घिसके अञ्जन करना हितकारक है७५।

धूम्रदृष्टि और ह्रस्व दृष्टिपर उपाय–बच, निशोथ, चन्दन, गिलोय, चिरायता, नीम, हलदी, अडूसा इनका काढ़ा देना इससे बहुत दिनोंका नकुल–अंधापना जायगा ७६ ।

अर्मरोग पांच तरहका है उसपर उपाय--मिर्च, बहेड़ा,हलदी,रसांजन इनका लेप देना, अर्मरोग जायगा ७७ । बड़ी सौंफ, सुरमा, रसांजन, शकर, समुद्रफेन, शंख, सेंधवलोन, गेरू, मनशिल, मिर्च इनको समान-भाग लेके काजलके माफिक घोटके शहदसे अञ्जन करना, इससे काच-बिन्दु, तिमिर, अर्जुन, वर्त्म इनका नाश होता है ७८।

शुक्तिरोगपर-पित्त अभिष्यंदका इलाज करना ७९। मायफल,सोंठ, मिर्च, रसांजन इनको बिजोराके रसमें घोटके अञ्जन करना, इससे शुक्ति रोगका नाश होवेगा ८०।

अर्जुन(अहिरा)पर-शकर, दहीका पानी, शहद इनको मिलाके अञ्जन करना अहिरा नाश होगा ८१। शंखको शहदमें घिसके अंजन करना, अहिरा नष्ट होगा ८२। निर्मलीके बीजे, सेंधवलोन इनका और समुद्र-फेन, शकर इनका अंजन करना. इससे अहिरा जाता है ८३। पूयालसकपर शिरावेध कराना और नेत्रपाकका इलाज करना और मुक्तांजन करना८४।सेंधवलोन,हीराकसीस समभाग,अदरखकके रसमें घोटकेगोली बांधके छायामें सुखाके उसका अंजन करना, पूयालसका नाश होता है ८५। नेत्रसंधिपर जो नासूर होता है उसके चार भेद हैं, उसमें त्रिफ-लाके काढ़ेमें शहद और घी और पिपलीका चूर्ण डालके देना और शिरावेध कराना ८६। त्रिफलाके बीजोंका मगज पीसके उसकी बत्ती करके नासूरमें फिराना ८७।

कृमिग्रंथिपर उपाय ।

त्रिफला, दूध, हीराकसीस, सेंधवलोन, रसांजन ये लगाना,फूटे पीछे प्रतिसारण विधि करना ८८। गुरांजनीको हाथपर अंगुली घिसके सेकना और ठंडे जलमें मिर्च घिसके लगाना ८९। कुलीञ्जन पानीमें घिसके लगाना, साफ होगी ९०। हरताल, देवदारु, बच्छ, इनको तुलसीके रसमें पीसके बत्ती बनाके छायामें सुखाके नेत्रमें डालना, इससे वर्त्मरोग,बार बार होनेवाला रोग साफ होगा ९१। रसांजन, राल, चमेलीका फूल, मनशिल,समुद्रफेन,नोन,गेरू, मिर्च समान घोटके शहदमें अंजन करना. इससे क्लिन्नवर्त्म, स्राव, खाज, इनका नाश होगा ९२। बकायनकी लकड़ी, सफेद मिर्च जलमें घिसके अंजन करना, बहुत नेत्र रोगोंको फायदा करता है ९३। उत्संगिनी, बहलवर्त्म, कर्दमवर्त्म, श्याववर्त्म, क्लिष्ट, पोथकी, वर्त्मकुंभिका इन रोगोंका शकरसे लेखन करना, श्लेष्म-नाशक उपाय करना और विषवर्त्म,कृमि,ग्रंथि,अञ्जन इनका भेद करना।

लीलाथूथादिलेप–लीलाथूथा ४ तोला, सफेद मिर्च ८० तोला, कांजी १२० तोला सब मिलाके तांबाके बरतनमें घोटना. बाद नेत्रमें डालना. इससे बहुत बरसोंके फूलेका नाश होके ऊपरके लिखे हुए सर्वनेत्र रोग नष्ट होते हैं९४। लीली हीराकसीस तांबेकी परातमें डालके तुलसीका रस डालके हररोज घोटके उसका लेप करना, इससे पक्ष्मरोगका नाश होता है९५। नेत्रमें घी डालना, निमेषशांति होगी ९६। रक्तअर्शपर गोरोचन, जवाखार लीलाथूथा, पिपली इन हरएकका फूटे पीछे लेप देना और प्रतिसारण करना ९७। विषग्रंथिको सेकके छेद खुला करना, पके पीछे शस्त्रसे फोड़के सेंधवलोन भरना ९८ ।

त्रिफलायोग–त्रिफलाके काढ़ेसे नेत्र धोना, सब रोग जायगा १। इसीका कुल्ला करना और पिलाना २। सदाचार–भोजनके वक्त गीले हाथ, भोजनके अंतमें नेत्रपर फिरानेसे तिमिरनाश होके कोई रोग नहीं होगा ३।

त्रिफलामहाघी–त्रिफला ६४ तोला, भांगराका रस ६४ तोला, अडूसाका रस ६४ तोला, शतावरका रस ६४ तोला, बकरीका दूध ६४ तोला, गिलोय ६४ तोला, आंवलाका रस ६४ तोला, घी ६४ तोला सब लेके एक बरतनमें डालके उसमें पिपली, शकर, दाख, त्रिफला, गीला कमल, मुलहटी, रिंगणी, इनका कल्क डालके सिद्ध करना. वह घी भोजनके आदि, अंत, मध्यमें देना. इससे सब नेत्ररोग जाके लाली, दुष्ट रक्तस्राव, रात्रिअंध, तिमिर, रक्तकाचबिंदु, नीलिका, पटल, नेत्रार्बुद, अभिष्यंद, अधिमंथ, उपपक्ष्म, सन्निपातात्मक सब नेत्र रोग जाते हैं. यह उत्तम दवा है ४ ।

सप्तामृतलोह–जेठीमधु, त्रिफला, लोहभस्म इनका चूर्ण शहद घीसे देना, ऊपरसे गायका दूध पीना, इससे उलटी, तिमिर, शूल, आम्लपित्त, ज्वर, क्लम, आनाह, मूत्र बंद हो सो और सूजन इन रोगोंका नाश होताहै।५

शतावरचूर्ण–शतावर १२ तोला, इलायची २१ तोला, बायबिडंग ८ तोल, आंवला ६ तोला, मिर्च ४ तोला, पिपली ३॥ तोला, रसांजन आधा तोला, सबका चूर्ण करके शहदसे देना. सब नेत्ररोग नष्ट होंगे ६।

त्रिफलादिचूर्ण–त्रिफला, दालचीनी, मुलहटी, मौहेका फूल इनको

समभाग चूर्ण करके शहद घीसे देना. इससे सब नेत्ररोग जाते हैं और बलपुष्टि देता है ७।

त्रिफलादि काढ़ा–लोहाके बरतनमें त्रिफलाका काढ़ा रातको भरके रखना. उसमें घी डालना और उसको रातको भोजनके बाद पीना. एक महीनेमें अंधेको दृष्टि प्राप्त होगी ८ ।

पिप्पल्यादि अंजन–पिपली, त्रिफला, लाख, लोध, सेंधवलोन सम-भाग भांगरेके रसमें घोटके काजल करके गोलियां बांधना, उसका अंजन करना. इससे सर्व नेत्ररोग नष्ट होते हैं ९। गुंजाकी मूलको बकरेके मूत्र और भद्रमोथाके पानीमें घिसके अंजन करनेसे असाध्य नेत्ररोग जायगा १०। तुलसी, बेलपत्र इनका समभाग रस मिलाके उसके समभाग स्त्रीका दूध कांसेके बरतनमें डालके उसमें गजपिप्पलीका चूर्ण डालके एक प्रहर तक तांबेके कटोरासे घोटना, बाद डब्बीमें भरके रखना. उस काजलका अंजन करना. इससे नेत्ररोगका नाश होता है ११।

पुनर्नवादि कल्क–पुनर्नवाकी जड़ दूधसे अंजन करे तो नेत्रकी खाज जायगी. शहदसे नेत्रस्राव जायगा १२। घीसे नेत्रस्राव जाय, फूल कटे १३। तेलसे तिमिरनाश होता है १४। कांजीसे अंजन करे तो रात अंधा-पन जायगा १५। पुनर्नवा संस्कृतमें कहते हैं साठा, बिचखोपरा, वसु, घेटोली ऐसा नाम हरदेशमें है १६। मुक्तादि महाअंजन डालनेसे सर्व नेत्ररोग जाता है १७। शंख ४ भाग, मनशिल २ भाग, सफेद मिर्च १भाग, पिपली आधा भाग, इस माफिक लेके जलमें घोटके गोली बांधके जलसे घिसके अंजन करना. तिमिर रोगका नाश होता है १८। कांजीसे अर्बुद नाश होगा १९। शहदसे पिचपना २०। स्त्रीदूधसे तिमिरनाश होता है २१।

दार्व्यंजन–दारुहलदी, त्रिफला, मुलहटी इनको समभाग लेके नारि-यलके पानीमें अष्टमांश काढ़ा करके छान लेना. उसको फिर पकाके गाढ़ा करना उसमें कपूर, सेंधवलोन, शहद डालके नेत्रोंमें अंजन करना. यह पित्त, नेत्र व्रण, तिमिर इनका नाश करता है २२।

शशिकलावर्तिवटी–कलखापरी, शंख, रक्तबोल, लीलाथूथा इनको

समभाग लेके वस्त्रछान चूर्ण करना. इनको निम्बूके रसमें घोटके उसकी सलाई बनाना. उसको नेत्रोंमें फिराना. इससे तिमिर, खाज, स्राव, अर्मपिच्छ रोग ये नष्ट होते हैं २६।

नयनामृत पारद--शीसेका भस्म समभाग इनके दूना सुर्मा पाराका चौथा भाग कपूर इनका एकंदर खरल करना. इसका नाम नयनामृत है। इसका अञ्जन करनेसे तिमिर, पटल, काचबिन्दु, शुक्र, अर्म, अर्जुन इनका और सर्व नेत्ररोगका नाश करता है २७। चन्द्रोदय, आश्चोतन प्रयोगपर लिखी है सो देना. अंजनसे सर्व नेत्ररोग नष्ट होते हैं २८।

कुसुमिकावर्तिरोपण--तिलोंके फूल ८० पिपलीके दाना ३०। चावल ६०। चमेलीके फूल ५० मिर्च १६ इसमाफिक लेके बारीक पीसके बत्ती करके नेत्रमें फिराना. इससे तिमिर, अर्जुन, शुक्र, मांसबृद्धि इनका नाश होता है २९। लोध, कपूर पानीमें पीसके पीले कपड़ेमें पोटली बांधके नेत्रोंपर बारबार भिगोके धरना. इससे सर्व अभिष्यंद जाता है ३०। शहदमें घोड़की लार मिलाके उसमें मिर्च घिसके अंजन करना. इससे अतिनिद्रा नष्ट होती है ३१। जाईका व चमेलीका फूल, पान, मिर्च, कुटकी, बच, सेंधवलोन इनका अंजन बकरेके मूत्रमें घिसके डालना. तंद्रा जाती है।

नेत्ररोगपर पथ्य।

शालीका चावल, मूंग, गेहूं, सेंधवलोन, गायका घी, दूध, शक्कर, शहद, रात्रिको जगना नहीं, स्निग्ध, बादाम, तरावट चीजें खाना, पीना और आश्चोतन प्रयोगपर सब पथ्य लिखे अनुसार करना. इससे हित होगा।

नेत्ररोगपर अपथ्य।

सर्व जातिके साग अपथ्य हैं. उड़द, खटाई, कांजी, राईका तेल, पानीमें क्रीड़ा करना, गन्ना, गुड़, मैथुन, रात्रिका जागना, दिनका सोना, तेरह वेगोंका रोकना, मांस, दही, दारू, नशा करना, आम, बेसवार, सूर्य आदि तेजका देखना, तांबूल, खटाई, खार, विदाही चीजें, उष्ण, कटु ऐसे पदार्थ और प्रकृतिको न माननेवाले आहार विहार वर्ज्य करना चाहिये।

इति नेत्ररोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ शिरोरोगका निदान-कर्मविपाक ।

गुरुका अपराधी, स्वीकृतव्रतका त्यागी, फूटे कांसेके बरतनमें भोजन करनेवाला मस्तक रोगी होता है. परिहार--सूर्यकी उपासना करना, ब्राह्मण भोजन कराना (अक्षिभ्यां०) इस मन्त्रका जप और दान पुण्य करना, शांत होगा ।

ज्योतिषका मत ।

सूर्यकी दशामें शुक्र और शुक्रकी दशामें चन्द्रमा और चन्द्रकी दशामें शुक्र और बुधकी दशामें मंगलकी अन्तर्दशा होनेसे मस्तकरोग, कुष्ठ-रोग, ज्वर, शूलरोग होते हैं । परिहार--उस उस ग्रहका जप, दान, होम करनेसे शांत होते हैं ।

शिरोरोग होनेका कारण ।

मिथ्या आहार और विहारसे वातादि दोष कोपके शिरमें पीड़ा होती है. वह दश प्रकारकी है १ ।

वातशिरोरोगमें--शिर अकस्मात् दूखता है. रातको ज्यादा होके गरम बांधनेसे कम होता है २ ।

पित्तशिरोरोगमें--शिर अंगारके माफिक तपके नेत्र, नाकका दाह, शीत पदार्थकी इच्छा रात्रिको कम होना होता है ३ ।

कफशिरोरोगमें--शिर भारी, कफ भरासा मालूम होना, बंधासा, ठंडा, नेत्रपर सूजन, मुखको भारीपना, शूल, ठनका होता है ४ ।

सन्निपातशिरोरोगमें--सर्व लक्षण होते हैं ५ ।

रक्तशिरोरोगमें--पित्तशिरोरोगके लक्षण होते हैं ६ ।

क्षयशिरोरोगमें--शिरका रक्त, वसा, कफ, वात क्षीण होके बहुत शूल होती है, छींक ज्यादा आती है, शिर तपता है, उपायोंसे ज्यादा होता है. स्वेद, उलटी, धुवाँ, पान, नास, रक्तमोक्ष इनसे बढ़ता है ७ ।

कृमिशिरोरोगमें--शिरमें ठनका लगना, कृमि अन्दरसे काटते हैं. मस्तक अन्दरसे काँपना, नाकमेंसे खून गिरना, पीप गिरना, कीड़े गिरना, यह कठिन रोग है ।

सूर्यावर्तशिरोरोगमें--सूर्य उदयसे शुरू होके जैसे २ सूर्य चढ़ता है वैसे

वैसे दर्द बढ़ता है वा नेत्र, भृकुटी, भौंह इन ठिकानोंमें शूल होके ठनकता है और जैसे सूर्य उतरता है वैसे रोग कम होता है. शामको नहींसा होजाता है. शीत और उष्ण उपायसे शांत होता है. इस सन्निपात विकारको सूर्यावर्त और आधाशीशी कहते हैं ९।

अनंतवातमें–तीनों दोष दुष्ट होके गर्दनके पीछेकी शिराको मजबूत जकड़के नेत्र, भौंह और शंख इन ठिकानेंमें रहके तीव्र पीड़ा होती है, कानकी बाजूपर कंप होता है. उससे हनुवटी, जकड़ना, नेत्ररोग होना इस त्रिदोषजन्य व्याधिको अनंतवात कहते हैं १०।

आधा शीशीके लक्षण।

रूक्ष अन्न अतिखानेसे, पीनेसे, बड़े फजिरमें पूर्वकी हवा, दंभ, मैथुन आदि तेरा वेगोंको रोकनेसे वात कुपित होके कफको साथ लेके आधाशिर धरके गर्दनकी जो शिरा, भौंह, नेत्र, कान, ललाट इनको एक बाजूसे कुल्हाड़ी मारने माफिक जो अनेकजातिकी पीड़ा होती है उसको आधाशीशी कहते हैं. यह रोग ज्यादा बढ़के उस बाजूके नेत्र और कानका नाश कर देता है. इसको अर्धावभेदक भी कहते हैं।

शंखकके लक्षण।

दुष्ट पित्त रक्तसे वात कफ सबको दुष्ट करके शंखकर भयंकर सूजन पैदा करते हैं. उसको ठनका बहुत लगता है. जलन होके लाल होता है और विष वेगके माफिक बढ़के गलेमें जाके उसका तुर्त रोध करता है। यह शंखकरोग तीन दिनमें रोगीका नाश करता है। तीन दिनमें कुशल वैद्यका इलाज हुआ तो बचता है लेकिन बेभरोसे है, ईश्वरके भरोसे उपाय करना।

[illegible]ोगपर उपाय।

वातशिरोरोगपर वातनाशक उपाय स्नेहपान, सेक, मर्दन, पान, आहार, पिंडी बांधना ये उपाय करना १। कुष्ठ, एरंडमूल, सोंठ इनको छाछमें पीसके गरम करके लेप देना २। श्वासकुठार रसकी नास देनेसे शिरकी शूलका नाश होता है ३। शिरोबस्ति १६ अंगुल चौड़ा चमड़ा लेके शिरको लपेटके

इसके संधिमें उड़दका आटा जमाके उसमें सिद्ध किया तेल भरके एक प्रहर और दो प्रहर डालके अचल बैठना। वह तेल सहन होने माफिक गरम हो. इसको शिरोबस्ति कहते हैं इससे वातशिरोरोग, हनुवंटी, गर्दन, नेत्र कर्णरोग, अर्दितवात, मस्तकरोग, कफ इनका नाश होता है. यह बस्ति भोजनके पूर्वमें सात दिन देना ४।

पित्तशिरोरोगपर उपाय ।

द्राक्षा, त्रिफला, गन्ना इनके रससे रेचन देना ५। गुलाबकी कली, हरडा, सनाइका चूर्ण रात्रिको सोते समय गरम जलसे देना ६। शकर, दूध, पानी इनका सिंचन करना ७। सौ वक्त घी धोके शिरमें मालिश करना ८। चंदन, केशर, ठंडे जलसे घिसके लेप देना ९। चंदन, खश, मुलहटी, नागवाला, निवडुंग, नीलाकमल इनको दूधमें पीसके लेप देना १०। और इनका रस काढ़के स्नान कराना ११। चंदन, ज्येष्ठीमधु, धमासा इनसे दूध सिद्ध करके देना १२। घीकी नास और शकर, मुलहटी, द्राक्षा इनकी नास देना १३। आंवला, कचूर, नीलाकमल, पद्मकाष्ठ, चंदन, दूर्वा, पीला खश इनको पीसके लेप देना: इससे पित्त, रक्तपित्त, मस्तकशूल इनका नाश होगा १४।

कफशिरोरोगपर उपाय ।

रेणुकबीज, तगर, शिलाजीत, मोथा, इलायची, कृष्णागर, देवदारु, जटामांसी, एरंडमूल इनका मंदोष्ण लेप देना १५। सौंठ, कुष्ठ, चकवँड़की जड़, देवदारु, गूगल इनको गोमूत्रमें पीसके मंद गरम लेप देना १६।

सन्निपातशिरोरोगपर उपाय ।

घी और तेलकी बस्ति देना और नाकमें धूम्रपान देना १७। मस्तक रेचन और लेप देना १८। पुराने घीका पान देना १९। नास मैनफल (गेलफल) बगरा (तीलवण) का बीज भूतकेश (नकछींकनी) का पत्ता इनको समभाग लेके इनसे आधा भाग बड़की छाल और बीज लेना, सबको घोटके नास बनाना. उसके सूंघनेसे तत्काल मस्तकशूल, प्रलाप, कफ झाँपड़, सन्निपात इनका नाश होगा २०।

रक्तशिरोरोग पर उपाय।

रक्तशिरोरोगकी पित्तनाशक क्रिया करके रेचन, रक्तमोक्ष, घी धारण पीतसम भोजन देना२१। शतधौत घी और ठंडेजलसे स्नान कराना२२। पिपली, खस, सोंठ, मुलहटी, शतावर, नीलाकमल इनको पानीमें पीसके लेपदेना शूलका नाश होता है२३।सोंठ,दूधसे घिसके नास देना-सब प्रकारका शिरोरोग शांत होता है २४। मुचकुन्दका फूल सूंघनेसे शिरकी शूल जाती है२५। कमल, रास्ना पीसके लेप देना,शिरोरोग जायगा२६। अनारका फूल दूबके रसमें कपूर, शहद, दूध मिलाके मस्तकपर धारण करना और दूध,शकर पीना इससे फूल मस्तकमेंसे रक्त पड़े सो बंद होगा २६। गूलरका पका फल लेके घी शकरमें पचाना.उसमें इलायची, मिर्च, डालके देना. इससे नाकसे रक्त जाता है सो बंद होता है २८। रिंगणीके फलका रस निकालके शिरको लेप करना; इससे शूल बन्द होगा २९।

क्षयशिरोरोगपर उपाय।

क्षय शिरोरोगको क्षय नाशक इलाज करना और वातनाशक सिद्ध किया हुआ घी पीनेको देना ३०। क्षयशिरोरोगको गुड़ घीसे पूरी बनाके खाना दूध घीकी नास देना और पिलाना ३१। सहँजनेके पत्तोंके रसमें मिर्च डालके लेप देना शिरशूल जायगा३२। केशर,शकर समभाग,इनके समभाग, घी चौगुना पानी डालके घी सिद्ध करना, उसकी नास देना, उससे शंख,मस्तक, नेत्र इनके शूलका नाश होगा३३। त्रिकटु, करंजीकी छाल सहँजनाकी छाल इनको बकरीके मूत्रमें घिसके नास देना, शिरके कृमि नष्ट होंगे३४। बायबिडंग, सज्जीखार, दंतीमूल, हींग इनकी नास गोमूत्रमें पीसके इनके कल्कमें सरसोंका तेल डालके सिद्ध करना. उसकी नास देना. इससे कृमि नाश होता है।

सूर्यावर्तपर उपाय।

गुड़ डालके घी पीना और तिल दूधमें पीसके लेप देना. इससे तीन दिनमें सूर्यावर्त रोग जायगा३६। सूर्यावर्तपर शिरावेध करना, दूध घीकी नास देना और पिलाना,रेचक देना३७। दशमूलके काढ़ेमें घी,सेंधवलोन

सिलाके नास देना, इससे अधाशीशी, सूर्यावर्त, मस्तकशूल जायगा३८। भांगरेके रसमें समभाग बकरीका दूध डालके सूर्यकी धूपमें तपाके नास देना, इससे सूर्यावर्त शिरोरोग जायगा ३९ । शिरसके फूल, बीज और जड़ की नास देनेसे अधासीसी, सूर्यावर्त जायगा ४० । बच, पिपलीकी पोठली करके सूंघना, आधासीसी जायगी ४१ ।

सूर्यावर्तरस-पारदभस्म, अभ्रकभस्म, पोलादभस्म, मुंडलोहभस्म, ताम्र भस्म इनको समभाग लेके निवडुंगके दूधमें एकदिन खरल करना, उसमेंसे रोगीकी ताकत देखके एक चावल सुमार देना. इससे सूर्यावर्त आधाशीशी रोग सात दिनमें नष्ट होगा ४२।

अनंतवात-अनंतवात पर सूर्यावर्तका ईलाज करना, शिरावेध करना ४३। अन्न मधुर, शहद, माखन, घी, हलुआ ऐसे मधुर अन्न देना ४४। बकरीके दूधमें सोंठ घिसके नास देना, इससे तत्क्षण आधाशीशी जायगी ४५ । केशर घी एकत्र घिसके नास देना, इससे तत्क्षण आधाशीशी जायगी४६। आधाशीशीको स्नेह, सेकना, रेचन, धूप, स्निग्ध उष्ण भोजन देना ४७। चौलाई, जटामासी इनके कल्कमें घी सिद्ध करके नास देना, आधाशीशी जायगी ४८। तुलसीका रस, दूर्वाका रस समभाग करके नास देना, त्वरित आधाशीशी, मस्तकरोग जाता है ४९। बिडंग, कालातिल इनका लेप देना, और नास देना आधाशीशी जायगा ५०। गोकर्णीका फल और सूलपानीसे घिसके नास देना और गोकर्णीकी जड़ कानमें बांधना, आधाशीशी जायगी ५१। मिर्च, चावल, भांगरेकेरसमें पीसके लेप देना, इससे आधाशीशी जायगी ५२। सोंठके पानीकी नास देना५३। खड़ीशकर गेलफल गायके दूधमें घिसके सूर्यउदयके प्रथम नासदेना, आंधाशीशी जायगी५४। करंजके बीज, गुड़ गरम पानीमें घिसके नास देना ५५ । रास्ना, सोंठ, बिडंग एरंडमूल, त्रिफला, दशमूल, हरडा इनका काढ़ा देनेसे आधाशीशी, वात रोग, आंतड़ीका अर्दित खंजवात, नेत्ररोग, मस्तकशूल, अपस्मार इनका नास करता है ५६। शंख रोगपर ठंडे पानीका अभिषेक करना और चिकना, नीला कमल, दूर्वा, काला तिल, पुनर्नवा इनका लेप करना. इससे शंख, अनंतवात, सर्व मस्तक रोग जायगा ।

५७। करञ्ज, सहँजनेके वीज, तमालपत्र, शिरस, दालचीनी इनका शिरोविरेचन करना ५८। गुड़ और अदरखके रसकी और पिपली, सेंधवलोन, पानीमें घिसके नास देना. मूत्र, उन्माद, शिरोरोग नाश होगा५९। कलीका चूना और नवसादर समभाग करके नास देना. शिरोरोग जायगा ६०। अमोनियामें गुलावका पानी और लव्हेंडर डालके शीशीमें भरना, शीशी रखना, उसके बारबार सुँघानेसे शिरोरोग जायगा६१। साठा (पुनर्नवा)का रस सूँघके धूपकी तरफ देखना, छींक आके शिरोरोग जायगा ६२। जंगली गोवरीकी राखको मंदारके दूधसे भिगोके सुखा लेना. उसका नास देना. शिरोरोग, कृमिरोग जाता है ६३। पथ्यादि काढ़ा देना ६४-महामयूरादि घी देना ६५।

शिरोरोगपर पथ्य।

जंगली मांस, शालीके चावल, मूंग, उड़द, कुलथी इनका रस पीना. रात्रिको तीखा रस, घी, गरम दूध पीना, बदामका हरेरा, शकर, घी, केशर डालके देना, दालचीनीका तेल, स्निग्ध उष्ण पदार्थका लेप देना, पसीना निकालना, नास देना, धूम्रपान, रेचन, लेप, सिंचन, लंघन, शिरोबस्ति, रक्तस्राव, दाग, पिंडी, पुराना घी, साठी भात, दूध, जंगलीमांस, परवल, सहँजना, दाख, बथुई, करेले, आम, आंवला, अनार, बिजोरा तेल, छांछ, कांजी, नारियल, हरडा, कुष्ठ, भांगरा, घीकुवार, नागरमोथा, खस, चन्द्रका चांदना, कपूर, सुगंधी चीजें ये हितकारक हैं।

शिरोरोगपर अपथ्य।

मलादिक तेरा वेगोंका रोग, अंजन, विदग्ध अन्न, विष्टब्ध अन्न, खराब पानीका स्नान, काष्ठसे दंत घिसना, दिनका सोना, कफकारक चीजें और न सहन होनेवाली चीजें वर्ज्य हैं।

इति शिरोरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ स्त्रीप्रदररोगका निदान-कर्मविपाक।

पूर्व जन्ममें बालहत्या करनेसे गर्भपातादि होते हैं और पूर्वजन्ममें माता, पिता गुरु इनकी स्पर्धा करनेवाली प्रदररोगिणी होती है। परि-

हार-कृच्छ्रातिकृच्छ्र चांद्रायण करना. (तद्विष्णो०)-इस मन्त्रका जप, ब्राह्मणभोजन, दान करना, शांत होगा ।

ज्योतिषका मत ।

स्त्रियोंके विवाह लग्नसे अष्टम स्थानमें मंगल हो तो प्रदर रोग होता है । परिहार-मंगलका व्रत करना, दान करना, शांत होगा ।

स्त्रीप्रदररोग होनेका कारण ।

विरुद्ध आहार विहार, मद्यपान, अध्यशन, अजीर्ण, गर्भपात, अतिमैथुन, अतिगमन, शोक,उपवास,जड़ बोझा उठाना,काष्ठादिकका अभिघात, दिनका सोना ऐसे अनेक कारणोंसे कफ पित्त वातादि दोष कोपके चार प्रकारके प्रदररोगको पैदा करते हैं ।

सामान्यलक्षण पूर्वरूप-सर्व प्रदरमें आंग मोड़के आना, हाथ पावमें कल लगना ।

स्त्रीप्रदररोगका उपद्रव ।

यह रोग ज्यादा बढ़नेसे शक्ति कम, थकनासा, मूर्च्छा, गुंगी, तृषा, दाह, भूल पड़ना, वर्ण शरीर निस्तेज,सफेद होके अंगमें सुस्ती, बादीकी सब पीड़ा ये लक्षण होते हैं १ ।

श्लेष्मकप्रदरके लक्षण ।

कफसे प्रदर हो तो आमके रसके माफिक गँदला, पानीके माफिक सफेद, चावलका पानी और चिकटा सफेद स्राव होता है. इसको सोम रोग-श्वेतप्रदर कहते हैं २ ।

पित्तप्रदरके लक्षण ।

पित्तसे पीला, नीला, काला, अरुण, गरम ऐसा प्रदर बहता है,इसमें पित्तके दश चिह्न होते हैं ३ स्राव ज्यादा होता है ।

वातप्रदरके लक्षण ।

वातप्रदरमें रूक्ष, लाल, फेनयुक्त, मांसके पानीमाफिक थोड़ा थोड़ा बहता है, उत्संगमें वातकी पीड़ा होती है ४ ।

सन्निपातप्रदरके लक्षण।

जिस प्रदरमें शहद, घी, हरताल, गोंदका रस, चरबी इनके रंगके माफिक और दुर्गन्धयुक्त हो सो त्रिदोष युक्त जानना चाहिये ९।

शुद्धार्तवके लक्षण।

आर्तव यानी जो स्त्रियोंको ऋतु आती है सो एक महीनामें पांच दिन तक बहता है सो ज्यादा न होके माफिक बहता है. उसमें शूलादिक कोई उपद्रव न होकर शुद्ध खरगोशके रक्तके माफिक खून बहता है. उसमें दुर्गन्ध न होके कपड़ेको लगके धोनेसे कपड़ेको दाग नहीं रहता, वह आर्तव शुद्ध जानना चाहिये. इन बातोंसे विपरीत चिकना, गाढ़ा, मस्तकमें शूल, दाहादिक दूसरी बीमारीसे हो सो अशुद्ध जानना।

प्रदररोगपर उपाय।

कफके प्रदरपर काले गूलरका रस देना १। काकजंघाकी जड़के रसमें लोधका चूर्ण शहद डालके देना. इससे कफप्रदर जायगा २। पित्तप्रदरपर अडूसाके रसमें शहद डालके देना ३। गिलोयके रसमें और शतावरीके रसमें शहद डालके देना, पित्तप्रदर जाता है ४। एक तोला मुलहटी पीसके चावलके धोवनमें डालके उसमें शकर चार तोला डालके देना ५। वातप्रदरपर काला नोन, जीरा, मुलहटी, नीलाकमल इनको दहीसे पीसके कल्क करके शहद डालके देना, इससे वातप्रदर जायगा ६। सोंठ, मुलहटी, तेल, शकर, दही ये सब समभाग लेके मथन करके देना, वातप्रदर जायगा ७। इलायची, सालवण, दाख, खश, कुटकी, चन्दन, साबरनोन, उपलसरी, लोध इनको दहीसे पीसके कल्क देना, वातप्रदर जायगा ८।

त्रिदोषप्रदरपर उपाय।

दूबकी जड़ चावलके धोवनमें तीन दिन पीसके देना, इससे त्रिदोषका प्रदर शांत होता है९। काले गूलरके फलके रसमें शहद डालके देना, इससे रक्तप्रदर शांत होगा १०। त्रिफला, सोंठ, दारुहलदी, लोध इनके काढ़ामें शहद और लोधका चूर्ण डालके देना, इससे सन्निपातप्रदर जायगा ११। काले गूलरके फलके चूर्णमें शकर और शहद डालके लड्डू बनाके देना,

सर्व प्रदर जायगा १२। दारुहलदी, रसांजन, अडूसा, चिरायता, भिलावा, बेल इनके काढ़ामें शहद डालके देना. इससे अतिप्रबलशूलयुक्त रक्तप्रदर, पीला, सफेद, पिंगट, लाल, काला, कैसेही रंगका प्रदर हो तोभी उसका नाश होता है १३। भुई आंवलीकी जड़ चावलोंके धोवनसे तीन दिन देना. इससे असाध्य प्रदर शांत होगा १४। धायटीके फूलका काढ़ा पीनेसे तीन दिनमें प्रदर जाता है १५। चूहेकी लेंडी दूधमें डालके देना. तीन दिनमें प्रदर जायगा. इसे अग्निबल देखके देना १६।

शतावरी घी-शतावरका रस ६४ तोला, घी ६४ तोला, दूध १२८ तोला एकत्र करके जीवनीयगणकी आठों दवाइयां और मुलहटी, चन्दन, पद्मकाष्ठ, गोखरू, भुईकोहला इन हर एकको पांच तोला, डालके घी सिद्ध करके देना. वह सर्व प्रदर, रक्तपित्त, वात, रक्तक्षय, दमा, हिचकी, खांसी, अन्तर्दाह, मस्तकदाह, मूत्रकृच्छ्र इतने रोगोंका नाश करता है. इसको बृद्धशतावर घी कहते हैं १७। रक्त रूड़ेकी जड़ोंका कल्क देना, सफेद प्रदर जायगा १८। त्रिफला, देवदारु, बच, अडूसा, शालीकी लाई, दूर्वा, पिठवन, नागबला इनका काढ़ा करके शहद डालके देना, प्रदर जायगा १९। केला और घी मिलाके देना. इससे रक्तप्रदर जायगा २०। काकजंघाकी जड़ और कपासकी जड़ चावलके धोवनसे देना इससे सफेद प्रदर जायगा २१। अशोककी छालका काढ़ा दूध पानी समान मिलाके करना, दूध शेष रहे पर पिलाना, तीन दिनमें रक्तप्रदर जायगा २२। रसांजन और लाख मिलाके पीसके बकरीके दूधसे पीना, प्रदर जायगा २३। कोरांटीका मूल, लोहेकी छाल, सफेद चंदन, मुलहटी इनको पीसके चावलके धोवनसे देना, सर्व प्रदर जायगा २४। कैथ, बांस इनका पत्ता समभाग पीसके शहद मिलाके देना, इससे सर्वप्रदर जायगा २५। आंवलाका रस और चूर्ण शहदसे देना, सफेद प्रदर जायगा २६। अशोककी छाल पीसके उसमें रसांजन शहद मिलाके चावलके धोवनसे देना. इससे सर्व प्रदर जायगा २७। शुद्ध जगहपरसे वाघांटीकी मूल उत्तर बाजूसे उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें निकालके लाना, उसको कमरसे बांधना. इससे रक्तप्रदर जायगा २८। चौलाईकी जड़ चावलके धोवनमें पीसके उसमें शहद रसांजन डालके पिलाना, प्रदर जायगा।

जीरादि अवलेह।

-जीरा ६४ तोला, दूध ५१२ तोला, लोह १६ तोला, घी १६ तोला एकत्र करके मंदाग्निसे पचाना; लोहेके माफिक हो तब उतार लेना. उसमें शकर ६४ तोला, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, पिपली, सोंठ, अजवाइन, मोथा, खस, अनार, रसांजन, धनियां, हलदी, पटोल, वंशलोचन, तवकीर ये सर्व हरएक दो २ तोला लेके चूर्ण करके उसमें डालना; मिलाके रखना. यह जीरादिलेह देनेसे परमा, सर्व प्रदर, ज्वर, अशक्तता, अरुचि, दमा, तृषा, दाह, क्षय इन सर्व रोगोंका नाश होता है २९। मूंग,उड़द इनके काढ़ेमें रास्ना, चित्रकमूल, नागरमोथा, पिपली, बेलफल इनका कल्क डालके घी सिद्ध करना. उसके देनेसे रक्तप्रदर जाता है ३०। प्रवालभस्म योग्य अनुपानसे देना, सर्व प्रदरका नाश करता है ३१। माक्षिकभस्म देना ३२। अभ्रकभस्म देना ३३।

प्रदरारि रस--शुद्धपारा १ भाग, गंधक १ भाग, नागभस्म १ भाग, रसांजन ३ भाग, लोध ६ भाग सबको खरलमें डालके अडूसाके रसमें एक दिन घोटना, शीशीमें रखना. जब काम पड़े तब दो वाल शहदसे देना. सर्व प्रदर नाश होगा। इति प्रदररोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ सोमरोगका निदान।

कारण–अतिमैथुन, शोक, श्रम, अतिसार, विषदोष इन कारणोंसे सर्व दोष कुपित होके मूत्रमार्गसे आके स्राव होता है।

सोम रोगका लक्षण।

घड़ी घड़ीमें पेशाब आना, सुस्ती, चैन न पड़ना, उसका मस्तक शीतल होना, मुख, तालुशोष, मूर्च्छा, बड़बड़, रूक्षता, अतृप्ति इसको सोमरोग कहते हैं।

मूत्रातिसारके लक्षण।

जिसके उदक रूप सोमका क्षय होता है उसका देह निश्चेष्ट होता है, मूत्रमें वेदना, सोम लक्षणसे बहुत दिन रहना, कांजीके माफिक बारबार पेशाब होना, दाग पड़ना. इसको मूत्रातिसार कहते हैं. इससे शक्ति कम होती है।

सोमके लक्षण।

बहुत स्वच्छ ठंडा गंध वेदनारहित सफेद ऐसा बहुत बहता है. उससे वह स्त्री बहुत दुबली होती है।

सोमरोगपर उपाय।

काले स्रावपर इलायची, तमालपत्र इनका चूर्ण डालके मद्य पीना १। काली मुसली, खजूर, मुलहटी, भुइकोहला इनका चूर्ण शहद शकरसे देना, इससे मूत्रातिसार जायगा २। काले पवांड़की जड़ चावलके धोवनसे पीसके देना, अतिमूत्र सोम जायगा ३। सोमारिरस देना. इससे जल-प्रदर नष्ट होता है ४। पक्का केला, आंवलेका रस, एकत्र करके शकर डालके देना, सोम नष्ट होता है ५। आंवलेका बीज पानीमें पीसके उसके कल्कमें शकर शहद डालके तीन दिन देना, सफेद प्रदर जायगा ४। नागकेशर छाछमें पीसके तीन दिन देना, सफेद प्रदर जायगा ६। केला घीसे देना, सोमरोग नष्ट होता है ७। इति सोमरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ योनिरोगका निदान।

योनिरोग २० जातिके हैं. उनके नाम—१ उदावर्ता २ वंध्या ३ वि-प्लुता ४ वातला ५ परिप्लुता ऐसे पांच योनिरोग वातसे होते हैं.

पित्तसे—लोहितक्षया १, वामिनी २, स्रंसिनी ३, पुत्रघ्नी ४, पित्तला ५, ऐसे पांच योनिरोग पित्तकोपसे होते हैं.

कफसे—अत्यानंदा १, कर्णिनी २, चरणा ३, अतिचरणा ४, श्लेष्मला ५ ये पांच कफकोपसे होते हैं।

सन्निपातसे—खंडिनी १ अंडिनी २ महती ३ सूचिवक्रा ४ त्रिदोषजा ५ ऐसे पांच योनिरोग सन्निपातसे होते हैं ऐसे २० प्रकार योनि रोगके हैं।

योनिरोग होनेका कारण।

मिथ्या आहार विहार, दुष्ट आर्तव बीज दोष और दैवयोगसे स्त्रियोंको योनिरोग होता है।

वातयोनिरोगके लक्षण।

१ जिस योनिसे फेन युक्त आर्तव बड़ी पीड़ासे बहता है उसको उदावर्ता

कहते हैं ।२ जिसका आर्तव दुष्ट होता है उसको वंध्या कहते हैं।३ जिसको हमेशा पीड़ा होती है उसको विप्लुता कहते हैं ।४ जिसको मैथुनसे बहुत पीड़ा होती है उसको परिप्लुता कहते हैं ।५ जो योनि कर्कश होके शब्द होके शूल पीड़ायुक्त हो उसे वातला कहते हैं,इन पांचों योनियोंमें बादीका ज्वर रहता है ।

पित्तयोनिरोगके लक्षण ।

जिसमेंसे गरम रक्त वहता है उसे लोहितक्षया कहते हैं१। जिससे रजोयुक्त शुक्र वात बराबर बहता है उसे वामिनी कहते हैं २। जो योनि स्थानभ्रष्ट होती है उसे प्रस्रंसिनी कहते हैं. इससें योनि बाहर निकलती है३। जिस योनिमें रक्तक्षय होनेसे गर्भ नहीं ठहरता उसे पुत्रघ्नी कहते हैं ४ जो योनि अतिदाह होके पकती है, ज्वर होता है उसे पित्तला कहते हैं इन पांचोंमें पित्त ज्यादा रहता है ५ ।

कफयोनिरोगके लक्षण ।

१ जिस योनिमें कितना ही भोग करनेसे तृप्त नहीं होती है उसे अत्यानंदा कहते हैं ।२ जिस योनिमें कफ रक्त से कर्णिका यानी कमलकी कटोरीके माफिक मांस बढ़के उसमें खाज होती है उसे कर्णिनी कहते हैं ।३ जो योनि थोड़े मैथुनसे पुरुषके प्रथम द्रव होती है उसे चरणा कहते हैं४ ।जो योनि बहुत वक्ततक मैथुन करनेसे तृप्त न हो वंध्या होके पुरुषके पीछे छूटती है उसको अतिचरणा कहते हैं ५ । जिससे योनि चिकटी खाज युक्त अत्यंत ठंडी रहती है, उसे श्लेष्मिका कहते हैं, यह उत्तम है, इन पांचोंमें कफ रहता है ।

सन्निपातयोनिरोगके लक्षण ।

जिस स्त्रीको रजोदर्शन आता नहीं और स्तन नहीं रहता और जिसकी योनि खरदरी होती है उसे षंढी कहते हैं १। तरुणी स्त्री बड़े शिश्नसे भोगकरे तो योनि बाहर पड़ती है. अंडके माफिक रहती है उसे अंडिनी कहते हैं २। जो योनि बाहर होके रहती है फटीशी रहती है उसको महायोनि कहते हैं३। जिस योनिका द्वार अतिसंकुचित रहता है उसे सूचिवक्त्रा कहते हैं ४। सर्व दोषसे सर्व लक्षण जिसमें होते हैं उसे सन्निपातिका कहते हैं ५ ।

योनिकंडु-दिनको सोना, क्रोध, व्यायाम, अतिमैथुन, नख, दंतादिक लगनेसे ऐसे अनेक कारणोंसे वातादिक कुपित होके रक्तकी शिराओंपर सफेद रंगके अंकुर मसे बेरके माफिक योनिमें बाजूपर पैदा होते हैं, उसको योनिकंडु कहते हैं, उसमें चार प्रकार हैं।

वातसे-जो कंडू, रूक्ष, विवरण खाज हो सो वातसे है १।

पित्तसे-कंडू होके दाह, लाल, आरक्त इन लक्षणोंसे युक्त होती है २।

कफसे-कंडू कदलीके फूलके माफिक होके, नीली, कंडू युक्त होती है ३

सन्निपातसे-सर्व लक्षण जिस कंडूमें होते हैं उसको सान्निपातिक समझना।

योनिरोगपर उपाय।

वातयोनिपर स्नेह, स्वेद, बस्ति देना. वातनाशक उपाय करना १। रगड़ना, बारबार पोटली रखना, मधुर दवाओंका लेप बना, बांधना; फोया तेल या घी आदिके काढ़ोंमें भिगोके रखना; सर्व योनियोंका सामान्य उपाय ऐसा करना २। बच, कलोंजी, जीरा, पिपली, अडूसा, सेंधवलोन, अजमोदा, जवाखार, चित्रक इनका चूर्ण घीमें भूनके शकर डालके प्रश्ना नामक मद्यसे पिलाना. इससे योनिके पीछेके भागका शूल, हृदयरोग, गुल्म, पार्श्वशूलका नाश होता है ३। रास्ना, असगंध, अडूसा, इनमें दूध सिद्ध करके देना, योनिशूल जायगा ४। गिलोय, त्रिफला, दंतीमूल इनके काढ़ासे सेंकना ५। विप्लुता योनिमें तगर, रिंगणी, कोष्ठ, सेंधवलोन, देवदारु, इनके काढ़ासे तेल सिद्ध करके उसमें रुई भिगोके योनिमें धरना. इससे योनिका ठनका, विप्लुता योनिरोग जायगा ६। वातयोनिपर स्नेहन, बस्ति, अभ्यंग, सेक, लेप, कपास, भिगोके रखना, पोटली देना ७। बेलफल, भांगराके बीज इनका कल्क करके शहदसे देना, योनिशूलका शीघ्र नाश होगा ८। शहदमें कपास भिगोके योनिमें रखना. इससे खाज, चिकनापना, स्राव, शीतलता जाती है ९। सुगंध पदार्थके कल्कका पोटली देना, इससे योनिदुर्गंध जायगा १०। सन्निपातयोनिरोगपर सन्निपातनाशक इलाज करना ११। दशमूल, धायटीके फूल, बेलफल इनके काढ़ामें रुई भिगोके योनिमें रखना १२।

पित्तयोनिरोग पर उपाय ।

पित्तनाशक इलाज करना, अभ्यंग पिचु (फोया) देना, स्नेह घीका देना १३। घीमें रुई भिगोके उसपर चन्दनका पानी छिड़कके योनिमें धरना. इससे ठनका, दाह शांत होगा १४।

कफयोनिरोगपर उपाय।

कफयोनिपर रूक्ष उष्ण कफनाशक उपाय करना, तेल जवका अन्न, हरडा इनका अरिष्ट देना १५। पिपली, मिर्च, उड़द, शतावर,कुष्ठ, सेंधवलोन इनको पीसके बत्तीमें लपेटके योनिमें धरना, यह बत्ती अंगुली बराबर मोटी करना, इससे योनिरोगका नाश होगा १६।

प्रस्रंसिनी योनिरोगपर उपाय।

तेल लगाके दूधसे सेकना और अन्दर लेप देना, दवा भरना, ऊपरसे बांधना १७। पीप बहनेसे योनि खराब हो तो उसे शोधन दवा, मलहम पोटली देना, इस माफिक तर्कसे दवा देना १८।

योनिकंडूपर उपाय।

गिलोय, त्रिफला, दंतीके बीज इनका काढ़ा करके योनिमें धरना, धार पिचकारी देना. और धोना, कंडु जाता है२०।मूंगोंका फूल, कत्था, हरडा, जायफल, पाठामूल, सुपारी इनका चूर्ण कपड़छान करके योनिमें धरना. इससे संकोच होके स्राव बन्द होता है २१। कपिकछुआकी जड़के काढ़ासे योनि धोना. इससे सूखेगा २२। वातला, कर्कश, स्तब्धा, अल्प स्पर्श, कुंभि इन योनिरोगोंको एकांतमें बैठके सेकना और तिलके तेलका पिचु देना और बोल योनिमें धरना. हित होता है २३। कलोंजी, जीरा और पिपली इनमें मद्य मिलाके उसमें संचल डालके पिलाना, योनिशूल जायगा २४। आंवलाके रसमें शकर डालके देना, योनिदाह जायगा २५। सूर्यवल्लीकी जड़ चावलोंके धोवनसे देना २६।

एकदम स्त्रीका रजोदर्शन गया हो तो—उसमें रोज मच्छी खाना और कांजी, तिल, उड़द, छाछ, दही इनको खाना २७। मालकांगुनीके पत्ते पीसके उसमें राई, बच, आसाना इनका चूर्ण ठंडा दूधसे तीन दिन पीना, इससे

गया ऋतु पीछे आवेगा २८ । काले तिलोंके काढ़ेमें गुड़ डालके देना, गया हेज पीछे आवेगा २९।तिल, मूंद, बड़ी सौंफ इनके काढ़ेमें गुड़ डाल के देना. इससे तीन दिनोंमें ऋतु आवेगा. इसमें संशय नहीं है ३०। कडू तुंबीके बीज, दंतीबीज, पीपल, गुड़,गेल, सहेला,महुडा, जवाखार इनका चूर्ण थोहरके दूधमें घोटके जाड़ी बत्ती बनाके योनिपर धरना. जल्दी ऋतु आवेगा ३१।गेरू, आमकी गुठलीका मगज, हलदी, सुर्मा, जायफल इनका चूर्ण शहदमें मिलाके योनिमें धरना. कंडु जायगा ३२। त्रिफलाका चूर्ण शहदमें मिलाके योनिसिंचन करना योनिकंडु जायगा ३३। चूहेका मांस तेलसे सिद्ध करके वह योनिमें धरना, कंडु जाती है ३४। त्रिफला, दंतीमूल इनके काढ़ेमें पिपली, मिर्च,उड़द, शतावर,कुष्ठ कुलिंजन, सेंधवलोन इनको घोटके अंगुष्ठाके माफिक बत्ती बनाके योनिमें डालना, योनि, कंडुका नाश होता है ३५। नांदरू, कपीला, लोध इनको कूटके आमलीके बराबर पकाके गरम लेप देना. योनिकंडु जाता है ३६ ।

इति योनिरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ संतान होनेका निदान ।

कारण—इसमें कारण सात हैं, स्त्रीको गर्भ धारण होनेकी सात तरहकी बाधा है.कोई सिद्ध पुरुषने दुनियांके हितके वास्ते लिखा है सो ऐसा है।

ऋतुसमयमें स्त्रीको ये सब लक्षण पूछना. उन लक्षणोंसे सब लक्षण पहचानके दोष ध्यानमें लाना । किसी सिद्ध पुरुषने कहा है—नीचे लिखे मुजब १ जिस स्त्रीकी ऋतुसमयमें सर्व देह ठनकती है उसका फूल फिरा है. इसके वास्ते उसके फूलमें बिंदु जाता नहीं जिससे गर्भ रहता नहीं २ फूल हवा ज्यादा होनेसे वीर्य उड़जाता है उससे अंग भोंता है, ऋतुसमय पुरुष संग करे उस वक्तमें, ३ जिसको फूलपर मांस आ जाता है उससे बिन्दु जानेको जगा नहीं रहती है उससे गर्दन दुखती है. जड़समें रहती है ४ जिसके फूलपर कृमि होती है वह कृमि वीर्य खाजाती है उससे पिंड़ियां बहुत दुखती हैं ५ जिसके फूलपर जाला चढ़ आता है. उससे बिन्दुका रक्त हो जाता है, जिससे जंघा बहुत दुखती है ६ जिसके फूलमें शीतलाई ज्यादा होती है उसके वीर्यका पानी हो जाता है. ऋतु समय छाती में दर्द होता है ७।

इससे अतिवीर्यवान् पुत्र होगा २२। काढेमें दूध डालके उसमें घी डालके दूध शेष पिलाना. गर्भ रहेगा २३। लक्ष्मणाका मूल पुष्यनक्षत्रमें कढ़ाके लाना और कुमारीके हाथसे दूधमें पीसके पिलाना. ऋतुसमय स्त्रीको निश्चय करके गर्भ रहेगा २४। कोरांटीका मूल, धायटीके फूल, वडकी जटा, नीला कमल इनको दूधमें पीसके पिलाना, गर्भ रहेगा२५। पारस-पीपलकी जटा, जीरा इनका चूर्ण लेके खावे, पथ्यसे रहे तो निश्चय करके पुत्र होगा २६ ।

इति संतान होनेका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ मूढगर्भका निदान।

कारण-भय अभिघातसे तीक्ष्ण गरम खाने पीनेसे ऊपर नीचे पाव पड़नेसे गर्भ गिरता है. उसमें खून गिरता है. शूल होता है।

स्राव भेद।

चौथे महीनातक गर्भ पतला रहता है इसवास्ते स्राव हो जाता है।

पातके लक्षण।

उससे आगे पांचवें और छठे महीनेमें जीव गिरता है उसको पात कहते हैं, कारण पांचवें और छठे महीनेमें शरीर गर्भका तैयार हो जाता है उसके गिरनेको पात कहते हैं।

पातका दृष्टांत।

जैसे पक्का कच्चा फल झाडको लगा हो और उसे पत्थर आदिक कोई मारनेसे फल देंटसे टूटके गिर जाता है वैसे ऊंचा नीचा पांव पड़नेसे, लगनेसे, ऐसे कारणोंसे गर्भपतन हो जाता है।

प्रसूत होनेके वक्त मूढगर्भके लक्षण।

मूढगर्भ वातसे होके आता है. योनिमें पेटमें शूल पैदा होता है और पेशाब बंद होता है।

उसकी गति ८ प्रकारकी होती है।

विगुण वात होके गर्भ विपरीत आड़ा आके योनि द्वारसे आता है वह आठ तरहका होता है १। कोई गर्भ मस्तकसे योनि द्वार बंद करकेआता है २।

कोई पेटकी तरफसे आता है३। कोई कुवड़ा होके आता है४ । किसीका एक हाथ बाहर निकलता है ५। कोई दोनों हाथ बाहर होके आता है ६ । कोई आगेके माफिक आड़ा आता है ७। कोई गर्दन टूटनेसे नीचे मुख करके आता है ८।कोई पीठसे दोवड़ा होके योनिद्वारसे आता है इस माफिक आठ तरहसे गर्भकी गति है २ ।

दूसरी ४ प्रकारकी गतियोंके लक्षण ।

संकीलक १ प्रतिखुर २ परिघ ३ बीज ४. इसमें जो गर्भ हाथ पांव ऊपर करके शिर योनिकी तरफ आके खीलेके माफिक अटकता है. इसे संकीलक कहते हैं १। जिस गर्भका हाथ पांव खुरकेमाफिक बाहर आके शरीर अटकता है उसको प्रतिखुर कहते हैं २ । जिस गर्भके दोनों हाथ और शिर आगे आके अटकता है उसे बीज कहते हैं ३। जो परीघके माफिक आके अटकता है उसको परीघ कहते हैं ४ ।

मूढ़गर्भिणीका असाध्यका लक्षण ।

जिस गर्भिणीकी गर्दनकी मणि टूटनेसे गर्दन बेताकत होती है, बदन ठंढा पड़ जाता है, लाज न रहती है जिसकी कोखपर नीली, हरी, शिरा दीखती है वो गर्भ और गर्भिणी एक एकको मारता है ।

पेटमें गर्भ मरेका लक्षण ।

गर्भका हलना चलना बंद होना, प्रसववेदना होना बंद होके बदन हरा, नीला पड़ता है, श्वासमें दुर्गंध आना, अंदर गर्भ मरनेसे फूलता है, इससे पेट भी फूलता है ।

गर्भ मरनेका कारण ।

मानसिक और आगंतुक दुःखसे और रोगसे अभिघातादिकसे पीड़ा होके गर्भ मरता है ।

दूसरे असाध्य लक्षण ।

वायुयोगसे योनिसंकोच होके कोखमें गर्भ अटकना और मक्कल शूल होना और आक्षेपक, खांसी, श्वासादिक उपद्रव हों तो जानना कि यह गर्भिणी जीवे नहीं ।

सूतिका ज्वररोगपर उपाय ।

१ गर्भिणीको ज्वर आवे तो मोह, चन्दन, खश, उपलसरी, ज्येष्ठीमद, पद्मकाष्ठ इनका काढ़ा शहद डालके देना । २ चन्दन, उपलसरी, लोध, दाख इनके काढ़ामें शकर डालके देना. जिससे गर्भिणीका ज्वर जायगा।३

पित्तज्वरपर उपाय ।

दाख, पद्मकाष्ठ, खश, सालवण इनको (श्रीपर्णी भी कहते हैं) चंदन, मुलहटी, दूधी, उपलसरी, आंवला इनका काढ़ा देना ४। सोंठ बकरीके दूधमें पीसके देना. जिससे गर्भिणीका विषमज्वर जायगा ५ ।

संग्रहणीपर उपाय ।

मजिष्ठ, मुलहटी लोध इनका चूर्ण शकरके पाकमें डालके देना. जिससे ज्वर, अतिसार जायगा और संग्रहणी प्रवाहिका नाश होगा ६। आंबा, जामुन इनके छालके काढ़ेमें लाई और सत्तू इनका चूर्ण डालके देना, जिससे गर्भिणीकी संग्रहणी जायगी ७। सोंठकी चटनी सोंठके काढ़ेमें जवका सत्त्व डालके देना जिससे गर्भिणीकी उलटी, दस्त, बंद होती है ८। पिठवन चिकना, अडूसा इनका रस देना, जिससे गर्भिणीका रक्तपित्त, पीलिया, सूजन, खांसी, दमा, ज्वर इनका नाश करता है ९। धनियांका कल्क चावलोंके धोवनमें शकर डालके देना, जिससे गर्भिणीकी उलटी जायगी १०। बेलगिरी लाह्योंके पानीसे देना, जिससे गर्भिणीकी उलटी बंद होगी ११। भारंगमूल, सोंठ, पिपली इनका चूर्ण गुड़से देना. गर्भिणीके श्वासको फायदा करता है १२। बेलफल, टाकली, सोंठ गरमपानीमें डालके ठंडा करके पिलाना. गर्भिणीका वातरोग जायगा १३। चंदन, मुलहटी, खश, नागकेशर, तिल, मेड़ा, मंजिष्ठ, आककी जड़, पुनर्नवा इनका लेप देनेसे गर्भिणीकी सूजन जायगी १४। स्याहजीरा, जीरा, कुटकी इनका काढ़ा देनेसे गर्भिणीकी सूजन नाश होती है १५। अजमोदा, पिपली, सोंठ, जीरा इनको समभाग लेके चूर्ण करके गुड़ शहदसे देना, जिससे गर्भिणीका अग्नि प्रदीप्त होता है ।

गर्भपातपर उपाय ।

गर्भ पातपर दाहादिक उपद्रव होते हैं. उसपर शीत स्निग्ध ऐसी क्रिया

करना १। डाभ, काश, एरंड, गोखरूका मूल इनका काढ़ा दूधसे करके देना. उसमें शकर डालना. जिससे शूल नाश होती है २। गोखरू, मुलहटी, दाख इनको बांटके दूध शकरसे पिलाना, जिससे शूल जायगा ३। कुंभारके घरकी मट्टी, मोगरीका पत्ता, लजालु, धायटीके फूल, गेरू, रसांजन, राल इनमेंसे जो मिले सो लेके चूर्ण करना व शहदसे देना, जिससे गर्भिणीका रक्त बंद होता है, प्रदर शांत होता है ४। गर्भीणीको आनाह रोग हो तो बच, लहसन डालके दूध तपाके देना. उसमें हींग और काला नोन डालके देना. शांति होती है ५। शाली गन्ना, डाभ, शूलवाला, मूजाकी जड़ (शरतृण) इन पांचोंकी जड़ लेके कल्क करके दूधमें औटाके देना. जिससे गर्भिणीकी तृषा, दाह, रक्त पित्तको साफकर पेशाब बन्द हो तो खुला होता है. इनको पञ्चतृणमूल कहते हैं ६। शरतृणमूल, मूजकी जड़को कहते हैं ६। कचूर, शिंगाड़ा, पद्मकाष्ठ, नीलाकमल, रानमूंग, मुलहटी इनके काढ़ामें शकर डालके देना. अतिसार जाता है. इसको पथ्य दूध चावल देना और सब वर्ज्य है ७।

गर्भपातपर महीने महीनेका उपाय ।

पहिले महीनामें गर्भपात हो तो दाख, मुलहटी, चंदन, रक्त चंदन, इनको गायके दूधमें पीसके उसमें घी डालके देना, जिससे गर्भ स्थिर होता है १। और नीलाकमल, खस, शिंगाड़ा, कचूर इनको ठंडे पानीसे पीसके दूधमें पिलाना; जिससे गर्भ स्थिर होता है, शूल शांत होता है २।

दूसरे महीनामें--कमलका केशर, नागकेशर पीसके दूधसे पीना और शूल होवे तो तगर, कमल, बेलफल, कपूर इनको बकरीके दूधमें पीसके देना. जिससे शूल शांत होगा ३।

तीसरे महीनामें हो तो--नागकेशर पीसके दूधमें पिलाना. उसमें शकर डाले तो फायदा होता है. शूल हो तो पद्मकाष्ठ, चन्दन, खस, कमलकी नाल. इनको ठण्डे पानीमें पीसके दूधमें मिलाके देना, इससे गर्भ स्थिर रहके शूल शांत रहेगा ४।

चौथे महीनामें--चल होके तृषा, शूल, दाह, ज्वर हो तो केलाका कांदा, नीलाकमल, खस इनको पीसके दूधसे देना. शांत होगा ५।

पांचवें महीनेमें चलन हो तो-अनारके पत्ता, चन्दन पीसके उसमें दूध दही डालके देना.शांत होगा और नीलाकमल, कमलके बिस, बेरका पत्ता, नागकेशर, पद्मकाष्ठ इनको पानीमें पीसके दूधसे देना जिससे गर्भ शांत होके शूल शांत होता है ६।

छठे महीनेमें गर्भचलन हो तो-गेरू, गायके गोबरकी राख, पिपली, सोरठी मट्टी इनके काढ़ेमें दूध, शकर, चन्दन डालके ठंडा करके देना, जिससे शांती होवेगी ७।

सातवें महीनेमें-खश, गोखरू, नागरमोथा, लजालुकंध, नागकेशर, पद्मकाष्ठ इनके काढ़ेमें शकर डालके देना. शांत होगी ८।

आठवें महीनेमें-लोध,पिपलीका चूर्ण शहदमें देना. शांत होता है ९।

नववें महीनेमें-प्रसूतकाल है सो शास्त्रप्रमाण करना. सो पहले प्रकरणमें लिखा है और गर्भचलन पर दवाइयां इस माफिक देना १। पहिले महीने में-मुलहटी, सांवाके बीज क्षीरकाकोली, देवदारु इनको ठंढे पानीमें पीसके चार तोला दूधमें मिलाके देना. इसी अनुपानसे, नीचे लिखी दवाइयां सात महीनातक गर्भचलनपर देना २।

दूसरें महीनेमें-आपटा, काला तिल, ताम्रवल्ली, शतावर देना ३।

तीसरे महीनेमें-बाधांगुल, क्षीरकाकोली, नीला कमल, उपलसरी ये देना ४।

चौथे महीनेमें-धमासा, उपलसरी, रास्ना, कमल, मुलहटी ये देना ५।

पांचवें महीनेमें-रिंगणी, जंगली बैंगन, भुईकोहला, शिवण, काकड़ाशिंगी, दालचीनी, घी ये देना ६।

छठे महीनेमें-पिठवण, चिकना सेवगा, गोखरू ये देना. शिंगाड़ा, कमलके तंतू, द्राक्षा, कचूर, मुलहटी, शकर ये देना ७।

इन सातों योगोंको सात महीना तक गर्भचलनपर देना।

आठवें महीनेमें-कवथ, बेलफल, रिंगणी, पटोल, गन्ना, रिंगणी इनका मूल लाके उसमें पानी दूध समभाग डालके बाकी दूध रहे ऐसा काढ़ा करके देना. इससे शांत होता है ८।

नववें महीनेमें-मुलहटी, धमासा, काकोली, उपलसरी इनका काढ़ा देना ९।

दशवें महीनेमें-सोंठ, क्षीरकाकोली इनका दूधमें काढ़ा करके देना और सोंठ, मुलहटी, देवदारू इनका काढ़ा दूधसे देना. इससे फायदा होगा १०

ग्यारहवें महीनेमें-बंशलोचन, नीलाकमल, दूध, लाजालूका मूल, आमला इनको दूधसे पीसके देना. शूल शांत होता है ११।

बारहवें महीनेमें-कावली (काकमाची), क्षीरकाकोली, कमलका बीज इनको पीसके देना. शूल शांत होकर गर्भ पुष्ट होता है १२।

गर्भस्रावपर उपाय।

नीला कमल, लाल कमल, कह्लार, कमोद, सफेद कमल, मधूक, नावक कमल इनको उत्पलादि गण कहते हैं. इनका काढ़ा दूधमें सिद्ध करके देना, यह गर्भस्राव, दाह, तृषा, हृद्रोग, रक्तपित्त, मूर्च्छा, उल्टी, अरुचि इन रोगोंको शांत करता है १। गर्भपातपर लजालू, धायटीके फूल, नीला कमल, मुलहटी, लोध इनका काढ़ा देना और पानीमें बिठाना. इससे गर्भपात निवारण होता है. कुम्हारके चाककी मट्टी बकरीके दूधमें मिलाके शहद डालके देना. गर्भपात न होगा २। सफेद गोकर्णीका मूल दूध में घिसके देना. गर्भस्राव न होगा ३।

गर्भिणीको रक्त जाय उसपर उपाय।

सफेद कबूतरकी विष्ठा नागबेलके पानके रसमें देना. इससे रक्त बंद होता है।

शर्करादि गर्भपातपर--शकर, कमलका बीज, तिल समभाग पीसके शहदसे देना. गर्भपात शांत होगा १।

कटिबंध-अतिबलाकी मूलीलाके कुमारीके हाथसे सूत कताके समतार करके उसमें वह मूली बांधके कमरमें बांधना. इससे गर्भपात न होगा २।

ह्रीबेरादियोग-खस, अतीस, मोथा, मोचरस, इन्द्रजव इनका काढ़ा गर्भचल और प्रदर, शूल इनकी शांति करता है ३। जासूदका फूल, मिश्री समभाग करके देना. गर्भ शांत होगा ४।

मूढगर्भपर उपाय।

१ गर्भका संकोच प्रसूतके वखत होता है, उसको गर्भ होता नहीं और छोड़ रहके बढ़ता नही और पेटमें बैठ जाता है. उसके हाथसे ऊखलमें धान डालके उसके हाथसे कुटवाना बहुत देरतक कुटाना और विषम उपाय करना. फायदा होता है।२ जिसका गर्भ वातसे शुष्क हुआ हो तो उदर पूर्ण होनेको उसको पुष्ट चीजोंसे सिद्ध किया दूध पिलाना, मांस रस खिलाना. इससे फायदा होता है। ३ जिस स्त्रीको स्वप्नमें पुरुष-संयोग हो उससे वो खलील होके उसका रजोरूप रक्त अन्दर रहके वातादिक दोषोंसे सूखके गर्भके माफिक एक बाजूपर बढ़के वातकी पीड़ा पैदा करता है, निर्जीव रहके रोमरहित हड्डीरहित गर्भ होता है. उसे नागोदर कहते हैं, यह ऋतुके खूनसे भी होता है. इसको ऊपर लिखे मुजब मेहनत करवाना, नौवां, दशवां,ग्यारहवां और बारहवां महीनातक बालक पैदा होनेकी अवधि है उसके आगे गर्भ नहीं है,रोग समझना।

दुःखप्रसूतिपर उपाय।

४ प्रसूति होनेको देर लगे तो उसपर सांपकी कैंचुलिका धुवां योनिको देना. तगर चन्दनका धुवां योनिको देना. इससे जल्द छुटापा होता है। ५ कललाथीकी जड़ सूतसे हाथ पांवमें बांधना. तुरत छुटापा होता है। सूर्यफूलवल्ली और कडूवृंदावन इनको शिरमें धरना। ६ पिपली, बच पानीमें पीसके उसमें एरण्डका तेल डालके इसका नाभिपर लेप देना. इससे अनेक पीड़ा जाके जल्द प्रसूत होती है। बिजोराकी जड़, मुलहटी इनका चूर्ण घीसे पिलाना. इससे सुख होके छुटापा होगा। ७ गन्नाकी जड़ उत्तर बाजूसे उस स्त्रीके बराबर लम्बी लेके कमरको बांधना. इससे तुरत प्रसूत होती है। ८ ताड़के उत्तर बाजूकी मूली कमरको पूरे इतनी लम्बी लाके कमरको बांधना, सुखसे प्रसूति होती है। ९ सफेद अघाड़ेकी और नीमकी और कावलीकी मूली कमरको बांधनेसे सुखसे प्रसूति होती है। प्रसूतिका इलाज मृतकगर्भको करना चाहिये।१० निर्भय पुरुषने हाथको घी लगाके अंगुलीके आसरे शस्त्र लेके हाथ योनिमें डालके गर्भ काटके निकालना, मृतक बालक आस्तेसे निकाल लेना।११ जीता गर्भको बिलकुल नहीं काटना,काटनेसे स्त्री मरेगी।१२ मृतक गर्भ

जो योनिसे दीखे उसे कुशल हकीम काटके निकलवाना और स्त्रीका बचाव करना.इसमाफिक शल्य गर्भको निकाले बाद उसको अभ्यंग करके गरम पानीसे योनि सेकना और योनिमें स्नेह धारण करना जिससे योनि मृदु होके शूल शांत होती है । १२ राई, हींग इनका चूर्ण कांजीमें डालके हलाके पिलाना जिससे मृतगर्भ गिरेगा। १३ फालसाकी जड़का अथवा शालवणकी जड़का लेप नाभीपर बस्तीपर और योनिपर लेप देना. जिससे मूढ़गर्भ आकर्षण होता है। १४ गाजरोंका बीज ३ तोला, दाड़िमका बीज तोला ३, फिटकड़ी तोला २, सिंदूर तोला २ इनको खरलकरके पानीसे पिलाना. गर्भ गिरेगा. मृतक गर्भ भी तत्काल गिरेगा। १५ निर्गुंडीका बीज, चित्रकमूल इनका चूर्ण शहद डालके एक तोला देनेसे तत्काल गर्भस्राव होता है १६ । एरण्डके पत्ते की काडी आठ अंगुल लम्बी योनिमें डालके रखना इससे चार महीनेका गर्भस्राव होता है। १७ एक तोला देवदारुका चूर्ण पानीसे देना. जिससे तत्क्षण गर्भ पतन होता है। १८ घोड़ीकी लीद कांजीमें मिलाके कपडेसे छान लेना, उसमें सेंधवलोन, बच, राईका तेल डालके पिलाना. इससे साफ गर्भ गिरजाता है।१९प्रसूत स्त्रीकी झर बाहर नहीं गिरे तो शूल पैदा होता है, पेट फूलता है,अग्निमन्द होता है, उसको सांपकी केंचुलि, कडु-तुम्बा, नागरमोथा, शिरस इनके चूर्णको राईके तेलमें भिगोके उसका योनिको धुवां देना. इससे आंवल गिर जाती है। २० कलकलावीके कंदका लेप हांथ पांवके तलवाको देना. इससे आंवल गिरती है २१ ।

दाईको योग्य ज्ञान ।

दाईको योग्य है कि अपने हाथोंका नख साफ निकालके हाथोंको तेल लगाके हाथ योनिमें डालके आंवल निकाल लेना । २२ सफेद तुंबाके पत्ता, लोध समभाग पीसके उसका योनिमें लेप देना. इससे योनिको लगी हो सो जखम तत्काल साफ होती है। २३ पलासपापडी, गूलरका फल पीसके उसमें तिलोंका तेल डालके मिलाके योनिपर लेप करना. इससे योनि संकोच मजबूत होती है। २४

मक्कलका निदान ।

बालक बाहर पड़े बाद योनिको रगड़के उसमें वायु प्रवेश न होने देना

रक्तको रोधके इस स्त्रीको हृदय, मस्तक, बस्ती इनमें शूल पैदा करता है. उसको मक्कल्ल शूल कहते हैं २४ ।

मक्कलपर उपाय ।

जवाखारका चूर्ण गर्म पानीसे और घीसे देना. इससे मक्कल्ल, शूल जायगा २५ ।

पिपल्यादि गण ।

पिपली, पिपलामूल, मिर्च, गजपिपली, सोंठ, चित्रक, चवक, रेणुकके बीज, दालचीनी, अजमोदा, शिरस, हींग, भारंगमूल, पाठामूल, इन्द्रजव, जीरा, बकायननींब, मोरवेल, अतिविष, कुटकी, बिडंग इनको पिपल्यादि गण कहते हैं. यह कफवात, गुल्म, शूल, ज्वर इनका नाश करता है और दीपन पाचन है। इसका काढा करके उसमें नोन डालके देना. मक्कल्लशूल, गुल्म, कफ वात इनका नाश करेगा । २६ त्रिकुट, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, धनियाँ इनका चूर्ण पुरानेगुडसे देना. मक्कल्ल शूलका नाश करेगा । २७ हींग भूनके घीसे देना । २८

प्रसूतिपर पथ्य ।

प्रसूतिमें युक्त ऐसा आहार विहार करना और यत्नसे रहना ।

प्रसूतिपर अपथ्य ।

व्यायाम, मैथुन, क्रोध, ठंडी हवा, ठंडा पदार्थ वर्ज्य करना और प्रसूति स्त्रीका मिथ्या आहार विहारसे रोग बढ़के कृच्छ्रसाध्य और असाध्य रोग होता है इसवास्ते बहुत यत्नसे चलना, जिससे आराम और आरोग्यसे रहेगी ।

गर्भ न रहनेकी दवा ।

पिपली, विडंग, टांकणखार इनका समभागचूर्ण दूधसे देना, ऋतु समयमें तीन दिनकाभी गर्भ न रहेगा १। जासुंदीके फूल कांजीसे घोटके जो रजस्वला पीवे ऊपरसे चार तोला गुड खाय तो स्त्रीको गर्भ न रहे २। सैंधवलोनका टुकडा तेलमें भिगोके योनिमें रक्खे ऊपरसे पुरुष संग करे तो गर्भ न रहेगा ३। ऋतु समय चौलाईकी जड चावलके धोवनमें तीन दिन पीवे तो निश्चय करके बांझ हो जायगी । इति मूढगर्भका निदान और चिकित्सा समाप्ता ।

सूतिकारोगका निदान ।

कारण-अविचारसे आहार विहार जो स्त्री नवी प्रसूतमें करेगी उसको सूतिका रोग (सुवा रोग) कहते हैं. उसके लक्षण अंगमोडी, ज्वर, कांपना, तृषा, बदन भारी होना. सूजन, शूल, दस्त लगना. ऐसा लक्षण हो तो सूतिकारोग जानना. इसको बालंतरोग कहते हैं और सुवारोग भी कहते हैं ।

अथ सूतिका रोगके लक्षण ।

प्रसूतिको मिथ्या उपाय करनेसे, दुष्ट अन्न खाने पीनेसे, विषमें उपाथसे, अजीर्ण भोजनसे ऐसे कारणोंसे भयंकर रोग होता है, उससे वातादि कुपित होके रक्तकी सहायतासे मस्तक, हृदय, बस्ती इन ठिकानोंमें शूल उत्पन्न करते हैं. इस शूलको मक्कलशूल कहते हैं । इसका उपाय पीछे लिखा है उस माफिक करना ।

सूतिका रोगका उपद्रव ।

आलस्य, अन्नद्वेष, मुखको पानी छूटना ऐसे लक्षण होते हैं. यह सब सूतिका रोग जानना। इसमें मांस, बल अग्नि ये क्षीण होते हैं. यह कष्टसाध्य होता है और सूतिका रोगमें एक आधा ज्वरादिक आगे होके बाकीके उपद्रव रूपसे रोग रहते हैं १ ।

सूतिका रोगपर उपाय ।

सूतिका रोगपर सब वातनाशक इलाज करना चाहिये २। दशमूलका काढा करके उसमें घी डालके देना ३। गिलोय, सोंठ, कोरंटी, चांदवेल, ऊँटकटारा, पंचमूल, नागरमोथा इनका काढ़ा करके उसमें शहद डालके देना. इससे सूतिरोग जायगा ४ ।

देवदार्व्यादि काढ़ा-देवदारु, बच, कुष्ठ, कुलिंजन, पिपली, सोंठ, जायफल, मोथा, किरायता, कुटकी, धनियाँ, हरडा, गजपिपली, रिंगणी, गुखरू, धमासा, जंगली बैंगन, अतिविष, गिलोय, बेल, काला जीरा इनका काढा करके उसमें सेंधवलोन और हींग डालके देना. यह प्रसूति रोग, शूल, खांसी, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा, कंप, मस्तकपीड़ा, बड़बड़, तृषा, दाह, तंद्रा, अतिसार, उलटी इन सब उपद्रवोंसे युक्त त्रिदोष इन सूतिका रोगोंका नाश

करता है ५। कोरांटी, कुलीथ, पोहकरमूल,देवदारु,बेत इनके काढ़ेमें सेंध-वलोन डालके देना. इससे सूतिकारोग, शूल, ज्वर जाता है ६। पंचमूलके काढ़ामें लोह तपाके बुझाना.उसके पीनेसे सूतिका रोग जायगा ७। सुरामें शकर डालके पिलाना. सूतिका रोग जायगा ८।

वज्रकांजीयोग–पिपली, पीपलमूल, चवक, सोंठ, अजवाइन, जीरा, स्याह जीरा,हलदी,दारुहलदी,बिड़नोन,कालानोन इन दवाइयोंको कूटके उसमें कांजी पकाके उस कांजीको देना. यह आमवात, कफनाशक, वृष्य, अग्निदीपक स्त्रियोंको हित करनेवाली सूतिका रोग नाशक दूध बढा-नेवाली शूल नाशक है ९।

पंचजीरापाक–जीरा, स्याह जीरा, वड़ी सौंफ, बालंतणी सौंफ, अज-वाइन, अजमोदा, धनियाँ, मेथी, सोंठ, पिपली, पीपलमूल, चित्रक, हापूसा, कोहलाका चूर्ण, कुष्ट, टेंटू ये चीजें दरएक चार तोला और गुड़ ४०० तोला, दूध १२८ तोला, घी १६ तोला इनका पाक रीतिसे सिद्ध करके देना. इससे सब प्रसूति रोग जाता है. ऐसा विख्यात है और बालंतनी रोग, योनिरोग, ज्वर, क्षय, खांसी, दमा, पांडुरोग, अर्शरोग, वातरोग इनका नाश करता है १० ।

सौभाग्य–सोंठपाक ।

घी ३२ तोला, दूध २५६ तोला,खडी शकर २०० तोला और शता-वर, जीरा, सोंठ, मिर्च, पिपली, दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, अजवाइन, सौंफ, चवक, चित्रक, मोथा इनको हरएक चार२ तोला लेके चूर्ण करना. साफ बरतनमें भरके रखना और इसमें लोहसार १ तोला, अभ्रक १ तोला डालना, पीछे अग्निबल देखके देना. इससे प्रसूतिरोग जाके बलवीर्य पुष्टि देके वली पलित इनका नाश करता है और वयस्थापक, हृदय, मंदाग्नि, वात, आमवात, मक्कलशूल, प्रसूति-वात इनका नाश करता है. इसका नाम सौभाग्य सोंठ है ११ ।

नागरखंडयोग–घी ३२ तोला, दूध ५१२ तोला, शकर २०० तोला, उसमें सोंठका चूर्ण २०० तोला डालके गुड़के पाकके माफिक पाक बनाना. उसमें धनियाँ १२ तोला, बडी सौंफ २० तोला, बायबिडंग ४

तोला, अजवाइन ४ तोला, जीरा ४ तोला, सोंठ ४ तोला, मिर्च ४ तोला, पिपली ४ तोला, नागरमोथा ४ तोला, तमालपत्र ४ तोला, नागकेशर ४ तोला, छोटी इलायची ४ तोला इन सबका चार २ तोला चूर्ण डालके पचाना. सिद्ध करना. इसको नागरादिखंड कहते हैं। यह स्त्रियोंको उत्तम है. इससे तृषा, उलटी, ज्वर, दाह, शोष, खांसी, प्लीहा, कृमि, मंदाग्नि इनका नाश होगा १३। प्रसूत होने बाद एक महीनातक शुद्ध स्निग्ध अल्प ऐसा भोजन करना और शेक अभ्यंग ये रोज करना १४। प्रसूतिको डेढ़ महीना होके जो पीछी शिरमैली हो तो उसको हीनसूतिका कहते हैं ऐसा नाम धन्वंतरिने दिया है १५। चार महीना बालक हुए बाद उसको पहिला वर्ज्य ऐसा उपाय करना. कारण उसका सब उपद्रव बंद होने बाद पथ्यकी चीजें देना १४।

इति प्रसूतिरोगका निदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ स्तनरोगका निदान ।

वातादि दोष दुष्ट होके गर्भिणीके और प्रसूताके स्तन दूधसे भरे तथा रीते स्तनतक आके वहांके मांस, रक्त इनको खराब करके पांच प्रकारका स्तन रोग पैदा करते हैं। इनके नाम—१वातसे २ पित्तसे ३ कफसे ४ सन्निपातसे५आगंतुकसे। इनके लक्षण रक्तविद्रधिके सिवाय सर्व विद्रधिके साफिक होते हैं।

स्तनरोगका उपाय ।

१ कवंडलका मूल घिसके लेप करना १। वनकपाशी और दूधियाको गेहूंके आटामें डालके लेप करना और पोलटिस बांधना २। और स्तनरोगको विद्रधिका पीछे लिखा उपाय करना. स्तनरोग जाता है ३। जड़ भारी और दुष्ट ऐसा अन्न और पान करनेसे दोष दुष्ट होके माताका और उपमाताका दूध खराब होता है उसीके पीनेसे बालकको नाना प्रकारके रोग पैदा होते हैं ४।

दूधपरीक्षा ।

साफ़ कांचका प्याला लेके और ग्लास लेके उसमें साफ पानी भरके उसमें दूध स्त्रीका डालना. दूध सब पानीमें एक सरीखा मिलके एक रंग

हो तो वह दूध अच्छा है और दूध तैरे तो व्याधी है। उसमें तीखा, खट्टा, खारा होके उसपर पीली रेखा दीखे तो वह पित्तसे, दूध जाड़ा चिकना पानीमें डूबने वाला है सो कफसे खराब है और दो २ दोषके लक्षणोंसे जो दूध दुष्ट है सो द्वंद्वज समझना और सर्व लक्षण हों तो त्रिदोषदुष्ट दूध समझना।

दूधपर उपाय।

वातदुष्ट दूधपर दशमूलका काढ़ा तीन दिन देना १। और वातनाशक घी पान देना. २। और हरडेका जुलाब देना. हलका जुलाब देना ३। धायका दूध कफसे बिगड़े तो जेष्टीमद, सेंधव डालके घी पिलाना और अशोकका फूल बांटके स्तनको और बालकके होठको लेप देना. जिससे बालकको सुखसे उलटी होगी और कफ शांत होगा ४। पित्तसे दुष्ट स्तन रोगको गिलोय, शतावर, पटोल, नींव, चंदन इनका काढ़ा बालक और उसकी माताको पिलाना ५। दो दो दोषसे दुष्ट हुआ दोषसे दूधपर दो दो दोषसे दवासे दूध सिद्ध करके देना ६। सन्निपातसे दुष्ट हो तो पाठामूल, मोरवेल, चिरायता, देवदारु, सोंठ, इंद्रजव, उपलसरी, तगर कुटकी इनके काढ़ेसे स्तन शुद्ध होगा ७।

दूधवृद्धि करनेको–भुई कोहला दूधमें पीसके उसका रस छानके उसमें शकर डालके पिलाना, इससे दूध बढ़ेगा ८। शतावरकी मूली दूधसे बांटके दूधमें मिलाके शकर डालके पिलाना. दूध बढ़ेगा ९। भुईकोहलाका चूर्ण सुरासे पीसके पिलाना. दूध बढेगा १०। जंगली कपासीकी और गन्नाकी जड़ दूध बढ़नेको कांजीसे पीसके पिलाना ११। मंद--उष्ण दूधमें पिपली डालके पिलाना. दूध बढ़ेगा १२। स्तन सूजे और पके, दाह हो तो उसको विद्रधिका इलाज करना १३। स्तनरोगपर पित्तनाशक और शीतल ऐसा इलाज करना और जोक लगाके रक्त काढ़ना, पिंड बांधना १४। कडू वृंदावनकी मूलीका लेप स्तनको देना १५। हलदी, लोध इनका लेप देना. इससे स्तनपीडा दूर होगी १६।

श्रीपर्ण्यादि स्तनवर्धन।

शिवणीका रस और कल्कमें तिलोंका तेल डालके सिद्ध करना. उस

तेलसे कपास भिगोके स्तनपर रखना और बांधना इससे स्तन मजबूत होके ऊंचे उठे रहेंगे हाथीके गंडस्थलके माफिक रहेंगे १७ । नागबलाका मूल पानीमें पीसके स्तनोंको मालिश करना. जिससे स्तन पुष्ट मजबूत रहेंगे १८ । कमलाक्ष बांटके दूध और शकरसे पिलाना. इससे एक महीनामें स्त्रीका स्तन मजबूत पुष्ट होता है १९ । गेहूंके आटामें समभाग अक्रोडका पत्ता मिलाके उसकी पूरी गायके घीसे तलके जो स्त्री सात रोज खायगी तो उसको दूध बहुत बढ़ेगा ।

स्त्रीरोगपर पथ्य ।

जो पथ्य अपथ्य रक्तपित्तपर लिखा है उसे देखके प्रदर रोगको पथ्य करना चाहिये और जो पथ्य वातरोगको कहा है उस माफिक सांठी चावल, गेहूं, मूंग, लाही, सत्तू, घी, दूध, सीत रस, शहद, शकर, कटहर, केला, आंवला, दराख, अम्ल, गोड, शीतल, कस्तूरी, चंदन, फूल, माला, कपूर, मद्य, अनुलेपन, चांदना, स्नान, अभ्यंग, नरम बिछौना, ठंडी हवा, तृप्तिकर अन्न, प्रिय आलिंगन, मनोहर ऐसा व्यवहार, प्रियकर अन्न, पान, ऐसा पथ्य हितकारक है ।

स्त्रीरोगपर अपथ्य ।

शेक, वांती (उलटी), क्षार, कंद, विषमाशन ये गर्भिणीको अपथ्य कहे हैं और प्रकृतिको न माने सो, बोझा उठाना, ऊपर नीचे चढ़ना ये वर्ज्य हैं और सूतिका रोगको वात कफ कम होनेका पथ्य करना सो हितकारक है।

इति स्तनरोगनिदान और चिकित्सा समाप्त ।

अथ बालरोगका निदान ।

कारण-माताके जड़ अन्नादिक खाने पीनेसे, विषमाशनसे ऐसे दोषोंके कारणोंसे देहमें दोष कुपित होके विकृत दूध करते हैं उससे बालकको रोग पैदा होता है ।

बालकके जातिभेद-दूध पीनेवाला और दूध अन्न खानेवाला और केवल अन्न खानेवाला ऐसे तीन तरहके बालक होते हैं और अन्न और दूध दुष्ट होनेसे बालक रोगी होता है और अच्छा होनेसे निरोगी रहता है।

दंतोद्भव-सर्व बालकोंके रोग होनेका कारण दांतोंसे है, लेकिन् उसमें

विशेष करके ज्वर, विड्भेद, कृशपना, उलटी,कपाल दुखना,अभिष्यंद, शोथ, विसर्प ये रोग होते हैं १ ।

वातसे दुष्ट दूध पीनेवाले बालकको-वातरोग होता है उससे शब्द करके रोना, शरीर कृश होना, मल मूत्र वात बन्द होता है २ ।

पित्तसे दुष्ट दूध पीनेवाले बालकको-पसीना आना, मल पतला, पीलिया, पित्तका रोग होना, तृषा, ज्वर, सब बदन गरम होना ३ ।

कफसे दुष्ट दूध पीनेवाले बालकको-मुखसे लार पड़ना. कफसे रोग होना, निद्रा ज्यादा,बदन भारी, सूजन, नेत्रपर सफेद पना, उलटी ये रोग पैदा होते हैं ४ ।

बालककी अन्दरकी बीमारी जाननेके लक्षण ।

बालकके रोने और हाथकी चेष्टासे लक्षण पिछाननेके वास्ते पहिले बच्चेको सुलादेना. बाद जिस ठिकानेपर रोग और दुखता है उस ठिकाने पर बार बार रोके हाथ लगावेगा और अपने हाथ लगानेसे रोवे तो उस ठिकानेपर कुछ उसका दुखता है ऐसा जानना, आंख मीजे तो शिर दूखता है ऐसा जानना और मल-अवरोध, उबकाई, स्तन, काटना, पेटमें गुड़गुड़ करना, पेट फूलना, पीठ बांकी करना, पेट बड़ा दीखना इन लक्षणोंसे उसके पेटमें पीड़ा है और मलमूत्र बन्द होना,चमकके उठना चारों तरफ देखना, इन लक्षणोंसे उसकी बस्तीमें पीड़ा है और गुह्यस्थानमें पीड़ा है ऐसा जानना, हकीमने उसके कान,नाक, मुख, हांथ, पांव, संधि ये वारंवार देखना और चौकसी करना ।

बालकको लंघन-बालकको सर्व पदार्थ त्याग करानेसें आते हैं लेकिन् दूध पिलाना मना नहीं हो सकता, इसवास्ते उसकी माताको लंघन देना, जिससे उस बालकको लंघन होता है ।

सामान्य उपाय-जो ज्वरादिकपर बड़े आदमीको उपाय लिखा सो दवा बालकको देना चाहिये, लेकिन् कम देना, उसकी तबीयत देखके कम देना चाहिये लेकिन् इतनी चीजें मना हैंः-दाग देना,खार, उलटी, जुलाब, शिरावेध इन चीजोंका उपाय बालकको मना है।जरूर लगनेसे हलका जुलाब और उलटी देना ।

प्रमाण--पुरातन शास्त्रोंमें ऐसा लिखा है उत्पन्न होते ही बच्चाको दवा विडंग बराबर देना, पांच महीनाके बाद बढ़ाना।

अन्यमत--बालकको पहिला महीनामें एक गुञ्जा मान दवा शहद,दूध इनसे पतला करके देना, एक वर्षतक दर एक महीनामें एक एक ची गुञ्ज बढ़ाते जाना और बाद एक वर्षके एक एक मासा देना, दर एक बरसमें पांच पांच गुञ्जा बढ़ाना सोला बरसतक लेके सत्तर बरसतक एक माफिक दवा देना,बाद सत्तर वर्षके आगे पहिले चढ़ाई उसी माफिक घटाते जाना १।

बालकको मात्रा कषायआदिका प्रमाण।

सोलह वर्ष बाद चूर्ण, कल्क, अवलेह इनकी रीति कही है जैसा ही काढ़ेकी दवा इनसे चौगुनी मान लेना २।

जो बालक केवल दूध पीता है उसको दूध और घीसे दवा देना और माताको केवल दवा देना, उसको दूध घीसे मना है और दूध और अन्न खानेवाले बच्चेको दूध घीसे दवा देना ३। कुकण बालकको खुपऱ्या रोग बच्चाको दूधके दोषसे होता है, उसीसे बालकके नेत्र खुजाते हैं,पानी गीड़ बहता है, नेत्रमें खुपता है बच्चा कपाल, नेत्र, नाक मलता है, उससे धूपकी तरफ देखा नहीं जाता, नेत्र उघाड़ता नहीं। दवा--त्रिफला,लोध, पुनर्नवा, अदरख, रिंगणी, जंगली बैंगन इनको बांटके मध्यम गरम करके लेप देना, कुकण अच्छा होगा।

गर्भिणीके दूधका दोष।

गर्भिणीका दूध पीनेसे बच्चाको खांसी,अग्निमंद,उलटी,झांपड़,अरुचि, भ्रम ये रोग होते हैं और रोता है, पेट बड़ा होता है, चिलकता है। इस रोगको परिगर्भिक और परिभव कहते हैं। इसपर प्रदीप्त दवा देना, अग्नि दीप्त करना ४।

तालुकंटक,तालू पड़ना--तालुके मांसमें कफ दुष्ट विरुद्ध होके तालुकंटक नामका रोग पैदा होता है, उससे तालुमें खड्डा पड़ता है और तालवा नीचेको लटकता है इससे बच्चा स्तन पीता नहीं और पिया तो बड़े कष्टसे पीता है, पतला मल होता है, तृषा, नेत्र,गला,मुख ये दुखते हैं, गर्दनपर बे हुशियारी, पिया दूध उलटीमें गिर जाता है ५।

इसपर दवा--हर्ड़ा, बच, कुष्ट इनका कल्क करके उसमें शहद डालके औरतका दूध मिलाके पिलाना. इससे तालुकंटक रोग जाके बच्चाको आराम होगा ६ ।

महापद्मविसर्प धावरा--धावरा छोटे बच्चेको शिर और बस्तीमें धावरा होता है इसवास्ते बच्चा वचता नहीं। वह धावरा लालकमलके पत्तेके माफिक लाल रहता है। यह महापद्म रोग त्रिदोषज है. यह नेत्रके ऊपरसे लगाके छातीतक आता है और हृदयसे होके गुदातक जाता है ।

दूसरा भेद--क्षुद्ररोग-निदानमें अजगल्ली और अहिपूतना कहा है और ज्वरादि सर्वरोग मोटे आदमीको होते हैं ऐसा पूर्व कहा हैं ऐसे बालकको भी होते हैं ऐसा हकीमोंसे जानना ८ ।

बालग्रहपीड़ाके कारण--अहिपूतनादिबालग्रह मातापिताके अनाचारसे वच्चाको पीड़ा देता है. इसवास्ते बड़े यत्नोंसे बच्चोंका रक्षण करना चाहिये ९ ।

सामान्यदुष्टग्रहके लक्षण ।

स्कंदग्रहादिक नवग्रहोंसे जो बालक पीड़ा पाता है उससे एकाएक उचकके उठना, डरना, रोना और माताको नखोंसे झूरना, काटना, दृष्टि खींचना, ऊपर देखना, दांत खाना, चिलकारी मारना, जंभाई लेना, भौंह फिराना, कांपना, दांत, ओठ खाना, बारबार मुखसे फेना उगलना, कृश होना, रात्रिको न सोना, हांथ पांवमें सूजन, मल पतला होना, कंठका आवाज बदलना, चिल्लाना, वक्तके माफिक दुर्गंध आना, दूध न पीना ये लक्षण सामान्य ग्रहके हैं ।

स्कंदग्रहसे पीड़ित-- बच्चाके एक नेत्रसे पानी आता है. एक तरफसे नेत्र फड़कना, थरथर कांपना, आधे नेत्रसे देखना, मुख टेढ़ा होना, रक्तकीसी दुर्गंध आना, दांत खाता है, शरीर गलता है, दूध पीता नहीं, थोड़ा रोता है ये लक्षण स्कंदग्रहोंके हैं १।

स्कंदग्रहपर दवा-- सोमवल्ली, सफेद कूड़ा, रिंगणी, बेलफल, शमी, कवंडली इनके जड़ोंकी माला करके गलेमें डालना जिससे फायदा होगा २। ग्रहपीड़ित बच्चाको वातनाशक वृक्षोंसे पत्तोंके काढ़ासे स्नान

करना. इससे फायदा होगा ३ । देवदारु, रास्ना और मधुरगण इसमें मधुर घी डालके सिद्ध करना वह घी पीनेको देना. फायदा होता है ४ ।

सर्षपादि धूप-सरसों, सांपकी केंचुलि,बच, सफेद गुंजा, ऊँट,बकरी, मेंढ़ी, गाई इनके केश इन सबकी धूनी देना. इससे सब ग्रह शांत होगा ५ । कवंडलकी मूलीकी माला करके गलेमें बांधना. ग्रह शांत होगा ६ ।

कुक्कुटादि धूप-मुर्गेके दोनों बाजूकी पर और पूंछ और गाईका घी इनका धुवां जन्म दिनसे सात दिनतक नित्य देना. इससे उसको जन्म भरमें कोई ग्रहकी पीड़ा न होके आरोग्य रहेगा ७ ।

स्कंदअपस्मारके लक्षण--बालक बेशुध होके फेनसे युक्त उलटी करता है,सावधान होकर रोता है,उसके शरीरकी दुर्गंध रक्त और पीपके माफिक आती है, उसे स्कंद-अपस्मार समझना ८ ।

स्कंद-अपस्मारपर दवा--बिल्वादि स्नान करानेसे स्कंदापस्मार शांत होता है. बेल, सिरस वृक्ष, सफेद दूब, तुलसी इस गणसे उबटना और स्नान कराना. स्कंद--अपस्मार शांत होता है ९ ।

सुरसागण-निर्गुंडी, सफेद निर्गुंडी, पाडर,अजपांगला, रोहिसा,जल, तृण, राई,सफेद तुलसी,जायफल,जंगली तुलसी, कांसुदा,सालवीका वृक्ष, बायबिडंग, निर्गुंडी, पांगरा, गूलर चिकना; कावीला, कुचला इनको सुरसादिगण कहते हैं। इससे कफ,कृमि इनका नाश होता है. इस गणसे तेल सिद्ध करके अभ्यंग करना. स्कंदादि ग्रह शांत होता है १०।

स्कंद-अपस्मार परकाकोल्यादिगण--काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, गिलोय,रानमूँग, रानउड़द, पद्म-काष्ठ, बंशलोचन,काकड़ाशिंगी, पुण्डरीक वृक्ष, जीवंती, जेठीमध, द्राक्षा इनको काकोल्यादि गण कहते हैं. इससे दूध बढ़ता है, वृष्य है और रक्त-पित्तनाशक है १० ।

बचादि धूप--बच, हींग गीदड़, घुग्घू इनकी विष्टा, केश, हाड़, नख, घी, बैलके केश इनका धूप देना. इससे सर्वग्रह निवारण होते हैं ११ । धमासा, सांवरी, तोंडली, करेली इनको धारण करना १२ ।

शकुनिग्रहके लक्षण ।

शकुनि ग्रहकी बाधा हो तो बालकका अंग गलना, डरके क्षण क्षणमें

उचकके उठना, पक्षीके वदनके माफिक दुर्गंध आना, लस पीप अनेक जातिके वर्णसे युक्त फोड़े आना, पकना, दाह होना, ये होते हैं १३।

शकुनिग्रहपर उपाय।

स्कंदग्रहपर जो इलाज लिखा है वह घी और धूप देना. उससे शकुनिग्रहका समाधान होगा१४।शतावर,कस्तूरी, काकड़ी,कमंडल, रिंगणी, लक्ष्मणा, सहदेवी, डोरली इनको धारण करना१५। शकुनिग्रहकी पीड़ाके बालकको वेतस, आंवा, कवीथ इनके काढ़ासे सिंचन करना १६।

ह्रीबेरादि लेप-खश,जेष्टीमद, काला खश, सुरुनीले कमल, पद्मकाष्ठ, लोध, गहूला, मंजिष्ट,गेरू इनको पीसके बालकके बदनपर लेप करना१७।

रेवतीग्रहके लक्षण।

वदनमें व्रण-फोडोंसे व्याप्त होता है.उनमेंसे रक्त निकलता है१८।रेवतीग्रहमें स्नान-असगन्ध, मेढाशिंगी, उपलसरी, पुनर्नवा, देवडांगर, भुईकोहला इनका सिंचन करना. रेवतीग्रह शांत होगा १९।

कुष्टादितेल-कुष्ट, राल, गूगल, जटामांसी, करंज, कलंब इनमें तेल सिद्ध करके अभ्यंग करना २०। धावड़ादि घी-धावड़ा, रालका वृक्ष, अर्जुनसादडा, सलाई, धेंडसी, काकोल्यादि गण इनमें घी सिद्ध करना और बालकको पिलाना २१। कुलथी,शंख इनका चूर्ण बदनमें लगाके सामको और फजिरके वक्त गीदड़ घुग्घूकी विष्टाका धुवाँ देना. सर्व ग्रहपीडा शांत होगी २२।

पूतनाग्रहके लक्षण।

दस्त, तृषा, ज्वर, टेढ़ी दृष्टि होना-देखना, रोना, नींद न आना, व्याकुल, ग्लानि ये होते हैं २३।

पूतनाग्रहपर उपाय।

ब्रह्मदंडी, बायवर्णा, नींब, सफेद उपलसरी इनके काढ़ासे परिसेचन करना २४। ताजीअर्कपुष्पी, सफेद दोब, हरताल, मनशिल, कुष्ठ, राल इनके कल्कमें तेल सिद्ध करके शरीरमें लगाना २५। वंशलोचनके कल्कमें घी सिद्ध करके शहदसे देना जिससे पूतनाग्रह शांत होगा २६। कुष्ठादि

धूप-कुष्ठ, तालीशपत्र, खैरकी छाल, चंदन, टेंभुर्णी, देवदारु, वच, हींग, कुष्ठ, धाराकलंब, इलायची, रेणुकबीज इनका धूप देना २७।

अंधपूतनाग्रहके लक्षण।

उलटी, खांसी, ज्वर, तृषा ये होके बदनमें चरबीकी गंध आती है और रोना बहुत, दूध न पीना. जुलाब देना. इसपर इलाज-कडू दरखतोंके पत्तोंके काढ़ासे स्नान कराना २८।

पंचतिक्तगण-बेल, कडूपटोल, रिंगणी, गिलोय, अडूसा इनको पंचतिक्तगण कहते हैं.यह विसर्प,कुष्ठ आदि बच्चोंके रोगका नाश करता है२९। पुरीषादि धूप-मुरगाकी विष्ठा, केश, सांपकी केंचुलि, पुराना कपड़ा इनका धूप देना ३०।

सर्वगंध-केशर, कृष्णागर, कपूर, कस्तूरी, चंदन इनको सर्वगंध कहते हैं, उत्तम सुगंध है ३१।

शीतपूतनाग्रहके लक्षण।

इसमें बच्चा कांपता है, खांसी, क्षीण रहना, नेत्रविकार, अंगमें दुर्गंध उलटी, दस्त ये होते हैं ३२।

रोहिण्यादि घी-कुटकी, नींब, खैर, पलास, अर्जुन इनके काढ़ामें दूध घी डालके घी सिद्ध करना वे देना ३३।

शीतपूतनाग्रहपर धूप-गीदड़, घुघ्घूकी विष्ठा, वनतुलसी, सांपकी केंचुलि, नीमके पत्ते इनका धूप देना. शीतपूतनाग्रह शांत होगा।

मुखमंडिकाग्रहके लक्षण।

बालकके मुखको थोड़ी सूजन,कांति सुंदर होना, शरीर खरदरा,बदनमें मूत्रकी गंध आना, खानेको ज्यादा ये लक्षण होते हैं।

मुखमंडिकाग्रहपर उपाय।

कैथ, वल, पवांड, अडूसा, सफेद एरंड, पाडल इनका काढ़ा करके बालकको परिसिंचन करना ३४।

शृंगादि तेल-भांगराका स्वरस, असगन्ध, बच और तेल ये सिद्ध

करके बालकके वदनमें लगाना. इससे मुखमंडिका ग्रह शांत होगा ३५। बच, राल, कुष्ठ, घी इनका धूप देना ३६।

नैगमेयग्रहके लक्षण।

इससे उबकाई, कंप, गला, मुख सूखना, मूर्छा, दुर्गंधि, ऊपर देखके दांत खाना इन लक्षणोंसे युक्त होता है।

नैगमेयग्रहपर उपाय।

बेल, चकवँड़, करंज इनसे परिसेचन करना ३७। गेहू, सरल, देवदारु, धमासा, सौंफ, टेंटू, गोमूत्र, दही, छाछकी निवली, कांजी इनमें तेल सिद्ध करके लगाना, शांत होगा ३८।

वचादिधारण–बच, आंवला, जटामांसी, सफेद दूर्वा इनको धारण करना. और स्कंदग्रह तथा अपस्मार पर जो इलाज लिखा है सो सब करना ३९। बंदर, घुघ्घू, गीदड इनके बालोंका सूखा धुवाँ देना ४०।

उत्फुल्लिकाके लक्षण।

इसमें पेट फूलना, दमा, सूजनसे युक्त ऐसा बालककी सीधी कोखमें रोग पैदा होता है ४१।

उत्फुल्लिकापर उपाय।

उत्फुल्लिका रोगको जोंक लगाके रक्त निकालना और करटोली, सोंठ, मोथा, कंकोल, अतिविष इनका चूर्ण दूधसे बालककी माताको पिलाना. इससे दूधदोषका निवारण होगा, सेक देना ४२।

दंभबिल्वादिकाढ़ा–पेट सेकना, पीठपर गोल सलाईका दाग देना ४३। बेलकासूल, मोथा, पाठामूल, त्रिफला, रिंगणी, जंगली बैंगन इनके काढ़ेमें गुड़ डालके बालकको पिलाना. इससे उत्फुल्लिका रोग शांत होता है ४४।

पिप्पल्यादि पान–पिपली, पीपलमूल, सोंठ, त्रायमाण, दारुहलदी, हरडा, गजपिपली, भारंगमूल, लवंग, टांकणखार, गवारपाठा, बालहरड़ा, सेंधवलोन इनको बकरीके मूत्रमें घिसके बड़ीफजर पिलाना. इससे उत्फुल्ली जायगा ४५।

सर्पचर्मधूप–सांपकी केंचुलि, लहसन, मिरवेल, सिरस, नीमके पान,

बिल्लीकी विष्ठा, ऊन, मेढाशिंगी, बच, शहद इसका धुवाँ देनेसे बालकका ज्वर और ग्रह शांत होता है ४६।

अष्टगंध घी–बच, कुष्ठ, ब्राह्मी, राई, उपलसरी, सेंधवलोन, पिपली इनके कल्कमें घी सिद्ध करना. बालकको पिलाना. इससे दृढ़ बुद्धि जल्द बुद्धी ऐसा होके उसे पिशाच, राक्षस, भूत, प्रेत, माता इनकी पीड़ा कभी न होगी और ग्रहशांतिको बलिदान होम इष्ट ये कर्म करना ४७।

बालज्वरांकुश–शुद्धपारदभस्म, अभ्रकभस्म, वंगभस्म, रौप्यभस्म इनको समभाग और ताम्रभस्म, तीखे भस्म इनका दो भाग, त्रिकटु, बहेड़ा, हीराकसभस्म इनका एक भाग एकत्र करके नागर बेलके रसकी बारबार भावना देना. पीछे एक एक गुंजा गर्भिणी और बालकको देना. ग्रह सर्व रोग, ज्वर इनका नाश करता है ४८। मुलहटी, वंशलोचन, लाही, रसांजन इनका लेप देनेसे सर्व ज्वर शांत होता है ४९। सालवण, गोखरू, सोंठ, खस, रिंगणी, डोरली, चिरायता इनका काढ़ा बालकको और उसकी माताको देना. यह वातज्वर शांत करके अग्नि प्रदीप्त करेगा ५०।

पित्तज्वरपर–उपलसरी, नीला कमल, शिवण, गरुड़वेल, पद्मकाष्ठ, पित्तपापड़ा इनका काढ़ा देना. इससे पित्तज्वर शांत होगा ५१। मोथा, पित्तपापड़ा, खस, काला खस, पद्मकाष्ठ इनका काढ़ा ठंढा करके देना. इससे दाह, उलटी, ज्वर यह शांत होता है ५२।

त्र्याहिकज्वरपर–गुडूच्यादि काढ़ा–गिलोय, चंदन, खस, धनियां, सोंठ इनके काढ़ामें शहद, शक्कर डालके देना. इससे तृतीयक ज्वर नाश होगा ५३।

पलंकषादि धूप–गूगल, बच, कुष्ठ, हाथीकी चमड़ी, बकरीकी चमड़ी, नीमका पत्ता, शहद, घी इनका धुवाँ देनेसे बालकका ज्वर जाता है ५४। मोरवेल, हलदी, शिरस, चिरायता, सफेद उपलसरी, मोथा, अजवाइन इनको बकरीके दूधसे पीसके उसका उबटन करना. इससे बालकका ज्वर शांत होगा ५५। भद्रमोथा, हर्डा, नींब, पटोल, मुलहटी इनका मंद उष्ण काढ़ा देनेसे बालकका ज्वर शांत होता है ५६। बालक पैदा होते वक्त बहुत देरतक स्तन नहीं पीवे तो जीभको सेंधवलोन, शहद, घी, हरडा इनके कल्कसे घिसना. दूध पीवेगा ५७।

अपामार्गबंधन—कुमारीके हाथसे काते सूतसे अपामार्गकी मूली चोटीमें बांधना. एकाहिक ज्वर जायगा ५८। मोथा, पित्तपापड़ा, गरुड़वेल, चिरायता, सोंठ इनका काढ़ा वातपित्तज्वरका नाश करता है ५९। खस, मुलहटी, दाख, शिवन, नीला कमल, फालसा, मुलहटी, नागबला इनका काढ़ा ठंडा करके देना. इससे बड़बड़, मूर्छा, मोह, तृषा, पित्त-ज्वर, वातपित्त ज्वर इनका नाश करता है ६०। और जो दवा मोटे आदमीको देते हैं सो ही बालकको देना, लेकिन तबीयत देखके कम ज्यादा देना. इससे हित होता है ६१। ज्वरचिकित्सा पर जो दवा अष्ट ज्वरों पर लिखी है उन दवाइयोंका उपयोग बालरोग ज्वरोंको करना ६२। और अतिसार संग्रहणी आदि रोगोंका निदान देखके बालकोंका इलाज करना चाहिये ६३। अजवाइन, जीरा, मिर्च, पिपली, इंद्रजव, सोंठ इनका चूर्ण करके शहदमें देना. इससे बालककी संग्रहणी जायगी ६४। पिपली, भांग, सोंठ इनका चूर्ण शहदसे देना. संग्रहणी जायगी ६५। पिपली, सोंठ, बेल, मोथा, अजवाइन इनका चूर्ण शहदसे देना और शहद घीसे देना संग्रहणी जायगी ६६। गूलरकी छाल स्त्रीके दूधसे देना. भस्मक रोग जायगा और भस्मक रोगपर लिखी दवाइयां देना. फायदा है ६७। सब बालकोंके रोग पर पूर्वोक्त रोगोंका इलाज करके वही पथ्य अपथ्य देखकर देना चाहिये और जो बच्चा अन्न खाता है उसको दवा देना और जो अन्न और दूध पीता है उसको दवा कम देना. धूप, बलिदान, जंत्र, मंत्र, मूलीबंधन, दृष्टि काढ़ना, पुण्यदान ये करना और जो बालक अन्न नहीं खाता है उसको माताको दवा देना चाहिये. इससे दूध शुद्ध होके बालकका रोगनाश होके आरोग्य होगा. इस माफिक पथ्यसे रहनेवालीका बच्चा कभी मांदा न होगा.

इति स्तनरोगनिदान और चिकित्सा समाप्त।

अथ विषका निदान।

विष दो जातिके हैं. एक स्थावर और दूसरा जंगम है. जो मूलादिक है सो स्थावर है और सर्पादिक है सो जंगम है, विषादिको पैदा करता है इस वास्ते विष कहते हैं १। मूलादिक विष दश प्रकारका है और सर्पादिक विष सोलह प्रकारका है ऐसा सुश्रुतमें कहा है १ मूल २ पत्ते ३ फल ४

फूल ५ छाल ६ चिक (दूध) ७ नार ८ गुंद ९ धातु १० कंद इस माफिक दश जातिके समझना चाहिये और दृष्टि १ श्वासा २ दांतमें ३ नखोंमें ४ मूत्रमें ५ पुरीषमें ६ शुक्रमें ७ लारमें ८ केशमें ९ चिमटा १० विषाक्त पाद=गुदासे हवा जाय सो ११ गुद १२ अस्थि १३ पित्त १४ शुक्र १५ शव १६ इस माफिक सोलह विष हैं ।

जंगम विषका सामान्य लक्षण ।

जंगम विषमें निद्रा, तंद्रा, क्लेश, दाह, बदहजमी, रोमांच, सूजन, दस्त ये लक्षण होते हैं ।

स्थावर विषका सामान्य लक्षण।

इसमें ज्वर हिचकी दांतोंमें सल सल पीड़ा, गला धरना, फेनकी उलटी, अरुचि, श्वास, दाह, मूर्छा ये लक्षण होते हैं १। राजा आदिक अमीर लोगोंको कोई दगाबाजीसे विष खिला देते हैं उसकी चोरी पकड़ना उस चोरका लक्षण ऐसा होता है २। प्रथम उस आदमीके तरफ निगाह करना उसका चेहरा फीका, अस्पष्ट बोलना, बचनका उत्तर जल्दी न देना. फिकर करके बोलना, उबकाई खाके बोलना, निरर्थक शब्द एकाएक हँसना, आलस देना, जमीनपर रेखा खिंचाना, डरके कंपना, अँगुलियां चटकाना, चोरदृष्टिसे दूसरेकी तरफ देखना, चेहरा उतरके काला पड़ना, नखसे तृण वगैरह तोड़ना, गरीबके माफिक एक जगहपर बैठना, शिरपरसे हाथ फिराना, बारबार इधर उधर फिरके एक जगह पर बैठना, उसका चित्त ठिकाने नहीं रहना ऐसे लक्षणोंसे तर्क करके चोरको पहचान लेना कि इसीने जहर खिलाया और लगाया है ॥

स्थावरविषके जातिभेद ।

मूलविषसे-हाथ पांवमें ऐंठन आना, रोगी बकता है, भूल पड़ती है, शूल होती है १ ।

पत्रविषसे-जंभाई, कंप, श्वास, शूल होता है २ ।

फलविषसे-सुख, सूजन, दाह, अन्नद्वेष यह लक्षण होता है ३ ।

फूलविषसे-उलटी, पांवको सूजन, श्वास यह होता है ४ ।

छाल-नार-गूँदसे-इनसे मुखदुर्गंध, वदन खरदरा, मस्तकशूल, मुखसे लार ये होते हैं ५।

क्षीरविषसे-मुखसे फेन आना, दस्त होना, जीभ जड़ होना ऐसे लक्षण होते हैं ६।

धातुविषसे-छाती दुखना, मूर्छा आना, तालुवाका दाह होना ऐसा होता है, ये विष सब कालांतरमें मारते हैं ७।

विषलिप्त शस्त्रके लगनेसे जो लक्षण होता है सो।

जिस आदमीकी जखम तुरत पकती है उसमेंसे रक्त बहता है और वह वारवार पकती है उसमेंसे काला, सड़ा और दुर्गंधयुक्त ऐसा मांस गिरता है और जिसको तृषा, मूर्छा, ज्वर, दाह हो तो उसको विषयुक्त शस्त्रका घाव लगा है ऐसा समझना और दुश्मन व्रणपर जो विष डालता है उसका लक्षण भी वैसा ही होता है ऐसा सब स्थावरविष जानना चाहिये।

जंगम विषका भेद-पहले सर्पविषके लक्षण।

सर्प स्वभावसे विषारी होता है। भोगी, मंडली, राजिल, ये सर्प वात पित्त कफ प्रकृति क्रमसे हैं और जिसमें दो २ स्वभाव निगाह आवें तो द्वंद्वज समझना।

भोगीके लक्षण।

भोगी इसको कहते हैं कि जिसका रंग काला होके उसको फण होता है सो. और राजिल उसको कहते हैं कि. जिसके बदनमें रंग चित्र विचित्र होके रेखा रेखा हों। मंडली दो २ रंगके मंडलसे युक्त होता है सो जानना १।

भोगीदंशके लक्षण।

काले सांपने दंश किया हो तो डंक काला होता है और सब वात करनेवाला उपद्रव करता है और मंडलीका दंश पीला होके सूजनयुक्त नरम और पित्तविकार करनेवाला होता है. राजिलका दंश चिकनासा और सफेद रंगका होता है, चकचकित रहता है। उसकी सूजन कठिन होती है, इसमेंसे गाढ़ा रक्त निकलता है और सब कफविकार रहता है।

देश और नक्षत्र युक्त जगहका भेद-पीपलके नीचे, देवालयमें, श्मशा-

नपर, उदईपर, संध्यासमय, चौहाटेपर, भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, मूल, कृत्तिका इन नक्षत्रोंमें और शिरादिक मर्मोंपर सर्प दंश करेगा तो आदमी बचेगा नहीं ।

उष्णताके जोरसे विषका वेग ज्यादा होनेके लक्षण ।

उष्णताके जोरसे सर्व विष दूने जोरसे काम करता है और सर्प तत्काल प्राणनाश करता है. और अजीर्णवाला, पित्तविकारवाला, धूपमें तपा, बालक, वृद्ध, भूखा, निर्बल, क्षयरोगी, परसेवाला, कुष्ठी, रूक्ष, निर्बल, गर्भिणी इनको सर्पदंश हुआ तो तत्काल प्राणनाश होता है. इसमें संशय नहीं ।

विषका असाध्य लक्षण ।

जिसपर विषने पूरा अमल किया है, जिसके शस्त्रसे काटनेमें रक्त न निकले, चाबुक मारनेसे बदनमें दाग न उठे और ठंडा पानी बदनपर छिड़कनेसे जिसके रोमांच न हो तो उसके जहरके उतारसे और दवा करनेसे कुछ फायदा न होगा. दूसरा ऐसा है कि जिसका मुख टेढ़ा हो और स्तब्ध हो, केश खींचेसे निकले, नाककी अनी टेढ़ी हो, गर्दन गिरी, सूजन आयी, दांत बेठे ऐसा आदमी न जीवेगा. और जिसकी डाढ़से और गुदासे रक्त बहता है और चार दांत लगे और मुख सब बंद हो उसे छोड़ना और उन्माद, अतिसार, ज्वर इन उपद्रवोंसे युक्त बोलनेको बेताकत काला पड़ा हुआ इस माफिक ज्वरका आदमी असाध्य होता है ।

दूषित विषके लक्षण ।

जो दूषित विष अल्प वीर्य हो सो मारक होनेका नहीं, वो कफसंबन्धी उष्णादिक गुणोंको कम होनेसे वर्षोंवर्ष गरल रूपसे रहता है. उस गरल विषसे पीड़ासे आदमीको दस्त होना, वर्ण बदलना, मुखको खराब दुर्गंध आना, बेचव, तृषा, मूर्च्छा, भ्रम आधा अक्षर बोलना, उलटी होना, उन्माद होके चैन न पड़ना ।

स्थानपर गये हुए विषका नियम ।

जो विष आमाशयतक जाय तो कफवातजन्य रोग पैदा करता है और

पक्काशयतक गया तो वात-पित्त-जन्य रोग पैंदा करता है और उस रोगीका बदन नेत्रकी भौंह और बदनके केश झड़के पंख निकाले पक्षीके माफिक दीखता है।

रसादिक धातुतक गये विषके लक्षण।

जिस धातुतक विष गया उस धातुको विकार करता है और ठंडी हवा, मलविध्वंस ऐसे कारणोंसे उसका जल्दी कोप होता है. उसका लक्षण ऐसा होता है:--उसको नींद, जडत्व, जँभाई,बदन शीतल होना, रोमांच, अंगमोड़ी ये पूर्व होके खानेके बाद हर्ष होना, अन्न न पचना, अरुचि, बदनपर चट्टे उठना, दाफड़ होना, मांसक्षय, हाथ पांवको सूजन, मूर्च्छा, उलटी, दस्त, श्वास, तृषा,ज्वर, उदररोग ये विकार होते हैं और एक आधेको उन्माद रोग होता है। दाह, नामर्दपना, गद्गदता होना, किसीके कोढ़, विसर्प, विस्फोट ऐसे अनेक प्रकारका रोग पैदा होता है. दूषी विषकी निरुक्ति-देश, काल, अन्न, दिनकी निद्रा इनसे बार बार दूषित हुआ विष धातुको दुष्ट करता है इससे दूषी कहते हैं, वह दूषी विष दो प्रकारका है।

कृत्रिम गरल संज्ञक।

छब्बीस विषसे कृति करके बना कृत्रिम है और निर्विष द्रव्यसे कियेको गरल कहते हैं। इ दोनों विषोंका भेद १। जो स्त्री वशीकरणके वास्ते पतिको पसीना,आर्तव, बदनका, मैल अन्य ठिकानेका मैल पुरुषको खिलाती है और शत्रु विष डालता है इससे आदमी सफेद पड़ना, कृश होना, अग्निमन्द, ज्वर, मर्मोंकी पीड़ा, सूजन, पेट फूलना, हाथोंको सूजन, उदररोग, संग्रहणी, क्षय, गुल्म ये होते हैं।

साध्यासाध्यविचार।

दूषी विष पेटमें गये पीछे तत्काल उपाय करके पथ्यसे रहनेवालेका साध्य है और एक वर्ष बीते बाद याप्य है और क्षीण होके अपथ्य करनेवालेका असाध्य है।

लूताविषके लक्षण।

विश्वामित्र राजा वसिष्ठकी कामधेनु बलसे छीनके ले जाने लगा उस

वक्त वसिष्ठको क्रोध हुआ उस वक्त ऋषिके ललाटसे पसीना टपकके नजदीककी काटी हुई घासपर पड़ा. उसकी लूताको लेके सोलह विष पैदा हुए हैं उसकी जाति ।

लूताका सामान्य लक्षण ।

उसके दंश करनेसे दंश ऊंडा सड़ना, उसमेंसे रक्त बहना; ज्वर, दाह, अतिसार, त्रिदोषज रोग, नाना तरहके फोड़े,बड़े बड़े दाफड़,नरम,लाल, हरी, नीली,चञ्चल ऐसी सूजन आदि लक्षण होता है।इस परसे सर्व लूताके सामान्य लक्षण जानना और जिस दंशमें बीचसे काला और हरा, नीला और जलेके माफिक ऊँचा उठा हुआ होके जल्दी पकने वाला होके उस-मेंसे सड़ा पीप बहता है, उससे ज्वर आता है, ये दूषित लूता है ।

प्राणहर लूता ।

सर्पके मल मूत्रसे और सर्प मरके सड़ता है. उस ठिकाने कीड़े होते हैं वे प्राण लेते हैं उस दंशसे सूजन आती है वह सफेद, काली, लाल, पीली होती है और उसको बार आके ज्वर, दाह, हिचकी लगना, मस्तकशूल होना ये दूषित प्राण हर लूता है ।

दूषी मूसाके विषके लक्षण ।

विषका मूसा डसनेसे उसके डंकमेंसे रक्त बहता है. वह सफेद होता है. शरीरपर चट्टेसे उठते हैं. ज्वर, अरुचि, रोमांच होना, दाह होना ।

प्राणहारक मूसाविषके लक्षण ।

प्राणहारक मूसा डसनेसे मूर्च्छा, मूसेके आकारकी सूजन, विवर्णता, क्लेद, बहिरापना, ज्वर, शिरको भारीपना, लाल रक्तकी उलटी होना ।

कृकलास दंशके लक्षण ।

करघाट डसनेसे शरीरके काला, हरा, नीला, और नाना रंग होते हैं । इससे भ्रांति अतिसार होता है. बिच्छूके दंशलक्षण-बिच्छू डसनेसे पहले अग्निका चटकासा लगता है पीछे ऊपर चढ़ता है, बाद डंकमें फुन फुन रहता है। बिच्छूके असाध्य लक्षण--हृदय, नाक, जीभ इस ठिकाने बिच्छू डसनेसे मांस सड़के अत्यन्त वेदना होके आदमी मरता है ।

कणभदंशके लक्षण।

विसर्प नामसे एक जातिका कीड़ा होता है. वह डसनेसे विसर्प, सूजन, शूल, ज्वर, उलटी ऐसे लक्षण होते हैं और डंक सड़ता है।

उच्चिटिंग (इंगली) विषके लक्षण।

इसके डसनेसे रोमांच आना, शिश्न ताटता है, बहुत वेदना होती है, सब बदन पर ठंडा पानी डालनेके माफिक होता है. इसको उष्ट धूम कहते हैं।

मंडूकविषके लक्षण।

विषारीमंडूक डसनेसे उसका एक दांत लगता है. उस ठिकाने पीली सूजन आती है, वह दूखती है. उससे तृषा, उलटी, निद्रा ये लक्षण होते हैं।

सविषमच्छदंशके लक्षण।

सविषमच्छ डसनेसे खाज, सूजन, ज्वर, मूर्छा ये लक्षण होते हैं।

सविषजलौकादंशके लक्षण।

इसके डसनेसे कंडू, सूजन, ज्वर, मूर्छा ये लक्षण होत हैं।

गृहगोधाविषके लक्षण।

विषोराके विषसे विदाह होना, सूजन आना, टोंचनी लगना, पसीना आना ये होते हैं।

गोमविषके लक्षण।

कनखजूरी डसनेसे उसपर पसीना आना, शूल होना, दाह होना।

मशकदंशके लक्षण।

मच्छर काटनेसे दाफड़ होना, खाज छूटना, आग होना और पर्वत के मच्छर डसनेसे--वे विषडास होते हैं. उनका दंश असाध्य है।

सविषमक्षिकादंशके लक्षण।

इसके काटनेसे उस ठिकाने काली फुड़ियां आती हैं. वे तत्क्षण बहने लगनी हैं. उस ठिकाने आग होती है. उससे मूर्छा ज्वर आता है. इस मक्खीमें स्थनविका नामकी मक्खी काटनेसे प्राणनाश होता है। चतुष्पाद पशु, बनमनुष्य, बन्दर, सिंह, व्याघ्र आदि जानवरका नख लगनेसे, दांत

लगनेसे उस विषसे सूजन आना, पकना, पीप बहना, सड़ना और ज्वर आता है ।

विष उतरगयेके लक्षण ।

जिस आदमीके वातादिक दोष निर्मल हैं रसादि धातु साफ हैं, जिसें अन्नपर इच्छा है, मल मूत्रादिक साफ होता है, शरीरका वर्ण, इंद्रिय, मन्का व्यापार जिसका शुद्ध है उस आदमीका विष उतर गया है ऐसा समझना ।

सर्वविषपर उतार ।

बांझकर्टोलीका कांदा पानीमें घिसके पिलाना और लेप देना. जिससे सर्प, मूसा, बिल्ली, बिच्छू आदि सर्व विषका नाश होता है १। सर्प डसा हो तो जल्दी मणि, मंत्र, दवा करना. जल्दी करना. सुस्तीका काम नहीं है २। चौलाईकी जड़ चावलोंके धोवनसे पीसके देना जिससे तक्षकके भी विषका नाश करेगा. दूसरा क्या चीज है ३। घी, शहद, माखन, पिपली, अदरख, मिर्च, सेंधवलोन इनको समभाग लेके चूर्ण करके देना, इससे तक्षकका विष उतरेगा ४। प्रत्यंगिरायोग-चावलके धोवनमें प्रत्यंगिरेकी मूली पीसके शुभ नक्षत्र और योगपर देना. इससे जन्ममें सर्पके दंशका डर नहीं रहेगा ५। सांप गुस्सेसे कभी काटे तो उस ठिकाने वह सांप मरेगा ६। शिरसपुष्पयोग-शिरसके दरख्तके फूलके रसमें मिर्चको सात भावना देना और उस मिर्चका अंजन करना ७। और मिलाना जिससे सर्पका विष उतरेगा ८।

तत्क्षण उपाय-सांप उतारनेके वक्त सामान्य उपाय करना और डंक है उस जगहपर चार अंगुलपर खूब मजबूत बांधना और सिद्ध पुरुषके मुखसे मंत्रसे कीलन करना. इससे विष बढ़ेगा नहीं ९।

नक्तमालांजन-करंजीका फल, त्रिकटु, बेलफल, हलदी, दारुहलदी, तुंबरुका फूल, बकरीका मूत्र इनका अंजन देनेसे सर्पका विष उतरता है १०।

कार्कोटादि नस्य-बांझकर्टोलीकी मूलीको बकरीके मूत्रकी भावना देना, बाद कांजीमें घिसके नास देना जिससे सर्व विष उतरेगा ११।

लांगल्यादियोग-कललावीका कंद पानीमें पीसके नास देना. विष

उतरेगा १२। टांकणखार पानीमें डालके पिलाना १३ । आकड़ेकी जड़ पानीमें घिसके पिलाना १४ ।

सर्वविषपर धूप--कपोतपक्षीकी विष्ठा, आदमीके केश, गायके शींग, मोरकी परोंका अग्रभाग, सत्तू, धनिये, तूस, कपाशिया, शिल्या माला इनका धूप घरमें करना. इससे सर्प और व्रण इनका नाश होता है और इनके वाससे सर्प दूर भाग जाता है १५। रीठाका अंजन करनेसे और पिलानेसे सर्पका विष त्वरित उतरता है १६ ।

कालवज्रसन्निभरस--शुद्धपारा, गंधक, लीलाथूथा, टांकणखार, हलदी ये चीजें समभाग लेके देवदांडगरीके रसमें एक दिन खरल करना. वह देना. जिससे सर्व विषोंका नाश करेगा १७। नरका मूत्र पीनेसे कालने डंक किया तो भी बचेगा १८। रजनी, सेंधवलोन, शहद, घी,एकत्र करके देना. इससे मूल विषका नाश होगा १९। सुवर्णमाक्षिक और सोनाका भस्म शक्करसे देना. इससे अनेक प्रकारका विष, संयोगी विष उतरेगा २०। पुत्रजिह्वाका नार चार मासा गायके दूधमें पीसके देना. जिससे नाना तरहके संयोगी विषका नाश होता है २१। घेरोसा, चौलाईकी मूलियां इनको समभाग लेके पानीमें पीसके उसके चौपट घी डालके चौपट दूध डालके घी सिद्ध करना. वह पीनेको देना. जिससे सर्व कृत्रिम विषका नाश होता है २२। पारवांका मांस, कचूरा, पोहकरमूल इनका काढ़ा ठंडा होने बाद देना. जिससे तृषा, ठनका, विष, खांसी, दमा, ज्वर, नाश होता है २३। जितना विष पेटमें गया हो उतना टांकणखार देना. जिससे विष उतरेगा. घीसे पिलाना २४। दूषित विषकी पीड़ावालेको स्नेह पिलाके वमन देना. बाद जुलाब देना. जिससे फायदा होगा २५। पिपली, धनियाँ, जटामांसी, लोध, इलायची, सज्जीखार, मिर्च, खस, सोना, गेरू ये सर्व दवाइयां विषनाशक हैं २६।

लूताविषका उपाय--हलदी, दारुहलदी, मंजिष्ठ, पतंग, नागकेशर इनको ठंडे पानीसे पीसके लेप देना जिससे तत्काल लूताविषका नाश होता है २७। काली और सफेद गोकर्णी, गूंदा,पाठामूल, लाल और सफेद साठा, कवथ, शिरसका बीज इनको पीसके लेप देना. जिससे लूताविष

नाश होता है। २८। सफेद कन्हेर, अर्जुन, शिरस गूंद, क्षीरवृक्षकी छाल इनका काढ़ा और चूर्ण कल्क करके देना. जिससे कीड़ा और लूताविषका नाश होता है २९। बच, हींग, विडंग, सेंधवलोन, गजपिपली, पाठामूल, अतिविष, त्रिकटु इनका काढ़ा देनेसे सर्व जातिके कीटविषका नाश होता है ३०।

वरटी विषका उपाय-मिर्च, सोंठ, सेंधवलोन, संचल इनका लेप देना. नागबेलके पानोंके रसमें लेप देना. जिससे सर्व वरटीविषका नाश होता है ३१।

आखुविषका उपाय-अगारधूमादिलेप-घेरोसा, मंजिष्ठ, हलदी, सेंधवलोन इनको पीसके लेप देना. इससे मूसा विषका नाश होता है ३२। सफेद घी या तुरईका लेप देनेसे मूसा विषका नाश होता है ३३। सांपकी केंचुलका धुवाँ तीन दिन देनेसे मूसा विषका नाश होता है ३४। चित्रककी मूलीका चूर्ण तेलमें पचाके मस्तकके बाल काढ़के उस पर फांसण्या देके उस पर उस तेलकी मालिश करना. इससे चूहेका विष उतरेगा ३५। अम्ली ४ तोला, घेरोसा २ तोला, पुराने घीमें खरलके सात दिन खानेको देना. इससे उंदरका विष उतरेगा ३६। शुद्ध पारा, गंधक, कपूर, घेरोसा, शिरस इनको आकड़ेके दूधमें घोटके लेप देना. इससे सर्व विषका नाश होता है और उंदरके विषका नाश होता है ३७। मनशिल, हरताल, कुष्ठ, कुलिंजन इनको निर्गुंडीके रसमें घोटके देना. चूहेका तीव्र विष उतरेगा ३८।

नख और दांत विषपर उपाय।

नीम, शमी, वड़की जटा इनका कल्क गरम पानीमें डालके जखमको बार-बार धोना. इससे नख, दांतका सर्व विष उतरेगा ३९। सर्वके मल मूत्र जो उकरडा आदिक जगहपर पड़ा उसके सड़नेसे बिच्छू, इंगली आदिक प्राणी पैदा होता है. उसके विषपर कपाशीका पत्ता और राईको पीसके लेप देना. इससे किरघाट व बिच्छूका विष उतरेगा ४०। मनशिल, कोष्ठ, करंजका बीज, शिरसके बीज, शिवणीके बीज इनको समभाग पीसके उसकी गोली करके रखना. गोली लगानेसे और मुखमें रखनेसे बिच्छू उतरेगा ४१। बिजोराकी जड़, आदितवारके दिन खड़ा रहके (ह्रीं) मंत्रका जप करके निकाल लेना और बाँयीं तरफ दंश हो तो सीधी बाजूसे और सीधी बाजू डसे तो उत्तर बाजूकी मूली

लेके सात वक्त उसपर फिरावे तो बिच्छू उतरेगा ४२। श्वेतपुनर्नवा और कपाशीका मूल रविवारके दिन काढ़के ऊपरसे फिरावे तो तत्क्षण बिच्छू उतरेगा ४३।

हंसपादीकी मूली–आदितवारको प्रातःकाल निकालके लाना, मुखमें पकड़ना और कानमें फूंकना जिससे बिच्छू उतरेगा ४४। जमालगोटाका लेप देना. विच्छू उतरेगा ४५। नवसादर और हरताल पानीमें घिसके लेप देना. तत्काल बिच्छू उतरेगा ४६। आकड़ेके पत्ते, नोन, निंबूका रस इनको बांटके दंशपर लेप देना, जरा सेंकना, डंकमेंसे बिच्छू निकल जायगा ४७। शिरसके वीज निवडुंगके चीकमें पीसके लेप देना. इससे मंडूकका विष उतरेगा ४८। मोरकेपंखकी धूनी देनेसे मच्छविष उतरेगा ४९। जलत्वाईके लेप करनेसे कानखजूरेका नाश होगा ५०। काकड़ा भिगोके चेताके जो टपकनेसे तेल निकलता है वह लगानेसे गोसका विष उतरेगा ५१। सोंठ, पारवेकी विष्ठा, हरताल, सेंधवलोन इन का लेप बिजोराके रसमें घोटके देना, भँवरीका विष उतरेगा ५२। चूना लगानेसे भँवरी, शहदकी मक्खी, गांधीन इनका आदि सबका कीड़ा याने मुगला इनका विष उतरेगा ५३ रीठा, लघु रालका वृक्ष, गोभी, हंसपादी, हलदी, दारुहलदी, गेरू इनका लेप देनेसे मखीयाशहद आदिक गांधीन सबकी सूजन उतरेगा ५४ उदइकी मट्टी त्रिफला इनका लेप गोमूत्रसे करे तो चोटियां शहदकी मक्खियां बंदर इनीके दंशको लगाना उतरेगा ५५ कडू तुरईके काढ़ामें शहद और घी डालके देना और कड़वा तुम्बाकी जड़ अगर पत्ते पानीसे पीसके पिलाना जिससे उलटी होके सब जातिका विष उतरके शुद्ध होवेगा ५६ सर्व जातिके विष गरम है इस वास्ते उसपर ठंडे पानीका लेप करना और अभिषेक धरना कपड़ा भिजाके ऊपर रखना ५७ विषमें उष्णता और तीक्ष्णता है इस वास्ते पित्तका कोप करता है इसवास्ते पहिली उलटी देके पीछे ठंडापानी बदनपर छिड़कना. शहद घीसे दवा देना. खटाईसे भोजन देना. मिर्च चाबनेको देना और विषमें जो दोषका प्रकोप होवे सो देखके उसको सम करे ऐसी दवा देना और पथ्य करना ५८

गरलनाशन रस–शुद्धपारा, सुवर्णभस्म, सुवर्णमाक्षिकभस्म तीनोंको समभाग इनके समभाग गंधक लेके गवारपाठेके रसमें घोटना सूखनेके

बाद एकमासा शहद और शकरसे देना. इसपर चित्रकको दूधमें ओटाके वह दूध पिलाना इससे सर्व विष नाश होता है ५९। शिरस वृक्षका पांचों अंग गोमूत्रसे पीसके लेप देना ६० ।

श्वानविषके लक्षण ।

कुत्तेका कफादि दोष कोपके ज्ञान वाहिनी शिरा दुष्ट होके ज्ञान नष्ट करती है और धातुक्षोभ करके मुखसे लार बहती है, अंधा बहरा होके जिधर उधर भगता है; उसका पुच्छ, हनुवटी, गर्दन ये ग्लानि होती है शिर दुखना, मुख नीचा होना ये लक्षण दिवाने कुत्तेमें होते हैं उसके डंकके लक्षण वह कुत्ता काटनेसे मुखको मेहेरी होना उसमेंसे काला रक्त निकलना उस योगसे छातीमें, शिरमें पीड़ा, ज्वर, शरीर कडा होना. तृषा, मूर्च्छा ये होते हैं ।

दूसरे श्वानविषके लक्षण ।

इससे बुद्धिमें भ्रम होना, संताप, श्वास, खांसी, नेत्रको पीलापना, मल मूत्रमें कीड़े पड़ना, उन्माद, कुत्तेके माफिक भूकना, दूसरेको काटना यह लक्षण होता है इसका ऋतु बदलनेमें वर्षाऋतुके प्रारंभमें प्रकोप होता है। यह असाध्य है। ये विष कालांतरमें शांता होता है और वर्षा ऋतुमें गँदला पानी पीनीसे मेघकी गर्जना सुननेसे फिर कोप होता है, अन्य पशु आदिक ऊपर लिखे मुजब, दंशप्रहार करनेवाला सर्प, शृगाल, खेचर, रीछ, चीता, बाघ, लांडगा आदिक पशु बिगड़के दंश करते हैं, उनका लक्षण कुत्तेके माफिक होता है ।

विष और निर्विषके लक्षण ।

खाज, टोचणी, रंग बदलना, मेहरीलस, ज्वर, श्रम, दाह, लाली, ठनक, पकना, शूल, सूजन, गांठें, डंकपर घाव पड़ना, फोड़ी आना. कर्णकमंडल उठना. इन लक्षणोंसे युक्त है सो विषारी पशुका डंक समझना और इन लक्षणोंसे विपरीत गुण है सो निर्विष प्राणी जानना चाहिये ।

असाध्य विषका लक्षण ।

कांचमें पानीमें आकाशमें उस पशुके रूप दृष्टि पड़ें तो वह असाध्य है

और जो आदमी पानीका शब्द स्पर्श देखनेसे घबराता है उसको जल-संत्रास नाम कहते हैं। यह भी असाध्य है ।

श्वानादिक विषोंपर उपाय।

काले गूलरकी जड़ और धतूराका फल इनके चावलके धोवनसे पीसके देना जिसके कुत्तेका विष नाश होगा १।

कारस्कर योग-काजराके बीज रोज वृद्धिसे खाना. जिससे निश्चय करके श्वानविष नाश होता है २।

अपामार्ग योग-आंधा झाड़ाकी जड़ एक तोला कूटके शहदसे देना३।गवारपाठाके पत्तापर सेंधवलोन डालके डंकपर बांधना,तीन दिनमें कुत्तेका विष उतरेगा ४। बंबूलके पानोंके रसमें गायका घी और कस्तूरी डालके देना. इससे कुत्तेका विष नाश होगा ५।शतावरकी जडोंका रस, गायका दूध एकत्र करके पिलाना. जिससे कुत्तेका विष नाश होता है ६। गुड़, तेल,आकड़ेका दूध इनको पीसके लेप देना जिससे कुत्तेका विष उतरेगा ७। तिलका तेल, तिलकूट, गुड़, आकका दूध इनको समभाग करके पिलाना. इससे कुत्तेका विष नाश होगा और कृमि पेटमेंसे गिर जायँगे ८। आकके दूधमें तांबा घिसके डंकपर लेप देना ऊपरसे तांबा बांधना जिससे कुत्तादिक विषोंका नाश होता है ९।और कुत्तादिक विषोंपर जुलाब ऋतु ऋतु पर लेना और पथ्य ऊपरके विषोंपर लिखे मुजब करना और विषनाशक उपाय पीसोल्या.(दूधी) की जड़ पीसके देना. इससे विष नाश होता है और कुत्ताके विषका उपाय व्याघ्रादिक विषोंपर करना चाहिये।

विषपर पथ्य।

सांठी चावल,राल, मूंग, मटर,तेल,घी ये चीजें भोजनके अंतमें देना नहीं और बैंगन,चूका, आवला, जीवकशाक, चौलाई, लहसन, अनार, सेंधवलोन ये चीजें पथ्यकारक हैं और स्थावर विषोंको उलटी देना बहुत हितकारक है ६१।

विषपर अपथ्य।

विरुद्ध अन्न, भोजनपर भोजन, क्रोध, क्षुधा, भय, उपास, मैथुन, दिनकी निद्रा इन चीजोंको विषरोगीको वर्ज्य करना चाहिये।

अथ स्नायुरोग (नाहरू) रोगका निदान।

लक्षण--हाथपांवादिकमें वातादि दोष बिगड़नेसे और देश देशका पानी पीनेसे नाहरू होता है, उसमें दो जाति हैं १ अंधा नारू-छाला आके पित्त उठना, उलटी होना, ज्वर आना पीछे उसमेंसे सूतके धागाके माफिक तार निकलता है, वह कृमि है, वह सफेद रंगका होता है, वह जखमके अंदरसे आस्ते आस्ते बाहर निकलता है. वह टूटनेसे ज्यादा कोप करता है और हर जगहपर होता है. सूजता है और बाहर निकलनेसे सुख होता है। इस रोगको संस्कृतमें स्नायु, प्राकृतमें नाहरू और वाला कहते हैं. इस रोगमें विसर्प रोगका इलाज करना. यह नाहरू हाथ पांवके झटकासे टूटा तो अंग जकड़ता है, टेढा करता है।

दोषभेदके लक्षण।

वातका नाहरू काला और रूक्ष होता है, ठनका लगता है. पित्तका नाहरू नीला पीला होके दाहयुक्त होता है १।

कफसे जड़ मोटा ऐसा होता है और द्वंद्वसे दो २ लक्षण जानना, रक्तसे रक्तवर्ण होता है. उसमें दाह होता है. त्रिदोषसे सर्व लक्षण वाला होता है. इस माफिक नाहरू आठ प्रकारका होता है ऐसा मुनियोंका वचन है २।

स्नायुरोगपर उपाय।

जिस दोषका नाहरू है उस दोषको देखके इलाज करना. नाहरूको लेप, पट्टी, पिंडी बांधना ये इलाज करना २ वातका नाहरू हो तो निवडुंगकी फणी गोमूत्रमें पीसके लेप देना ३। पित्तके नाहरूपर बड, गूलर, पीपल, नांदरुकी बेत इनकी छालके कल्कका लेप देना ४। श्लेष्मनाहरूपर कचनारका लेप देना ५। दो २ दोषोंपर दो दो और त्रिदोषपर सर्व दवाओंका उपयोग करना. बड़ अम्लीका लेप देके विसर्परोगकी दवाइयोंसे रक्तनाहरू जाता है ६। कुष्ठ, हींग, सोंठ, सहँजना इनका चूर्ण बांटके पिलाना और लेप देना. इससे सर्व जंतु-विकार जाता है ८ सहंजनाकी मूली, बीज, सेंधवलोन कांजीमें पीसके लेप देना ९ लहसन, चित्रक, राईका लेप करनेसे स्नायु। पिंडियामें शिराओंकी गुठली

दीखे सो साफ होगा १० । बलाके बीज गोमूत्रमें बांटके लगानेसे सर्व नाहरू नाश होता है ११ । चूना और बिड़नोन पानीमें पीसके लेप देना, तीन दिनमें नाहरू नाश होता है १२ । पातालगरुड़ीकी जड़ पानीमें पीसके पिलाना और तिल कांजीमें पीसके लेप देना, इससे नाहरूका नाश होता है १३। छाछसे अथवा तेलसे असगंधका और सफेद विष्णुक्रांताका और सहँजनेकी जड़का लेप देना. नाहरू नाश होता है १४। नरमूत्रमें हलदी पीसके लेप देना, नाहरू नाश होता है १५ । जंगली बैंगनकी जड़ नरमूत्रमें पीसके बांधे, नाहरू नाश होता है १६ । गिलोयके रसमें टांकणखार डालके पिलाना और शनका ताजा बीज, गेहूँका आटा दोनों एकत्र करके घीसे तलके गुड़के बराबर तीन दिन खाना, इससे स्नायुरोग नष्ट होगा १७ । गायका घी तीन दिन पिलाके बाद तीन रोज निर्गुंडीका रस पिलाना, इससे कठिन स्नायुका नाश होता है १८ । हींग, टांकणखार तीन २ मासा लेके चूर्ण करके सांज सबेरे देना, इससे निश्चय नाहरूका नाश होता है १९। पिपलीमूल ठंढे पानीमें पीनेको देना और कस्तूरी घी पीनेको देना, इससे कठिन नाहरू नाश होता है २० । अतिविष, नागरमोथा, भारंगमूल, पिपली, बहेड़ा इनका चूर्ण गर्म पानीमें देना, इससे नाहरू नाश होता है २१ । पारवेकी विष्ठा शहदमें गोली करके खिलाना, इससे सर्व नाहरू नाश होता है २२। नीम, कनेरके पत्ते बांधना २३। बैंगनका भरता दही मिलाके बांधना, सात दिनमें नाहरू नाश होगा २४। शिरस, हींग, चूना शहदमें समभाग पीसके नागवेलके पानके ऊपर रखके पट्टी देना. इससे नाहरू नाश होता है २५ । अस्वरवेल छः मासा और १ तोला गुड़में गोली करके खाना, तीन दिन और दिनभर उपास रहना, जन्ममें नाहरू कभी न होगा ।

अथ षंढ (नपुंसक) का निदान ।

मा बापके अल्प वीर्यसे जो गर्भ होता है वह आसेक्य नामका षंढ होता है और दूसरेका वीर्य निगलके उसको चेतना होती है उसका दूसरा नाम मुखयोनि है १ ।

सौगन्धिके लक्षण ।

जिसको योनि सूंघनेसे स्त्रीकी इच्छा होती है वह नपुंसक पशुके माफिक सौगंधिक षंढ है ऐसा जानना, दूसरा नाम नासायोनि है २ ।

कुम्भिकषंढके लक्षण।

जो आदमी पहले अपनी गुदा दूसरेसे मरवाता है फिर आप स्त्रीके पास जाता है तब उसको चेतना होती है उसको कुंभिकनपुंसक कहते हैं, उसका दूसरा नाम गुदयोनि कहते हैं ३। उसकी पैदायश काश्यप मुनिने ऐसी लिखी है कि, श्लेष्मप्रकृतिकी स्त्रीसे पुरुषका संयोग होके पुरुषका वीर्य जल्दी छूटता है और स्त्रीकी तृप्ति न होके उसको अन्य पुरुषसे मैथुनकी इच्छा रहे उस वक्तका जो गर्भ पैदा होता है वह कुंभिकषंढ होता है ४।

ईर्ष्यकषंढके लक्षण।

जिस आदमीको दूसरेका मैथुन देखके आपको चेतना होती है उसको ईर्ष्यकषंढ कहते हैं, दूसरा नाम दृष्टियोनि कहते हैं ५।

महाषंढके लक्षण।

ऋतुसमयके वक्त जो पुरुष आप नीचे सोके स्त्रीको ऊपर चढ़ाके मैथुन करता है उसवक्तका जो गर्भ होगा सो औरतके माफिक चेष्टा करता है। उस वक्तके बालकको महाषंढ कहते हैं, उसको वीर्य नहीं, उसको हिजड़ा भी कहते हैं ६।

नारीषंढके लक्षण।

ऋतुसमय स्त्री पुरुषके माफिक ऊपर होके मैथुन करती है उस वक्तकी कन्या पुरुषाकृति होती है ७।

ऐसे छः जातिके षंढ हैं, ये तो आयुर्वेदमें स्वभावसे हैं लेकिन अन्यकारणोंसे आदमीका पुरुषार्थपना कम होके अल्प वीर्य होता है और रगें सुस्त होके चेतनशक्ति कम होती है. अन्य कारणोंसे धातु बिगड़के पुरुषार्थपनाको खलल आता है, स्तम्भन कम रहता है, बन्धेज नहीं रहता, धातु पतली हो जाती है १।

षंढतापर उपाय।

भुई कोहला पीसके घीमें गोली करके खाना, ऊपर दूध पीना २। केवांचके बीज, तालमखाना शकरसे देना, ऊपरसे धारोष्ण दूध पीना ३। गोखरू, शतावर, तालमखाना, असगन्ध, अतिबला इनका चूर्ण रातको दूधसे देना ४। माक्षिक, रससिन्दूर, लोहसार, हरड़ा, शिलाजीत, विडंग इनको खरल करके

घीसे देना ५। असगन्धपाक देना ६। कोहलापाक देना ७। गोखरूपाक देना ८। सालसमिश्रीपाक देना ९। कुमारीपाक देना १०। पिप्पलीपाक देना ११। पेठापाक देना १२। मुसलीपाक देना. ये सब धातुकी पुष्टि करनेवाले होके मर्दको फायदा करते हैं १३। मोचरस आधा तोला पावसेर दूधसे खड़ी शकर डालके देना १४। उड़दके काढ़ेमें गायका दूध और घी डालके देना १५। शतावर, चिकनाके बीज, केवांचके बीज, तालमखाना, गोखरू, तिल, उड़द इनका चूर्ण करके गायके दूधसे देना. इसीमें शकर डालना १६। शुद्ध अफीम एक गुञ्जा खाके थोटा दूध पीना १७। मुलहटीका चूर्ण घी, शहद डालके देना. ऊपरसे दूध पीना १८। आंवला, गोखरू, गिलोयका सत्त्व इनको घी शकरसे देना. इससे बूढ़े आदमीकी धातु बढ़के जवान होगा १९। भुँइ कोहलेके चूर्णको स्वरसकी इक्कीस पुट देना. बाद शहद और घीसे देना, धातुपुष्टि होगी २०। ऊँटकटारा, गोखरू, केवांचके बीज इनका दूधमें पाक करके देना २१। ऊँटकटाराका चूर्ण पकाके शकर डालके देना, उत्तम पुष्टि करेगा २२। कांसेके बर्तनमें गायका घी डालके उसमें मिश्री डालना, गरम करके उसमें गायका गरम दूध डालके पीना, इससे त्वरित बहुत धातु बढ़ेगी २३। भांग, चित्रकमूल, कायफल, काकड़ासिंगी, चिरफल, जायपत्री, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, सबसे आधा गुड़ डालके बेर बराबर गोली बांधना. वह गोली सामको खाना, ऊपरसे दूध पीना २४।

षण्ढत्वपर गुटिका ।

लवंग, जायपत्री, दालचीनी, पिप्पली, अफीम, अकलकरा, समुद्रशोकका बीज, सबके बराबर बनारसी शकर डालके एक वालकी गोली बांधना, तीन घण्टेके आगे गोली खा लेना, उत्तार निंबूका २५।

स्तंभन गुटी ।

उत्तम कस्तूरी ६ मासा, केशर १२ मासा, रूमीमस्तगी १ मासा, लवंग १ मासा, जायफल १ मासा, अकलकरा १ मासा, जायपत्री १ मासा, दालचीनी १ मासा, इलायची १ मासा, चोबचीनी १, शीतलचीनी १, तेजबल १, मदनमस्त १, पीपलामूल १, उटिंगणबीज १, केवांचबीज १, गोखरू १, मुण्डी १, मालकागणी १, समुद्रफल १, हिंगुल

१, मोचरस १, इन्द्रजव १, शतावर १, मोथा १, काली मुसली १, नागकेशर १, सोनेरी वर्ख १, रूपेरी वर्ख १, पिश्ते १, तीन वर्षका गुड़ १, तीन वर्षकी पुरानी अफीम १, सब बराबर मासा मासा लेके गोली बेरके बराबर बांधना, दोनों वक्त देना. खट्टा, तेल, तीखा वर्ज्य करना. गोली लेनेके बाद दूध पीना। यह दवा उत्तम पुष्ट करके बंधेज करती है २६।

स्तम्भन (बंधेज) गुटी ।

कस्तूरी १, केशर ३, जायफल ४, लौंग ४, अफीम इस माफिक भाग लेके दूधमें पीसके गोली एक वाल प्रमाण बांधना २७ । तालमखाना, गोखरू, मुसली, शकर इनका चूर्ण सात दिन गायके दूधसे रोज देना. उत्तम बंधेज है २८।

स्वप्नावस्थापर धातु जानेका उपाय ।

सालमिश्री, सफेदमुसली, गोखरू, तालमखाना, नागबलाके पत्ते, धनियांके पत्ते, कपाशियोंका मगज, मिश्री डालके चूर्ण करना. पावशेर दूधके साथ सात मासा तीन महीने देना, इससे धातु पुष्ट करके स्वप्नावस्थामें धातु कभी न जायगी २९।

एक घण्टे तकका बंधेज--अफीम ३॥ मासे, केशर ३॥ मासे, मिर्च ७ मासे, जायफल ७ मासे, जायपत्री ७ मासे, कस्तूरी १॥ मासा, लौंग १७ मासे एकत्र पीसके शहदमें गोली तीन गुंजाकी बांधना और देना. उतार निंबूका ३० ।

वाजीकरण घी--सफेद कनेरकी जड़ एक शेर पक्की लाके उसमें आठ शेर पानी डालके औटा लेना, बाकी दो शेर पानी रहे तब उतार लेना. उस पानीके समभाग भैंसका दूध डालके दूध बाकी रहे तब तक फिर औटा लेना, उसमें सोमल १ तोला, जायफल १ तोला, जायपत्री १ तोला, केशर १ तोला, लौंग १ तोला, समुद्रफल १ तोला इन सबको पीसके उस दूधमें मिलाके छाछ डालके उसका दही जमाना, वह दही चक्काके माफिक जमे बाद उसका माखन निकालके उसको तपाके घी तैयार करके शीशीमें भरके रखना वह घी एक बूंद पके पानमें देना. ऊपरसे तेरह गुणसे युक्त तांबूल खाना. इससे स्त्रीकी इच्छा बहुत होके कामवृद्धि होती है, मर्दूमी देता है, लेकिन पित्तप्रकृतिवालेको, गर्मीवाले-

को न देना चाहिये और इस घीसे श्वास, खांसी, कफके रोग वातके रोग सब जाते हैं३१। तीन मासा शुद्ध सिंगरफका टुकड़ा लेके खपरेपर रखना, उसके चारों तरफ लौंगोंके चूर्णकी पाल (दीवाल) करना, उसमें सफेद कांदेका रस शुमार बीस तोला लेके थोड़ा बारबार डालते जाना. नीचे मंदाग्नि लगाके सब रस पचा देना. बाद वह सिंगरफ लौंगोंके चूर्णसहित खरल करके खाना.उसे अनुपानसे देना. उससे बहुत मर्दूमी आती है३२।

गरम तबीयतवालेको धातुपुष्टिकर दवा ।

तालमखाना तोला १,इलायची तोला १,सफेद मिर्च तोला १ इनका चूर्ण करके सात पूड़ी बनाना,उसमेंसे एक पूड़ी पक्के केलामें फरके रात भर मैदानमें रखना, प्रातःकाल मुख धोके उसे केलासहित खाना, इस से धातुस्थानकी और मगज स्थानकी गर्मी जाके पुष्टि करेगा ३३। और इसबगोल २ भाग, इलायची एक भाग, मिश्री ३ भाग सब मिलाके रातको पानीमें भिगोके सुबहको लेना और चूर्ण करके सुबहको देना. उसपर गायका दूध थोड़ासा पीना ३४। चौदा शेर उड़दकी दाल लेके उसका छिलका निकालके उसपर शुद्ध शिंगरफ तीन तोला पीसके उस दालमें लगा देना. बाद छायामें सुखाके रखना,उस दालमेंसे आधासेर रोज एक अच्छी बकरीको खिलाना । उस बकरीका दूध पिलाना, उससे नामर्दका मर्द होगा, सौ औरतोंको गर्भ धारण करावेगा और फजिरको उस दूधकी खीर उड़दकी दूसरी दाल डालके बनाके खाना चाहिये और पथ्य सब रखना.घी, गेहूँकी रोटी खाना. दूधचावल खाना.बाकी सब मना करना. एक महीना लेना चाहिये ३५। रगोंमें सुस्ती हो तो तिला करना. पट्टी-पारा मासा ३, गंधक मासा ३,हरताल मासा ३, हिंगुल मासा ३,जमाल-गोटा मासा ३, खिरलीका बीज मासा ३, इनको खरलमें डालके ब्रांडी (दारू)में खूब घोटना, उसे तांबूलके पानको लगाके पट्टी चढ़ाना और कपड़ेसे बांधना । फुनसियोंसे पानी बहके निकल जावेगा, बाद साफ होगा और ज्यादा फूले तो माखन लगानेसे साफ होजाता है ३६ ।

इसपर तेल–भांगका बीज लेके तेलमें तललेना बाद उस तेलमें अहि-फेन, बच्छनाग, जायफल, धतूराका बीज इनको समभाग कपड़छान

करके उसमें थोड़ासा माखन डालके वह तेल डालके पहर आठतक घोटना, इस तेलका लेप इंद्रीपर देना. भोग समयमें इंद्री मुसल माफिक मजबूत होगी ३७। सांडेकी चरबी मालिश करनेसे रगोंमें गर्मी आके सुस्ती मिटेगी ३८। शेरकी चरबी मालिश करनेसे रगोंमें गर्मी आके सुस्ती मिटेगी ३९। छुहाराका बीज तिलोंके तेलमें घिसके लेप देना. गरम करके ऊपरसे कपड़ेकी पट्टी चढ़ाना. उतार घी लगाना ४०। मंदार याने श्वेत आकड़ेकी रुईकी बत्ती सूकरकी चरबीसे भिगोके बत्ती करना. स्त्रीसंग करना. जबतक बत्ती रहेगी तबतक वीर्य रहेगा ४१। नेपतीका बीज, खैरका बीज, धतूराका बीज इनके चूर्णको इनके अर्ककी भावना देना और तिलतेलकी तिलको भावना देके ऊपरकी चीजें तिलोंके साथ खानेको देना. उसमें शकर डालना. इससे उत्तम स्तंभन रहेगा और अभ्रकभस्म और लोहसार और बंगभस्म और सोनाभस्म और ताम्रेश्वर और मदनकामेश्वर और सालममिश्रीपाक और असगंधपाक और गोखरूपाक इनमेंकी चीजें सब पुष्टी करके धातुको बढ़ाती हैं। ये चीजें योग्यअनुपानसे देना और अच्छी खातरीकी बनी हुई और शास्त्रकी क्रियासे बनी हुई हो सो कुशल वैद्यके हाथसे देना. सब फायदेमंद है, सर्व धातुविकारको फायदा करके सर्व रोगका नाश करेगी सो चाहे जिस प्रयोगसे देखके देना और करना, सर्व धातु बढ़ाके पुष्टि पराक्रम देती है।

इति षंढ (नपुंसक) रोगका निदान और चिकित्सा समाप्त।

अर्कका प्रकरणाध्याय।

दवा पांच प्रकारकी शास्त्रमें कही हैं-१ लता २ गुल्म ३ शाखा ४ पादप ५ प्रसर इनका जुदा २ भेद कहता हूँ।

लक्षण–१ गिलोय आदिकको लता कहते हैं।२ और पित्तपापड़ा आदिकको गुल्म कहते हैं। ३ आम आदिको शाखा कहते हैं। ४ बड़, पीपल आदिको पादप कहते हैं। ५ रिंगणी आदिक संपूर्ण प्रसर जानना. इन वनस्पतियोंका पांचों अंग एकसे एक बलवान् समझना और पत्र, फूल, छाल, मूल इन सबको पंचअंग कहते हैं। कौनसे वनस्पतिका कौनसा अंग लेना सो कहता हूँ–तमालपत्र सना आदिका पत्ता लेना और धायटी

आदि गुलाब, पलास मोगराके फूल लेना और एरंड आदि दशमूल लेना और इस माफिक त्रिफलादिकका फल लेना और ग्रंथके प्रारंभमें सब औषधियोंके अंग कहे हैं वैसे वैद्यको स्वबुद्धिसे सर्व वनस्पति लेना चाहिये।

सब दवाके गण कहते हैं सो जानना।

कानका गण–तिलवण (बगरा), समुद्रफेन नौ ९ प्रकारका समुद्रास्थि, उसकी शिरागण कानको हितकारी हैं १।

वमनगण–मालकांगणी, पिसोला, कल्क, गेलफल, मदनफल, मक्खी, देवडंगरी, नीम ये गण उलटी करते हैं २।

रंजनगण–चार जातिकी हलदी, पतंग, रक्तचंदन, नील, कुसुंबा, मंजिष्ठ, [illegible]ख, मेहँदी, जलपुष्प, काला सुरमा, शिकेकाई, पांगारा, पोईफल [illegible]सागर ये गण रंजनकारक हैं ३।

नेत्रा[illegible]–दो प्रकारका रसांजन, त्रिफला, सफेद रक्त लोद, गवारपाठा, बिवला यह गण नेत्रोंको हितकारी है ४।

त्वचागण–नव प्रकारका तेल, बावची, पवांड, गठोना, पापड़ी, स्पृक्का यह गण त्वचाको हितकारी है ५।

उपविषगण–भिलावाँ, अतिविष, श्वेत, वरधारा, अफीम, श्वेत रक्त कनेर, खसखस, चार तरहका धतूरा, श्वेत रक्त गुंजा, निर्विषी, विषमुष्टि, कुहिलीआकी, आक, मंदार, थोहर ये उपविष गण हैं ६।

जलपुष्पगण—आठ जातिके कमल, चतुष्पादा, जलसी, जलजीवी, कुंभिका यह जलपुष्पगण है ७।

कंदगण—आठ तरहके आलू, आठ प्रकारके मूल, आठ जातिकी कदली, कंदश्वेत व लाल गाजर, हस्तिकंद, लहसन, श्वेतरक्त कांदे, आठ जातिका कमल, नीलकंद, डुकरकंद, लक्ष्मणाकंद, केमुककंद, मुसलीकंद, भुईकोहला, कचूरा, शतावरी, असगंध, विष्णुकंद, सुदर्शनकंद, अदरख, शुक्रकंद, पाचण कांदा, मौलीकंद यह कंदगण है ८।

लवणगण—सांभरनोन. सोरानोन, बिड़नोन, काला नोन, सेंधव-नोन, बांगडखार, द्रोणीनोन यह आठ जातिका नोन समझना ९ ।

क्षारगण--सज्जीखार, जवाखार, टंकणखार, संचलखार, पलाशका खार, गौर्यखार, अपामार्गका खार इन सातोंको क्षारगण कहते हैं १० ।

अम्लगण—जंभीरी, दो प्रकारका बिजोरा, मोहोटा, काकड़ी, नींबू, कर्मरे, अम्ली, आंबा, अम्लवेत, गन्ना, चनोंका खार, गजद, धान्याम्ल, चूका यह अम्लगण हैं ११ ।

फलगण—आम तीन जातिका, आंबाडा दो प्रकारका, राजाम्र, कोशाम्र, कटहर तीन प्रकारका, कच्चा केला आठ प्रकारका, ओट, फूट, नारियल तीन प्रकारका, तरबूज दो प्रकारका, जांबूल तीन प्रकारकी, काकड़ी पांच प्रकारकी, बेलफल, कैथ, नारंगी, घेंडसी चार प्रकारका, रायआंवला, जामुन, बेर, चकवँड़ दो प्रकारकी, कुहिली [illegible] प्रकारकी, आलूख दो प्रकारकी, खिरनी, कमलाक्ष, सिंघाड़े कांटा [illegible] फालसा, मौहा, अनार चार प्रकारका, दूधिया, केला, ताड़फल, [illegible], अष्ट-बीजक, ओंकर (गूंदा), निवलीके बीज, छुहारा, कड़ुवा बदाम, बदाम, दाख तीन प्रकारका, खजूर तीन प्रकारका, अक्रोड, पीलुफल, शकर, निंबू, सेवफल, केलफूल, बैंगन, अजक, देवडंगर इसको फलगण कहते हैं १२।

शालिगण—लाल शाली, मोत्याल, सफेद शाली, शकुनाहत शालि, सुगंध शालि, करदमक शालि, पटनी दूषक शालि, पुष्पांडक शालि, पुंडरीकशालि, सरामुख शालि, दीर्घशूकशालि, तपनीयशालि, तुरी शालि, आम्रपुष्पशालि, साठी शालि, नेगमाल शालि, पर्वतीशालि, किंशुण शालि, हतकुवा शालि, राजभोग शालि यानी चावलका धान्य-गण है १३ ।

शिंबीधान्यगण—तीन प्रकारके जव, गेहूं, मूंग छः प्रकारके, तीन प्रकारके उड़द, तीन प्रकारका चौला, रानमूंग, अरहर तीन प्रकारकी, पावटे, मसूर, तीन प्रकारके चना, मटर, लाख तीन प्रकारका, शिरस तीन प्रकारके, नीललोबिया चार प्रकारकी, अलसी, वयी, मोहरी (राई) इनको शिंबीधान्यगण कहते हैं १४ ।

ऋक्षधान्यगण–कांग चार प्रकारकी, सावा चनक तीन प्रकारके, इरीक दो प्रकारके, वंशबीज, मलीचा, शरत्तृणबीज,करडाई, कुरिधान्य, नागली (मंडवा), मकरा, जुवारी दो जातिकी, बजरा इसको ऋक्ष-धान्यगण कहते हैं १५।

पत्रशाकगण–चन्दन वथुई दो जातिकी,मयाल दो जातिका,उड़द तीन जातिका, चौलाई तीन जातिकी, पोईशाक दो जातिकी, पटुआ, फालशाक, कलंबीशाक, घोल, लोणीशाक, चंचुशाक (चूखा),पालक, सोया,कुरडू,(कुकरड़ी),पाथरी (गोभी), द्रोणपुष्पी, परवल, सेषा, मेथी, कोरल, सेवगा(सैंजन),कोथिंबीर(धनियां),जीवकशाक,कावली, पित्तपा-पड़ा, कासुंदा, राजगिरा, फेना ये पत्रशाक यानी गीले शाकगण हैं १६।

फलशाकगण–दो जातिका कोहला, तीन प्रकारका दूधिया, सफर बीज, टंडिश, करेले दो जातिके, बैंगन चार प्रकारके, करटोली दो जातिकी, तुरई तीन जातिकी, तोंडली तीन जातिकी, कैर सांवल दो जातिकी, नारेली पांच जातिकी, चिबेलफल, गुंदा, सागरी, फोग, काचरा, काकड़ी, मूंगफली, लोबियाकी फली,बालंकाकड़ी, टेंडसी, मिट-काचर ये फलशाकगण हैं १७।

जंगलीमांसगण–हरण, कुरंग, रीछ, पृषत, न्यंकु (खरगोश), सांबर, पञ्चवर्ण मृग, कर्कट, मुंडी ये जंगलीमांसगण हैं १८।

बिलेशयगण–गोधा, शश, सर्प, चूहा, फोत्कार, सालई, कोली छिछोंदरि, मोटा मूषक, कोल ये बिलमें रहते हैं, इससे इनको बिलेश-यगण कहते हैं १९।

गुहाशय गण–सिंह, व्याघ्र, भेड़िया, रीछ, चित्ता, गज, गेंडा, नौला, जंबूक (सियार) बिल्ली ये गुहामें रहते हैं; इससे इनको गुहाशय कहते हैं २०।

विष्किरपक्षिगण–चटक, लावा, चिचुंद्री कपिंजलपक्षी, टिटवी (टिटोडी), मुर्गी, चिड़िया, चकोर इत्यादिक, पण्प यानी भूमि खोदकर धान्यादिक भक्षण करते हैं, इनको विष्किरगण कहते हैं २१।

प्रतुदपक्षीगण–हरितपक्षी, (लीलतास) बगला, कबूतर, सारस-पक्षी, कीर, पारवा, खंजरीट, कोयल इत्यादि पक्षी चोंचसे पदार्थ भक्षण करनेवाले हैं २२ ।

कुलेचरगण–बकरा, मेंढा, बैल, मूस, भैंसा, गाय, सूकर, वनगाय इत्यादि कुलसंश्रय होते हैं २३ ।

जलाश्रित पक्षीगण–हंस, सारस, काचाक्ष पक्षी, चक्रवाक, क्रौंच, शरारिका, नंदीमुखी, कलहंस, बगला इत्यादिक जलपर तैरनेवाले पक्षी हैं२४।

कोशस्थ जलजगण–शंख, क्षुद्रशंख, सींप, जलसींप, केकड़ा, मेंडक, भेडक, पशु, गांडोल (डुंबी) डिंडिभ, सर्प इत्यादि जिसके शरीर पर कवचके माफिक रहता है वे कोशस्थगण हैं २५ ।

पादीन जलजगण–जलतंतु, कछवा, नक्र, गोधा, मक्कर, शंकु, घडयाल, मासा (शसुमार) सुसर घंट ये जलमें पांवसे चलते हैं, इनको पादीनगण कहते हैं २६ ।

मत्स्यगण–रोहितक मच्छ, झेंगुर, मच्छ, प्रोष्ठी मच्छ, चिलीचम अलम, शृंगी, मुंडी, रोमश, आलीखंडी इत्यादि मच्छीगण हैं २७ ।

रेचनगण–किरमाला, छबीला, कुटकी, कंकोल (शीतलचीनी), बारुणी, शिवलिंगी, नागदमनी दो प्रकारकी, दन्ती तीन जातिकी, टेंटू दो जातिकी, सोनामुखी, थुई, तरुड, रेवतचीनी, कवंडल, जमाल गोटा, णालगन्ध, हरडा, निशोथ ये विरेचनगण हैं २८ ।

पाचनगण–पाषाणभेद, मिर्च, अजवाइन, जल, सरसों, सोंठ, चवक, गजपिप्पली, जीवक ये पाचनगण हैं २९ ।

दीपनगण–तीन जातिकी पिपली, पिपलीमूल, तीन जातिका एरंड, तेजबल, कायफल, भारंगी, पोहकरमूल, श्वेत व रक्त चित्रक, धनियां, अजमोदा चार जातिका; जीरा दो जातिका, हापुसा ये दीपनगण हैं३० ।

पौष्टिकगण–चार जातिका वंशलोचन, श्वेतरक्त चित्रक, अष्टवर्ग, चोपचीनी, चिल्ह, दालचीनी, नागकेशर, तालीसपत्र, तवकीर, बच, गोखरू, रोहिणी, कुहिली, तोयबन्धा, इनको पौष्टिकगण कहते हैं ३१ ।

वातहारक गण—बकायन, नींब, कपाशी, श्वेत रक्त एरंड, दो प्रकारकी बच, कान्नी, श्वेत निर्गुण्डी, हींग आदिक वातहारक गण हैं। ३२।

तृणगण—तीन प्रकारका बेलू, बांस, कुश (शूलवाला), कास, त्रिधा दूब, नल, त्रिन, गुन्द्र, मूंज, मेथी, नदीबड़ इनको तृणगण कहते हैं ३३।

प्रसारिणीगण—चांदवेल दो जातिकी, मुण्डी, लाजालु, श्वेत रक्त पुनर्नवा, श्वेत रक्त उपलसरी, पांच जातिका भांगरा, दो जातिकी नकछींकनी, दो जातिकी ब्रह्मी; लाजालूभेद, शंखपुष्पी लघु, काकड़ी, सुपारी इनको प्रसारिणीगण कहते हैं ३४।

वृक्षगण—शिवण, टेंटू, साल, सर्व बीज कल्लकी, शीसवा, अर्जुन, सादड़ा, नांद्रुक, रोहिड़ा, खैर तीन जातिका, कूड़ा, पुत्रजीववृक्ष, नीम, हिंगण, बेट (हिंगोरा), मञ्जिष्ठ, तमाल, भूर्ज, भूल्य, धावड़ा, धामण, मेक्षक, साया, सातवण, साहुड़ा, बायबाणा, शमी (खेजड़ी), कटभी, तिवस, बेल, जैत्र ये वृक्षगण जानना ३५।

गुल्मगण—बला चार जातिकी, पर्णी पांच जातिकी, थोहर, एरंड, पाठामूल, धमासा, रिंगणी, कोकिलाक्ष दो जातिका, क्षीण, आघाड़ा (अपामार्ग) दो जातिका, मूर्वा, त्रायमाण, शरपुंखा, कावली, रक्तनिशोथ, मेढ़ाशिंघी, आपटा, बांझकरटोली दो जातिकी, अजबला, श्वेत कृष्ण तुलसी, वज्रदंती दो जातिकी, चमेली, भामा इसको गुल्मगण कहते हैं ३६।

वल्लीगण—गिलोय, नागवेल, सोमद्युति, विष्णुक्रांता, सोनवेल, हाड़संधी, ब्रह्मदंडी, कास, वज्रिका, वड़वती, बाभली, वंशपत्री, लघुलजालू, अर्कपुष्पी, थोहर, मुंगसवेल, लघुनीली, मूसाकानी दो प्रकारकी, पोईशाक, मोरशिखा, बन्धनवल्ली, नागकेशर, माधवीलता, चमेली इत्यादि लतागण जानना ३७।

पुष्पगण—चारजातिके कमल, सेवती, गुलधावती, नेवाली, गुलाब बकुल, कदंब, कमल, शिवलिंगी दो जातिकी, कुंद दो जातिका, केतकी, कैक्रीरात, कर्णिकार दो जातिका, अशोक चारजातिका, कोरांटा (वज्रदंती), तिलक

मुचकुंद चार जातिका, दुपहरी, जया, लघुकांबली, अगस्ति, पेटारी, पलाश (ढाक), ताम्रपुष्पी, सूर्यमुखी, नीलाकोरांटा इसको पुष्पगण कहते हैं ३८।

पयोवृक्षगण—आकड़ा दो जातिका, थूहर पांच जातिका, सातला दो जातिका, दूध, बेल, बड़ तीन जातिका, पाकर, गूलर ये क्षीरवृक्षगण कहलाते हैं ३९।

धूपगण—कृष्णागर, मलयागर, देवदारु तीन जातिका, गन्धक, गूगल पांच जातिका, सर्जरस, सरलधूप, पद्मकाष्ठ, सावरीका चीक, साकवी वृक्षका गूंद, राल, मनशिल इनको धूपगण कहते हैं ४० ।

सुगंधगण—दो प्रकारका कपूर, कस्तूरी तीन जातिकी, लता कस्तूरी, जवादि कस्तूरी, शिलारस, जायफल, जायपत्री, लवंग, दो प्रकारकी एला, गोरोचन दो जातिका, कुंकुम पांच जातिका, ऐरण, लोबान, ऊद, दवना, सुधास इनको सुगंधिगण कहते हैं ४१ ।

धूपगण—खश, काला खश, जटामांशी दो जातिकी, नखला तीन जातिका, चंदन, शिलाजीत, मोथा, तीन जातिका, कपूर काचरी, एकांगी, ओरा दो जातिका, कचूर, गँहला, रेणुकबीज, गंधकोकिला, गठोना तीन जातिका, स्पृक्का, कंकोल, तालीशपत्र, पित्त, तृण विशेष पवारी, स्थलकमलिनी, एलावालुक, सुगंध, रोहिसतृण, दवना इनको धूपगण कहते हैं ४२ ।

दुग्धादि गण—गाय दश जातिकी, कपिला गौ तीन प्रकारकी, बकरी तीन प्रकारकी, जंगली मेंढी तीन जातिकी, मेंढी तीन जातिकी, ऊंटनी दश जातिकी, घोड़ी पांच जातिकी, हाथिन दश जातिकी, व्याघ्री दश जातिकी, कुत्ती पांच जातिकी, श्वदंष्ट्री पांच जातिकी, धात्री तीन जातिकी, भैंस आठ जातिकी, गवा, गेंडा, रुई इन सबके दूधसे दही, छाछ, माखन और घी ये होते हैं ४३ ।

धातुगण—सोना तीन प्रकारका, चांदी आठ प्रकारकी, तांबा पांच प्रकारका, वंग दो जातिका, जस्त तीन जातिका, शीसा छः प्रकारका, लोहा आठ प्रकारका इन सातोंको धातु कहते हैं ४४ ।

उपधातुगण--सोनाकी उपधातु सुवर्णमाक्षिक, रूपासे तारमाक्षिक, तांबासे नीलाथोथा, वंगसे मुड़दाशंख, जस्तसे कलखापरी, शीसासे सिन्दूर, लोहसे लोहकीट, इन सबको उपधातु कहते हैं ४५।

रसगण--पारा दो प्रकारका, गंधक तीन प्रकारका, अभ्रक आठ प्रकारका, हरताल आठ प्रकारका, सुरमा दो प्रकारका, कसीस, गेरू दो प्रकारकी ये सातों रसगण हैं ४६।

उपरसगण--पारा, टंकणखार, गंधक इनसे हिंगुल होता है. फट-करी, अभ्रकसे होती है. हरतालसे मनशिल होता है. सुरमेसे शुक्ति, शंख इत्यादिक. कसीससे संग, मर्मर, मृत्तिका से गेरू ये सब उपरस समझना ४७।

रत्नगण--हीरा, मोती, मूंगा, गोमेद, नील, वैडूर्य, पुष्पराज, पाच, माणिक इनको रत्न कहते हैं ४८।

उपरत्नगण--वैक्रांत, मोतीकी शीप, मरकत, लहसुनियां, सस्यक-मणि, गरुड, पांच शंख, स्फटिक इनको उपरत्न कहते हैं ४९।

अर्कका सामान्य कृत्य।

श्रीमहादेवजी और लंकाधिपति रावण इनका संवाद हुआ, जब रावणने श्रीकैलाशपतिसे पूछा कि, महाराज सब देवता अमृत पीगये और हम लोग निराश रहे सो कोई उपाय बता दीजिये, तब रावणसे महा-देवजीने अर्कविधि कही है कि हे रावण! इस अमृतके तुल्य ये अर्क हैं सो तू पीवे तो तुझमें सब गुण अमृतके तुल्य होंगे। जिस २ वन-स्पतिके स्वरस, काढ़े, फांट, हिम, कल्क, चूर्ण आदिक दवा कही हैं और सब दवाइयां यानी जो सब गण कहे हैं उस२दवाका अर्क काढ़के उस२ रोगपर उपायमें लाना, जिससे सब रोगोंका नाश होके अमृतके तुल्य फायदा होगा. उस अर्ककी क्रिया कहता हूँ, उस माफिक सब जातिके अर्क निकलते हैं सो प्रथम उन यंत्रोंकी कृति आगे लिखे मुजब करना. पहिले उसकी विधि कहते हैं. अग्निप्रमाण उस यंत्रमें द्रव्य डाल के यथाविधि उसके नीचे दो २ पहर १॥ पहर १ पहर, दो मुहूर्त, एक मुहूर्त अग्नि देके अर्क काढ़ना।

पात्रप्रमाण--कांचके और चिनाई बरतनमें अर्क लेना और रखना ।

अर्कविधि--पत्तोंका अर्क काढ़ना हो तो पत्तोंको कूटके उसमें सवा हिस्सा पानी डालके बाद धूपमें एक घड़ीभर रखना, बाद उसका अर्क काढ़ना. इस माफिक बड़, पीपल, नेपती इत्यादिकोंका अर्क काढ़ना और उस वनस्पतिमें पानी बीसवां अंश डालना. डालके थोड़ी देर धूपमें रखना. धूपमें रख करके फिर यंत्रमें डालके विधिवत् अग्नि लगाके पूर्वोक्त विधिसे निकालना ।

दुग्ध-वनस्पतिकी अर्कविधि ।

सदुग्ध द्रव्य दो प्रकारका--एक मृद दुग्ध और दूसरा तीक्ष्ण दुग्ध, उसमें कोई थूहर, शेर, शिरणी आदि करके तीक्ष्ण दुग्धवृक्षोंके टुकड़े २ करके बहुत पानीमें डालना, तीन दिन बाद पानीमेंसे निकालके किंचित् कूटके उस वक्त चिरनेवाला नहीं ऐसा होने बाद उसमें दशांश पानी डालके अर्क काढ़ना, उसको तीक्ष्ण-अर्क ऐसी संज्ञा है ।

मृदुदुग्धविषार्क--दूधी,आक, शिरणी आदि जो मृदुदुग्ध वनस्पति कही हैं उनको कूटके चौगुने पानीमें डालके उनमें गरम होने तक रखना, बाद यंत्रमें डालके अर्क निकालना, विषका अर्क काढ़ना होतो विषको कूटके उसमें छठवां भाग पानी डालके अर्क निकालना और जैसा द्रव्य है वैसा देखके बुद्धि और युक्तिसे अर्क निकालना चाहिये ।

हरे फलोंकी अर्कविधि ।

अच्छे और मृदु गीले लेके उनके छोटे २ टुकड़े करके उनका पानी विना अर्क काढ़ना और काले गूलर आदिक वृक्षोंका हरा फल लेके उसके टुकड़े करके उसमें ८० अस्सीवां भाग फिटकडी,सज्जीखार,सेंधव-लोन ये चीजें डालके मसलके उसमें ४० चालीसवां भाग पानी डालके वह बर्तन चार घड़ी धूपमें रखके गर्म होने बाद यंत्रमें डालके अर्क निका-लना और पक्के फलोंका अर्क पानी डालके काढ़ना और फूलोंका अर्क काढ़नेको पानी सोलहवां हिस्सा डालके काढ़ना. द्रव्यका अर्क काढ़नेके वक्त उफनके जावे नहीं इसवास्ते उसमें डालके द्रव्य और ढकना करनेकी युक्ति कहता हूं:--सेवती,चमेली, मोगरी, पारिजातक, केतकी इनके मुखपर

आच्छादन देना और दूध, दही, वसा, छाछ, शहद, तेल, घी, सूत्र, घर्म, आदिकका अर्क काढ़नेके वक्त चमेली आदिका काढ़ा करना ।

उफान न आनेको प्रक्षेप—अर्क काढ़नेके वक्त पात्रमें डालनेसे उफानका स्तम्भ करनेवाले पदार्थ दही, माखन, पानी, वर्षवल्ली, घी, शहद, दूध, गोखरू, शहदका किण्व, सुराबीज सो तेलकी खल, सबका घी इन्हें यन्त्रपर यथायोग्य डालके अर्क काढ़ना. उसके बरतनके मुखपर बहेड़ाका टुकड़ा भरा हुआ द्विमुख पात्र उलटा बिठाके पीछे सर्व जातिका अर्क काढ़ना और नीचेका कीट फेंक देना ।

दुर्गन्धनाशन प्रयोग—सम्पूर्ण मांस और दुर्गंध पदार्थ इनसे दुर्गंध अर्क निकलता है. दुर्गन्धका नाश होनेको हींग, जीरा, मेथी, राई इनके चूर्णमें घी डालके उसका धुवां उस पात्रको देना. उसमें वह अर्क भरके रखना. इस माफिक बारबार करना. जब दुर्गंध जाके सुगन्ध आवे तब पूरा करना । वह रुचिकर, सुगन्ध, अग्नि उत्पन्न करता है. सर्व अर्कको गन्धका सुवास देना, जिससे वह सूर्यकासा तेजवाला होता है. वात-नाशक अर्कको गूगलका धुवां देना और गूगल, राल, सर्जरस, कृष्णा-गर, कलंब, पद्मकाष्ठ इनके चूर्णका धुवां बरतनमें भरके उसमें अर्क भरके रखना, उसे वातको देना. पित्तके अर्कको चंदन आदिका धुवां बरतनको देना और सर्व कफनाशक अर्कको जटामांसी आदिका धुवां देना. चंदन, खश, कपूर, बावच्या, एला, कपूरकाचरी, गहुला इन सातोंको चंदनादि गण कहते हैं और जटामांसी, नखला, जायपत्री, लवंग, तगर, शिला-रस, गंधक इनको जटामांस्यादिगण कहते हैं ।

दशांगधूप—गंधक ५० गूगल ५० चंदन १२॥ जटामांसी १२॥ शतावर १२॥ राल ३ सर्जरस ३ तीन भाग, खश २, घीमें तलाहुआ नखला १ कपूर १ कस्तूरी १ एक भाग लेके धूप करना. यह दशांगधूप रुद्रका भी मनहरण करता है। इसका धुवां पात्रको देके त्रिदोषहारक अर्क डालना।

लहसन और प्याजको निर्गन्ध करनेकी विधि ।

लहसन साफ करके आठ प्रहर छाछमें डालके रखना, बाद आठ प्रहर

अम्लवर्गमें डालके रखना,उसमेंसे पीछे आठ प्रहर छाछमें रखना। पीछे द्रोणपुष्पी, मोरवेल इनके रसमें चौबीस प्रहर रखना, बाद धोके हलदी, राई इनके पानीमें एक पर्याय करना. बाद गर्म जलसे धोना. बाद कांटे-सेवतीके फूलोंमें रखना, बाद दहीके पानीमें पांच भाग डालके उनमें रखना, बाद चमेलीका फूल यंत्रके मुखपर रखके अर्क काढ़ना। इस लहसनके अर्कपर पुरुषोंमें महादेवजी मोहित हुए थे।इसको कोई पहिचान न सके कि यह लहसनका अर्क है और इसीमाफिक प्याजका अर्क काढ़ना।

मांसअर्कविधि—मृदु मांस लेके उसके टुकड़े २ करके उसका चालीसवां भाग नमक डालके रखना बाद पानीसे धोना, उसमें छठा भाग अष्टगंध डालके उसमें गन्नाका रस अष्टमांश डालना। वह न मिला तो दूध डालना और जावित्री, लवंग, दालचीनी, नागकेशर, मिर्ची, कस्तूरी इनको अष्टगंध जानना और यंत्रके मुखपर सुगंध फूल रखके अर्क काढ़ना।यह अर्क बहुत मीठा, अमृतके माफिक होता है, ऐसा रावण मंदोदरीसे कहता है कि, मुझसे श्रीमहादेवजीने कहा है और करणमांसका टुकड़ा छोटा करना, थोड़ी फिटकड़ी डालना और गनमांसके बारीक टुकड़े करके उसमें शंखद्राव डालके अर्क काढ़ना।

शंखद्रावविधि—सज्जीखार,जवाखार, सुहागा,टांकणखार,पत्र्या-टांकणखार,शंखभस्म,आकड़ेका खार,थोहरका खार,पलशका खार,फिट-कड़ी,अघाड़ेकाखार,सेंधवलोन,सञ्चल, बिडनोन, सांभरनोन, सोरा, द्रोणी-नोन,नोन, बांगड़खार सब एकत्र करके निंबूके रसकी इक्कीस भावना देना. बाद कांचकी कूपी (शीशी) में भरके बीसवां भाग निंबूका रस डालके गीला करना और वह कूपी मट्टीके आधे घड़ेके नीचे बारीक छेद करके उसमें वह कूपी रखके बाद कूपीके मुखको दूसरी लंबे मुखकी कूपी लेके उसकेबाहरके मुखको कपड़मिट्टी करके मिलानाऔर वह कूपी पानीमें रखना, पानी तपने देना नहीं, बाद मटकेके नीचे अग्नि क्रमसे पांच प्रकारकी देना. इस माफिक क्षारका अर्क काढ़ना. इस अर्कमें हड्डी, मांस, शंख, सीपी, कौड़ीआदिक संपूर्ण पानी हो जाता है इसमें संशय नहीं। यह उदरादिक रोगपर बहुत उत्तमहै।

पात्रकृत्य-लोहेका चूरा, गेरू, फिटकड़ी, काली मट्टी, लाल मट्टी, हड्डीका चूरा, कांचका चूरा, जलकी सींप सब समभाग लेके सबके समभाग दूजी मट्टी लेके सबको गाय, घोड़ा, भैंस, हाथी, बकरी इनके मूत्रमें भिगोके खूब मिला लेना. महीन पीसना, वह मट्टी तैयार हुए पीछे कुशल कारीगर कुम्हारके हाथसे अर्क बनानेके यंत्र आगे लिखे अनुसार तैयार करा लेना और अर्क काढ़ना जिससे अति उत्तम प्रकारका अर्क निकलेगा और तांबेके यंत्रको कलई करके यंत्रसे अर्क काढ़ना. लेकिन शंखद्रावको यंत्र कांचका और ऊपर लिखे अनुसार मट्टीका होना चाहिये तब अर्क उत्तम निकलेगा और हाल समयमें अंग्रेजी यंत्र कांचके अथवा और जातिके भी मिलते हैं उन्हें लेके ऊपर लिखी वनस्पतियोंका अर्क काढ़ना। जो द्रव्य जिस रोगपर लिखा है उसीका अर्क उस रोगपर चलता है ऐसा जानना चाहिये।

नं० १ इस यन्त्रका नाम डमरूयन्त्र है।
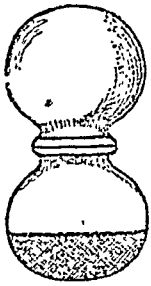
नीचेका मटका छोटा लेना, ऊपरका मटका दूना मोटा लेना, बाद उन मटकोंको मेट और गोपीचन्दन लगाके सुखा लेना. बाद नीचेके मटकेमें संस्कार किया हुआ सिंगरफ डालना. बाद ऊपरके मटकेके मुखसे मुख मिलाके बंद करना। उसे बंद करनेकी चीजें-चूना १ भाग और गेहूँका आटा २ भाग, एकत्र पानीमें मिलाके उससे मुख जोड़ना और बंद करके कपड़ा लगाके गुरदी दे बंद करना, उसको चूल्हेपर चढ़ाके नीचे अग्नि लगाना. दो पहरतक ऊपरके मटकापर कपड़ाकी घड़ी भिगोके रखना, ऊपरका ऊपर पानीका चुवा देना. उसको सूखने नहीं देना. बाद आंच पूरी होनेसे उतार लेना. ऊपरके मटकेमेंसे पारा युक्तिसे निकाल लेना. इसको डमरूयन्त्र कहते हैं।

नं० २ इस यन्त्रका नाम ऊर्ध्वनलिकायन्त्र है ।

एक बरतन लेके उसमें द्रव्य भरके उसके मुखपर ढकनीके माफिक सर्पोश बैठाके उसको नली लगाना. वह नली एक शीशीके मुखमें बैठाना । वह शीशी एक पानीके घड़ेमें अथवा टुकड़ेमें रखना और उस पानीको गर्म नहीं होने देना । उसमें बार २ ठंडा पानी डालते जाना और सर्पोशका मुख पूर्वोक्त रीतिसे बंद करके नीचे अग्नि लगाना, ऊपर जो अर्क आता है वह अतर होता है। ऐसी रीति है । इस यन्त्रसे अतर काढ़ते हैं । इसको ऊर्ध्वनलिकायन्त्र कहते हैं ।

नं० ३ इस यन्त्रका नाम वालुकायन्त्र है ।

इसकी कृत्य--एक बड़ा मटकेका तबर बनाके उसमें वालू, रेती भरके उसके बीचमें आतशी शीशीमें रससिंदूरादिक जो रसायन द्रव्य है उसे शीशीमें भरके उसको गुर्दी देके बन्द करके उसपर सात कपड़मट्टी करके उस शीशीको उस रेतीके बीच धरके क्रमसे लिखे अनुसार अग्नि देना. शीत होने बाद निकाल लेना. इस यंत्रमें श्रृगांक रससिंदूर, समीरपन्नग रस आदि चीजें बनती हैं । इसको वालुकायंत्र कहते हैं ।
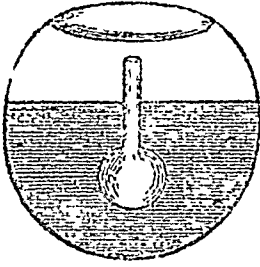
नं० ४ इस यन्त्रका नाम भूमियन्त्र है ।

कोई भूधरयन्त्र भी कहते हैं इसकी कृत्य ऐसी है कि, एक खड्डा सवा हाथ हमचौरस खोदके उसके भीतर एक बालिस्तभरका खड्डा खोदके उसके भीतर दवाका सम्पुट धरके उसपर थोड़ीसी मट्टी डालके रखना, उसके ऊपर जैसी लिखी है ऐसी गोबरी डालके आंच देना. शीत होनेसे निकालके लेना और प्रयोगमें लाना, इसमें भिलावाँ आदिका तेल भी निकलता है, यह भूधरयंत्र है ।
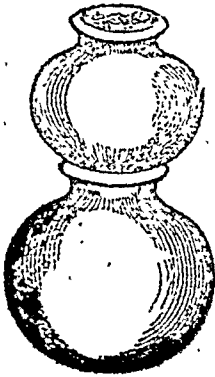
नं० ५ इस यंत्रका नाम दोलायंत्र है।
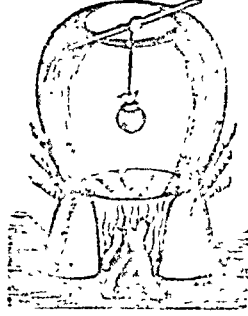
मटका और हांडी लाके उसमें काढ़ा और कांजी और दूध भरके उसमें
जो दवा शुद्ध करनेको पचाना हो वह भरके उस दवाकी पोटली बांधके उसको मजबूत धागा बांधके, ऊपर पतली लकड़ी बांधके उस बरतनके मुखपर रखना. पोटली दवामें डूबने माफिक रखके बरतनका मुख रीति प्रमाण बंद करके लिखे अनुसार आंच देना. पांच पहर या दो पहर अथवा चार पहर बच्छनागादिक शोधनेको देना इसको दोलायंत्र कहते हैं।

नं० ६ इस यंत्रका नाम गर्भयंत्र है।
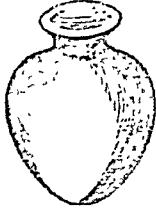
इससे अर्क काढना हो तो उस बरतनमें एक ईंट रखना, उसपर एक कटोरी रखना. उसके आजू बाजू द्रव्य भरना, उस मटकाके मुखपर एक कटोरा रखना. उसको मजबूत बैठाना और उस कटोरामें पानी भरना, वह पानी जैसे २ गरम होवे वैसे २ निकालके ठंडा पानी भरते जाना इससे ऊपरके कटोराको भाप लगके नीचेके कटोरेमें अर्क और तेल जो आवेगा उसे लेके काममें लाना. अग्नि लिखे माफिक लगाना. इससे तेल भी निकलता है. इसको गर्भयंत्र कहते हैं।

नं० ७ इस यंत्रका नाम पातालयंत्र है।
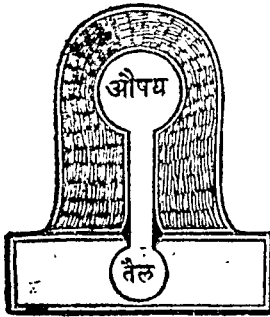
एक हाथभर ऊंचा खड्डा खोदके उसमें चौडे मुखका बरतन रखना
और ऊपरके बरतनमें दवा भरके उसके मुखपर शराव ढकके उसमें छिद्र दो चार करना और नीचेके बर्तनपर औंधा रखना और दोनोंकी संधिको लेप करके मजबूत बैठाना उसमें द्रव्य भरे बर्तनके पेंदेतक मट्टी भरना, उसके ऊपर गोबरीकी अग्नि लगाना. उससे उन छिद्रोंके रस्तेसे तेल और अर्क निकले सो ठंडा करके निकाल लेना और काममें लाना। इसको पातालयंत्र कहते हैं।

नं० ८ इस यंत्रका नाम तेजोयंत्र है ।

एक बरतन तांबाका ऊंचे मुखका लेना उसमें द्रव्य आधे बर्तन तक

भरना और लिखे अनुसार पानी डालना बाद उसके मुखपर दो नलीका सरपोश रखना और चूना गेहूंका आटा मिलाके संधिलेप देना. बाद चूल्हेपर रखके नीचे मंद अग्नि देना और ऊपरके टोपमें पानी भरना, वह गर्म हो तब ऊपरकी नलीसे निकालते जाना और ठंडापानी डालते जाना और नीचेकी नलीके आगे साफ शीशी रखना । उसमें जो अर्क उतरे सो लेना और काममें लाना ।

नं० ९ इस यंत्रका नाम कच्छपयंत्र है ।

बड़ा और चौडा मटकेका खप्पर लेना. उसमें छोटी खली करना. उसमें पारा डालना और पाराके नीचे ऊपर बीड देना. बाद ऊपर सोमलका लेप देना और बंद करना । उसपर ढक देनेके बाद अग्निका पुट देना. इस यंत्रसे पारागंधकको जारन करना चाहिये। इसको कच्छपयंत्र कहते हैं ।

नं० १० इस यंत्रका नाम तुलायंत्र है ।

बैंगनके माफिक दो मूसा करना और बिलस्त भरकी नली करना, एक मूसामें गंधक पाराकी कजली भरना और एकमें पानी भरना और एकमें कजली भरना और दोनोंका संधिलेप करना. नली मजबूद बैठाके बाद सुखा लेना और वालुकायंत्रमें गन्धकके मूसाकी नीचे अग्नि देना. इससे पारा जारण होता है और हरताल, गन्धक, लोहा इनका जारण देना इसको तुलायंत्र कहते हैं १० ।

नं० ११ इस यंत्रका नाम जलयंत्र है ।
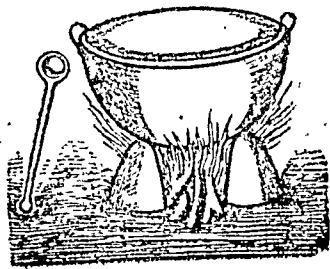
इसकी क्रिया ऐसी है कि ऊपर पानी और नीचे अग्नि और बीचमें शुद्ध पारा गंधक रखके पाचन करना । इसको जलयंत्र कहते हैं । इस यंत्रमें सुवर्ण, अभ्रकसत्त्व, गन्धक इन चीजोंका जारण करना.

एक लोहाका अन्दरसे ऊर्ध्व मुख छोटा बरतन जोड़ना, बरतनको लेप करना, सूखे बाद घोड़ाके सूम बराबर कोयलोंकी आंच देना, सिद्ध होगा और उस लोह पात्रको जोड़ा पात्रको लेके उसमें शुद्ध पारा डालके उसपर लोहका पत्रा ढकके सन्धि लेप करना और उस सन्धिपर बकरेके रक्तमें लोहकीट डालके उसपर लगाना । उसे बारबार सुखाके उसपर पुनः पुनः उसका लेप देना, बाद इनका चूर्ण और गुड़ इनको बबूलके काढ़ेमें पकाके उसका लेप देना और सुखाना. इस लेपसे पानीका सञ्चार नहीं होगा और उसपर खड़ी, नोन, लोहकीट इनको भैंसके दूधमें खरल करके उसका लेप देना, इससे पारा बद्ध हो जाता है, जैसे प्रेमसे प्रियस्त्रीके वश पुरुष हो जाता है । बाद उस पात्रमें जल डालके नीचे अग्नि लगाना और पात्रमें चिपटी हुई मूसा करके उसको पत्रा बैठाके ऊपर लिखे अनुसार करना, इसको जलयन्त्र कहते हैं ।

नं० १२ इस यन्त्रका नाम गौरीयन्त्र है ।

आठ अंगुल चौड़ी लम्बी ईट लेके उसमें ऊखलके माफिक खड्डा
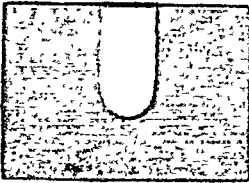
करना. उसको चूना लगाके साफ करना, बाद शुद्धपारासे अभ्रक और सोना और चांदी इनका सत्त्व घोटके की हुई पिट्ठी उस ईंटके खड्डेमें डालके उस पिट्ठीके ऊपर नीचे पिट्ठीके चतुर्थांश गन्धक देना और उस छिद्रके मुख पर खपरी बैठाके संधि लेप करना । सूखे बाद घोड़ाके सूमके बराबर कोयलोंकी अग्नि देना. इसको गौरीयन्त्र कहते हैं।

नं० १३ इसका नाम वज्रमूषा है ।

इसको बनाना हो तब कवडीका चूना आधा भाग, भौंरा मट्टी आधा भाग, लोहका कीट आधा भाग, सफेद पत्थरका चूरा, थोड़े केश, सब चीजें बारीक पीसके भेंड़ीके दूधमें पकाना, बाद दो पहरतक अच्छा कूटना और उसकी गायके स्तनके आकारकी मूसा बनाना । उसको सुखाके उसमें शुद्ध पारा डालके ऊपर दूसरी मूसा ढकके मट्टीका संधिलेप करना. जैसा गुरु कहेगा वैसा करना. यह पारा मारनेको वज्रमूषा कही है ।

नं० १४ महापुट प्रमाण ।

दो हाथ हमचौरस खड्डेको महापुट कहते हैं १ ।

गजपुटका प्रमाण--गजभर हम चौरस खड्डा खोद करके उसमें जंगली गोवरी सुमार एक हजार डालके बीचमें सम्पुट धरके आंच देना. इसको गजपुट कहते हैं २ ।
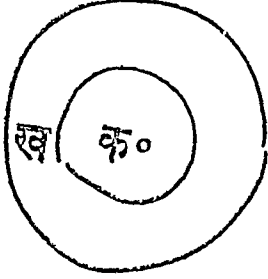
वराहपुट--मुंडा हाथ घनचौरस खड्डा खोद करके उसके भीतर सम्पुट धरके आंच दे तो उसको वराहपुट कहते हैं ३ ।

कुक्कुटपुट-विलस्तभर हम चौरस खड्डा खोद करके पूर्व रीतिसे पुटदेना ४।

कपोतपुट--विलस्त एक हम चौरस खड्डा खोदके आठ गोवरीकी आंच दे तो उसको कपोतपुट कहते हैं ५ । १ महापुट, २ गजपुट, ३ वराहपुट, ४ कुक्कुटपुट, ५ कपोतपुट इन सब पुटोंमें ऊपर लिखे आकारका खड्डा खोद करके उसमें आधी गोबरी ऊपर और आधी गोबरी नीचे रखके बीचमें सम्पुट धरके आंच देना. ठंडा हुए बाद निकाल लेना।

गोबरपुटकी विधि।

गोबरीका चूरा जमीनपर बिछाना, उसपर दवा हो सो रखना यानी सम्पुट रखना. ऊपर गोबरियोंके चूरासे दवाको अग्निपुट देना. इसको गोबरीपुट कहते हैं।

कुम्भपुटकी विधि--मट्टीके घड़ेको अँगुलीके माफिक छेद करना और आधा घड़ा कोयलासे भरना, उसके अन्दर दवा भरना, उसके मुखको शराब बैठाके कपड़मिट्टीको छायामें सुखाना और चूल्हेपर रखके सवा पहर अग्नि देना.इसको कुम्भपुट कहते हैं। इस माफिक पुटक्रिया जानना।

सप्त धातुका शोधन और मारण ।

प्रथम सातोंका नाम--१ सुवर्ण २ चांदी ३ तांबा ४ पीतल ५ शीसा ६ कथील ७ पोलाद इनको धातु कहते हैं, ये सब पर्वतोंसे पैदा होते हैं।इनका

शोधन-सोना, रूपा, तांबा, कथील, जस्त, सीसा, लोहा इनका पत्रा करके अग्निमें तपाके तेलमें, छाछमें, कांजीमें, गोमूत्रमें, कुलथीके काढ़ेमें इनमें सात सात वक्त तपा तपाके बुझाना और त्रिफलाके काढ़ेमें एक-वक्त बुझाना और केलेके कंदके रसमें सात दफे बुझाना. इसी माफिक सब धातुओंकी शुद्धि करना, इससे साफ दोपरहित होके गुणवान् होते हैं।

कथील (रांगा) और शीसा-कथील और शीसा ये दोनों धातुओंमें मैल ज्यादा है इसीवास्ते उनकी शुद्धि और कहता हूं-प्रथम कथीलका पानी करके आकड़ेके दूधमें सात दफे पानी करके डालना और थोहरके दूधमें सात दफे डालना तब शुद्ध होता है। इसे जिस वक्त शुद्ध करना हो उस वक्त मोटे लोहेके कुडछेमें उस कथील (रांगा)को, शीसेको गलाके पत्थरके ऊखलमें आक आदिका दूध भरके और ऊपर लिखे रस भरके उसके ऊपर चक्कीका पाट धरके उस छिद्रमेंसे कथील और शीसा दूरसे डालना. कारण वह उड़के नजदीकके आदमीको दखल करेगा इसवास्ते होशियारीसे डालना।

मारणविधि-सप्त धातुमेंसे कोई एक धातु लेके उसके कंटकवेधी पत्रे करके उस पत्रोंसे चौथा भाग मैनशिल और गंधक आकड़ेके दूधमें खरल करके उन पत्रोंको लेप देके शराव संपुटमें धरके कपड़मट्टी करके गज-पुट देना. इसी माफिक बारह गजपुट देनेसे सब धातुओंकी भस्म होती है।

दूसरा प्रकार-पत्रोंका चौथा भाग पारा और गंधककी कजली लेके निंबूके रसमें या गवारपाठेके रसमें खरल करके पत्रोंको लेप देके सुखाना और संपुटमें धरके कपड़मट्टी करके गजपुट देना. ऐसा सात पुट देनेसे अच्छा भस्म होता है। ३ सोना, गेरू, सज्जीखार, बिडनोन, नवसा-गर कोलीकांदा गुंजा ये सब चीजें आकड़ेके दूधमें खरल करके किसी धातुके पत्रे कराके उन पत्रोंको इन चीजोंका लेप देके और मूसेमें धर रखना और मूसा कोयलोंमें धरके फूकना इससे भस्म होता है।

सोनेका शोधन-उत्तम सोना लेके तपाके पत्रे कर लेना और कांजी, छांछ, निंबूका रस, तेल, कुलथीका काढ़ा इनमें सातवार तपा तपाके बुझा

लेना, इससे शुद्ध होता है १ और गलाके ऊपरके रसोंमें डालना, इससे सोना शुद्ध होता है ॥ २ ॥

मारण विधि--सोनेका चूरा एक भाग, शुद्ध पारा दो भाग, निंबूके रसमें घोटके लुगदी बनाना. गन्धक शुद्ध लेके गोलाके समभाग नीचे ऊपर संपुटमें देके बाद कपड़मट्टी करके जंगली गोबरी बीस लेके उसमें धरके आंच देना. शीतल होने बाद निकालके फिर पुट देना. इस माफिक १४ पुट देना. सोनेकी भस्म उत्तम होती है ।

दूसरा प्रकार--सोनेको गलाके सोलहवां भाग शुद्ध शीसा देना. बाद उसका चूर्ण करके निंबूके रसमें खरल करके उसका गोला करलेना. बाद उसके समभाग गन्धक लेके उस गोलेके नीचे ऊपर देके शरावसंपुटमें गोला धरके कपड़मिट्टी करके जंगली गोबरी ३० का पुट देना. स्वांग शीत होने बाद पूर्वोक्त रीतिसे घोटके पुट देना. इसी माफिक सात पुट देना. इससे सोनेकी भस्म उत्तम होती है. फिर न जियेगी । ३ शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक समभाग लेके कचनारकी छालके रसमें घोटके कजली करना. उस कजलीके समभाग शुद्ध सोनेके पत्रे लेके और पत्रोंको कजलीका लेप देके कचनारकी छाल पीसके लुगदी बनाना और लुगदीकी दो मूसा बना बीचमें लेप दिये हुए पत्रे धरके संधिलेप करना और वह मूसा सरावसम्पुटमें धरके कपड़मट्टी करके कड़ी अग्नि देना. अर्थात् महापुट देना. इस माफिक तीन पुट देनेसे उत्तम और श्रेष्ठ सोनेकी भस्म होती है ।

सोनागुण ।

क्षयमेहार्शपाण्डूनां कामलव्रणऊष्मणि । पथ्यायोगेन दातव्यमौषधं सर्वरोगिणाम् ॥ तथा तेन प्रकारेण सर्वरोगं व्यपोहति ॥

अर्थ--क्षय, प्रमेह, अर्श, पांडुरोग, पीलिया, व्रणरोग, गरमी इन रोगोंमें बाल हरड़ाके सङ्ग देना और योग्य अनुपानसे देना, सर्व रोगोंका नाश करता है ।

हेम त्वायुःप्रदं प्रोक्तं महासौभाग्यवर्द्धनम् । आरोग्यं पुष्टिदं श्रेष्ठं सर्वधातुविवर्धनम् ॥

अर्थ-सोना आयुष्य, सौभाग्य, आरोग्य, पुष्टि करनेवाला और सब धातुओंको बढानेवाला है ऐसा जानना।

सोना खानेवालेपर अपथ्य।

प्रथम जिस चीजके नाममें क (ककार) है वह चीज वर्ज्य करना, जैसे केला, काकड़ी, करेला, कोहला, कांदा, कोथिमीर, कैरी, करवा ऐसे सब मना है और शाक भाजी मांस ये वर्ज्य हैं।

सोनावर्ख गुण।

शूल, विष, अम्लपित्त, हृदयरोग इनका नाश करके पुष्टि करता है. क्षयनाशक, व्रणरोग, अग्निमन्दता, हिचकी, आनाह वायु, कफ, नेत्ररोग और सब रोगोंको फायदा करता है।

अनुपान-सोनेका भस्म प्राणसंकट हरनेके वास्ते आंवलेके चूर्णके साथ देना, शहदमें वचके चूर्णके साथ देनेसे बुद्धि बढ़ती है. कमलके केशरके साथ कांति बढ़ती है, शंखपुष्पीके साथ आयुष्य बढ़ती है, भुईको-हलाके चूर्णके साथ प्रजा बढ़ती है और अन्य रोगोंपर योग्यअनुपानसे देना. सर्वरोगनाश होगा।

सोनाद्राव-पारा और इन्द्रगोपका चूर्ण कांटे इंद्रायनके फलके रसमें खरल करके उसकी सोनाको भावना देना. इससे सोनाका द्राव होता है २ मींडकका हाड़, चरबी, घोड़ेकी लार, टंकणखार, इंद्रगोप, कृमि इनको समभाग मिलाके इसका चूर्ण सोना गलाके उसमें डाले तो सोना पतला रहेगा. इसको द्राव कहते हैं।

अशुद्धसोनादोष-अशुद्ध सोना खानेसे बल, वीर्य क्षीण करता है और शरीरमें रोग पैदा करके विकारी होती है इसीवास्ते शुद्ध करके भस्म करना चाहिये। इति सोनाप्रयोग समाप्त।

चांदी अर्थात् रूपाका मारण और शोधन।

रौप्यकी पैदायश-जब शिवजीने त्रिपुर दैत्यको मारनेके वास्ते क्रोध किया उस वक्त शिवजीके नेत्रसे चांदी पैदा हुई है ऐसा जानना और पारासे और बंगसे भी चांदी होती है। चांदी तीन जातिकी है। १ सजर

२ कृत्रिम ३ खनिज. उसमें कलईसे सजर १, रामपादुकासे कृत्रिम २, पर्वतोंसे और हिमालयसे खनिज होती है ऐसा जानना ३ । चांदी तीन तरहसे कही है १ वंगज २ वैद्यज इनको नहीं लेना और खनिज लेना जो सफेद नरम,जड़ होके तपानेसे काली नहीं पडेगी वह लेना अच्छी है।

चांदीके नाम--रौप्य १ सौध २ तार ३ रजत ४ रूप ५ रूपक ६ शुभ्र ७ रूप्य ८ वसुश्रेष्ठ ९ रुचिर १० ऐसे चांदीके नाम हैं. सो जानना ।

चांदीका शोधन--चांदीका पत्रा पतला करके हतियाके रसमें तपा तपाके बुझाना. इससे शुद्ध होती है. २ शुद्ध चांदी लेके उसमें थोड़ा शीसा देके शोधन करना. बाद उसका पतला पत्रा करके कंटकवेधी करके उसको अम्ली, द्राक्षा इनके रसमें शोधन करना. इससे उत्तम होता है ।

चांदीका मारण--चांदीसे चौथा भाग हरताल लेके निंबूके रसमें खरल एक प्रहर करना. बाद चांदीके पत्रेको लेप देके शरावसंपुटमें धरके कपड़मट्टी करके तीस गोबरीकी आंच देना. इस प्रकार चौदा आंच देनेसे उत्तम भस्म होती है १ । एक भाग माक्षिक लेके थोहरके दूधमें एक प्रहर खरल करना और तीन भाग चांदीके पत्रे लेके उनको लेप देके शराव-संपुटमें धरके कपड़मट्टी करके तीस गोबरीकी आंच देना. इस माफिक चौदा पुट देना.इससे चांदीकी भस्म हो जायगी २।एक भाग हरताल लेके सफेद कुंभीके रसमें एक प्रहरतक घोटना बाद तीन भाग चांदीके पत्रेको लेप देके शरावसंपुट धरके कपड़मट्टी करके तीस गोबरीकी आंच देना. इसी माफिक सोलह पुट देनेसे चांदीकी खाक उत्तम होती है ३ । पारा, गन्धक समभाग लेके कजली करना और कांजीमें खरल-कर चांदीके पत्रेको लेप देना. मट्टीके संपुटमें रखके गर्भगुप्त नामके यन्त्रमें रखके एक दिन गहरी अग्नि देना. इससे उमदा भस्म होती है ४ । वंग, गन्धक, हरताल इन तीनोंको आंकड़ेके दूधमें खरल करना और चांदीके पत्रोंको लेप देना. बाद घोड़इंद्रायनके फलोंके डण्टेको पीसके लुगदी करके उसमें वह पत्र रखके गजपुट अग्नि देना. इससे उत्तम भस्म होती है ५ । सोनामुखी और शिंगरफ समभाग चूर्ण करके वह चूर्ण नीचे ऊपर देके बीचमें चांदीके पत्र धरना और गजपुट तीन देना. इससे भस्म होती है ६।

चांदीके गुण—चांदी तुरस, मीठी, अग्निदीपन, चिपचिपी, खट्टी, सारक, लेखन, वीर्य, मेद, आयुष्य बढानेवाली, पुष्टिकर, बल देनेवाली, कांति करके वृद्धको तारुण्यकर, मंगलदायक, प्रीति करनेवाली, आरोग्य देनेवाली, श्रेष्ठ है और पांडुरोग, क्षय, वली, पलित, विद्-दोप, पित्त, वात, गुल्म, कफ, मेह, श्वास, प्लीहा, यकृत, सूजन, खांसी इन रोगोंका नाश करनेवाली है ऐसा जानना।

चांदीकी भस्म शकरसे दाहनाशक, त्रिफलासे वातपित्तहर, त्रिसुगन्धसे प्रमेहहर और योग्य अनुपानसे सर्व रोगोंका नाश करती है।

अशुद्ध चांदीका दोप—अशुद्ध चांदीकी भस्म पांडु, खाज, गलग्रह, मलबंध, वीर्यनाश, बलहानि, मस्तकशूल इनको पैदा करती है इसवास्ते शुद्ध करना चाहिये। इति चांदीका प्रयोग समाप्त।

तांबाकी पैदायश और शोधन विधि।

तांबेकी पैदायश—सूर्यका तेज पृथ्वीपर पड़ता है और पर्वतोंपर पड़ता है उससे तांबा पैदा होता है, ऐसा पुराणोंमें लिखा है. वह तांबा दो प्रकारका है-एक नैपाली, एक म्लेच्छ है। इनमें नैपाली अतिसाफ और नरम है। म्लेच्छ अतिकाला और कठिन है सो नहीं लेना. जो तांबा रंगमें लाल, नरम, चिकना, घण मारनेसे फटे नहीं, सो तांबा लेना. फायदेमंद है. तांबाके दोप आठ हैं और विषमें दोष एक है. इसवास्ते तांबाकी शुद्धि अच्छी करनी चाहिये वह आठ दोष इस माफिक हैं—१ उलटी २ भ्रांति ३ ग्लानि ४ दाह ५ शूल ६ खाज ७ जुलाब ८ वीर्यनाश ऐसे आठ दोष साफ निकालके शुद्ध करना।

तांबाकी शुद्धि कहता हूं—अच्छा देखके नैपाली तांबा लेना और कंटकवेधी पत्रे करना और अम्लवर्गमें शोधन करके बाद नींबूका रस, चूकेका रस, कांजी, आंवला, गंवारपाठा, तुलसीका रस, गायका दूध इन सबमें तीन बार तपा तपाके बुझाना. इस माफिक करनेसे तांबा शुद्ध होता है. बाद आकका दूध और थोहरके दूधमें सांभरनोन डालके खरल करना. बाद तांबाके पत्रोंपर लेप देके निर्गुंडीके रसमें तीन बार तपाके बुझाना और आकड़ेके दूधमें बुझाना और थोहरके दूधमें बुझाना. इससे तांबा शुद्ध होता है।

और अम्ली और गोमूत्रमें नोन डालके उसमें तांबाके पत्रे डालके एक प्रहर पकाना. इससे तांबा शुद्ध होता है ।

तांबाके आठ दोष नाशनेको दूसरी अलग २ कृत्य ।

तेल गोमूत्रमें बुझावे तो उलटी नष्ट होती है, कांजी कुलथीके काढामें भ्रांतिनाश होती है.थोहर,कांजी और गौके दूधमें ग्लानिनाशक है.अम्ली निंबूके रसमें संतापनाशक है.गवारपाठा और नारियलका पानीमें शूलनाशक है. गायका घी और दूधसे निर्बलता नाशक है.सूरणकंदका और दहीका पानीमें जुलाबनाशक है. शहद,द्राक्षाके रसमें वीर्यनाशक है. इस माफिक हर एकमें तीन तीन वक्त तपा तपाके बुझाना.इससे आठों दोष तांबाके जाके हजारों गुण बढ़ते हैं इस माफिक तांबाको शुद्ध करना चाहिये १।

ताम्रभस्मकी प्रथम विधि—तांबाके छोटे छोटे कंटकवेधी पत्रे करके हलकी अग्निसे तीन दिन पचाके निकाल लेना. उसका चौथा भाग शुद्ध पारा लेके खरलमें नींबूके रससे पत्रा सहित घोटना. बाद पत्रोंसे दूना गंधक लेके नींबूके रससे घोटके पत्रोंमें लेप देना. उनका गोला बनाके बाद मीनाक्षी, चूका,पुनर्नवा इनमेंसे जो मिले उसे लेके पीसना और गोलेको लेप एक अंगुल मोटा देना. बाद वह गोला मटकामें धरना उसपर मट्टीका शराव ऊंधा ढकना ऊपरसे मुखतक रेती भरना और राख नोन पीसके मटकाका संधिलेप करना. बाद मटकाको चूल्हेपर धरके और हलकी मध्यम और गहरी आंच देना, चार प्रहर तक देना. शीतहोनेके बाद काढ़के सुवर्णकंदके रसमें एक दिन खरल करना, गोला बनाके उसके आधे भाग गंधकको घीमें खरलकरके कपडमट्टी करके गजपुट देना. स्वांग शीतल होनेके बाद निकाल लेना. खरल करके रखना. यह भस्म उत्तम होती है । उलटी, भ्रांति आदिक कुछ उपद्रव नहीं करेगी ऐसा जानना ।

दूसरी विधि—तांबाके कंटकवेधी पत्रा करके उसके नीचे ऊपर लगाना. बाद चूकेकी लुगदीमें धरके वह लुगदी बरतनमें धरके वह बरतन चूल्हेपर धरना और एक प्रहर अच्छी अग्नि देना. इससे अच्छी भस्म होती है वह सब कामपर चलती है २ ।

तीसरी विधि--पारा, गन्धक समभाग लेके नींबूके रसमें घोटना और तांबाके पत्रोंको लेप देना और शरावसंपुटमें धरके कपड़मट्टी करके वराहपुटदेना. स्वांगशीतल होनेसे निकाल लेना और पञ्चामृतका पुट देके गजपुट देना. स्वांगशीतल होनेसे निकालके खरल करके शीशीमें रखना. बाद देवताओंकी पूजाकरके १ गुञ्जा देना. सर्व गुण करेगी. तिलव्रण यानी कागलांका खेत जिसे तिलपर्णी भी कहते हैं उसके रसकी भावना तांबाके पत्राको देके गजपुट देना. सफेद खाक होती है । तिलव्रणमें दुर्गंध बहुत रहती है, फूल सफेद, मोठकीसी फली आती है ३ ।

चौथी विधि--पारा १ भाग, गन्धक २ भाग, दूधीके रसमें खरल करके पत्रको लेप देके शरावसंपुटमें धरके कपड़मट्टी करके गजपुटकी अग्नि देना. इससे अच्छा भस्म होता है वह सर्व कामपर चलता है ४ ।

पांचवीं विधि--तांबा शुद्ध करके कानससे बूरा कर लेना. उसके समभाग पारा डालके जँभीरीके रसमें खरल करके दोनोंके समभाग गन्धक लेके खरल करना. बाद शरावसंपुटमें डालके कपड़मट्टी करके गजपुट देना. इससे तांबेकी भस्म होती है ५ ।

छठी विधि--गन्धक, मनशिलको समभाग नींबू और आंकड़ाके दूधमें खरल करना. बाद तांबाके पत्राको लेप देना, शरावसंपुटमें धरके कपड़मट्टी करके गजपुट देना. इससे तांबेकी भस्म होती है ६ ।

सातवीं विधि--जमालगोटा चार तोला और रीठा चार तोला लेके दोनोंको पीसके लुगदी करना. उसमें शुद्ध तांबा धरके दो शेर चिथड़े लेके दो मूसा जस्तकी बनाके उनमें वह गोला धरके ऊपर चिथड़े लपेटके गोबरीमें धरना और अग्नि देना. तीसरे दिन काढ़ना. सफेद तांबाकी भस्म होती है ऐसा जानना ७ ।

तांबेकी परीक्षा--जो भस्म रंगसे, बरनमें तांबाकासा रंग और मोरके गर्दनके माफिक रंगसे युक्त और हाथमें लेके मसलनेसे जिसका आटा हो जावे और पानी पर तेरे और दहीमें डालनेसे नीली नहीं पड़े वह भस्म अच्छी होती है । वह सब गुण करेगी ।

ताम्रगुण-ताम्र लेखन, रेचन, सारक, अग्निदीपन, कोढ़, प्लीहा, ज्वर, कफ, वात, श्वास, खांसी, सुस्ती, शूल, कृमि, उलटी, पांडु, भँवल, अतिसार, मूर्च्छा, गुल्म, क्षय, भ्रम, मस्तकशूल, प्रमेह, व्रण, रक्त, वात, अरुचि, आलस्य, बली, पलित रोग इन सताईस रोगोंका नाश करनेवाला अकेला ताम्र है और योग्य अनुपानसे सर्व रोगोंको जीतता है।

अपक्व तांबेके दोष--कच्चा भस्म, उलटी, जुलाब, सन्ताप, मूर्च्छा, आयुष्यनाश, भ्रम आदिक बहुत रोग पैदा करता है।

लीलाथोथेसे तांबा निकालनेकी विधि।

पहली विधि-लीलाथोथेसे चौथा भाग टांकणखार लेके शहद और घीमें खरल करना. उसे मूसमें धरके कोयलोमें भत्तेसे फूँकना. इससे द्रव होके तोतेके चोंचके रंगका तांबा निकलता है १।

दूसरी विधि-लीलाथोथा कडु करञ्जके तेलमें एक दिन धरना. उसका चौथा भाग टंकणखार देके मूसमें धरके फूँकना. इससे रक्तके माफिक तांबा निकलता है। और आदमीके काले केश डालके फूँकना. इससे रक्तके रंगका तांबा निकलेगा। इस माफिक भूमिनागका और मोरपरोंका तांबा इसी विधिसे निकलता है और सत्त्व निकलता है।

तीसरी विधि-भूनाग चार जातिके हैं. वे बरसातके दिनोंमें जमीनमें होते हैं। उनमें जिस जमीनमें सोना पैदा होता है उस जगहके मिलना मुश्किल है लेकिन् तांबा पैदा हो उस जमीनका लेना फायदेमंद है. उसे लेके हलदीका चूर्ण, गुड़, गूगल, लाख, ऊर्ण, मच्छ, खली, टंकणखार सब एकत्र करके खरल करके अग्निपर रखके फूँकना. इससे तांबाका सत्त्व निकलता है, इसी माफिक मोरके परोंका तांबा निकलता है ३।

इस तांबाके गुण-लीलाथोथेके तांबकी अगूँठी यानी छल्ला आदित्य वारको बनाना वह मूँदड़ी पानीमें खोलके वह पानी पीनेको देना. इससे सर्व जातिके विषका नाश होता है और कष्टी स्त्रीको देनेसे खलास होता है. भूतबाधाका नाश होता है. व्रणको लगानेसे व्रण जाता है और नेत्रमें फिरानेसे सर्व नेत्ररोग नाश होता है. ऐसा सर्वशास्त्रोंमें प्रमाण है।

इति तांबाका प्रयोग समाप्त ॥

वंगका शोधन और मारणविधि।

रांगे(कथीर)की उत्पत्ति कहते हैं। केरंग त्रिछु ऐसा कथीर कहा है सो दोप है। वह कथीर दो तरहका है-१ खुरक २ मिश्रक है. उसमें खुरक अच्छा है और मिश्रक खराव है। खुरकरांगा चांदीके माफिक होके चंद्रमाके माफिक चमकता है उसे लेना।

वंगका शोधन--हलदीका चूर्ण निरगुंडीके रसमें डालना और कथीरको गलाके तीन वक्त उसमें बुझाना, शुद्ध होता है १।

दूसरी विधि--कथीरको पतला करके गोमूत्रमें,खटाईमें,खारके पानीमें, आकके दूधमें, थोहरके दूधमें हरएकएकमें सात बार बुझाना और कदमके रसमें सात वक्त.धोना. इससे शुद्ध होता है। पूर्व रीतिसे इस रसको ऊखलमें डालके ऊपर चक्कीका तल धरके बाद कथीर ओतना, नहीं तो बैठे आदमीको इजा होगी २।

कथीर मारणकी विधि।

लोहेकी कढ़ाईमें कथीर डालके चूल्हेपर चढ़ाना और आमकी लकड़ीसे घोटते जाना, घोटते वक्त कथीरका चौथा भाग अपामार्गका चूर्ण करके उसे थोड़ा थोड़ा कथीपर डालते जाना इस माफिक सुमार दो प्रहर अग्नि देना. जब उसकी भस्म हो जावे तब शराव ढकके लाल कर लेना, बाद उतार लेना, चौथा भाग शुद्ध हरताल लेके उसमें डालके निंबूके रसमें अथवा गवारपाठेके रसमें डेढ पहरतक घोटना, बाद उसकी टिकियां बांधके शरावमें डालके कपडमट्टी करके गजपुट देना. इससे सात पुटमें वंगभस्म होता है और संपुटमें नहीं धरना, लेकिन् पीपलकी छाल धरके सात पुट देना और पुटमें हरताल नहीं डालना १। पीपलकी अथवा इम्लीकी सूखी छाल कूटके उसको तरटपर बिछाके उसपर कथीरके छोटे २ गेहूंके माफिक टुकडे करके उसपर रखना, ऊपरसे छालका चूर्ण डालना, ऊपरसे फिर टुकडे डालना,इस माफिक दश पांच जितने खुशी हो उतने थर डालके उसकी गठड़ी बांधके बड़ी खपरीमें धरके बड़ा खड्डा खोदके नीचे ऊपर गोबरियां देके गजपुट देना. स्वांगशीत होनेसे निकाल लेना

और वंगकी खीलें युक्तिसे चिमटासे चुन लेना, खरल करके छान लेना और काममें लाना २। इसमाफिक अजवाइनमें, हलदीमें, भांगमें, पीपलीकी छालमें, इम्लीकी छालमें वंगभस्म होता है सो करना चाहिये।

धातुवेधी कथीलकी विधि।

सफेद अभ्रक, सफेद कांच, सेंधवलोन, टंकणखार, बच्छनाग ये चीजें थूहरके दूधमें खरल करके कथीलके पत्रेको चौथे भाग कल्कका लेप देके अंध मूसेमें धरके भाथा(धौंकनी)से फूकना, जब पतला हो तब पूर्व रीतिसे तेलमें डाले पीछेसे पानीसे लेप करकेसात वक्त गलाके पुत्रजीवीके तेलमें डालना, इससे कुंदपुष्प अथवा चंद्रमासरीखी चांदी होती है १। हरताल, अभ्रक, बच्छनाग, पारा, टांकणखार इन चीजोंमें कथील डालके पीपलके छालकी अग्नि देना. इससे चांदी होती है २। कथील खपरेमें डालके चूल्हेपर धरना और नीचे अग्नि लगाना और खैरकी लकड़ीसे घोटना, वंगभस्म होती है ३। हलदीका चूर्ण करके खपरेमें बिछाके उसपर कथीलका पत्रा रखना, ऊपर हलदीका चूर्ण डालना, डालके कपड़ मट्टी करके गजपुट देना इससे वंगभस्म होता है. उस भस्मके चौथा भाग सोरा मिलाके एक घंटा मंदाग्नि देना. पीछे सफेद अच्छी भस्म हो सो लेना और योग्य अनुपानसे सब रोगोंको देना ४। शीणका तरटका टुकड़ा लेके उसपर तिल, इम्लीकी छाल, एकत्र कूटके वह चूरा उस तरटके टुकड़ेपर बिछा देवे सुमार अंगुल दो अंगुल उसपर कथीलके पत्रोंका टुकड़ा करके बिछावे ऊपर फिर चूरा डाले. फिर कथीलके टुकड़ा डाले इस माफिक सब टुकड़े धरके बांधके मट्टीका लेप करके गजपुट अग्नि देवे, स्वांगशीत होनेके बाद युक्तिसे निकाल लेवे जो चावलकी खीलोंकी माफिक खीलें होवें उन्हें आस्तेसे खरल करके रक्खे ५। शुद्ध कथील लेके दशमा भाग पारा लेके आकड़ेके दूधमें खरल करके खपरेमें गलाना, नीचे तेज अग्नि लगाके अनारकी लकड़ीसे घोटना. इससे वंगभस्म होता है ६। ढाकके रसमें हरताल घोटके कथीलके पत्राको लेप करके शरावसंपुटमें धरके गजपुट देना इससे वंगभस्म होता है ७। कथील मासा तीन और शीसा

रत्ती १ इस माणिक खपरमें गलाके लोहेकी कड़छीसे घोटना. एक प्रहरमें काला भस्म होगा. उसको एकत्र करके उसके ऊपर संपुट ढकके नीचे तीव्र अग्नि दे जिससे खाक सफेद होती है ८।

धातुवेधी भस्म–कथील (रांगा) का चूर्ण भिलावाँके तेलमें एक दिन घोटके भैंसके सींगमें भरके महापुट देना औरस्वांग शीत होनेसे निकाल ले और फिर इस विधिसे सात पुट देनेसे वंगभस्म मलरहित होती है और पारदकर्ममें योजना योग्य है और चौसठवाँ भाग तीखा पोलाद गलाके उसमें डालना जिससे करडा रूपा होता है ऐसा जानना ९।

वंगभस्मका गुण–वंगभस्म कडू, भेदक, दीपन, पाचन, रुचिकर, बुद्धिप्रद, कांतिकारक, ज्वरनाशक, निरोगीकर, आयुष्य देनेवाला, धातु स्थिर करनेवाला है और खांसी, श्वास, गुल्म, हृदय, क्षय, परमा सब जातिके वायु: मस, कफ, क्षय, पांडु, शूल, यकृत्, उलटी, स्त्रियोंका सोमरोग, कृमि, अग्निमंद इतने रोगोंका नाश करके फायदा करता है और वंगभस्म सेवन करनेवालेका वीर्य स्वप्नमें कभी पतन न होगा १०।

अशुद्धवंगका दोष–अशुद्धवंग कुष्ठ, गुल्म, पांडुरोग, प्रमेह, अग्निमंदता, रक्तपित्त, बलनाश आदि बहुतसे रोग पैदा करता है इस वास्ते शुद्ध करना चाहिये जिससे दोष–निवारण करके फायदा करता है ११।

वंगभस्मका अनुपान–कपूरके साथ मुखदुर्गंध पर देना १, पुष्टिके वास्ते जायफलसे २, तुलसीके रससे प्रमेहको ३, घीमें पांडुरोगपर ४, टंकणखारसे गुल्म रोगको ५, हलदीसे रक्तपित्त पर ६, शहदमें बल बढ़नेको ७, मिश्रीसे पित्तपर ८, तांबूलसे व्यानवायुपर ९, पिपलीसे मंदाग्निको १०, हलदीसे श्वास रोगको ११, चंपाके रससे मुखदुर्गंधिपर १२, निंबूरससे दाहके वास्ते १३, कस्तूरीसे स्तंभनपर १४, खैरके काढ़ासे चर्मरोगपर १५, सुपारीसे अजीर्णपर १६, असगन्धसे हड्डी मजबूत होनेको १७, दूधसे धातुपुष्टिपर १८, भांगसे स्तंभनपर १९, लहसनके रससे बादीपर २०, समुद्रफल और निर्गुंडीके रससे कोढ़ रोगपर २१, अपामार्गकी मूलीसे षंढ रोगको २२, समुद्रफल, लौंग, वंग, तांबूलरस मिलाके लिंगपर लेप दे तो

लिंग बढ़ेगा २३, गोरोचन, लवंग इनसे शिरपर तिलक करे तो सभा मोहित होती है २४, एरंडजड़के रससे शिरको लेप करे तो शिरका रोग-नाश होता है। इति वंगभस्मविधिः समाप्तः ।

जस्तकी विधि ।

जस्तको खरपरंग और खापर शुद्ध कहतेहैं। वह दो प्रकारका है एक जस्त और दूसरा शवक है और खपरियाको कलखापरी कहते हैं, वह इसमें है, उसमें खापरी गुणयुक्त है वह लेना ।

जस्तकी शुद्धि—जस्त पतला करके इक्कीस दफे दूधमें डालनेसे शुद्ध होता है।

जस्तकी भस्म—जस्तको खपरेमें डालके चूल्हेपर चढ़ाना, नीचे तीव्र अग्नि देके नीमकी लकड़ीसे हिलाते जाना पीछे भस्म होनेसे लेके उसको खरलमें डालके और सिंदी (खजूर), गवारपाठा, हरड़ा, बहेड़ा, आंवला, भांगरा इन छः चीजोंके रसमें खरल करके हरएक चीजके रसमें बत्तीस अग्नि पुट देना. पीछे इन छः चीजोंके रसमें भिगोके एक पुट देना. बाद पंचामृतका एक पुट देना. इससे अति उत्तम भस्म होती है. इसे अच्छे बर्तनमें भरके रखना और रोगीका बलाबल देखके अनुपानसे दो रत्ती देना. सब रोगोंका नाश करती है।

जस्तभस्मका गुण—तुरस, कटु, शीत ऐसी है और कफ, पित्त, परमा, पांडु, श्वास इनका नाश करनेवाली और नेत्रोंको फायदा देने वाली है।

अनुपान—जस्तभस्म गायके जूने घीसे नेत्रको फायदा देने वाली है. तांबूलके रससे देना, परमाको फायदा करती है. टाकलीसे अग्नि प्रदीप्त करती है. त्रिसुगंधसे त्रिदोषका नाश करती है. इति जस्तविधि समाप्त।

शीसेकी विधि ।

शीसेकी उत्पत्ति—पूर्व ही वासुकी नागने अपनी सुंदर कन्या देखनेसे वीर्य गिरा दिया उससे शीसा उत्पन्न हुआ है. शीसा सब रोगोंका नाश करता है. वह दो जातिका है १ कुँवार२ समल जिसमें कुमाररसायनादिकमें योजनेको श्रेष्ठ है उसकी परीक्षा कहते हैं। जो शीसा तपानेसे जल्दी पतला होता है और

वजनमें भारी, तोड़नेसे अंदरसे चमकता है, ऊपरसे काला, दुर्गन्ध युक्त ऐसा है वह शीसा अच्छा है, वही लेना दूसरा नहीं लेना १।

शीसेका शोधन–शीसा तपाके तीन वक्त आकड़ेके दूधमें बुझाना. इससे शुद्ध होता है २। लोहाके वर्तनमें शीसा गलाके त्रिफलाके काढ़ामें और गवारपाठेके रसमें अथवा हाथीके मूतमें सात सात दफे बुझाना. इससे शुद्ध होता है और पूर्व सत धातु मारण लिखा वैसा करना १।

शीसामारणविधि–शीसेमें मनशिल डालके मजबूत खपरेमें डालके चूल्हेपर रखना, क्रम विधिसे आंच देना और अडूसाकी लकड़ीका घोटा बनाके उसे घोटते जाना. इससे खपरेमें भस्म होगा. अच्छा भस्म होनेतक अच्छा अग्नि लगाना. इससे शीसेका भस्म होता है १। शीसा और अगस्ता (हातगा) की छाल एकत्र कूटके शीसाका पत्रा करना इसे खपरेमें डालके पतला करना और अडूसा और अपामार्गके खार शीसाके चौथा भाग खपरेमें डालके अडूसाकी लकड़ीसे एक प्रहर घोटना. अग्नि देते जाना, जब सबका भस्म हो जावे तब सब इकट्ठा करके लाल कर लेना, बाद खपरेमेंसे निकालके आठवां भाग मनशिल मिलाके अडूसाके रसमें घोटके सुखाके गजपुट देना. इस माफिक सात गजपुट देना जिससे शीसेकी भस्म सिंदूरके माफिक लाल होती है सो लेके काममें लाना२। शीसेको खपरेमें डालके पतला करके मनशिल डालके घोटना, बाद गन्धक और निंबूके रसमें पुट देना. इससे जल्दी भस्म होता है, इसी माफिक हरतालका चूर्ण देके पीछे मनशिलका चूर्ण देके खरल करके निंबूके रससे घोटके पुट देना. इससे भस्म होता है ३। शीसा, मनशिल समभाग लेके अडूसाके रसमें खरल करके तीन गजपुट देना. इससे भस्म होता है ४। शीसेके पत्राको मनशिल समभाग तांबूलके पानके रसमें खरल करके पत्राको लेप देके संपुटमें धरके कपड़मट्टी करके गजपुट देना. इस माफिक बत्तीस गजपुट देनेसे नागभस्म होता है फिर नहीं जीवेगा. इसको नाग भस्म कहते हैं ५। शीसाको लोहेकी कढ़ाईमें डालके पतला करके कलखापरीका चूर्ण समभाग लेके कढ़ाइमें शीसेके साथ डालके नीचे अग्नि लगाके एक प्रहर तक घोटते जाना. पत्थरके घोटासे और पोलादके घोटासे, बाद शिंगरफका चूर्ण शीसेके

समभाग डालके पाषाणमुष्टिसे घोटना पीछे इक्कीस दिनतक प्रहर अ
लगाके पचाना. इससे केशरके रंगके माफिक नागभस्म होगा. यह भस
६४ तोला चांदीमें एक तोला देनेसे दिव्य सोना होता है ६। शुद्ध शीस
खपरेमें डालके आकड़ेकी लकड़ीसे घोटते जाना और पिपलीका चू
डालते जाना. ऐसे आठ प्रहर घोटते जाना. नीचे अग्नि लगान
इससे उत्तम भस्म होता है ७। शुद्ध शीसा खपरेमें डालके चूल्हेप
धरना. नीचे अग्नि लगाते जाना. आकड़ेकी लकड़ीसे घोटना, उस
अन्दर पिपलीकी छालका चूर्ण डालते जाना, दो पहरमें सिन्दूरके माफि
होगा. बाद उसको लेके उसमें समभाग गंधक पारेकी कजली देके ती
दिन घोटना. बाद गजपुट देना. उसके बाद सौ पुट गवारपाठेके रसमे
घोट घोटके गजपुट देना. इससे उत्तम नागभस्म होता है।

अशुद्ध शीसेका दोष ।

अशुद्ध शीसेकी भस्म, परमा, क्षय, प्लीहा, कोढ़, गुल्म, अरुचि, पांडु, कफ, खून-बिगाड़, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, पथरी, शूल, भगंदर पैदा करती है इस वास्ते शुद्ध करके मारण करना।

शीसाभस्मका गुण—शीसेकी भस्म कडू, वृष्य, उष्ण, पित्तकर, स्निग्ध, प्रीतिकर है और क्षय, वात, गुल्म, पांडु, श्रम, भ्रम, कृमि, कफ, शूल, परमा, खांसी, कुष्ठ, संग्रहणी, गुदरोग, अर्श, अग्निमंद, उदर, आमवात आदिक सर्व रोगोंका नाश करती है और सर्पके माफिक पराक्रम करके सौ १०० हाथीका बल देती है और उमर बढ़ाती है. इसका अनुपान वंगके माफिक जानना और अनुपानसे देना।

लोहकी विधि ।

लोहकी पैदायश—पूर्व ही देवताओंने माली दैत्यको युद्धमें मारा, उसके शरीरसे अनेक जातिका लोह पैदा हुआ है। वह लोह तीन प्रकारका है १ मुंड २ तीक्ष्ण ३ कांत ऐसा जानना. उसके नाम बहुत हैं सो इस मुजब १ हुताल २ तार ३ बट ४ अजर ५ कालक। उसमें कांत पांच प्रकारका है. वह कांत दूध उफननेके वक्तमें दूधमें कांत डालनेसे दूध पर्वतके आकार होता है लेकिन उफनके नहीं जाता।

दूसरी परीक्षा–कांचके बर्तनमें पानी भरके उसपर तेलकी बूंद डाले तो तेल पसरता नहीं और पानीमें हींगका गंध आता है और निंबूका रस कांतके बरतनमें कड़वा होता है । उस बरतनमें दूध उफनते वक्त बाहर न गिरके ऊँचा चढ़ता है । कांतके बर्तनमें तपाके उसमें पानी लगाया हुआ चना डाले तो चनेकी झाल जल जाती है। उसको कांत-लोह और कांतसार कहते हैं ।

तिखालक्षण–कांतके बदले तिखा लेना, वह तिख्या अच्छा और मृदु होता है। तिखा पत्तापर पटकनेसे रूपाके माफिक आवाज निकलता है। मैलरहित अच्छा लेना चाहिये और मुण्डा लोहा ऐसा न लेना चाहिये ।

तिखाशोधन–लोहाके पत्रे करके खरगोशके रक्तका लेप करके तपाना और त्रिफलाके काढ़ेमें तीन दफे बुझाना और अमली और आकड़ेके दूधके जुदे २ तीन २ लेप देके त्रिफलाके काढ़ेमें बुझानेसे शुद्ध होता है। सब ६४ तोला त्रिफला लेके आठ गुणे पानीमें काढ़ा करके अष्टमांश उतार लेना और उसमें बीस तोला तीखेका पत्रा कराके तपा तपाके सात दफे उस काढ़ेमें बुझाना. इससे निर्दोष होके शुद्ध होता है १।

पोलादकी भस्मविधि ।

तिखेका कानससे बूरा करके बाद उसमें बारहवां भाग शिंगरफ डालके गवारपाठेके रसमें दो पहरतक खरल करके शरावसंपुटमें धरके कपड़-मट्टी करके गजपुट देना, इस माफिक सात गजपुट देनेसे अच्छा भस्म होता है २। पारा एक भाग, गंधक दो भाग दोनोंको खरलकरके कजली करना. उस कजलीके समभाग पोलादका चूरा लेके गवारपाठाके रसमें दो पहर खरल करके गोला बनाके तांबेके कटोरेमें गोला धरके कटोरा धूपमें धरना और गोलाके ऊपर लाल एरंडके पत्ते दो और तीन ढकना. बाद शुमार चार घड़ीतक धूपमें रखना, गरम होने बाद इसपर मट्टीका शराव ढकके धान्यके कोठामें गाड़ देना, बाद चौथे दिन निकालके कपड़ेसे छानके बाद पानीमें तैराके देखना,जो तैरे तो अच्छी है ३। लोहे का चूरा चार तोला, सोरा कलमी चार तोला,असगंध चार तोला लेके गवारपाठेके रसमें एक दिन खरल करके गोला बांधके उस गोलेको

एरंडके पत्ते लपेटके कपड़मट्टी करके गजपुट देना. स्वांग शीत होने बाद निकाल लेना. उसका रंग सिंदूरके माफिक होता है। वह पानी पर तैरती है, सब कामको चलती है ४ । पोलादके चूरामें अनारके पत्तोंका रस डालके सूर्यपुट सात देना. रस रोज नवा डालना, सात दिन उसीही रस में घोटके दो गजपुट देना. इससे लोहाकी भस्म पानीमें तैरनेवाली होती है। वह सब रोगपर चलती है ऐसा गुरुका वचन है ५। जितना पोलाद का चूरा हो उसके सम भाग नवसादर लेके जरासा गरम पानी डालके कपड़में बांधके एक पहरभर रखना, पीछे हाथसे मसलके आटा कर लेना, वह पानीपर तैरता है, सब कामपर चलता है६। तिखेका चूरा लेके उसको थोहर, आक, नागकेशर, कललावी, मोथा, चित्रक, गुंजा, दूधी, हिंगोरा, हलदी, दारुहलदी, पतंग, अर्जुनकी छाल, राई, छाछ इन सोला चीजोंके रसमें और जिसका रस न हो उसके काढ़ामें घोटना और गजपुट देना. इससे तिखे आदिक सब लोहकी भस्म होती है७ पोलादके चूर्णके समभाग पारा गंधककी कजली, गवारपाठाके रसमें घोटके दोपहरतक कांसेके बर्तनमें गोला धरके धूपमें धरना. इससे भस्म होता है ८ । पोलादका चूरा लेके उसको त्रिफलाके काढ़ाकी, रक्तपुनर्नवाके पत्तोंके रसकी, चंडालकांदेकी, चूकेके रसकी, जलभांगरेके रसकी पुट देना. इससे जामुनके रंगकीसी भस्म होती है ९ । जामुनके रसकी पोलादके चूराको २००पुट सूर्यआदि से देना. बाद अग्निपुट देना. ऊपर लिखे हर एक वनस्पतिका अमृतीकरण करना। सर्व जातिके भस्मको दुगुने त्रिफलाके काढ़ामें खरल करके मध्यम एक पुट देना. इससे सब गुणदायक पोलादकी भस्म होती है।

पोलादकी परीक्षा।

सब पोलादकी भस्म रंगमें काजलके माफिक पाराके संयोगसे बनी हुई और पानीपर तैरने वाली भस्म शुद्ध है. उसके खानेसे सब रोग जाके गया हुआ बीज पीछे आता है ऐसा रसायनमें लोह श्रेष्ठ है।

लोहेका गुण--जंतुविकार, पांडुविकार, वात-पित्त-विकार, क्षीणता, क्षय, स्थूलपना, अर्श, संग्रहणी, कफ, सूजन, प्रमेह, गुल्म, तिल्ला, विषबाधा, आमवात कोढ़, वलीपलितरोग, रक्तवात, जरा, मरण, पीलिया इन सब रोगोंका नाश

करनेवाली है ओर स्त्रीकी इच्छा देनेवाली, कांति, नेत्रका तेज और अनेक गुण देनेवाली रसायन श्रेष्ठ है ।

लोह—अनुपान—शूलपर हींग और घीसे, जीर्णज्वरपर शहद और पिपलीसे, वादीपर लहसन घीसे, श्वासपर त्रिकटुकाचूर्ण शहदसे, ठंडीपर काली मिरची तांबूलसे, प्रमेहको त्रिफला मिश्रीसे, त्रिदोषको अदरखका रस शहदसे, वातज्वरको घीसे, पित्तज्वरको शहदसे, कफपित्तपर अदरखके रससे, ८० प्रकारकी वादीको निर्गुंडीके रससे, वायुको सोंठसे, पित्तकोशकरसे, कफको पिपलीसे, संधिवायुको दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, जायपत्री, इनसे, वलीपलित रोगको त्रिफलासे, श्लेष्मरोगपर कजली और शहदसे, रक्तपित्तको मिश्रीसे, बलवृद्धिको पुनर्नवा गायके दूधसे, पांडुरोगपर पुनर्नवाके रससे बीस प्रकारके प्रमेहको हलदी, पिपली, शहदसे, मूत्रकृच्छ्रको शिलाजीतसे, पांच प्रकारकी खांसीको अडूसा, पिपली, दाख, शहदसे, अग्निमंदको तांबूलसे, सब रोगोंको त्रिफला और शहदसे, यथोचित दोषके वास्ते बालहरड़ासे और शकरसे और लोहसारमें चांदीका गुण है कारण प्रतिनिधिमें चांदीका और कांतिसारका समगुण लिया है । यह सार योग्य अनुपानसे सर्व रोगोंका नाश करता है और पथ्यसे सेवन करना ।

लोहसारपर पथ्य।

कोहला, जिस चीजके नामके पहिले (क) ककार है वे सब चीजें और तिलका तेल, उड़द, करेला, मिर्च, राई, दारू, खटाई, मच्छी, मांस, बैंगन, मेहनत ये चीजें लोहसेवन करनेवालेको वर्ज्य करनी चाहिये ।

अशुद्ध लोहदोष—नपुंसकता, कोढ़, मृत्यु, हृदयरोग, शूल, अतिसार, ग्लानि, अशक्तपना ये पैदा होते हैं इसवास्ते उत्तम रीतिसे शुद्ध करना।

सप्त धातुका अपक्वदोषनिवारण ।

कच्चे सोनेके विकारपर हरड़ा शकरके साथ देना. मिश्री और शहद तीन दिन देना. इससे अपक्व चांदीका दोष नष्ट होता है। धनियां, शकर

पानीके साथ तीन दिन देना. इससे अपक्क तांबेका दोष नष्ट होता है. च्यवक, हरडा, तीन दिन देना. इससे अपक्क नागका दोष नष्ट होता है. मेढाशिंगी शकरसे देना. तीन दिनमें अपक्क वंगका दोष नष्ट होता है। बालहरडा शकरसे तीन दिन देना. अपक्क जस्तका दोष नष्ट होता है. अगस्तिके रसमें बिडंगका चूर्ण डालके देना और धूपमें बैठना, इससे अपक्क लोहका दोष नष्ट होता है और अभ्रकभस्म, बिडंगका चूर्ण बिडंगके काढ़ेमें डालके देना. इससे अपक्क लोहकी शूल नष्ट होगी. किरमालासे ऊपरकी चीज देना, इससे कृमिका नाश होता है।

सप्त धातुको पंचमित्रका पुट–कारण कि पंच मित्रोंसे धातु मारा हुआ पीछे जीता है इसवास्ते आखिरको पंचमित्रका पुट देना. उनसे न जीवे तो जानना कि यह धातुभस्म उत्तम हुई है। शहद, घी, तेलिया सुहागा, गूगल, शकर इनको पंचमित्र कहते हैं। इन पंचमित्रोंके पुटसे जो जीवित न हो उसको पीछे मारना न चाहिये। बाकीको पीछे संस्कार देना, तब खानेके योग्य होता है १।

लोहाकी द्रावविधि–निम्बूके रसमें हिंगूल डालके उसमें पोलाद तपाके बहुत वक्त डुबानेसे लोहाका पानी होता है। २ देवदालीकी राख नरके सूत्रमें इक्कीस दफे घोलके उसका खार निकालके उसमें कांतलोहको तपाके वह खार डालना. इससे कांतलोह पतला होके रहता है।

मंडूरकी विधि–प्रथम पुराने लोहेका कीट लेना. बाद गाईका गोमूत्र लेके उस कीटको बहेड़ाकी लकड़ीके कोयलेसे तपाना, बाद गोमूत्रमें बहुत वक्त तक डुबाना जब उसमें पानी होके गोमूत्रमें मिल जाय तब निकालके खरलमें डालके घोटना, बाद उस चूर्णका दुगना त्रिफलाका काढ़ा करके उसमें डालना, खूब हिलाके एक हंडीमें भरके उसको कपड़मिट्टी करके मुख बंद करना, बंद करके गजपुट आंच देना. स्वांगशीत होने बाद वह शुद्ध मंडूर निकालके खरल करके सब काममें लाना।

मंडूरगुण–तुरस, शीतल है और पांडु, सूजन, हलीमक, कुम्भपीलिया इनका नाश करता है. मंडूरसे दश भाग मुंडलोहाका गुण है। मुंडलोहासे दश

गुण तीखा (तीक्ष्ण लोह) है और तीखेसे लाख गुण कांत लोहका है ऐसा मत सुश्रुत, वाग्भट आदि ग्रंथोंमें कहा है और अजमाया हुआ है सो जानना

मिश्र धातुका भेद–आठ भाग तांबा, दो भाग राँगा इन दोनों धातुओंके मिश्रणसे कांसा होता है. उसका बर्तन भोजनके वास्ते बनाते हैं, वह शुभ है।

पीतलकी पैदा–आठ भाग तांबामें दो भाग जस्त मिश्र करनेसे पीतल होती है, वह पीतल दो जातिकी है. एक राजपीतल दूसरी काकमुखी है, उसमें राजपीतल उत्तम है। पीतल तपाके कांजीमें डुबाना. इससे ताम्र रंग होता है. उसको सोनपीतल कहते हैं।

कांसा और पीतलका शोधन–पीतलका और कांसाका पत्रा बनाके तपाना और तेल, छाछ, कांजी, गोमूत्र, कुलथीका काढ़ा इनमें तीन २ दफे बुझाना. इससे कांसा, पीतल शुद्ध होता है।

मारणविधि–तांबा, पीतल, कांसा इनके मारनेके वास्ते समभाग गंधक लेके आकड़े और वड़के दूध व निर्गुंडीके रसमें गंधकको घोटके पत्रा को लेप देके गजपुट अग्नि देना, इससे भस्म होती है।

पीतलगुण–पीतलभस्म सब जातिका प्रमेह, वायु, अर्श, संग्रहणी, कफ, पांडु, श्वास, खांसी, शूल इन रोगोंको नाश करती है।

कांसाभस्मगुण–तुरस, कटु, उष्ण, लेखन, स्वच्छ, सारक, जड़, नेत्रको हितकर, रूखी, कफ, पित्त इनका नाश करनेवाली है. शुद्ध होनेसे गुणवान् होती है।

अपक्क पीतल दोष–कच्चा पीतल नानातरहका दोष, रोग, भ्रम, अर्श, प्रमेह, ज्वर, मृत्यु देनेवाला है।

पंचरसायन भर्तके बर्तनोंकी विधि।

कांसा, पीतल, तांबा, सीसा, राँगा इन पांचों धातुओंको गलाके एकत्र भरनेसे भर्तके बर्तन होते हैं, उस बर्तनमें दाल अच्छी सीझती है और देवालयमें उसकी मूर्ति आदि करते हैं।

पंचधातुका शोधन–तपाके गोमूत्रमें तेलमें बुझानेसे शुद्धि होती है।

मारणविधि--भर्त धातुके समभाग गंधक, हरताल लेके आकड़ेके दूधमें घोटकेलेप देना, शरावसंपुटमें धरके कपड़मट्टी करके कुंभपुट देना. इससे भस्म होता है।

दूसरा पंचमित्र-गुड़, गूगल, गुंजा, शहद, टांकणखार इन पांचको पंचमित्र कहते हैं। इनसे सब धातु जीते हैं, इनका संस्कार देनेसे न जीवे वह धातु खानेसे दोष नहीं है।

पंचरसायन भर्तके संस्कारकी विधि ।

जो अपक्वधातुके भस्मको पीछा संस्कार देना हो तो भस्मोंके सम-भाग घोड़ेके नख, हाथीदांत, भैंसके शींगकी जड़, बकरीका नख, खर्गोशका नख, गेंडाके शींग, शहद, घी, गुड़, गुंजा, टांकणखार, तेल, नोन ये तेरा चीजें समभाग मिलाके खरल करके बाद पीछे मारण करना, इससे धातु न जियेगा।

सोनादिकभस्मोंकी परीक्षा।

सोनाकी और पीतलकी भस्मका मुर्गाकी गर्दन अथवा कपोत पक्षीके कंठके माफिक रंग होना चाहिये। तांबाकी भस्मका रंग मोरकंठके माफिक रंग होना चाहिये। चांदी और रांगेकी भस्मका सफेद रंग होना चाहिये। सीसेका काले सांपके माफिक रंग होना चाहिये। लोहेकी भस्मका रंग कजलीके माफिक होना चाहिये। इस माफिक भस्मोंका रंग होके जो पानीमें तैरे वह उत्तम है, वह कभी नुकसान नहीं करनेवाली है और इन चीजों का बनानेवाला वैद्य ही श्रेष्ठ है तथा सब कार्य सुधारनेके योग्य है।

भस्म देनेका वजन-सोना, चांदी, तांबा एक २ गुंजा देना. तारवा पोलाद, वंग, नागपीतल इनकी भस्म तीन गुंजा तक देना. पीपलसे ग्रीष्म शरद ऋतुमें देना।

धातुसे धातुमारणविधि-हरतालसे वंग, हिंगुलसे लोह, सीसेसे सोना, मनशिलसे शीसा, गंधकसे तांबा, माक्षिकसे चांदी मारना चाहिये। इस माफिक धातुसे मारा हुआ धातु नुकसान कभी न करेगा और फायदा ज्यादा करता है।

धातुका द्रव होनेकी विधि–जिससे पानी रहता है लोहाका चूर्ण एक टंक लेके फणस (कटहर)कलीकी रसमें डालके सात दिन धूपमें रखना. बाद खटाईसे घोटके मूसमें गलाना. इससे लोहा पतला स्याहीके माफिक रहता है।

सप्त उपधातुकी मारण और शोधन विधि।

पैदायश–सोनासे सुवर्णमाक्षिक, चांदीसे रौप्यमाक्षिक, तांबेसे लीलाथोथा, रांगेसे मुरदाशंख, जस्तसे कलखापरी, सीसासे सिंदूर, लोहसे लोहाका कीट पैदा होता है ऐसा जानना। ये सातों चीजें शुद्ध करके मारण करना। धातुके समान गुण करती हैं। जहां धातु न मिले वहां उसके बदले उपधातु योजना चाहिये।

शोधनविधि–उपधातुको लेके उसमें चौथा भाग टंकणखार डालके मर्दन करना. बाद लोहेकी कढ़ाईमें खटाई डालके लोहेकी कुल्हाड़ीसे घोटना। एक मुहूर्तभर नीचे अग्नि लगाके जिससे लाल होगा, वह दश धातुको मारता है.शोधन सब उपधातुको त्रिकटु और त्रिफलाके काढाकी बार २ भावना देना. इससे दोष जाके शुद्ध होता है।

माक्षिकभूमिगुण–माक्षिक यानी दगडी सोनामुखी पत्थरके माफिक होके सोनाके माफिक चमक होती है उसको कसोटीपर घिसनेसे सोनाके माफिक कस लगता है और हाथपर घिसनेसे हाथ काले हो जाते हैं उसको सुवर्णमाक्षिक कहते हैं। यह तापी नदीमें होता है और एक कन्याकुमारीमें भी होता है।इसमें एक सुवर्णमाक्षिक, दूसरा रौप्यमाक्षिक है। सुवर्णमाक्षिक पीला और साफ होता है। रौप्यमाक्षिक चित्रवर्ण होता है. सो पहचान लेना।

माक्षिकशोधन व मारण--१ सोनामुखी लेके उसको पीसके बारीक चूर्ण करके उसमें चौथा भाग सेंधवलोन मिलाके लोहेकी कढ़ाईमें डालके चूल्हेपर चढ़ाना, नीचे अग्नि लगाके लोहेकी कुल्हाड़ीसे हिलाते जाना. उसमें नींबूका रस और बिजोरेका रस डालके पचन करना, पीछे रस जलके कढ़ाईमें लाल सिंदूरके माफिक दवा हो जाय तब माक्षिक शुद्ध होता है। २ माक्षिकको एरंडके तेलमें और बिजोरेके रसमें पचाना. दो घंटेतक केले या प्याजके रसमें पचाना और माक्षिकको तपाके त्रिफलेके

काढ़ेमें बुझानेसे शुद्ध होता है। अथवा अगस्तिके रसमें खरल करके गजपुट देना और सहँजनेके रसमें गजपुट देना और नींबूके रसमें गजपुट देना. इससे शुद्ध होता है १।

मारणविधि–शुद्ध माक्षिक लेके उसे कुलथीके काढ़ामें और छाछमें और बकरीके मूत्रमें इन तीन चीजोंमें डालके कढ़ाईपर पुट देना और तीनोंमेंसे एक एकको घोटके गजपुट देना. इससे माक्षिकभस्म होता है २।

शुद्धमाक्षिकको–खपरेमें डालके चूल्हेपर चढ़ाना उसमें बारबार निंबूका रस डालके गहरी आंच लगावे और लोहेकी कुल्हाड़ीसे घोटते जावे इस माफिक दो प्रहरतक करके बाद लाल करके उतार लेवे जिससे उमदा माक्षिक भस्म होता है ३। माक्षिकका चौथा भाग गंधक डालके एरंडके तेलमें खरलके गोला बांधके शरावसंपुटमें धरके गजपुट देना. उस वक्त शालीका भूसा शरावके चारों तरफ डालना. ऊपर जंगली गोबरी धरके गजपुट देना. इससे माक्षिक लालासिंदूरके माफिक होता है।

माक्षिककी सत्त्वविधि–माक्षिकमें एरंडका तेल, गुंजा, शहद ये सब एकत्र करके माक्षिकपर डालना, नीचे अग्नि देना. इससे माक्षिकका सत्त्व निकलता है।

अमृत करनेका–माक्षिकको त्रिफलाके काढ़ामें, कांजीमें, दूधमें शोधन करना. इससे अमृतके तुल्य होता है।

माक्षिक गुण–माक्षिक कडू, मधुर, शीतल, योगवाहिक रसायन, स्वादु, चक्षुकर ऐसा है और प्रमेह, अर्श, क्षय, कोढ़, कफ-पित्त-लिंगार्श, कंठरोग, पांडु, विष, उदर, सूजन, खाज, त्रिदोष इनका नाश करता है. इसका अनुपान त्रिकटु और त्रिफला और घी इनसे देना और योग्य अनुपानसे सर्व रोगोंपर देना।

अपक्वमाक्षिक दोष–अपक्व माक्षिक अग्निमंद, बलहानि, बद्धकोष्ठ, नेत्रविकार, कोढ़ ये करता है और शीर्षशूल, मस्तकरोग, क्षय, कृमि पैदा करता है इसवास्ते माक्षिकका शोधन करना और मारण करना चाहिये और रूपमाक्षिकका शोधन और मारण स्वर्णमाक्षिकके माफिक है सो करना और गुण भी वैसा ही है, अनुपान भी वैसा ही करना।

लीलाथोथेकी उत्पत्ति ।

किसी समय गरुड़जीने अमृत पीनेके बाद विष पिया और मत्कूतादि पर्वतोंपर उलटी किया जिससे लीलाथोथा पैदा हुआ । उस थूथाका भेद कलखापरी है, उसके दो भेद हैं ।१ एक कलखापरी रंगमें जरा ताम्र वर्ण है । थोथेका रंग मोरके गर्दनकी माफिक है उसे लेना और शोधन करना ।

लीलाथूथेका शोधन--१ लीलाथूथेके समभाग बिल्लीकी विष्ठा लेके उसमें शहद और टंकणखार मिलाके खरल करके छोटे दोर शरावमें रखके कपड़मट्टी करके पुट देना. इसी माफिक तीन पुट देना. इससे शुद्ध होता है और उलटी आदि सब विकार शांत होते हैं ।२ लीलाथोथेको खटाईमें डालके तेलसे सींचना बाद घोड़ेके सूत्रमें एक दिन दोलायंत्रसे पचाना. इससे शुद्ध होता है. बिल्लीकी विष्ठा और कपोत पक्षीकी विष्ठा लीलाथोथेके समभाग लेके लीलाथोथेसे दशवाँ भाग टंकणखार डालके खरल करना. शरावसंपुटमें धरके कपड़मट्टी करके हलकी आंच देना. बाद निकालके दहीमें खरल करके पुट हलकी अग्निकी देना. इसी माफिक शहदसे एक अग्नि देना. इससे लीलाथोथा शुद्ध होता है ।

मारणविधि--गंधक, टांकणखार चूकेके रसमें खरल करके अंध मूसेमें धरके तीन कुक्कुटपुट देना. इससे भस्म होती है ।

लीलाथोथेका सत्त्व--लीलाथोथा और टांकणखार निंबूके रसमें खरल करके मूसेमें धरके धौंकनीसे फूकना. इससे तांबाके माफिक सत्त्व निकलता है ।

लीलाथोथाका गुण--लीलाथोथा तीखा, तुरस, विशद, हलका, लेखन, रेचक, चक्षुको हितकर और खाज, विष, कृमि इनका नाश करता है ।

कलखापरीका शोधन ।

कलखापरी सात दिन नरमूत्रमें दोलायंत्रसे धूपमें रखना और सात दिन गोमूत्रमें रखना. इससे कलखापरी शुद्ध होती है ।

कलखापरीका गुण--कलखापरी तीक्ष्ण, खारी, तुरस, उलटीकारक, लघु, लेखन, भेदक, शीत, चक्षुष्य ऐसी होके कफ, पित्त, विष, रक्तदोष, कोढ़, खाज इनका नाश करती है ।

मुरदाशंखका शोधन-मुरदाशंखको सोंठके काढाकी नौ भावना देना, इससे शुद्ध होता है. यह रसायनके वास्ते श्रेष्ठ है।

मुरदाशंखका गुण--मुरदाशंख कटु, तीखा, उष्ण वीर्य है और गुल्म, उदावर्त, शूल, रसजंतु, व्रण इनका नाशक है।

सिंदूरगुण--सिंदूर उष्ण होके विसर्प, कोढ, खाज, विष इनका नाश करता है, टूटी हड्डियोंको दुरुस्त करता है,व्रणको शुद्ध करके भर लाता है।

सिंदूरकी शुद्धि--निंबूके रसमें सिंदूर घोटके धूपमें सुखाना. बाद चावलोंके पानीसे घोटके सुखाना. इससे शुद्ध होता है। वा सिंदूर लेपमें और मलहमोंमें डालना. खानेको नहीं देना।

चपलाक्षिक शोधन--चपला माक्षिकको विष, उपविष, कांजी, निंबू, करकोटी, अदरख इनकी भावना देना. इससे शुद्ध होता है।

चपलाक्षिकका गुण-- लेखन, स्निग्ध, तीखा, उष्ण, मधुर, शरीरको मोहन ऐसा है और पारदकृतिमें सहायता देनेवाला है। यह चार प्रकारका है-सफेद, अरुण, काला और नीला, जिसमें लीला और सफेद पारा बांधनेवाला है ऐसा जानना।

अथ पारदक्रियाप्रारंभः।

रसनिर्णय--पारा २ जातिका, गंधक ३ जातिका और अभ्रक जातिका, भिन्नांजन ९ जातिका, कसीस ३ जातिका, गौरी ३ जातिका ये सर्व रस हैं ऐसा जानना।

पाराकी प्रशंसा--महादेवजी कहते हैं कि, हे पार्वती ! पारदके दर्शन, स्पर्शन, भक्षण, स्मरण, पूजन और दानसे ऐसा फल होना है कि, केदारादिक पुण्य तीर्थोंमें जो फल प्राप्त होता है सो फल पाराके दर्शनसे होता है और मूर्च्छित पारा चंदन और कपूर, केशर इनमें रखनेसे वही शिवपूजा है। उसकी पूजा करनेवाला शिवके सन्निध रहता है और पाराभक्षणसे त्रिताप जाते हैं और जो पद देवताको दुर्लभ है वह पद प्राप्त होता है और व्योमकर्णिकामें पारदके ध्यानसे जन्म जन्मांतरोंके पापोंका नाश होता है। शिवलिंगसे कोटि गुण पारदलिंग पूजामें है, भुक्ति मुक्ति देता है इसवास्ते गुणवानको देना।

पारदनिंदादोष—जो पारदकी निंदा करता है वह ब्रह्मज्ञानी हो तो भी सौकोटि जन्मतक नरकमें पड़ेगा । जो रसनिन्दक पारदका नाम लेता है और छूता है वह हजार जन्मतक दुःख भोगेगा ।

पाराके नाम ।

१ रस २ रसेंद्र ३ सूत ४ पारद ५ मिश्रक । इस माफिक पारद रूप रेत पांच प्रकारका है । उसके नाम ऐसे हैं १ पारद २ रुद्ररेत ३ रसधातु ४ महारस ५ रसेंद्र ६ चपल ७ सूत ८ रसलोह ९ रसोत्तम १० सूतराज ११ जैत्र १२ शिवबीज १३ शिव १४ अमृत १५ लोकेश १६ धूर्तक १७ प्रभु १८ रुद्रज १९ हरतेज २० अचिन्त्य २१ अज २२ खेचर २३ अमर २४ देहद २५ मृत्युनाशन २६ स्कंद २७ स्कंदास २८ देव २९ दिव्यरस ३० रसायन ३१ श्रेष्ठ ३२ जेसद ३३ त्रिधा ऐसे पारेके नाम हैं सो जानना ।

वह पारा चार वर्णका है—सफेद ब्राह्मण, रक्त वर्ण क्षत्री, पीला वैश्य, काला शूद्र है, ऐसा रंगभेद है सो जानना । उसमें ब्राह्मण कल्कके वास्ते, क्षत्रिय गुटिकाके वास्ते, वैश्य धातुके वास्ते, शूद्र अन्य कामोंके वास्ते।

पारामें दोष छः हैं—पारा पर्वतोंसे निकलता है ।इस पारामें छः दोष हैं । शीसासे जड़ता, शरीरमें गलगण्ड, वंगसे कोढ़, शरीरमें फूटना, मलसे वीर्य नाश होता है ।

अग्निदोषसे—अंगदाह होता है । चाञ्चल्यसे भ्रम होता है ।

विषदोषसे—मरना आता है । यही छः दोष पारेमें स्वभावसे रहते हैं । उसको सप्त कंचुकी कहते हैं । इसवास्ते पाराका अच्छा शोधन करना चाहिये जिससे ये दोष नष्ट होके अमृततुल्य होता है ।

पाराशोधनविधि-प्रथम अच्छा वार,नक्षत्र,शुभघड़ी देखके पारा चार तोला लेना अथवा कम-ज्यादा लेना लेकिन चार तोलेसे कम न लेन बाद श्रीगुरुमहाराज और गणेश श्रीदेवी कन्याओंकी पूजा करके ब अघोर मंत्रसे पारदको धोके पूजा करके शोधन करना। उसके वास्ते खर पोलादका होना । उसे उत्तम कांत सारका है और बट्टा भी उसीका होना जो लोहाका खरल नहीं मिले तो उत्तम पत्थरका खरल लेना चाहिये वह पक्का होके घिसना न चाहिये । संस्कार कहते हैं:-पारेके संस्कार क

ज्यादा और कहीं कम लिखे हैं लेकिन मुख्य संस्कार अठारह हैं:-१ स्वेदन,२ मर्दन,३ मूर्च्छन,४ उत्थापन,५ पातन, ६ बोधन,७ नियमन, ८ सन्दीपन, ९ गगनभक्षणका प्रमाण, १० सञ्चारण, ११ गर्भद्रुति, १२ बाह्यद्रुति, १३ जारण, १४ राग, १५ सारण, १६ संक्रामण, १७ वेध-विधि, १८ शरीरयोग इस माफिक सब १८ संस्कार हैं १।

जिस ठिकाने वजनका मान नहीं कहा वहां सोलह गुणा करना। स्वेदन--त्रिकटु, नोन, कलमी सोरा, चित्रक, अदरख, मूली और पारा ये सब पीसके इनका कल्क कपड़ेको लगाके उसमें पारा भरके पोटलीबांधके दोलायंत्रसे खट्टी कांजीमें पचन करना. इससे स्वेदन होता है २।

मर्दनविधि-धुवाँका गेरोसा (धूंसा) और इंटाडीका चूरा,दही, गुड़, नोन, जीर्णाभ्रक, राई इन सातों चीजोंमेंसे हरएक चीजें पारासे सोला गुण लेनी और खरलमें डालके घोटनी. इससे पारा साफ होता है। इस माफिक हरएक चीजोंसे एक प्रहर घोटना. इससे साफ होता है ३।

मूर्छनविधि-पाराके मैल नाशनके वास्ते सात दिन गवारपाठाके रसमें घोटना और दाहके वास्ते त्रिफलामें और विषनाशनके वास्ते चित्रकमें इन तीनों चीजोंमेंसे हर एकमें सात २ दफे यत्नसे घोटना. इससे उन दोषोंका नाश होता है. यह मूर्च्छनविधि है।

सप्तकंचुकीनिवारणविधि ।

पाराको गवारपाठा,चित्रक,राई, रिंगणी, त्रिफला इनका काढ़ा करके उसमें पारा तीन २ दिन घोटना. इससे सातों कंचुकीके दोष जाते हैं ५

उत्थापन-पाराको निम्बूके रसमें घोटके धूपमें धरना और घोटना, बाद डमरूयंत्रमें उड़ा लेना. इससे उत्थापन होता है ६।

अधःपातन--पारामें त्रिफला, सहँजन, चित्रक, नोन, राई, ये चीजें सब एक जगह खरल करके सर्व एकत्र होनेसे एक हंडीको अन्दरसे लेप देना, बाद डमरूयन्त्रमें धरके संधिलेप देना, नीचेके बर्तनमें पानी भरना, उसको जमीनमें गाड़ देना, ऊपरके मटकेपर अग्नि देना, इससे नीचेके मटकेमें जो पारा आता है उसे लेना ७।

तिर्यङ्मुखपातन–इसी माफिक दो मटके जोड़ना और चूल्हेपर आड़ा रखना. बाजू परजो मटका रहेगा उसमें पानी भरना, उसको तिर्यङ्मुख पातन कहते हैं, उससे पारा उड़ता है ८।

बोधन–पाराको ऊपर लिखे अनुसार संस्कार देनेसे पंढपना होता है इस वास्ते बोधन देना इससे पीछे चपल होता है।

उसका कृत्य–भोजपत्र, सेंधवलोन और पानीमें पचन करना इससे पंढपना जायगा और बड़ी मुंगसवेलका कंद, अम्ली, बांझकटोली, जलभांगरा, नागरमोथा इनका काढ़ा करके उसमें पारा पचन करना. इससे नपुंसकपना जाता है ९।

नियमन–बड़ी मुंगस वेलका कंद अथवा पत्ता, बांझकरटोली, अम्ली, भांगरा, नागरमोथा, धतूरा इनके रस अथवा काढ़ेमें एक दिन मंदाग्निसे पचन करना, इससे पारा स्थिर होता है। मुंगसबेलको सर्पाक्षी भी कहते हैं १०।

दीपन–पारा चित्रकके रस और कांजीमें एक दिन पचन दोलायंत्रसे करना. इससे उत्तम दीपन होता है ११।

अनुवासनविधि–दीपन करके पाराको मट्टीके अथवा पत्थरके बर्तनमें निंबूके रसमें डालके एक दिन धूपमें धरना.इसको अनुवासन कहते हैं १२।

गंधकजारणगुण–गंधकजारणसे शुद्धिसे सौ गुण अधिक होता है और दुप्पक गंधन जारणसे सब कोढ़ोंका नाश करता है और तिप्पट गंधक जारणसे सब जाडचका नाश करता है. चतुर्गुण गंधकजारणसे वली पलित रोगका नाश करता है. पंचगुणगंधकजारणसे क्षयका नाश करता है और षड्गुणगंधकजारणसे संपूर्ण रोगका नाश करता है। इस माफिक सब रोगोंका नाश करनेको पारा समर्थ होता है १३।

अदोषत्व–जो वैद्य गुरुसे और शास्त्रसे विपरीत मनसे गंधकादिक पारेका जारण करेगा उसको परमेश्वर शाप देगा और दोषका पात्र होगा; इसवास्ते गुरु और शास्त्रके ज्ञानसे चलना।

पारा जारणाविधि ।

पारासे छःगुण गंधक लेके खरल करके आतसी शीशीमें भरके वालुकायंत्रमें पचन करना और जैसा गंधक जले वैसी आंच देना. इस प्रकार छः दफे गंधक देनेसे पारा लालसिंदूरके माफिक होता है ऐसा जानना, गुरूसे पूँछके करना ।

कच्छपयंत्रसे गंधकजारणविधि ।

एक मट्टीका कुंडा लेके उसमें पानी डालके जैसे यंत्रोंमें कच्छप यंत्रकी विधि लिखी है ऐसे छःगुण गंधकजारण करना चाहिये जिससे पारा तीक्ष्ण अग्निके माफिक होता है और सब कार्य करता है और पारेको प्रथम गंधक जारण कराके बाद सुवर्ण जारण करना. उसके पीछे अभ्रक जारण करना. पीछे लोहाजारण करना। उसके इस माफिक ग्रंथोंमें बहुत भेद हैं लेकिन यहाँ ग्रंथविस्तार न होनेके वास्ते सामान्य लिखा है ।

हिंगुलसे पारा निकालनेकी विधि ।

हिंगुल (शिंगरफ) लेके निंबूके रसमें एक प्रहर घोट लेना पीछे डमरू यंत्रमें धरके उड़ा लेना, वह पारा शुद्ध होता है, उसे सर्व काममें योजित करना।

विष और उपविषके लक्षण ।

कालकूट, बच्छनाग, शृंगिक, प्रदीपक, हलाहल, ब्रह्मपुत्र, हारिद्रक, सक्तुक, सौराष्ट्रिक ये नव महाविष हैं और आक, धतूरा, थोहर, कनेर, लांगली, कललावी, गुंजा, अफीम ये सात उपविष हैं । सब मिलाके सोलह विषसे पारा सात २ दिन घोटके धोते जाना. इससे पाराका पक्ष छेदन होता है। उसे अग्निमें धरनेसे उड़ेगा नहीं। उसको भुख होके सुवर्णादिक धातुको ग्रसन कर लेता है यानी खा जाता है, वजन उतनाका उतना रहता है। उक्त महाविषोंका लक्षण ग्रंथोंमें कहा है लेकिन पाराके शोधनके वास्ते यहां भी कहते हैं १ ।

कालकूट–विष रंगमें सफेद होता है, उसपर लाल बुंदा होते हैं और नरम कीचड़के माफिक होता है। यह विष देव और दानवोंके युद्धमें माली नाम दैत्यके रक्तसे पैदा हुआ. यह विष पिपलीके माफिक एक दरख्त है उसका गुंद है, वह अहिच्छत्र, मलय, कोकण, शृंगवेर इन पर्वतोंमें होता है २

वच्छनाभि–विषके दरख्तके पत्ते निर्गुडीके माफिक होते हैं और उसकी जड़ वच्छनाभिके माफिक होती है। उसके नजदीक दूसरा झाड़ नहीं होता। यह विष द्रोणगिरि पर्वत पर होता है ३।

शृंगिक–यह विष गायके शींग माफिक होके उसको दो शिखा होती हैं और गायके शींगमें बांधनेसे गऊका दूध विषके माफिक होता है और रक्तके माफिक होता है। इसके पत्ते अदरखके पत्तेके माफिक होते हैं। यह विष बहुत करके पानीके किनारे पर कीचड़में होता है। ४।

प्रदीपक–यह विष अंगारके माफिक कांति होके लाल होता है और बहुत गरम दाह करनेवाला है। इसके पत्तोंका आकार खजूरके पत्तोंके माफिक होता है। इसकी वास लेनेसे शरीरमें दाह होके आदमी त्वरित मर जाता है। यह विष बहुत करके समुद्रके किनारे पर होता है ५।

हालाहल–इस विषके पत्ते ताड़के झाड़के माफिक होके नीले होते हैं। इसका फल गौके स्तनके माफिक सफेद होता है। कंद भी फलके माफिक होता है। इसके नजदीक कोई दरख्त नहीं होता है। इसका वास लेनेसे आदमी तुरंत मर जाता है। ६।

ब्रह्मपुत्रक–इस नामका विष ब्रह्मपुत्रनदीके किनारे बहुत करके होता है। इसका पत्ता ढाकके माफिक होता है, बीज ढाकके माफिक होता है, कंद बड़ा और पराक्रम भी बड़ा है। यह रोग हरने और रसायनके वास्ते समर्थ है ७।

हारिद्रक–इस नामका विष हलदीके खेतमें होता है। हलदीके माफिक पत्ता और कंद होता है। यह विष रसायनके वास्ते श्रेष्ठ है ८।

सक्तुक–इस विषका आकार जवोंके माफिक होता है और अंदर सफेद होके हिलोल पर्वतपर होता है ९।

सौराष्ट्रिक–यह विष सोरठके देशमें पैदा होता है। इसका कंद कच्छपके शिरके माफिक बड़ा होता है। इसका रंग कृष्णागरुके माफिक होता है। इसके पत्ते ढाकके पत्तेके माफिक होते हैं। इसका पराक्रम बहुत बड़ा है ऐसा जानना। इस माफिक ये नवमहाविष और सात उपविष इन सोला विषोंसे पाराके संस्कार ऊपर लिखे माफिक देना।

दूसरी विधि–सोंठ, मिर्च, पिपली, जवाखार, सज्जीखार, सेंधवलोन, संचल, बिडनोन, समुद्रनोन, बांगडखार, लहसन, नवसादर, सहँजनेकी छाल इन तेरा चीजोंका चूर्ण करके पारेके समभाग करके खरलमें निंबूके रसमें और कांजीमें और जंभीरीके रसमें तप्त खरलमें अहोरात्र तीन दिन घोटना. इससे पाराको चंचु फूटती है और वह सोनादिक सब धातुओंका भक्षण करता है। अथवा बीरबहूटी नामका मृगकीडा लाल होता है उसको लेके उसके साथ पारा तीन दिन खरल करके बाद निंबूके रसमें सेंधवलोन एक जगह मिलाके उसमें तीन दिन घोटना. इससे मुख होके पारा सब धातुओंका ग्रास करेगा।

पारदगुटिकाविधि।

शुद्धपारद, अभ्रकसत्त्व समभाग लेके घोटना. इससे पारा त्वरित बद्ध हो जाता है। उसकी गोली करके खेचरपक्षीके पेटमें रखके उसको आटेका लेप करना. बाद सात कपड़मट्टी करके पीछे गोबरका लेप करके गजपुट देना. स्वांगशीत होनेसे निकाल लेना. इस सिद्ध गुटीको मुखमें खाके खेचरत्व होता अर्थात् पक्षीके माफिक उड़ता है और अदृश्य होता है। इसके स्पर्शसे व्याधियोंका नाश होता है और काम बढ़के हनुमानके माफिक बलवान् होता है। परस्पर सिद्ध होके तांबेका सोना होता है, शस्त्र और अग्निका स्तंभन होता है, देह दिव्य होता है।

पारदभस्मकी विधि।

१धुवाँका घेरोसा, पारा, फिटकड़ी, गंधक, नवसादर इन पांचोंको समभाग लेके निम्बूके रसमें एक प्रहर खरल करके आतशी शीशीमें भरके उसको कपड़मट्टी करके उसके मुखपर गुड़दी बैठाके वालुकायंत्रमें बारा प्रहर क्रमसे अग्नि देना. इससे पाराकी भस्म होती है। स्वांग शीतल होनेसे निकाल लेना. उस शीशीके मुखपर जो गंधक लगा हो उसे निकालके उसमेंसे पाराकी भस्म निकाल लेना. वह सब काममें चलती है। २अथवा पारा अभ्रक दोनोंको समभाग लेके बड़के दूधमें दो प्रहरतक मर्दन करना. पीछे बड़की लकड़ीकी आंच देना. इससे भस्म होती है। ३ अपामार्गका बीज, एरंडबीज दोनोंका चूर्ण

करके मट्टीके मूसेमें पाराके नीचे ऊपर देके ऊपर दूसरी मूसा देके छोटा पुट देना. ऐसे चार पुट देनेसे भस्म होता है। ४ सफेद अपामार्गका बीज और पुष्करबीज इनका चूर्ण करके पाराके नीचे ऊपर देके शरावसंपुटमें संधिलेप देके हलका पुट देना. इससे पाराकी भस्म होती है। ५ कोरांटा (वज्रदंती) के रसमें पारा डालके धूपमें रखना और घोटना, पारा मृतक होता है तथा सब काममें चलता है। ६ तुषोंकी अग्निपर बकरीका मूत्र मिट्टीके बरतनमें भरके रखना. उसमें पारा डालके सुखाना, पीछे खैरकी लकड़ीसे घोटना और खैरकी लकड़ीकी आंच देना, इससे जो पाराकी भस्म होती है वह सब कामोंमें चलती है। ७ पारा खपरेमें डालके उसके नीचे दीप्तअग्नि देना और आकड़ेके पत्तेके रसका टपका बारबार देना. इससे तीन पहरमें पारेकी भस्म होती है। ८ पारामें फिटकड़ी, सेंधवलोन, अपामार्गकी जड़ ये चीजें क्रमवृद्धिसे लेना. चौथा भाग कांजीसे घोटना. इससे पारा बद्ध होता है। उसको डमरू यंत्रमें रात दिन हलकी आंच देना. इससे ऊपरके बरतनमें कपूरके माफिक जो भस्म जमती है उसे लेके सर्व रोगोंपर देना। वह वाजीकरण होकर योगसे संपूर्ण काम करती है और कांति, पुष्टि देती है. इसका नाम सिद्धमुख रस है।

धातुवेधीरसभस्म।

जिसके पत्ते चनेके पत्ते माफिक होके उसके नीचे हमेशा गीलापना रहता है उसका नाम रुद्रवंती है। उसके रसमें पारा घोटके तांबेके पत्रोंको लेप देके पुट देना। इससे उत्तम सोना होता है।

मृतकपाराके लक्षण।

जो तेजरहित, हलका, सफेद, अग्निपर फिर नहीं जीवे, निर्धूम और सोना आदिक धातुको भक्षण करे उसको मृतकपारा कहते हैं।

पारदके गुण।

मृतकपारा, रसायन, त्रिदोषनाशक, धातुवृद्धिकर है और योग्य अनुपानसे रोगोंका नाश करता है और मूर्छित पारा रोगनाशक गुटिका होती है, बद्धपारा अर्थ देता है, पाराकी भस्म तारुण्य, दृष्टि, पुष्टि, कांति

देता है, मृत्युनाशक, बलकर, स्त्रीविषे वांछा, आनंद देनेवाला, भुजबल देनेवाला, मुक्ति देनेवाला और मृतक पारा अमर करता है ।

पाराभक्षणका काल ।

फजिरके वक्त बलाबल देखके वाल अथवा आधा वाल देना. दुपहरको पथ्य देना. पानमें देनेसे बद्धकोष्ठकी सफाई करता है और रातके वक्त गिलोय और पीपलके साथ दे तो दस्तको फायदा करता है और योग्य अनुपानसे सब रोगोंका नाश करता है ।

पारदभक्षण करनेवालेको हितकारक चीजें ।

पारा भक्षण करनेवालेको नरम अन्न आदि मृदु चीजें, दूध, चावल, गेहूं, मूंगकी पेया देना. सागोंमें चौलाई अथवा मूली, मूंगकी दाल देना और रसाल चीजोंमें पुनर्नवा, नोनमें सेंधवलोन देना. और मेवामें अदरख, नागरमोथा, गायका घी, दही देना. दाख, अनार, केला, खीरा इनका पानी पीनेको देना. शरीरको अभ्यंग करके स्नान कराना. सुगंध फूलोंकी माला स्त्रीसंग, सिंचन, अनुशोधक जल इनका शोधन करना और आत्मज्ञान पुराण सुनना, शिवकी पूजा करना ये चीजें पारा सेवन करनेवालेको हित करनेवाली हैं ।

पारदको वर्ज्य पदार्थ ।

पारा सेवन करनेवालेको पान, निद्रा, जागरण, मार्ग चलना, क्रोध करना, हर्ष, दुःखी होना, इच्छा करना, जलक्रीडा, बहुत चिंता, कोहला, काकड़ी, करेला, तरबूज, कुसुंभ, देवडंगर, ककार आदिकी चीजें वर्ज्य करनी चाहिये ।

अशुद्ध पारा दोष ।

अशुद्ध पारा भक्षण करनेवालेको कोढ़ आदि बहुत रोग पैदा होते हैं इसवास्ते शुद्ध करके देना चाहिये ।

अशुद्ध पारा भक्षण करे तो उसका परिहार ।

करेलेकी जड़ घिसके पिलाना और शुद्ध गंधक देना चाहिये और दो मासा गंधक तांबूलसे पानमें देना इससे पाराका दोष नष्ट होता है. अथवा द्राक्षा, कोहला, तुलसी, सेवती, लोन, दालचीनी, नागकेशर इन सात चीजोंके समभाग गंधक मिलाके दोपहर सब शरीरमात्रमें मालिस

करना. बाद ठंडे पानीसे स्नान करना. इसी माफिक तीन दिन करना. इससे अशुद्ध पारेका दोष निवारण होगा।

दूसरी विधि—नागवेलका, भांगरेका व तुलसीका रस, बकरीका दूध ये चारों सेर सेर लेके सब गात्रोंमें दोपहरतक मालिश करके ठंडे पानीसे स्नान करे। इस माफिक तीन दिन करनेसे सब रसायन बाहर निकल जाती है और अशुद्ध पाराका दोष नष्ट होता है ऐसा जानना इसमें संशय नहीं है।

पारा निकालनेका उपाय।

भांगरा, अगस्ता इनके रसमें कलमी सोरा छाछ मिलाके चार तोला प्रातःकालमें पिलाना. इससे पारादोष नष्ट होता है, सब पारा पेशाबसे निकल जायगा। इति पाराविधि समाप्त।

अथ गंधककी विधि।

गंधककी पैदायश पूर्व ही क्षीरसमुद्रके पहली तरफ श्वेतद्वीपमें सखियों सहित पार्वती क्रीड़ा करती थीं उस समयमें रजस्वला हुई हैं उसी वक्त वह अत्यन्त सुगंधित उस मनोहर रजसे रंजित उनका वस्त्र क्षीर समुद्रमें धोया गया उससे गंधक पैदा हुआ. वह क्षीरसमुद्र मथनेके समय अमृतके साथ निकला, उसने अपने गंधसे दैत्योंको सुख दिया। उस वक्त देवताओंने उसका नाम गंधक रखा। वह पारदके बंधन और जारणके वास्ते उपयोगी है। जो पारामें गुण है वही इसमें है ऐसा देवताओंने आशीर्वाद दिया तबसे भूमिपर गंधक विख्यात हुआ। वह गंधक लाल, पीला, सफेद, काला चार प्रकारका होता है। लाल सुवर्णक्रियामें उत्तम है, पीला रसायनमें श्रेष्ठ है, श्वेत गोदंतीके सरीखा लेपादिकमें और लोह मारणमें लेना और चौथा काला मिलना दुर्लभ है व जरामृत्यु-नाशक है।

गंधक शोधनयोग्य—जो गंधक चिकना कठोर और मैलरहित हो वह श्रेष्ठ है.

गंधकशोधन—बर्तनमें दूध भरके उसके मुखपर कपड़ा बांधके उसमें बारीक गंधक बिछाके उसीपर थालीमें अग्नि भरके ऊपर रखना. इससे गंधक पतला होके दूधमें टपकेगा वह शुद्ध गंधक दूधसे निकाल लेना। इसी विधिसे

कांजीमें शोधना २। लोहाके बरतनमें घी डालके, उसके समभाग गंधक डालके अग्निपर तपाना जब घीमें गंधक पिघल जाय तब दूधके बरतनमें कपड़ा बांधके उसपर डाल देना. इससे वह घी दूधके ऊपर तैरके आवेगा और शुद्ध गंधक नीचे बैठेगा उसे लेना और धो डालना। बाद कपड़ेपर सुखा लेना। इस माफिक तीन दफे करनेसे गंधक शुद्ध होता है, हर बार घी दूध नया लेना ३। इस माफिक एक दफेमें भी विशुद्ध होता है ४।

गंधककी दुर्गंधनाशक विधि।

गंधकका चूर्ण दूधमें डालके गाढ़ा होनेतक पचा लेना, बाद काले भांगराके रसमें मंदाग्निसे पचाना. बाद त्रिफलाके काढ़ेमें पतला करके डालना. इससे गंधकका दुर्गंध नष्ट होके शुद्ध होता है १।

दूसरीविधि–गंधकको आम्रपर्णी, कांटे वृंदाबन इनका अथवा अनारके या बिजोरा या जंभीरी इनमेंसे जो चीज मिले उसे लेके उसके रसकी सात सात भावना देना. इससे गंधकका दुर्गंध नष्ट होता है।

गंधक घी– गंधकका चूर्ण सामके वक्त दूधमें डालके दही जमाना उस दहीका माखन निकालके घी कर लेना. वह घी रोज देना. इससे गलत कोढ़ नष्ट होता है और लगानेको भी देना।

गंधकका तेल बनानेकी विधि–गंधकको आकके और थोहरके दूधमें खरल करके उसमें माखन मिलाके कपड़ेको लगाना. बाद उस कपड़ेकी बत्ती करके एक तरफसे जलाना और ऊंधा पकड़ना इससे नीचे प्यालेमें जो घी टपके उसे लेना और काममें लाना।

गंधकगुण–गन्धक अग्निदीपक, उष्ण, रसायन, मधुर, पाकमें कडुवा, पाचन, आंवशोषक, पारेको वीर्य देनेवाला, गन्धकसत्त्व पारेको बांधनेवाला है और कोढ़, मृत्यु, वृद्धपना मिटाके वीर्य देनेवाला है, विसर्प रोग, खाज–खुजली, विष, कृमि, कफ, वात, विषमज्वर, नेत्ररोग इनका नाश करता है, काम और बलको बढ़ाता है।

गन्धककी धातुवेधी कजली–१ आंवलासार गन्धक और पारा इनकी समभाग कजली करके लाल चित्रकका रस और थोहरके दूध व रसमें घोटना और रांगेको गलाके उसमें देना. इससे रांगेका पानी जलके रूपा होता

है। २ गंधकसे तांबेको मारना और उसमें समभाग शिंगरफ मिलाना. बाद बिजोराके रसमें खरल करना. बाद शीसेके पत्राको लेप करना. बाद पुट देना. इस माफिक तीन पुट देना. इससे शीसेकी भस्म सिन्दूरके रंगसी होती है, उससे तांबेका सोना होता है ऐसा जानना। ३ लाल गंधक, पारा इनकी कजली करके तांबाका नववां अंश देना, इससे तुरत सोना होता है।

गन्धकपर अपथ्य–खार, खटाई, तरकारी, सर्व दालि, स्त्रीसंग, घोड़ा आदिककी सवारी, व्यायाम, श्रम ये चीजें गन्धक सेवन करनेवालेको वर्ज्य करनी चाहिये।

गंधक-अनुपान-गंधक चार मासा शुद्ध की हुई त्रिफला, घी, भांगरेका रस इनसे देना. इससे नेत्ररोगोंका नाश होता है और आयुष्य बढ़ती है १। और निष्कमात्र गंधक दूधसे एक महीना देनेसे शौर्य और वीर्य बढ़ता है २। और छः महीना देना. इससे सम्पूर्ण रोगोंका नाश होता है और दिव्य दृष्टि होती है ३। केलाके साथ देना. इससे त्वचाका दोष नष्ट होता है ४। घीकसे बलवृद्धि होती है ५। अडूसाके रससे क्षय, खांसी नष्ट होती है ६। त्रिफलाके काढ़ेसे मंदाग्नि और सर्व उदर रोगोंपर देना ७। बीस तोला गंधक लेके उसको तीन गुणा भांगराका रस डालके छायामें सुखाना. बाद वह चूर्ण बालहरडा, शहद, घी एक २ तोला लेके रोज दो महीना तक खानेको देना. दशमासतक देनेसे तीन और सात दिनोंमें खुजली–पांव इनका नाश होता है और नित्य लेनेसे संपूर्ण क्लेश, उत्पात नष्ट होते हैं ८। पिपलीसे और हरडासे देना. इससे क्षुधा, पुष्टि, वीर्य ये बढ़ते हैं और नेत्र और कांति सुन्दर होती है ९। एरंडका तेल, त्रिफला, गूगल, गन्धक, पारद समभाग लेके खरल करके बलाबल देखके देना. इससे अर्श, भगन्दर, कफविकार तथा संपूर्ण व्याधि नष्ट होती हैं। यह छः महीना लेनेसे आदमी देवताके माफिक होता है, सफेद केश काले होते हैं, दांत दृढ़ होते हैं, नेत्ररोग जाके बलवान् होता है, सर्व रोग नष्ट होके नेत्र गरुड़के माफिक होते हैं, शरीर शंकरके माफिक होता है। इसके मूत्रसे तांबेका सोना होगा ऐसा जानना १०।

गंधकरसायन–शुद्ध गंधकको गायका दूध, चतुर्जात, गिलोय, हरडा,

आंवला,बहेड़ा,सोंठ,भांगरा,अदरख हरएककी आठ २ भावना देना. बाद उस गन्धककी बराबर शकर मिलाना। इसको गन्धकरसायन कहते हैं। यह तोलेमें थोड़ी कम देना.इससे धातुक्षय,सम्पूर्ण प्रमेह,अग्निमंद,शूल,कोठेमेंका उपद्रव,सर्व कोढ़ इनका नाश होके वीर्यपुष्टि,बल इनको देता है।यह रसायन लेनेके पूर्व उलटी और जुलाब देना. उसको पथ्यको जंगली मांसरस देना ११। गन्धक चार तोले,पारद दो तोला इनकी कजली करके गवारपाठेके रसमें एक दिन खरल करना. खरल करके गोला बांधना. दो सम्पुटमें डालके सन्धिलेप करके अग्निकी आंच देना.शीत होने बाद निकालके एक महीना तक शहदमें और घीमें देना, जरा और दरिद्रका नाश होगा १२। गन्धक,मिर्च समभाग, त्रिफला छः भाग लेके किरमालेकी जड़ोंके रसमें घोटके देना.इससे सब रोगोंका नाश होगा। इति गन्धकविधि समाप्त।

अभ्रकका शोधन और मारणविधि।

पैदायश–अभ्रक चार प्रकारके हैं।पूर्वकी उत्पत्ति ऐसी है कि जब इंद्रने वृत्रासुर दैत्यको मारा उस वक्त इंद्रका वज्र पर्वतोंपर पड़नेसे अभ्रक पैदा हुआ और बिजलीके माफिक शब्द होके पर्वतोंपर जो वज्र पड़ा उस वज्रका गुण अभ्रकमें है इसवास्ते अभ्रकको गगन भी कहते हैं।

अभ्रकका वर्णभेद।

अभ्रक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इस माफिक चार प्रकारका है उसके क्रमसे संस्कार-विषमें लाल,पीला और कृष्ण वर्ण,सफेद रूपाकी क्रियामें, पीला रसायनमें, कृष्णवर्ण रोग नाशनेके वास्ते काममें लाना।

अभ्रककी परीक्षा–अभ्रक पिनाक, दर्दुर, नाग, वज्र ऐसे चार प्रकारके हैं। १ जो अभ्रक अग्निसे तपानेसे पत्रे पत्रे हो जाते हैं वह पिनाक अभ्रक है उसको न खाना,उसके खानेसे महाकोढ़ पैदा होगा। २ जो अभ्रक अग्निपर तपानेसे गोला गोला होके मेंढकके माफिक आवाज करता है वह दर्दुर है। वह खानेसे जहरके माफिक आदमीको मारता है। ३ जो अभ्रक अग्निपर तपानेसे सर्पके माफिक फूत्कार शब्द करता है वह नागाभ्रक है, वह खानेसे भगन्दरादिक रोग पैदा करता है अतः उसे न खाना चाहिये। ४ जो अभ्रक अग्निपर तपानेसे कुछ

विकार पाता नहीं और ज्योंका त्यों रहता है और रंगमें काले काजलके माफिक है वह वज्राभ्रक है । इसको ही कृष्ण-अभ्रक कहते हैं । यह लेना श्रेष्ठ है । बड़े गुणसे युक्त है ।

अभ्रककी शुद्धि-१ कृष्णाभ्रक तपाके गायके दूधमें, त्रिफलेके काढ़ामें, कांजीमें, गोमूत्रमें, सात २ वक्त तपाके बुझाना. इससे शुद्ध होता है ।२ अभ्रक बेरकी छालके काढ़ामें बुझाके हाथसे मसलके ऊपरका पानी निकालके सुखा लेना. इससे शुद्ध होता है।

धान्य-अभ्रक करनेकी विधि ।

अभ्रकका चौथा भाग चावलोंकी भूसी लेके उसे शुद्ध अभ्रकमें मिलाके ऊनी वस्त्रमें पोटली बांधके पीछे तीन दिन पानीमें रखे, पीछे हाथसे मसलना, इससे अभ्रकका वस्त्रमेंसे पानी आ जायगा, पीछे उस पानीको उतारके निकालके नीचे जो शुद्ध धान्य अभ्रक रहता है उसे निकाल लेना, उसमें थोड़ासा घी डालके कढ़ाईमें सुखा लेना. इसको धान्य-अभ्रक कहते हैं।

अभ्रकपुटसंख्या-अभ्रकको पुट एकसे लगाके दशतक रोग नाशनेके वास्ते और सौसे लगाके हजारतक रसायनके वास्ते देना. इससे श्रेष्ठ होता है १ ।

१ पुटी अभ्रक--धान्य अभ्रक एकभाग, टंकणखार दो भाग एक जगह खरल करके अंधमूसमें धरके तीव्र अग्निसे पचन करना. पीछे दूधमें खरल करके गजपुट देना. इससे जो भस्म होती है उसे काममें लाना यह स्वभावसे शीतल है ऐसा जानना ।

दशपुटी अभ्रक-१० धान्य-अभ्रक लेके उसको कासुंदा और केलेके कंदका पानी और चौलाईके रसका हर एक चीजोंके दश २ गजपुट देना. हर एकसे भस्म होता है।

तीसरी विधि ४० पुटी--धान्य-अभ्रक लेके नागरमोथाके काढ़ेमें तीन, पुनर्नवाके रसमें ३, कासुंदा ३, तांबूलपानके ३, सोरा ३, इन हर एककी तीन तीन गजपुट देना. पीछे बड़की जटाके काढ़ेके ३, थोहरके दूधके ३, गोखरूके काढ़ेके ३, कवचबेलके रसके ३, सांवरीके कंदके रसके ३, गन्नाके रसके ३ इन चीजोंमेंके हर एककी तीन तीन गजपुट देना. पीछे गायके

दूधके आठ गजपुट देना. बाद घी, शकर, दही इनका एक २ पुट देना. इससे अभ्रककी भस्म होती है वह भस्म संपूर्ण रोग नाशक, योगवाही, स्त्रियोंका दर्पशांतिकारक, मृत्युनाशक, मजा बढानेवाला ऐसा होता है ऐसा जानना।

चौथी विधि--धान्याभ्रक लेके आकड़ेके दूधसें खरल करके उसकी टिकिया बांधके धूपसें सुखाके शरावसंपुटमें धरके गजपुट-अग्नि देना. स्वांग शीतल होनेसे निकालके फिर खरलमें पूर्व रीतिसे घोटके पुट देना. इस माफिक सात गजपुट देना. बाद तीन गजपुट बड़की जटाका रस और काढ़ेमें देना. पीछे खरल करके रखना। वह भस्म अच्छी होती है, इसमें शंका नहीं। इस भस्मसे संपूर्ण रोगोंका नाश करके मृत्युको जीतती है और सफेद केशको काले केश करती है और योग्य अनुपानसे सब रोगोंपर चलती है।

पांचवीं विधि--धान्यअभ्रक लेके उसका छठवाँ भाग नागरमोथा सोंठ मिलाके कांजीमें एक दिन खरल करना. बाद चित्रकके रससें खरल करके शरावसंपुटमें धरके कपड़मट्टी करके गजपुट देना. स्वांग शीतल होनेसे निकालके त्रिफलाके काढ़ेकी तीन गजपुट देना. बाद नागबलाको काढ़ाकी ३, गोमूत्रकी ३; सफेद मुसलीके काढ़ेके ३, तुलसीके रसकी ३, सूरणकंदके रसकी ३ इन पांचोंके रसकी तीन तीन गजपुट देना. इससे जो अभ्रककी भस्म आती है वह उमदा होती है।

छठी विधि सौपुटी--धान्य-अभ्रक लेके उसको १ थोहरका दूध, २ आंकडेका दूध, ३ बड़का दूध, ४ गुवारपाठेका रस ५, भद्रमोथा, ६ नर-मूत्र, ७ बड़की शाख, ८ बकरेका खून इन आठों चीजोंसें हरएक एकका तेरा गजपुट देना. सब मिलाके १०४ पुट होते हैं। इसमें अभ्रकभस्म बहुत उमदा होके सब काम करनेको समर्थ होगा, देहको दिव्य करता है। इसको शतपुटी कहते हैं।

सहस्रपुटी अभ्रकभस्म--धान्यअभ्रक लेकेखरलमें डालके घोटके टिकिया बांधके सुखाके शरावसंपुटमें धरके गजपुट अग्नि देना. इसमाफिक अभ्र-कको ६४ वनस्पतियोंके रस अथवा रस न निकले तो उसके काढ़ेकी हर-एककी सोला पुट देना. इससे उमदा भस्म होके एक हजार रोगोंका नाश

करता है। चौसठ वनस्पति नीचे लिखे अनुसार:—१ आकड़का दूध २ वड़का दूध ३ थोहरका दूध ४ गुवार पाठेका रस ५ एरंडकी जड़ ६ कुटकी ७ नागरमोथा ८ गिलोय ९ भांग १० गोखरू ११ रिंगणी १२ जंगली बैंगन १३ शालिपर्णी १४ पृष्टिपर्णी १५ राई १६ सफेद अपामार्ग १७ बड़की शाख १८ बकरेका खून १९ बेल २० अरणी २१ चित्रक २२ टेंभुर्णी २३ हरडा २४ पाठामूल २५ गोमूत्र २६ आंवला २७ बहेड़ा २८ खस २९ कुंभा ३० तालीसपत्र ३१ ताड़मूल ३२ अडूसा ३३ असगंध ३४ अगस्ता (हतिया ३५ भांगरा ३६ केलेका रस गरम किया ३७ धतूरा ३८ लोध ३९ देव लप ४० वृक्षका बांदा ४१ दूब ४२ कांसकी जड़ ४३ कासुंदा ४४ मिर्च ४५ झाना. ४६ काकमाची ४७ शंखपुष्पी ४८ टेंटू ४९ मूल ५० नागबेल समाप्त। नेवा ५२ मंजिष्ठ ५३ इन्द्रायणी ५४ वृंदावनी ५५ भारंगी ५ वें। वृंदावन ५७ कैथ ५८ शिवलिंगी ५९ कडवा ढाक ६० मारे बाद उनके मूषकपर्णी ६२ धमासा ६३ कनेर ६४ करवीर ६५ आ, वह हरताल आठ ६७ शतावरी इन चीजोंके रस और काढ़ेमें घोटसके बदले पत्री लेना देना. स्वांग शीतल होनेसे निकालके फिर घो १ पत्री और २ पिंडी। इन हरएक चीजोंकी सोला २ पुट देना. इससे मा-माफिक अमृतसे ज्यादा जराव्याधिनाशक पानसे देके पिष्टान्न भोजन प्रकारके अनुपानसे अनेक व्याधियों का नाश करता है। करती है, यह राजाओंको देने योग्य है। त्रिकके माफिक चमकने-

अमृत करनेकी विधि।

को एक कपड़ामें पुटली अभ्रकभस्म, त्रिफलाका काढ़ा १६ भाग, गायके लाके रसमें, तिलके सबको लोहेके बर्तनमें एकत्र करके मंद अग्निसे पचाना. हरतक दोलायंत्रसे जल जानेसे अभ्रक अमृत होता है. अभ्रक दश भाग, त्रि रीतिसे पोटली १६ भाग, घी ६ भाग सब एकत्र करके मंद अग्निसे पचाना. एक प्रहर अमृत होता है. इसको अमृतीकरण कहते हैं। पानीमें

अभ्रकभस्मपरीक्षा—अभ्रक निश्चंद्रक होके काजलके माफिक महीन हो तब शुद्ध समझना, बाकी अभ्रक निषिद्ध है।

अभ्रकगुण—अभ्रक अत्यंत अमृत है, बुद्धिप्रद, वृष्य, आयुष्य देनेवाला,

बलकर, स्निग्ध, रुचिकर, शीतवीर्य होके रोगनाशक, शरीरको मजबूती करनेवाला, वीर्यवृद्धि, तारुण्य,बड़ी उम्मर, पुत्र देनेवाला, सौ स्त्रियोंसे रमण करानेवाला, काम. पित्त, वायु, श्वास, भगंदर, लकवा, प्रमेह, श्रम, कफ, खांसी,क्षय इन रोगोंको यथा अनुपानसे देना. सब रोगोंका नाश करता है।

अभ्रकपर अपथ्य-खारा, खट्टा, दाल, ककड़ी, करेला, कैर, बैंगन, तेल ये चीजें वर्ज्य करना।

३ अशुद्धअभ्रकदोष-कोढ़, क्षय, पांडुरोग, हृदयरोग, पसलीमें पीड़ा, अग्निमंद, उदररोग व मृत्युको देता है इसवास्ते शुद्ध करके लेना, इसमें इसमें हो तो सिंहके केशके माफिक विकार करता है इसवास्ते निश्चंद्रक जीतती चाहिये।

सब रोगोंपर पंचाभ्रकसे सत्त्व निकालनेकी विधि।

पांचवीं विधि-रके एक दिन कांजीमें और एक दिन सूरणकंदके रसमें सोंठ मिलाके कांजीम प्याजके रसकी भावना देना और चौथा भाग करके शरावसंपुटमें ध इसमें मिलाके भैंसके गोबरसे गोलियां बांधके होनेसे निकालके त्रिफला में धरके खूब अग्नि देना. इससे जो अभ्रकका काढ़ाकी २, गोमूत्रकी २,कट्टा करके उसको पंचमित्र देके मूसेमें धरके २, सूरणकंदके रसकी ३ाफिक लकड़ी होती है वह पारद जारणको श्रेष्ठ इससे जो अभ्रककी भस्है और सर्व धातु उपधातुमें इसका गुण श्रेष्ठ है।

छठी विधि सौपुटी-, गूगल, गुंजा, टंकनखार इनको पंचमित्र कहते हैं। आंकडेका दूध, ३ ब-अभ्रकसत्त्व शीत, त्रिदोषनाशक, रसायन, पुरुषार्थ मूत्र, ७ बड़की शाखायुष्य बढ़ानेवाला है। अभ्रकसत्त्वके समान दवा इस तेरा गजपुट देनानहीं है ऐसा जानना।

बहुत उमदा होवे इसको शत-विधि-अभ्रकका द्राव भाग्य-उदय विना होना कठिन है जब स-उदय हो और महादेवकी कृपा हो तब होता है लेकिन ग्रंथसंग्रहमें विधि बा।ना चाहिये कारण कि,कभी भाग्य-उदयसे हो भी जाता है इसवास्ते कहता हूं-अभ्रक और संचल दोनोंको थोहरके दूधसे पीसना,खूब घोटना,शरावमें डालके पुट देना. इस माफिक बहुत पुट देना. इससे पाराके माफिक द्राव

होता है। २ धान्य-अभ्रक लेके अगस्ताके पत्तोंके रसमें घोटना. बाद सुवर्णकंदके पेटमें भरके मट्टी लेप करके गोष्ठभूमिमें हाथभरका खड्डा खोदके गाड़ देना. एक महीना रखना. बाद काढ़ना. इससे पारेके माफिक पतला होता है। ३ देवदालीके चूर्णको देवदालीके स्वरसकी १०० भावना देना. बाद अभ्रक तपाके वह चूर्ण डालना. इससे अभ्रकका द्राव होके पतला रहेगा।

अभ्रकवेधी क्रिया—सफेद अभ्रक, सफेद कांच, बच्छनाग, सेंधवलोन, टंकनखार इनको समभाग लेके थोहरके दूधमें खरल करके रांगेके पत्तोंको लेप देना. मूसेमें डालके तपाना. गरम हो तब तेलमें ठंडा करना. पीछे लेप देके फिर बुझाना। इस माफिक सात दफे पुत्रजीवीके रसमें व तेलमें बुझाना. इससे रांगेकी चांदी होती है ऐसा जानना। इति अभ्रकविधि समाप्त।

अथ हरतालकी शोधन और मारण-विधि।

पैदायश—नृसिंह-अवतार होके हिरण्यकशिपुको मारे बाद उनके नखोंसे कांखोंमें खुजलाहट हुई उससे हरताल पैदा हुआ, वह हरताल आठ जातिका है। उसमें गोदंती अच्छा होता है। उसके बदले पत्री लेना चाहिये, वह वयस्थापक है उसमें दो जाति हैं १ पत्री और २ पिंडी। इन दोनोंमेंसे पत्री श्रेष्ठ है ऐसा जानना।

हरतालभक्षणनियम—हरताल १ गुंजा अनुपानसे देके मिष्टान्न भोजन देना. इससे यह कोढ़ादि सर्वरोगोंका नाश करता है।

हरतालशुद्धि-प्रथम हरताल चमकनेवाला—अभ्रकके माफिक चमकनेवाला लेना, उसके छोटे २ टुकड़े बना लेना. उसको एक कपड़ामें पुटली बांधके दोलायंत्रसे पचाना वा कांजीमें, सफेद कोहलाके रसमें, तिलके तेलमें त्रिफलेके काढ़ेमें इन चारों चीजोंमें एक एक पहरतक दोलायंत्रसे पचन करना. इससे हरताल शुद्ध होता है १। अथवा पूर्व रीतिसे पोटली करके कोहलेके पानीमें, तिलके तेलमें, चूनेके पानीमें एक एक प्रहर दोलायंत्रसे पचन करना. इससे हरताल शुद्ध होता है २। चूनेके पानीमें और क्षारके पानीमें पचाना. इससे हरताल शुद्ध होता है ३।

हरतालमारणविधि—शुद्ध हरताल लेके पुनर्नवाके रसमें एक दिन घोटके गोला करके सुखा लेना. बाद एक मटका लेके उसमें वह गोल

धरना, ऊपरसे उस मटकामें पुनर्नवाकी राख मुखतक भरना. मुखपर ढकना देके नीचे पांच दिन क्रम अग्नि देना. इससे हरताल भस्म हो जायगा,उसे एक गुंजा योग्य अनुपानसे देना. उससे सब रोग जायगा १। शुद्ध हरताल लेके दूधी, सहदेवी, चिकणा, जिसे (नागबला) कहते हैं इन तीनोंके रसमें हरताल तीन दिन घोटके टिकिया बांध लेना. पीछे सुखाके एक छोटी हंडी लेके उसमें ढाककी राख उस आधी भरके ऊपर टिकिया धरना.उसके ऊपर फिर आधी राख बैठाके भरना,पक्की दबाके पीछे बंद करके वह हंडी वालुकायंत्रमें रखके पचाना. तीव्र अग्नि आठपहर देना, स्वांग शीतल होनेसे निकाल लेना. उसमेंसे उमदा हरतालकी भस्म होगी उसे निकालना । वह सब रोगोंपर चलती है २ । शुद्ध हरताल लेके पीपलकी छालके रसमें इक्कीस दिन घोटना. बाद टिकिया बांधके सुखा लेना. बाद पीपलकी राख एक मटकेमें आधी भरके बीचमें टिकिया धरके ऊपरसे राख भर देना. पीछे मुख बंद करके संधि लेप देना और हजार गोबरीकी आंच देना, इससे एक पुटमें भस्म होती है, वह भस्म गरम लोहापर डालनेसे धुवाँ नहीं निकलता,सफेद रंग रहता है ३।शुद्ध हरताल लेके कोहलाके रसमें एक दिन घोटके नीबू, नखछिकनी, कुलथी, धतूरा, अदरख, भांगरा, दूधी, सहदेवी, तिलकटा (ब्रह्मदंडी), पलाश, एरंडमूल, लहसुन, कांदा, मालकांगणी, थोहर, काकमाची, आक इन सब चीजोंका स्वरस और काढ़ा और दूध मिले उसे लेके हर एक चीजको इक्कीस २ पुट देना और हर पुटको खरल करना.इस माफिकसबका पुट हो चुके तब उसकी टिकिया बांधके सुखा लेना. पीपलकी राख एक मटकेमें आधी नीचे और आधी ऊपर बीचमें टिकिया धरके मुख बंद करके राखसहित चूल्हेपर धरके चौंसठ पहर तक क्रम-अग्नि यानी मंद, मध्य, तीव्र अग्नि देना और शिवपूजा, ब्राह्मणभोजन कराके ठंडा होनेसे युक्तिसे निकाल लेना, वह सफेद चन्द्रमाकी तुल्य होती है। उसे निकाल लेना, पीछे अच्छे सोने चांदीके बर्तन और शीसीमें रखना, उसमेंसे एक चावलभर दो वक्त देना. अनु-पानसे पथ्य करना, इससे सब रोग, अठारा प्रकारका कोढ़, सब जातिका ८० प्रकार का वायु, तेरा प्रकारके सन्निपात, बीस प्रकारका प्रमेह, पांचों प्रकारके उपदंश, सर्व जातिके भगंदरादि सब रोगोंका नाश करता है ।

धातुवेधी हरताल—हरताल, पारा समभाग काजल करके रुद्रवंतीके रसमें खरल करके तांबाके पत्रोंको लेप देके पुट देना. इससे दिव्य सुवर्ण होता है।

हरतालकी परीक्षा और गुण—हरतालकी भस्म अग्निपर धरके देखना. धुवाँ उठे तो खोटी है निर्धूम हो तो अच्छी है, और तीखी, स्निग्ध, तुरस, उष्ण होके विष, खाज, कोढ़, रक्त, वात, पित्त कफ, व्रण, मृत्यु, जरा इनका नाश करती है।

हरतालका सत्त्व—हरतालको जमालगोटा, एरंडके बीजसे घोटके कूपीमें भरके वालुकायंत्रमें पचाना, शीसीके मुखको लगता है सो लेना।

इति हरतालविधिः समाप्तः।

अथ हिंगुलकी शोधन और मारणविधि।

पैदायश--अशुद्ध पारा एक भाग, गंधक चार भाग लोहाके बर्तनमें पचाके एकत्र करना, उसके टुकड़े आतशी शीशीमें भरके उसको एक अंगुल मोटी कपड़मट्टी करके छायामें सुखाके वालुकायंत्रमें एक दिन मंदाग्निसे पचाना. पीछे पांच दिन क्रमविधिसे अग्नि देना. सातवें दिन निकाल लेना।

हिंगुलभेद--चरमार, शुकतुण्ड, हंसपाद इस माफिक हिंगुल तीन जातिका है। उसमें एकसे एक अच्छा है।

हिंगुलका शोधन--हिंगुलको मेषी (भेड़) के दूधकी सात पुट नींबूके रसकी सात पुट देके सुखाना. शुद्ध होता है. अदरखके रसके सात पुट बड़े चूकेकी सात भावना देना. शुद्ध होता है।

हिंगुलमारण--१एक वाल हरतालका चूरा शरावसंपुटमें बिछाके उसपर एक तोला हिंगुलका टुकड़ा रखके उसपर दो तोला अदरखका रस डालके एक मासा लौंगका चूर्ण आजू बाजू बिछाके मंदाग्निसे तीन घड़ी चूल्हेपर पचाना बाद उतारके पीस लेना. उसमेंसे एक गुञ्जा तांबूलसे देना. इससे अच्छी पुष्टि आती है।२ शिंगरफका टुकड़ा एक चिथड़ेमें बांधके सफेद कांदामें डालके दश गोबरीकी आंच देना. बाद निकालके फिर अग्नि देना. इसमाफिक १०० अग्निपुट देना और १०० बैंगनमें देना और पक्के आममें १०० पुट देना और

कडू इंद्रायणमें १०० पुट देना और १०० निंबूमें देना, इससे शिंगरफ बहुत अच्छा होता है इससे श्वास, खांसी, ज्वर, इनका नाश करके काम दीपन करता है, स्त्रियोंको सुख,अग्नि,बल बढानेके वास्ते त्रिसुगंधसे देना।

शिंगरफका गुण–शिंगरफ कडू, तुरस, तीखा ऐसा है और नेत्ररोग कफ, पित्त, हृदयरोग, कोढ, ज्वर, प्लीहा, पीलिया, आमवात, संपूर्ण उपदंश और सर्व रोगोंका नाश करता है और दीपन, रसायन, जारण, लोहाका मारण श्रेष्ठ है।

अशुद्ध हिंगुलका दोष–कोढ, क्लेश, ग्लानि, भ्रम, मूर्च्छा इनको पैदा करता है इसवास्ते अच्छा शुद्ध करना चाहिये ।

हिंगुल अनुपान–सूतिका रोगको एक गुंजा गोमूत्रसे देना. पुष्टिको शहद, घीसे, पसीना ज्यादा हो तो शकरसे देना और योग्य अनुपानसे सर्व रोगोंपर देना. फायदा होता है । इति हिंगुलविधिः समाप्तः ।

रसकपूरकी विधि ।

पैदायश–पारद,फिटकडी, हीराकशीश, सेंधवलोन इन चारोंको सम-भाग लेके बीसवां भाग नवसादर लेना और सबको खरलमें घोटके गवारपाठाके रसकी भावना देना और डमरूयंत्रमें क्रम-अग्निसे तीव्र अग्नि देना. इससे रसकपूर होता है, सो लेना २ ।

दूसरा प्रकार--गेरू, फिटकडी, सेंधवलोन, ईटका चूरा इन चारोंको शेर शेर लेके एक हंडीमें डालना, ऊपरसे पारा रखना उसपर पहिली चीजोंका चूर्ण बैठाके बाद दूसरी हंडी उसे जोडके डमरूयंत्र करना.चूल्हे-पर धरके छः मन बेरकी लकडीकी रात दिन आंच देना बाद ऊपरकी हंडीमें जो रसकपूर जमें उसे लेना और उसके समभाग नवसादर मिलाके घोटना. बाद आतशी शीशीमें भरके वालुकायंत्रमें मंदाग्निसे पचाना.आधा मन लकडीकी आंच देना. वह ऐसे कि हंडीका और अग्निका एक बिलस्तका अंतर रहे, इससे कपूर तैयार होगा सो लेना. उसको अनुपा-नसे देना. इससे सर्व रोगका नाश होता है ।

रसकपूरगुण-रसकपूर फिरंगरोग, सर्व गर्मी, सर्व कोढोंको, अलयाग्निके माफिक नष्ट करता है. व्रणरोगका नाश करके कामको उत्पन्न करके देहको

माफिक तेज देता है, बल और अग्निको बढ़ाता है और संपूर्ण रोगोंको जैसे केसरी (सिंह) हाथीका नाश करता है वैसे मारता है।

सुरमा तथा अंजनकी उत्पत्ति।

एक सिन्नांजन दूसरा कपोत-अञ्जन उसका रंग एक सफेद, दूसरा काला है. उसमें काला रूक्ष है और सफेद सौवीरांजन है।

अञ्जनलक्षण-जो सुरमा काला काजलके रंग माफिक हो और घिसनेसे गेरूके माफिक दीखे वह सौवीरांजन है और वह सफेद धूम्ररंग दीखे तो सौवीरांजन जानना।

सुरमाकी शुद्धि-सुरमा लेके त्रिफलेके काढ़ेमें और भांगरेके रसमें पचाना. इससे शुद्ध होता है और जँभीरीके रसमें घोटके सुखाना. इससे शुद्ध होता है। उसे रोगोंमें योजना और गेरू, हीराकशीस, टांकणखार, कौड़ी, शंख, फिटकड़ी, मुरदाशंख इन सात चीजोंकी शुद्धि सुरमाके माफिक करना. उससे शुद्धि होती है।

हीराकशीसमारण-हीराकशीसको गंधक मिलाके पुट देना. इससे भस्म होती है।

हीराकशीसअनुपान-हीराकशीसको त्रिफला, मिर्च मिलाके घीसे देना. घी और शहदमें देना. यह पांडु, क्षय, गुल्म, प्लीहा, शूल सब मूत्ररोग इनका नाश करता है।

हीराकशीसगुण-हीराकशीस उष्ण, तुरस, खारा, नेत्रको हितकर ऐसा होके विष, वायु, कफ, व्रण, सफेद कोढ़, केशोंकी खाज, नेत्रोंकी खाज, मूत्रकृच्छ्र इनका नाश करता है।

गेरूके लक्षण-गेरू हलकी और नरम लेना. बाद गायके दूधमें खरल करके सुखा लेना. इससे शुद्ध होती है और जरा घी लगाके भून लेना, इससे शुद्ध होता है।

गेरूका गुण-गेरू, पित्त, रक्तपित्त, कफ, हिचकी, विष, ज्वर, उलटी इनका नाश करनेवाली होके चक्षुष्य(नेत्रहितक), शीत, स्निग्ध, तुरस है, रससे पैदा होती है. उपरसोंके नाम-हिंगुल, टांकणखार, गंधक, स्फटिक,

मनशिल, सुरमा, शुक्तिक, शंख, कशीस, समुद्रका फेन, गेरू इन बारा चीजोंको उपरस कहते हैं, जहां रस न मिले उस ठिकाने उपरस लेना चाहिये ।

टांकणखारशुद्धि ।

टांकणखार गोमयसे धोना. इससे शुद्ध होता है और अग्निपर भून लेना. इससे शुद्ध होता है ।

टंकणखारका गुण–टांकणखार अग्निकारक, सोना, चांदीको शुद्ध करनेवाला, सारक होके विषदोष, वायु, कफ इनका नाश करनेवाला है।

फिटकड़ीके गुण और दोष ।

फिटकड़ी सौराष्ट्र देशके जंगलकी मट्टी है, उसमेंसे जिसके कपड़ाके लगानेसे लाल दाग पड़ता है वह पाराको बांधनेवाली है और व्रण, विष, सर्व कोढ़ोंका नाश करता है और जो अति सफेद स्निग्ध खट्टी है उसका नाम सौराष्ट्री है अमृता, काकशी, स्फटिका, मृत्तिका, आटकी, तुवरी, मृत, सुरमृत्तिका ऐसे नाम हैं ।

फिटकड़ीका शोधन–तीन दिन कांजीमें रखना. इससे फिटकड़ी शुद्ध होती है. अथवा फुलाकर लेना. इससे शुद्ध होती है ।

फिटकड़ीका सत्त्व काढ़नेकी विधि ।

फिटकड़ी खार इनको खटाईमें खरल करके फूकना. इससे सत्त्व निकलता है

फिटकड़ीका गुण–फिटकड़ी तुरस, तीखी, खट्टी, कण्ठ, नेत्र, केशको फायदा करनेवाली और व्रण, विष, सफेद कोढ़ और त्रिदोषका नाश करनेवाली तथा त्रिदोषका नाश करके पाराको बांधनेवाली है ऐसा जानना।

मनशिलका गुण और दोष–उसको चन्द्रक भी कहते हैं. मनशिल हरतालके माफिक है. लेकिन् हरताल पीली होती है और मनशिल ज़रा लाल होती है, उसे करवीर कंकर रहित उत्तम देखके लेना ।

मनशिलका शोधन–मनशिल हलदीके काढ़ामें दोलायंत्रसे पचाना. इससे शुद्ध होता है १ । मनशिलको अगस्ताके रसकी सात भावना देना. इससे शुद्ध होता है २ । और अदरखके रसकी सात भावना देना. इससे शुद्ध होता है ।

मनशिलका गुण--मनशिल गुरु, वर्णकर, सारक, उष्ण, लेखन, तीखी, कडू, स्निग्ध, शीत ऐसी है और विष, श्वास, खांसी, भूतबाधा, रक्तविकार, इनका नाश करती है और मनशिलका सत्त्व हरतालके सत्त्वके माफिक निकलता है।

शंखका गुण और दोष--शंख सफेद और उत्तम देखके लेना।

शंखका शोधन--खटाई और कांजीमें दोलायंत्रसे पचाना. इससे शुद्ध होता है।

शंखका गुण--शंख खारा, शीत, ग्राही, अतिसार, नेत्रका फूल, मुहकी फुनसियां इसका नाश करता है।

शंखभस्म--शुद्धशंखके टुकड़े लेके शरावसंपुटमें गवारपाठेका रस डालके हलका पुट देना. इससे भस्म होता है. इसमाफिक कौड़ियोंकी भस्म करना और इसमाफिक मोतियोंकी शीपकी भस्म करना।

समुद्रफेनशुद्ध--समुद्रफेन निंबूके रसमें घोट लेना, शुद्ध होता है।

नवसादरशुद्धि--नवसादरको पानीमें पकाके ईंटपर सेक लेना, शुद्ध होता है. इसीमाफिक बांगडखारको सेक लेना।

गिरिसिंदूर--गिरिसिंदूर पर्वतोंमेंसे पैदा होता है, वह त्रिदोषशमक है. मुरदाशंख गुजरात देशमें पैदा होता है, उसको सुरमाके माफिक शुद्ध करके शंख व्रणादिक रोगोंपर काममें लाते हैं। गियाभाटा यह लोहका आकर्षण करता है, इसको लोहचुंबक पाषाण भी कहते हैं, इसमें दूसरा भेद शंख जीरा है।

राजमणि--दो जातिका होता है, उसमेंसे जड़ भारी हो सो अच्छा देखके लेना।

राजमणिका शोधन--बिजोराके रसमें, अदरखके रसमें अथवा खटाईमे शोध लेना. उसीमें मारना।

राजमणिका गुण--तीखा, कडुवा होके प्रमेह, हिचकी, उलटी इनका नाश करेगा

राजमणिका सत्त्व--राजावर्त, मनशिल, घी, लोहपात्रमें पचाके भैंसके दूधमें पचाना. इससे सत्त्व निकलता है।

गुण--रावटी मधुर, शीत, संताप, श्रम इनका नाश करती है, तपानेसे पसीना निकालनेके काम आती है, गरम करके पोटली और बिस्तरके नीचे डालते हैं इससे बादीका शमन होता है।

गूगलशुद्धि--गूगल भैंसकी आँखके रंगके माफिक हो वह लेना, वह उत्तम है, वह गूगल मारवाड़ देशमें पैदा होता है। उसकी शुद्धि त्रिफलाके काढ़ेमें गरम करके कपड़ासे छान लेना, शुद्ध होता है अथवा हरड़के काढ़ेमें शुद्ध कर लेना।

अथ शिलाजीतकी विधि।

पैदायश--शिलाजीतकी पैदायश पत्थरसे होती है। धूपके दिनोंमें तपनेसे जो पत्थरका मदन झरता है उसको शिलाजीत कहते हैं।

शिलाजीतका गुण--मधुर होके प्रमेह आदि बहुतसे रोगोंपर चलती है।

शिलाजीतका शोधन--अच्छी शिलाजीत लेके लोहाके बर्तनमें आधा ठंडा और आधा गरम पानी डालके उस शिलाजीतको अंदर डालके खूब हिलाके मट्टी नीचे बैठजानेपर ऊपरका पानी लेके सुखा लेना. उसको त्रिफलाके काढ़ेमें घोटके सुखा लेना, इससे शुद्ध होता है. इसीमाफिक शिलाजीतके पत्थरको कूटके पानीमें हिलाके वह पानी दो घड़ी रखना. ऊपरका पानी लेके सुखा लेना. इससे शिलाजीत पैदा होती है. जैसे कलमी सोरा निकालते हैं वैसे ही निकालना।

खार निकालनेकी विधि।

आघाड़ेको यानी अपामार्गको लाके उसको जलाके सफेद राख कर लेना उसी राखसे छः गुण पानी डालके खूब हिला डालना. बाद दो घंटा वैसे ही रख देना. बाद दूसरे खपरेमें वह पानी कपड़ेसे छानके निर्मल पानी लेना. वहखपरा चूल्हेपर रख अग्नि लगाके पानी जलाकरके जो सफेद खारहो उसे लेना और काममें लाना २। औरइसी माफिक पलाशका, तिलकी राखका, थोहरकी राखका, चित्रककी राखका, अजवाइनकी राखका, पीपलकी राखका, केलेकी राखका, आकड़ेकी राखका इसमाफिक सब वनस्पतियोंकी राखका खार निकलता है, जरूरहो तो इसी माफिक निकाल लेना।

अथ रत्नभेद ।

रत्नोंमें हीरा, मूंगा, मोती, पाच, वैडूर्य, गोमेद, माणिक, नील, पुष्पराज इनको नवरत्न कहते हैं. इनके आकारके दूसरे पृथ्वीमें उपरत्न भी मिलते हैं ।

रत्नोंका शोधन—खटाईमें माणिक, जयंतीके रसमें मोती और क्षीर-वर्गमें मूंगा और गायके दूधमें गरुड़, पाच, सेंधवलोन, कुलथीके काढ़ामें पुष्पराज, चौलाईके रसमें हीरा, नीलके रसमें नील, गोरचंदके पानीमें गोमेद, त्रिफलाके काढ़ामें वैडूर्य इन चीजोंमें दोलायंत्रसे पचानेसे सबकी शुद्धि होती है ।

भस्म ऊपर लिखे सब रत्नोंकी—प्रथम शोधन करनेके बाद हीरा छोड़के बाकी रत्नोंके वास्ते मनशिल, हरताल, गंधक इनके बराबर कुचलेके रसमें खरल करके पुट देना. इस माफिक आठ पुट देनेसे भस्म होती है. सेंधवलोन डालके कुलथीके काढ़ेमें घोटके इक्कीस पुट देनेसे सब रत्नोंकी भस्म होती है. सर्व रत्नोंको माक्षिक, गंधक, हरताल, शिंगरफ, मनशिल, पारा, टंकणखार इन आठ चीजोंमें किसी भी रत्नको खरल करके गजपुट देना. इससे एक पुटमें भस्म होती है ।

भस्मका गुण--चक्षुको हितकारक, सारक, शीतल, तुरस, मधुर, शुभ-कारक ऐसा है और क्षय, पांडु, प्रमेह, अर्श, खांसी, दमा, भगंदर, ज्वर, विसर्प, कोढ़, शूल, मूत्रकृच्छ्र, व्रण इनका नाश करती है और रत्नोंका अलंकार पहरनेसे ग्रहपीड़ा, दरिद्रता, विष, पाप, सन्ताप इनका नाश करता है और पुण्य, कीर्ति इनको देनेवाला है ऐसा जानना ।

हीरेकी भस्म—हीरा, सेंधवलोन, कुलीथके काढ़ामें तपाके इक्कीस दफे बुझाना. इससे हीराकी भस्म होती है १। मूंगा, गवारपाठाके रसमें धरके अग्निपुट देना २। अथवा गुलाबके पानीमें भिगोके धूपमें चालीस पुट देना; भस्म होता है३। इसी माफिक जंभीरीके और निंबूके रसमें ही होती है ३। गवारपाठेमें मिलाके सांबरके शिंगका पुट देनेसे भस्म होती है, उसको बारशिंग कहते हैं। यहबालादिक रोगपर मूंगेके माफिक चलती है ।

अथ विषोंका शोधन और मारण विधि।

सोमलका शोधन--१ सोमलके छोटे २ टुकड़े बनाके उसकी पोटली बांधके चौलाईके रसमें दोलायंत्रसे दो पहर पचाना. इससे शुद्ध होता है। २ इस साफिक निंबूके रसमें पचाना. सोमल शुद्ध होता है।

बच्छनागकी शुद्धि--१ बच्छनागका टुकड़ा करके पोटली बांधके गोमूत्रमें डालके वह बर्तन धूपमें धरना. गोमूत्र नित्य नवा डालना, तीन दिनसे निकालके धूपमें सुखा लेना. शुद्ध होता है। २ और गोमूत्रमें एक पहर दोलायंत्रसे पचाना; शुद्ध होता है।३ और गायके दूधमें दोलायंत्रसे एक पहर पचाना. इससे बच्छनाग शुद्ध होता है।

जमालगोटाकी शुद्धि--जमालगोटा लाके उसके उपरकी टरपल(छाल) निकाल देना. बीज सफेद पोटलीमें बांधके भैंसके गोबरमें वह पोटली दबाके धूपमें रखना. बाद तीन दिनसे निकालके गरम पानीसे धोना और उसकी दालि करके उसमेंसे एक जीभी होती है उसे मोख कहते हैं सो निकालके खरलमें डालके गरम पानी ले पीसके एक मटकाकी पेंदीको लगाके चार घंटा धूपमें ऊंधा रखना. सब तेल उस मटकाके शोष लेने बाद निकालके निंबूके रसमें घोटना और दश भावना देना. इससे जमालगोटा शुद्ध होता है. उससे उलटी, दाह नहीं होगा और जुलाब अच्छा होता है।

कललावीकी शुद्धि--कललावीके कंदके टुकड़े करके आठ प्रहर गोमूत्रमें डालके रखना. इससे शुद्ध होता है।

कुचिलाके बीजकी शुद्धि--कुचिलाके बीजोंको घी लगाके कोयलोंकी अग्निसे भून लेना, इससे शुद्ध होता है, अथवा दोलायंत्रसे दूधमें पचा लेना शुद्ध होता है।

गुंजाकी शुद्धि--गुंजाकी पोटली बांधके दोलायंत्रसे एक पहर कांजीमें पचाना. इससे गुंजा शुद्ध होती है. बाद उसकी दाल करके साफ कर लेना और काममें लाना।

अथ धतूराके बीजोंका शोधन और मारण विधि।

धतूराके बीजोंको चार प्रहर गोमूत्रमें भिगोके आठ पहर रखना. बाद उसीमें पचाना. इससे छाल निकालना शुद्ध होता है।

अफीमका शोधन–अफीम अच्छी पुरानी लेके उसको अदरखके पुट २१ देना, और हर पुटको सुखाना. इससे शुद्ध होती है।

कनेरकी शुद्धि–कनेरकी जड़को आठ पहर गोमूत्रमें रखनेसे शुद्ध होता है।

अदरखकी शुद्धि–गोमूत्रसे होती है, विषोंमें फक्त सोमल मारनेमें आता है, बाकी सब यों भी काममें आते हैं।

सोमलमारण–सोमलको शुद्ध करके थोहरके और आकडेके दूधमें घोटके टिकिया बांधके पीपलकी राखमें और शेरकी राखमें और अघाड़ेकी राखमें और पुनर्नवाकी राखमें हरतालके माफिक मटकेमें भरके हरतालके माफिक मारण करना. इसको आठ पहर बेरकी लकड़ीकी आंच देना. इससे भस्म निर्धूम्र चन्द्रमाके माफिक सफेद होती है, इसमें संशय नहीं है।

अथ रसायन अध्याय–प्रारंभः।

अश्विनीकुमार रस–बच्छनाग, त्रिकटु, त्रिफला, पीपलमूल, अफू, शुद्ध जैपाल, हरताल, टंकणखार, लौंग इनका चूर्ण करके पारद, गंधक इनकी कजली मिलाकर खरल करना. गौके आधा शेर दूधमें घोटना. सूखे बाद आधाशेर गोमूत्रमें घोटना; बाद भांगरेके रसमें घोटके गोली चनेके बराबर बांधना. योग्य अनुपानसे सब रोगोंको देना २।

विश्वतापहरण रस–पारद, गंधकी कजली, बालहरडा, पिपली, ताम्रभस्म, कुचिलेका बीज,जमालगोटा, कुटकी सब समभाग लेके वस्त्रगाल चूर्ण करके धतूरेके रसमें एक दिन खरल करना. गोली दो वाल प्रमाण बांधना. दो वक्त योग्य अनुपानसे देना इससे नवज्वर नष्ट होता है. पथ्य मूंगकी दालि, चावल देना ३।

शीतारि रस–ताम्र, गंधक, टंकणखारकी शूली, बच्छनाग, लीलाथूथा, पारदभस्म, कलखापरी, हरतालभस्म ये सब सम भाग लेके कललावीके पत्तेके रसमें एक घंटा घोटके गोली एक गुंजा प्रमाण बांधना. जीरा और मिश्रीके साथ देना. इससे एकाहिक ज्वर नष्ट होता है ४।

घोडाचोलीमात्रा-शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, बच्छनाग, हरताल, त्रिकटु, त्रिफला, टांकणखार, जमालगोटा ये सब समभाग लेके भांगरेके रसमें इक्कीस दिन खरल करना, गोली दो गुंजाप्रमाण बांधना. योग्य अनुपानसे देना. इससे नव्वद रोगोंका नाश करता है ५।

पूर्णप्रतिज्ञा रस-पारद, गंधक, तालक, मनशिल, ताम्र, दर्दूर, कलखापरी इनकी कजली करके अदरखका रस और निर्गुंडीका रस इनकी भावना देना. गोली गुंजा प्रमाण बांधके चित्रकके काढ़ेमें देना. इससे अष्टविधज्वर, सन्निपातज्वर, शीतज्वर इनका नाश करता है ६।

बृहत्सुवर्णमालिनीवसंत-सुवर्ण मासा ५, हिंगुल मासा १, कस्तूरी मासा १, नागभस्म मासा १, कलखापरी मासा १, प्रवालभस्म मासे ७, काली मिर्च मासे १६, गोरोचन मासा १, वंगभस्म मासा १, पिपली मासा १ इन सबको एकत्र खरल करके इसमें माखन मासे तीन डालके ५० निंबूके रसकी भावना देना. सुखाके वाल प्रमाण गोली बांधना. यह अनुपानसे देनेसे जीर्णज्वर, रक्तप्रमेह, पांडु, क्षय, शूल, श्वास, कास इन सब रोगोंका नाश करता है ७।

दूसरा शीतारि रस-लीलाथूथा भाग ३, शंखभस्म भाग ५, हरताल भाग६ इन सबका गवारपाठेके रसमें खरल करके शरावमें डालके कुक्कुट पुट देना. उसकी गोली गुंजा प्रमाण बांधना. शकरसे देना. इससे उलटी हो तो दूध पीना और दूध भात पथ्यको खाना, एक महीना तक गुड़ वर्ज्य करना ८।

सन्निपातचिंतामणि रस--पारद, भांग, शुद्ध गंधक, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, सोंठ, मिर्च, पिपली इन सबको त्रिफलाके काढ़ेकी भावना देके द्रोणपुष्पीके रसकी भावना ३ ऐसे तीन भावना देके एक गुंजा प्रमाण गोली बांधना, और अष्टविधज्वर, शूल, अजीर्ण, हलीमक इत्यादि रोग पर योग्य अनुपानसे देना ९।

चन्द्रशेखर रस--पारद, गंधक, मिर्च, टांकणखार, मिश्री इनको घोटके मच्छीके पित्तकी भावना देके गोली वाल प्रमाण बांधना. अदरख रससे देना. दाहपूर्वक ज्वर नष्ट होता है १०।

प्रमदानंद रस-पिपली, हिंगूल, कपर्दी, धतूराके बीज, जायफल, टांकणखार, बच्छनाग, सोंठ, नींबू, धतूरा और भांगके रसकी भावना देके गोली वालप्रमाण बांधके योग्य अनुपानसे देना. ज्वर, संग्रहणी, कफ, शूल नष्ट होता है ११ ।

वैष्णवी रस-हिंगुल, कुटकी, बच्छनाग, वच, त्रिकटु समभाग लेके चित्रकके काढ़ामें घोटके गोली १ वालकी बांधके अदरखके रसमें शहदसे देना. सर्व वातज्वर जायगा १२ ।

क्षयरोगपर राजमृगांक रस-पारदभस्म २ भाग, सोनाकी भस्म २ भाग, अभ्रकभस्म २ भाग, मनशिल, हरताल, गंधक दो २ भाग, सबको एकत्र खरल करके कौड़ियोंमें भरना. टंकणखार बकरीके दूधमें खरल करके कौड़ीकी मुद्रा देना. बाद मटकेमें डालके ढकके संधि लेप देके कपड़मट्टी करके गजपुट देना. शीत होने बाद निकाल लेना. खरल करके रखना. यह राजमृगांक चार गुंजा दश पिपली १९ मिर्चके चूर्णसे शहदमें देना. यह क्षयरोगका नाश करता है १३ ।

संग्रहणी रोगपर हंसपोटली रस-कौड़ियोंकी भस्म, त्रिकटु, टांकणखार, बच्छनाग, गंधक, पारद सबको जँभीरीके रसमें घोटके एक मासेकी गोली बांधना, मिर्चका चूर्ण घीसे देना. छाछ, चावल खानेको देना. संग्रहणीका नाश निश्चय होगा १४ ।

अश्मरीरोगपर त्रिविक्रम रस-ताम्रभस्मके समभाग बकरीका दूध मिलाके पचन करके सुखा लेना. उसके समभाग पारा और गंधक डालके तीनोंका खरल कर लेना. निर्गुंडीके रसमें एक दिन बाद गोला बांधके एक प्रहर वालुकायंत्रमें पचाना. शीत होने बाद निकाल लेना. दो गुंजा बिजोराके काढ़ेमें देना. इससे एक महीनामें मूत्र-अश्मरी नष्ट होगा १५।

प्रमेहपर प्रमेहबद्ध रस-पाराकी भस्म, कांतसार, लोहसार, शिलाजीत, माक्षिक, मनशिल, त्रिकटु, त्रिफला, अँकोलके बीज, कैथ, हलदी इन पंद्रह दवाइओंको समभाग लेके भांगराके रसकी भावना देके एक

निष्क शहदसे देना. इससे महाप्रमेह जाता है और बकायनके छः बीजोंका चूर्ण चार तोला चावलोंके पानीमें दो निष्क घी, मेहवद्ध रस मिलाके देना. इससे बहुत दिनका प्रमेह नष्ट होता है १६।

लोकनाथ रस--पारा, गन्धक इनकी कजली चार तोला लेके सोलह तोला कौड़ियोंमें भरके उसको मुद्रा देके आठ तोला शंखका टुकड़ा लेके शरावमें आधे नीचे और आधे ऊपर मध्यमें कौड़ियां रखके कपड़-मट्टी करके गजपुट देना, स्वांगशीत होनेसे निकालके खरल करके रखना, योग्य अनुपानसे देना. सर्व रोगोंका नाश करेगा १७।

क्षारताम्र रस--शंखभस्म, ताम्रभस्म, कपर्दभस्म, लोहभस्म, मण्डूर-भस्म, टंकणखार, जवाखार, त्रिकटु, सेंधवलोन इनको भांगरा, अडूसा, अदरख इनके रसकी भावना देके गोली चने बराबर बांधना, अनुपानसे देना. अतिसार, संग्रहणी, अग्निमांद्य, शूल इनका नाश करता है १८।

सर्वांगसुन्दर रस--सुवर्ण १, अभ्रक ३, पारा ५, गन्धक ६, टंकण-खार २, रौप्य ३ व ताम्र ४ इस माफिक भाग लेके निंबूके रसमें खरल करके हलका अग्निपुट देना. बाद निकालके चूर्ण करके समभाग मौक्तिक डालके दवा गुञ्जा प्रमाण घी शकरसे देना. इससे ज्वर, क्षय, खांसी, पांडु, भ्रम, दाह, शूल इत्यादि रोग शांत होते हैं १९।

मृत्युञ्जय रस--माक्षिक, तालक, ताम्र, बच्छनाग, मनशिल, जैपाल, गन्धक, पारद इनका मुसलीके रसमें खरल करके कुक्कुट पुट देना. मात्रा गुञ्जा प्रमाण ताम्बूलके पानसे देना, पथ्य, दही, चावल देना, इससे नवज्वर, सन्निपातज्वर तत्काल शान्त होगा २०।

बालज्वरपर हरिश्चन्द्रशेखर रस--अभ्रक, लोह, ताम्र, मण्डूर, रस-सिंदूर, टंकणखार, गोरोचन इनके चूर्णको गोकर्णीके रसमें एक प्रहर खरल करना. उसकी गोली उड़दके प्रमाण बांधके देना. इससे नाना प्रकारके ज्वर नाश होते हैं २१।

कुसुमाकर रस--सुवर्ण, अभ्रक, रौप्य, प्रवाल, मोती, माक्षिक, रस-सिन्दूर इनको खरल करके गौके दूधकी भावना दो दिन देना. भांगरेके

रसकी भावना दे, इसकी गोली दे वालकी बांधके रखना. योग्यअनुपानसे देना. इससे नानाप्रकारके प्रमेह, व्रण, भगंदर, अनेक प्रकारके ज्वर, मूत्रकृच्छ्र ८० प्रकारका वात दूर होता है. यह रसायन कश्यपमुनिने कहा है २२।

सिद्धगणेश रस–पारद, गंधक, अभ्रक खरलमें डालके काला धतूराके रसकी तथा त्रिकटु इनके साथ भावना देके रखना. मात्रा एक वाल प्रमाण शहदपीपलीमें देना. इससे नवज्वर, एकाहिक, व्याहिक त्र्याहिक, उलटी ये दूर होते हैं २३।

पाशुपतास्त्र रस–पारा, रससिंदूर, कांतलोह, सुवर्ण, अभ्रक, रौप्य, मुरादा शंख, शीप, प्रवाल, तालक, मासिक, मोती, सुरमा, रसांजन, नागभस्म, वंग, कपर्दभस्म ये दवा समभाग लेके देवदारुके काढ़ेमें एक महीना खरल करना. मात्रा दो गुंजा शहद और शकरसे देना. एक वर्ष अथवा छः महीना देनेसे व्रण, मेह, मेहव्रण गजचर्म, विसर्प, अर्श, सन्निपातादिकरोग शांत होते हैं, यह व्रणको बहुत अच्छी है २४।

वातगजांकुश रस–शुद्ध पारा ८तोले, गंधक ८ तोले, कुचलाके बीज ८ तोले, त्रिकुटा तोले १२ इनको घोटके योग्य अनुपानसे देना. इससे ८० प्रकारके वायु, ऊरुस्तंभ इनका नाश होता है २५।

मेहांतक रस–सुवर्ण, शीसाभस्म, लौंग, हिंगुल सबको खजूरके रसमें तीन दिन खरल करना. योग्य अनुपानसे देना. इससे सर्व प्रमेह नष्ट होंगे २६।

मालतीवसंत–सुवर्ण, मोती, प्रवाल, रौप्य, कलखापरी, हिंगुल, गंधक, पारा, नीलभस्म, तारमाक्षिक, सुवर्णमाक्षिक, वंग, बच्छनाग, वैक्रांत लोह ये सब समभाग खरलमें डालके गुलाबपानी, काटेसांवरीका रस, गन्नेका रस, दूध, नागर मोथेका काढ़ा इनकी सात भावना देना बाद कपूरकी भावना देके गोलियां बांधना योग्य अनुपानसे देना इससे पित्त, प्रमेह, उग्रज्वर, बहुत मूत्रका मूत्रखड़ा, उलटी, तृषा, मूत्राघातये रोग दूर होके वीर्यवृद्धि, पुष्टि, दृष्टि श्रुति इनको देता है २७।

महापूर्णचंद्रोदय रस–पारद, गंधक, ताम्र, टांकणखार, नागभस्म, सुवर्ण-

भस्म, माक्षिक, मोती, कांत, वंग, अभ्रक, कस्तूरी, पोलादभस्म, चंदन, केशर, कपूर इन सबको समभाग लेके मालतीके रसमें प्रहर भर खरल करके अदरखके रसमें घोटके गोली वाल प्रमाण बांधके अदरखके रसमें देना. इससे खांसी, श्वास, प्रमेह, रक्तदोष, कुष्ठ, राजयक्ष्मा, क्षयरोग दूर होके धातुवृद्धि होती है २८।

हिरण्यगर्भ रस--सुवर्ण, रौप्य, ताम्र, प्रवाल, पारद इनकी भस्म गंधक मनशिल, हरताल, कुटकी इनको समभाग लेके बकरीके दूधमें खरल करना. बाद मूसेमें डालके गजपुट देना. स्वांग शीतल होने बाद लेके खरल करके रखना. योग्य अनुपानसे दो वाल देना. इससे सर्वज्वर शांत होता है २९।

सिंदूरभूषण रस--अभ्रक, रससिंदूर, टंकणखार, गंधक ये समभाग लेके धतूरेके रसमें खरल करके उड़द बराबर गोली करके शहदसे देना. इससे अठारह प्रकारका कोढ वातरोग, शूल, प्रमेह, महाव्याधि दूर होती है यह रस गर्भिणीको देनेमें हरकत नहीं है ३०।

सिद्धलक्ष्मीविलास रस--सुवर्ण, रौप्य, ताम्र, कांत, तीक्ष्ण, मंडूर, अभ्रक, वंग, नाग, मौक्तिक, प्रवाल सबको भस्म सबके समभाग रससिंदूर डालके जायपत्री, त्रिकटु, त्रिफला, चातुर्जातक, केशर, कस्तूरी इन हर एककी सात २ भावना देना. उड़द प्रमाण गोली बांधना. मिश्री और शहदसे देना. इससे क्षय, पांडु, कासश्वास, जीर्णज्वर, गुल्म, प्रमेह इनका नाश होके शरीर पुष्ट होता है ३१।

वसंतकुसुमाकर रस--सुवर्ण २, रौप्य २, वंग ३, नाग ३, कांत ४, रससिंदूर ४, अभ्रक ४, प्रवाल ४, मौक्तिक ४ एकत्र खरल करके गाईका दूध, अडूसा, कमलकंद, सफेद खश, काला खश, कोलीकांदा इनके रसकी जुदी २ सात २ भावना देना. बाद सेवतीकी सात और मोगरीकी सात सबके पीछे कस्तूरीकी भावना देके मात्रा तैयार करना. योग्य अनुपानसे देना. इससे बुद्धि काम सुख इनकी प्राप्ति होती है, मेह रोगपर प्रशस्त है और धातुवर्धक होके क्षय, खांसी, उन्माद, सर्पका विष, शुक्रदोष, पांडु, शूल, मूत्राघात, अश्मरी रोगका नाश करेगा, इसपर मिष्टान्न भोजन करना. इससे अत्यंत काम बढ़ता है स्वस्त्री भोगनेके वास्ते समर्थ होता है ३२।

अष्टमूर्ति रस--पारा, हिंगुल, मनशिल, सोमल, हरताल, मुरदाशंख, तुरटी ये समभाग, सोना आधा भाग, रौप्य आधा भाग, रसकपूर भाग ९, गंधक भाग ६ सबको काजल करके आतशी कूपीमें भरके कपड़मट्टी करके वालुकायंत्रमें पचन करना. अग्नि सोलह पहर चार क्रम विधिसे देना. स्वांगशीत होने बाद निकालके कूपीके मुखको लगी हुई रसायन लेके रखना. योग्य अनुपानसे सब रोगोंमें देना ३३।

वांतिहृदय रस–लोह, शंखभस्म, गंधक, पारा समभाग खरलमें डालके गवारपाठेका धतूरा, चूका, इनके रससे खरल करना. बाद गोला करके सात कपड़मट्टी करके पुट देना. बाद खरल करके योग्य अनुपानसे दो वाल देना. और अजमोदा, विडंग इनका चूर्ण शहदसे देना. पीपलकी राखका पानी पिलाना. इससे त्वरित वांति बंद होगी. विषूचिका (हैजा) नष्ट होगी ३४।

स्वच्छंदभैरव रस–पारा, बच्छनाग, गंधक, जायफल एकत्र करके इनसे आधा पिपलीका चूर्ण लेना, घोटके योग्य अनुपानसे देना. इससे शीतज्वर, सन्निपात, विषूचिका, विषम जीर्णज्वर इनका नाश होके शिरोरोग, अग्निमंदता इनको फायदा करता है।

नृसिंहवडवानल रस–पीपलमूल, त्रिकटु, लहसन, सज्जीखार, जवाखार, पापड़खार, त्रिफला, अजवाइन, पुनर्नवा, अजमोदा, कुष्ठ, मासा (उंधाली) की जड़, पाठामूल, मिठाई, सुवर्णकंद, खारा सुवर्ण, कांडवेल, चिरायता, रेवाचीनी, जीरा, स्याह जीरा, गजपिपली सब समभाग, सबके सम भाग दंतीमूल और सबके बराबर पंच नोन, तेंड, इंद्रजव सर्व समभाग लेके जमालगोटा, सबके बराबर और सबके दुगना गुड़ डाल करकी गोली बेरके बराबर बांधना और एक रोज गरम पानीसे देना. इससे आठों प्रकारके उदर रोग, पांच प्रकारकी गुल्म, पांडु, सूजन, पीलिया तीनसे शूल ऐसे वातरोग, अठारह प्रकारका कोढ़, बीस प्रकारका प्रमेह, अश्मरी, उदावर्त, मूत्रकृच्छ्र, अर्श, अंडवृद्धि, अजीर्णज्वर, कृमिदोष, विषमज्वर इन रोगोंका नाश करेगा ३६।

वातविध्वंस रस–पारद १, गंधक पारासे चौथा भाग, १६ भाग बच्छ-

नाग इनको खरल करके चित्रकमूलके काढ़ेकी भावना देके योग्य अनुपानसे देना. इससे उन्माद, सर्वांगवायु, पक्षाघात, आमवात, दांतखील, सर्वांग शैत्य इत्यादि रोगोंपर एक वाल प्रमाण मात्रा देना ३७।

कल्पतरु रस–रौप्यभस्म, पारा, माक्षिक, टांकणखार, हिंगुल, मनशिल, गंधक, ताम्र, लोह सब इकट्ठे करके निंबूके रसमें खरल करके सूर्यपुट तीन देना. एक गुंजा तीन मासा बावचीके चूर्णसे देना. और गरम पानी पीते जाना. इससे नाना प्रकारके कोढ़, रोग, क्षय, ज्वर, धातुगतज्वर इनको शहद और पिपलीसे देना और शूल, आमवात, सूतिका रोग, उन्माद, पांडुरोग इनको गुड़ और हरडासे देना. सर्व रोगको अदरखके रसमें देना ३८।

महालक्ष्मीविलास रस–सुवर्ण, रौप्य, अभ्रक, ताम्र, वंग, मंडूर, कांतलोह, नाग, मोती इन सबकी भस्म, सबके बराबर रसभस्म अथवा रससिंदूर सदर दवाइयोंका काजल करके शहद डालके खरल करना. बाद उसकी गोली करके तीन दिन प्रखर धूपमें सुखाना और शरावसंपुटमें रखके पुट देना. बाद निकालके चित्रकके काढ़ेमें आठ पहर खरल करनेसे तैयार होता है, इसके योग्य अनुपानसे देनेसे त्रिदोषजरोग, क्षय, पांडु, पीलिया, सब प्रकारके वायु, सूजन, प्रमेह, नष्टवीर्य, शूल, कुष्ठ, अग्निमंदता, ज्वर, श्वास, कास इनका नाश होता है, तारुण्य आता है, पारा, गंधक, अभ्रक, लोह, चित्रक, शंखभस्म, जंगली गोबरीकी भस्म, बच्छनाग एकत्र करके भांगरेके रसमें घोटके गोली वाल प्रमाण बांधना. योग्य अनुपानसे देना. इससे सूतिकारोग जायगा और वात, कफ, अर्श, सन्निपात ज्वर नाश होता है ३९।

समीरपन्नग रस–पारा, गन्धक, सोमल, हरताल इनकी समभाग कजली करके आतशी शीशीमें भरके गुरदी देके, कपड़मट्टी करके वालुकायन्त्रमें पचाके सिद्ध करके निकाल लेना. योग्य अनुपानसे श्वास, खांसी पर देना ४०।

गर्भरक्षक रस–त्रिकटु, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, धनियां, जीरा, स्याहजीरा, चवक, मुनक्का, देवदारु, नागभस्म, वंगभस्म, हिंगूल,

सार सर्व सम भाग लेके विष्णुक्रांताके रसमें सातदिन घोटके गोली १ गुंजा प्रमाण बांधना और मुनक्काके काढ़ामें देना. इससे गर्भिणीको पहिले महीनेसे लगाके नौ महीने तक देना. इससे गर्भको किसी बातका धक्का नहीं लगेगा और सर्व रोग शांत होगा ४१।

चतुर्मुख रस–पारद, गंधकसार, अभ्रक, सम भाग एक २ तोला, सोना आधातोला, सर्व खरलमें डालके गवारपाठाके रसमें खरलके उसका गोला बांधके उसपर एरंडके पत्ते लपेटके तीन दिन धान्यमें गाड़के रखना. बाद काढ़के सर्व रोगोंको योग्य अनुपानसे देना. सर्वक्षय, कोढ़, पांडु, प्रमेह, शूल, श्वास, मेदरोग, मंदअग्नि, हिक्का, अम्लपित्त इनका नाश करके बलवृद्धि करके पुत्र देता है ४२।

लक्ष्मीनारायण रस–बच्छनाग, गन्धक, टांकणखार, हिंगुल, हरडा, अतिविष, कालाकुडा, अभ्रक, सेंधवलोन इनको समभाग लेके खरलमें डालके दंतीकी जड़ोंका काढ़ा और त्रिफलाके काढ़ेमें तीन दिन घोटना. बाद दो वाल अदरखके रसमें देना. इससे सन्निपातज्वर, तरस, विषमज्वर, अतिसार, संग्रहणी, वातरक्त, प्रमेह, शूल, सूतिकावात इनको शांत करेगा और इसपर भी मिष्टान्न, स्त्रीसंग करे तो भी गुण होगा ४३।

अर्धनारीनटेश्वररस–पारा, गन्धक, बच्छनाग, टाकणखार सब एकत्र खरल करके सांपके मुखमें डालके कपड़मट्टी करके मध्य बरतनमें रखके नीचे ऊपर बंद करके नोनसे बरतनका मुख बंद करना. बाद चार प्रहर तीव्र अग्नि देना. स्वांग शीत होने बाद खरल करके रखना. उसमेंसे एक गुंजा लेके नास देना. एक नाकमें नास देनेसे आधा अंगका ज्वर तत्काल निकलता है और दोनों नाकमें सूंघनेसे सर्व शरीरका ज्वर निकल जाता है, यह चमत्कार होता है ४४।

व्याधिहरण रस--९ भाग पारा, ९ भाग रसकपूर, ४ भाग गन्धक इनकी कजली करके आतशी शीशीमें डालके वालुकायन्त्रमें सोलह प्रहर अग्नि देना. बाद रखना. यह रस उपदंशको देना. तुर्त आराम करता है४५।

दरदसिंदूररस--पारा ४ भाग, रसकपूर ४ भाग, दर्दुर ४ भाग, गन्धक ४ भाग इन सबकी कजली करके शीशीमें भरके सोलह प्रहर क्रमअग्नि

देना. स्वांग शीत होनेसे काढ़के रखना। यह योग्य अनुपानसे सर्व रोगोंका नाश करता है । जो रस उपरस और विष उपविष धातु और उपधातु सर्व डालना हो सो सब पूर्वमें लिखे अनुसार शोधन मारण क्रिया किया हुआ डालना।

उदाहरण--पारा है सो शोधा हुआ शुद्ध करके डालना. गन्धक शुद्ध करके डालना. बच्छनाग शुद्ध करके डालना. सर्व ठिकाने मनशिल, कुचिला, हरताल आदि सर्व शास्त्रप्रमाण शुद्ध करना. बाद रसोंमें डालना और अशुद्ध डाले उस वैद्यको ब्रह्महत्याका पाप लगेगा इसवास्ते पहिले यथायोग्य शुद्ध रीतिसे करके योजना करना शुद्ध रीतिसे करे जिस वैद्यको कीर्ति मिलके बहुत फल है ऐसा जानना। पहिला जो २ निदानस्थानपर रसायन क्रम लिखा है सो सब एक ठिकाने भी है। इति रसायन-अध्याय समाप्त ।

अथ पाक करनेकी विधि ।

सर्व पाककी कृत्य सर्व दवाइयें लेके उनका चूर्ण वस्त्रगाल करके रखना. बाद घीमें भूंनकर खोवा कर लेना. बादाम आदिक मेवोंको शुद्ध करके बारीक कतरके टुकड़े कर लेना. केशर गर्म दूधसे घोट लेना. मात्रादिक डालना हो उसे खरल रखना. इलायची पीसके रखना. सोना, चांदीके वर्ख लाके रखना. सर्व सामग्री तैयार होने बाद सबसे दूनी अच्छी शकर लेना. चूल्हेपर चढ़ाके गलाना, उफान आने बाद दूध पानी डालके मैल निकालके साफ कर लेना. बाद तीनतारी अथवा कापसी चासनी देना; उतारके थोड़ी देरतक हिलाना. थोड़ी मोटी पड़नेसे मावा डालके मिला देना. बाद दवाइयों का चूर्ण डाल देना और खूब हिलाके मिला देना. बाद उस भस्मको डालना बाद इलायची डालके घी डालना. बाद केशर डालके सबका एक जीव करना. बाद परातोंमें घी लगाके उनमें जमा देना. ऊपर वर्ख जमा देना ठंडा हुए बाद बरफीके माफिक काटके टुकड़े बनाना और साफ बरतनमें रखना और लिखे अनुसार खाना और पथ्य करना, इस माफिक शकरके सब पाक बनाना २ ।

गुड़का पाक—सर्व दवाइयां ऊपर लिखे माफिक तैयार कर लेना, बाद गुड़ पुराना लेके उसमें घी मिलाके गरम करना. नरम होनेबाद सर्व दवा-

इयां मिलाके लड्डू अगर मोदक बांध लेना. बाद लिखे मुजब खानेको देना और शहदमें पाककी कृत्य करनी हो सो शहदमें सब मिलाके रखना और लिखे मुजब करना. पाकमें शकर इमदा मिश्री अगर बनारसी शकर डालना और करना चासनी अच्छी लेना. बरफी व लड्डू बांधना तो गूंद डालना और फूला करके डालना याने गूंदको तलके डालना।

अश्वगन्धापाक–असगंध ४० तोला, सोंठ २० तोला, पिपली १० तोला, मिर्च ४ तोला, दालचीनी ४ तोला, इलायची ४ तोला, तमालपत्र ४ तोला, लौंग ४ तोला, पिंपलीमूल, जीरा, जायफल, जायपत्री, खस, चित्रकमूल, सफेदचंदन, कमल, रूमीमस्तकी, वंशलोचन, आंवला, खैरसार, कपूर, पुनर्नवा, शतावर ये आधा २ तोला लेके कपड़छान चूर्ण करके २०० तोला दूध और १०० तोला शहद और ५० तोला घी मिलाके पाक करना।

वातरक्तचिकित्सापर अश्वगन्धापाक–सालमपाक, सालममिश्री १० तोला, सफेद मुसली १० तोला, काली मुसली ५ तोला, गोखरू ५ तोला, चोपचीनी ५ तोला, असगंध ५ तोला, शतावर ५ तोला, केवाचके बीज ५ तोला, तालमखाना ५ तोला, बीजबंद २० तोला, जायफल २॥ तोला, जायपत्री २॥ तोला, पीपल २॥ तोला, पीपलमूल २॥ तोला, कमरकस २॥ तोला, पोहकरमूल २॥ तोला, मदनमस्त २॥ तोला, त्रिकटु ७॥ तोला, मोचरस २॥ तोला, गिलोयका सत्त्व २॥ तोला, इलायची २॥ तोला, पिस्ता १० तोला, चांदीके वर्ख पाव तोला, सोनेके वर्ख दो औंस, मोतीकी भस्म अर्धा तोला, प्रवाल अर्धा तोला, वंग अर्धा तोला, माक्षिक अर्धा तोला, शिलाजित १ तोला, भुई कोहलेका चूर्ण ५ तोला, कस्तूरी पाव तोला, केशर १ तोला, खारिक ४० तोला, मावा चार सेर दूधका, घी १॥ सेर, शकर ८ सेरकी चासनी करके पूर्व रीतिसे पाक करना और रखना उसमेंसे तोले चार रोज खाना. ऊपरसे गायका दूध पीना. खट्टा तेल वर्ज्य करना।

वातचिकित्सापर सोंठपाक–कुबेर पाक देना, सौभाग्यसोंठपाक देना, मेथीपाक देना, असगंध, पंचजीरा पाक देना।

कोहलापाक-सफेद कोहलाको लाके उसका पानी एक तरफ निकाल लेना. निकालके उसको छोलके पीस लेना. बाद दूधमें डालके पचाके खोवा कर लेना. खोवा करते वक्त थोडा घी डालके खरा मोवा कर लेना. बाद उसमें दवा इसमाफिक पिपली ५ तोले, सोंठ ५ तोले, मिर्च ५ तोले, जीरा ५ तोले, स्याहजीरा ५ तोले, डालना, आंवला ५ तोले, तज५ तोले, तमालपत्र ५ तोले, इलायची ५ तोले, नागकेशर २॥ तोले, शिंघाड़ा १० तोले, पीपलमूल ५ तोले, चित्रक २ तोले, मुसली १० तोले, सालमसिश्री १० तोले, गोखरू १० तोले, चोपचीनी १० तोले, शीतलचीनी ५ तोले, तालमखाने ५ तोले, बीजबंद ५ तोले, लौंग ५ तोले, खैरका गूंद १० तोले, केशर २ तोले इनका पाक ऊपर लिखे अनुसार करके देना. इससे रक्तवृद्धि करके पित्त, ज्वर, श्वास, खांसी, तृषा, क्षय, मृगी, शिरकी शूल, मंदाग्नि, वृद्धपना इनका नाश होके स्त्रीइच्छा, धातु वृद्धि होती है ।

नारियलपाक-धतूराके बीज मासे ६, मुसली १ तोला, खुरासानी अजवाइन १ तोला, तालमखाना २ तोला, ऊटंगण २॥ तोला, कौंचके बीज ३ तोले इनके चूर्णको कपाश्यों (बिनौलोंका मगज निकाल) के दूधसे रांधके उस चूर्णको सात भावना देना. बाद सुखाके बड़के दूधमें भिगोके नारियलखरके गोलासे ३२ तोला गुण दूध लेके मंदाग्निसे पचाना और मोवा कर लेना. बाद घीसे पचाके उसमें तज, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, लौंग २ तोला, जायफल २ तोला, शकर १६ तोला, सब मिलाके तैयार करके बलाबल देखके देना. ऊपरसे दूध पीना, इससे वात, प्रमेह, क्षीणता, क्षय इनका नाश होके बुड्ढा जवान होगा ११ ।

भुईकोहलेका पाक-भुईकोहला अच्छा देखके लेना, उसको छोलके बारीक पीस लेना. बाद बकरीके दूधमें पचाना और मोवा करना. पीछे घी डालके मिला देना. गरम करने बाद उसमें दवाइयां इस प्रकार डालना-सोंठ, मुरवारी, हड़ा, आंवला, बहेड़ा, पिपली, पीपलमूल, बड़ीसौंफ, बीजबंद, इंद्रजव, तबकीर, पाषाणभेद, देवदारु, तालमखाना, वायबिडंग, भावडाका गूंद अकलकरा, तज, शीतलचीनी, कुष्ठ, खुरा-

सानी अजवाइन, अजमोदा, तेजपत्र, कमलके बीज, भारंगी, दाख, गोरोचन, लौंग, जायफल, जायपत्री, मायफल ये सब एक २ तोला लेके चूर्ण कपड़छान करके शुद्ध कोहला सब एकत्र करके सबसे दूनी शक-रकी चासनी ऊपर लिखे अनुसार करके उसमें मिलाना और सुगंधी चीजें और मेवा चाहे सो डालके पाक करना और देना. इससे धातुपुष्टि होके क्षयका नाश होता है और सर्व रोगोंको शांत करता है. इस माफिक सर्व पाक होते हैं उन्हें करना और देना चाहिये और जिस चीजमें पहिले और ज्यादा हो उसीका पाक समझना. सालम पहिले होतो सालम पाक और मुसली पहिले हो तो मुसलीपाक और पेठापाक, दूधियापक, कोहला-पाक और पिपलीपाक, मेथीपाक, सिलावाँपाक इस माफिक कौमारी आदि बहुत पाक हैं उन्हें करना और उड़दका पाक करना हो तो उड़-दकी दालको धोके पीसके घीमें पचाके ऊपर लिखे अनुसार दवाइयाँ डालना और पाक करना। इति पाकविधिः समाप्तः।

अथ सर्व मुरब्बेकी विधि।

आंवलेके मुरब्बेकी विधि—आंवला बड़ा देखके लेना. उसको पानीमें तीन दिन रखना. पीतलकी गुंदनीसे गुंदके थोड़ा उबाल लेना. बाद दुगनी शकरकी चासनीमें पचाना और आंवले डाले बाद पीछे चासनी लेना. वह चासनी दोतारकी लेना. बाद उतारके ठंढा हुए पर अच्छे बरतनमें भरके रखना १, इस माफिक हरड़का मुरब्बा होता सो करना, बिजो-राका मुरब्बा करना हो तो बिजोराके टुकड़े गूंदके चूनाके पानीमें १ दिन रखना. बाद उबालके चासनीमें डालना और ऊपर लिखे अनुसार करना और आमका मुरब्बा इस माफिक करना और सफेद मुसलीका मुरब्बा हो तो पानीमें शंखजीरा उबालके उसमें मुशली एक दिन भिगोके रखना. उसमेंसे काढ़के गोदके ठंढी चासनीमें डालके रखना. पानी होने बाद फिर आंच देना. मुसली निकालके बाद ठंढी चासनी होनेसे फिर मुसली डालके रखना. बाद मुसली जलेके माफिक होती है सो निकालके रोज शुमार चार तोले खाते जाना ऊपरसे गायका दूध पीते जाना. इससे पुष्टि होके धातुस्थानकी गर्मी शांत होती है और इस माफिक सालमका मुरब्बा बनता है सो करना और आंवलेके मुरब्बाके

माफिक सौंफका व सफरचंदका और अदरख यानी सोंठका मुरब्बा बनता है सो करना और काममें लाना।

शर्बतकी विधि-मोगरेके फूलोंकी कलियोंको लेके उसके समभाग शकर मिलाके धूपमें ढकके धरना. बाद उसके पानीको छानके शीशीमें भरके रखना. ठंडे पानीमें डालके गर्मीके दिनोंमें लेना।

गुलाबी शर्बत-गुलाबपानीमें शकर डालके धूपमें शीशी धरना. शर्बत होता है १, खसको कूटके पानीमें आठ प्रहर भिगोके रखना. व पानी साफ छानके शक्कर डालके धूपमें धरना खसका शर्वत होता है, नींबूके रसमें शकर डालके चासनी लेना. इससे शिकंजबीन भी होता है ३। अनारके रसमें शकर डालके धूपमें धरना. अनारका शर्बत होता है ४। जामुनके रसमें शकर डालके रखना. शर्बत होता है और इस माफिक सर्व शर्बत करना अथवा अग्निसे चासनी इनके रसोंमें शकर डालके लेना इससे शर्बत होता है और इन रसोंमें सैंधव लोन, जवाखार, बांगखार, संचल आदिक खार डालके धूपमें कुछ दिन रखना, इससे सिरका-पाचनशक्ति अजीर्ण आदिमें देनेके काममें आता है और गन्ना, अनार, जामुनका रस, शीशीमें भरके धूपमें बहुत दिन धरना. इससे खट्टा होके सिरका होता है और अनारका रस और अदरखका रस समभाग लेके उसमें शकर डालके पचाना. गाढा होने बाद उतारके रखना, इससे लेह होता है, उसे देनेसे अथवा उसमें दवा देनेसे अनुपान त्रिदोषशामक है ऐसा जानना।

गुलकंदकी विधि।

एक हजार गुलाब फूलोंकी पखुरियां लेके उसमें मिश्री पांच सेर डालके कूटके रखना, शीशीमें भरके धूपमें दो चार दिन धरना. इससे गुलकंद तैयार होता है वह जैसा पुराना हो वैसा अधिक फायदा करता है. कोई इसमें केशर, इलायची भी डालते हैं १ इसी माफिक कांटे सेवंतीका गुलकंद करना. वह भी अच्छा होता है।

अथ अनुपानविधि।

अनुपानके साथ दवा देनेसे बहुत फायदा होता है. उदाहरण-जैसे

एक बूँद तेल जमीनपर डालनेसे वहां रह जाता है और एक बूँद तेल कढ़ाई पर पानीसें डालनेसे सब पानीपर तैर जाता है वैसे अनुपान(वदरके) से सब शरीरमें दवा फिरके बहुत फायदा करती है इससे अनुपान कहते हैं।

सर्वसाधारण अनुपान—अभ्रक आदि सर्व दवाइयोंका अनुपान ऐसा है कि सन्निपातपर अदरखके रससे १। श्लेष्मरोगको अडूसाके रस त्रिकटुसे २। ज्वर, विषमज्वर इसको शहद और पिपलीसे ३। पलटके ज्वर आवे तो चिरायता,मोथा,पित्तपापड़ा इनके काढ़ेमें ४। संग्रहणीको छाछसे ५। जीर्णज्वरको शहद, पिपलीसे ६। कृमि रोगको विडंगसे ७। अर्श रोगको चित्रकसे अथवा भिलावाँसे ८। पांडुरोगको मंडूर, शहदसे और गोमूत्रसे और त्रिफलाके काढ़ेसे ९। क्षयरोगको शिलाजीतसे और सोनाके वरखसे और भस्मसे और लौंगसे १०। श्वासरोगको भारंगमूल, सोंठसे या हलदीसे ११। प्रमेहको आंवला हलदीसे,पिपली, त्रिफला और शकरसे,१२। तृषारोगको सोना तपाके बुझाये हुए पानीसे और पोलाद तपाये पानीसे और वड़की साक और गिलोयके काढ़ेसे १३। त्रिदोष रोगपर अदरखका रस और शहदसे १४। शूलरोगको भुनी हींग और घी १५। आमवा-तुको करंजका तेल, एरंडतेल, गोमूत्रसे १६। प्लीहाको त्रिफला,पिपलीसे १७। विषको उलटी और शिरस वृक्षसे और सोनासे १८। खांसीको रिंगणी और त्रिकटुसे और हलदीसे १९। वातव्याधिको गूगलसे और लहसनसे और नेगड़के रससे २०। रक्तपित्तको अडूसाके रससे और मिश्रीसे औ गिलोयके सत्त्वसे २१। मिरगी रोगको और जबान साफ होनेको वच, अकलकरा, शहदसे २२। उदर रोगको रेचक चीजोंसे और हरडा और किरमालेके मगजसे २३। वातरक्तको गिलोय, एरंडके तेलसे २४। अर्दितवायुको उड़दके वड़े और माखनसे २५। मेदवृद्धिको शहद और पानीसे २६। प्रदररोगको लोधसे २७। अरुचिको बिजोरा और अनारसे और द्राक्षासे २८। १ व्रण रोगको त्रिफला और गूगलसे २९। शोषको शहदसे ३०। अम्लपित्तको द्राक्षासे और घी और शहदसे ३१। मूत्रकृच्छ्रको शतावरसे और कोहलाके पानीसे और चावलके धोवन व शहदसे ३२। प्रमेहको आंवलेका रस और हलदीसे और गौकी छाछ और जवाखारसे ३३। उन्माद रोगको पुराने घीसे ३४। नेत्ररोगको त्रिफलासे ३५। कुष्ठरोगको खैरकी छालसे और काढे

से और मंजिष्ठके काढेसे ३६। निद्रानाशको भैंसके दूधसे और पिपलामूल और विजया और गुडसे ३७। सप्तमहाकोढोंको बावची और बचसे ३८। जागरणके अजीर्णको निद्रा और हरडा, गरम पानी, उपास, उलटी और करेलेके पानीसे ३९। गर्दनके जितने रोग हैं इनको तीक्ष्ण दवाइयोंकी नास देना, रात्रिको भोजनके बाद ४० । पार्श्वशूलको पोहकरमूलसे ४१ । मूर्च्छारोगको ठंडे पदार्थसे और मिश्री और माखनसे ४२ । शरीर-कृशताको मांसरससे और दूध शकरसे ४३ । मूत्रखडा, पथरीको शिला-जीतसे और गोखरूका काढा और जवाखारसे ४४ । मूत्र बंद हो तो मूलीके रससे, कलमी सोरा और पानीमें बैठाने से४५। गुल्मरोगको वायवर्णकी छालसे ४७ । अंडवृद्धि रोगको रक्तमोक्ष और रक्तशुद्धिकी चीजों से और त्रिफलासे ४६ । हिचकीको लाखके रसकी नास और दूसरी नास और नवसादर, चूना, निंबूका रस शीसीमें भरके सूंघनेको देना ४८ । दाहको शीतविधि शरबत मिश्री आदिक ४९ । भगंदर रोगको कुत्तेकी हड्डी खरके रक्तमें घिसके शंखपुष्पीका रस मिलाके लेप देना ५० । स्वररोगको पोहकरमूल और शहदसे और गरम दूध और आंवलेके चूर्णसे ५१ । शीतरोगको तांबूलके पानका रस और मिर्चसे ५२ । इसी माफिक साधारण अनुपान सर्व रोगोंके वास्ते अनुमानसे दवा देना. जिससे फायदा होता है और स्वरस, काढा, फांट, हिम, कल्क, चूर्ण, गोली, लेह, धातुकी भस्म, रसायन इनका साधारण अनुपान देनेसे विशेष गुण होता है ऐसा जानना ।

अभ्रकअनुपान--अभ्रकभस्म एक वाल अथवा दो वाल शहद और पिपलीसे देना. इससे प्रमेह, श्वास, विषरोग, कोढ़, वातपित्त-कफक्षय, कफ, राजयक्ष्मा, संग्रहणी, पांडुरोग, भ्रम, प्लीहा, गुल्म इतने रोग नष्ट होते हैं । बायबिडंग, त्रिकटु इनके चूर्णसे देना. इससे क्षय, पांडु, संग्रहणी, शूल, आंव, कुष्ठ, श्वास, प्रमेह, अरुचि, खांसी, अग्निमांद्य, उदररोग इनका नाश होके बुद्धि बढ़के धातु बढ़ती है २ ।धातुक्षयको सोनेका वर्ख शहद और पिपलीसे देना.इससे पुरुषार्थ बढता है३।चांदीका वर्ख और आंवलेके मुरब्बेसे पुष्टि करता है ४ । शहद, पिपली, शिला-जीतसे बीस प्रकारके प्रमेह नष्ट होते हैं ५ । हरड और गुडसे रक्तपित्त का नाश करता है अथवा इलायची और शकरसे देना ६ । क्षय, पांडु-

अर्श इन रोगोंपर त्रिकटु, त्रिफला, चातुर्जातक, शकर, शहद इनसे देना ७। मूत्रकृच्छ्रको इलायची, गोखरू, भुईआंवला, मिश्री व गायके दूधसे देना ८। फिरंगप्रमेहपर गिलोयका सत्त्व, मिश्री डालके देना ९। जीर्णज्वरको शहद पिपलीसे १०। नेत्ररोग और धातुपुष्टिको घी शहद त्रिफला से ११। व्रणरोगको सोरबेलका सत्त्व त्रिकटुके चूर्णसे १२। बलवृद्धिको गायका दूध और क्षीरकंदसे १३। वातरोगोंको सोंठ, पोहकरमूल, भारंगमूल, असगंध शहदसे १४। श्लेष्मरोगोंको जायफल, पिपली शहदसे १५। मंदाग्नि, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, मूत्रखडा इनको सर्वखारके बराबर १६। धातुस्तंभनको भांगसे १७। धातुवृद्धिको लौंगका चूर्ण और शहदसे १८। पित्तरोगको गायका दूध और शकरसे साधारण योग्य अनुपान ऊपर लिखे अनुसार सब रोगों पर देना।

अभ्रकको वर्ज्य पदार्थ–नोन, खट्टा सब जातिकी दालिका पदार्थ, काकड़ी, करेला, वैंगन, कलिंगड, तेल ये चीजें वर्ज्य करना।

गिलोयके सत्त्वका अनुपान–एक वालसे एक मासातकका देना १। वायुको घीसे २। बद्धकोष्ठको गुडसे ३। पित्तको शकरसे ४। कफको शहदसे ५। बाकी गिलोयका सत्त्व सब रोगोंपर चलता है, इसे रोगोक्त अनुपान देखके सब रोगोंको देना।

गंधक–अनुपान–शुद्ध गंधक एक मासासे दश मासातक बलाबल देखके देना १। अर्श शूलमें कांजीसे २। और गंधकके प्रकरणपर जो अनुपान लिखा है उस माफिक सब रोगोंको देना ३।

घोडाचोलीकी मात्राका अनुपान–वात, शूल, खांसी, श्वास, राजयक्ष्मा रोगोंको अदरखका रस, पिपली, मिर्चसे अथवा मूलीके पत्तोंके रससे १। वलीपलित रोगोंको शहदसे २। ज्वर शूलको सहँजनेकी जड़का रस गायके घीसे ३। जीर्णज्वरको दहीके पानीसे अथवा निर्गुंडीके रससे ४। शीतज्वरको कमलके पत्तोंके रससे अथवा बीजसे ५। पांडुरोगको पुनर्नवासे ६। नेत्ररोगको तिलवणीके रसका अंजन करना ७। पित्तज्वरको जीरा और शकरसे ८। विषको चावलोंके धोवनसे ९। अस्थिगत वायुको बच, देवदारु काष्ठ इनके काढ़ेसे १०। पुरुषार्थपना आनेको गोक्षु-

त्रसे ११। विरेचनको अदरखके रससे १२। अर्शरोगको जायफलसे १३। पुत्र होनेको पुत्रजीवीके रसमें १४। सर्पविषको शिरीष वृक्षके रसमें और गायके घीमें और चौलाईके रसमें और निंबूके रससे लेप देना १५। वादीसे कमर धरी हो तो उसको वच और अजवाइनसे १६। श्वास खांसी-को अडूसाके रस और शहदसे और तुलसीके रससे अंजन करना १७। नित्यज्वरको गवारपाठेके रससे १८। रतौंधेको स्त्रीदूधमें अंजन १९। जीर्णज्वरको भांगरेके रसमें २०। वक्त ज्वरपर आंवलासे २१। पित्तज्व-रको जीरेसे और तांबूलसे २२। दाहयुक्त पित्तज्वरको आंवलोंसे २३। वातशूलपर त्रिकटुके चूर्णसे २४। सर्व शूलको सहँजनका रस, शहद, घीसे और कलगचके बीज व सरफोकाके रससे २५। बालंतरोगको सौंफसे २६। महाव्याधिको पीपलमूलके चूर्णसे २७। खांसीको ठंडे पानीसे २८। पीनस, कर्णरोग, शिरोरोग, अर्धशीसी इनको जायफलसे २९। दांतके कीड़ोंको वायविडंगके चूर्णकी गोली करके दांतमें रखना ३०। प्रसूतवायुको तुलसीका रस, शहद, गवारपाठेके रससे और अदरखका रस व शहदसे ३१। संग्रहणीमें जायफलसे और भैंसके मूत्रसे और छाछसे ३२। अतिसारको गोमूत्रसे व दहीके पानीसे ३३। उलटीको एरंडके बीजसे ३४। विषको पिपलीसे और अकलकरासे ३५। मंदाग्निको टंकण-खारसे और कानविंदके रससे ३६। ऊर्ध्वश्वासको त्रिफलासे ३७। बुद्धि अच्छी बढ़नेको ब्राह्मीके रससे ३८। रोग न हो ऐसी जिसको इच्छा हो वह सतत ले ३९। बलीपलित रोगको दूधमें और शहदमें ४०। कांति बढ़नेको तांबूलके साथ ४१। मस्तकव्याधिको त्रिकटुसे और जवा-खारसे ४२। शीतज्वरको धतूरेके बीजसे और जीरेसे ४३। सन्निपातपर अदरखके रससे ४४। पंचगुल्मको बड़ी दूधीके रससे और नेगडके रसमें और चूनासे ४५। वायुको घीसे और बकरीके दूधसे ४६। वज्रदं-तीसे ४७। सर्व वायुको त्रिफलेसे और भांगरेके रससे और असगंध, शह-दसे और अजवाइन या विजयासे ४८। धनुर्वातको कोइलीके मूलसे ४९। प्रमेहको गायके दूधसे और भुईकोहलाके रससे ५०। धातुविकारको गोखरूसे ५१। धातुवृद्धिको घीसे ५२। प्रमेहको निर्गुंडीके रससे

और बकरीके दूधसे ६३ । निर्वोक अमेहको कुमारीकेरससे ६४ । विद्रधि गलगंडको गूगलसे ६५ । दस्त होनेको एरंडके तेलसे ६६ । बिच्छूके जहरको अदरखके रसमें घिसके लगाना ६७ । पसीना ज्यादा आता है उसको भांगरेके रससे ६८ । स्वर पडती हो तो बकरीके दूधसे ६९ । भूतोन्माद भूतबाधाको निंबूके रससे और निर्गुंडीके रससे अंजन करना ६० । पित्तको आंवला और शकरसे ६१ । उदररोगको त्रिफलेके चूर्ण और एरंडतेलसे ६२ । ज्वरको और मूत्रकृच्छ्रको उतारीके रसमें ६३ । सूजनको कांगके रसमें और सांवरीके रसमें और छालसे ६४। पांडुरोग को वग्भारा (लिंप्) छाल बराबर और कांजीसे ६५ । अभिष्यंदको कोलीलाने (तालमखाना) ६६ । शक्ति आनेको नागबेलके रसमें ६७। सर्व-उदरको पीलूके रसमें ६८। पित्तवातको जीरा और शहदसे६९।धातु-स्तंभको वच्छनाग और अजवाइन और आकडेके बराबर ७० । दुर्गंधिको पैपेके रसमें ७१ । गर्भधारण होनेको गोपीचंदन, लवंग, सोंठ इनसे और गोखरूसे ७२ । कृमिविकारको करंजके छालके रसमें ७३ । शरीर बलवान होनेको दूर्वाके रसमें ७४।ज्वर दूर होनेके वास्ते नागरमोथेके रसमें७५। स्वर साफ होनेको तांबूलसे ७६। दंतरोगको निंबूके रससे लेप देना ७७। खुजलीको गोमूत्रमें लेप देना ७८। लूता विषको भांगरेके रसमें लेप देना७९। पाली (खिसोरा) इसके विषको जलसे लेप देना ८० । आमशूलको कुरु-हरितगसे ८१ । गजकर्णादिक रोगको जलसे और निंबूके रससे लेप देना ८२। नेत्ररोगको तिलके पत्तोंके रससे अंजन करना८३।अर्शरोगको चमेली के रसमें ८४ । कुत्तेके विषको चौलाईके रसमें ८५ । कुष्ठको गिलोयके रसमें और गोमूत्रसे ८६। स्तंभनको नागरमोथेके रसमें ८७। मूत्रकृच्छ्रको गोमूत्र और भांगरेके रसमें ८८ उन्मादको चूकेके रसमें ८९ इस माफिक यह घोडाचोलीकी मात्रा इन अनुपानोंसे सब रोगोंका नाश करती है ।

जस्तका अनुपान-नेत्ररोगको पुराने गाईके घीसे अथवा माखनसे अथवा बासी थूकसे अंजन करना १,प्रमेहको तांबूलसे २, अग्निमंदको ऐरणीके रसमें ३, त्रिदोषको त्रिसुगंधसे ४, पित्तज्वरको मिट्टीसे ५, शीतज्वरको लौंगसे

६,रक्तपित्तको खजूर और चावलके हिमसे ७, अतिसारको जीरा शक्करसे ८, उलटीको जीरा और शक्करसे ९, इस माफिक योग्यअनुपानसे सर्व रोगको देना. रोगोक्त पथ्य करना ।

त्रिफलाका अनुपान-हरड़ा ३ भाग, बहेड़ा ६ भाग, आंवला १२ भाग लेके इनके चूर्णको विडंग खैर भांगरा इनके रसकी सात२ भावना देके सुखाके रखना. इसको त्रिफलाचूर्ण कहते हैं १, वलीपलित रोगको एक महीना देना २, दिव्य देह होनेको छः महीना देना ३, बुढ़ापा न प्राप्त होनेके एक वर्ष लेना. प्रमेह विषमज्वर में भी ४, मंदाग्नि, श्लेष्म-विकार, पित्तरोग, कुष्ठरोग इन रोगोंको नाश होगा५,नेत्ररोगको घी शहदसे ६, वातरोगको तेलसे ७,पित्तरोगका घीसे ८,कफको शहदसे इत्यादि सर्व रोगको योग्यअनुपानसे देना ।

ताम्रका अनुपान-परिणामशूल, उदरशूल, पांडुरोग, ज्वर, गुल्म, प्लीहा, यकृत, क्षय, अग्निमंद, प्रमेह, अर्श, संग्रहणी इन रोगोंको योग्य अनुपानसे देना. इन रोगोंका नाश करके सब रोगोंका नाश करता है ।

प्रवालभस्मका अनुपान-प्रवाल यानी मूंगा इसकी भस्म एक वालसे लगाके एक मासे तक बलाबल देखके देना १, जीर्णज्वर, खांसी, श्वास, हिचकी,कोष्ठगतवात इनको शहद और पिपलीसे देना २, ज्वरको चिरायता, कुटकी, हरडा इनसे ३, पित्तको दूध मिश्रीसे४, धातुक्षीणको पके केलेसे५, कृशतापर तांबूलसे६, तिडक परमाको चावलोंके धोवनसे अथवा त्रिफला शहतसे ७,धातुपुष्टिको घी शक्करसे ८,प्रदर रोगको गाईके धारोष्ण दूधसे ९,वातको तुलसीकेरस और शहदसे १०,पित्तको अदरखका रस और मिश्रीसे ११, रातअंधेको चूहेकी लेंडी व तुलसीके रसमें घिसके अंजन करना १२, इस माफिक योग्य अनुपानसे सब रोगोंपर देना ।

पारदभस्मका अनुपान-१ गुंजासे चार गुंजातक योग्य अनुपानसे सब रोगोंपर देना. इससे फायदा होगा, यथायोग्य पथ्य करना ।

रससिंदूरका अनुपान-रससिंदूर१ गुंजासे लेके चार गुंजातक बलाबल देखके देना. योग्य अनुपानसे सब रोगोंपर देना ।

लोहभस्मका अनुपान—लोहेके प्रकरणमें लिखा है उस माफिक देना और पथ्य करना. इससे सर्व रोगोंको फायदा होगा।

लोकनाथ रसकी मात्राका अनुपान—दो रत्तीसे लगाके एक मासे-तक देना । २० से लगाके ३० काली मिर्चीका चूर्ण इसमें मिलाके रखना १ । वायुरोगको घीसे २ । पित्तको माखनसे ३ । कफको शहदसे ४ । अतिसार, क्षय, अरुचि, संग्रहणी, कृशता, अग्निमंदता, खांसी, श्वास, गुल्म इन रोगोंमें योग्य अनुपानसे देना. इसपर पथ्य—यह मात्रा देने बाद तुर्त घी और चावलके तीन ग्रास खानेको देना. बाद खाटपर ऊंधा एक क्षण-भर सोना, अरुचिको धनियां मिर्च घीमें भूनके उसमें लोकनाथ रसकी मात्रा देना ५ ।ज्वरको धनियां और गिलोय इनके काढ़ेमें ६ । रक्त-पित्त, कफ, श्वास, खांसी, स्वरभंग इनको खस, अडूसा इनके काढ़ेमें शकर और शहद डालके देना ७। निद्रानाश, अतिसार, संग्रहणी, अग्निमंद, इनको थोड़ीसी विजया भून करके उसका चूर्ण करके वह मात्रा शहदसे देना ८। शूल अजीर्णको संचल, बालहरडा, पीपल इनके चूर्णसे गरम-पानीके साथ देना ९ । ज्वरको शहद पीपलीसे १० । प्लीहा, वातरक्त, उबकाई, अर्श, रक्तपित्त इनको अनारके फूलके रसमें देना ११ । नाक-मेंसे खून गिरता है उसको दूर्वाका रस शकर डालके नास देना १२ । उबकाई, हिचकीको बेरकी मिंगी, पीपल, मोरपंखकी राख लोकनाथकी मात्रा एकत्र करके शकर, शहद मिलाके देना १३ । योग्य अनुपानसे सर्वरोगपर देना, फायदेमंद होगा ।

लोकनाथपर पथ्य ।

इसकी मात्रा लेनेवालेको शुद्ध अंतःकरण शुचिर्भूत होके खट्टी चीज वर्ज्य करके घीसे भोजन करना चाहिये. अच्छा मधुर हो तो थोडा दही भी लेना. जंगली मांसरस घीसे भूनके खाना. रातको भूँख लगे तो दूध और चावल खाना. तिल, आंवला इनके कल्कसे स्नान करना. स्नान-को पानी गरम, तेलका स्पर्श करना नहीं और बेलफल, करेले, बैंगन, इम्ली, स्त्रीसंग, दारू, हींग, सोंठ, उडद, मसूर, कोहला, राई, कांजी इन-का त्याग और क्रोध नहीं करना. दिनको सोना नहीं, कांसेके बर्तनमें

भोजनकरना नहीं आदि करके सब चीजें वर्ज्य करना. इसीमाफिक सुवर्णको भी यही पथ्य है १४। वंगप्रकरणमें वंगका अनुपान लिखा है उस माफिक देना १५। हरतालभस्म, योग्य अनुपानसे देखके देना १६। हीरे आदिकी भस्मको योग्य अनुपानसे देना १७।

हिंगुलअनुपान—शुद्ध हिंगुल एक गुंजासे दो गुंजा तक देना १। प्रसूतिवातको गोमूत्रसे २। पुष्टिको घी और शहदसे ३। पसीना ज्यादा आता हो तो शकरसे ४। क्षयको केशर दो गुंजा, जायपत्री दो गुंजा, शकर चार मासे इससे देना. योग्य अनुपानसे सर्व रोगोंको देना।

हरितकीअनुपान—ज्येष्ठ आषाढमें गुडसे १। श्रावण, भादोंमें सेंधव-नोनसे २। आश्विन, कार्तिकमें शकरसे ३। मार्गशीर्ष, पौषमें सोंठसे ४। माघ, फाल्गुनमें पिपलीसे ५। चैत्र, वैशाखमें शहदसे ६। इसमाफिक षड् ऋतुओंमें देना।

हेमगर्भरसअनुपान—वायुको सहजनेकी छालकेरसमें १। कफको अद्-रखके रसमें २। सर्वरोगको शहद पिपलीसे ३। ज्वरको व्याघ्रकंदके रसमें ४।

हलदीअनुपान—हलदीका चूर्ण करके कुक्षिरोगपर १० मासे गोमू-त्रसे, धातुवृद्धिको गरम जलसे, इसी माफिक गुडसे और योग्य अनु-पानोंसे नौ महीना सेवन करे तो बहुत स्त्रियोंका काम शांत करेगा।

हलदीपर पथ्य—गायका दूध, चावल खाना और सब वर्ज्य हैं। हेमगर्भरसअनुपान—शुद्ध पारा १ भाग, चौथा भाग सोनाके वर्ख, दोनोंसे दूनी शुद्ध गंधक इन सबको कचरनारके रसमें खरलकरके शरावसंपुटमें भरके कपड़मट्टी करके भूधरयंत्रमें पचाके काढ़ना. उसके समभाग शुद्ध गंधक मिलाके अदरखरस और चित्रकसे घोटना. बाद पीली कौड़ियोंमें भरके सब दवाओंका आठवाँ भागसुहागासे आधा बच्छनागमिलाके थोह-रके दूधसे घोटके कौड़ियोंको मुद्रा देके एक मट्टीके बरतनको गोपीचंदन लगाके उसमें वह कौड़ियां भरके कपड़मट्टी करके गजपुटअग्नि देना. स्वांगशीतल होने बाद निकालके रखना. इसको हेमगर्भरस कहते हैं। इसे सर्व वातरोग, क्षय इत्यादि पर योग्य अनुपानसे देना।

अथ साधारण दवाइयाँ।

फिरंगरोगपर-सूत शुद्ध, लौंग, मिर्च, अक्करकरा, विडंग, रूमी मस्तगी, अजवाइन४भाग, पुराना गुड़४भाग, भिलावाँ चालीस कूटके उसमें शुद्ध पारा खरलकरके गुड आदि सब चीजें मिलाके उसकी गोलियां१कर्ष प्रमाण बांधना। १ गोली प्रातःकालमें खाके ऊपरसे बीडा खाना. पथ्य दूध, चावल खाना और सब वर्ज्य करना। इससे ७ दिनोंमें बड़ा उपदंश, संधिरोग, सूजन, हड्डियोंकी सूजन, शुद्धकोढ़ ये दूर होते हैं १। लीलाथूथा, लौंग, सफेदकत्था, जव, हरड़ा४भाग इन सब दवाइयोंको एकत्र खरल करके ४० नींबूके रसकी भावना देना और घोटना बाद २०० गोली बांधना और दोनों वक्त दो दो देना. अथवा १एक देना(पथ्य)घी, चावल, गेहूं और सब वर्ज्य करना२। रसकपूर १ तोला, लीलाथूथा २ तोला, जव, हरडा ४ तोला सबका चूर्ण करके पचास नींबूके रसकी भावना देना, हर भावनामें खरल करना, इसकी गोलियां दो गुंजाकी बांधना, हररोज दोनों वक्तसादी बरफीमें देना, दांतोंको न लगाना (पथ्य) गेहूंकी रोटी, घी, शक्करसे खाना और सब वर्ज्य करना, इससे सब उपदंश गर्मीका नाश होगा ३।

मलहम—रसकपूर, सफेदकत्था, मुरदाशिंग, शंखजीरा, मायफल, सुपारीका कोयला इनका मलहम घीमें करके लगाना, चट्टे साफ होंगे ४।

पलाशपापडेका बीज नींबूके रसमें घिसके लगानेसे गये केश फिर आते हैं।

साधारण अर्ककी युक्ति।

एक साफ प्याला लेके उसपर कपड़ा बांधके उसपर दालचीनी कूटके डालना ऊपर जलपोश रखके ऊपर अंगार धरना, इससे अर्क निकलता है। इसी माफिक उससे कपूरको छान लेना, फूलोंका अर्क काढ़ लेना, नीचे दूध रखके धक टपका लेना, टरपेंटा इनके तेलमें सुतली भिगोके कांचकी कांचपर रखना, इससे हीराकी कनीसे जैसे कांच कटता है वैसे कटेगा।

चौबीस अवतारोंके नाम ।

छन्द सवैया—रूप चौबीस धरे प्रभु आपहि भूमिको भार उतारन कारन ।
सनक सनंदन और सनातन सनतकुमार सो वेद उबारन ।
यज्ञपुरुष वाराह कपिलमुनि हयग्रीव अरु नर नारायन ।
दत्तात्रयअरु ऋषभ देव पृथु मच्छ कच्छ धन्वंतर मोहन ॥१॥
नरसिंह वामन हंस पक्षी ध्रुव नारायण नाम सो उचारे ।
हरि अवतार गजेंद्र उबारन परसराम जो निक्षत्रि करारे ।
बौद्ध रु व्यास सो राम भये जब रावण मार सुग्रीव उधारे ।
कृष्ण भये शिवनाथके स्वामी मध्य कलीमें कलंकी घोड़े सवारे ॥

इति समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।
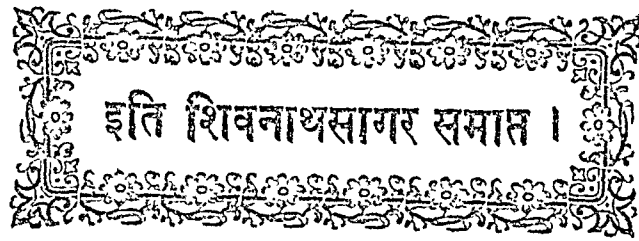
इति शिवनाथसागर समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
पण्डित हरिप्रसाद भगीरथजी
कालकादेवीरोड—रामवाडी, बम्बई

श्रीः ।

अजीर्णमञ्जरी ।

जिस चीजसे अजीर्ण होता है उसका परिहार, उतार, पालन कहते हैं.

अजीर्ण.	उतार.
आलूके अजीर्णपर	...चावलोंका धोवन देना.
आलू, पिंडालू इनको	...हरीक व सोंठका काढ़ा देना.
विरेचन युक्त विकारको	...मोथाका काढ़ा देनाः
आंवलोंको	...त्रकुला और बीज आसाणा त्रिबला (भिलावाँ) देना.
अंबाडचा (सन) को	...बासी पानी देना.
आमको	...संचल और दूध देना.
आंव हो तो उसको	....सोंठ, धनियां इनका काढ़ा देना.
आमसूल (कोकम) को	....नागरमोथा और अमरबेल देना.
अरुईके पत्तोंको	....राई, आकाशवेलका पानी देना.
जलके अजीर्णको	... सात वक्त सोना चांदी तपाके बुझाया हुआ पानी शहदऔर चावल देना
गूलरको	....ठंडा पानी देना.
गन्नाको	....अदरखका रस, अदरख देना.
क्षारादिक पानीको	....अदरख देना.
उड़दको	....एरंडमूल और धतूराकी जड़ोंका काढ़ा करके देना.
[illegible] को	...शीत देना.
त[illegible]े	...सौंफ नीमकी निंबोली देना
अ[illegible] (कचोरा) को	...नागरमोथा, सोंठ देना.
दू[illegible]ांस व पारवेका मांस इनको	कसईका मूल देना.
सै[illegible] पक्षीके मांसको...	...कसईका मूल देना.
गा[illegible] कचोरी) के अजीर्णको	पीपलमूल देना.

अजीर्ण.		उतार.
करवंदाको	....	....आकाशबेल (अमरबेल) देना.
कानके रोगोंको	....	....तिलोंका तेल सिद्ध करके डालना.
कनेरको	....	....पिपलीमूल देना और दूध, शक्कर देना.
कांजीके अजीर्णको	....	....मूंगोंका यूष देना.
करेलेको	....	....श्वेतशिरस देना.
कांगको	....	....मथादहीजल देना.
कपूर, केशर, कस्तूरी इनको		....समुद्रफेन (समुद्रझाग) देना.
कछुवाके मांसको	....	....मूंगका यूष देना.
कुचलाको	....	....सफेद शिरस, दूध, शक्कर देना.
कुलथीको	....	....तिल, तेल, दही, जल देना.
केलेके अजीर्णको	....	....घी देना.
बांसके कोसको	....	....सफेद शिरस देना.
कोहलाको	....	....काकड़ी,करंजके बीज अरनीमूलदेना.
कोद्रवको	....	....कूष्मांडरसमें गुड़ डालके देना.
खजूरको	....	....नीमके बीज, सोंठ, मिर्च देना.
खलीको	....	....पिपलीमूल देना.
खिचड़ीको	....	....संधवलोन देना.
खीरको	....	....मूंगोंका जूस देना.
गेहूंको	....	....काकड़ी, धतूरा देना.
खरमांसको	....	....एरंडका तेल देना.
सालपुवाको	....	....अजवाइन, अजमोदा, किरमाणी. पिपलीमूल देना.
ग्रास अटके तो	....	....अदरखका रस,चावल मिलाके देना
घीको	....	....गुड़, दूध,निंबू,नीमके बीज, पिपली, छाछ देना.

अजीर्ण.	उतार.
गोह(घोरपड़)के मांसको.... ...	एरंडका तेल देना,
चिरौंजीको	हरड़ा, मिर्च, गरम जल देना,
चन्दनवथवाको	कत्थेका पानी और खैर देना.
इम्लीको	तिलका तेल, चूना देना.
चूनाको	सौवीरका कुल्ला कराना. सोडावाटर पिलाना.
चूकेकी तरकारीको....	कत्थेका पानी पिलाना.
जवको	धतूराकी जड़ोंका काढ़ा देना
जायपत्री, जायफलको	समुद्रफल देना.
जामुनको	सोंठ देना.
टेंटूको	बकुलफल देना.
शूकरमांसको	जवाखार देना.
सर्व जातिकी दालिको	कांजी आदि देना.
दस्तको	आंवलोंका लेप देना.
ताड़फलोंको	चावलका धोवन, बकुल, मिर्च देना.
लोबियांको	दूधका पानी देना.
सांठी चावलको	मंथ दहीजल देना.
छाछको	नीमके बीज देना.
चौलाईको	सफेद शिरस देना.
तिलको	मंथ, धतूरा देना.
तीक्ष्णको	घी, तेल, दूध देना.
तेल, घी आदिको	कांजी देना, मूंगका जूस देना.
अनारको	बकुलीफल देना.
दूधको	छाछ देना.
भैंसके दूधको	सैंधवलोन, शंखभस्म देना.
गायके दूधको	गर्भमंड देना, शंखभस्म देना.

अजीर्ण.	उतार.
दहीको	...शंखभस्म देना.
स्त्रीदुग्धको	...शंखचूर्ण देना.
दूधियाको	....शिरस और पलाशका क्षार देना.
द्राक्षोंको	....भद्रमोथा देना.
धुवाँको	....रालका जल, कोकम देना.
धतूराके विषको	....दूध, शकर देना.
नारियलको	....चावलका धोवन देना.
नारंगीको	....गुड़ देना.
नागबेलको	....समुद्रफेन देना
नासारोगको	...शीतजल पिलाना.
नारियलजलको	....समुद्रफल देना.
बूदड़नींबूको	....नोन, कोद्रवधान देना.
नेत्ररोगको	....स्त्रीदूधकासिंचन देना.
पंचकर्म यानी रेचनादिक, वमन, नस्य, पूर्वबस्ति, उत्तरबस्ति, इनके विकारको	....सोंठ, धमासेका काढ़ा देना.
पटोलको	....सफेद शिरस देना.
पलाशके बीजोंको	....अदरख देना.
पालकी भाजीको	...शिरस देना.

पाचन और आंवनाशक इलाजपर गुड २ भाग, शहद २ भाग, कांजी५भाग, छाछ ८ भाग एकत्र करके तीन दिन धानमें गाड़के रखना बाद लेके तीन दिन देना । सर्व अजीर्ण जायगा १ ।

सर्व पाचन ।

सेंधवलोन, त्रिकटु, धनियाँ, जीरा, अनार, हलदी, हींग इनका चूर्ण देना ।

अजीर्ण.	उतार.
पापड़ाको	शिग्रुबीज देना.
तांबूलको	तिलोंका क्षार देना.
मिष्टान्नको	पानी देना.
पीपल, पीपर इनके फलोंको ...	ठंडा पानी देना.
पिपलीको	अजवाइन देना.
पिष्टान्नको	नोन देना, कांजी, घी, जवाखार देना
पुष्करमूलको	कटुतेल, घी देना.
चावलके पोहा(चिउड़ा)को... ...	अजवाइन देना.
पानीको	छोटे आमकी गुठली देना.
फलोंको	तिलका खार देना.
वटादिवृक्षफलोंको	ठंडा पानी देना.
फालसा फलोंको	निंबोली, मिर्च, राल देना.
फीणीको	लौंग, शिग्रुके बीज देना.
बकुलीको	बकुलमूल देना.
बेलफलको	निंबोली देना.
बेरको	गरम पानी देना.
गीली भाजीको	भद्रमोथा देना.
घूधियाको	करंजके बीज, अरणीमूल देना.
मद्यको	घी, शकर, गेरू, चंदन देना.
शहदको	हरड़ा देना.
बिजोराको	बकुल, नोन देना.
मच्छीको	बिडनोन, धतूराके पत्ते देना.
सुक्तकांजीको	भुनी मच्छीको, आम देना.
नोनको	चावलका धोवन देना.
मूंगाको	धतूरा देना.
मूलीको	सफेद शिरस देना.

अजीर्ण.		उतार.
मैथुनसे क्षयीको	....	....दूध, पानी, सेंधवलोन देना.
महुएके फलको	....	....नोन देना.
रंजनीफलको	....	....निंबोलियां देना.
लहसुनको	....	....दूध देना.
लाई (धानी) को	....	....मकुलमूल देना.
लडूको	....	....पीपल मूल देना.
कन्याको	....	....शिरससेंध, दहीजल, कांजी, अरल मूल देना.
वड़ेको	....	....वेसवार लिंबू देना.
हलदीको	..	....शक्कर देना.
बैंगनको	....	....हड्डियोंके माफिक देना.
मटरको	....	....धतूराके पत्ते देना.
खशको	....	....सेंध देना.
वायुअम मैथुनको	....	....मृगमांस मद्य देना.
शिखरिणीको	....	....त्रिकटु, लौंग देना.
शिंघाड़ेको	....	....सोंठ, भद्रमोथा देना.
शिरसको	....	....कांतका पानी देना.
शिलारसको	....	....समुद्रफल देना.
शकरको	....	....भद्रमोथा देना.
सांवेको	....	....सेंध, दधि जल देना.
शीतको	....	....उष्ण देना.
सूरणको	....	....गुड़ देना.
सोंठको	....	....मोथा देना.
सुपारीको	....	....समुद्रफेन, लहसनका जल, अरने उपलोंकी राख इनका गंध देना.
चनेको	....	....धतूरा देना.
क्षारको	....	....अम्लधोवन देना

इति अजीर्णमंजरी समाप्त।